# SHIKAR AUR JEEWAN

(Hindi Version of *The Yearling*)

*by*

Marjorie Kinnan Rawlings

*Translated by*

Prof Satyakam Varma, M A

Rs 6 00



प्रकाशक
रामलाल पुरी, सचालक
आत्माराम एण्ड सस
कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

शाखाएँ
हौज खास, नई दिल्ली
चौड़ा रास्ता, जयपुर
विश्वविद्यालय क्षेत्र, चण्डीगढ़
महानगर, लखनऊ-6
रामकोट, हैदराबाद

मूल्य : छ रुपए
प्रथम सस्करण, 1964

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

# शिकार और जीवन



# 1

घर की चिमनी से धुएँ की एक पतली सीधी रेखा ऊपर उठ रही थी। चिमनी से निकलते समय उसका रंग नीला-सा था, किन्तु ऊपर उठकर वह स्याह होता जा रहा था। वैशाख का आकाश भी नीला और स्वच्छ था। यह सब देखकर जोडी किसी कल्पना में डूब गया। उधर अँगीठी की आग मंद पडती जा रही थी। दोपहर के भोजन के बाद उसकी माँ बर्तन-भाडे ठीक-ठिकाने रख रही थी। शुक्रवार का दिन था। फर्शों की सफाई आवश्यक थी। 'माँ पहले बुहारी देंगी, फिर फर्श धोएँगी। इस बीच उन्हें मेरा ध्यान भी न आएगा। मैं चाहूँ तो तब तक मज़े में घाटी तक निकल जाऊँगा।' ऐसा सोचते निराई की खुरपी कन्धे पर टिकाए वह कुछ क्षण वहीं खडा रहा।

अगर उसके सामने बिना निलाई किए अनाज की खेती न लहरा रही होती तो वे खेत भी कम सुहावने न थे। तभी उनका ध्यान बाहर के दरवाज़े पर गया। वहाँ मधुमक्खियों ने मधुर सुगन्धित फूलों वाले मरवे के पेड पर

धावा बोल दिया था। शहद के लोभ मे वे उन फूलो पर कुछ इस तरह टूटी जैसे वहाँ और कोई भी फूल न हो और जैसे उन्हे चैत और जेठ के लुभावने फूल भूल ही गए हो। उन सब फूलो से मरवे के फूल ही उन्हे अधिक लुभावने लगे। काले-पीले शरीर वाली उन मधुमक्खियो को देखते हुए उसे लगा कि इनका पीछा करके वह शहद के छत्ते वाले उस पेड की अवश्य ही खोज निकालेगा। शीत ऋतु की समाप्ति के साथ ही मुरब्बो और गन्नो की राब आदि समाप्त हो चुकी थी। अत शहद की खोज लुभावनी लगनी स्वाभाविक ही थी। अनाज की कटाई का काम कुछ देर के लिए टाला भी जा सकता था।

वैशाख की ढलती दोपहरी का यह उन्मादक वातावरण उसके मन को वैसे ही घेरता गया जैसे उन मक्खियो ने उन मरवे के फूलो को घेर लिया था। उसे लगा कि सामने के खेत, चीड के मैदान और सडक को पार करके दौडता-दौडता वह धारा तक कुछ ही क्षणो मे पहुँच जाएगा। उस धारा के किनारे पर ही कही शहद के छत्ते वाला वह वृक्ष भी दिखाई दे जाएगा।

उसने अपनी खुरपी को बाड के जगले पर टिकाया और अनाजभरे खेतो को पार कर वह आगे बढ गया। घर के नजर से ओझल होते ही जगले को पकड़कर वह उसके पार हो गया। सौभाग्य से बूढी शिकारी कुतिया जूलिया उसके पिता के साथ ही ग्राहम्सविले गई हुई थी। किन्तु, विशालकाय रिप और दोगला कुत्ता पेर्क वही थे। उन्होने ज्योही किसी आकृति को जगला लाघते देखा, तुरन्त भौंकना शुरू कर दिया। रिप की आवाज भारी थी और पर्क की तीखी। पास आने पर उसे पहचानते ही वे दोनो पूंछ हिलाने लगे, मानो क्षमा माँग रहे हो। उसने उन्हे वापस लौटने का इशारा किया। किन्तु वे उसकी ओर से उदासीन बने रहे। उसकी दृष्टि मे उन दोनो का मूल्य दौडने, पीछा करने और शिकार करने तक ही सीमित था। उन दोनो के लिए उसका महत्त्व दोनो समय के भोजन के समय ही होता था। बूढी जूलिया मनुष्यो के प्रति उन दोनो की अपेक्षा अधिक उदार थी, यद्यपि उसकी निरीह भक्ति जोडी के पिता पैनी बैक्स्टर तक ही सीमित थी। जोडी ने उससे दोस्ती बढाने की काफी कोशिश की, किन्तु वह उदासीन ही बनी रही। तब उसके पिता ने उसे समझाया था, "दस साल पहले, जब तुम

दोनो अभी दो-एक साल के ही थे, तुमने इसे अनजाने मे सताया था। तब से यह उस बात को भुला नही सकी। कुत्तो का स्वभाव ही प्राय. ऐसा होता है।"

अनाजघर और गोदामो का चक्कर काटता हुआ वह दक्षिण की ओर निकल गया। उसकी इच्छा हुई, काश ! उसके पास भी दादी हुट्टो के कुत्ते जैसा कोई कुत्ता होता। दादी का कुत्ता सफेद रग का, घुघराले बालो वाला और तमाशे करने मे चतुर था। हँसते-हँसते दादी जब भी आपे से बाहर हो जाती, उसका बूढा शरीर हिलने लगता। उस समय यह कुत्ता उसकी गोद मे जा चढता, उसका मुँह चाटता और पूंछ हिलाने लगता, मानो वह बता रहा हो कि स्वय भी हँस रहा है। किसी भी कुत्ते से जोडी को प्यार हो सकता था, बशर्ते कि वह उसका अपना हो, उसे चूम-चाट सके और पिता के सदा साथ रहने वाली जूलिया की भाँति सदा उसके पीछे-पीछे चल सके।

रेतीली पगडडी पर पहुँचकर वह पूरब की ओर दौडने लगा। घाटी अब भी दो मील दूर थी। उसे अनुभव हुआ जैसे उस दिशा मे सदा दौडते रहने पर भी वह थकेगा नही। अनाज काटते समय उसके पाँव दुखने लगते थे, पर अब उसे वैसा दुख नही लग रहा था। उसे वह रास्ता इतना प्यारा लगा कि उसने अपनी चाल जान-बूझकर धीमी कर दी। उसकी इच्छा हुई कि वह कुछ अधिक देर तक उसी राह पर चलता रहे।

चीड-भरे मैदानो को पीछे छोड वह आगे बढ आया था। दोनो ओर के पेडो की कतारें पास से पास सिमटती-सी आ रही थी। राह सँकरी होती जा रही थी। यहाँ देवदार के पतले-पतले वृक्ष अधिक थे। ये उतने पतले थे कि बिना चीरे भी इन्हे अँगीठी मे जलाया जा सकता था। सडक क्रमशः एक ऊँचाई तक उठती गई। ऊँचाई पर पहुँचकर वह क्षणभर के लिए रुक गया। बैशाख के स्वच्छ आकाश मे लाल-पीली धूल और ऊँचे-ऊँचे चीडो के अतिरिक्त उसे चारो ओर नीलापन ही फैला हुआ दिखाई दिया। यह नीलापन उसे दादी हुट्टो के घर की नील मे रगे अपने घर बुने कपडो के नीलेपन के समान ही दिखाई दिया। आकाश मे कही-कही बिखरे हुए छोटे-छोटे बादल उसे ऐसे लगे जैसे रूई के गोले हो। उसी समय क्षणभर को धूप छिपी और बादलों का रग धूसर हो उठा। वह सोचने लगा, 'रात आने

से पहले हल्की-हल्की वर्षा जरूर होगी।'

तभी उसका ध्यान ढलान की ओर गया और उसके मन मे उछलते-कूदते उसे पार करने की चाह जगी। घाटी की उस सडक को पार कर वह रेतीले तट तक पहुँच गया। वहाँ छोटी-छोटी झाडियो और कुजो मे मधुर, सुन्दर और सुगन्धित फूल खिले हुए थे। उन झाडियो मे उसे एक से एक विचित्र और एक से एक लुभावनी परिचित झाडी दिखाई दी। वह उनका आनन्द लेने के लिए धीमी चाल से चलने लगा। वह उस सुगन्धित मैग्नोलिया वृक्ष के पास पहुँचा, जिसके तने पर कभी उसने वन-विलाव की तसवीर वनाई थी। चारो ओर की अपार वनस्पतियाँ उसे इस वात की गवाही जैसी लगी कि पास ही कही पानी होना चाहिए। उसे अचरज हुआ कि सव जगह धरती और वर्षा एक-जैसी होने पर भी चीड के वृक्ष जगलो मे पैदा होते हैं, जवकि चम्पा आदि सुगन्धित वनस्पतियाँ जल के किनारे ही अधिक फूलती है। जगह-जगह की विशेषताएँ अलग-अलग होने पर भी कुत्ता, विल्ली, घोड़ा आदि सव जगह एक-जैसे पाए जाते है, पर जगह-जगह के अनुसार वनस्पतियाँ अलग-अलग किस्म की ही होती है। इसका समाधान उसके मन ने खुद ही कर दिया, "वनस्पतियाँ हिल-डुल जो नही सकती और उन्हे अपने भोजन के लिए अपने नीचे की थोडी-सी मिट्टी पर ही जो आधारित रहना पडता है।"

यहाँ आकर सडक का पूरवी किनारा गहरे खड्ड मे झुक गया था। लगभग वीस फुट नीचे पानी का सोता वह रहा था। इस किनारे पर मैग्नोलिया, शहतूत, नीवू और अन्य कई प्रकार के मधुर सुगन्धित वृक्ष भरे पडे थे। इन वृक्षो की शीतल गहरी छाया मे से होता हुआ वह उस सोते तक उतर गया। वहाँ पहुँचते ही उसका मन आनन्द से भर उठा। यह स्थान उसे एकान्त और मधुर लगा। इस सोते का जल कुएँ के जल की भाँति साफ था। यह पानी तले की रेत मे से ही वुलवुलो के रूप मे ऊपर आ रहा था। दोनो किनारे हरियाली मे भरे थे, जैसे उन्होने पानी मे भरा एक प्याला अपने हाथो मे थामा हो। सोते के मुहाने पर पानी मे एक हल्की-सी भँवर पड रही थी। इसमे मचलते हुए रेत के कण ऐसे लगते थे जैसे वे उवल रहे हो। इससे कुछ ऊँचाई पर उठकर मुख्य धारा का सोता था, जिसका

पानी कुछ आगे चलकर चूने की शिलाओ को काटकर एक धारा के रूप में नीचे की ओर वह चला था। यह धारा आगे जाकर जार्ज भील मे मिल गई थी। यह झील सेंट जॉन नदी का ही एक हिस्सा थी। यह नदी उत्तर की ओर वहती हुइ समुद्र मे जा मिलती थी। इस नदी ने जोडी को समुद्र की याद दिला दी, जैसे उसने उसका आरम्भ देख लिया हो। इस प्रकार के न जाने कितने और मुहाने होगे, किन्तु यह मुहाना जैसे उसकी अपनी निजी वस्तु वन गई हो। वह चाहने लगा, काश ! इस जगह स्वय उसके तथा जगली जानवरो और प्यासे पक्षियो के अतिरिक्त अन्य कोई कभी न पहुँचा हो।

इस सैर ने जैसे उसमे गर्मी भर दी। तभी उस छायाभरी घाटी ने उस पर अपने शीतल और सुहावने हाथ रख दिए। पाजामे के पाहुँचो को ऊपर चढाकर वह उस सोते के ठण्डे पानी मे मैले पैरो समेत घुस पडा। उसके पजे रेत मे धँस गए। पजो से टखनो तक रेत छन-छनकर ऊपर आ रही थी। पानी अत्यधिक ठण्डा था। इस ठण्डक ने उसके पॉवो को निर्जीव-सा कर दिया। पर तव भी टाँगो के वीच मे से गुजरता हुआ वह पानी अपनी मद-मधुर आवाज के कारण वहुत ही सुहावना लगने लगा। आनन्द-विभोर होकर वह उस धारा मे ऊपर-नीचे चहलकदमी करने लगा। चिकने और मुलायम पत्थरो के छूते ही अपने पजे वह मजे मे उनमे गडाने लगता था।

तभी उसे पानी के वहाव मे वहती हुई छोटी-छोटी मछलियो की एक पक्ति दिखाई दी। उथले पानी मे चलकर उसने उनका पीछा किया। पर एकदम ही वे ऐसी ओझल हुई, जैसे कभी थी ही नही। पास ही सनावर की एक नगी लटकती जड के पास आकर वह रुक गया। यहाँ पानी कुछ गहरा हो गया था। उसे आशा थी कि वे यही फिर सामने आएँगी। पर वहाँ उसे दिखाई दिया एक मेढक, जो कीचड मे से निकलकर उसकी ओर ताक रहा था। वह भी उसे देखकर जैसे डर-सा गया और उसी जड के नीचे फिर से घुस गया। जोडी यह देखकर हँस पडा। अचानक वह वोल पडा, "अरे ! मैं तुम्हे पकड थोडे ही रहा था ! मैं रैकून तो हूँ नही ?"

वायु का एक झोका आया और उसने उसके ऊपर झुकी हुई दो मिली

हुई शाखों को अलग-अलग कर दिया। अब उनके बीच से धूप की किरणें चुपचाप उसके सिर और कंधो पर आकर टिक गई। सिर पर पडने वाली यह गर्मी उसे अच्छी ही लगी, उसके पाँव जो ठण्डे पानी से जकडे गए थे। वायु का वह झोका हटते ही टहनियाँ फिर से मिल गई और धूप फिर से गायव हो गई। तव वह धारा के उस पार चला गया। वहाँ पेड कुछ अलग-अलग थे। अचानक उससे ताड की एक शाखा छू गई। उसके पत्ते को देखकर उसे अपने जेव मे पडे चाकू का ध्यान आया और यह भी याद आया कि क्रिसमस के दिनो मे उसने स्वय ही पनचक्की की नकल वनाने की वात सोची थी।

ऐसी चक्की उसने स्वय कभी न वनाई थी। दादी हुट्टो का पुत्र ओलिवर ही कभी-कभी उसे ऐसी चक्की वना दिया करता था। पर उसे घर लौटने का अवकाश कभी-कभी ही मिलता था। उसकी वनाई पनचक्की को ध्यान मे रखकर उसने सवसे पहले चक्की की धुरी के घूमने के लिए दोनो ओर की गुलेल-जैसी दो लकडियाँ मधुर चैरी के पेड से काटकर तैयार की। इनके कोने और लम्वाई आदि समान थी। वीच की धुरी के सम्वन्ध मे उसे याद था कि ओलिवर उसे गोल और चिकना वनाया करता था, ताकि वह ठीक से घूम सके। इसके लिए उसने ऊपर की ओर के एक विशाल चैरी के पेड़ पर चढकर कलम जितनी मोटी एक टहनी काटी और उसे गोल और चिकना वनाया। तव उसने ताड के एक पत्ते को चुना और उसमे से एक इच चौड़े और चार इच लम्वे दो वरावर के टुकडे काटे। फिर उन दोनो के वीच मे एक हल्का चीरा दिया, ताकि उस गोल शाख मे ये फँसाएँ जा सके। तव उन दोनो के वीचो-वीच उस गोल शाख को फँसाकर उसने दोनो पत्तो को, पखो के रूप मे, विरोधी दिशाओ मे जमाया। इस प्रकार चक्की का पखो वाला चक्का तैयार हो गया। अव उसने इस पखे की धुरी की लम्वाई नाप कर उन गुलेल-जैसी दोनो शाखो को एक-दूसरे के आमने-सामने उस सोते के वीच मे, मुहाने से कुछ दूरी पर, रेत मे गहरा गाड दिया।

पानी अधिक गहरा नही था, फिर भी धार तेज़ थी। गहराई को पूरा-पूरा आँकने के वाद किनारे की शाखो को ठीक से करके उसने दोनो के वीच उस धुरी को ठीक से रख दिया। पर चक्की चलनी शुरू नही हुई। तव उसने

धुरी को स्वय ही एक बार घुमा दिया। नीचे की तेज धार का पानी पखो को छूकर आगे धकेलनेलगा। वह चक्की चलने लगी। एक पखे के हटते ही दूसरा और उसके बाद अगला पखा सामने आने लगा। इस तरह गति का एक निरन्तर सिलसिला जारी हुआ। पनचक्की चल निकली। उसकी लय और गति लिन की आटा पीसने वाली पनचक्की के ही समान थी।

जोडी ने सन्तोष की एक गहरी साँस ली और वही रेतीले तट पर गति के उस जादू से लुटा हुआ-सा निश्चिन्त होकर लेट गया। ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर—इस क्रम से वह चक्र चल रहा था—विना रुके! धरती से फूटता हुआ यह सोता सदा ही बहता रहेगा और इसकी यह पतली धार भी निरन्तर चलती रहेगी। यह सोता समुद्र तक जाने वाले पानी का आरम्भ-मात्र था। इसलिए जब तक इस पख के पत्ते ही गिर न जायँ, या गिलहरियो द्वारा काटी हुई टहनियाँ गिरकर इस चक्की की गति को ही न रोक दे, यह चलती ही रहेगी। उसे लगा कि अपने पिता की आयु मे पहुँच जाने तक भी वह इस चक्की को इसी तरह चलता हुआ ही पाएगा। उसके रुकने का प्रश्न ही नही उठता।

उसने अपने नीचे के पत्थरो को ठीक से विठाया और लेटने की जगह वना ली। अपनी वाँह को सिरहाना वना वह लेट गया। वृक्ष की टहनियो मे से छनकर आने वाली गर्म और हलकी पडती धूप उस पर ऐसी विछ गई थी, जैसे उसने रजाई ओढी हो। रेत और धूप के वीच लेटा हुआ वह एक-टक अपनी वनाई पनचक्की की ओर देख रहा था। उसकी गति उस पर जादू कर गई थी। उसके पखो की चाल ने उसकी पलको को गतिमय कर दिया था। उनसे टपकने वाली बूँदे उसे किसी पुच्छल तारे के पूँछ के समान चमकती हुई लगी। वहते पानी की आवाज ऐसी लगती थी, जैसे विल्लियाँ पानी पी रही हो। उसी समय एक वरसाती मेढक जैसे कुछ गा उठा और फिर शान्त हो गया। क्षणभर के लिए जोडी को ऐसे अनुभव हुआ जैसे वह किसी वहुत मुलायम और मखमली कगार पर लटक रहा हो और उसके साथी हो वह टरटराता मेढक और वे पखो से टपकती हुई चम-कती पानी की वूँदें। उसे लगा जैसे कगार से नीचे गिरने की जगह वह कोमलता के अम्बार मे धँसता चला जा रहा हो। धीरे-धीरे उसे ऊपर का

नीला आकाश सिमटता आता-सा लगने लगा। अब वह सो चुका था।

जब वह जागा, उसे लगा कि वह उस धारा के किनारे न होकर कही और है। वह किसी और दुनिया मे खोया हुआ था, इसीलिए जागने पर भी उसे सब कुछ सपना-सा ही लग रहा था। सूरज छिप चुका था और उसके साथ ही मिट चुका था धूप-छाँह का भेद भी। बढते हुए अँधेरे ने सब कुछ एक रग का कर दिया था। सनावर का कालापन, चम्पा की हरियाली और धूप-नहाये चैरी का पीलापन—सभी का भेद मिटाकर एक ही रग चारो ओर छा चुका था। स्वय उसके शरीर पर और आस-पास चारो ओर हल्का-हल्का कुहरा जम चुका था। ऐसा लगता था जैसे किसी जलप्रपात से बिखरकर कुछ जल-कण चारो ओर बिछ गए हो। इस कुहरे ने उसकी त्वचा को हल्का-हल्का गीला कर दिया। उसे लगा जैसे यह एक साथ ही उष्ण भी हो और शीतल भी। अब वह पीठ के बल लेट गया और उस गहरे आकाश मे देखने लगा, जो शोक से व्याकुल कबूतर की धूसर रग की छाती के समान कोमल-सा दिखाई दे रहा था।

हल्की-हल्की बारिश होने लगी। वह वहाँ ऐसे लेटा था जैसे कोई नन्हा पौधा हल्की-हल्की बारिश की बूंदो को अपने अन्दर समेट रहा हो। जब उसका चेहरा भीग गया और उसे अपनी कमीज गीली अनुभव हुई, वह उठ पडा। वह कुछ क्षण वैसे ही खडा रह गया। उसने देखा कि उसके सोते हुए कोई हिरन उस धारा तक आया था। उसके ताजा पाँव के निशान धारा के पूर्वी किनारे तक आकर पानी के बिलकुल पास रुक गए थे। वे निशान एकदम नुकीले और तीखे थे। स्पष्ट था कि वे किसी हिरनी के थे। वे रेत मे काफी गहरे धँसे थे। इससे उसने अनुमान किया कि वह बूढी और भारी शरीर की रही होगी। हो सकता है कि वह होनेवाले बच्चे के कारण भारी हो। वह यहाँ तक आई और उसने धारा से खूब डटकर पानी पिया। तब तक वह यह नही जान पाई थी कि वह यहाँ सो रहा है। तभी अचानक उसे उसकी उपस्थिति का अन्दाज हुआ। घबराकर वह भागी। उसकी घबराहट और डर की निशानी पाँवो के उन चिह्नो मे अब तक साफ थी। ये निशान दूसरे किनारे तक कुछ इस तरह पहुँचे थे कि वे ठीक से पहचाने न जा सकते थे। हो सकता है कि उसे देखने से पहले वह पानी पी ही न सकी हो और

तुरन्त ही तेज़ चाल से रेत उछालती हुई भाग गई हो। उसने यही चाहा, काश ! कि वह अब तक भी प्यासी और सहमी हुई जगल मे ही न छिपी हो।

तव उसने और भी निशान खोजने शुरू किए। गिलहरियाँ उस धारा के किनारे ऊपर-नीचे की ओर बिना घबराए दौडती रही थी। कोई रैकून जैसा जानवर भी उधर आया था, जिसके तेज़ नाखूनो वाले पजो के निशान अब तक भी वहाँ मौजूद थे। परन्तु उसके आने का समय वह ठीक-ठीक नही जान पाया। यदि उसके स्थान पर उसका पिता होता तो वह निश्चित रूप से बता सकता कि कब कौन-सा जगली जानवर वहाँ से गया था। जोडी को तो केवल इतना ही पता था कि हिरनी वहाँ आई और चली गई। तव उसका ध्यान पनचक्की की ओर गया। यह ऐसे चल रही थी जैसे सदा से ही चलती आ रही हो। यद्यपि ताड के पत्ते से बने हुए पखे कमज़ोर-से थे, पर फिर भी उस उथले पानी के थपेडो को सहते हुए वे अपनी वीरता और शक्ति का परिचय दे रहे थे। बारिश की हल्की बूंदो के कारण वे चमकने लगे थे।

जोडी ने आकाश की ओर निगाह डाली, चारो ओर काले आकाश को देखकर वह समय का कुछ भी निश्चय न कर सका। न ही वह यह जान सका कि वह कितनी देर सोया। वह धारा के पश्चिमी तट पर चलने लगा। यहाँ बहुत-सी झडबेरियाँ खुले मे फैली थी। अभी वह जाने या ठहरने के बारे मे निश्चय भी न कर पाया था कि बारिश जिस तरह चुपचाप आई थी, उसी तरह समाप्त हो गई। दक्षिण-पश्चिम से शीतल बयार का एक हल्का-सा झोका आया और धूप फिर निकल आई। बादलो के समूह ऐसे लग रहे थे जैसे सफेद पंखो का अम्बार लगा हो। उधर पूरव मे एक सुन्दर इन्द्र धनुष निकल आया। जोडी को यह इतना प्यारा और अद्भुत लगा जैसे इसे देखते-देखते वह खुशी से फूट पडेगा। धरती पीली और हरी-सी थी। हवा फिर से बहने लगी थी, जैसे दिखाई न देकर भी वह जीवित हो। धूप जैसे वर्षा से नहाकर और भी सुनहरी हो उठी हो। चारो ओर के वृक्ष, वनस्पतियाँ और घास तक चमक उठे थे, जैसे वर्षा की बूंदो ने उन पर वार्निश फेर दी हो।

उसके मन मे खुशी उसी प्रकार बरबस फूटने लगी, जैसे सामने की

धारा का सोता धरती मे से फूट रहा था। उसने अपनी बाहे कधो की सीध मे फैलाई और अपने पाँव पर खड़े-खडे ही चारो ओर चक्कर काटने लगा। भँवर के समान ये चक्कर तेज़ से तेज़ होते गए। जब उसे अनुभव होने लगा कि वह अपने वश मे नही रहा तब उसने अपनी आँखे बन्द की। उसे कुछ चक्कर-से आए और वह भूमि पर चित्त गिर पडा। उसे अब भी लग रहा था जैसे उसके नीचे की धरती घूम रही हो और वह खुद भी घूम रहा हो। उसने अपनी आँखे खोली। नीला आकाश और सफेद बादल भी उसे घूमते हुए नजर आए। उसे अनुभव हुआ, जैसे वह स्वय धरती, पेडो और आकाश के साथ घूमते-घूमते एक हो गया हो। यह चक्कर जब समाप्त हुआ, तब उसका दिमाग साफ हो चुका था। अब वह अपने पाँव पर खडा हुआ। उसे अपना सिर कुछ हल्का अनुभव हुआ, पर साथ ही उडता हुआ-सा भी। इस पर भी उसे शान्ति अनुभव हो रही थी और अब यह दिन उसके लिए फिर से एक साधारण दिन-सा बन गया था।

वह मुडा और घर की ओर उछलता-कूदता चल पडा। उन चीडो का सुगन्ध से भीनी हवा मे वह गहरी साँस लेने लगा। उसके पाँव के नीचे की ढीली धूल बारिश से कुछ जम-सी गई थी। यह लौटना उसे सुखद लग रहा था। जब तक उसे परिवार के खेतो के पास के चीडो के ऊंचे पेड़ दिखाई दिए, सूर्य अस्त होने ही वाला था। पश्चिम की लाल-पीली पृष्ठभूमि पर वे ऊँचे और काले पेड तने खडे थे। उसे चूजो की चख-चख और आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी। स्पष्ट था कि उन्हे अभी-अभी खाना दिया गया है। अब वह बाडे मे घुसा। उस बसन्ती प्रकाश मे बाडे के जगले का सलेटी रग चमक उठा था। सरकण्डो और मिट्टी से बनी चिमनी मे से घना धुआँ उठ रहा था। स्पष्ट था कि साँझ का खाना तैयार हो गया था और बन्द चूल्हे मे रोटी सिक रही थी। उसे आशा थी कि आहम्सविले से उसके पिता अब तक न लौटे होगे। यह खयाल आते ही पहली बार अनुभव हुआ कि पिता की अनुपस्थिति मे उसे घर नही छोडना चाहिए। अगर कहीं उसकी माता को ईधन की ज़रूरत पडी, तो वह गुस्से होगी। उसका पिता भी क्रोध मे सिर हिलाकर उसे चेताएगा। उसे दूर से ही बूढे मीजर की तेज साँसें सुनाई पडी और उसने जाना कि उसका पिता उससे कुछ ही आगे चल

रहा है।

उनके खेतो मे एक बहुत ही मधुर-सी ध्वनि भर रही थी। घोडा दरवाज़े पर हिनहिना रहा था। बछडे अपने बाँधने की जगह पर ही आवाज़े दे रहे थे और उनकी दुधारू माँ रम्भाकर उत्तर दे रही थी। एक ओर चूज़े अपनी आवाजें तेज कर रहे थे, तो दूसरी ओर कुत्ते शाम का खाना आता देखकर भौंकने लगे थे। भूखा होना और समय पर खाना मिलना उनके लिए एक प्रिय बात थी और वे आशा और विश्वास के साथ खाने के लिए उत्सुक रहते थे। शीत समाप्त हुई, पर बहुत कुछ और भी समाप्त हाने लगा था। अनाज, सूखी घास आदि बहुत कम रह गए थे। अब वसन्त आते ही चरागाहे फिर से हरी-भरी और रसीली हो उठी थी। यहाँ तक कि चूज़े भी नई उगी घास के अकुरो को चखने के लिए ललचा उठे थे। कुत्तो ने उसी शाम छोटे-छोटे खरगोशो का नया ही घर पता किया था। अत इतना सब होने के बाद उनके लिए परिवार के भोजन से बचा-खुचा खाना महत्त्वहीन-सा हो गया था। जोडी ने देखा, जूलिया गाडी के नीचे जा लेटी थी। स्पष्ट था कि वह मीलो घूमने के बाद थक चुकी थी। उसने सामने के बाडे के दरवाज़े को खोला और सीधा पिता की खोज मे चल पडा।

पैनी लकडियो के ढेर के पास खडा था। उसने अब तक भी अपने विवाह वाले कोट को पहना हुआ था। इसे पहनकर चर्च या व्यापार आदि मे जाने मे वह अपनी शान और इज्ज़त समझता था। इसकी बाँहे छोटी पड चुकी थी, पर इसका मतलब यह नही कि पैनी बडा हो गया था, बल्कि यह गर्मियो की नमी मे लटकते-लटकते और बार-बार लोहा करने से सिकुड गया था। जोडी ने अपने से भी बडी अपने पिता की बाँहो को लकडी के एक गट्ठे के चारो ओर लिपटा हुआ पाया। वह जोडी की जगह उसका काम कर रहा था। उसे अपने अच्छे कोट का भी ध्यान न था। जोडी उसकी ओर दौडता हुआ बोला, "पिताजी! लाइए, यह मैं कर लूँगा।" उसे आशा थी कि उसकी यह चाह, उसकी मटरगश्तियो को ढँक देगी।

उसके पिता ने कमर सीधी की और कहा, "बेटे! मैं तो तुम्हे भुला ही बैठा था।"

"मैं ज़रा घाटी तक गया था," अपराधी के स्वर मे उसने उत्तर दिया।

पैनी बोला, "यह सचमुच बाहर भ्रमण के लिए बहुत प्यारा दिन था। ऐसे दिन कही भी जाया जा सकता है। पर तुम्हे इतनी दूर जाने की कैसे सूझी?"

जोडी के लिए यह याद करना कि वह क्यो गया था, बडा बोझिल हो उठा, जैसे यह वर्ष-भर पहले की बात हो। उसे फिर से वह क्षण याद करना पडा, जब उसने अपनी खुरपी को बाड पर टिकाया था।

वह बोला, "ओह! मेरा उद्देश्य था मधुमक्खियो का पीछा करना और उनके शहद के पेड को खोज निकालना।"

"वह मिल गया?"

जोडी की नज़रे जड-सी हो गईं। उसने कठिनता से उत्तर दिया, "मैं निश्चय ही इसे खोज निकालता, पर मुझे यह बात वहाँ जाकर बिलकुल भूल ही गई।"

इस समय वह अपने-आपको ऐसा ही मूर्ख अनुभव कर रहा था, जैसे कोई शिकारी कुत्ता खेत के चूहे का पीछा करता हुआ पकडा गया हो। वह अपने पिता की ओर बडी करुण दृष्टि से देखने लगा। उसके पिता की सफेद नीली आँखो मे एक चमक-सी दौड गई। वह बोला, "जोडी! सच कहो, घबराने और शर्म करने की ज़रूरत नही। यह शहद के पेड का बहाना तो नही ढूढा? तुम घूमने गए थे न!"

जोडी मन मसोसकर रह गया। उसने स्वीकार किया, "सच है, पर शहद के पेड को खोजने से पहले ही इस भ्रमण की चाह ने मुझे घेर-सा लिया।"

"यही मेरा अनुमान था। यह बात मुझे तब सूझी, जब मैं ग्राहम्सविले की ओर जा रहा था। मैंने अपने मन मे कहा, 'अब यह जोडी है। इसे मक्की की निलाई मे बहुत समय तो लगेगा नही। अगर इसकी जगह मैं होता तो आज के सुन्दर बसन्ती दिन, अपने लकडकपन मे, मैं क्या करता?' और तब मेरे मन ने ही उत्तर दिया, 'मैं घूमने निकल जाता—कही पर भी, इस धरती पर कितनी दूर भी निकल जाता।'"

उस बच्चे मे जैसे एक अजीब-सी गर्मी भर गई। अब उसके लिए सूर्य जैसे नीचे झुका हुआ नही था। वह मस्त हो उठा। उसने कहा, "ठीक

इसी क्रम से मैंने भी सोचा था।"

पैनी ने अपना सिर घर की ओर उठाकर कहा, "पर अब अपनी माँ से यह घूमने की बात न कह बैठना। औरते प्राय जीवनभर नही समझ सकती कि आदमी को इस प्रकार का घूमना क्यो अच्छा लगता है ? मैंने उसे नही पता चलने दिया कि तुम यहाँ नही थे। उसने पूछा था कि, 'जोडी कहाँ है ?' मैंने उसे उत्तर दिया था, 'ओह ! समझा, यही कही होगा ?' "

उसने एक आँख झपकाई और जोडी ने भी उसी तरह पलक झपकाकर जवाब दिया।

"शान्ति बनाए रखने के नाम पर घर के आदमियो को मिलकर ही रहना चाहिए। जाओ, अब तुम अपनी माँ के लिए ईंधन का एक बडा गट्ठर उठा ले जाओ।"

जोडी ने गट्ठर बनाया और घर की ओर जल्दी-जल्दी ले चला। उसकी माँ अँगीठी पर झुकी हुई थी। पकती हुई चीजो मे से मसालो की उठने वाली गध ने नाक की राह उसके अन्दर घुसकर जैसे उसे भूख से कमजोर बना दिया। वह पूछ बैठा, "क्या यह आलुओ का मीठा हलुवा तो नही है, माँ ?"

"हाँ, वही है। पर अब तुम दोनो ज्यादा देर मत लगाओ। खाना तैयार है। जल्दी ही बैठ जाओ।"

उसने लकडियाँ पेटी मे उलटाईं और जल्दी ही उन्हे ठीक-ठाक कर दिया। उधर उसका पिता ट्रिक्सी गाय को दुह रहा था। जोडी पास जाकर बोला, "माँ कहती है, काम समाप्त करके जल्दी आओ। क्या मै सीज़र को भी दाना डाल आऊँ ?"

'मै उसे खिला चुका हूँ क्योकि उस बेचारे को भूख लगी थी।" वह कमर सीधी करके उस तिपाये स्टूल पर से खडा हुआ और फिर बोला, "जाओ, यह दूध ले जाओ। और आज इसे गिराना या खिडाना नही, जसे कल गिराते गए थे। धीरे-धीरे जाना।"

तब वह गाय से अलग होकर खूंटे तक गया, जहाँ बछडा बँधा हुआ था। वही से उसने गाय को पुकारा, "ट्रिक्सी ! इधर-इधर !" गाय झुकी

और अपने वछडे के पास आ गई।

"उधर रहो, जरा आराम से। तुम जोडी जैसे लोभी हो।" वछडे को पुचकारते हुए उसने कहा। उसने दोनो को थपक दी और जोडी के पीछे-पीछे घर की ओर मुड पडा। गुसलखाने मे जाकर दोनो ने वारी-वारी से मुँह-हाथ धोए और वाहर लटकते हुए तौलिए से उन्हे पोछा। श्रीमती वैक्स्टर मेज़ पर उनकी इन्तजार कर रही थी। आते ही उन्हे तश्तरियाँ पकडाने लगी। मेज़ का एक पूरा कोना उसके भारी-भरकम शरीर ने घेरा हुआ था। जोडी और उसके पिता उसके दोनो ओर वैठ गए। उन दोनो के लिए यह स्वाभाविक ही था कि वह सव जगह चौधरानी वने। उसने पूछा, "आज तुम्हे खूव भूख लगी होगी ?"

जोडी वोल पडा, "मैं अकेला ही पीपा-भर मास और सेरभर विस्कुट खा जाऊँगा।"

"यह सव तुम्हारे कहने की वात है। तुम्हारी आँखें तुम्हारे पेट से भी वडी है।" पैनी वोल पडा, "अगर मैं अनुभवी न होता, तो मैं भी यही कुछ कहता। ग्राहम्सविले जाना मात्र ही मुझमे भूख लगा देने के लिए काफी है।"

"वहाँ तुम्हे सर्दी या धूप लग गई होगी। यही एक कारण हो सकता है।" श्रीमतीजी ने टिप्पणी की।

"नही, आज तो ऐसे ही मामूली-सा हुआ। जिम ने इलाज कर दिया।"

"तव निश्चय ही तुम्हे कोई विशेप नुकसान नही हुआ।"

जोडी जैसे न कुछ सुन रहा था, न देख रहा था। उसे केवल अपने भोजन का ही ध्यान था। सारी सर्दियाँ और वसन्त तगी मे विताने के वाद, और अव भी पशुओ और परिवार के लिए वहुत थोडा सामान शेप रह जाने पर, आज जव अचानक ही माँ ने किसी उपदेशक के लिए खूव वढिया-सा खाना पकाया, तो जोडी को अपनी जिन्दगी मे पहली वार इतनी भूख लगनी स्वाभाविक ही थी। सूअर के माँस से वनाया खास तरह का पकवान, आलू और प्याज आदि भरकर वनाए हुए समोसे, जिनमे ताज़ा पकडी जलमुर्गी भुनी हुई थी, खट्टी नारगी मिले विस्कुट और आलू का मीठा हलुवा—ये सव चीज़े ही उसका मन लुभा रही थी। एक ओर अधिक

बिस्कुटो और समोसो के लिए उसकी इच्छा बढ रही थी और दूसरी ओर उसे अनुभव सिखा रहा था कि अगर वह इन्हे अधिक खाएगा तो उसके पेट मे हलुवे के लिए जगह न रहेगी। चुनाव सीधा और साफ था। वह बोला, "माँ ! क्या मुझे हलुवा इसी समय मिल सकता है ?"

वह एक क्षण के लिए रुकी और उसके लिए उसने बहुत सारा हलुवा अलग कर दिया। जोडी मसालेदार और खुशबूदार हलुवे पर जैसे टूट पडा।

उसकी माँ ने शिकायत की, "तुम्हे क्या पता इसे बनाने मे मुझे कितनी देर लगी ? और तुम इसे इस तरह इतनी जल्दी मे खत्म कर रहे हो।"

जोडी ने स्वीकार किया, "मैं जल्दी-जल्दी जरूर खा रहा हूँ। पर इसका स्वाद मुझे बहुत दिनो तक याद रहेगा।"

भोजन समाप्त हुआ। अब जोडी तृप्त था। उसके पिता ने भी आज रोज की अपेक्षा कुछ अधिक ही खाना खाया।

"मेरा पेट भर गया है। परमात्मा का बार-बार धन्यवाद।" पैनी बोला। श्रीमतीजी ने एक लम्बी साँस ली और बोली, "अगर कोई मेरे लिए मोमबत्ती जला दे तो मैं बर्तनो की सफाई से जल्दी ही निबट जाऊँगी। हो सकता है, कुछ समय मुझे आराम के लिए भी मिल जाय।"

जोडी उठा और उसने एक मोमबत्ती जला दी। इधर मद्धिम-सी पीली रोशनी उठ रही थी, उधर उसका ध्यान पूरब की ओर की खिडकी मे से बाहर की ओर गया। पूर्ण चन्द्रमा धीमे-धीमे उठ रहा था। पैनी उधर देखकर बोल उठा, "इस समय यह बत्ती जलाना क्या व्यर्थ नही है ? पूरा चांद जो चमक रहा है !" वह भी खिडकी तक चला आया, और दोनो बाप-बेटा मिलकर उसे निहारने लगे।

"बेटे ! इसे देखकर कुछ खयाल आया ? तुम्हे याद है, मैंने क्या कहा था कि वैशाख की पूर्णमासी पर हम कुछ करेंगे ?"

"मुझे इस समय कुछ भी याद नही।"

कुछ भी हो, उसे अब तक ऋतुओ के विषय मे अधिक ध्यान नही था। साल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पूर्णमासियो की बात याद रखना और

ऋतुओ का हिसाब-किताब रखना जैसे वह भी अपने पिता की उम्र तक पहुँचकर ही सीख सकेगा।

"नही, मैं कह सकता हूँ कि तुम नही भूले। क्यो, तुम्हे याद नही ? मैंने बताया था कि वैशाख मे पूर्णमासी के दिन भालू अपनी सर्दियो की मादो से निकलकर बाहर आते हैं ?"

जोडी को जैसे कुछ याद आया। "ओह ! उस पाँव-कटे भालू के बारे मे ? हाँ ! आपने कहा था कि वह जब भी आएगा, हम उसे फँसाने की कोशिश करेंगे।"

"हाँ ! अब ठीक है।"

"तो पिताजी, हम कब जा सकते है ?"

पैनी ने उत्तर दिया, "जितनी जल्दी हम खेतो की निलाई कर ले। पर हाँ, हमे भालू की निशानी मिलनी आवश्यक है।"

"आखिर किस तरीके से हमे यह शिकार शुरू करना होगा ?"

"हमे घाटी के सोतो के पास जाकर देखना होगा कि क्या उसने वहाँ आकर पानी पिया है ?"

जोडी को याद आया, "पिताजी, जब मैं उस घाटी के सोते के किनारे सो रहा था तो एक बडी-बूढी हिरनी वहाँ पानी पीने आई थी। मैंने वहाँ एक पनचक्की बनाई है और वह मज़े मे घूम रही है।"

श्रीमती बैक्स्टर का ध्यान एकाएक उधर गया और उसके बर्तन-भाडो की आवाज़ अचानक रुक गई। वह बोली, "अरे, दुष्ट भगोडे ! अच्छा, मैंने अब जाना कि तुम यहाँ से आज गायब रहे थे। तुम वैसे ही खिसकने लगे हो जैसे बरसात मे मिट्टी की सडक।"

जोडी हँसता हुआ चिल्लाया, "आज तुम्हे खूब बनाया, माँ ! अब कुछ कह लो। मैंने तो एक बार तुम्हे बनाना ही था।"

उसकी माँ जैसे ढीली पड गई। बनावटी गुस्से से बोली, "तुमने मुझे मूर्ख बनाया और मैं यहाँ खडी-खडी तुम्हारे लिए आलू का हलुवा बनाती रही।"

जोडी ने फिर छेडा, "अच्छा माँ, कल्पना करो अगर मैं कोई जन्तु होता और घास तथा जड़ो के अतिरिक्त कुछ न खाता !"

माँ ने उत्तर दिया, "तब कम-से-कम मुझे कोई गुस्सा दिलाने वाला तो न होता।"

उसी समय उसे माँ के चेहरे पर मुसकान फैलती नजर श्राई, जिसे वह छिपाना चाहती थी, पर छिपा न सकी।

जोडी बोल पडा, "माँ हंस रही है! माँ हंस रही है! तुम हँसते हुए गुस्से कैसे हो सकती हो!"

वह उछलकर माँ के पीछे जा पहुँचा श्रौर उसने उसके श्रगरखे को खोल डाला। श्रगरखा फर्श पर गिर गया। वह श्रपने भारी-भरकम शरीर के साथ जल्दी मे घूमी श्रौर उसने जोडी के कानो को मसल दिया। परन्तु उस मसलन मे भी बहुत हल्कापन श्रौर श्रानन्द की भावना मिली-जुली थी। दोपहर की ही भाँति जोडी मे श्रानन्द का जैसे एक दौरा फिर से श्रा गया। उसने फिर पाँवो पर चक्कर खाने शुरू कर दिए, जैसा कि उसने सोते के किनारे किया था।

माँ ने चेतावनी दी, "इस तरह तुम मेज पर से तश्तरियो श्रादि को गिराकर ही रहोगे। तब पता चलेगा कि गुस्सा कैसे श्राता है?"

जोडी मस्त था। बोला, "मैं श्रपने वश मे नही हूँ। मुझे चक्कर से श्रा रहे हैं।"

माँ बोली, "तुम बिलकुल बिगड गए हो।"

यह बात बिलकुल ठीक ही थी। उसे वैशाख ने सचमुच बिगाड दिया था। बसन्त श्राते ही जैसे उस पर चक्कर सवार हो गया। वह इस समय उतना ही मस्त था जितना लेम फौरेस्टर शनिवार की रात मे शराब पीकर हो जाता था। उसका सिर जैसे धूप, हवा श्रौर हल्की-हल्की बारिश से नितारी हुई शराब मे तैर रहा था। उसकी पनचक्की ने जैसे उसे शराब पिला दी थी। श्रौर उसे बढावा दिया था। हिरनी के श्राने, पिता द्वारा उसकी श्रनुपस्थिति छिपाए जाने, माता द्वारा हलुवा बनाने श्रौर उसके साथ हँसने श्रादि ने! उसे चारो श्रोर छिटकी चाँदनी से घिरे घर मे ऐसा श्रानन्द श्रा रहा था, जैसे उसे जलती हुई मोमबत्ती ने जला डाला हो। उसे उस बूढे रीछ का खयाल श्राया, जो काला, विशाल, कानून तोडने वाला था श्रौर

की मांद मे से निकल रहा हो और इस कोमल वायु और चांदनी को जोडी की ही भांति सूंघ और चख रहा हो। वह इसी नशे मे बिस्तर पर लेट तो गया पर उसे नीद न आई। उसे आज के दिन की खुशियो ने कुछ इस प्रकार भर दिया था, जैसे वह यह याद अपनी तमाम जिन्दगी-भर न भुला सकेगा। जब-जब भी वैशाख की हल्की हरियाली और बरसात की भीनी सुगन्ध उसके सामने आएगी, जैसे उसका कोई पुराना घाव हरा हो जाएगा और एक दौरा-सा उसे अनजाने ही घेर लिया करेगा। तभी जैसे उसे उस चांदनी रात के पार से किसी ने बुलाया हो! वह चुपचाप ही गहरी नीद मे सो गया।



2

आसमान मे पूरनमासी का चाँद अपनी पूरी छटा पर था। पैनी वैक्स्टर बिस्तर पर लेटकर भी सो नही पाया। पूरे चाँद को देखकर वह कभी भी सो नही पाता था। वह जाग रहा था, पर बगल मे ही सो रही थी उसकी भारी-भरकम पत्नी। वह प्राय चकित-सा होता था कि इतनी उजली चाँदनी मे भी लोग खेती या मजदूरी के काम पर नही जाते। अगर उसका वश चले तो वह विस्तर छोडकर सनावर वृक्ष से ईधन काटने या जोडी द्वारा अधूरी छोडी अनाज की निलाई को पूरा करने निकल जाय। उसे जोडी का ध्यान आया।

'मैं चाहूँ तो उसे घुटनो के बल चला सकता हूँ'—उसने सोचा। अगर कही अपने बचपन मे उसने घर से भागने या शिथिलता दिखाने की ऐसी हरकत की होती तो उसके पिता ने उसे अच्छी तरह ठीक कर दिया होता। वह उसे बिना खाना खिलाए फिर से उसी सोते पर लौटा देता

'पर सचाई यह है कि किसी का लडकपन सदा टिककर नही रहता'—उसने मन ही मन कहा। उसने जब अपने अतीत पर विचार करना शुरू किया, तो उसे लगा जैसे उसका अपना लडकपन कभी सार्थक न रहा हो। उसका पिता उपदेशक था। उसकी सख्ती यहूदियो के ईश्वर से कम न थी। पर उसकी आजीविका का साधन यह उपदेश-वृत्ति नही थी। उसके लिए वोलूसिया के नज़दीकी खेतो की उपज पर उन्हे निर्भर रहना होता था। वही पर उसने अपना परिवार बसाया और बढाया था। उसने स्वय ही बच्चो को पढना और लिखना सिखाया तथा धर्मग्रन्थ समझाए। इस पर भी, जब से बच्चे खेतो तक अपने पिता का अनुसरण करने मे समर्थ हुए, उन्हे अनाज के बीज ढोने तथा और तरह के श्रम करने पडे। इस कडी मेहनत से उनकी हड्डियाँ तक दुखने लगती थी और अगुलियाँ अकड जाती थी। फिर भी अनाज पूरा नही पडता था। प्राय सभी बच्चो के पेट मे कीडे पल गए थे। परिणामत सभी की शारीरिक बढती बहुत कम हो पाई। स्वय पैनी युवावस्था तक पहुँचने पर भी एक लडका-सा ही लगता था। उसके पाँव छोटे, कधे सिकुडे हुए, कमर नदारद—जैसे पसलियाँ और कमर एक-दूसरे से उलझे हुए हो। शरीर का सारा साँचा ही जैसे गडबड हो। फौरेस्टर लोगो के बीच खडा वह ऐसे लगता था, जैसे सनोवर के विशाल पेडो के बीच जैतून परिवार का कोई छोटा-सा वृक्ष हो।

एक दिन लैम फौरेस्टर ने उसे देखकर कहा था, "अरे, बैवस्टर! तुम कितने छोटे हो, जैसे पैनी का छोटा-सा सिक्का! उस सिक्के जैसा तुम्हारा आर्थिक महत्त्व तो हो सकता है, पर इतने छोटे आदमी का और कोई उपयोग नही। हाय, बेचारा पैनी बैवस्टर!"

और तब से उसका नाम ही 'पैनी बैवस्टर' पड गया। मतदान के समय उसने अपना असली नाम 'एज़रा एज़ेक्याल बैक्स्टर' लिखवाया था, किन्तु कर देते समय उसका नाम 'पैनी बैक्स्टर' ही लिखा गया। उसने इस नाम को चुपचाप स्वीकार कर लिया, पर वह एक अजीब धातु का बना था—ताँबे-सा ही मजबूत और ऊन-जैसा ही मुलायम। ईमानदार वह इतना था कि प्राय स्टोर-मालिक, मिल-मालिक और घोडो के व्यापारी उसकी ओर बरबस खिंच जाते थे। एक बार वोलूसिया के अत्यन्त ईमान-

दार स्टोर-मालिक वोयल्स ने उसे गलती से एक डालर अधिक लौटा दिया। लौटने पर पैनी को यह गलती मालूम हुई। उसका घोडा लगडा था, पर तो भी वह पैदल ही मीलो चलकर डॉलर लौटाने आया।

"क्या अगली बार खरीद-फरोख्त के लिए आने पर यह न लौट जाता ?" वोयल्स ने पूछा।

"यह बात मैं भी जानता था, पर मै यह भी जानता था कि यह मेरा नही है। मैं नही चाहता कि इस बोझ को छाती पर लेकर ही मर जाऊँ। जीवित रहकर भी और मरकर भी मै उतने से ही सन्तुष्ट रहना चाहता हूँ, जो मेरा अपना है।" पैनी ने उत्तर दिया।

वह वौलूसिया छोडकर समीप के जगल मे आ बसा था। लोग इससे चकित-से रह गए थे। यदि वे भी नदी के किनारे पर वसे मल्लाहो की इस बारे मे टिप्पणी सुन लेते तो शायद उनका समाधान होता। ये मल्लाह परिवार उस नदी के किनारे छोटी नावो, पेड के खोलवाली चौरस शहतीरो से बनी विविध प्रकार की छोटी-मोटी नावो या माल और यात्री ले जाने वाली नावो अथवा दोनो पासो पर पहियो वाली वहुत चौडी मशीनी नावो को उस गहरी और शान्त नदी मे चलाकर अपनी जीविका कमाते थे। उनका कहना था कि पैनी बैक्स्टर या तो वहुत बहादुर है या एकदम खब्ती, क्योंकि वह साधारण तरीके के जीवन को छोडकर अपनी पत्नी के साथ फ्लोरिडा के इस अन्दरूनी जगल मे आ वसा था। इस जगल मे रहते थे भालू, भेडिए और चीते। ऐसा एकान्त फौरेस्टर परिवार के लिए तो उचित था, क्योंकि उनके सदस्यो की सख्या अधिक थी और वे झगडालू थे। उन्हे जितनी भी जगह मिलती, कम थी। उन्हे यहाँ किसी प्रकार की वाधा न रहती। किन्तु पैनी को गाँव मे कैसी वाधा ?

सच यह है कि उसके लिए प्रश्न वाधा का नही था। कस्बो और शहरो मे या कृषक समुदाय मे पडोसी प्राय पास-पास ही रहते है। इस दशा मे कभी उनके मन, कभी उनके व्यवहार और कभी उनकी सम्पत्ति एक-दूसरे की सीमा लाँघ जाते हैं। मनुष्य की अपनी हस्ती पर दूसरो का हस्तक्षेप होता है। ऐसे समय प्राय मित्रता और सहायता की भावना भी उत्पन्न

होती है, किन्तु बहुत बार सघर्ष, एक-दूसरे के प्रति सन्देह और सावधानी की बात भी पैदा हो जाती है। उसे पिता के कठोर अनुशासन मे पलते हुए जिस ससार से पाला पडा था, उसमे कुटिलता, बेईमानी और कठोरता अधिक थी। इसीलिए उसे उसमे रहने मे परेशानी अनुभव होती थी।

प्रायः ही उसे अनेक सघर्षों मे कुचला गया था। इसीलिए उसे इस विस्तृत एकान्त जगल की यह शान्ति अत्यधिक लाभ देने वाली लगती थी। उसके दिल का एक कोना बहुत मुलायम और नाजुक था। मानवी व्यवहार इसे घायल कर सकता था किन्तु जगली वनस्पतियो का प्रभाव इसे फिर से हरा कर देता था। यहाँ जीविका कमाना अवश्य कठिन था। बाज़ार मे सामान खरीदने और माल बेचने के लिए लम्बा और कठिन रास्ता पार करना पडता था। पर खेती उसकी निजी और सुरक्षित थी। जगली जानवर उसे अपने परिचित आदमियो की अपेक्षा कम हिंसक लगते थे। भालू, भेडिये, वनबिलाव और चीते आदि हिंसक पशुओ के पालतू पशुओ पर आक्रमणो का कारण वह समझता था, किन्तु आदमियो के अत्याचारो को वह इससे भी बुरा समझता था।

अभी उसने चालीस भी पार नही किए थे, जब उसने एक अत्यन्त स्वस्थ लडकी के साथ विवाह किया। डीलडौल मे वह उससे दुगनी थी। उसी दिन उसने वोलूमिया मे अपना सारा माल-मत्ता समेटा और गाडी मे पत्नी और सामान के साथ इसी नए खेत मे आ गया। यहाँ उसने अपने ही हाथो से यही छोटा-सा घर तैयार किया। बढते हुए चीडो और देवदारो से भरे इस विस्तृत जगल मे उसने सबसे अधिक अच्छी ज़मीन चुनी। उसने फौरेस्टर परिवार से इस ज़मीन को खरीदा था। वे यहाँ से चार मील दूर रहते थे। उस जगल मे ऊँची और अच्छे किस्म की यह ज़मीन एक चीडो के टापू की भाँति थी। उस ऊसर जंगल मे यह भाग ही ऐसा था, जिस पर लम्बे पत्ते वाले चीड आदि खडे थे। सारे वन मे यह भाग कुछ ऐसी ऊँचाई पर स्थित था, मानो सारे जगल से अलग हो। उत्तर और पश्चिम मे कुछ ऐसे ही दूसरे टापू भी बिखरे पडे थे, जहाँ उपजाऊ मिट्टी और नमी के सयोग से काफी वनस्पतियाँ उग आई थीं। गद्दे की तरह फैलाव वाली घनी व हरियाली भी यहाँ बहुत अधिक थी। कही-कही सनावर के ऊँचे

वृक्ष भी थे। वही पर मैग्नोलिया, लाल फूलो वाला तेजपात, जगली चैरी, अखरोट और सदावहार जैसी लुभावनी वनस्पतियाँ भी थी।

इस जगह पानी का कष्ट अवश्य था। पानी धरती मे इतने गहरे पर था कि कुएँ अत्यन्त महँगे पड़ते थे। ईंटे और मसाला महँगा होने से वैक्स्टर के लिए कुआँ वनाना कठिन था। फिर पानी का प्रवन्ध आवश्यक था। उसकी सौ वीघे ज़मीन की पश्चिमी सीमा पर धरती से एक चौडे गड्ढे मे से पानी फूट रहा था। यही पानी उसके घरवालो के जीवन का आधार बना। इस प्रकार के सोतेनुमा छेद इस सारे इलाके मे ही जगह-जगह पाए जाते थे। भूमि के नीचे बहने वाली नदियाँ चूने के पत्थरो से भरे इस इलाके मे खूब बहती थी। इनका पानी ही कही-कही सतह की पतली मिट्टी को फाडकर बाहर एकाएक आ जाता था। उस मिट्टी के हटते ही जैसे एक नाली-सी बाहर निकल आती थी। धाराओ और झरनो के रूप मे निकल चलने वाले सोते, इन्ही भूमि के नीचे बहने वाली धाराओ के बाहरी रूप थे। दुर्भाग्य से, पैनी वैक्स्टर की ज़मीन मे फूटने वाले इस स्रोत के साथ कोई धारा सम्बद्ध न थी। इससे निकलने वाला शुद्ध निर्मल जल रात-दिन ऊँचे कगारो से गिर-गिर पास ही एक जोहड के रूप मे जमा हो गया था। फौरेस्टर परिवार ने पैनी को जगल मे ही ज़मीन बेचनी चाही थी। किन्तु, नकदी पास होने से पैनी इस बीच की ज़मीन को खरीदने मे समर्थ हो गया। उसने उन्हे उत्तर दिया, "जगल तो शिकारगाह बनाने वालो के उपयुक्त है। उसमे लोमडी, हिरन, वनविलाव, फणियर साँप आदि जगली चीज़ें पाली जा सकती है। पर मै ऐसी चीज़ो को उस जगल मे कैसे पालूँगा ?"

यह सुनकर फौरेस्टर हँसी से लोट-पोट हो गए थे। लेम अपने ऊँचे स्वर मे बोला, "अरे पैनी ! एक पैनी मे कितने पैनी भरे हैं ? अच्छा होगा कि तुम एक लोमडी के बच्चे को ही बेटा समझकर पाल लो।"

आज इतने साल बाद भी पैनी के कानो मे जैसे उसकी यह आवाज़ गूँज रही थी। उसने बडी सावधानी से करवट बदली, ताकि कही उसकी पत्नी की नीद न खुल जाय ! उसे स्मरण था कि उसने पुत्रो और पुत्रियो के विषय मे कितनी बडी योजनाएँ सोची थी। उसने सोचा था कि अनेक सफल पुत्र-पुत्रियो के साथ वह इन्ही चीड़ो के बीच घूमा करेगा। परिवार

बसा। उसकी पत्नी ओरा बैक्स्टर का तो गठन ही मानो बच्चे पैदा करने के लिए हुआ था। पर लगता था, जैसे उसके बीज मे ही कुछ कमी थी। शायद वह भी उस जैसा ही कमज़ोर था, या फिर शायद लेम की ही नजर उस पर लग गई थी।

उसके बच्चे अत्यधिक कमज़ोर होते थे। जितनी शीघ्रता से वे होते जाते थे, उतनी ही शीघ्रता से वे बीमार होकर मरते भी जाते थे। पैनी अपने घर के पीछे के सनावरो मे ही एक साफ की हुई जगह पर उन्हे एक-एक करके गाडता जाता था। वहाँ मिट्टी कुछ ढीली थी, इसीलिए खोदने मे आसानी रहती थी। धीरे-धीरे इस जगह का विस्तार होता गया। जब शिकारी बिलाव और सूअर वहाँ आकर गडबड मचाने लगे, तब उसे उस स्थान के चारो ओर बाड लगानी पडी। उसने प्रत्येक कब्र पर लगाने के लिए लकडी की तख्तियाँ तैयार की। `उसकी आँखो के आगे अब भी वे सफेद और सीधी तख्तियाँ घूम रही थी। उनमे से कुछ पर एज़रा (छोटा) छोटी ओरा, विलियम आदि नाम थे। कुछ पर केवल इतने ही सकेत थे—जैसे बेबी बैक्स्टर, आयु तीन मास छ दिन आदि। पैनी ने एक तख्ती पर बडी मेहनत से चाकू से लिखा था, "इस बेचारी ने पूरी रात भी न बिताई।" उसका दिमाग बीते हुए बरसो की ओर घूमता हुआ सब बातो को ऐसे छूता गया, जैसे राह मे पडने वाली बाड की झाडियो को राहगीर छूता चलता है।

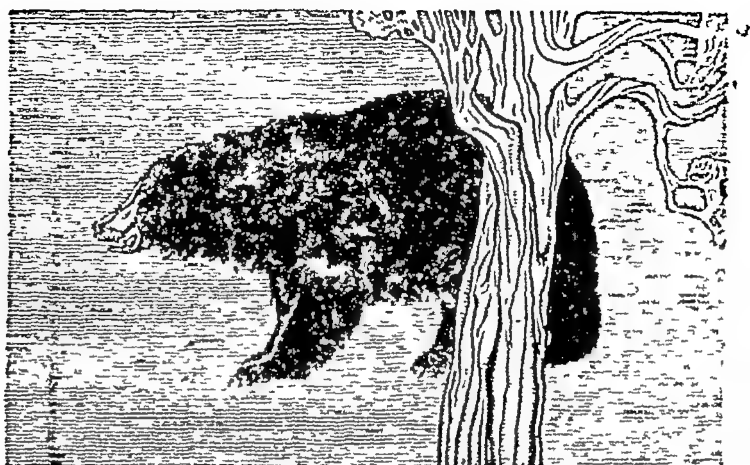
सन्तानो का यह क्रम कुछ साल के लिए एकाएक रुक गया। तब बहुत वर्ष बाद, जब उन्हे इस घर का एकान्त खलने लगा और जब उसकी पत्नी सन्तान उत्पन्न करने की आयु पार कर चुकी थी, उनके घर जोडी का जन्म हुआ और वह पलने-बढने लगा। अभी वह दो वर्ष का ही था कि पैनी को युद्ध मे मोर्चे पर जाना पड़ा। जाते समय वह माँ-बेटे को अपनी एक मित्र—दादी हुट्टो—के पास नदी किनारे छोड़ गया। उसे ख़याल था कि वह कुछ ही मास मे लौट आएगा। किन्तु, वह लौटा चार बरस बाद! इस लम्बे अरसे ने उस पर बुढापे के चिह्न उभार दिए थे। लौटकर अपने बीबी-बच्चे को लेकर वह फिर से इसी जगल मे अपनी ज़मीन पर आ बसा। वह यहाँ की शान्ति और एकान्त को भुला न सका।

जोडी को उसकी माँ का स्नेह कभी न मिल सका। वह उसके प्रति उदास-सी रही, जैसे उसका सभी प्यार उससे पहले के सारे बच्चो मे बँटकर समाप्त हो चुका था। पर पँनी का सारा प्यार जैसे उसी पर उमड आया हो। वह उसके लिए निरा पिता बनकर ही नही रह गया। उसने अनुभव किया कि स्वय उसकी भाँति यह बालक भी पक्षियो और जन्तुओ, फूलो और वृक्षों, वायु और वर्षा एव सूरज और चाँद के आकर्षण से खिचा-सा, मूढ-सा खडा रह जाता है। और, आज जब वैशाख की इस दुपहरी मे उसका यह बालक अपनी लडकपन की हरकतो मे खिचा-सा घर से खिसक गया, उसे बचपन मे अपने खिसकने का सारा रहस्य स्पष्ट हो गया। पर वह यह भी जानता है कि आखिर यह सब कितनी देर!

तभी उसका ध्यान टूटा। उसकी पत्नी हिली-डुली थी और नीद मे ही उसने कुछ आवाज निकाली थी। उसे फिर जोर्डी की बात का ध्यान आया। ऐसे अवसर पर माँ की कठोरता से उसकी रक्षा वह स्वय ही कर सकता था। मौका पाते ही वह बालक फिर जगल मे भाग निकलेगा और दूरी की मधुरता मे डूबा वह नई-नई बात ले बैठेगा।

तब तक चाँदनी सामने की खिडकी से परे हट गई थी।

उसने सोचा, 'भाग ले जितना भी वह भाग सकता है! बना ले जितनी भी पनचक्कियाँ वह बना सकता है। आखिर वह दिन भी आएगा, जब वह इन बातो से स्वय उदासीन हो जाएगा।'



## 3

अनमने होकर जोडी ने अपनी आंखे खोली। उसने सोचा, यदि हो सका तो कभी वह वन मे निकल जाएगा और वही शुक्रवार से सोमवार तक सोता ही रहेगा। उसके सोने के छोटे से कमरे की खिडकी मे से धूप झांकने लगी थी। वह नही जान पाया कि वह इस पीली धूप के कारण जागा है या आडू के कुजो मे चूज़ो की चुलबुलाहट से। वह इतना अवश्य अनुभव कर पाया कि चूज़े एक एक करके शाखो पर डाले अपने डेरो से उड़ने शुरू हो गए थे। सूर्य की किरणें अभी नारगी रग की ही थी। बेड़े के परे के चीडो पर अभी ये किरणें न पडी थी। वैशाख के कारण सूर्य कुछ जल्दी निकलने लगा था। अभी कुछ अधिक समय नही हुआ था। अच्छा था कि मां की पुकार सुनने से पहले ही वह उठ जाय। उसने आराम से करवट बदली। उसके गद्दे मे भरे भूसे की मसलन की आवाज़ हुई। तभी मुर्गा बड़ी ऊंची बाग देने लगा।

"अब तुमने भी बांग देनी शुरू कर दी! देखता हूं, तुम भी मुझे बिस्तर

से बाहर निकाल सकते हो या नही ?"—उसने मन-ही-मन मुर्गे को ललकारा। पूरब से छनकर आने वाली उजली किरणे अधिक गहरी और सघन होती गईं। एक सुनहरी आभा चीडो के शिखरो पर बिखर गई। उसने देखा, सूरज ऊपर उठ रहा था, मानो किसी चीज से ताँबे की एक परात पेडो की शाखो मे से ऊपर उठाते हुए कही लटकाई जा रही हो। बयार का एक हल्का-सा झोका वह पडा, मानो बढते प्रकाश ने इसे अशान्त पूरब के किसी कोने से धकेल दिया हो। खिडकियो के पर्दे कमरे की ओर उभरने लगे। वह शीतल झोका उसके बिस्तर तक भी पहुँचा। उसे उसका स्पर्श ऐसा लगा जैसे कोई मुलायम मखमली चीज़ उसे छू गई हो। एक ओर सुहावना प्रात था और दूसरी ओर बिस्तरे का सुख ! किसे पाए और किसे छोडे ? इसी पसोपेश मे वह पडा रहा। आखिर वह बिस्तरा छोडकर उठ ही गया। उसके पैरो के नीचे हिरन की खाल का गलीचा बिछा था, इसलिए उसके चलने मे आवाज़ होनी सम्भव नही थी। उसका पाजामा और कमीज़ पास ही लटक रहे थे। उसने चुपचाप उन्हे पहन लिया। सोना अब सम्भव नही था, दिन सामने अडा था और नाश्ते के लिए बनने वाले गर्म केको की मधुर सुगन्ध रसोईघर से आ रही थी।

दरवाज़े पर से वह बोला, "मेरी बूढी अम्मा ! मैं तुम्हे बहुत चाहता हूँ।"

खिझी हुई माँ ने उत्तर दिया, "तुम क्या, कुत्ते और घरेलू जानवर तक मुझे चाहते हैं। तुम्हारा प्यार खाली पेट के कारण होता है और इसलिए कि तुम्हारा भोजन मेरे हाथ मे होता है।"

"इसी रूप मे तुम सबसे अच्छी लगती हो, माँ !" जोडी ने कहा और खिलखिलाकर हँस पडा। वह पानी की टकी तक गया और उसने बाल्टी भरकर पानी धोने के स्थान पर रख लिया। तब उसने घुले-साबुन को बिना प्रयोग किए हाथ और मुँह को मसल-मसलकर धोया, बालो को गीला कर छिटकाया और अगुलियो से ही उन्हे कघी किया। दीवार से शीशा उतार वह स्वय को देखने लगा। उसके मुँह से अचानक ही निकल गया, "मैं अत्यन्त कुरूप हूँ, माँ !"

"अरे ! जब से बैक्स्टर वश चला है, कोई सुन्दर व्यक्ति उसमे पैदा ही कब हुआ है ?" माँ का उत्तर तैयार था।

कुचली हुई सूअरी के उस दृश्य से उसका जी मचलाने लगा था। पर उसके पिता की निगाह उससे भी परे कुछ देख रही थी। बूढी जूलिया की नाक भी उसी दिशा की ओर उठी हुई थी। कुछ कदम चलकर जोडी ने रेत को ध्यान से देखा। दिन की भाँति स्पष्ट उन निशानो को देखकर उसे जोश आ गया। वे निशान किसी बडे रीछ के पाँवो के थे। उसके सामने के विशाल दाएँ पजे मे से एक अगुली गायब थी।

"वही बूढा पाँवकटा!" जोडी बोल पडा।

पैनी ने स्वीकृति मे सिर हिलाया और बोला, "मुझे गर्व है कि तुम्हें उसके निशान अब तक याद है।"

दोनो उन निशानो पर झुककर देखने लगे कि किस दिशा से ये निशान आए और किधर गए? पैनी कहने लगा, "इसे मैं शत्रु के दरवाजे पर जाकर युद्ध करना कहा करता हूँ।"

जोडी की उत्सुकता ने जोर मारा, "पिताजी! कुत्तो मे से एक भी तो न भौंका। शायद मैं सोने के कारण न सुन पाया।"

"नही, कोई भी नही भौका। हवा उसके अनुकूल थी। क्या तुम समझते हो कि उसने अपनी यह हरकत जान-बूझकर नही की? सच यह है कि छाया के रूप मे चुपचाप ही वह अन्दर तक खिसक आया और अपनी यह नीच हरकत करके भोर होने से पहले ही खिसक भी गया।"

जोडी यह सुनकर सहम-सा गया। उसकी आँखो मे एक चित्र घूम गया। एक विशाल काली छाया-सी आई, मानो कोई झोपडी ही हिल रही है। धीरे-धीरे यह छाया उस पिछवाडे के कुज मे घुसी और सोती हुई पालतू सूअरी को नुकीले पजे की एक ही झपट मे ले उडी। तब उसके सफेद-सफेद दाँत उसकी रीढ मे धँस गए और उसे तोडकर वे गर्म और धडकते मांस तक पहुँच गए। इस बीच बेचारा सूअरी सहायता के लिए दीनता-भरी पुकार तक न कर सकी।

"लगता है उसका पेट पहले ही भरा हुआ था। उसने एक कौर भी इसमें से नही खाया।" पैनी ने ध्यान खींचा, "रीछ जब शीत की लम्बी नींद से उठता है, तब उसका पेट बहुत सिकुडा हुआ होता है। मुझे इसीलिए रीछ से नफरत है। हमारी तरह वह भी अपनी शक्ति के अनुसार वहीं से

बडी चीज़ पर हाथ डालता है, पर उसे मारकर वह खाता उतना ही है जितना उसके पेट मे समा सकता है। पर कोई और जानवर या मनुष्य जब किसी को हानि पहुँचाता है, तो ···। पर, तुम भालू के चेहरे पर अपनी करतूत के लिए कभी पछतावा नही पाओगे।"

जोडी साफ-साफ पूछ बैठा, "क्या आप बेट्सी को घर ले चलना चाहते हैं?"

पैनी ने उत्तर दिया, "इसका ऊपरी माँस अवश्य चिर गया है, किन्तु अन्दर का माँस और चर्बी अब भी सुरक्षित है।"

जोडी जानता था कि बेट्सी की कोई भी अशुभ सूचना उसे परेशान कर सकती थी। किन्तु इस क्षण उसे केवल एक उत्तेजना-भर ही अनुभव हुई। अपने परिवार की ज़मीनो मे घुसकर की गई इस अनावश्यक हत्या ने उसमे रीछ के लिए निजी शत्रुता की भावना भर दी। यह रीछ अब तक भी सब पशु पालने वालो की निगाह बचाता आया था। शिकार की धुन ने उसे बावला कर दिया। पर उसे अन्दर ही अन्दर एक भय भी अनुभव हुआ। आखिर इस पाँवकटे ने उनके घर पर ही हमला बोल दिया था।

सूअरी का एक पिछला पाँव पैनी ने और दूसरा जोडी ने पकडा। वे उसे घर की ओर ले चले। जूलिया भी अनमनी-सी उनके पीछे हो ली। वह नही समझ पा रही थी कि वे लोग शिकार के पीछे उसी समय क्यो न निकल पडे?

पैनी ने कहा, "मैं सोचता हूँ, तुम्हारी माँ को यह खबर देने का साहस मुझमे है।"

"निश्चय ही वह भी सह नही सकेगी।" जोडी ने स्वीकार किया।

पैनी बोल उठा, "बेट्सी थी ही ऐसी प्यारी। हाय, वह बहुत अच्छी थी।"

जोडी की माँ प्रतीक्षा मे द्वार पर ही खडी थी। वह इन्हे देखते ही बोल उठी, "मैं तुम्हे आवाज़ पर आवाज देती रही। आखिर इतनी देर वहाँ घूमने-फिरने के बाद तुम्हे क्या मिला? ओफ! यह क्या? यह किसने किया? हाय, मेरी सूअरी!"

पिता-पुत्र दरवाजे के अन्दर घुस आए। उनके पीछे-पीछे वह भी रोती हुई चल पड़ी।

पैनी ने जोडी को समझाया, "हम इसका मांस ऐसी जगह लटका देंगे जहां कुत्ते न पहुंच सकें।"

जोडी की मां बोल उठी, "पहले यह तो बताओ कि यह सब हुआ कैसे? किसने ठीक हमारी ही नाक के नीचे इस बेचारी को मारकर चिथड़े-चिथड़े कर दिया?"

"मां! यह काम उसी पुराने पापी—पांवकटे रीछ ने किया है! उसके पंजों के निशान बिलकुल स्पष्ट थे।" जोडी ने बात स्पष्ट की।

"और वे कुत्ते इसी बेड़े में सोते रहे?" मां ने पूछ ही लिया।

तब तक तीनों कुत्ते वहां जमा हो गए थे। उनकी नाकें उस ताज़े खून की टोह में सधी हुई थीं। उसने उनकी दिशा में सोंटी फटकारी।

"तुम, नाचीज! हमारे भोजन पर नजर गड़ाना तुम्हें खूब आता है, पर ऐसी बातों के लिए तुम उदासीन बने रहते हो!"

पैनी ने उत्तर दिया, "रीछ जैसा चुस्त कुत्ता आज तक नहीं पैदा हुआ।"

मां का गुस्सा अब तक ठण्डा नहीं हुआ था, "ये भौंक तो सकते थे!"

उसने फिर एक सोंटी उनकी ओर चटखाई और वे भाग निकले।

तब सभी लोग घर में घुसे। इस हड़बड़ा-घबटी में नाश्ते के लिए व्याकुल जोडी सीधा रसोई में घुस गया। मां यह सब सह न सकी। चिल्लाई, "निकल आओ! अपने मैले हाथ धोकर यहीं आ जाओ।"

वह भी अपने पिता के साथ हाथ-मुंह धोने के लिए गुसलखाने तक गया। इधर नाश्ता मेज़ पर आ चुका था। मां मेज पर बैठी रही। उसका शरीर अशान्त था। उसने खाना शुरू नहीं किया। जोडी ने अपनी तश्तरी सब भर ली। उबले जौ, मांस-रस, गर्म केक और दूध सभी कुछ सामने पड़ा था। वह बोल पड़ा, "खैर, कुछ भी हो! अब कुछ दिन तक हमें मांस खाना तो मिलेगा!"

मां गुस्से में बोखला पड़ी, "बस अब; फिर सारी सर्दियों-भर नहीं!"

पैनी ने स्थिति संभाली, "नहीं, मैं फौरेस्टर लोगों से कोई सूअरी पूछ देखूंगा।"

उसकी पत्नी ने दु खभरा व्यग्य किया, "हुँ ! उन राक्षसो का एहसान लोगे ? याद रखो, मेरी मर्जी उस मोटे भालू पर हाथ साफ करने की है।"

मुँह का कौर खतम होते ही पैनी बोला, "जब वह मिलेगा, मैं तुम्हारी इच्छा उसे बता दूँगा।"

जोडी हँसी से फूट पडा। माँ कतरा गई। बोली, "तुमने मुझे उल्लू समझ रखा है !"

उसकी लम्बी-चौडी बाँह को थपथपाते हुए जोडी बोला, "माँ, ज़रा इधर आओ ! सच बताना, माँ ! अगर तुम उस भालू से उलझ जाओ, तो तुम कैसी रहोगी ?"

"मैं शर्त लगाता हूँ, तुम्हारी माँ ही जीतेगी," पैनी बोल पडा।

माँ ने जैसे शिकायत की, "कोई भी नही ! पर मैं जीवन मे इतना उलझती ही नही !"

पिता-पुत्र दरवाजे के अन्दर घुस आए। उनके पीछे-पीछे वह भी रोती हुई चल पडी।

पैनी ने जोडी को समझाया, "हम इसका मांस ऐसी जगह लटका देंगे जहां कुत्ते न पहुंच सकें।"

जोडी की मां बोल उठी, "पहले यह तो बताओ कि यह सब हुआ कैसे? किसने ठीक हमारी ही नाक के नीचे इस बेचारी को मारकर चिथडे-चिथडे कर दिया?"

"मां! यह काम उसी पुराने पापी—पांवकटे रीछ ने किया है! उसके पजो के निशान बिलकुल स्पष्ट थे।" जोडी ने बात स्पष्ट की।

"और वे कुत्ते इसी बेडे मे सोते रहे?" मां ने पूछ ही लिया।

तब तक तीनो कुत्ते वहां जमा हो गए थे। उनकी नाकें उस ताजे खून की टोह मे सधी हुई थी। उसने उनकी दिशा मे सोटी फटकारी।

"तुम, नाचीज! हमारे भोजन पर नजर गडाना तुम्हे खूब आता है, पर ऐसी बातो के लिए तुम उदासीन बने रहते हो!"

पैनी ने उत्तर दिया, "रीछ जैसा चुस्त कुत्ता आज तक नही पैदा हुआ।"

मां का गुस्सा अब तक ठण्डा नही हुआ था, "ये भौंक तो सकते थे!"

उसने फिर एक सोटी उनकी ओर चटखाई और वे भाग निकले।

तब सभी लोग घर मे घुसे। इस हबडा-धबडी मे नाश्ते के लिए व्याकुल जोडी सीधा रसोई में घुस गया। मां यह सब सह न सकी। चिल्लाई, "निकल आओ! अपने मैले हाथ धोकर यही आ जाओ।"

वह भी अपने पिता के साथ हाथ-मुंह धोने के लिए गुसलखाने तक गया। इधर नाश्ता मेज पर आ चुका था। मां मेज पर बैठी रही। उसका शरीर अशान्त था। उसने खाना शुरू नही किया। जोडी ने अपनी तश्तरी खूब भर ली। उबले जौ, मांस-रस, गर्म केक और दूध सभी कुछ सामने पडा था। वह बोल पडा, "खैर, कुछ भी हो! अब कुछ दिन तक हमे मांस खाना तो मिलेगा!"

मां गुस्से मे बौखला पडी, "बस अब, फिर सारी सर्दियो-भर नही!"

पैनी ने स्थिति सँभाली, "नही, मैं फौरेस्टर लोगो से कोई सूअरी पूछ देखूंगा।"

उसकी पत्नी ने दु खभरा व्यग्य किया, "हुँ ! उन राक्षसो का एहसान लोगे ? याद रखो, मेरी मर्जी उस मोटे भालू पर हाथ साफ करने की है ।"

मुँह का कौर खतम होते ही पैनी बोला, "जब वह मिलेगा, मैं तुम्हारी इच्छा उसे बता दूँगा ।"

जोडी हँसी से फूट पडा। माँ कतरा गई। बोली, "तुमने मुझे उल्लू समझ रखा है !"

उसकी लम्बी-चौडी बाँह को थपथपाते हुए जोडी बोला, "माँ, जरा इधर आओ ! सच बताना, माँ ! अगर तुम उस भालू से उलझ जाओ, तो तुम कैसी रहोगी ?"

"मैं शर्त लगाता हूँ, तुम्हारी माँ ही जीतेगी," पैनी बोल पडा।

माँ ने जैसे शिकायत की, "कोई भी नही ! पर मै जीवन मे इतना उलझती ही नही !"



## 4

पैनी ने अपनी तश्तरी किनारे की, और उठ खडा हुआ।

"चलो, बेटे ! हमारा दिन-भर का काम तय ही है।"

सुनते ही जोडी का दिल बैठ गया। उसने सोचा शायद अनाज निलाने की ओर इशारा है। इतने मे पिता ने अपनी बात पूरी की, "आज हमे भालू को खोज निकालने का यह अच्छा मौका हाथ से न जाने देना चाहिए।"

जोडी के लिए फिर से प्रकाश हो गया। उसने सुना, "ज़रा मेरा शिकार का थैला पकडाओ। बारूद के डिब्बे भी ले लो।" और, वह कूदकर उन्हें लेने झट गया।

"ज़रा उसे देखो ! जब खेत निलाने की बारी आती है तो जैसे सारी सुस्ती उसी मे भर जाती हो और अब शिकार का नाम आते ही, उसकी चुस्ती देखते ही बनती है।" उसकी मां ने पैनी का ध्यान खीचा।

वह रसोईघर की आलमारी तक गई और बचे-खुचे मर्तबानो मे से मुरब्बे

का एक मर्त्तवान बाहर निकाल लाई। नाश्ते से बचे हुए गर्म केको पर उसे फैलाया और कपडे मे लपेटकर उन्हे पैनी के ज़रूरी चीज़ो वाली थैले मे रख दिया। उसने बचे-खुचे आलू के हलवे मेसे कुछ अपने लिए रखकर बाकी को कागज मे लपेटकर उसी थैले मे डाल दिया। उसने बचाये हुए हलवे पर एक निगाह फिर डाली, और तब इसे भी जल्दी से उसी थैले मे शेप हलवे के साथ ही रख दिया।

"यह कोई अधिक भोजन नही है। हो सकता है तुम शीघ्र ही वापस आ जाओगे।" उसने पैनी की ओर मुडकर कहा।

"हमारी प्रतीक्षा मत करना, जब तक हमे अपने सामने ही न पा लो। वैसे भी एक दिन मे कोई भूखा नही मर जाता।" पैनी ने उत्तर दिया।

माँ हँस पडी, "जोडी को सुनाओ! नाश्ते को एक घटा ऊपर होते ही उसे भूख मौत बनकर सताने लगती है।"

पैनी ने अपने थैले और बारूद के डिब्बे को कन्धे पर लटकाया और जोडी से बोला, "जोडी! ज़रा बडी छुरी लेकर जाओ और उधर सूखे माँस के भण्डार से भूने हुए मगरमच्छ की पूँछ से एक अच्छा-सा माँस का टुकडा काट लाओ।"

कुत्तो को खिलाने के लिए सुखाया हुआ माँस पीछे के धुआँघर मे रखा था। जोडी भागता हुआ वही पहुँचा और उसने लकड़ी का भारी दरवाज़ा खोल डाला। यह कमरा अँधेरा और ठण्डा था। इसमे भेड और सूअर के माँस की गन्ध भरी थी। अखरोट की राख से यह मैला था। ऊपर के शहतीरो मे माँस टाँगने की खूँटियाँ प्राय: नगी हो चुकी थी। भेडियो के कन्धो के दो-एक सूखे हुए माँस-खण्ड और सूअर की बगलो के दो माँस-खण्ड ही वहाँ लटक रहे थे। हिरन का धूप मे सुखाया हुआ कमर का माँस भी मगर-मच्छ के पकाए हुए माँस के पास ही पडा था। आगामी शीत तक बेट्सी भी इतनी मोटी हो जाती कि उसका माँस इस कमरे मे काफी जगह घेर लेता। पर बुरा हो इस रीछ का! इसने सब चौपट कर दिया। जोडी ने मगर-मच्छ मे से माँस का एक टुकडा काटा। यह सूखा होने पर भी मुलायम था। उसने इसे जीभ पर लगाकर देखा। इसका नमकीन स्वाद बुरा न था। तब वह दौडकर आँगन मे खडे पिता से आ मिला। छुडी से बारूद भरने वाली

उस पुरानी शिकारी बन्दूक को देखते ही जूलिया खुशी से फूली न समाई। रिप भी उसका साथ देने को दौड़ा आया। देखा-देखी नासमझ पेर्क ने भी बिना जाने ही पूँछ हिलानी शुरू कर दी। पैनी ने बारी-बारी सभी कुत्तों को थपथपाया। वह उनसे बोला, "तुम्हारी यह खुशी उस समय तक न रहेगी जब हमारा काम समाप्त होगा।" तब उसने जोडी से कहा, "बेटा! अच्छा हो तुम जूते पहन लो। हमें ऊबड़-खाबड़ जगहों पर से जाना होगा।"

जोडी को अब तनिक भी देर असह्य हो गई। वह अपने कमरे में दौड़ा गया और चारपाई के बीच में चमड़े के भारी जूते पहनकर पिता के पीछे ऐसे दौड़ा जैसे उसके पहुँचने से पहले ही शिकार समाप्त हो जाएगा। बूढ़ी जूलिया पीछे-पीछे भाग रही थी। उसकी नाक रीछ की खोज में उठी हुई थी।

"पिताजी! यह पीछा बहुत ठण्डा नहीं रहेगा। मेरी समझ में अभी वह बहुत दूर नहीं गया होगा और उसे हम पकड़ ही लेंगे।"

"निकल तो वह बहुत दूर गया होगा, पर फिर भी उसे पकड़ने का मौका हमें बहुत है, बशर्ते कि हम उसे आराम से चलने का अवसर दें ताकि वह कहीं लेट जाय। यदि रीछ को पता चल जाए कि उसका पीछा हो रहा है तब वह बहुत तेज़ चाल से भागने लगता है, अन्यथा उसकी सादी चाल ऐसी होती है, जैसे वह इस सारे संसार को अपनी ही आरामगाह या भोजन-शाला समझता हो।" पिता ने जोडी को समझाया।

पिछले कुंजों में से होती हुई वह खोज दक्षिण की तरफ बढ़ी। पहली संध्या की वर्षा के कारण रेत पर पड़े हुए पाँव के निशान स्पष्ट थे। पैनी ने ध्यान से देखकर कहा, "उसका एक पाँव तो काफी लम्बा-चौड़ा है।"

कटहल का वह कुंज कुछ दूरी पर एकाएक समाप्त हो गया। ऐसे लगता था मानो किसी ने उनके बीज श्रम से बोए हों और यहाँ आकर बीजों का थैला खाली हो गया हो। अगली जमीन कुछ नीची थी और उस पर लम्बे पत्ते के चीड़ लगे थे।

"पिताजी! आपका क्या अनुमान है, वह कितना बड़ा होगा?" जोडी ने पूछा।

"वह काफी बड़ा है। अभी उसका वजन पूरा नहीं है। कारण, वह

अभी शीत की लम्बी नीद से उठा है और इस कारण उसका पेट सिकुडा हुआ है। किन्तु इन निशानो को देखो। ये उसकी विशालता को बता रहे हैं। यह ध्यान देना कि पिछले निशान गहरे है। हिरण के निशान भी इसी किस्म के होते है। हिरण या भालू यदि मोटे होगे तो उनके पिछले पजे ऐसे ही भारी होगे। यदि हिरणी या बच्चा हो तो वह हलके निशान छोडेगा। प्रायः उसके पजो के अगले खुरो का ही निशान मिलता है। पर, यह रीछ काफी विशाल है।"

"उसे देखने पर आप डर तो नही जाएँगे ?"जोडी पूछ ही बैठा।

पैनी ने उत्साह मे भर उत्तर दिया, "नही, पर कभी-कभी बात बिगड भी जाती है। मुझे इन कुत्तो का सदा डर रहता है। ऐसे मौको पर इनके साथ ही बुरी बीतती है।"

उसकी आँखें चमकी।

"बेटे ! मेरा खयाल नही कि तुम तनिक भी डरोगे ?"

जोडी ने उत्तर दिया, "नही, मै नही डरूँगा। पर यदि मैं कही डर ही गया तो क्या पेड पर चढना ठीक रहेगा ?"

पैनी हँस पडा, "हाँ, बेटे ! यदि तुम न भी डरो, तब भी पेड पर चढकर यह तमाशा अच्छी तरह देखा जा सकता है।"

कुछ देर वे दोनो चुपचाप चलते रहे। बूढी जूलिया निश्चय ही साथ-साथ बढ रही थी। रिप भी उसके कदमो का अनुसरण करता आ रहा था। वह उसके झिझकने के साथ ही रुक जाता और उसके छीकने पर छीक पडता। नाक मे घास अडते ही वह फूंक से उसे उडा देती। पेर्क कभी इधर कभी उधर दौडता हुआ चल रहा था। एक जगह अपने ही पास से गुजरते हुए खरगोश का बुरी तरह पीछा करके उसने उसे चीर डाला। जोडी ने उसे पीछे से पुकारा।

पैनी ने समझाया, "उसे जाने दो ! जब उसे अकेलापन खलेगा, वह फिर हमसे मिल जाएगा।"

बूढी जूलिया अचानक जोर से चीखी और मुडकर देखने लगी। पैनी समझ गया और बोला, "देखो, वह चतुर बूढी कुतिया उसकी दिशा बदली हुई बता रही है। शायद वह कँटीली घास वाले किसी जोहड की ओर जा

रहा है। उसका यही ढग है। हम कही इधर-उधर से बढकर उसे अचरज मे डाल देगे।"

जोडी को अब अपने पिता की शिकारी प्रतिभा का कुछ-कुछ रहस्य समझ आने लगा। उसने सोचा, यदि यहाँ फौरेस्टर होते तो वे मरा हुआ जानवर पाते ही उस भालू का पीछा करने लगते। वे चीखते और चिल्लाते! उनके उकसाने पर कुत्ते भौंकने लगते और यह जगल उसकी प्रतिध्वनि से गूंज उठता। इस सबसे वह बूढा खुर्राट उनके आने की सूचना पा लेता। पर उसका पिता उनके मुकाबले मे दसगुनी अधिक सफलता पा लेता था। यह नाटा आदमी इसी बात के लिए मशहूर था।

जोडी ने उत्सुकता दिखाई, "आप निश्चय ही अनुमान कर सकते हो कि कब कौन प्राणी क्या करेगा।"

"यह काम तुम भी कर सकते हो! जगली जानवर आदमी से अधिक चुस्त और अधिक बलशाली होता है। जगली जानवर से अधिक मनुष्य के पास है—उसकी तीक्ष्ण सूझ! वह रीछ से अधिक तेज नही भाग सकता। किन्तु यदि वह उनकी हरकतो का पूरा अनुमान भी न कर सके, तो वह एक अच्छा शिकारी नही कहला सकता।"

अब चीड तनिक बिखरे हुए आने लगे थे। अचानक ही हरियाली के हरे-भरे गदेलो से लदी भूमि दिखाई दी। यहाँ सनावर और छोटे ताड वृक्ष बहुत थे। नीचे की छोटी वनस्पतियाँ भी पर्याप्त घनी थी। उनमे जगली गुलाब की झाडियाँ भी मिली हुई थी। तब दक्षिण-पश्चिम की तरफ चरागाह जैसा एक लम्बा-चौडा मैदान दिखाई दिया। पर यहाँ की घास कँटीली थी। यह घुटने घुटने ऊँची पानी मे उगी हुई थी। इसकी कठोर कँटीली घासे इतनी घनी थी, जैसे बाकायदा कोई सब्जी बोई गई हो। हवा का एक झोका खुले मैदान पर से गुजरा और घास लहरा उठी। घास के पत्तो के अलग होते ही छोटे-छोटे तालाब का पानी साफ दिखने लगा। पैनी का ध्यान शिकारी कुतिया की ओर लगा था। जोडी को यह पेडो-रहित विस्तार घने जगल की बजाय अधिक आकर्षक लगा। उसे लगा कि किसी भी समय एक विशाल काली आकृति ऊँची उछलकर सामने आ सकती है। उसने धीरे से पूछा, "क्या हमे चक्कर काटकर बढना चाहिए?"

पैनी ने स्वीकृति मे सिर हिलाया। उसने बहुत धीमी आवाज मे कहा, "हवा उलटी बह रही है। मेरे विचार मे वह इधर की ओर नही आ रहा।"

शिकारी कुतिया किनारे की सूखी ज़मीन पर टेढी-मेढी चल रही थी। ऐसा लगता कि रीछ की गन्ध जैसे बार-बार पानी की ओर मुडी हो। एक जगह उसने अपना सिर पानी मे डुबोया। ऐसा उसने, प्यासी होने से नही, निशानो की गन्ध खोजने के लिए किया। तब वह बहुत विश्वासपूर्वक जोहड के मध्य की ओर बढ पडी। रिप और पेर्क अपने पाँव छोटे देखकर आधे से ही लौट आए और एक ऊँची जगह खडे होकर अपने को झाडने और जूलिया को देखने लगे। पेर्क कुछ ही क्षण मे भौंक पडी। पैनी ने उसे पीटकर शान्त किया। जोडी सावधान होकर अपने पिता के पीछे चलता रहा। एक नीला सारस उसके ऊपर से अचानक ही निकल गया और वह चौंक गया। जोहड का पानी उसके पाँवो के लिए असह्य रूप मे ठण्डा था। उसका पाजामा अत्यन्त गीला और चिपचिपा हो उठा था। कीचड उसके जूतो मे भर गया था। तब ऐसी जगह आई, जहाँ पानी कुछ आराम देने वाला था। उस ठण्डक मे घूमना भी अच्छा लग रहा था। उनके पीछे उठती हुई रेत जैसे भँवर-सी बना रही थी।

पैनी फुसफुसाया, "शायद वह फायर प्लाट को खा रहा है।"

उसने बाणनुमा चपटे पत्तो की ओर इशारा किया। कुछ पत्तो के किनारो पर दाँतो के निशान नुकीले और टेढे-मेढे थे। कुछ पत्ते डण्डियो-समेत खाये गए थे।

"वसन्त मे यही ताकतवर भोजन है। सर्दियाँ बिताकर बाहर निकलने पर पहले-पहल रीछ इसे ही अपना भोजन बनाता है।"

पास झुककर उसने एक पत्ते को छुआ। इसका मसला हुआ किनारा भूरा-सा पड गया था। देखकर वह बोला, "वह दुष्ट एक रात पहले भी यहाँ आया था। यही कारण है कि उसे इससे बढकर बेट्सी की भूख भी जग पडी।"

यहाँ आकर कुतिया भी रुक गई। अब गन्ध जमीन मे न रहकर सर-कण्डो और घास के ऊपर से होकर गुज़री थी। यह शायद उसके बालो की रगड की गन्ध थी। तब उसने अपनी नाक एक दलदली पौधे की ओर गाडी और फिर आकाश की ओर उठा दी। फिर, जैसे दिशा का निश्चय करके

वह दक्षिण की ओर तेज चाल से चल पडी। अब पैनी भी खुलकर बोलने लगा।

"इस जूलिया का कहना है कि वह भोजन से निश्चित होकर अब घर की ओर बढ रहा है।"

वह कुतिया पर निगाह रखता हुआ जरा कुछ ऊँची जगह से बढने लगा। वह तेज़ी से चलता जाता था और बातें करता जाता था।

"बहुत बार मैंने रीछ को फायर प्लाट को चांदनी मे खाते देखा है। वह खाते-खाते जोर की सांस लेता है, घास को इधर-उधर बिखेर देता है, कीचड उछालता है और गुर्राता है। वह पत्तो की डण्डियो को चीरता है और अपने मुँह को आदमी जैसे ही सिकोडता है। तब कुत्ते के समान इधर-उधर सूँघकर निश्चिन्तता मे चबाने लगता है। रात के पक्षी उसके ऊपर चीखते हुए उड जाते है। मोटे-मोटे मेढक ऐसे टर्राते है, जैसे कुत्ते भौंक रहे हो। उस चांदनी मे जगली बत्तखो की आवाज ऐसे लगती है, जैसे वे 'सांप ! सांप !! सांप !!!' चिल्ला रहे हो और फायर प्लाट की पत्तियो पर पडी पानी की बूंदे ऐसे चमक रही होती हैं, मानो किसी बड़े चमगादड की आँखें हो !"

पैनी का यह वर्णन सजीव नजारे से कुछ कम न था। जोडी उत्साह से भर उठा, "पिताजी ! मैं भी फायर प्लाट को खाते हुए रीछ को अवश्य देखूंगा।"

"अवश्य ! तुम भी मेरी तरह बडी उम्र के बनो ! तब तक तुम न जाने और कितनी नई, विचित्र और कुतूहलपूर्ण चीजें देखोगे।"

"क्या आपने उन्हे भोजन करते-करते मार भी दिया ?" उसे नई उत्सुकता जगी।

"नही, बेटे ! ऐसे कई मौको पर मुझे अपनी बन्दूक काबू मे रखनी पडी है, जब कोई जानवर भोला और अनजान बनकर भोजन कर रहा हो। मै उसे देखता अवश्य रहा हूँ। ऐसे अवसर पर या जोडा बांधते समय किसी पशु को मारना मेरी आदत के विपरीत है। हां, कई ऐसे अवसरो पर स्वभाव के विरुद्ध मारना भी पडा है, विशेषकर जब परिवार भूखा रहने लगा हो और मांस खोजना आवश्यक हो गया हो। पर, तुम फौरेस्टर लोगो

जैसे कभी न करना कि विना जरूरत भी, केवल मज़े के लिए ही, शिकार करते फिरो। वह उतना ही बुरा है, जितने ये भालू ! सुना तुमने ?"

"हाँ, जी !"

जूलिया एकाएक चिल्लाई। निशान अब एकदम दायी ओर मुड गए थे। पैनी वोल उठा, "मुझे यही डर था, इन्ही तेजपात की झाडियो मे "

लाल फूलो वाले तेजपात का यह झुण्ड पार करना असम्भव था। स्थान-स्थान पर वदली हुई-सी यह धरती शिकार के लिए अच्छी जगह थी। वह वूढा रीछ खाना खाने के लिए ऐसी जगह पर माँद से अधिक दूर नही निकलता होगा। तेजपात की झाडियाँ वाड की झाडी की भाँति एक-दूसरे से सटी खडी थी। जोडी शका मे पड गया कि रीछ अपने भारी-भरकम शरीर के साथ इनमे से कैसे गुज़रा होगा। पर कही-कही ये झाडियाँ छिदरी और छोटी भी थी, जिनके वीच से वह एक पगडडी-सी साफ देख सकता था। इस पर से अनेक प्राणी आते-जाते थे। हिरण के पीछे वनविलाव, उससे पीछे वडी विल्ली, और फिर छोटे रीछ, खरगोश, ऊदविलाव आदि छोटे पशु आदि वहाँ से निकलते थे। सभी के पाँव के निशान दीख रहे थे। ये छोटे पशु भी वही पेट भरते थे। परन्तु उन्हे वही पर खाने आये हुए दूसरे भयानक पशुओ से सावधान रहना पडता था।

"मुझे लगता है, अपनी वन्दूक भर लेनी चाहिए।" पैनी ने कहा।

उसने जूलिया को इशारे से कुछ क्षण प्रतीक्षा करने को कहा। वह जान-बूझकर आराम के वहाने लेट गई और रिप और पेर्क भी उसके साथ लेट गए। वारूद का डिव्वा जोडी ने उठाया हुआ था। पैनी ने उसे खोलकर उसमे से कुछ वारूद निकालकर वन्दूक की नाली मे भरा। अपने शिकार के थैले मे से वालो के गुच्छे जैसी स्पेनी काई निकालकर भरी और उसे पेड से ठोककर ठीक कर दिया। तव कुछ हल्के ढले छर्रे उसने भरे और फिर वही काई भर दी। अन्त मे इसके ऊपर टोपी लगाकर उसे हलके से छड से ठीक कर दिया। तैयार होकर उसने जूलिया से कहा, "शावाश जूलिया ! अव जरा ढूंढ निकालो उसे।"

अव तक यह खोज कुछ आरामदेह रही थी। इसे खोज न कहकर आनन्ददायक भ्रमणमात्र कहा जा सकता था। अव वे तेजपात की झाडियो

मे चल रहे थे, छिपते-से । उन झाडियो से छोटी-छोटी चिडियाँ उड पडती थी । उनके डैनो की फडफडाहट चौंका देने वाली थी । जमीन मुलायम और काली थी, और झाडियो मे दोनो ओर रगड की हल्की आवाज हो रही थी । निशानो पर कही-कही झाडियो के छिदरी होते ही धूप पड जाती थी । अनेक पशुओ के आने-जाने के बाद भी भालू के शरीर की गन्ध सबमे ऊँचाई तक छूने के कारण अब भी स्पष्ट अनुभव की जा सकती थी । दूर से जूलिगा को जैसे कुछ दिखाई दिया । वह तेजी से दौड पडी । पैनी और जोडी को भी उसका पीछा भागते हुए करना पडा । पैनी ने बन्दूक को अपने दाएँ हाथ मे ले लिया । उसने इसकी नली का रुख पलट दिया, ताकि अगर वह गिर पडे और गलती से यह बन्दूक चल जाय, तब भी इसका शिकार सामने के कुत्ते न बनें । पीठ-पीछे की एक शाख टूटी और जोडी ने डरकर पिता की कमीज पकड ली । उसी समय एक गिलहरी जैसे हँसती हुई-सी उधर से निकल गई ।

अब झाडियाँ छिदरी हो गई थी । जमीन नीची और गीली हो गई थी । अब धूप काफी बडी मात्रा मे छन छनकर आने लगी थी । अब चौडनुमा पत्तो वाली कुछ ऊँची किन्तु पतली झाडियाँ आने लगी थी । जिस राह पर से भालू गुजरा, वहीं कोई कुचली हुई शाख पडी होती थी । इसकी मसली हुई पत्तियो की मधुरता उष्ण वायु को भी मद्धिम बना रही थी । एक पतली-सी लता उलटी होकर तन गई थी । पैनी ने इसकी ओर इशारा किया । जोडी समझ गया । वह रीछ यहाँ से अभी कुछ ही क्षण पहले निकला था । बूढी जूलिया उत्साह से भर उठी थी । उसके लिए निशानों की खोज ही खूराक का काम कर रही थी । उसने अपनी नाक उस गीली धरती मे गडा दी । झाडी की एक चिडिया ऊपर से चीखती हुई उड गई, मानो पूछ रही हो, "क्या चुनते हो ?"

दलदल समाप्त होते ही एक हल्की-सी धारा दिखाई दी, जो बहुत चौडी नही थी । उभारवाले पाँवो के निशान इस पर साफ बिखरे हुए थे । एक जल-हिरन ने जैसे उत्सुकता से सिर उठाया और वह भी बहाव की दिशा मे भूरी गिलहरियो की ओर भाग गया । धारा के पार छोटे-छोटे ताड़नुमा वृक्ष लगे हुए थे । पार की दलदल के परे तक भी ये निशान उसी

तरह चले गए थे। जोडी ने देखा कि उसके पिता की कमीज पीठ पर गीली हो उठी थी। उसने अपनी कमीज़ की आस्तीन देखी, वे भी गीली थी। अचानक ही जूलिया भौंकी और पैनी ने दौडना शुरू किया। पैनी चिल्लाया, "उधर, नदी की धार पर ! वह धार के पार जाने की कोशिश कर रहा है।"

उसकी आवाज उस दलदल मे भर गई। शाखे टूटने लगी। भालू एक काले तूफान के रूप मे बाधाओ को कुचलता हुआ बढे जा रहा था। कुत्ते लगातार भौक रहे थे। पर जोडी के कानो मे केवल अपने दिल की धडकन की ही आवाज आ रही थी। बाँस की एक शाख उसके रास्ते मे अटकी। वह घुटनो के बल गिरकर फिर से खडा हो गया। वह देख रहा था, उसके पिता के पाँव साइकिल के पैंडल की भाँति चल रहे थे। अगर कुत्ते उसे अपनी भौक से रोक न पाए तो शायद रीछ वह धार पार कर ही जाएगा।

धारा के किनारे एक खुली जगह थी। जोडी ने खुले मे वह आकार-हीन काली-सी कुछ बडी चीज़ देखी। पैनी ने रुककर बन्दूक तानी। उसी समय जैसे एक छोटा-सा उडन-बम उस अस्पष्ट-सी आकृति पर आ गिरा हो। यह जूलिया थी। वह अपने शत्रु पर टूट पडी थी। वह कूदी और फिर पीछे हटी। हटते ही फिर कूदी। रिप भी उसकी बगल मे कूदकर जा पहुँचा। रीछ घूमकर उस पर टूट पडा। तब जूलिया उसके दूसरी बगल पर टूट पडी। पैनी बन्दूक सँभाले खडा रहा। कुत्तो के कारण वह दाग न सकता था।

इतने मे ही भालू धोखे से अपने को उदासीन दिखाने लगा, जैसे वह भौचक सा होकर सुस्त व अनिश्चय मे खडा रह गया हो। कभी वह पीछे हटता था, कभी आगे बढता था। बच्चे की-सी आवाज मे वह रोने लगा। एक क्षण के लिए कुत्ते पीछे को हटे। गोली दागने का यही सबसे अच्छा मौका था। पैनी ने बन्दूक कन्धे पर रखी। बायी आँख की सीध मे मक्खी ठीक से बिठाई और घोडा दबा दिया। एक हलका-सा धमाका हुआ। तब उसने फिर से मसाले को दबाकर घोडी दबाई। उसके माथे पर पसीना आ गया था। नली की हथौडी ने फिर ठीक काम न किया। पर तभी जैसे एक काली आँधी उठी और उन कुत्तो पर टूटी। रीछ की इस तेजी का अनुमान भी न किया जा सकता था। उसके चमकते हुए पजे और सफेद दाँत बिजली के समान कौंध उठे। वह हर दिशा मे गरजा, घूमा और दाँत गडगडाता हुआ

टूटा। कुत्ते भी तेज हो चुके थे। जूलिया पीछे से और रिप आगे से उस पर बारी-बारी से हमला करते थे।

जोडी को जैसे लकवा मार गया हो! उसने देखा कि उसके पिता ने नली के हथौडे को फिर से ठीक किया और आगे भुका हुआ खडा रहा। अपने सूखे होठो को वह चाट रहा था। उसकी अँगुली घोडी पर थी। तभी जूलिया ने रीछ के दाएं पाखे मे जैसे छेद कर दिया हो। रीछ घूमा, पर जूलिया पर नही, अपने बायी ओर के रिप पर! उसने उसे दोनो पाखो से पकडकर साथ ही भाडियो मे पटक दिया। तभी पैनी ने फिर से घोडी दबा दी। इस बार एक बहुत बडे धटाके की आवाज हुई। झटके से पैनी खुद पीछे गिर पडा। बन्दूक से धमाका आगे की बजाय पीछे हुआ था।

तब तक रिप फिर से अपने काम पर आ डटा था और रीछ की गर्दन पकडने की कोशिश मे था। जूलिया पीछे की ओर से तग करने मे लगी ही हुई थी। रीछ एक बार फिर धारा के तट पर भूमता हुआ खडा हो चुका था। उसके चेहरे को दायी ओर से बारूद ने काला कर दिया था। रीछ ने एक ही झटके मे रिप से छुटकारा पाया और जूलिया को घुमाकर पटका। उसने उसकी छाती को अपने पजो मे भरकर उठाया। वह जोर से चिल्ला उठी। रिप ने जोर से पीछे से आकर उसके पिछले हिस्से मे अपने दांत गडा दिए।

जोडी चिल्ला पडा, "वह जूलिया को मार डालेगा।"

पैनी उन भाडियो मे होकर दौड पडा और उसने रीछ की पसलियो मे अपनी बन्दूक गडा दी। जूलिया जकडी हुई थी, फिर भी उसने रीछ की गर्दन को नीचे से दबोच लिया था। रीछ एकदम ही गुर्राकर मुडा और धारा के बीच मे कूदकर गहरे पानी मे चला गया। दोनो कुत्तो ने उसे घेरे रखा। रीछ पागल होकर तैर रहा था। रीछ की गर्दन के नीचे जूलिया का केवल सिर ही पानी से बाहर दिखाई दे रहा था। रिप उसकी पीठ पर बडी बहादुरी से सवार था। रीछ धारा के परले तट तक पहुँच गया था और उसके ऊँचे तट पर चढने की कोशिश कर रहा था। जूलिया की पकड ढीली पड गई और वह जमीन पर घायल दशा मे गिर पडी। अब रीछ घनी झाडियों की ओर मुड पडा। एक क्षण तक और रिप उसके साथ रहा।

तब अनिश्चय मे पडकर वह उसे छोडकर फिर धारा की ओर लौट पडा। वहाँ आकर वह जूलिया के पास रुका, उसे सूँघा और वही कमर झुकाकर बैठ गया। वह वही से पानी के इस ओर देखकर चिल्लाने लगा।

पैनी ने उनका ध्यान खीचा, "रिप, इधर! जूलिया, यहाँ!" रिप ने अपनी मोटी-सी पूँछ हिलाई और फिर शान्त-सा बैठ गया—बिना हिले-डुले। पैनी ने शिकार मे बजाने वाला सीग उठाया और उससे एक लम्बी आवाज़ निकालने लगा। जोडी ने देखा, जूलिया ने एक बार सिर उठाया और फिर वैसे ही गिर पडी।

पैनी बोला, "मुझे उसे लेने जाना पडेगा।"

उसने अपने जूते उतारे और धारा के तट से उतरकर पानी मे उतर गया। तट से कुछ ही दूरी पर एक तेज़ धार उसे बहा ले चली, जैसे वह भी कोई शहतीर हो! वह बहुत दूर तक इसका मुकाबला करता रहा। जोडी ने बहुत दूरीपर, धारा के बहाव की दिशा मे देखा कि उसके पिता के पाँव पानी से निकलते समय लडखडा रहे थे, वह अपनी पलको से पानी पोछ रहा था और तट पर ही अपने कुत्तो की ओर वापस लौट रहा था। तब जूलिया के पास आकर वह झुका और उसे उसने बगल मे ले लिया। अबकी बार वह धारा के कुछ ऊपर की ओर चला गया और तब धारा मे कूदा। यद्यपि इस बार भी उसने अपनी खाली बाँह से पानी काटा, किन्तु फिर उस तेज धार मे पडते ही वह निकला। पर इस बार वह जोडी के समीप ही आकर रुका। रिप उसके पीछे-पीछे तैरकर आ गया था। रिप ने बाहर निकलकर अपने को झटका गया। पैनी ने भी बाहर निकलकर उस शिकारी कुतिया का नीचे लिटा दिया। उसने जोडी से कहा, "यह बुरी तरह घायल हुई है।"

उसने अपनी कमीज़ उतारकर उसे कुतिया पर लपेट दिया और कमीज की बाँहे कस दी। इस प्रकार एक गठरी-सी बन गई और उसने उसे पीठ पर लटका लिया।

तब वह पुत्र से बोला, "अब यह निश्चित हो गया है कि मुझे एक नई बन्दूक लेनी होगी।"

उसके गाल पर बारूद का काला निशान पहले ही छाला बन चुका था।

"पिताजी ! गडबड क्या हुई ?"

"सभी कुछ ! नली मे पडने वाली छड ढीली है। मुझे यह बात पता थी। मैंने इसे दो-तीन वार टेढा करके वरता और इसने ठीक काम किया। पर आज जव इसने पीछे आग उगली तो पता चला कि इसका मुख्य स्प्रिंग भी काम करना वन्द कर चुका है। अच्छा, अव हमे चलना चाहिए। शायद तुमने सोचा कि बन्दूक की नली फट गई है।" पिता ने समझाते हुए कहा।

सबके सब उस दलदल मे होकर घर की ओर चल पडे। पैनी उत्तर और पश्चिम की ओर होकर चल रहा था।

"अव मैं रीछ का शिकार कर लेने तक एक मिनट भी आराम नही करूँगा। बस मुझे नई वन्दूक और कुछ समय चाहिए।" उसने प्रतिज्ञा की।

अचानक ही पैनी की पीठ पर लदी कुतिया के वदन से टपकते खून को देखकर जोडी का जी घवरा उठा। उसने स्पष्ट किया, "पिताजी ! मैं आगे चलना चाहता हूँ।"

पैनी ने मुडकर उसकी ओर देखा और कहा, "मूर्छित होकर मुझ पर गिरने का यत्न न करो।"

जोडी तुरन्त सँभला, "नही, पिताजी ! मैं आपके आगे राह खोजता चलूँगा।"

"अच्छा, तो वढो। देखो सैर के सामान का वह थैला खोलकर रोटी इसमे से लेकर कुछ टुकडे खालो। तुम्हारी तवीयत ठीक हो जाएगी।"

जोडी ने थैले मे हाथ से कुछ देर टटोला और अन्त मे मीठे केक का वडल निकाल लिया। जगली वेरी के मुरव्वे को वह वडा तीखा और ठडा वताया करता था। पर अव उसे चखने के वाद अत्यन्त स्वाद पाकर वह वहुत शर्मिन्दा हुआ। वह कई केक जल्दी-जल्दी निगल गया। कुछ केक उसने पिता को भी दिए।

"खूराक काफी तसल्ली देती है," पैनी ने कहा। एक गुर्राहट-सी झाडियो मे से आई। कोई छोटी-सी आकृति उनके पीछे-पीछे आ रही थी। यह दोगला पेर्क था। गुस्से मे जोडी ने उस पर एक लात जमाई।

पैनी को दया आई, "उसे मत मारो। मुझे सारे समय यही सन्देह था।

कुछ कुत्ते शेर-दिल होते हैं और कुछ उससे बिलकुल उल्टे।"

आखिर पेर्क भी उस कतार के अन्त मे आ मिला। जोडी रास्ता बना रहा था। राह मे कुछ पेड गिरे पडे थे। पर वे इतने मोटे थे कि उसके हिलाए हिलने वाले न थे। कुछ जगली वृक्ष अत्यन्त कठोर थे। उन्हे पैनी भी न हिला सका। लाचार जोडी को या तो उनका चक्कर काटकर या फिर उनके नीचे से सरककर जाना पडा। पैनी को अपनी पीठ के बोझ के कारण राह बदलनी पडती थी। दलदल सटी हुई और गीली थी। रिप हाँफ रहा था। जोडी का पेट भरा हुआ था। फिर भी उसका हाथ थैले मे पहुँच गया। अब उसने आलू का हलवा निकाला। उसके पिता ने हिस्सा बँटाने से मना कर दिया। तब जोडी ने रिप के साथ बाँटकर वह भी खा लिया। उसके विचार मे पेर्क किसी चीज के लायक न था।

दलदल पार कर के चीड के जगल मे पहुँचने पर सबको ही सन्तोष हुआ। हालाँकि आगे का जगल एक-दो मील तक फैला हुआ था, पर उन्हे वह हलका और घुसने लायक लगा। दलदल लाँघने की अपेक्षा जगली सनावरो, ताडनुमा छोटे पेडो, और गॉलबैरी के वृक्षो को पार करना उन्हे सरल और आरामदेह लगा। जब तक उन्हे अपनी ज़मीन के चीड के पेड दिखाई दिए, दोपहर ढल चुकी थी। वह सारा जत्था कतार बनाकर पूरब की ओर की रेतीली पगडडी से अपने बाडे मे घुसा। रिप और पेर्क आगे-आगे दौडकर सरू के पेड को सीचने वाली नाली पर पहुँच गए। यहाँ चूजे पानी पीते थे। माँ दरवाज़े पर ही बैठी थी। उसके सामने मरम्मत के लिए ढेर-सा सामान पडा था।

वह दूर से ही पूछ बैठी, "एक मरा हुआ कुत्ता! बस, रीछ नही?"

पैनी ने उत्तर दिया, "नही, अभी मरी नही। ज़रा तुम मुझे पानी, कुछ चिथडे और एक बडी सूई और धागा दे दो।"

सहायता के लिए वह तुरन्त दौड पडी। जोडी ऐसी कठिनाइयो मे उसकी शारीरिक चुस्ती व सामर्थ्य को देखकर सदा ही अचरज मे पड जाता था। पैनी ने बेचारी जूलिया को बरामदे के फर्श पर लिटाया। वह हलके से गुर्राई। जोडी उस पर झुका और उसका सिर हिलाने पर जूलिया ने उसे दाँत दिखा दिए। वह अधीर होकर माता के पीछे-पीछे दौडा। वह

पुराने कपडो मे से पट्टियाँ फाड रही थी। उसे देखते ही वह बोली, "तुम पानी लेकर चलो।" जोडी पानी के लिए दौड पडा।

पैनी तब तक कोमल पत्तो की एक गठरी लेकर बरामदे मे लौट आया, ताकि जूलिया के आराम के लिए गद्देदार बिस्तर बनाया जा सके। तब तक उसकी पत्नी मरहमपट्टी का सारा सामान लेकर आ गई। पैनी ने खून से सनी अपनी कमीज़ जूलिया के शरीर से खोली और उसके लम्बे-चौडे घावो को धो डाला। जूलिया ने रत्ती-भर विरोध न किया। उसने ऐसे पजो की चोटे पहले भी सही थी। पैनी ने अधिक गहरे दो घावो को सी दिया और राल को पीसकर उन सब घावो मे भर दिया। एक बार तो वह चीखी, पर बाद मे उसने पैनी को चुपचाप अपना काम करने दिया। पैनी ने बताया कि एक पसली टूट गई थी। वह उसे ठीक से नही बिठा सकता था। पर उसे यह भी पता था कि यदि जूलिया जीवित रही, तो यह पसली स्वय ही जुड जाएगी। उसका खून बहुत बह चुका था। उसकी साँस बहुत तेज़ और उथली-उथली चलने लगी थी। पैनी ने उसे उठाया और बिस्तर व सभी चीजो को लेकर उसे सुलाने के लिए दूसरे कमरे मे ले चला।

उसकी पत्नी पूछ बैठी, "तुम उसे कहाँ ले चले ?"

"अपने सोने के कमरे मे। मुझे आज रात उसकी निगरानी करनी है।"

वह खीझ उठी, "पर, एजरा बैक्स्टर ! मेरे कमरे मे नही। मैं उसके लिए सब उचित बाते करने को तैयार हूँ, पर अपने कमरे मे नही रखूँगी। मैं यह नही सह सकती कि तुम सारी रात उठ-उठकर उसे देखते रहो और उस तरह मेरी नीद तोडते रहो। पिछली रात भी मैं आधी नीद तक न ले सकी।"

पैनी बोल उठा, "तो, मै जोडी के साथ सो जाऊँगा और जूलिया को वही रख लूँगा। पर, आज की रात उसे मैं किसी भी दशा मे अकेले किसी कोठरी मे नही छोडूंगा। जोडी, जरा पानी तो लाओ।"

तब वह उसे जोडी के कमरे मे ले गया और पत्तो का गदेला-सा बना कर उस पर जूलिया को लिटा दिया। वह पानी तक भी नही पी रही थी। पैनी ने उसका मुख खोलकर उसमे पानी डाला। तब जोडी की ओर मुँह करके उसने कहा, "अब उसे आराम करने दो। आओ, चलकर और काम

निवटा ले।"

बाडे.मे आज अजीव-सी गर्मी अनुभव हो रही थी। जोडी ने मुर्गीखाने से अडे इकट्ठे किए, गाय को दुहा, बछडे को उसके पास छोडा और माँ के लिए लकडियाँ काट लाया। पैनी वैगी लेकर दो वाल्टियो मे पानी भरने सोते तक गया। उधर माँ साँझ का खाना वनाने मे लगी थी। सूअर का ताज़ा माँस और दो सब्जियाँ उसने पका ली थी। उसे अफसोस हुआ, "काश ! आज एक टुकडा रीछ के माँस का भी खाने को मिलता !"

जोडी की भूख फिर तेज हो गई थी, पर पैनी को भूख कतई नही लगी थी। जूलिया को कौर देने के लिए वह दो वार उठा, किन्तु उसने इन्कार कर दिया। तब श्रीमती वैक्स्टर उठी और मेज आदि साफ करने लगी। उसने शिकार के वारे मे कुछ अधिक न पूछा। जोडी की इच्छा थी कि इस वारे मे उसे कुछ वोलने का मौका मिले, ताकि जिस राह की थकान, लडाई और डर ने उसे घेर रखा था, उनका प्रभाव कुछ कम हो सके। पैनी चुप था। जोडी की ओर किसी ने भी ध्यान न दिया और वह अपने खाने मे मस्त रहा।

सूर्य लाल पडकर अस्त हो गया। रसोई मे पडने वाली छाया वढते-वढते अन्धकार वन गई।

पैनी ने कहा, "मैं थक गया हूँ। मुझे अभी से सोना होगा।"

जोडी के पाँव भी जूते की कठोरता से छाले वाले और खुरदरे हो चुके थे। वह भी वोल पडा, "मैं भी !"

तब माँ की वारी थी।

"मैं तो थोडी देर काम करूँगी। मैंने दिनभर खाली वैठे चिन्ता करने के सिवाय कुछ नही किया, या फिर थोडा-सा कीमा पकाया।"

पैनी और जोडी सोने चले गए। दोनो कपड़े उतार रहे थे। चारपाई तग थी। पैनी वोला, "अगर तुम भी अपनी माँ जितने मोटे होते तो मैं इस चारपाई पर न सो सकता, या फिर हममे से कोई एक नीचे गिरता।"

पर, उस चारपाई पर उन जैसे दो पतले शरीरो के समाने के लिए काफी जगह थी। धीरे-धीरे पश्चिम की रही-सही लाली भी विदा हुई और कमरे मे अन्धकार भर गया। कुत्ता सो रहा था। कभी-कभी उसकी गुर्राहट निकल जाती थी। चाँद उठना शुरू हुआ और एक ही घटे मे पूरा उठ

आया। कमरा चाँदनी से नहा उठा। अचानक जोडी को पैरो मे जलन अनुभव हुई। उसने घुटने समेटे। पैनी पूछ बैठा, "जाग रहे हो, बेटे !"

जोडी ने उत्तर दिया, "मैं अब भी जैसे चल ही रहा हूँ।"

"आज हम कुछ ज्यादा दूर निकल गए थे। बेटे, तुम्हे रीछ का शिकार कैसा लगा ?"

अपने घुटने रगडते हुए जोडी बोला, "ठीक है। मुझे इस बारे मे सोचने मे मज़ा आता है।"

"मुझे पता है।" पैनी ने बढावा दिया।

"मुझे खोजने और बढने मे मजा आया। शाखो का टूटना भी मुझे अच्छा लगा। दलदल के पतले पत्तो वाले पौधे भी अच्छे लगे।"

"मुझे मालूम है।" पैनी ने फिर बात को बढाया।

"मुझे जूलिया का बार-बार भौकना भी अच्छा लगा''"

"पर, लडाई डरावनी लगी। ठीक है न, बेटे।" पैनी ने बात पूरी की।

"सचमुच लडाई काफी डरावनी थी।"

पैनी सान्त्वना की आवाज़ मे बोला, "यह बात ठीक है। कुत्ते का बुरी तरह घायल होना आदि बातें सचमुच जी गिराने वाली होती है। और, सच यह है कि तुमने कभी रीछ मारे जाते देखा नही। वे कितने ही नीच हो, किन्तु जब वे गिर जाते है तब कुत्तो द्वारा उनकी गर्दन आदि का नोचा जाना बहुत ही करुणाजनक होता है। वह बेचारा आदमी की ही तरह असमर्थ-सा चिल्ला-चिल्लाकर देखते ही देखते मर जाता है।"

तब कुछ देर के लिए दोनो ही मौन पडे रहे। तब जोडी बोला, "मेरी इच्छा करती है, काश। हमे नुकसान पहुँचाने वाले और हमारी चोरी करने वाले सभी जानवरो को हम एकदम समाप्त कर देते।"

पैनी ने समझाया, "पशुओ मे इस तरह की बात चोरी नही कहलाती। आखिर पशुओ को अपनी जीविका ढूंढनी होती है और वे हमारी ही तरह अच्छे से अच्छे रूप मे प्राप्त करने का यत्न करते हैं। चीते, भेडिए और रीछ का यह स्वभाव है कि वे अपना भोजन पशुओ को मारकर प्राप्त करते है। गाँव की गलियाँ या खेतो की बाडे उनके लिए कुछ महत्व नही रखती। वे कैसे जान सकते है कि यह जमीन हमारी है और हमने इसे

खरीदा है ? कोई रीछ कैसे जान सकता है कि हमे भी अपने सूअरो की अपनी खुराक के लिए ही जरूरत होती है ? उसे केवल अपनी भूख का पता होता है। बस !"

जोडी उस चाँदनी मे ताकता पडा रहा। उसे लगा कि उनका यह टापू एक किला है और उसके चारो ओर भूख मँडरा रही है। उसे उस चादनी मे भी जैसे लाल, हरी और पीली आँखे सी चमकती दीखने लगी। जैसे अभी कुछ भूखे जानवर खेतो मे चुपचाप तेज़ी से घुस आएँगे और पालतू पशुओ को मारकर और खाकर चुपचाप खिसक जाएँगे। शायद, वनबिलावो की घात मुर्गी के चूजो पर जाएगी, बाघ का धावा प्रात से पहले ही गाय के बछडे पर होगा और शायद वह घाघ रीछ फिर से किसी को मारने और भूख मिटाने आएगा।

पैनी फिर बोला, "जानवर भी वैसा ही कुछ करता है, जैसा मैं घर के लिए माँस की ज़रूरत पडने पर शिकार के समय करता हूँ। जिसका शिकार करना है, उसके घर मे घुसकर ही उसे मारना चाहिए, जहाँ वह रहता है, सोता है और बच्चो को पालता-पोसता है। यह बात है कठिन, पर सच्चा न्याय यही है मारो या भूखे रहो।"

जोडी को पता था कि इस पर भी वह बडा सुरक्षित था। जानवर आते थे और लौट जाते थे। अचानक ही उसे कँपकँपी चढ आई। वह नही कह सकता था क्यो ?

"तुम्हे ठण्ड तो नही अनुभव हो रही, बेटे ?" पैनी ने पूछा।

"ऐसा ही लगता है।"

उसे उसी रीछ का ध्यान आ रहा था, जैसे वह चक्कर खा रहा हो, टूट पडता हो और गुर्राता हो। उसे जूलिया फिर लपकती दिखाई दी, जैसे फिर रीछ ने उसे पकडकर कुचल दिया हो। पर फिर भी वह उसे जकडे रही। और, तब उसने उसे एकाएक गिर जाते देखा। वह घायल थी और उसमे से खून बह रहा था। पर, सामने के अपने खेत उसे अब भी सुरक्षित लगे।

"मेरे समीप सरक आओ, बेटे। मैं तुम्हे गर्मी पहुँचाऊँगा।"

वह अपने पिता की हड्डियो और पसलियो से सट गया। पैनी ने अपनी

बाँह उसके ऊपर डाल दी और अपनी जाँघ उसकी जाँघ से सटा दी। अब जोडी को अपना पिता ही बचाव की एकमात्र आशा लगा। उसे लगा कि उसका पिता धार पार करके घायल कुत्ते को वापस ले आया। बाडा सुरक्षित था और उसका पिता स्वय खेनो और जोडी के बचाव के लिए व्याकुल था। उसे ऐसे लगा कि वह एकदम सुरक्षित है। उसे नींद ने आ घेरा। एक बार वह घबराकर उठा। उसने देखा, पैनी उस चाँदनी मे कमरे के एक कोने मे झुका हुआ कुत्ते की देख भाल कर रहा था।



# 5

पैनी ने नाश्ते के समय घोषणा की, "अब यह तो तय है कि हमे या तो नई बन्दूक का सौदा करना होगा या मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा।"

जूलिया अब कुछ अच्छी थी। उसके घाव अब साफ थे और उनकी सूजन उतर चुकी थी। खून की कमी के कारण वह कमज़ोर थी। वह केवल सोना चाहती थी। उसने पैनी के हाथ से थोडा दूध भी पिया था।

पैनी की पत्नी का ध्यान उसकी घोषणा ने खीचा, "तुम नई बन्दूक खरीदने की बात सोच कैसे सकते हो? टैक्स देने के लिए तो पैसा पास नही है।"

पैनी ने बात काटी, "मैंने सौदे की बात कही है।"

"और, जिस दिन भी तुम्हारा सौदा अच्छा रहेगा, उस दिन मुझे खाली बर्तन चाटने होगे।"

"मैं किसी से बढकर बात बनाने की इच्छा नही रखता। पर, इतना

निश्चित है कि बहुत से सौदे भी ऐसे होते है, जिनसे सभी को सन्तोष मिलता है।"

"तुम्हारे पास है क्या, उस सौदे के लिए ?"

"वह दोगला कुत्ता।"

"उसे लेना कौन चाहेगा ?"

"क्यो, वह अच्छा शिकारी कुत्ता है।"

"विस्कुटो का शिकारी ना।"

"यह बात मेरी भाँति तुम्हे भी अच्छी तरह मालूम है कि फौरेस्टर लोग कुत्तो के विपय मे विल्कुल मूर्ख हैं।"

उसकी पत्नी घबरा गई। बोली, "एज़रा वैवस्टर, क्या तुम फौरेस्टर लोगो से व्यापार करते चले हो ? यही शुक्र समझना कि तुम अपने कपडो मे साबित वापिस लौट आओ।"

"खैर, जोडी और मैं आज उधर ही जा रहे है," पैनी ने ऐसी दृढता से उत्तर दिया, जैसे उसकी भारी-भरकम पत्नी हवा की तरह हल्की हो।

उसने आह भरी, "बहुत अच्छा। मेरे पास लकडी चीरने, पानी भरने, या काम करते समय मेरे गिर जाने पर मदद करने के लिए किसी को न छोड जाओ। जाओ, उसे भी लेते जाओ।"

"नही, मैं तुम्हे लकडी और पानी विना लाए कभी छोडकर नही गया।" जोडी बहुत व्याकुल होकर सुनता रहा। फौरेस्टरो के यहाँ जाना वह खाने की अपेक्षा जरूरी समझता था।

पैनी ने बात साफ की, "जोडी को लोगो से मिलना-जुलना रहेगा, तभी वह उनके तौर-तरीके जान सकेगा।'

पत्नी खिसिया गई, "और, उसके लिए फौरेस्टर लोगो से ही आरम्भ होना चाहिए! अगर उसने उनसे कुछ सीखा ही, तो उसे अपना दिल अँधेरी रात के समान काला करना सीखना होगा।"

"हो सकता है वह इससे विलकुल उलटा सीखे। खैर, जा हम वहीं रहे हैं।" पैनी ने अपना फैसला सुनाया और मेज़ पर से उठ पडा।

"मैं पानी भर देता हूँ, और जोडी, तुम ज़रा लकडी चीर लाओ।"

पत्नी ने उत्सुकता से पूछा, "तो तुम दोपहर का खाना आकर खाओगे?"

"नही, वैसा करके मैं पडोसियो का अपमान नही करूँगा। हम दोपहर उनके साथ ही बिताएँगे।"

जोडी लकडियो की ओर दौडा गया। लकडियो पर कुल्हाडे की चोट पडती थी और वह जैसे फौरेस्टरो के नजदीक पहुँचता जाता था। उसने काफी लकडियाँ चीरी और गट्ठर उठाकर रसोई का डिब्बा भर दिया। उसका पिता तब तक भी सोते से पानी लेकर न लौटा था। जोडी पशुओ की ओर दौडा और घोडे पर ज़ीन कस दी, उसने सोचा यदि घोडा तैयार रहेगा और प्रतीक्षा कर रहा होगा, तब पिता के आते ही माँ का कोई नया बहाना सुनने से पहले ही वे निकल जाएँगे। उसने पिता को दूर से बैंगी मे दो पानी से भरे डोल लटकाए आते देखा। वह पानी को आराम से उतारने मे सहायता देने को दौडा। उसे डर था कि थोडी सी भी चूक पानी खिडने का कारण बन सकती थी और तब फिर से पानी लाने जाना पडेगा।

"सीज़र पर ज़ीन कस दी है," उसने सूचित किया।

पैनी मुसकरा पडा, "और मैं यह भी मान लेता हूँ कि आग जल चुकी होगी। अब मुझे मेरा बाहर जाने का कोट देते जाओ, रिप को अच्छा बाँध दो और मेरी बन्दूक उठा लाओ। बस अब चले ही समझो।"

घोडे की ज़ीन फौरेस्टर लोगो से ही खरीदी गई थी। उन्होने अपने परिवार मे से किसी के अयोग्य और छोटी पाकर उन्हे दे दिया था। पर, इस पर ये बाप-बेटा दोनो ही आराम से बैठ जाते थे।

"बेटे! तुम आगे बैठ जाओ, पर अगर तुम मेरे से ऊँचा होने लगे तो तुम्हे पीछे आना पडेगा, क्योकि उस स्थिति मे मुझे कुछ दिखाई नही देगा। अरे, पेर्क? चलो, बढो!"

दोगला पेर्क पिछड रहा था। वह एक बार मुडा और उसकी नज़र पीछे की ओर गई। पैनी ताड गया, "उम्मीद है, तुम यह सब अन्तिम बार देख रहे हो।"

सीज़र आराम कर ही चुका था। बैठते ही वह दौडने लगा। उसकी पीठ विशाल थी, ज़ीन भी चौडी थी और पिता के आगे वह बैठा ही था। इस सुविधा मे बैठे हुए जोडी को लगा जैसे वह किसी झूलेदार आरामकुर्सी पर बैठा हो। वह रेतीली पगडडी सुनहले फीते-सी चमक रही थी, जिस-

पर पत्तो की परछाई कही-कही पड रही थी। पश्चिम मे सोते के पास, पगडडी दो मे बँट गई थी, एक राह फौरेस्टर परिवार की ज़मीन की ओर निकल गई थी और दूसरे उत्तर की ओर चली गई थी। उत्तर की ओर की राह की निशानी उस दिशा के चीड के पेडो पर लगे कुल्हाडी के निशानो से स्पष्ट थी।

जोडी को उत्सुकता जगी, "क्या आप या फौरेस्टर कभी उन पर निशान लगाते है?"

"वे मेरे इस ज़मीन को लेने से पहले काटे गए थे, जैसा कि फौरेस्टर प्राय बताते हैं। इनमे से कुछ निशान बहुत गहरे हैं और उनके कारण चीडो की बढती ठीक से नही हो पाई। मुझे लगता है कि इनमे से बहुत से निशान स्पेनी लोगो के समय के हैं। क्यो, क्या तुम्हे इतिहास के अध्यापक ने स्पेनियो के विषय मे कुछ नही बताया? पुत्र! कभी यह राह स्पेनियो ने बनाई थी। यह दायी ओर की राह स्पेनियो ने फ्लोरिडा के आर-पार तक बनाई थी। यह फोर्ट बटलर के पास से फटती है। उसमे से दक्षिणी राह टाम्पा की ओर निकल गई है। इसे ड्रूगून नाम से पुकारते हैं। यह सामने की दूसरी राह 'ब्लैक बीअर' के नाम से प्रसिद्ध है।"

जोडी की आँखे उत्सुकता मे पिता की ओर घूम गई।

'आपका क्या खयाल है, स्पेनी भालुओ से लडे होगे?"

"हाँ, और कोई चारा नही था। जब उन्हे यहाँ डेरा डालना ही पडा तो उन्हे आदिवासी इण्डियन लोगो से, भालुओ से और बनबिलावो से लडना पडा था। हममे उनमे यही अन्तर था कि हमे आज इण्डियन लोगो से लडना नही पडता।"

जोडी उसकी ओर ताकने लगा। उसे लगा वे चीड के वन पूरी तरह आबाद थे।

"क्या अब भी यहाँ कोई स्पेनी लोग रहते है?"

"नही, यहाँ उनमे से कोई भी बसा हुआ नही दीखता। यहाँ के निवासियो मे से किसी ने भी अपने पुरखो तक से नही सुना कि उन्होने कभी किसी स्पेनी को बसा देखा हो। समुद्र-पार से स्पेनी आए और यहाँ व्यापार और युद्ध करते हुए, फ्लोरिडा प्रदेश के पार चले गए। पर, अब किसी को

नही पता कि वे किधर गए ?"

वसन्त की इस सुनहरी प्रात मे फूले हुए वन मे मस्तीभरी हलचल छाई हुई थी। लाल चिडियाँ जोडे बाँध रही थी। कलगीधारी पक्षी सगीत की रागिनी छेड बैठे थे। वैक्स्टर परिवार की वह भूमि उस मधुर सगीत की गूंज से भर उठी।

"वॉयलन और गिटार बजाने से यह अधिक अच्छा नही है क्या ?" पैनी ने पूछा।

जोडी का ध्यान फिर से जगल की ओर लौटा। वह स्पेनियो के बारे मे सोचते-सोचते जैसे उन्ही के साथ समुद्र पार जा चुका था।

मधुर गोद वाले वृक्ष के नए पत्ते पूरी तरह निकल आए थे। चमेली, गुलाब, डौगवुड आदि पर फूल खिलकर समाप्त हो चुके थे, किन्तु शहतून, टी-टी आदि पर बहार पूरी तरह छाई हुई थी। अब राह पश्चिम की ओर मुड गई थी। एक मील तक यह हरियाली और फूलो मे से होकर जाती थी। अगूरो के मधुर फूलो पर जगली मधुमक्खियाँ भिनभिना रही थी। यहाँ राह एक उजाड खेत के पास से सँकरी होकर गुज़री। सीजर रुककर धीरे-धीरे चलने लगा। उनके चारो ओर का जगल जैसे सिमटता आया। जगली सनॉवर, बेरी और मेहन्दी उनके पाँवो से अटकते थे। वन-स्पतियाँ घनी और छोटी थी। कही-कही ही छायादार विशाल वृक्ष आते थे। वैशाख का सूर्य तेज़ होता जा रहा था। सीजर पसीने से तर-बतर होता जा रहा था। चमडे की जीन उसकी पीठ पर रगड रही थी और थप-थप की आवाज-सी हो रही थी।

राह के ये दो मील बडे गर्म और शान्त थे। कभी-कभी समीप की झाडियो मे चिडियाँ अवश्य चहचहा उठती थी। एक लोमडी रास्ते को काट गई। टूटी झाडी भी उसके साथ ही घिसटती गई। और एक पीली-सी शक्ल—शायद वनविलाव—अत्यधिक तेज़ी से मेहन्दी की झाडियो मे घुस गया। इसके बाद की सडक चौडी थी। वनस्पतियाँ कम पड गई। और, फौरेस्टर परिवार की जमीन के ऊँचे ऊँचे पेड एक पथ चिह्न के रूप मे जैसे ऊपर उठ आए। पैनी घोडे से उतर आया। उसने पेर्क को गोदी मे उठा लिया और उसे बगल मे बाँधकर फिर से घोडे पर चढ गया।

जोडी पूछ बैठा, "आप उसकी चिन्ता क्यो करते हैं?"

"तुम फिक्र न करो! कुछ खास बात नही।"

वे हरियाली मे से गुज़रे। यह ठण्डी व गहरी थी। और ताड तथा सनावर की शाखो के साथ मुडी हुई थी। यहाँ से सडक घूम जाती थी। सामने ही फौरेस्टरो का घर एक विशाल सनावर की छाया मे दिखाई दे रहा था।

पैनी ने जोडी को चेताया, "देखो, फौडरविंग को अधिक मत सताना।"

"मै क्यो तग करूँगा? वह तो मेरा अच्छा मित्र है।"

"यह अच्छी बात है। उसका महत्त्व दूसरे पर है। अगर वह किसी खास बात पर अड जाय, तो उसे दोष नही दिया जा सकता।" पिता ने कहा।

"ओलिवर को छोडकर वह मेरा सबसे अच्छा मित्र है।" जोडी ने बताया।

पैनी ने कहा, "इस मामले मे, अच्छा है, तुम ओलिवर पर ही भरोसा करो। गप्पें वह भी फौडरविंग जितनी ही बडी हाँकता है, पर वह जानता है कि वह कब झूठ बोल रहा है?"

तभी जैसे एकाएक जगल की शान्ति भग हो गई। घर के अन्दर कुछ गडबड मच गई थी। आनेवाली आवाज़ से लगा कि कुर्सियाँ कमरे की चौडाई मे फेकी गईं और कोई बडी भारी चीज़ टूटी। काँच बिखरने, लकडी के फर्श पर भारी-भरकम पाँव पटकने और फौरेस्टरो की दीवारो से टकराती आवाज़ें आईं। इस सबके बीच एक स्त्री की एक तेज़ आवाज़ गूँजी। तब अचानक ही दरवाज़ा खुला और कुत्तो का एक जत्था बाहर निकला। माँ फौरेस्टर रसोई की झाडू लेकर उनका पीछा कर रही थी और वे सुरक्षा के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे। उनके पीछे उनके बेटे जमा हो गए थे।

पैनी ने पूछा, "क्या यहाँ उतरना खतरे से खाली है?"

फौरेस्टर लोगो ने बैक्स्टर पिता-पुत्र का स्वागत किया। किन्तु इसके साथ वे कुत्तो को भी आज्ञा दे रहे थे। माँ अपने ऐप्रन को झडी की तरह ऊपर-नीचे हिला रही थी। स्वागत की आवाजे कुत्तो को दी जाने वाली आज्ञाओ के साथ मिलकर कुछ इस तरह गडबडा गईं कि जोडी स्वागत के

विषय मे कुछ स्थिर न कर सका। उसका जी घबराने लगा।

"उतरो! आओ! निकलो, माँस चोरो! हुश्! तुम कैसे हो? थक गए होगे!"

कुत्तो के पीछे भागती-भागती माँ बोली, "पैनी बैक्स्टर! जोडी! उतरो, अन्दर आओ!"

जोडी ज़मीन पर कूद पडा। श्रीमती फौरेस्टर ने उसकी पीठ थपथपाई। जोडी को उसमे से धुएँ आदि की गन्ध आ रही थी। यह गन्ध उसे बुरी तो नही लगी, पर इससे उसे अचानक ही दादी हुट्टो के शरीर से आने वाली मधुर गन्ध का स्मरण हो आया। पैनी भी उतर आया। उसने पेर्क को सँभालकर पकडा हुआ था। फौरेस्टर बन्धु इसके चारो ओर घिर आए। बक घोडे को घुडसाल की ओर ले गया। मिलव्हील ने जोडी को पकडकर उछाला और अपने कन्धे तक ले जाकर फिर ज़मीन पर रख दिया मानो उसने किसी कुत्ते के बच्चे को उछाला हो।

घर की सीढियो से कुछ दूर जोडी ने फौडरविंग को अपनी ओर आते देखा। उसका शरीर कुछ इस तरह टेढा-मेढा होता आ रहा था, जैसे कोई घायल वनमानुष हो। फौडरविंग ने दूर से ही अपनी छडी हिलाकर स्वागत किया। उसे मिलने के लिए जोडी दौडा गया। फौडरविंग का मुख चमक उठा। खुशी से उसने जोडी का नाम पुकारा।

वे कुछ क्षण आलिगन मे बँधे और आनन्द मे डूबे खडे रहे। जोडी मे आनन्द की एक लहर-सी दौड गई, जो उसने कभी किसी और के साथ अनुभव न की थी। उसे अपने साथी का शरीर गिरगिट या अमरीकी कगारू से अधिक विचित्र न लगा। उसने बडो के इस कथन पर विश्वास कर लिया कि उसका मित्र प्रतिभाहीन है। उसके मित्र का फौडरविंग नाम पडने का एक कारण था। कभी उसने घर के समीपवर्ती सनावर के पेड से पक्षियो की भाँति उडने की कोशिश की थी। उसने सोचा कि पक्षियो के पखो की भाँति वह भी अपनी बगलो मे कोई हल्की-फुल्की चीज़ बाँधकर, पख-जैसे बनाकर वैसे ही उड सकता है। और एक दिन उसने चारे-भूसे आदि के बण्डल अपनी बगलो मे बाँधे और पेड पर से कूद पडा। भाग्य से वह बच ज़रूर गया, पर उसके जन्म से टेढे-मेढे शरीर मे से कुछ हड्डियाँ

और टूट गई। यह बात जोडी को स्वय दुहराकर देखने की जरूरत नही थी। वह उसके उदाहरण से ही समझ सकता था। उसके दिमाग मे भी यह बात बहुत दिन से घूम रही थी। वह बडी-बडी पतगो के विषय मे सोचता था। उसके अन्दर ही अन्दर उस अपग साथी की उडने की उमग के प्रति एक सहानुभूति थी। वह भी उडान, हल्केपन और धरती पर बँधे, झुके, लडखडाते शरीर से क्षणभर की मुक्ति की इच्छा रखता था।

जोडी ने उसकी पुकार का उत्तर दिया, "कहो!"

फौडरविंग ने बताया, "मेरे पास रैकून का एक बच्चा है।"

उसके पास सदा ही कोई न कोई नया पालतू जानवर होता था।

"चलो, उसे देख ले।"

फौडरविंग उसे मकान के पिछवाड़े की ओर ले गया, जहाँ उसने अपने नित्य नए पालतू पशुओ और पक्षियो के सन्दूक और पिंजरे टिका रखे थे।

फौडरविंग ने बताया, "मेरी एक चील मर गई। वह निरी जगली थी।"

दलदली खरगोश के जोडे को जोडी पहले ही देख चुका था।

फौडरविंग ने शिकायत के स्वर मे कहा, "इनके बच्चे होते नही दीखते। मैं इन्हे छोड दूँगा।"

एक लोमडीनुमा गिलहरी लगातार इधर-उधर मचल रही थी।

फौडरविंग ने कहा, "मैं यह तुम्हे भेंट कर दूँगा। अपने लिए मैं कोई और देख लूँगा।"

जोडी मे आशा जगी और मिट गई। बोला, "माँ मुझे कुछ नही रखने देंगी।"

उसे लगा जैसे उसके दिल मे एक टीस उठी। यह उसी गिलहरी के लिए थी।

"यह रहा वह रैकून का बच्चा!"

लोहे की सीको मे से एक काली नाक उभरती आई। एक छोटा-सा काला पजा किसी बच्चे के हाथ की भाँति बाहर आया। फौडरविंग ने लोहे की एक-दो सीकें हटाई और उसे बाहर निकाल लिया। यह उसकी बाँह पर चढ गया और चिल्लाने लगा।

"तुम इसे पकड सकते हो। यह तुम्हे काटेगा नही।"

जोडी ने उसी दशा मे उस जन्तु को थपथपाना आरम्भ किया। उसे लगा कि इतनी मुलायम और आनन्द देनेवाली चीज उसने इससे पहले कभी नही देखी। उसके सलेटी बाल इतने मुलायम थे, जैसे उसकी माता के घूमते समय के गाउन के बाल। चेहरा नुकीला था, पर दोनो आँखो के बीच एक काली पट्ट -सी पडी थी। बालोभरी पूँछ बहुत सुन्दर रूप मे लिपटी हुई थी। उसने जोडी के हाथ को कुछ देर चूमा-चाटा और फिर चीखने लगा।

"ओह, इसे मीठी खूराक चाहिए।" फौडरविग ने माता के समान कहा और फिर समझाते हुए बोला, "आओ, इसे घर मे ले चले। तब तक कुत्ते बाहर है। वह कुत्तो से घबराता है, पर धीरे-धीरे उनका आदी हो जाएगा। इसे किसी प्रकार की गडबड पसन्द नही।"

जोडी पूछ ही बैठा, "जब हम आए तो सबमे यह लडाई कैसी हो रही थी ?"

फौडरविग ने घृणा से कहा, "मैं यहाँ नही था। ये वे लोग ही थे।"

"फिर भी था क्या ?"

"किसी एक कुत्ते ने फर्श को बीचोबीच गीला कर दिया था। उनमे इस बात पर ही झगडा था कि यह कुत्ता है किसका ?"



# 6

छोटा-सा रैकून मीठी गुत्थी को चूसने मे मस्त था। जोडी की बाँहो मे अपनी पीठ के बल वह लेटा हुआ था। अपनी अगली दोनो टाँगो मे उसने मीठे से सना कपडा पकडा हुआ था। उसका छोटा-सा पेट पहले ही दूध से भर चुका था, इसीलिए शीघ्र ही उस मीठे सने कपडे को छोडकर वह छूटने के लिए छटपटाने लगा। जोडी ने उसे अपने कन्धे तक उठा लिया। वह भी जोडी के बालो को छेडने लगा और उसकी गर्दन और कान आदि को अपने छोटे और चचल हाथो से सहलाने लगा।

फौडरविंग बोल उठा, "इसके हाथ कभी शान्त नही रहते।"

विंग के पिता अंगीठी मे परे के अँधेरे मे से ही बोल पडे। जोडी को इस बात का ध्यान भी न था। वह शान्त बैठा हुआ था।

वह बोले, "जब मैं छोटा था, तब मेरे पास भी एक छोटा रैकून था। दो साल का होने तक वह नम्र बना रहा। तब एक बार उसने मेरी ठोडी पर काट खाया। यह भी बडा होकर काटने लगेगा। इसकी आदत ही यह

है।" और उन्होने अँगीठी की ओर थूक दिया।

विग की माता उसी समय मकान मे आई और अपने बर्तन-भाडो की ओर चली गई। उसके बेटे भी उसके पीछे-पीछे चलते आए। बक, मिल-व्हील, गैबी और पैक आदि सभी वहाँ जमा हो गए। जोडी इन्हे देखते ही चक्कर मे आ गया। इस विशाल डील डौल को पालने वाले माता-पिता कितने कमजोर और पतले दुबले थे। लेम और गैबी को छोडकर सभी एक से थे। गैबी कुछ अधिक छोटा और उजले रग का था। लेम ही ऐसा था जो दाढी-मूँछ साफ करके रहता था। वह भी औरो की ही भाँति लम्बा तो था, पर पतला ज़रूर था। उसका रग औरो से कुछ कम गाढा था। वह प्राय चुप रहता था। प्राय वह कुछ सोचते हुए अलग बैठ जाता, जब कि बक और सबसे अधिक बातून मिलव्हील शराब पीकर गप्पे लडाते रहते थे।

पैनी वैक्स्टर कमरे मे घुसते ही उनमे खो गया। उन लडको का पिता रैकूनो की आदतो पर अपनी बात कहता ही रहा। उधर केवल जोडी का ही ध्यान था, पर शायद उस बूढे को अपने शब्दो मे स्वय ही मज़ा आ रहा था।

"यह जन्तु कुत्ते-जितना बडा हो जाएगा, तब यह बेडे मे आने वाले किसी भी कुत्ते पर टूट पडा करेगा। यह उसके जीवन की सबसे ज़रूरी-सी बात हो जाती है। यह पानी मे पीठ के बल लेट जाता है। मुँह मे पानी भर-कर कुत्तो पर उछालता है। कभी-कभी वह उन्हे एक-एक करके डुबकियाँ देता है और जहाँ तक काटने का सवाल है, मरने के बाद भी जैसे इसके काटने की हवस बाकी रह जाती हो।"

अब जोडी के सामने समस्या यह थी कि वह पिता की बाते सुने या उसके बेटो की! एक ओर उसकी इच्छा थी और दूसरी ओर उसकी रुचि। उसे यह देखकर अचरज हुआ कि उसके पिता ने अब तक भी उस निकम्मे दोगले कुत्ते को बडे प्यार से अपनी बाँहो मे उठा रखा था। पैनी कमरा पार कर बूढे फौरेस्टर तक आया और बोला, "कहिए, क्या हाल है, फौरेस्टर साहब? आपसे मिलकर बडी खुशी हुई। आपका स्वास्थ्य कैसा है?"

"कहिए, श्रीमान् पैनी! आप अपनी सुनाइए। मैं तो ठीक हूँ और काफी चुस्त हूँ, हालाँकि मैं लगभग अपनी आयु भोग ही चुका हूँ। सच तो

यह है कि मुझे इस क्षण तक मर चुकना चाहिए था, पर मैं मौत को धकेले ही जा रहा हूँ। ऐसा लगता है, जैसे मैं यही पर अधिक परिचित हूँ।"

तभी श्रीमती फौरेस्टर ने कहा, "बैठो, श्रीमान् वैक्स्टर !"

पैनी ने एक स्टूल सरकाया और बैठ गया। लेम फौरेस्टर कमरे के दूसरे कोने से ही बोला, "क्या तुम्हारा कुत्ता लँगड़ा है ?"

"क्यो ? नही तो ! मैंने तो उसे कभी लँगड़ाते नही पाया। मैं तो उसे तुम्हारे इन खूनी शिकारी कुत्तो से बचाने का यत्न-भर कर रहा हूँ।"

लेम ने पूछा, 'क्यो ? बहुत कीमती है ?"

"नही, यह तो दो कौडी का भी नही। कही ऐसा तो नही कि जब मैं यहाँ से जाऊँ, तुम इसे यही रोक लोगे ? क्योंकि इसके चुराये जाने का तो खतरा है ही नही।"

"अरे ! तुम तो बडी अजीब-सी बात कर रहे हो। क्या इसके पीछे कोई कहानी है ?" सबने एक साथ पूछा।

"हो सकता है !"

"क्या तुम उसे रीछ के शिकार पर ले गए थे ?"

"हाँ ! मैं उसे ले गया था।"

लेम कुछ अधिक समीप सरक आया और गहरी साँस लेकर बोला, "क्या यह अच्छी राह खोज लेता है और क्या यह रीछ को कोने मे घेर लेता है ?"

"अरे ! यह बडा निराशाजनक है। आज तक ऐसा बुरा कुत्ता मैंने कभी न रखा, न साथ ले गया।"

लेम बोला, "मैंने कभी नही देखा कि कोई मनुष्य अपने कुत्ते की इतनी निन्दा करे।"

पैनी ने कहा, "खैर ! मैं यह जानता हूँ कि वह देखने मे आकर्षक है। बहुत से आदमियो ने इसे देखकर लेना भी चाहा है। परन्तु मैं तुम्हारे मन मे यह जगाना भी नही चाहता कि मैं इसका सौदा करना चाहता हूं, क्योंकि वैसी हालत मे तुम मूर्ख बनोगे और ठगे जाओगे।"

"लगता है, लौटते हुए तुम और शिकार की घात मे हो।"

"क्यो नही ? हममे से सभी के दिमाग मे किसी-न-किसी शिकार की

टोह रहती है।"

लेम ने टिप्पणी की, "यह बडी अजीब बात है कि तुम इसे सारे रास्ते लाए भी और यह तुम्हारे किसी काम भी न आएगा।"

सभी भाई एक-दूसरे की ओर देखने लगे। वे चुप थे। उन सभी की काली-काली आँखे उस कुत्ते की ओर ही लगी थी। पैनी ने मौका देखकर कहा, "एक ओर यह कुत्ता किसी काम का नही और दूसरी ओर भरी जाने वाली मेरी शिकारी बन्दूक बेकार है। मैं एक दुविधा मे पड गया हूँ।"

उसकी काली-काली आँखें कमरे की दीवारो पर दौड गईं, जहाँ उस परिवार के हथियार लटक रहे थे। जोडी को लगा जैसे यह सजावट किसी बन्दूको की दूकान के लिए कीगई हो। फौरेस्टर परिवार घोडो के व्यापार, हिरण का माँस बेचने और नाजायज़ शराब बनाने के द्वारा अच्छा पैसा कमा रहा था। उन लोगो के लिए बन्दूके खरीदना वैसा ही था, जैसे औरो के लिए आटा और कॉफी आदि खरीदना।

लेम बोला, "मैंने कभी नही सुना कि तुम शिकार पाने मे असमर्थ रहे हो।"

"पर कल मैं असमर्थ रहा। मेरी बन्दूक पहले तो चली ही नही और जब चली तो पीछे की ओर।"

"तुम शिकार किस चीज़ का कर रहे थे ?"

"उस बुढऊ, पाँवकटे रीछ का।"

चारो ओर एक शोर-सा फूट पडा। सभी पूछ बैठे, "वह किस खेत पर पल रहा है ? किस रास्ते से वह आया था ? वह किधर गया ?"

उनके पिता ने उसी समय फर्श पर अपनी छडी पटकी और बोला, "तुम सब चुप रहो। पैनी को बताने दो। अगर तुम सब साडो की तरह बीच मे गडबड करते रहे तो वह पूरी बात न बता सकेगा।"

श्रीमती फौरेस्टर ने तभी एक बर्तन का ढक्कन बडे जोर की आवाज़ के साथ रखा और रोटियो वाले डिब्बे को उठाया। जोडी को लगा जैसे यह किसी शरबत की पतीली हो। अँगीठी से उठने वाली सुन्दर सुगन्धें सब पर हावी हो गईं।

माँ बोलीं, "बैक्स्टर को तब तक मत शुरू करने दो, जब तक वह कुछ

पी नही लेते। क्या तुम लोग सभ्यता बिलकुल भूल गए ?"

पिता भी पुत्रो की ओर देखकर बोल उठे, "अरे, तुम्हारी सभ्यता कहाँ गई कि तुममे से कोई भी उसे भोजन से पहले गला गीला करने मे साथ नही दे रहा ?"

मिलव्हील कमरे मे गया और शराब की एक बडी बोतल लेकर आया। उनने उसका डाट खीचा और भरकर प्याला पैनी के हाथ मे दिया।

पैनी बोला, "आप मुझे क्षमा करेगे यदि मैं अधिक न पीऊँ। क्योंकि मेरा पेट आप लोगो जितना बडा तो है नही।"

वे खूब ठहाका मारकर हँसे। तब मिलव्हील ने शराब का पात्र कमरे मे बैठे सभी को दिया। उसने जोडी को भी सम्बोधित किया।

पैनी बोला, "नही, अभी वह इतना बडा नही हुआ।"

पिता बोल उठे, "क्यो ? मैं तो इसी पर पाला गया था।"

तब तक माँ भी बोल उठी, "जरा थोडी-सी मेरे प्याले मे भी डाल दो।"

उसने बडी-बडी थालियो मे खाना पल्टा। वह लम्बी लकडी की मेज उबली हुई चीजो से भर गई। सूअर के माँस के साथ उबाले हुए सूखे मटर, हिरण के भुने हुए माँस का एक भाग, तली हुई गिलहरी की तश्तरी, उबली हुई गोभी, उबली हुई मक्की, बिस्कुट, रोटी, शरबत और कॉफी आदि वहाँ लगाये गए थे। किशमिशो वाली खीर अभी अंगीठी पर ही रखी थी। पैनी की ओर होकर वह बोली, "अगर मुझे तुम्हारे आने का पता होता तो मैं कोई उचित चीज बनाती। खैर, शुरू करो।"

जोडी ने अपने पिता की ओर देखा कि क्या वह भी इस सुगन्धित और अधिक सामान को देखकर उत्तेजित हो उठा है ? पर पैनी की सूरत गम्भीर बनी हुई थी। वह बोला, "यह सब कुछ किसी शासक के योग्य है।"

माँ को यह अच्छा नही लगा। वह बोली, "मैं जानती हूँ तुम लोग खाने से पहले धन्यवाद देने के आदी हो।" और तब वह अपने पति की ओर मुडकर बोली, "क्या आपको बुरा तो नही लगेगा यदि आप भगवान् से हमारे लिए आशीर्वाद माँगे।"

बेचारे बूढे ने परेशानी मे हाथ जोडे और प्रार्थना की, "हे भगवान् ! आज

तुमने फिर एक वार हम पापी आत्माओ पर कृपा की है और हमारे पेट के लिए अच्छा भोजन दिया है। धन्यवाद !".

फौरेस्टर लोगो ने अपने गले खँखारे और भोजन पर टूट पडे। जोडी अपने पिता के सामने तथा अपने दोस्त के माता-पिता के वीच मे वैठा था। उसने देखा कि उसके सामने की तश्तरी पूरी भरी हुई है। वक और मिलव्हील ने फौडरविंग तक खाना पहुंचाया और वह चुनी-चुनी चीज़ो को मेज के नीचे से चुपचाप उस तक पहुँचाता रहा। वाकी भाई वडे ध्यान से खा रहे थे और खाते समय वे शान्त थे। उनके सामने से भोजन समाप्त होता जा रहा था। अचानक लेम और गैवी मे किसी बात पर वहस होने लगी। उनके पिता ने अपना कमज़ोर-सा मुक्का मेज पर मारा। पहले तो वे दोनो पिता की वात पर नाराज़ हुए, पर वाद मे शान्त हो गए। उनका पिता पैनी के समीप झुका और वहुत हल्की आवाज मे वोला, "मैं जानता हूं कि मेरे लडके असभ्य है। वे समयोचित बर्ताव नही करते। वे अधिक शराव पी लेते है और लडना शुरू कर देते है। अगर कोई भी औरत, जो उनसे दूर जाना चाहती है, उसे हिरणी की तरह भागना पडता है। पर यह बात भी मैं कहे विना न रहूँगा कि इन वच्चो ने आज तक कभी भी अपने माता या पिता को, इस मेज़ पर वैठकर, वुरे शब्द नही कहे।"



## 7

बूढे फॉरेस्टर बोले, "अच्छा, भई ! अब हमे उस बेचारे रीछ की बात बताओ ।"

माता ने भी हामी भरी और अपने पुत्रो से बोली, "अरे भगोडो ! तुम इनके रस मे डूबने से पहले अपनी-अपनी तश्तरियाँ आदि साफ कर लो ।"

उसके बेटे शीघ्रता से अपनी-अपनी तश्तरी और अन्य बर्तन लेते हुए उठे । जोडी उनकी ओर ताकने लगा । उसे लगा कि शायद वे इतनी ही शीघ्रता से अपने बालो मे फीते बाँधने को भी तैयार हो जाते । जोडी की यह बात समझकर उनकी माता ने प्यार से उसके कान मरोडे और अपनी आरामकुर्सी पर बैठते हुए बोली, "मेरे लडकियाँ तो हैं नही, अगर ये लोग चाहते है कि मैं इनके लिए खाना पकाऊँ, तो इन्हे अपने बर्तन साफ करने के लिए तैयार रहना ही चाहिए ।"

जोडी ने बडी दयनीय दृष्टि से अपने पिता की ओर देखा, जैसे प्रार्थना कर रहा हो कि यह बात उनके घर तक न पहुँचे । इन भाइयो ने अपना

काम जल्दी ही निवटा लिया। फौडरविंग बचे-खुचे भोजन को पशुओ के लिए इकट्ठा करके लगडाता हुआ उनके पीछे उठ गया। कुत्तो को स्वय खिलाने के बहाने ही वह अपने पालतू पशु-पक्षियो के लिए भी कुछ न कुछ बचा सकता था। आज के खाने से काफी सामान बचा था। उसे देखकर वह स्वय मुस्करा पडा। शाम के लिए भी काफी ठण्डा भोजन बचा हुआ था। जोडी को इस अधिकता पर आश्चर्य ही हुआ। सब भाइयो ने अपना काम खत्म कर बर्तन-भाडे वगैरह सब ठीक-ठिकाने लटकाए और रख दिए। यह सब करके वे पैनी के पास आ गए और अपनी-अपनी कुर्सियाँ लेकर बैठ गए। कुछ ने अपने पाइप सुलगाए; और कुछ ने दबाए हुए तम्बाकू मे से कुछ भाग निकालकर खाना शुरू किया। उनकी माता ने थोडी-सी नस्वार ली। इसी बीच बक ने पैनी की बन्दूक उठा ली और एक छोटी-सी रेती लेकर उसकी ढीली हथौडे वाली छड को ठीक करना शुरू किया।

पैनी ने कहानी शुरू की, "बात यह है कि उसने हमे एकदम ही अचरज मे डाल दिया।"

जोडी को कँपकँपी छूट गई।

"वह एक रात चुपचाप एक छाया की भाँति आया और हमारी गाभिन सूअरी को मार गया। उसने उसे बुरी तरह चीर डाला, पर उसमे से खाया केवल एक कौर ही। वह भूखा नही था, बस वह नीचता पर उतर आया था।

पैनी अपना पाइप सुलगाने के लिए कुछ देर रुका। फौरेस्टर लोग उसकी ओर और अधिक झुक गए।

"वह एक काले बादल की भाँति चुपचाप निकलकर हवा में आया। कुछ देर इधर-उधर घूमा ताकि हवा अनुकूल मिल सके और ऐसा होते ही वह इतने चुपके से घुसा कि कुत्ते भी न कुछ सुन सके, न गन्ध पा सकें। और यह कुत्ता भी बेवकूफ बना।" ऐसा कहते हुए उसने उस दोगले कुत्ते की ओर इशारा किया।

उन लोगो ने परस्पर आँखो ही आँखो मे जैसे कुछ बातें की। "हम नाश्ता खाते ही निकल पडे। मैं था, जोडी था और ये तीनो कुत्ते थे। हम उस भालू के निशान खोजते हुए दक्षिणी जगल पार कर गए। उससे भी आगे

उन जोहडो तक निकल गए, जहाँ कँटीली धार वाली घास उगती है। फिर हम जूनियर खाडी तक निकल गए। तब दलदल मे से होकर जाना पडा। खोज मे गर्मी आती जा रही थी। आखिर हमने उसे पा ही लिया।"

उत्सुकता मे सब सुनने वालो ने झुककर अपने घुटने पकड लिए।

"आखिर हम उसे मिले—जूनियर धारा के दाएँ किनारे वाले मोड पर, जहाँ कि पानी बहुत ही तेज़ और गहरा होकर बहता है।"

जोडी को लगा यह कहानी वास्तविक शिकार से भी ज्यादा रोचक है। उसे जैसे फिर से सब कुछ दीखने लगा—वे छायाएँ, वे सरू, वे टूटी हुई ताडनुमा झाडियाँ और धारा का बहता हुआ पानी। कहानी की उत्तेजना से वह आपे मे नही रहा। उसे अपने पिता पर भी अपार गर्व हो रहा था। पैनी चाहे स्वय कुछ भी न दिखाई देता हो, पर वह उनमे से बडे से बडे शिकारी से भी अच्छा और सधा हुआ था। वह बात सुनाते हुए जैसे रहस्य और जादू का एक जाल-सा बुनता गया, जिसमे इतने बडे-बडे आदमी भी उत्सुक और सन्न-से होकर फँसते गए। उसने उस दिन की छोटी-सी लडाई को एक महाकाव्य का रूप दे डाला। जब उसने अपनी बन्दूक के उल्टी आग उगलने और रीछ द्वारा जूलिया की छाती पीस देने की बात सुनाई, तो गैबी ने जल्दी मे तम्बाकू निगला। उसे थूकता और घुटन-सी अनुभव करता हुआ वह अँगीठी की तरफ दौडा। अन्य सभी की मुट्ठियाँ कस गईं, मुँह खुले रह गए और उत्सुकता के साथ वे अपनी कुर्सियो पर चचल-से हो उठे। बक ने गहरी साँस लेकर कहा, "हे भगवान् ! काश, मैं भी वहाँ होता।"

गैबी ने तुरन्त पूछा, "और वह रीछ गया कहाँ ?"

पैनी ने उन्हे बताया, "कौन जाने ?"

कुछ क्षण के लिए वहाँ चुप्पी छा गई। आखिर लेम ने शान्ति भग की, "तुमने एक बार भी उस कुत्ते का जिक्र नहीं किया, जबकि तुम उसे वहाँ ले भी गए थे।"

पैनी ने कहा, "देखो, जबरदस्ती न करो। मैं तुम्हे पहले ही बता चुका हूँ कि वह किसी काम का नहीं।"

"मैं देख रहा हूँ कि यह बिल्कुल साफ-साफ बच आया। एक भी तो

निशान इस पर नही लगा।"

"हाँ, निशान तो इस पर एक भी नही है।"

"यह तो किसी वहुत ही चतुर कुत्ते का गुण होता है कि वह भालू से लडे भी और उस पर एक भी निशान तक न पडे।"

पैनी ने अपने पाइप से एक और कश खीचा। लेम उस तक उठकर आया और झुका। उसने अपनी अँगुलियो को चटखारा। वह पसीने-पसीने हो रहा था।

वह वडी कठिनता से बोला, "मेरी दो इच्छाएँ है। एक तो यह कि उस खुर्राट रीछ की मौत पर मै भी वहाँ रहूँ और दूसरी यह कि यह कुत्ता भी वहाँ हो।"

पैनी नम्रता से वोला, "अरे भाई, नही! इसका सौदा करके मै तुम्हे ठगना नही चाहता।"

"देखो, इस सव झूठ मे कुछ नही धरा। तुम वोलो वदले मे चाहते क्या हो?"

"इसके वदले तुम रिप का सौदा कर लो।" पैनी ने फिर सुझाया।

"लगता है तुम स्वय लोमडी की तवीयत के हो। रिप से ज्यादा अच्छे कुत्ते तो मेरे पास अव भी हैं।"

लेम दीवार तक गया और खूँटी पर से एक वन्दूक उतार लाया। यह लन्दन की वनी 'फाइनट्विस्ट' नाम की दुनाली वन्दूक थी। इसकी नालियाँ चमक रही थी और अखरोट की लकडी की मूँठ वडी गर्म और चमकदार थी। दोनो घोडे वहुत अच्छी तरह काम कर रहे थे। हर चीज़ वहुत अच्छी धातु से वनी थी। लेम ने इसे अपने कन्धे पर लटकाया और देखा, तव उसने वह पैनी को पकडा दी।

"यह सीधी इग्लैण्ड से मँगाई है। अव अलग से मसाला भरने की ज़रूरत नही। वडी सरलता से इकट्ठे दो कारतूस भरो और उसे वन्द करो। घोडा दवाते ही वम! वम!! दो गोलियाँ वज उठेगी। इसका निशाना चील के झपाटे जितना निश्चित है।"

पैनी ने प्रतिरोध किया, "ओह, नही! यह वहुत महँगी है।"

"जहाँ से यह आई है, वहाँ और भी मिलती हैं। मुझ से वहस की

जरूरत नही। जब मुझे कोई कुत्ता पसन्द आता है, तब मैं उसे बेहद चाहता हूँ। या तो उसके बदले यह बन्दूक ले लो या फिर मैं उसे चुराने आऊँगा।"

पैंनी ने लाचारी दिखाई, "अच्छा, फिर ठीक है। पर, इन सब गवाहो के सामने यह वायदा करो कि तुम इसे शिकार पर एक बार ले जाने के बाद मेरा कचूमर नही निकाल दोगे।"

"रहा वायदा। हाथ मिलाओ।" पैंनी का हाथ एक भारी पजे मे कसा गया।

लेम ने कुत्ते की ओर सीटी बजाई। उसकी गर्दन के बाल पकडकर वह उसे बाहर ले चला, मानो उसे अब भी उसके छिन जाने का भय हो।

पैंनी अपनी कुर्सी पर ही अशान्त-सा होने लगा। उसने उपेक्षा से बन्दूक को अपने घुटनो पर सँभाला। जोडी की आँखे अब भी उस बन्दूक की पूर्णता और सफाई पर टिकी थी। उसे इस बात से भय सा लगा कि उसके पिता ने किसी फौरेस्टर को धोखे मे हरा दिया। उसे विश्वास नही हुआ कि लेम अपना वायदा निभा सकेगा। उसने व्यापार मे बहुत-सी उलझने सुनी थी, किन्तु उसे कभी नही सूझा था कि कभी-कभी मनुष्य बिल्कुल सच्ची बात कहकर भी दूसरे से बहुत बडा लाभ उठा सकता है।

बात दोपहर बाद भी चलती रही। बक ने पैंनी की पुरानी बन्दूक को भी कस दिया था और उसे विश्वास था कि अब यह भी ठीक काम कर सकेगी। उन लोगो को कुछ काम न होने मे जल्दी न थी। पैंनी उन्हे इस खुर्राट रीछ की चतुरता बता रहा था और साथ ही उससे पहले मिले रीछो से उसकी तुलना करके उसकी श्रेष्ठता समझा रहा था। उसने हर शिकार का किस्सा पूरे विस्तार से बताया। तीस साल पहले मरे हुए कुत्तो का नाम ले-लेकर उनके कामो का वर्णन किया। फौडरविंग सुनते-सुनते उकता गया और उसकी इच्छा हुई कि जोहड मे जाकर छोटी-छोटी मछलियाँ पकडे। किन्तु जोडी इन पुराने किस्सो को सुनने का लोभ नही छोड सकता था। दोनो बूढे फौरेस्टर कभी आनन्द से और कभी भय से बातें करते थे और कभी खुमारी-सी मे आ जाते थे, जैसे सो रहे हो। अन्तत उनकी कमजोरियाँ उन पर हावी हो गईं और वे अपनी कुर्सियो पर ही गहरी नीद सो गए। नीद मे भी उनके सूखे और कमजोर शरीर सख्त बने हुए थे।

पैनी ने भी कमर सीधी की और उठा।

उसने कहा, "ऐसा साथ छोडने को मेरा जी तो नही चाहता।"

उत्तर आया, "तो फिर रात यही बिताओ। आज किसी लोमडी का पीछा करेंगे।"

"इसके लिए धन्यवाद। पर मैं अपने घर को बिना किसी पुरुष के अकेला नही छोड़ सकता।"

फौडरविंग ने उसकी बॉह पकडकर प्रार्थना की, "जोडी को तो मेरे साथ ठहरने दीजिए। उसने तो मेरी चीज़े आधी भी नही देखी।"

बक ने समर्थन किया, "पैनी, बच्चे को तो छोड ही जाओ। मैंने कल वौलूसिया की ओर जाना है। मैं उसे तुम्हारे स्थान तक पहुँचाता हुआ निकल जाऊँगा।"

"उसकी माँ सह न सकेगी," पैनी ने उत्तर दिया।

"माँ को तो बस इतना ही आता है। क्यो, जोडी ?"

जोडी की हिम्मत बँधी, "पिताजी, यहाँ रहने मे मै बहुत गर्व अनुभव करूँगा। बहुत दिन से मैं किसी से भी नही खेला हूँ।"

पैनी ने लाचारी देखकर कहा, "परसो से आज तक नही। अगर ये लोग तुम्हारा रहना पसन्द करते है, तो रह जाओ। लेम, अगर तुम जाँच के बाद दोगले कुत्ते से निराश हो जाओ, इस बच्चे के घर लौटने से पहले ही इसे मार न डालना।"

हँसी के मारे सब चिल्ला-से पडे। पैनी ने पुरानी बन्दूक के साथ ही नई बन्दूक भी अपने कन्धे पर लटकाई और घोडे की ओर बढा। जोडी भी उसके पीछे-पीछे गया। उसने हाथ बढाकर बन्दूक की कोमलता और चिकनाहट को परखा।

पैनी ने हौले से कहा, "अगर लेम की जगह कोई और होता तो मुझे यह बन्दूक घर ले जाते शर्म आती। मुझे तो लेम को सीधा करना था, क्योकि उसी ने मेरा नाम बिगाडा था।"

"तुमने तो उसे सच-सच ही कहा।"

"मेरे शब्द तो अवश्य सीधे थे, पर मेरी नीयत ओकलावा-हा नदी के समान टेढी थी।"

"जब उसे सच्चाई का पता चलेगा तो वह क्या करेगा ?"

"पहले तो उसकी इच्छा होगी कि मुझे चीर डाले, पर मुझे आशा है कि बाद मे वह हँस पडेगा।"

"अच्छा, तो मैं चला। कल मिलेंगे। जरा ठीक से रहना।"

वे सब भाई उसे कुछ दूर तक छोडने गए। जोडी ने भी हाथ हिलाकर विदा किया। उसे आज एक नया ही अकेलापन अनुभव हुआ। उसकी इच्छा हुई कि वह पिता को वापिस बुला ले, या फिर उसके पीछे दौडकर घोडे पर चढ जाय और जीन पर बैठकर उसके साथ ही अपने घर और खेतो की सुरक्षा मे लौट चले। इतने मे विंग पीछे से बोल पडा, "अरे! यह रैकून जोहड मे मछलियाँ मार रहा है। जोडी! आओ, देखो।"

सुनते ही जोडी रैकून को देखने दौड पडा। वह एक छोटे-से जोहड मे चल-फिर रहा था। अपने हाथो से वह कुछ टटोलता-सा चलता था। जोडी साँझ तक विंग और उस जन्तु के साथ खेलता रहा। उसने गिलहरियो के पिंजरे को साफ करने मे सहायता दी और अपग लाल पक्षी के लिए पिंजरा तैयार किया। बाकी भाइयो के खिलाडी मुर्गे वास्तव मे जगली थे। मुर्गियाँ भी पास के जगल मे इधर-उधर अण्डे दे देती थी—कभी किसी झाडी मे, कभी किसी मे। इससे साँपो की बन आती थी। वे सभी अण्डे साफ कर देते थे। जोडी ने विंग के साथ जाकर अण्डो को बटोर लिया। एक मुर्गी आराम कर रही थी। विंग ने उसे वे सारे अण्डे दे दिए। कुल अण्डे पन्द्रह थे। उसने बताया कि वह एक अच्छी माता थी। जोडी को लगा कि जैसे इन सब मामलो पर उसी का अधिकार था।

जोडी के दिल मे एक बार फिर उमग जगी कि कुछ उसका भी अपना हो। विंग उसे लोमडीनुमा गिलहरी तो देगा ही, शायद यह छोटा रैकून भी दे दे। पर उसे यह भी अनुभव था कि कम-से-कम अगले महीने तक उसे खाने-पीने के मामले मे माँ का बोझ बढाना न चाहिए। फौडरविंग मुर्गी से कहने लगा, "सुनती हो? अब घोसले मे ही रहना, तुम्हे इन सब अण्डो को बच्चे होने तक सेना है। इस बार मुझे पीले बच्चे चाहिएँ। काला एक भी न हो।"

तब वे घर की ओर घूम पडे। पीछे मे रैकून भी दौडता-दौडता उनमे

आ मिला। वह विंग के मुडे हुए पाँवो के सहारे से पीठ से होता हुआ सिर तक चढ गया और उसकी गर्दन पकडकर चिपट गया। उसने अपने अगले उजले दाँतो से उसकी त्वचा कुरेदनी आरम्भ की और गुस्सा-सा दिखाते हुए सिर हिलाने लगा। जोडी ने उसे उठा लिया। विंग ने उसे घर तक ले जाने दिया। जन्तु पहले उसे अजनबी जानकर उसकी ओर अपनी चमकीली आँखो से देखता रहा, फिर धीरे-धीरे उससे हिल गया। शेप फौरेस्टर वन्धु लम्बे लम्बे डग भरते हुए आराम से अपने-अपने नियत काम करने के लिए अपनी जमीन पर इधर-उधर फैल गए। वक और आर्क गायो और वछडो को खदेडकर पानी पिलाने के लिए जोहड तक ले गए। मिलव्हील घुडसाल मे घोडो को दाना देने चला गया। पेर्क और लेम उत्तर की ओर घने जगल मे निकल गए जोडी ने सोचा शायद वे अपनी शराव की भट्ठी की ओर निकल गए है। यहाँ उग्रता अवश्य थी, पर हर वात मे आराम और अधिकता भी थी। काम करने के लिए वहुत से लोग उपस्थित थे, जवकि पैनी अकेला ही लगभग इतने ही वडे खेत का काम निवटाता था। अव जोडी को अपना अपराध अनुभव हुआ कि अनाज की निलाई का अपना काम अव भी वह अधूरा छोड आया था। उसे पता था कि पैनी उस काम को भी विना कुछ खयाल किए पूरा कर देगा।

वूढे माता-पिता अव भी अपनी कुर्सियो मे ही सो रहे थे। पश्चिम मे सूर्य की लाली फैल गई थी। धीरे-धीरे कमरे मे अन्धकार छा गया। जो प्रकाश आ भी सकता था, सनावरो ने उसे भी रोक दिया। वैक्स्टर परिवार के घर मे इस समय भी यह प्रकाश आ सकता था। धीरे-धीरे सव भाई कमरे मे इकट्ठे होते गए। फौडरविंग ने अँगीठी मे आग सुलगाई ताकि वची हुई कॉफी गर्म की जाय। जोडी ने देखा कि उनकी माँ ने एक आँख खोली और फिर वन्द कर ली। शेप भाइयो ने वासी खाना ठण्डा ही मेज़ पर इस ज़ोर से रखना शुरू किया कि यदि दिन मे उल्लू यह शोर सुन लेता तो उसकी भी नीद गायव हो जाती। माँ की नीद खुली। उसने पति को भी चुटकी लेकर उठाया और वे दोनो सवके साथ खाने मे जुट पडे। इस समय उन्होने सारा भोजन साफ कर दिया। कुत्तो तक के लिए कुछ वचा नही रह गया। फौडरविंग ने ठण्डी रोटियो का डिव्वा और दाल की वाल्टी उठाई और

उनके लिए ले गया। वह बेचारा लडखडाता चल रहा था। बाल्टी भी हिल-डुल रही थी। जोडी उसकी सहायता को दौडा।

भोजन के बाद परिवार के लोग तम्बाकू पीने लगे और घोडो के सम्बन्ध मे बातें करने लगे। उस इलाके और उससे पश्चिम की ओर के पशुओ के व्यापारी इस बार घोडो की कमी की चर्चा करते थे। घोडो के नये उत्पन्न बच्चो को भेडिये, रीछ और बाघ समाप्त करने पर तुले हुए थे। केण्टुकी मे आने वाले घोडे-व्यापारी भी अपने पशु लेकर नही पहुँचे थे। सब भाई उस बात पर सहमत थे कि उत्तर व पश्चिम की ओर जाकर अपने घोडे व खच्चर निकालने का यही सबसे अच्छा अवसर था। जोडी और विग को इस बात मे रस नही आ रहा था, इसलिए वे एक कोने मे सरककर अपनी ही चाकुओ की खेल मे उलझ गए। माँ यह नही सह सकती थी कि खेल खेल मे भी चाकू फर्श पर लगे, हालाँकि दो-चार छिलके इधर-उधर से उतर जाने से वहाँ कोई विशेष अन्तर पडने वाला न था। खेल से अलग होकर जोडी ने कमर सीधी की और बोला, "मैं एक ऐसी बात जानता हूँ, जो तुम्हे नही पता।"

"क्या ?"

"यही कि कभी स्पेनी लोग इसी राह से, हमारे दरवाज़े के रास्ते से, गुजरे थे।"

फौडरविग उत्तेजित होकर पास सरकता हुआ बोला, "क्यो ? मैं जानता था। उन्हे मैंने देखा भी है।"

जोडी आश्चर्य मे डूबा-सा उसकी ओर ताकने लगा। बोला, "तुम उन्हे देख ही नही सकते। उसमे से कोई यहाँ बचा ही नही। वे भी आदिवासी इण्डियन लोगो की तरह इस जगह से चले गए हैं।"

विग ने बुद्धिमत्ता से एक आँख मीचकर कहा, "लोग यही बात आम तौर पर कहते हैं। ज़रा, इधर सुनो ! तुम्हारी जमीन के सोते के पश्चिम की ओर डोगवुड के पेडो से घिरा मैग्नोलिया का बडा पेड है। जब तुम कभी उधर जाओ, तो ध्यान से उस पेड के पीछे देखना। वहाँ से सदा एक स्पेनी काले घोडे पर सवार होकर गुज़रा करता है।"

जोडी के रोंगटे खड़े हो गए। नि सन्देह फौडरविग की यह एक और

गप्प थी। यही कारण था कि उसके माता-पिता विंग को सनकी कहा करते थे। फिर भी उसकी इच्छा हुई कि वह विंग की इस बात पर भरोसा कर ले। इसमे उसे कुछ बुरा न लगा कि वह एक बार मैग्नोलिया के पीछे झाँक ले।

शेष लोगो ने अपने पाइप उलटाये या तम्बाकू थूका। वे अपने-अपने सोने के कमरो मे गए और कपडे उतारने लगे। उनमे से हरेक का बिस्तर अलग था, क्योकि कोई भी दो किसी भी दोहरे बिस्तर पर इकट्ठे नही सो सकते थे। फौडरविंग जोडी को रसोई के बाहर बरामदे के बने कमरे मे बिछे अपने बिस्तर पर ले गया।

वह बोला, "तुम तकिया ले सकते हो।"

जोडी को भरोसा था कि विंग की माता उसे सोने से पहले पैर धोने के लिए नही कहेगी। वह देख रहा था कि वे सब कितनी स्वतन्त्रता के साथ रह रहे थे। बिस्तर पर लेटने से पूर्व किसी ने भी पाँव नही धोए। उधर विंग ने एक बडी गप्प हाँकनी शुरू की। वह बताने लगा कि जहाँ ससार खतम होता है वह कैसी जगह है? उसने बताया कि वह शून्य और अँधेरी जगह है और वहाँ सवारी के लिए बादल ही होते है। पहले तो जोडी चाव से सुनता रहा पर बाद मे उसे यह कथा नीरस लगने लगी। धीरे-धीरे उसे नीद ने आ घेरा और वह घोडो के बदले बादलो पर सवार स्पेनियो के स्वप्न देखने लगा।

बहुत रात गए, उसकी नीद अचानक ही खुल गई। घर-भर मे एक अजीब शोर भर गया था। पहले तो उसने सोचा कि शायद वे भाई आपस मे फिर लड पडे हैं, परन्तु बाद मे उसे लगा कि उन सबकी आवाज़ो का लक्ष्य एक ही है और उनकी माता उन्हे उत्साह दे रही है। तभी ज़ोर से दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई और कमरा एक साथ ही अनेक कुत्तो की आवाज़ो से भर उठा। तभी फौडरविंग के कमरे के दरवाज़े पर रोशनी चमकी और एक साथ ही सब उसमे घुस आए। पुरुष एकदम नगे थे और वे पतले और हलके दिखाई दे रहे थे, हालाँकि उनकी ऊंचाई कमरे जितनी ही थी। माँ ने चर्बी की बनी मोमबत्ती हाथ मे थामी हुई थी। उसका टिड्डी-

सा पतला और हल्का-फुल्का शरीर मखमली गाउन के नीचे छिप गया था। कुत्ते कभी चारपाई के नीचे और कभी बाहर भौंक रहे थे। किसी ने भी न बताया कि गडबड है क्या? लडके कुत्तो के पीछे पीछे ही निकल भागे। यह शिकार हर कमरे मे से होता हुआ अन्त मे एक खिडकी मे लटकती हुई फटी मच्छरदानी मे से कुत्तो के बाहर निकल भागने पर समाप्त हुआ।

माँ एकदम ही शान्त होती हुई बोली, "ये उस शैतान खेती उजाडने वाले जानवर को बाहर खोज लेगे।"

फौडरविंग बडे गर्व से बोला, "उजाडू जानवरो के लिए माँ के कान बहुत तेज है।"

माँ ने कहा, "मेरा तो अनुमान है कि जिसके बिस्तर के भी पास से वह गुजरेगा, वही उसकी आवाज से पहचान लेगा।"

तब तक अपनी छडी टेकता हुआ उनका पिता भी कमरे मे आ पहुँचा और बोला, "रात तो लगभग बीत चुकी है। फिर से सोने के स्थान पर मैं तो थोडी शराब लेना अधिक पसन्द करूँगा।"

बक ने कहा, "पिताजी! इस तरह के भयानक पशु-पक्षियो के लिए आपकी पहचान बडी तेज है।"

तब रसोई की मेज तक जाकर वह शराब की बडी बोतल ले आया। उसके बूढे पिता ने उसकी डाट खोलकर कुछ उँडेली और पी गया।

लेम बोल उठा, "यह मत सोचना कि और किसी को इसकी चाह नही होती। इधर भी लाओ!"

उसने एक बडा प्याला भरा और बोतल को आगे सरका दिया। अपना मुख पोछकर उसने नगे पेट पर हाथ फेरा। वह दीवार की ओर जाकर अपनी वीणा बजाने के लिए जगह बनाने लगा। पहले उसने लापरवाही मे कुछ तारे छेडी, किन्तु थोडी ही देर मे वह बैठकर एक धुन बजाने लगा।

आर्क ने कहा, "भाई, तुम्हे अकेले ही यह अधिकार नही," और वह भी अपनी गिटार लाकर उसकी बगल मे ही बेच पर बैठ गया।

माँ ने जलती हुई बत्ती मेज पर टिकाकर लडको से पूछा, "क्यो?

क्या तुमने सवेरे तक इसी तरह नगे बैठे रहने का सोच रखा है ?"

आर्क और लेम अपने वाजो की मस्ती मे डूबे हुए थे। उनमे से किसी ने भी माँ की वात का उत्तर न दिया। वक ने अपना मुँह का वाजा निकाला और वजाना शुरु किया। उन दोनो का भी उधर ध्यान खिचा और कुछ देर रुककर उन्होने भी उसकी धुन मे ही साथ देना शुरू कर दिया।

पिता प्रसन्न होकर वोले, "शावाश ! वजाते रहो ! वहुत सुन्दर है।"

शराब की वोतल फिर एक वार घूम गई। पैंक ने अपनी वीणा और मिलव्हील ने अपना ढोल निकाल लिया। वक ने अपने सीधे से राग की जगह नृत्य की धुन वजानी शुरु कर दी। अव तक का वह शान्त सगीत एकदम अपने पूर्ण उभार पर आ गया। जोडी और विग भी लेम और आर्क के वीच मे फर्श पर आ वैठे।

माँ वोल पडी, "अव यह मत सोचना कि मैं जाकर सो जाऊँ और इस आनन्द को खो दूँ।"

उसने भट्टी मे आग धधकाई और एक मोटी-सी लकडी उसमे डालकर कॉफी का वर्तन चढा दिया। वह वोली, "अरे, शोर करने वालो! तुम अपना नाश्ता आज जल्दी ही करोगे या कुछ देर वाद ?" तव उसने जोडी की तरफ पलक मारते हुए कहा, "क्यो न एक तीर से दो शिकार मारे जायँ, यह आनन्द भी उठाया जाय और नाश्ते से भी निवट लिया जाय ?"

जोडी ने भी इशारे से ही स्वीकृति दी। उसे अपने अन्दर कुछ वल, आनन्द और उत्साह-सा अनुभव हुआ। वह नही समझ सका कि उसकी माँ ऐसे मौजी लोगो को पसन्द क्यो नही करती ?

सगीत लय से वाहर था और खूव धूम-धडाके से हो रहा था। ऐसा लगता था जैसे जगल के सभी वनविलाव इकट्ठे हो गए हो। परन्तु फिर भी इसकी ताल और लय ने कानो और आत्मा को एक सन्तोष-सा प्रदान किया। जोडी को लगा जैसे उसके अन्दर की तारे हिल उठी हो और लेम अपनी अँगुलियाँ उस वीणा पर ही वजा रहा हो।

लेम ने वहुत धीमी आवाज मे उसे कहा, "काश ! मेरी प्रेमिका भी यहाँ होती और वह भी नाचती और गाती।"

जोडी पूछ बैठा, "आखिर तुम्हारी प्रेमिका कौन है ?"

"वही मेरी छोटी-सी ट्विंक, वैंदरवी।"

"अरे ! वह तो ओलिवर हुट्टी की प्रेमिका है।" जोडी के मुँह से निकल गया।

लेम ने अचानक ही अपनी वीणा उठाई। जोडी को लगा जैसे वह उसे ही मारना चाहता है, पर तभी उसने फिर वीणा पर खेलना शुरू कर दिया। अब उसकी आँखें गुस्से से जल रही थी। बोला, "देखो, अगर अब कभी दुबारा यह बात तुमने अपने मुँह से निकाली, तो तुम्हारी जीभ काट लूंगा। समझे !"

"समझ गया। शायद मेरे समझने मे कुछ गलती हो गई थी।" जोडी ने कहा।

"नही, मैंने तो तुम्हे यूँ ही कह दिया है।"

जोडी का मन कुछ देर के लिए बैठ गया और उसे लगा कि जैसे ओलिवर के प्रति वह विश्वास का पात्र नही रहा। पर कुछ देर बाद संगीत उसे फिर ले उड़ा। जैसे हवा का झोंका उसे पेडो से भी ऊँचा उडा ले गया हो। सब भाई नृत्य की तानो से फिर गीतो पर लौट आए और उनके माता-पिता ने भी इस बार अपनी काँपती और कमज़ोर आवाजो से उनका साथ दिया। दिन निकल आया और मचलते पक्षी पास के सनावर वृक्षों पर इतने स्पष्ट और ऊँचे सुरो मे गा उठे कि सबने सुन लिया। उन्होंने अपने बाजे रख दिए और कमरे से ही उषा को देखने लगे।

नाश्ता मेज़ पर लगा दिया गया। प्रतिदिन की अपेक्षा यह बहुत थोडा था। माँ उस नाच-गाने मे इतनी उलझ गई थी कि उसे बहुत कुछ पकाने का अवसर ही नही रहा। पुरुषो ने फिर से पाजामे पहन लिए, क्योंकि खाना तैयार था और उसकी सुगन्ध उन्हे आने लगी थी। नाश्ते के बाद उन्होंने अपने मुँह धोए और कमीज़ें तथा जूते आदि पहनकर अपने-अपने काम पर निकल पडे। बक ने अपने चितकबरे घोडे पर ज़ीन कसी और जोडी को उछालकर अपने पीछे बिठा लिया। जोडी को ज़रा पीछे सरककर बैठना पडा, क्योंकि ज़ीन पर एक इंच भी जगह न बची थी।

फौडरविंग उसे विदा करने के लिए खेत की मेड़ तक गया। उसके कन्धे पर रैकून अब भी सवार था। जब तक वे आँख से ओझल न हो गए, वह विदाई के लिए अपनी छडी हिलाता रहा। जोडी बक के साथ ही अपने घर तक लौट आया और उसके विदा होने पर उसकी ओर कृतज्ञता से हाथ हिलाता रहा। वह अब भी एक नशे मे था। जब उसने चीनी बेरी के नीचे के दरवाज़े को खोला, तब उसे याद आया कि वह मैग्नोलिया वृक्ष के पीछे घुडसवार स्पेनी को देखना तो भूल ही गया।



## 8

जोडी ने घुसते हुए पीछे का दरवाज़ा जोर से बन्द किया। भुनते हुए मांस की परिचित गन्ध चारों ओर फैल गई थी। वह पीछे से घूमकर घर की ओर दौड़ा। उसमें नाराज़गी और उत्सुकता मिली-जुली थी। रसोई का दरवाज़ा खुला हुआ था। अपने को उधर से रोककर वह पिता के पास सीधा दौड़ा गया। वह भी पीछे के धुएँ वाली कोठरी से निकला और उसने जोडी का स्वागत किया।

एक साथ दर्द और खुशी देने वाली सचाई उसके सामने थी। एक बड़े से हिरण की खाल उसी कमरे के फर्श पर बिछी हुई थी। जोडी ने शिकायत के स्वर में कहा, "आप शिकार करते रहे और मेरी प्रतीक्षा भी नहीं की।" और तब पाँव पटककर कहा, "आज से मैं कभी भी आपको अपने को साथ लिए बिना न जाने दूँगा।"

"शान्त हो, प्यारे बेटे! पहले सुन तो लो। इसमें तुम्हें गर्व ही होना चाहिए कि कभी-कभी एकदम ही बहुत अधिक चीज़ें कैसे मिल जाती हैं?"

उसका गुस्सा ठण्डा हो गया और उत्सुकता एक सोते की भाँति फट पडी। वह पूछ बैठा, "मुझे जल्दी बताइए, कैसे हुआ ?"

पैनी एडियो के बल ही रेत मे बैठ गया। जोडी उसके पास ही घुटने के बल ही बैठ गया।

"एक हिरण था। मैं तो उसे कुचलने ही लगा था।"

जोडी का क्रोध फिर उमड आया। बोला, "आपने मेरे घर लौटने तक प्रतीक्षा क्यो न की ?"

"क्या तुम्हे वहाँ आनन्द नही आया ? आखिर तुम्हे सभी आनन्द एक साथ तो मिल नही सकते !"

"पर यह तो कुछ टाला जा सकता था। उनके पास तो कभी भी समय नही होता। यह सब बहुत जल्दी-जल्दी हुआ।"

पैनी हँस पडा। बोला, "खैर ! न तो तुम ही, न मैं, और न कोई और कभी भी ऐसी घटना को होने से रोक सकते है।"

"क्या यह हिरण दौड रहा था ?"

"जोडी, मैं सच बताता हूँ, मैंने जीवन मे कभी शिकार को इस तरह रास्ते मे खडा होकर प्रतीक्षा करते नही पाया। यह हिरण रास्ते के बीचोबीच खडा था। इसने घोडे की ओर ध्यान ही नही दिया। खडा ही रहा। मुझे पहले तो यही खयाल आया कि मेरी नई बन्दूक मे गोली नही है और यह शिकार हाथ से यो ही निकल जाएगा। परन्तु ज्यो ही इसे खोला और झुकाकर देखा, परमात्मा की कृपा से, मैं देखकर हैरान रह गया कि उन्होने यह बन्दूक पूरी भरी हुई दी थी। बन्दूक मे दो कारतूस थे और सामने खड़ा था यह हिरण, जैसे मेरी प्रतीक्षा कर रहा हो। मैंने गोली दागी और वह गिर पडा। ठीक सडक मे बीचोबीच, जैसे पके-पकाए भोजन का कोई थैला हो। मैंने इसे सीज़र की पीठ पर लाद लिया और हम चले आए। अब तुम ही बताओ मुझ पर क्या बीती होगी ? मैं सोचने लगा, 'मैं यह हिरण का मांस ले जा रहा हूँ। जोडी की माँ कही मुझे उसे फौडरविंग के साथ छोड आने के लिए कुछ कह न बैठे।"

"तब जब उसने तुम्हे नई बन्दूक और मांस के साथ देखा तो क्या बोली ?"

वह बोली, "अगर तुम-जैसे ईमानदार मूर्ख की जगह कोई और होता तो मैं यही सोचती कि वह चोरी करके लाया है।"

वे दोनो मिलकर हंसने लगे। रसोई से आने वाली सुगन्ध मस्ती-भरी थी। फौरेस्टर परिवार के साथ विताया समय जोडी को भूल गया। दिन के खाने को छोडकर और कोई सचाई सामने न थी। जोडी रसोई मे घुसा।

"नमस्कार, मां! मैं घर वापस आ गया हूं।"

"तो, क्या मैं हंसू या रोऊँ?"

उसका भारी शरीर अँगीठी पर झुका हुआ था। गर्मी काफी थी और पसीना उसके वदन से वह रहा था।

"पिताजी कोई शिकार मारकर लाए है, क्यो मां?"

"हां! और यह अच्छा ही है कि तुम सारे समय वाहर ही रहे।"

"मां!..."

"क्या है?"

"क्या हमे आज हिरण का मांस खाने को नही मिलेगा?"

"अरे भागवान! क्या तुम्हे पेट को छोडकर और कोई वात नही सूझती?"

जोडी ने अपना हथियार वरता, "तुम हिरण का मांस वहुत अच्छा पकाती हो, मां!"

वह नरम पड गई। बोली, "हम इसे आज ही खाएँगे। मुझे यह डर था कि इस गर्म मौसम मे रखा नही जा सकेगा।"

"जिगर तो इसका अब भी रखा नही जा सकता।"

"खैर, यह वडे शोक की वात है कि हम सारा एक साथ तो खा नही सकते। अगर तुमने मेरा लकडियो का डिब्बा भर दिया, तो सम्भव है रात को इसका जिगर ही खा लेंगे।"

वह तश्तरियां टटोलने लगा। मां खीझ पडी, 'निकल जाओ रसोई से! क्या तुमने मुझे दुखी करके मारने की सोच रखी है? तुम भोजन में क्या लाओगे?"

जोडी बोल उठा, "लाओ, मैं पका दूं।"

"हां, तुम और तुम्हारे कुत्ते!"

जोडी रसोई से निकलकर पिता की ओर भागा। उसने जाकर जूलिया का समाचार पूछा। उसे लगा जैसे, वह सप्ताह-भर बाहर रहकर आया हो।

पैनी ने बताया, "ठीक हो रही है। एक महीना लगेगा और तब वह उस खुर्राट रीछ को धर पकडेगी।"

"क्या फौरेस्टर लोग उसके शिकार मे हमारी सहायता करने की सोच रहे हैं?"

"नही, ऐसा कोई समझौता नही हुआ। मैं यह ज्यादा अच्छा समझूँगा कि वे अपने तरीके से शिकार करें और मुझे अपने तरीके के लिए छुट्टी है। मुझे इस बात की परवाह नही कि उसे कौन पा लेता है? बस एक ही इच्छा है कि वह हमारे पशुओ से दूर ही रहे।"

"पिताजी! मैंने आपको कभी बताया नही! मै तो घबरा गया था जब कुत्ते उससे लड रहे थे। मैं इतना घबरा गया था कि दौड भी न सका।"

"मुझे भी बहुत दुख हुआ, जब मैंने देखा कि मेरे पास अच्छी बन्दूक नही है।"

"पर आपने उनके सामने तो यही रौब रखा कि हमारे दिल बहुत बड हैं।"

"पर, बेटे! इसके बिना कहानी भी तो नही बनती।"

जोडी ने हिरण की खाल देखी। यह काफी अच्छी और बडी थी। उसे शिकार मे पशु के दो भिन्न रूप सामने आते दिखाई दिए। पहला, उसका पीछा करते समय जिसमे उत्सुकता मिली होती थी। वह इसे गिरता भी देखना चाहता था। दूसरा, मरने के बाद, जब उसमे से खून बह रहा हो। ऐसा रूप देखते ही उसका जी घबराने लगता और वह शोक मे डूब जाता। किसी की दुखपूर्ण मृत्यु पर उसके दिल मे टीस उठती। परन्तु, उसके टुकडे काटकर सुखाने, पकाने, भूनने, उबालने या तलने पर, उसके लिए, यह केवल मांस रह जाता—सूअर के मांस की तरह! ऐसे मांस के लिए उसकी लार हमेशा ही टपकती रहती थी। वह आश्चर्य मे पड जाता कि किस तरीके से यह परिवर्तन हुआ कि जो चीज अभी कुछ देर पहले उसका जी घबरा देने का कारण बनी थी, वही अब उसे भूख से पागल कर रही है।

उसे लगा कि या तो ये ही जानवर थे, या फिर वही दो लडको के रूप मे था।

खालो मे कोई परिवर्तन नही आता। वे जैसे सदा ताजा रहती है। अपने विस्तरे के नीचे पडी हिरण की खाल पर जब भी वह पाँव रखता, उसे लगता जैसे वह अभी जिन्दा होकर चल पडेगी। छोटे शरीर का होने पर भी पैनी की छाती पर हलके-हलके बाल उग आए थे। उसकी पत्नी का कहना था कि पैनी अपने लडकपन मे सर्दियो मे भी नगे वदन रीछ की खाल ओढकर सोता था। खाल का बालो वाला हिस्सा उसके शरीर से छूने के कारण ही उसकी छाती पर बाल उग आए थे। माँ की इस मजाक पर जोडी ने सहज विश्वास कर लिया।

फौरेस्टर परिवार के खेतो की भाँति ही यहाँ के खेत भी भरे हुए थे। उसकी माँ ने सूअरी के माँस को पीसकर कीमा तैयार कर लिया था। शेप माँस मसाला भरकर और लपेटकर घुएँ वाली कोठरी मे लटका दिया था। अखरोट की लकडी का हलका-हलका धुआँ उनके नीचे उठ रहा था। पैनी अपना काम छोडकर लकडी के कुछ टुकडे लाने गया ताकि सुलगती हुई उस लकडी पर उन्हे डाला जा सके।

जोडी ने पूछा, "मैं लकडियाँ काट लूं, या अनाज की निलाई पूरी कर लूं?"

"जोडी, तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं अनाज को यूं ही नही छोड सकता था। इस तरह वेकार की घास-फूस वढकर उसे विगाड देती। इसी लिए मैं उसे निला चुका हूँ। अव तुम लकडियाँ काट लो।"

इस समय उसे लकडियाँ काटने जाना वहुत अच्छा लगा, क्योंकि यदि वह अपने को उलझाए न रखता तो भूख उसे कुत्तो के लिए सुखाया गया मगरमच्छ का माँस खाने पर विवश कर देती, या फिर वह मुर्गियो के चूजो के भोजन मे से रोटी उठाने पर विवश हो जाता। शुरू मे समय वडा धीमे-धीमे वीत रहा था। उसके अन्दर पिता की हर हरकत का अनुकरण करने की इच्छा वल पकडती जा रही थी। तव पैनी एकाएक खच्चरो में घुस गया और जोडी भी विना ध्यान इधर-उधर किए लकडी काटने लगा। वह एक गठरी भर लकड़ी माँ के पास ले चला, ताकि इस वहाने से देख सके

कि भोजन मे कितनी देर है। उसने जाकर देखा और प्रसन्न हुआ कि यह मेज़ पर लगाया जा चुका था। अब माँ कॉफी डाल रही थी।

वह देखते ही बोली, "अपने पिता को बुलाओ और इन मैले हाथो को धो डालो। मुझे पूरा विश्वास है कि घर से जाने के बाद से तुमने अब तक पानी नही छूआ।"

तब पैनी भी आ गया। हिरण का पका माँस मेज़ के बीचोबीच पड़ा था। उसने अपना तेज़ चाकू उठाया और मस्ती मे माँस पर चलाने लगा।

जोडी बोल उठा, "मुझे बहुत भूख लगी है। मेरा पेट सोच रहा है कि मेरा गला ही कट चुका है।"

पैनी ने चाकू नीचे रख दिया और उसकी ओर देखने लगा।

माँ बोल उठी, "क्या तुम्हे कोई और अच्छी बात कहने को नही रही? यह सब तुमने कहाँ से सीखा?"

"क्यो? फौरेस्टर लोग इसी तरह बात करते हैं।"

"मुझे पता है। ये ही बातें हैं जो तुम उन नीच दुष्टो से सीखते हो।"

"माँ! वे नीच नही है।"

"उनमे से हर कोई खटमल से भी नीच है और सभी दिल के काले है।"

"नही, माँ! उनका दिल भी काला नही है। वे बडे मित्रतापूर्ण है। वे वीणा बजाते है, नाचते और गाते है। और यह सब वे पेशेवर वीणा बजाने वालो से अधिक अच्छी तरह करते है। हम पौ फटने से काफी पहले से ही उठकर गाते और खुशियाँ मनाते रहे। सचमुच यह सब बहुत ही अच्छा था।"

"यह सब ठीक है, यदि उनके पास करने को और कुछ अच्छा काम नही है।"

तश्तरियो मे ऊपर तक भरा हुआ माँस सामने पडा था। सब उस पर टूट पडे।

गया। मैं सौगन्ध खाता हूँ, मुझे इसके मारने मे घृणा हो आई।"

जोडी को लगा कि जैसे वह कुछ खो बैठा हो। उसे यह भी दुख हुआ कि वह इस सफेद जन्तु को जीवित न देख सका। उसने कहा, "पिताजी, मुझे इसे उठाने दीजिए।"

उसने उस मरे हुए पशु को अपनी भुजाओ मे उठा लिया और सहलाने लगा। पीले बाल सादे बालो की अपेक्षा अधिक मुलायम थे। पेट के बाल भी ताजा निकले चूज़ो के बालो से भी अधिक कोमल थे। उसने उसे थपथपाया।

"मुझे बहुत ही अच्छा लगता यदि मैं इसे छोटा-सा पाकर पालता।"

"वह प्यारा तो अवश्य होता, पर होता उतना ही नीच जितने और होते है।"

वे दरवाज़े से अन्दर मुडे और घर के पास से होते हुए रसोई की ओर गए।

"फौडरविंग कहता था कि उसका कोई भी रैकून कोई खास नीच नही रहा।"

"हाँ, पर यदि वह हो भी तो कोई फौरेस्टर नही समझ पाएगा।"

"शायद वह भी जवाब मे काट ही डाले। क्यो, ठीक है न ?"

वे कुछ देर ऐसे हँसे जैसे दो पडोसी हो। जोडी की माँ उन्हे दरवाजे पर ही मिल गई। पशु को देखते ही उसका चेहरा खिल उठा। वह बोली, "तुमने इसे पाया ? चलो, अच्छा हुआ। मेरी मुर्गियो को यही मारता रहा था।"

जोडी ने विरोध किया, "किन्तु माँ! इसको देखते तो सही। यह बिलकुल सफेद है। कितना अजीब है!"

माँ ने उदासीन होकर उत्तर दिया, "आखिर है तो यह एक चोर जन्तु ही। क्या इसकी खाल औरो से ज्यादा कीमती है ?"

जोडी ने अपने पिता की ओर देखा, वह हाथ-मुंह धोने मे लगा हुआ था। उसने साबुन की झाग से भरे चेहरे मे से एक आँख खोली और उसे बेटे की ओर झपकाकर कहा, "नही, कानी कौडी की भी नही। जोडी बहुत दिन से एक छोटा-सा थैला चाह रहा था। यह तुम्हारी कृपा होगी, अगर तुम उसे यह खाल बरतने दो।" जोडी सोच रहा था, यदि यह सफेद जन्तु

उसे ज़िन्दा न मिल पाया तो इसकी मुलायम बालो वाली खाल का थैला भी उसे उतना ही प्यारा लगेगा। इसी खुशी मे वह नाश्ता भी ठीक से न खा सका। अपने पिता को वह उसकी कृपा के लिए जैसे धन्यवाद देना चाहता हो। बोला, "पिताजी, क्या मैं यह नालियाँ साफ कर दूं ?"

पैनी ने सिर हिलाकर स्वीकृति दी और बोला, "मैं हर साल वसन्त के आने पर सोचता हूँ कि एक गहरा कुआँ खुदवा लूं और हमारी यह नालियाँ भरकर बहे। पर क्या करूं ? ईंटें ही बहुत महंगी है।"

जोडी की माँ बोल पडी, "मै नही जानती कि आखिर मैंने पानी की कब बचत नही की ? मुझे तो यह बचत करते हुए बीस साल हो गए।"

पैनी बोला, "अब कुछ धीरज रखो।"

उसके चेहरे की झुर्रियाँ उभर आई। जोडी जानता था कि पानी की कमी पुत्र और माँ की अपेक्षा पिता को सख्त कठिनाई मे डाल रही थी। जोडी का काम तो लकडी लाने तक ही खत्म हो जाता था, पर पैनी को अपने कन्धे पर बैंगी लटकाकर दो बडी-बडी बाल्टियो सहित उस रेतीली सडक से होकर खेतो मे उस सोते तक जाना होता था। वही से वह पानी लाता था। सोते से रिस-रिसकर बहने वाला पानी कुछ जगह इकट्ठा हो जाता था। गिरे हुए पत्तो से उसका रग कुछ पलट जाता था और वह रेत से खुद ही छन जाता था। यह मेहनत मानो पैनी ऐसे करता था, मानो वह अपने परिवार को इतनी दूर बसाने के लिए क्षमा माँग रहा हो। यह जमीन उपजाऊ थी। पर इससे सोते, धाराएँ, कुएँ या नदियाँ कुछ ही दूरी पर मिल सकती थी। जोडी को अचरज हुआ कि उसके पिता ने बसने के लिए इस ज़मीन को क्यो चुना ? सोते की ढलान की ओर के जोहडो का उसे ध्यान आया, जिन्हे साफ करना जरूरी था। तब उसकी इच्छा हुई कि काश ! उनकी जमीन भी दादी हुट्टो की जमीन के समान नदी के किनारे होती। इतने पर भी इन खेतो और ऊँचे चीडो का यह टापू उनका अपना ससार था। उसे दूसरी जगहो की बाते दूर देशो की कहानियो-जैसी ही लगी, जिन्हे प्राय ओलिवर सुनाया करता था।

उसकी माँ बोली, "बेटा ! तुम दो-एक बिस्कुट और कुछ माँस अपनी जेब मे रख लो। तुमने कुछ नही खाया।"

साठ फुट गहरा था। चौडा भी यह काफी था, इतना कि पैनी की बारूद भरने वाली बन्दूक एक पार से दूसरे पार की गिलहरी पर निशाना नही दाग सकती थी। सोते का यह छेद इतना गोल था, मानो किसी ने बाकायदा कुआँ खोदा हो। जोडी इसके भीतर ताकने लगा। उसे लगा, जैसे इसकी बनावट की सचाई फौडरविग की कहानियो से भी बढकर आश्चर्य पैदा करने वाली हो।

यह छेद पैनी से भी पुराना था। पैनी ने बताया कि उसे याद है कि इसके निचले किनारे के पेड कभी शाखा जितने छोटे होते थे। अब वे बहुत बडे हो चुके हैं। पूर्वी किनारे पर कुछ ऊपर उठकर जो मैग्नोलिया का वृक्ष है, उसका तना चक्की के पाट जितना गोल और मोटा हो चुका है। अखरोट का तना अब किसी आदमी की जाँघो जितना मोटा हो चुका है। सनावर की शाखे फैलकर सोते की आधी दूरी तक फैल गई हैं। और भी कई छोटे छोटे वृक्ष किनारो से हटकर काफी अधिक उग आए है। उनमे से ताडनुमा झाडियाँ अपने भाले-जैसे लम्बे नुकीले पखो के साथ बढ आई है। विशाल सरू ऊपर से जड तक मोटे होते आए हैं। जोडी ने देखा वह बाग प्यालेनुमा-सा था। उसके हरे-हरे पत्ते पखो से लग रहे थे। वह अत्यन्त शीतल और फुहार भरा था, जैसे वह सदा ही किसी रहस्य से भरा रहता हो। उस उपजाऊ जगल के बीचोबीच, उस चीडो के टापू के किनारे पर, वह कुएँ-जैसा सोता ऐसे लगता था, जैसे उस जगल का हरा-सा दिल हो।

उस सोते के नीचे की पगडडी पश्चिम के किनारे पर बढ गई थी। बरसो से पैनी के चलने एव पशुओ को लाने-ले जाने से यहाँ की मिट्टी और चूना भुर कर रेत-से बन गए थे। सूखी से सूखी ऋतु मे भी पानी लगातार रिसता ही रहता था और नीचे की ओर के एक छोटे जोहड मे जमा होता रहता था। यह पानी खडा रहता था। पशुओ के पानी के लिए आने-जाने से यह गँदला भी था। पैनी के सूअर इसे पीने के भी काम लाते थे। बाकी पशुओ और अपने परिवार के लिए पैनी ने चतुरता बरती थी। उसने पगडण्डी वाले किनारे के दूसरी ओर कुछ नालियाँ उन चूने के पत्थरो को काटकर बनाई थी। इनमे पानी रिस-रिसकर आता था। नीची से नीची नाली भी सोते की जड से पैनी के कन्धे तक ऊँची थी। यही पर वह गाय,

बछडे और घोडे को पानी पिलाने लाता था। अपनी जवानी मे मोतिया रग के अपने बैलो के हल को उसने यहाँ चलाया था। वे बैल ही उसकी खेती की सफाई के एकमात्र सहारा थे। इससे कुछ ऊपर उसने कुछ गहरी नालियाँ खोदी थी। यहाँ आकर उसकी पत्नी कपडे आदि धोया करती थी। यहाँ तट के कुछ भाग पर बरसो के साबुन के उपयोग से जैसे सफेदी-सी हो उठी थी। गद्दे, रजाई आदि के उछाड जैसे बडे-बडे कपडे वह बरसात के पानी से ही धोती थी।

इन नालियो से भी ऊपर की ओर एक और नाली थी, जिसका पानी पीने और पकाने के काम आता था। इसका किनारा एकदम सीधी ढलान वाला था। इसीलिए किसी पशु के चढने का भय ही नही था। हिरण, रीछ, बाघ आदि जितने भी जगली पशु आते, वे प्राय पश्चिमी पगडण्डी से आते। इसीलिए वे पानी भी या तो जोहड से या पशुओ वाली नाली से पीते थे। गिलहरियाँ और कभी-कभी बनबिलाव अवश्य सबसे ऊपरी नाली मे से पानी पीते थे। इन्हे छोडकर केवल पैनी ही अपनी बैगी पर बाल्टियाँ लेकर वहाँ पानी भरने आता था।

जोडी पगडण्डी के नीचे की ओर कूदा। सहारे के लिए वह अपनी कस्सी का प्रयोग कर रहा था। जगली अगूरो की बेलो मे पहुँचना आसान था। पर ढलान पर से ऐसा उतरना उसे सदा ही प्रिय लगा था। धीरे-धीरे वे नालियाँ ऊँची होती गईं। उधर नीचे की ओर के पेडो की चोटियो के पास से वह गुजरने लगा। नीचे के लहलहाते खेतो पर हवा का एक शीतल झोका आया और जैसे हरे बर्तन मे रखा पानी लहरा उठा हो। पत्ते मानो अपना सिर हिला रहे थे। सरू एक क्षण के लिए धरती पर झुक-सा गया। सोते के परली पार लाल चिडिया झूल उठी और जोहड पर ऐसे टूटी, जैसे कोई उजला पत्ता गिरा हो। परन्तु जोडी को देखते ही वह फिर उड गई। वह इस जोहड के किनारे घुटने टेककर बैठ गया।

पानी साफ था। सूअर उत्तर की ओर के दलदली मैदानो मे चर रहे थे। उन्हे इस समय सोते का ध्यान नही था। किसी डूबी हुई शाखा के नीचे से एक हरे रग के छोटे-से मेढक ने जोडी की ओर झाँका। जोडी को ध्यान आया कि यहाँ से कम से कम दो मील परे कोई और पानी की जगह

साठ फुट गहरा था। चौडा भी यह काफी था, इतना कि पैनी की बारूद भरने वाली बन्दूक एक पार से दूसरे पार की गिलहरी पर निशाना नही दाग सकती थी। सोते का यह छेद इतना गोल था, मानो किसी ने बाकायदा कुआँ खोदा हो। जोडी इसके भीतर ताकने लगा। उसे लगा, जैसे इसकी बनावट की सचाई फौडरविंग की कहानियो से भी बढकर आश्चर्य पैदा करने वाली हो।

यह छेद पैनी से भी पुराना था। पैनी ने बताया कि उसे याद है कि इसके निचले किनारे के पेड कभी शाखा जितने छोटे होते थे। अब वे बहुत बडे हो चुके हैं। पूर्वी किनारे पर कुछ ऊपर उठकर जो मैग्नोलिया का वृक्ष है, उसका तना चक्की के पाट जितना गोल और मोटा हो चुका है। अखरोट का तना अब किसी आदमी की जाँघो जितना मोटा हो चुका है। सनोवर की शाखे फैलकर सोते की आधी दूरी तक फैल गई है। और भी कई छोटे छोटे वृक्ष किनारो से हटकर काफी अधिक उग आए है। उनमे से ताडनुमा झाडियाँ अपने भाले-जैसे लम्बे नुकीले पंखो के साथ बढ आई है। विशाल सरू ऊपर से जड तक मोटे होते आए है। जोडी ने देखा वह बाग प्यालेनुमा-सा था। उसके हरे-हरे पत्ते पखो से लग रहे थे। वह अत्यन्त शीतल और फुहार भरा था, जैसे वह सदा ही किसी रहस्य से भरा रहता हो। उस उपजाऊ जगल के बीचोबीच, उस चीडो के टापू के किनारे पर, वह कुएँ-जैसा सोता ऐसे लगता था, जैसे उस जगल का हरा-सा दिल हो।

उस सोते के नीचे की पगडडी पश्चिम के किनारे पर बढ गई थी। बरसो से पैनी के चलने एव पशुओ को लाने-ले जाने से यहाँ की मिट्टी और चूना भुर कर रेत-से बन गए थे। सूखी से सूखी ऋतु मे भी पानी लगातार रिसता ही रहता था और नीचे की ओर के एक छोटे जोहड मे जमा होता रहता था। यह पानी खडा रहता था। पशुओ के पानी के लिए आने-जाने मे यह गँदला भी था। पैनी के सूअर इसे पीने के भी काम लाते थे। बाकी पशुओ और अपने परिवार के लिए पैनी ने चतुरता बरती थी। उसने पगडण्डी वाले किनारे के दूसरी ओर कुछ नालियाँ उन चूने के पत्थरो को काटकर बनाई थी। इनमे पानी रिस-रिसकर आता था। नीची से नीची नाली भी सोते की जड़ से पैनी के कन्धे तक ऊँची थी। यही पर वह गाय,

बछडे और घोडे को पानी पिलाने लाता था। अपनी जवानी मे मोतिया रग के अपने बैलो के हल को उसने यहाँ चलाया था। वे बैल ही उसकी खेती की सफाई के एकमात्र सहारा थे। इससे कुछ ऊपर उसने कुछ गहरी नालियाँ खोदी थी। यहाँ आकर उसकी पत्नी कपडे आदि धोया करती थी। यहाँ तट के कुछ भाग पर बरसो के साबुन के उपयोग से जैसे सफेदी-सी हो उठी थी। गद्दे, रजाई आदि के उछाड जैसे बडे-बडे कपडे वह बरसात के पानी से ही धोती थी।

इन नालियो से भी ऊपर की ओर एक और नाली थी, जिसका पानी पीने और पकाने के काम आता था। इसका किनारा एकदम सीधी ढलान वाला था। इसीलिए किसी पशु के चढने का भय ही नही था। हिरण, रीछ, बाघ आदि जितने भी जगली पशु आते, वे प्राय पश्चिमी पगडण्डी से आते। इसीलिए वे पानी भी या तो जोहड से या पशुओ वाली नाली से पीते थे। गिलहरियाँ और कभी-कभी बनविलाव अवश्य सबसे ऊपरी नाली मे से पानी पीते थे। इन्हे छोडकर केवल पैनी ही अपनी बैगी पर बाल्टियाँ लेकर वहाँ पानी भरने आता था।

जोडी पगडण्डी के नीचे की ओर कूदा। सहारे के लिए वह अपनी कस्सी का प्रयोग कर रहा था। जगली अगूरो की बेलो मे पहुँचना आसान था। पर ढलान पर से ऐसा उतरना उसे सदा ही प्रिय लगा था। धीरे-धीरे वे नालियाँ ऊँची होती गई। उधर नीचे की ओर के पेडो की चोटियो के पास मे वह गुजरने लगा। नीचे के लहलहाते खेतो पर हवा का एक शीतल झोका आया और जैसे हरे बर्तन मे रखा पानी लहरा उठा हो। पत्ते मानो अपना सिर हिला रहे थे। सरू एक क्षण के लिए धरती पर झुक-सा गया। सोते के परली पार लाल चिडिया झूल उठी और जोहड पर ऐसे टूटी, जैसे कोई उजला पत्ता गिरा हो। परन्तु जोडी को देखते ही वह फिर उड गई। वह इस जोहड के किनारे घुटने टेककर बैठ गया।

पानी साफ था। सूअर उत्तर की ओर के दलदली मैदानो मे चर रहे थे। उन्हे इस समय सोते का ध्यान नही था। किसी डूबी हुई शाखा के नीचे से एक हरे रग के छोटे-से मेढक ने जोडी की ओर झाँका। जोडी को ध्यान आया कि यहाँ से कम से कम दो मील परे कोई और पानी की जगह

है। उसे आश्चर्य हुआ कि एक छोटे से जोहड तक आने के लिए किसी मेढक ने इतनी दूरी तय की। उसे इस बात मे भी सन्देह था कि पहले-पहल आने वाले मेढको को तब तक यहाँ पानी होने का पता भी था, जब तक वे स्वय ही पहुँच नही गए और पानी पाकर कुछ ठिठके और प्रसन्न हुए? उसे पैनी ने बताया था कि एक बार बरसात मे उसके मेढको की एक पंक्ति जगलो मे से पार आती देखी थी। वे अनजाने ही आ रहे थे या जान-बूझकर?—इस विषय मे पैनी कुछ न कह सकता था। जोडी ने सरु की एक शाख जोहड मे झटकी और वह मेढक वही हलके कीचड मे छिप गया।

उस समय जोडी मे अकेलेपन की भावना घर करने लगी। उसने निश्चय किया कि जब वह बडा होगा तब वह अपना घर इसी जोहड के किनारे बनाएगा। पशुओ को भी इसकी आदत पड जाएगी। और वह चाँदनी रात मे अपनी खिडकियो से झाँककर उन्हे पानी पीते देखा करेगा।

उसने उस सोते के नीचे के समतल को पार किया और कुछ ऊपर चढकर पशुओ की नाली तक गया। उसे लगा कि यहाँ कस्सी से सफाई करना उचित नही। कस्सी को किनारे रखकर वह हाथो से सफाई करने लगा। पत्तो और मिट्टी के जमा होने से एक कडी तह-सी बन गई थी। उसने उसे अच्छी तरह उखाडा और खोदा। आते हुए पानी को रोककर उसने कुछ देर सूखी नाली को ही साफ करने का यत्न किया। उसके साफ करने तक पानी फिर रिस आया था। चूने के पत्थरो पर की नाली साफ थी। उसे उसने वैसा ही छोड दिया और ऊपर की ओर कपडा धोने वाली नालियो की कठिन सफाई मे लग गया। बार-बार प्रयोग मे आने से इनमे पत्ते आदि तो नही जमा हुए थे, पर साबुन की तह-सी जम गई थी, जिससे यह फिसलन भरी हो गई थी। उसने एक पेड पर चढकर कुछ स्पेनी काई इकट्ठी की और साफ करने के लिए इसे किनारे की सूखी रेत के साथ नालियो के तल पर रगडा।

जब तक वह सबसे ऊँची पीने के पानी की नाली पर पहुँचा तब तक थक चुका था। ढलान इतनी सीधी थी कि अगर वह पेट के बल तट पर खडा हो जाय, तो पानी पीने के लिए उसे सारस की भाँति केवल सिर झुकाने की जरूरत थी। वैसे खडे होकर उसने अपनी जीभ नाली के ऊपर-नीचे की ओर घुमाई। इसमे से पानी पीकर वह इसी मे कुल्ले करने लगा

और उनसे उठने वाले बुलबुलो को देखने के लिए पीछे हट आता था। वह निश्चय न कर सका कि रीछ कुत्ते के समान लपलपाकर पानी पीता है या हिरण की भाँति चूसते हुए। उसे विश्वास था कि उसका पिता ही यह बात जानता होगा। उसने अवश्य ही रीछ को पानी पीते देखा होगा।

तब जोडी ने अपना सिर इसी नाली मे डुबो दिया। कभी एक गाल और कभी दूसरा—करके वह अपने सिर के सभी भागो को पानी मे भिगोने और डुबोने लगा। इससे उसे शीतलता अनुभव हुई। अपनी हथेलियो पर शरीर का बोझ सँभाले वह नाली मे सिर डुबोए खडा रहा। वह देखना चाहता था कि इस प्रकार कितनी देर तक वह साँस रोके रह सकता है। मुख से वायु छोडकर वह बुलबुले भी बना रहा था। तभी उसे पिता की आवाज़ नीचे से आती सुनाई दी।

"बेटे! तुम्हे यह पानी इतना अधिक पसन्द कैसे आ गया? जब यही पानी हाथ धोने के बर्तन मे डाला जाता है, तब तुम उससे दूर भागते हो, जैसे यह कोई गन्दी चीज हो!"

जोडी मुडा। उसके सिर से पानी टपक रहा था।

बोला, "पिताजी, मुझे नही पता चला कि आप आए है।"

"तुमने अपना मैला सिर जो उसी नाली मे गहरे डुबो रखा था, जिससे तुम्हारा बेचारा पिता पानी पीना चाहता था।"

'पर मैं मैला नही था। पानी भी गन्दा नही हुआ।"

"पर मै भी इतना प्यासा नही हूँ।"

पैनी किनारे पर चढ आया और नीचे की नालियाँ देखकर प्रसन्न हुआ। तब उसने वही से कपडे धोने वाली नाली को देखा। सन्तुष्ट होकर एक पतली सी टहनी चबाते हुए बोला, "मै सच कहता हूँ, जब तुम्हारी माता ने 'बीस साल' की बात कही, तो मुझे बहुत दुख हुआ। सच यह है कि मैंने कभी समय गिनने का यत्न नही किया। सालो पर साल बीतते चले गए, पर मुझे उनका ध्यान नही। हर वसन्त मे मै सोचता रहा कुएँ को ठीक से बनवाने की, पर कभी बैल की ज़रूरत आ पडती, कभी गाय इसमे फंसकर डूब जाती या कोई छोटा पशु इसमे डूब जाता। तब मेरे अन्दर कुआँ खुदवाने का उत्साह ठण्डा पड जाता। ईटो की महँगाई का तो पूछो

ही मत! एक बार मैंने कुआँ खुदवाना आरम्भ किया, पर तीस फुट पर भी पानी न मिला। मुझे पता ही था कि यह कुछ होगा। पर, दूसरी ओर तुम्हारी माँ की शिकायत भी ठीक ही है। किसी भी स्त्री को बीस साल तक उस ऊँचाई और दूरी पर आकर कपडे धोने को कहना, सचमुच ज्यादती है।"

जोडी गम्भीर होकर सुनता रहा। फिर बोला, "एक न एक दिन हम उसे कुआँ बनवा ही देंगे।"

पैनी ने फिर दुहराया, "पर बीस साल! और हर बार कोई न कोई गड़बड! फिर युद्ध आ गया। और तब जमीन फिर से साफ करनी पडी।"

वह उसी तरह नाली के किनारे खडा रहा। उसकी आँखो के आगे से गुजर रहे थे वे बीते वर्ष!

याद करते हुए वह बोला, "जब मैं पहले-पहल यह जगह चुनकर यहाँ आया ही था, मैंने आशा की थी ..."

जोडी के दिमाग मे सवेरे वाला प्रश्न फिर से कौंध गया, "पिताजी, आपने उसे चुना कैसे?"

"मैंने इसे इसलिए चुना कि मैं शान्ति चाहता था, बस!" कहते हुए वह कारण सोचते हुए कुछ देर को रुका और फिर मुसकरा पडा। "यहाँ, दुनिया से दूर, मैंने जगह पा ली। यहाँ भालू, चीता, भेडिया और वनबिलाव आदि सभी का डर जब-तब सहना पडा; और तुम्हारी माँ का भी।"

तब कुछ देर वे चुप बैठे रहे। गिलहरियो ने पेडो की चोटियों पर दौडना शुरू कर दिया था। अचानक ही पैनी ने जोडी को कोहनी मारकर उसका ध्यान खींचा।

"देखो उस जानवर को! कैसे वह हमारी ओर ताक रहा है?"

उसने एक वृक्ष की ओर इशारा किया। उसके तने पर जमीन से कोई चार गज ऊचे पर एक छोटा रैकून चारो ओर चक्कर काट रहा था। वह सामने दिखाई देता और फिर छिप जाता। इतने मे फिर इसका टका-सा मुँह सामने दिखाई दिया।

पैनी ने कहा, "मुझे लगता है कि जैसे हमें जानवर अजीब लगते हैं,

हम भी उन्हे वैसे ही लगते हैं।"

जोडी ने पूछा, "पर यह कैसे कि कुछ घबरा जाते है और कुछ निडर होते है ?"

पैनी ने स्वीकार किया, "यह मुझे नही पता। शायद यह इस बात पर निर्भर करता है कि कितने बचपन मे कौन-सा जानवर डर गया था। पर यह कोई नियम नही कहा जा सकता। मुझे याद आ रहा है। एक बार मैं वनबिलावो वाले मैदान मे दोपहर तक शिकार ढूंढते-ढूंढते परेशान हो गया। सनावर के एक वृक्ष के नीचे मैंने थोडी-सी आग जलाई और खाना गर्म करने और सूअर का माँस पकाने की तैयारी करने लगा। इसी बीच एक लोमड आया और आकर आग के दूसरी ओर लेट गया। मैंने उसकी ओर देखा और उसने मेरी ओर। मैंने अनुमान किया कि वह भूखा है। मैंने छडी पर माँस का एक टुकडा लटकाकर उस तक—नाक के ठीक ऊपर—पहुंचाया। अब देखा जाय तो लोमड बडा जगली होता है। मैंने नही देखा कि कभी लोमड इतना भी भूखा हो सकता है कि उसमे भागने की हिम्मत न रह जाय। और यह अजब ही था कि वह लोमड वही लेटा रहा, न उसने खाया और न वह भागा, मेरी ओर देखता ही रहा।

"मैं उसे देखकर अवश्य प्रसन्न होता। पर पिताजी, आपका क्या अनुमान है ? वह आपकी ओर क्यो देखता रहा और फिर भी लेटा रहा ?"

"तब से आज तक मैं भी इस उलझन को सुलझा नही सका। मैं इतना अनुमान भी कर सका हूँ कि कुत्तो ने उसका पीछा करते-करते उसे थका दिया होगा और उसका दिमाग भी थक गया होगा। मेरा अनुमान है कि शायद वह लोमड कही झल्लाकर पागल न हो गया हो।"

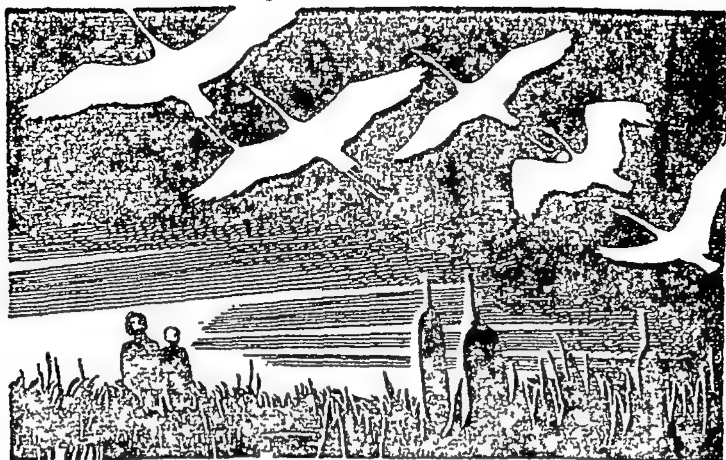
अब तक रैकून पूरा-पूरा दीखने लगा था।

जोडी ने कहा, "मेरी इच्छा थी, पिताजी, कि मेरे पास भी फौडरविंग जैसे ही कोई खेलने योग्य पालतू जानवर होता। मैं चाहता था कोई रैकून, रीछ का बच्चा या वैसा ही कुछ और मेरे पास भी होता।"

पैनी ने स्पष्ट किया, "तुम जानते हो, तुम्हारी माता उसे नही सहेगी। मुझे तो जन्तुओ से प्यार है। उधर समय कठिन है, भोजन की सामग्री कम रह गई है और इस पर तुम्हारी माँ है।"

"मुझे कोई लोमडी का बच्चा या चीते का बच्चा भी प्यारा लगेगा। पर क्या उन्हे छोटा पकड सकते हैं? और क्या आप उन्हे सधा सकते हैं?"

पैनी ने पिता का उपदेश याद करते हुए कहा, "बेटे! तुम रैकून, भालू, वनबिलाव या चीते मे से किसी को भी पालतू बना सकते हो। तुम किसी भी चीज़ को साध सकते हो, सिवाय इस मनुष्य की जुबान के !"



# 10

जोडी बीमार था। वह आराम से बिस्तर पर पडा, बुखार से ठीक हो रहा था। उसकी माँ का कहना था कि उसे बुखार है। उसने दलील बिना बढाए चुपचाप स्वीकार कर लिया। उसका अपना विचार यह था कि यह गडबड बहुत सारे अधपके झाडी के बेर खा लेने से हुई है। बुखार की बजाय ऐसी गडबडो का इलाज कुछ अधिक सख्त होता है। उसकी माता ने उसे कांपता देखकर उसके तपते माथे पर हाथ रखा और कहा, "जल्दी बिस्तर मे लेट जाओ। तुम्हे जाडा और बुखार हो गया है।" उसने प्रतिरोध न किया।

माँ पीने की कोई गर्म चीज प्याले मे लेकर कमरे मे घुसी। जोडी ने उत्सुकता से उस ओर देखा। दो दिन मे माँ उसे नीबू के पत्तो की चाय दे रही थी। यह सुगन्धित और स्वादु होती थी। कभी उसे खटास की शिकायत होती तो माँ उसमे थोडा मुरब्बा डाल देती। वह सोचने लगा, हो सकता है माँ को अब भी असलियत का पता चल गया होगा। अगर उसने बीमारी

आंतो की दर्द के रूप मे पहचानी होगी तब वह सर्पगन्धा जैसी कोई जड़ी देगी या फिर खून साफ करने वाली कोई और जड़ी देगी। इन दोनो से ही उसे नफरत थी।

उसने आते ही कहा, "अगर तुम्हारे पिता सिर्फ बुखारी-घास की जड़ लाकर यहां बो दें तो मैं तुम दोनो के बुखार को तो एक मिनट मे ठीक कर सकूंगी। बेड़े मे उस घास का न होना कोई अच्छी बात नही है।"

जोडी को उत्सुकता थी, "मां! प्याले मे क्या है?"

"तुम्हे क्या मतलब? अपना मुंह खोलो!"

"मुझे पता चलना चाहिए। मान लो तुम मुझे मार डालती हो और मैं जान भी नही पाता कि तुमने कौन-सी दवा मुझे दी।"

"तो सुनो! यह मसालेदार चाय है। मुझे लगा कि कही शायद तुम्हे खसरा न हो गया हो।"

"मां, यह खसरा नही है।"

"तुम्हे कैसे पता? तुम्हे कभी हुआ तो है नही। अपना मुंह खोलो! अगर तुम्हे खसरा नही भी हो तो यह दवाई नुकसान नही करेगी। और, अगर है तो यह उसका ज़ोर बाहर कर देगी।"

बीमारी का ज़ोर बाहर करने की बात उसे लुभावनी लगी। उसने मुंह खोल दिया। मां ने एक हाथ उसके सिर के बालो पर रखा और दूसरे से आधा प्याला एक साथ ही उसके गले मे उंडेल दिया। उसने उगलने की कोशिश की और रोकते हुए कहा, "नही, मैं और नही लूंगा। मुझे खसरा नही है।"

"अच्छा तो तुम इस बीमारी से मर जाओगे और इसका ज़ोर बाहर नही निकल पाएगा।"

उसने अपना मुंह फिर एक बार खोल दिया और बची हुई चाय को चुपचाप पी गया। स्वाद कड़वा था, पर और काढ़ो जितना नही। कुछ और काढ़े तो बहुत ही बुरे होते थे। पीकर वह तकिये पर सिर टिकाकर वैसे ही लेट गया।

"मां! अगर मुझे खसरा ही है, तो यह कब तक बाहर आ जाएगा?"

"जितनी जल्दी तुम्हे पसीना आने लगेगा। अब अपने को ढंक लो।"

वह कमरे से चली गई और इधर जोडी पसीने की इन्तज़ार करने लगा। बीमार पडना भी जैसे स्वय एक इलाज हो। अब उसे बीमारी की पहली रात से भय लगने लगा था। उस दिन दर्दो के मारे वह गठरी-सा बन गया था। परन्तु यह कमज़ोरी और माता पिता से अलगाव उसे अच्छा लग रहा था। अन्दर-ही-अन्दर उसे यह बात खाए जा रही थी कि उसने माँ को जगली बेर अधिक खा जाने की बात क्यो नही बताई। वैसा करने पर वह उसे जुलाब दे देती और रात ही रात मे सब ठीक हो जाता। इन दो दिनो से अकेले पैनी को ही खेत का सारा काम करना पड रहा था। उसने बूढे सीज़र को हल मे जोतकर गन्ने के खेतो मे हल चलाया, अनाज और मटर के खेतो मे काम किया और तम्बाकू के छोटे से खेत मे भी निलाई आदि की। वह अकेला ही सोते से पानी लाया, लकडियाँ काटी और सारे पशुओ को भोजन और पानी दिया।

जोडी ने सोचा शायद उसे बुखार है या शायद उसे खसरा निकलने वाला है। उसने चेहरे व पेट को टटोला। न उसे पसीना आया हुआ था, न खसरा बाहर निकला था। वह चारपाई पर ही हिलने-डुलने लगा, ताकि पसीना जल्दी आ सके। उसे अनुभव होने लगा कि जैसे वह हमेशा की भाँति ठीक हो, शायद उससे भी अच्छा, जितना वह माँस अधिक खा जाने से पहले था। उसे याद आया कि किस प्रकार वह माता के ना रोकने पर ताज़े कीमे और हिरण के माँस को अधिक-से-अधिक खाता गया। उसे लगा कि उसकी बीमारी मे जगली बेरो का कोई भी हाथ नही। अब तक वह पसीने से तर हो चुका था।

वह चिल्लाया, "माँ! आओ, देखो! आखिर पसीना आ ही गया।"

माँ आई और उसे अच्छी तरह देखकर बोली, "अरे, तुम तो मेरे जैसे ही भले चगे हो। चलो, बिस्तर छोड दो।"

रजाई आदि परे पटककर वह उठ खडा हुआ। उसके पाँव मृगछाला पर थे। उसने अपने को हलका अनुभव किया।

"तुम्हे सब ठीक लगता है?" माँ ने पूछा।

"हाँ, माँ! कुछ कमज़ोरी अवश्य है।"

"ठीक है। तुमने कुछ खाया भी तो नही। अच्छा, कमीज़ पाजामा

पहनो और थोड़ा भोजन कर लो।"

जल्दी से कपड़े बदलकर वह माँ के पीछे-पीछे रसोई में चला आया। भोजन अभी भी गर्म था। माँ ने उसे कुछ बिस्कुट, मांस और सब्ज़ी की मिली-जुली एक तश्तरी और मीठे दूध का एक प्याला दिया। वह उसे खाते देखने लगी।

"मुझे आशा थी कि तुम कुछ अधिक शान्त होकर उठोगे।" माँ ने कहा।

जोडी ने पूछा, "कुछ और सब्ज़ी दे सकोगी, माँ?"

"मुझे 'ना' करनी पड़ेगी। तुमने काफी खा लिया है। इतने में तो किसी मगरमच्छ का पेट भर जाता।"

"पिताजी कहाँ हैं?" जोडी ने पूछा।

"मेरा अनुमान है, शायद अनाज की ओर।"

वह पिता की खोज में चल पड़ा। पैनी बाहर के दरवाज़े पर कुछ देर के लिए बैठा सुस्ता रहा था। दूर से ही वह बोल पड़ा, "बेटे! तुम अब ठीक लगते हो।"

"हाँ, पिताजी! मैं ठीक ही हूँ।"

"तुम्हें खसरा, बुखार या चेचक तो नहीं हो गई थी?" पैनी की आँखों में चमक दौड़ गई।

जोडी ने सिर हिला दिया। बोला, "पर, पिताजी!"

"हाँ, बेटे।"

"मेरा अनुमान है कि मेरी बीमारी का कारण जंगली बेरों को छोड़ और कुछ नहीं।"

"यही मेरा ख्याल था। पर, मैंने तुम्हारी माता से इसलिए कुछ नहीं कहा कि उनके भरपेट खाने की बात सुनते ही वह मौत की भाँति टूट पड़ती।'

जोडी ने चैन की साँस ली।

पैनी ने फिर कहा, "मैं यहाँ बैठा-बैठा कुछ सोच रहा था। अभी दो-तीन घंटे में पूरा चाँद उग आएगा। आपका क्या ख्याल है, यदि हम दो मछली पकड़ने के जाल लेकर ज़रा देर को मछली मारने निकल पड़ें?"

"उसी धारा की ओर ?"

"असल मे मेरे मन मे उस नुकीली घास वाले जोहडो मे शिकार खेलने की इच्छा है, जहाँ वह रीछ पेट भर रहा था।"

जोडी बोला, "मेरा विश्वास है कि हम वहाँ किसी न किसी जोहड मे बिल्ली-जैसे मुँह वाली मछली पकडने मे सफल हो जाएँगे।"

"हम इस तरह की कोशिश का आनन्द तो ले ही सकते है।"

वे घर के पीछे के गोदाम तक अपना माल सामान लेने गए। पैनी ने पुराने काँटे की जगह दो नए काँटे साथ लिए। हाल के मारे हिरण की पूँछ से छोटे-छोटे बाल काटकर उसने उनकी सफेद और सलेटी-सी गुच्छियाँ बनाई। उसने उन्हे काँटो के साथ ही बाँध दिया और बोला, "अगर मैं स्वय मछली होता तो मैं इन गुच्छियो पर हमला करता।"

तब घर मे जाकर उसने पत्नी से कुछ देर बात की।

"मैं और जोडी बास मछलियो को फँसाने जा रहे हैं।"

"मेरा खयाल था कि तुम तो बाहर जाते नही और जोडी बीमार था।"

पैनी ने समझाया, "इसीलिए तो हम मछलियो का शिकार करने जा रहे है।"

वह दरवाजे तक उनके पीछे-पीछे गई और उन्हे देखती रही। बोली, "अगर बास न मिले तो ताजे पानी वाली मछली ही ले आना। मैं उसे भी तलकर खा सकती हूँ।"

पैनी ने विश्वास दिलाया, "हम बिना कुछ लिये नही आएँगे।"

दोपहर काफी गर्म थी। फिर भी रास्ता छोटा लगा। जोडी ने सोचा कि मछली पकडना शिकार खेलने से कही अच्छा है। यह उत्साह तो उतना नही देता, पर इसमे डर भी उतना नही। इसमे दिल नही धडक उठता और इधर-उधर पेड-पौधो को ताकने झाँकने का भी मौका रहता है। वे एक परिचित जोहड के पास रुके। बहुत देर से सूखा रहने से यह उथला था। पैनी ने एक टिड्डा पकडा और उसे जोहड मे फेंका। पर वहाँ कोई हल-चल न हुई।

वह बोला, "मुझे डर है कि यहाँ की मछलियाँ मर न गई हो। मुझे सदा यही अचरज रहा है कि सुनसान के इन जोहडो मे मछली पनप कैसे

सकती है ? और वह भी सालो-साल।"

उसने फिर एक टिड्डा पकडा और उसे फिर फेंका, पर बेकार। बोला, "हाय, बेचारी मछलियाँ ! कितनी लाचार हैं ! इन्हें फंसाने के स्थान पर मुझे इन्हें खिलाने आना चाहिए।"

उसने अपना बाँस कन्धे पर फिर से रख लिया। उसने खिसियाते हुए कहा, "शायद परमात्मा मेरे बारे मे भी यही कुछ सोचता है। हो सकता है, वह मुझे देखकर कहता हो कि 'यह पैनी उस खेत पर जिन्दा रहता है।' " और फिर वह बोला, "पर यह खेत अच्छा ही है। शायद मछलियाँ भी मेरी ही भाँति सन्तुष्ट है।"

जोडी बोल पडा, "देखिए, पिताजी ! उधर कुछ लोग हैं।"

ऐसी अकेली जगह पर सनोवर वृक्षो के इन टापुओ मे और नुकीली घास वाले इन जोहड़ो और मैदानो मे आदमियो का दीखना एक अजब बात ही थी। पैनी ने बडे ध्यान से देखा। एक पंक्ति मे आधी दर्जन आदमी और औरतें जगल मे उसी रास्ते से आ रहे थे, जिस पर से अभी वे स्वय होकर आए थे।

जोडी बोला, "ये तो मिनोरकन है। केकडे, बीवर आदि का शिकार करने आए दीखते है।" अब जोडी को उनके कन्धो पर लदे थैले साफ दिखाई दे रहे थे। दलदल की सूखी नालियो मे चलने वाले कछुए जगल के रहने वाले जीवो के लिए खाने लायक आखिरी चीज थे। पैनी बोला, "हमेशा ही मेरे मन मे यह सवाल उठता है कि कही ये इन रेंगने वाले जीवों से कोई दवाई तो तैयार नही करते। क्योकि इतनी दूर समुद्र के किनारे से यहाँ तक ऐसी चीज़ों का शिकार करने आना, केवल उन्हे खाने के लिए नही हो सकता।"

जोडी बोला, "आइए, हम भी उनके पास खिसक चलें और देखें।"

पैनी बोला, "मैं उन बेचारो से कुछ नही पूछूंगा। इन लोगो के साथ बहुत बुरी बीत चुकी है। मेरे पिता उनके बारे मे बहुत कुछ जानते थे। कोई अंग्रेज इनको न्यू स्मरना के इलाके मे समुद्र और नदियाँ पार करके ले गया। उसने इनसे वायदा किया कि वहाँ स्वर्ग मिलेगा और इन्हें काम मे लगाया। परन्तु समय खराब था और फसलें ठीक से नहीं हुईं। वह

इन्हे बिना किसी सहारे भूखो मरने के लिए छोड आया। इनमे से बहुत कम बचे रह गए।"

"क्या ये जिप्सियो जैसे ही होते है?"

"नही, जिप्सी तो असभ्य होते हैं। इनमे से आदमी तो जिप्सियो जैसे गाढे रग के होते हैं, पर औरतो का रग उजला होता है, खासकर जब वे छोटे होते है। ये लोग अपने काम से मतलब रखते है और शान्तिपूर्वक रहते हैं।"

वे सब लोग फिर से जगल मे ओझल हो गए थे। जोडी को एक सिहरन-सी अनुभव हुई। उसे लगा जैसे उसने स्पेनियो को देख लिया हो। उसे लगा कि जैसे घने और काले से भूत सामने से गुज़र गए हो, जिनके कन्धे पर कछुए, केकडे वगैरह के साथ-साथ उनके जीवन के अन्याय भी लदे हुए थे। पैनी ने कहा, "शायद उधर उस जोहड मे मेढको की भाँति बास मछलियाँ भी जमा हो गई होगी।"

अब वे मैदान के उस पश्चिमी हिस्से मे पहुँच गए थे, जहाँ उस बूढे रीछ ने फायर प्लाण्ट का भोजन किया था। खुश्क मौसम ने पानी और भी सुखा दिया था। दलदल मे खुश्की और सख्ती बढती जा रही थी। जोहड साफ दिखाई दे रहे थे। वे जोहड नुकीली घास से रहित थे। उनकी सतह पर केवल नरगिस के कुछ पौधो के पत्ते ही फैले हुए थे। एक नीला सारस उनके ऊपर से गुज़रा। उसकी टाँगें पीली और मुख रगा-सा था। हलकी-हलकी वायु उस दलदल मे सन-सन करती बह रही थी और नीचे पानी की छपछपाहट सुनाई देती थी। नरगिस के पत्ते सूरज की अन्तिम चमक से एकबारगी चमक उठे।

पैनी ने कहा, "बस कुछ क्षण और! चाँद अब निकला ही चाहता है।"

उसने जाल फैलाया। उसे दोनो बाँसो पर बाँधा और उनमे हिरण के बालो के गुच्छे लटका दिए।

"अब तुम अपना काँटा लेकर उत्तर की ओर चले जाओ और मैं इधर दक्षिण मे कोशिश करूँगा। देखना, चलने-फिरने की भी आवाज़ न हो!"

पैनी ने जोहड की ओर एक अनुभवी की भाँति नजर डाली। जोडी यह देखने के लिए एक क्षण रुक गया। उसने उस जाल वाले बाँस को घुमाने

की वात को ठीक से समझा। उसने वाँस के कोने पर लगा वालो का गुच्छा कुछ दूर नरगिस के फूलो के एक गुच्छे के पास लटका दिया। पैनी ने अपना वाँस धीरे-धीरे जोहड के आर-पार हिलाना शुरू किया। यह डूवता और हिलता-डुलता किसी जन्तु के स्वर की लय की भाँति शब्द कर रहा था। किसी भी चीज़ के न टकराने पर जोडी ने इसे वाहर निकाला और फिर से वही डाला। उसे अनुभव हुआ, कोई मछली तले पर घूम रही है। वह उसे ललकारता-सा बोला, "अरी, बुढिया ! मैं देख रहा हूँ कि तुम अपने अड्डे पर वैठ रही हो।" वाँस को धीरे-से थोडा और हिलाकर उसने फिर कहा, "अच्छा है अब तुम आकर अपना भोजन कर लो।"

जोडी ने पिता की इस खयाली हरकत से अपने को अलग किया और जोहड के अपने किनारे के कोने पर चला गया। कुछ देर तक वह अपने वाँस और वालो वाले गुच्छे को झुंझलाकर इधर-उधर डालता रहा। कभी उसका वाँस जोहड को भी पार कर जाता था और कभी नुकीली घास मे अटक जाता था। तव अचानक ही वह शान्ति-सी अनुभव करने लगा। उसके हाथ आधे झुके हुए और ढीले पड गए। अव वाँस की गति केवल मुट्ठी के सहारे हो रही थी। आखिर उसने वालो वाले गुच्छे को मनचाही जगह पर लटका दिया।

पैनी दूर से वोला, "वहुत अच्छा, वेटे ! इसे ऐसे ही एक मिनट पडा रहने दो। तैयार रहना, ज्योही झटका लगे, खीच लेना।"

जोडी का खयाल न था कि उसके पिता सव कुछ देख रहे हैं। वह कुछ कम्पा-सा वैठा था। वह अपने वाँस को वडे ध्यान से झटके दे रहा था और वालो के गुच्छे को इधर-उधर घुमा रहा था। अचानक ही एक भँवर-सी उठी। चाँदी-सी चमकीली कोई चीज पानी मे आधी वाहर उछली और एक अच्छे खुले मुँह ने वालो के गुच्छे को पकड लिया। उसके जाल के सिरे पर चक्की के पत्थर का सा एक वोझ गिरा। उसने वनविलाव जैसे छूटने की कोशिश की और जोडी का सतुलन विगाडने का प्रयत्न किया। उसने ऐसी हालत मे विगड उठने वाली अपने मन की हालत को सँभाला।

पैनी ने पुकारा, "आराम से ! उसे उन झुण्डो के नीचे मत जाने दो। उसे ज़रा भी ढील न देना।"

पैनी ने उसके सघर्ष को छेडा नही। जोडी की बाँहे इस बोझ से दर्द करने लगी थी। उसे डर था कि रस्सी इतनी भी न खिच जाय कि जाल का किनारा टूट ही जाय। पर वह एक इच ढील देने को भी तैयार न था, कही वह बडा शिकार हाथ से न निकल जाय! उसकी इच्छा हुई कि उस समय उसके पिता कुछ ऐसे जादू भरे शब्द कहे, जिससे मछली भी पकडी जाय और उसकी यह बुरी हालत भी ठीक हो सके। मछली कुछ ढीली पड रही थी। उसने घास की ओर अन्तिम छलाँग भरी, ताकि उधर से जाल का किनारा फाँद सके। जोडी को इसी समय सूझा कि यदि वह तालाब के किनारे की ओर जाल को बिना ढीला किये, चलना शुरू कर दे तब यह मछली उथले पानी मे आ जाएगी और तब किनारे पर उससे सुलझा जा सकेगा। उसने बहुत सावधानी से ऐसा ही किया। तब उसमे बाँस को छोडने, जाल का किनारा हाथ मे लेकर बढने और उस बास मछली से सीधा उलझने की इच्छा जागी। उसने तालाब से परे की ओर चलना शुरू कर दिया। तब अचानक ही बाँस को एक झटका दिया। मछली घास पर उछल-कर आ गई। बाँस को पटककर वह अपने शिकार को अच्छी जगह पर पहुँचाने के लिए दौडा। यह मछली पाँच सेर से कम की न होगी। पैनी पास आ चुका था। बोला, "पुत्र, आज मुझे तुम पर गर्व है। कोई भी इसे इससे अच्छी तरह नही पकड सकता था।"

जोडी भक्त-सा खडा रहा। पैनी ने उत्तेजना मे उसकी पीठ थपथपाई। उसकी नज़र ज़मीन पर थी। उसे विश्वास नही आ रहा था। इतनी बडी मछली! वह बोला, "मुझे तो उतनी ही खुशी है, जितनी उस खुर्राट रीछ के मारे जाने पर होती।" वे वही खिलखिलाते और एक-दूसरे की पीठ थपथपाते कुछ देर साथ-साथ खडे रहे।

पैनी ने फिर कहा, "अब मुझे तुमसे बाज़ी मारनी होगी।"

अब वे अलग-अलग जोहडो पर बढ गए। पैनी ने कहा कि वह पछाड दिया गया है। उसने श्रीमतीजी के लिए ब्रीम मछली की टोह शुरू की। अब उसने हाथ मे पकडने वाला जाल लिया और घास के कीडो को जमा कर लिया। जोडी ने अपना जाल बार-बार डाला, पर अब की बार वैसी कोई भँवर न पडी, न वैसी कोई बोझिल चीज़ आई और न ही वैसी कोई

चमक दिखाई दी। एक छोटी वास मछली अवश्य पकडी गई। उसे उसने पिता को दिखाया।

वह बोला, "उसे फेंक दो। खाने के लिए तो उसकी जरूरत है नही। उसे भी दूसरी मछली की तरह बडी हो लेने दो, फिर कभी आकर हम उसे पकड़ ले जाएँगे।"

जोडी ने बड़े अनमने भाव से उसे फिर से जोहड मे छोड दिया और वह उछलकर तैर गई। उसका पिता शिकार हो या मछली-पकडना, किसी भी हालत मे उससे अधिक माल के हक मे नही था, जितने को खाया या सँभाला जा सके। सूरज के छिपने के साथ-साथ किसी दूसरी बडी मछली पकड़ने की उम्मीद भी जाती रही। उसने अपने अगो पर निगाह डाली। उसे अपने दायी बाँह और कलाई की ताकत मे मजा आने लगा। चाँद धोखा दे गया था। मछलियो को खूराक देने का समय नही रहा था। मछलियाँ आ नही रही थी। अचानक उसको पिता की मीठी आवाज सुनाई दी। गिलहरियो को पकडते समय वे ऐसे ही इशारे करते थे। जोडी ने अपना बाँस और जाल रख दिया और उस जगह को ठीक-ठीक पहचानने लगा, जहाँ धूप से बचने के लिए उसने वास मछली को छिपा दिया था। अपने पिता की दिशा मे वह सँभलकर वढने लगा।

पैनी ने फुसफुसाहट की आवाज मे कहा, "मेरे पीछे-पीछे आओ। हम जितना चुप और साथ-साथ चल सके, उतना ठीक होगा।" उसने इशारे से दिखाकर कहा, "गाने वाले सारस नाच रहे है।"

जोडी ने कुछ दूरी पर उन बडे सफेद पक्षियो को देखा। उसे लगा कि उसके पिता की आँख गिद्ध जैसी थी। हाथ जमीन पर टेककर वे घुटनों के बल धीरे-धीरे वढने लगे। जब तब पैनी पेट के बल लेट जाता था और जोडी भी वैसा ही करता। नुकीली घास के पास पहुँचकर पैनी ने अपने को छिपाने की कोशिश की। अब पक्षी इतने पास थे, जोडी को लगा कि वह उन्हे अपने मछली पकडने वाले बाँस से छू सकता है। पैनी घुटनो के बल बैठ गया। जोडी ने भी देखा-देखी वैसा ही किया। उसकी आँखें फटी रह गईं। उसने गिना, पक्षी सोलह थे।

बोलूमिया मे होने वाले नृत्य की भाँति ये सारस भी नृत्य कर रहे थे।

इनमे से दो किनारे खडे थे—सफेद और तने हुए। इन्होने एक तराना छेडा हुआ था, जो चीख और गाने का मिला-जुला रूप था। नाच की भाँति उनकी लय भी एकसार नही थी। दूसरे सभी गोलाई मे खडे थे। गोलाई के बीचोबीच कुछ सारस घडी की सुइयो की भाँति घूम रहे थे। दोनो गवैए अपना सगीत छेड रहे थे और नाचने वाले अपनी टाँगें और डैने एक-एक करके उठाते हुए नाच रहे थे। वे कभी अपने सिरो को अपनी सफेद छातियो मे गहरा छुपा लेते और फिर कभी उठा लेते। बिना आवाज़ किए वे चल रहे थे, कभी नजाकत से, कभी अनघडे तरीके से। नाच बडा गम्भीर था। बाँहो के समान उठते-गिरते पख फडफडा रहे थे। बाहरी घेरा गोले मे घूम रहा था, पर अन्दर के नाचने वाले जोश मे आते जा रहे थे।

एकदम ही सब कुछ रुक गया। जोडी को लगा कि या तो नाच समाप्त हो गया है, या उनके आने का पता चल गया है। परन्तु इस बीच वे दोनो रागी सारस घेरे मे आ चुके थे और उनके स्थान पर दूसरे दो सारस गाने के लिए पहुँच चुके थे। कुछ देर रुककर नाच-गाना फिर शुरू हुआ। इन सबकी परछाईं दलदल के पानी मे साफ-साफ पड रही थी। सोलह सफेद परछाइयाँ हिलती-डुलती दिखाई दे रही थी। साँझ की शीतल बयार का एक झोका उस नुकीली घास के ऊपर से बह गया। घास झुकी और फड़-फडाई। पानी मे भी हलकी-हलकी आवाज़ हुई। अस्त होते हुए सूर्य की लाली पक्षियो के सफेद शरीरो पर पड़ रही थी। उस जादूभरी दलदल मे वे जादूगर पक्षी नाचते जा रहे थे। मानो घास और पानी ने भी उनका साथ दिया और नीचे की धरती भी उनके साथ नाचने लगी। जैसे धरती, सूरज, हवा और आकाश ने उन नाचने वाले सारसो के साथ नाचना शुरू कर दिया हो।

जोडी को लगा कि उसकी हर साँस-उसाँस के साथ उसकी अपनी बाँहे भी उठ-गिर रही हैं। यह सब सारसो के पखो के डैनो के उठने-गिरने के साथ ही हो रहा था। सूरज जैसे उसी नुकीली घास मे छिपने लगा। दलदल और सारस सुनहले पड गए, जैसे सोने के पानी से धोये गए हो। दूर की हरियाली काली पडने लगी थी। थोडी देर में वह कालापन कमल के पत्तो और फिर पानी तक उतर आया। सारस किसी बादल, कमल या कनेर से

भी ज्यादा सफेद थे। बिना किसी सूचना के वे अचानक ही उड गए। जोडी को लगा या तो वह घटे-भर का वह नाच समाप्त हो गया था या फिर उन्होने किसी मगरमच्छ की नाक पानी के ऊपर उठती देख ली थी। कुछ भी हो, वे वहाँ से उड गए थे। छिपते हुए सूर्य की ओर उन्होने एक गोला-सा बनाया था और उडान के समय की चीख भरते हुए उड गए। तब पच्छिम की ओर उनकी कतार लम्बी होती गई और अन्त मे वे ओझल हो गए।

पैनी और जोडी ने भी कमर सीधी की और उठ खडे हुए। बहुत देर तक रेंगकर चलने से उनके अग दुख रहे थे। घास पर अँधेरा छा चुका था। जोहड साफ साफ दिखाई नही दे रहे थे। ससार जैसे परछाई मे मिलते-मिलते स्वय परछाई बन गया था। वे उत्तर की ओर घूम पडे। जोडी ने अपनी मछली खोज निकाली। तब वे पूरब की ओर मुडे। दलदल को पीठ पीछे छोडकर वे फिर उत्तर की ओर मुड चले। अन्धकार बढता गया और पगडडी धुंधली पडती गई, यह जगल की सडक मे मिल गई थी। वहाँ वे फिर पूरब की ओर मुडे और विश्वास के साथ बढने लगे, क्योकि यह सडक दोनो ओर के घने पेडो के बीच से होकर चल रही थी। जगल काला पड चुका था, पर यह सडक अब भी धुंधली-सी दीख रही थी, जैसे कोई रेतीला और आवाज़-रहित नमदा बिछा हो। छोटे-मोटे जन्तु उनका रास्ता काट जाते और झाडियो मे भाग जाते। दूर पर एक चीता दहाडा। उनके सिर पर से कुछ बडे चमगादड उड गए। पर वे दोनो चुपचाप चलते रहे।

घर पर रोटी पककर तैयार थी। गर्म चरबी लोहे के पतीले मे पडी थी। पैनी ने तेल वाली लकडी जलाई और उसे मशाल के रूप मे लेकर पशुशाला की ओर नित्यकर्म के लिए चला। जोडी ने रसोई की पिछली तरफ अँगीठी की रोशनी मे मछली को छीलकर काटा। माँ ने उन टुकडो को भी तलकर तैयार कर दिया। सबने भोजन किया, पर चुपचाप।

श्रीमतीजी पूछ बैठी, "आखिर तुम लोगो को क्या हुआ है?"

उत्तर मे वे मौन रहे। उन्हे न तो खाने का ध्यान था, न ही उस औरत का! उन्हे इतनी ही सुध थी कि वह कुछ बोली है, पर उनका ध्यान कहीं और था। उन्होने आज एक ऐसा दृश्य देखा था, जो इस धरती का न था। उस नज़ारे की सुन्दरता से मोहित होकर वे ध्यान मे डूब-से गए थे।



## 11

हिरणो के बच्चे होने का मौसम आ गया था। जोडी ने जगल मे इधर-उधर उनके नुकीले और कोमल खुरो के निशान देखने शुरू कर दिए थे। वह स्रोत, जगल या मकान के दक्षिणी हिस्से की ओर या फदो की ओर जहाँ भी जाता, वही पर किसी न किसी नए पशु के निशान देखता। उसे यह भी दिखाई दिया कि इनके आने-जाने को रोकने के लिए उसका पिता अत्यन्त विवश था। उसे कही-कही हिरणियो के पाँवो के निशान भी दिखाई दिए। यह निशान उन बच्चो के निशान के कुछ आगे-आगे चल रहे होते थे। परन्तु यह निशान कुछ चचल भी थे। कुछ जगह यह निशान अलग-अलग स्थानो पर भी मिलते थे, क्योकि हिरणी ने कही एक जगह भोजन किया और बच्चा कुछ दूरी पर टिका रहा। ऐसा हिरणी जान-बूझकर करती थी। क्योकि उसे बच्चो को किसी सुरक्षित जगह पर छोडना होता था। कभी-कभी जुडवा बच्चो के भी निशान दिखाई दे जाते। इन जुडवा निशानो को देखते ही जोडी का मन चचल हो उठता था। वह

हमेशा ही ऐसे समय सोचने लगता था, 'इनमे से एक अगर मैं हिरणी के लिए छोड भी दूँ तो दूसरे को बडी आसानी से अपने लिए रख सकता हूँ।'

एक रात उसने यह बात अपनी मां से कह दी "मां, क्या हमारे पास दूध काफी नही है? तो क्या ऐसी दशा मे अगर मैं एक छोटा-सा हिरण का बच्चा पाल लूं तो कुछ आपत्ति होगी? मैं चित्तीदार हिरण के बच्चे को पालना चाहता हूँ।"

"मुझे 'ना' कर देनी होगी। तुम्हारा मतलब है कि दूध अधिक है? एक सवेरे से दूसरी सुबह तक एक बूंद भी तो दूध नही बचता।"

"तो मैं अपना दूध उसके लिए दे दूँगा।"

"हाँ, वह बच्चा तो मोटा होता रहे और तुम और पतले होते जाओ। आखिर तुम यही चाहते हो कि एक बेकार चीज़ तुम्हारे चारो ओर चक्कर काटती रहे और दिन-रात तुमसे चिपटी रहे?"

"मैं तो कोई एक चीज चाहता हूँ, चाहे रैकून हो या कुछ और। पर रैकून नीच प्रवृत्ति का होता है। मुझे भालू का बच्चा भी पसन्द था, पर वह भी अपनी नीचता दिखा जाता है। मुझे आखिर कुछ न कुछ जरूर चाहिए जिसे कि मैं अपना कह सकूं और जो हर जगह मेरे पीछे-पीछे चल सके। मैं भी ऐसी किसी चीज पर भरोसा करना चाहता हूं।" उसका चेहरा कुछ सकोच मे भर आया और जैसे-तैसे शब्दो को चुनते हुए उसने अपनी बात पूरी की। उसकी मां ने घृणा प्रकट की, "तब इतनी तसल्ली रखो कि तुम्हे ऐसी चीज़ कही भी नही मिलेगी। कोई भी पशु या मनुष्य इस प्रकार का नही दिखाई देगा। मैं नही चाहती कि तुम सारे समय मुझे तग करते रहो। यह भी मैं साफ बता दूँ कि अगर अब तुमने कभी हिरण के बच्चे, रैकून या भालू के बच्चे का नाम लिया, तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

दूर बैठा पैनी इस बात को सुन रहा था। अगले दिन सवेरे वह बोला, "हम आज एक बारहसिंगे का शिकार करने जाएँगे। जोडी, यह सम्भव है कि हमे कही कोई आराम करता हुआ हिरण का बच्चा मिल जाय। इनका बढकर जगली हो जाना भी उतना ही प्यारा लगता है, जितना कि इनको पालतू बना लेना।"

जोडी ने उत्सुकता मे पूछा, "क्या हम कुत्ते भी साथ लेते चले?"

"नही, केवल जूलिया ही हमारे साथ चलेगी। वह भी इसलिए कि जब से वह जख्मी हुई है, उस बेचारी को बाहर जाना नही मिला। शिकार मे कुछ भाग-दौड उसके लिए अच्छी ही साबित होगी।"

श्रीमतीजी बोल पडी, "वह पुराना हिरण का माँस बडी जल्दी समाप्त हो गया था। पर हम इस विषय मे कभी अधिक ध्यान नही दे पाए। मुझे तो कुछ सूअर का माँस इस धुएँ वाली कोठरी मे और भर दो। कम से कम यह कमरा तो फिर से भरा-पूरा लगे।"

उसका स्वभाव खाने-पीने की बात आते ही अपनी अच्छाई और बुराई साफ प्रकट कर देता था।

पैनी बोला, "जोडी, अब ऐसा लगता है कि बारूद वाली बन्दूक तुम्हे मिल जानी चाहिए। पर इसे अभी चलाना शुरू न कर देना। कही मेरे जैसे ही यह तुम्हे भी चोट न पहुँचाए।"

वह कुछ अशान्त-सा होने लगा, पर उसे यह भी विश्वास हो गया कि आखिर उसे कभी तो इसका प्रयोग करना मिलेगा। पिछले रैकून की सफेद-सी खाल का थैला उसकी माँ ने सी दिया था। उसने उसी मे कुछ गोलियाँ और कुछ टोपियाँ साथ, ही बारूद की डिब्बियाँ आदि भर ली।

पैनी बोला, "श्रीमतीजी, मैं सोच रहा था कि मुझे वौलूसिया जाना ही पडेगा, क्योकि कुछ तो कारतूस लाने है और कुछ असली कॉफी और बीज वगैरह भी लाने है। लेम ने मुझे केवल दो-चार ही कारतूस दिए थे और वे खतम हो चुके है।"

श्रीमतीजी उत्साह मे आ गई। बोली, "हाँ, मेरे लिए भी। सूई और धागा वगैरह मैंने भी मँगाना है।"

वह बोला, "आजकल बारहसिंगे नदी की तरफ चरने आये हुए है। उधर की तरफ मैंने उनके पाँवो के निशान बहुत बडी सख्या मे जाते हुए देखे है। मुझे यकीन है कि मैं और जोडी उधर की ओर कोई अच्छा शिकार फँसा सकते है। कम से कम एक या दो बारहसिंगे हमे मिल जाएँगे और हम उनकी पीठ और धगडो के माँस और उसकी खाल को बेचकर वौलूसिया से अपनी जरूरत की चीजो को खरीद सकते हैं। वही पर हम दादी हुट्टो का भी हाल-चाल पूछ लेंगे।"

श्रीमतीजी झुंझलाईं, "फिर तुम उस खुर्राट बुढिया के यहां जाने की सोचने लगे। तो, क्या दो दिन के लिए जा रहे हो ? मुझे यह अधिक अच्छा लगेगा अगर तुम जोडी को यहां छोडते जाओ।"

जोडी घबराया और उसने बडी करुण दृष्टि से पिता को देखा। पैनी बोला, "हम कल ही वापस आ जाएँगे। यह बताओ अगर जोडी मेरे साथ न जाय, तो वह शिकार खेलना और लोगो से मिलना-जुलना कैसे सीख सकेगा ?"

"हां, यह अच्छा बहाना है। ठीक है, मर्द लोग चाहते ही हैं कि वे इकट्ठे रहे।"

"अच्छा तो, श्रीमतीजी ! आइए, आप ही मेरे साथ चलकर शिकार खेल ले।"

जोडी हँस पडा। उसे ज्यो ही अपनी माता के भारी-भरकम शरीर का ध्यान आया तो वह झाडियो और पगडडियो मे अँटकती-भटकती उसकी शक्ल का ध्यान करके मन ही मन प्रसन्न हुआ। वह हँसकर बोली, "अच्छा भई, चले जाओ। तब पूरा काम करके आना।"

पैनी ने भी मजाक की, "मैं जानता हूँ, तुम भी अकेले रहना चाहती हो।"

उसने स्वीकार किया, "यही तो मेरे आराम का तरीका है। अच्छा, तो मुझे वह पुरानी बन्दूक भरकर यही देते जाना।"

जोडी को पुरानी खानदानी बन्दूक किसी घुस आने वाले से रक्षा करने की बजाय अपने पर ही आफत लाने के समान लगी। फिर उसकी मां को न बन्दूक चलानी आती थी और न वह ठीक निशाना लगा सकती थी। यह बन्दूक पैनी की पुरानी बन्दूक के समान विश्वास के लायक भी नहीं थी। वह फिर भी यह अनुभव करता था कि इसके रहने मे मां को तसल्ली रहेगी। इसलिए वह गया और पिछले छप्परो मे से वह बन्दूक उठा लाया और पिता के हाथ मे दे दी। पैनी ने भी खैर मनाई कि उसने ताजा मिली नई बन्दूक को नहीं मांगा।

उसने जूलिया के लिए सीटी बजाई और तब वे तीनो दोपहरी मे पहले ही पहले पूरब की ओर निकल चले। जेठ का महीना था। गर्मी और घुटन

चारो ओर छा रही थी। जगल मे से सूरज की धूप छन-छनकर आ रही थी। जगली सनावरो के छोटे-छोटे पत्ते छाते का काम दे रहे थे। परन्तु जोडी के पाँव झुलसने लगे। गाय के चमडे के जूते भी रक्षा न कर सके। पर, इस सबके बाद भी जोडी तेज चाल से चलता रहा। और जोडी कर भी क्या सकता था ? आगे-आगे जूलिया उछलती-कूदती भाग रही थी, पर अब तक भी किसी शिकार की गन्ध उसे न आई थी। पैनी एक क्षण के लिए रुका और उसने चारो ओर नज़र दौडाई। जोडी ने पूछा, "क्या देख रहे हो, पिताजी ?"

"कुछ नही, बेटे। ऐसे ही कुछ थोडा-सा।"

अपने खेतो के एक मील पूरब की ओर उसने अपनी दिशा बदल दी। वही उसे हिरणो के अनेक निशान एक साथ दिखाई दिए। पैनी ने उन्हे अच्छी तरह देखा और उनकी लम्बाई-चौडाई, ताज़गी और नर-मादा के भेद को देखने लगा। आखिर मे वह बोला, "यहाँ से दो बारहसिंगे इकट्ठे गए हैं और वे यहाँ परसो आए थे।"

"आप यह कैसे जान सकते है, इन निशानो को देखकर ?"

"सिर्फ अभ्यास से।"

जोडी ने पहचानना चाहा, पर उसे उनमे कोई खास फर्क न दिखाई दिया। पर तब उसके पिता ने कुछ ठहरकर अपनी अंगुली से निशान बनाते हुए उसे समझाया और बोला, "अब तुम हिरणी और बारहसिंगे का फर्क तो पहचान सकते हो। हिरणी का खुर नुकीला और साफ होता है। और यह तो कोई भी बता सकता है कि यह निशान कितना ताजा है ? क्योकि पुराने निशान पर कुछ थोडी-बहुत रेत उडकर गिर जाती है। और अगर और अधिक ध्यान से देखो तो तुम्हे हिरण के पाँव का निशान साफ फर्क से दीख जाएगा। दौडते हुए उसके पाँव थोडे फैल-से जाते हैं। पर जब वह चल रहा होता है, तब उसके खुर अधिक सटे हुए रहते हैं।"

तभी उसे कुछ नए निशान दीख गए और जूलिया को सुनाकर वह बोला, "पकडो इसे। चलो इधर।"

जूलिया झुकी और अपनी लम्बी नाक से उसने उस पगडडी को सूंघा। यह पैड उन्हे जगल से बाहर दक्षिण-पूर्व की ओर ले गई और तब वह गॉल-

बेरी की झाडियो के खुले मैदान मे निकल आए। यहाँ पर उन्हे भालू के पाँव के निशान भी दिखाई पडे। जोडी ने पूछा, "अगर मौका मिले तो क्या मैं भालू पर भी निशाना बाँध सकता हूँ ?"

पिता ने उत्तर दिया, "भालू हो या बारहसिंगा, निशाना मार ही देना चाहिए। पर इतना ध्यान अवश्य रखो कि मौका ठीक हो। अपनी गोली बेकार न गँवाना।"

इन झाडियो मे से राह निकालना कठिन न था, परन्तु सूर्य बहुत बुरी तरह तप रहा था। इन झाडियो के खत्म होते ही चीड के पेडो का एक खुला मैदान आ गया। इनकी छाया उन्हे अच्छी लगी। यहाँ पैनी ने एक छिले हुए पेड की ओर इशारा किया और जोडी को बताया कि इसे किसी रीछ ने छीला है। चीड के पेड पर कुछ ऊँचाई पर पजो के निशान थे और इनमे से राल टपक रही थी। पैनी बोला, "मैंने कई बार भालू को इस तरह खुरचते देखा है। वह कभी अपने शरीर को तानता है, कभी पजे इस पर जमाता है और फिर वह अपना सिर इधर-उधर मारते हुए खूब गुस्से मे आकर इसे रगडना शुरू कर देता है। इनमे से टपकने वाली राल मे वह अपने कन्धो को रगडता है। कुछ का यह खयाल है कि वह मधुमक्खियों के काटने से अपने को बचाना चाहता है और इसीलिए इस तरह रगडता है। पर मुझे ऐसा लगता है कि वह ऐसा केवल मस्ती के कारण ही करता है। बारहसिंगा भी मस्ती मे आकर यही कुछ करता है। अपनी ताकत को परखने के लिए वह छोटे-छोटे पेडो पर अपने सीग और सिर मारता है।"

तभी जूलिया ने अपनी नाक उठाई। पैनी और जोडी उसकी ओर देखने लगे। कुछ देर के लिए सामने कुछ गडबड-सी लगी। पैनी ने जूलिया को पीछे किया और अपने आप सरककर आगे बढा। टहनियो के बीच मे उसे दिखाई दिया कि दो भालू के बच्चे चीड की एक शाख पर लटक रहे हैं, जैसे वह कोई झूला हो। वह पेड ऊँचा था, पर उसकी यह शाख झुकी हुई थी। उस पर लटकते हुए भालू के ये दो छोटे बच्चे आगे-पीछे आ-जा रहे थे। जोडी को इसी प्रकार का अपना झूलना याद आ गया। उसे लगा, काश ! वह भी इनके साथ ही इसी शाख पर झूल पाता। यह शाखा कभी एकदम झुक आती थी और कभी इधर-उधर उठती-गिरती थी। इस बीच

वे दोनो वच्चे वडी प्यार-भरी वातें भी करते चलते थे। जूलिया भौंकने से न रुक सकी। उसे सुनकर उन वच्चो ने कुछ देर के लिए खेल रोक दिया और वे इन इन्सानो पर अचरज मे डूवकर देखने लगे। परन्तु वे चौंके नही। उन्होने शायद इन्सान पहले-पहल ही देखे थे, इसीलिए उनमे कौतूहल अधिक था और डर कम। उन्होने फिर से अपने काले वालो वाले सिर इधर-उधर घुमाने शुरू कर दिए। एक कुछ और ऊपर चढ गया, ताकि वह उन्हे और साफ देख सके। वहाँ से उसने अपनी एक वाँह शाख पर लटका ली और उसके सहारे नीचे झूल पडा। उसकी काली और रतनारी आँखे चमक रही थी।

जोडी वोल पडा, "हाय, पिताजी! इनमे से एक को ज़रूर पकड लीजिए।"

पैनी को खुद भी लोभ आ गया। परन्तु कुछ सोचकर वह वोला, "इन्हे पालतू वनाना कठिन है। ये कुछ वडे है। पर हमारे साथ एक दिक्कत और भी है और वह यह कि इनके पीछे-पीछे या तो तुम्हे या मुझे या फिर तुम्हारी माता को दौडते रहना पडेगा। और यह हम कर नही सकते।"

"पिताजी! वह देखिए, कैसी आँखे वना रहा है?"

"हाँ, यही इन दोनो मे से नीच है। भालू के जुडवा वच्चो मे से हमेशा ही एक अच्छा होता है और एक नीच।"

"तो फिर, पिताजी! क्या हम भले वच्चे को न पकड ले?"

उन वच्चो ने अपनी गरदने कुछ अधिक लटकाईं। पैनी ने जोडी को मना किया और मनाते हुए वोला, "आओ, इन्हे यही छोडकर हम अपने काम पर आगे चले।"

जोडी पीछे पीछे चल रहा था और उसका पिता पैड खोजता हुआ आगे-आगे वढ रहा था। उसे लगा कि शायद एक वार वे वच्चे नीचे आने लगे थे। पर फिर वे ऊपर से ऊपर ही चढते गए और अपने सिर घुमा-घुमा कर उसे देखते रहे। उसकी वहुत इच्छा थी कि वह उन्हे एक वार छू पाता। अब उसे खयाल आ रहा था कि दादी हुट्टो के वताए पालतू रीछो जैसे मानो ये भी अपनी कमर के वल उसके सामने वैठे हो और कुछ माँग रहे हो, या फिर कभी उसकी गोदी मे आ चढते हो और इस प्रकार अपना

प्यार, गुस्सा और खुशी उसे दिखाते हो। उसे लगा कि जैसे ये भी उसके बिस्तर पर उसके ही पाँवो मे पडकर सोना चाहते हो—शायद उसकी रज़ाई मे घुसकर अगर कही सर्दियो की रात हो। यह सोचते-सोचते वह बहुत पिछड गया। उसका पिता बहुत दूर निकल चुका था। वह दौडा और पीछे की ओर मुडकर उन भालू के बच्चो की ओर हाथ का इशारा भी करता गया। उन्होने भी अपनी काली नाकें ऊपर को उठाईं, मानो हवा से उन्हे यह पता चल जाएगा कि ये आदमी कही शिकारी तो नही थे ? उसे लगा कि उन्हे जैसे कुछ घबराहट हुई और वे जल्दी-जल्दी नीचे उतरे और भागकर गॉलबेरी झाडियो की ओर निकल गए। तब तक वह अपने पिता के पास पहुँच चुका था। पैनी ने उससे पूछा, "क्या तुमने कभी अपनी माँ से ऐसा कोई जानवर पालने की बात पूछी है ? तुम्हे तो पालने के लिए कोई बहुत छोटा बच्चा चाहिए।"

जोडी को यह बात हौंसला बढाने वाली लगी। उसे लगा कि इतने बडे बच्चे पालने सचमुच कठिन होगे।

पैनी बोला, "सच तो यह है कि मुझे अपने बचपन मे कभी किसी ऐसी चीज़ से खेलना नही मिला। हमारे पिता ने हमे पाला ही इस ढग से कि सब-कुछ गडबड हो गया। वह तुम्हारी माता के समान ही थे। आखिर मैनी और बाइबिल ही तो हमारा भला नही कर देंगी। वे सारे जानवरो को खाना-पीना नही दे सकती। वे जैसे-तैसे हमारा पेट जरूर भर देते थे। पर एक दिन वे भी गुज़र गए। और, तब सबसे बडा होने के कारण मुझे ही सारे परिवार की देख-भाल का बोझ अपने कन्धो पर उठाना पडा।"

"पिताजी, क्या भालू का बच्चा अपने दाने-पानी की चिन्ता खुद नही पूरी कर लेता ?"

"हाँ, पर तुम्हारी माता के मुर्गी के बच्चो को खाकर।"

जोडी ने एक लम्बी साँस ली और पिता के साथ ही बारहसिंगे के पाँव के निशानो को खोजने लगा। उन दोनो बारहसिंगो के पाँव के निशान साथ-साथ चल रहे थे। जोडी को अचरज हुआ कि जानवर भी बसन्त और गर्मी के मौसम मे इतने साथ-साथ रह सकते है। जब उनके सींग बडे हो जाते है, तब ये हिरणियो के पास से बच्चो को खदेड देते है। और उनके

लिए बुरी तरह लडते हैं। इन दोनो मे से एक बडा था और एक छोटा।

पैनी ने इशारा किया, "इनमे से एक इतना बडा है कि इस पर सवारी भी की जा सकती है।"

वही चीड के पेडो मे हरियाली का एक छोटा-सा मैदान था। यही पर डौगवेन काफी खिला हुआ था और उसके पीले घटीनुमा फूल खिले हुए थे। पैनी ने यहाँ अनेक पेडो मे से कुछ खोजबीन की और बोला, "हाँ, तो बेटे, तुम हिरण के बच्चे देखना चाहते थे न ! मै और जूलिया कुछ दूर तक चक्कर काटने जाएँगे। तुम यहाँ पेड पर चढकर ज़रा चारो ओर इन झाडियो मे ढूढो। मुझे विश्वास है कि तुम कुछ न कुछ अवश्य देखोगे। अपनी बन्दूक यही झाडियो मे छुपा देना। तुम्हे इसकी ज़रूरत नही पडेगी।"

जोडी ने उस पेड के अधबीच ही अपने को टिका लिया। थोडी देर मे पैनी और जूलिया उसकी आँखो से ओझल हो गए। इस सनावर की छाया उसे बडी शीतल लगी। एक हल्की-सी मन्द बयार इसके पत्तो मे से बहने लगी। जोडी के उलझे हुए बालो मे गीलापन-सा आ गया। चेहरे और आँखो का नीलापन उसने अपने हाथ से पोछ डाला और बालो को हाथो से पीछे हटा दिया। वह खुद भी चुप हो गया और चारो ओर भी सन्नाटा-सा छा गया। बहुत दूर पर एक बाज बहुत तेज़ आवाज़ मे चिल्लाता हुआ उड गया। पेडो पर विश्राम करते हुए पक्षी न हिले, न डुले। किसी भी पक्षी या जन्तु ने खाना खाने के लिए भी हिल-डुल न की। दोपहरी पूरे उभार पर थी। सूर्य अपनी पूरी ऊँचाई पर था और उसकी गर्मी मानो सबको आराम करने के लिए विवश कर रही थी। केवल पैनी और जूलिया ही ऐसे थे जो कही दूर पर थोडी हलचल कर रहे थे। इसी बीच जोडी ने नीचे देखा। उसके नीचे की झाडियो मे कुछ आवाज-सी हुई। उसे लगा कि शायद उसका पिता लौट रहा हो, वह खुद जल्दी-जल्दी उतरने लगा। पर उसी बीच मिमियाने की आवाज आई। एक छोटा-सा हिरण का बच्चा इधर-उधर ताड-जैसी झाडियो मे भागता फिर रहा था। जोडी को लगा कि यह काफी देर मे वही था और उसके पिता को इसका पता था। वह सांस रोककर उसे देखने लगा।

इसी समय एक हिरणी झाडियो मे से कूदती हुई आई और यह बच्चा

अपने लडखडाते कदमो से उसकी ओर बढ पडा। उसने इसके उत्सुक-से चेहरे को खूब चूमा-चाटा। इसके बदन पर इतनी चित्तियाँ थी कि मानो चारो ओर आँखें और कान ही बने हुए हो। जोडी ने इतना छोटा बच्चा आज तक न देखा था। हिरणी ने अपनी नाक ऊपर की ओर उठाई और अपने चौडे नथुनो से हवा को सूँघना चाहा। उसे अपना दुश्मन इन्सान कही पास ही दिखाई दिया। वह फिर अपने कदमो पर उछल पडी और इस सनोवर के चारो ओर घूम गई। उसे एक आदमी और कुतिया के पाँवो के निशान दिखाई दिए। उसने कुछ दूर तक आगे-पीछे की ओर इनका पीछा किया और हर कदम पर वह अपना सिर पटकती रही, मानो सूँघ रही हो। तब वह रुकी और उसने कुछ सुना। उसके कान जैसे अकडकर खडे हो गए। उसकी आँखें चमक रही थी।

बच्चा मिमियाने लगा। हिरणी शान्त हो गई। उसे भरोसा हो गया था कि खतरा आया और टल गया। बच्चा उसके स्तनो को कुछ देर सिर मारता रहा और फिर उसने चूँघना शुरू कर दिया। सिर मारते हुए, इसकी छोटी-सी पूँछ अधिक पीने की खुशी मे खडी हो जाती। परन्तु, हिरणी अब भी सन्तुष्ट न थी। वह अलग होकर सीधी उस पेड के नीचे ही आ गई। जोडी के नीचे की शाखो ने उसे पूरा नजारा न देखने दिया, परन्तु फिर भी उसने यह पहचान लिया कि हिरणी ने उसकी गन्ध पहचान ली है और वह ऊपर की ओर सिर उठाए उसे खोजना चाहती है। उसकी नाक उसके हाथ, चमडे के जूतो और पसीने-भरे कपडों की ओर उठ रही थी, ठीक उसी तरह जैसे किसी पारखी की आँखें किसी ताजा पेंट की ओर लगी हुई होती है। दूध का भूखा बच्चा उसके पीछे-पीछे चल रहा था। एकाएक ही हिरणी ने चक्कर काटकर छलांग भरी और अपने पीछे पाँवो से बच्चे को एक झाडी की ओर पटक दिया। कुछ ही देर मे कुलांचे भरती हुई वह झाडियो को पार कर गई।

जोडी धीरे-धीरे नीचे उतरा और उसने उस काँपते हुए बच्चे को ढूँढना चाहा। परन्तु अब वह वहाँ नही था। उसने उस जमीन को भली प्रकार देखा-भाला। वे छोटे छोटे निशान एक-दूसरे मे इतने उलझे हुए थे कि वह एक को दूसरे से अलग नही कर सकता था। वह वही बैठकर पिता

का इन्तज़ार करने लगा। थोडी देर मे पिता लौटा। उसका चेहरा लाल था और वह पसीने से तर था। आते ही वह बोला, "अच्छा बेटे, तो तुमने क्या देखा ?"

"मैंने देखी एक हिरणी और उसका बच्चा। वह बच्चा अब तक यही था, वह माँ को काफी देर तक सूँघता रहा। परन्तु उसकी माँ ने मुझे सूँघा और भाग गई। और अब मैं उस बच्चे को ढूँढ नही पा रहा हूँ। आपका क्या विचार है ? क्या जूलिया उसे ढूँढ सकती है ?"

पैनी धरती पर बैठ गया और बोला, "जूलिया उसे क्या किसी भी जानवर को ढूँढ सकती है। परन्तु, इस छोटी-सी चीज़ को तग करने का क्या लाभ ? यह कही यही पर अब भी छिपा हुआ है और इसे देखते ही डर के मारे मर न जाय !"

"उसकी माँ को उसे इस तरह न छोडना चाहिए था।"

"यही तो उसकी चतुराई है। कोई भी शिकारी उसके पीछे दौडेगा, परन्तु वह अपने बच्चे को इस तरह चुपचाप लेटना सिखा चुकी है कि अगर वह उस तरह लेटा रहे तो उसकी ओर किसी का ध्यान भी न जाएगा।"

"पर पिताजी, इस पर बहुत अच्छे निशान बने हुए थे।"

"क्या सभी निशान एक कतार मे थे या बिखरे हुए थे ?"

"नही, वे सब एक ही लाइन मे थे।"

"तो यह किसी बारहसिंगे का बच्चा होगा। तुम्हे इसे इतना नज़दीक देखकर क्या आनन्द नही हुआ ?"

"हुआ क्यो नही ? पर मेरी मर्ज़ी तो इसे पकडने और पास रखने की थी।"

पैनी हँस पडा। उसने अपना थैला खोला और भोजन निकाला। जोडी की इच्छा अब भी खाने की बजाय शिकार पर ही जमी हुई थी।

पैनी बोला, "हमे दोपहर कही तो बितानी ही है। कोई न कोई हिरण अभी थोडी देर मे हमारे पास से ही गुज़रेगा। तो क्यो न ऐसी शिकारवाली जगह पर ही यह दोपहर गुज़ारी जाय।"

जोडी ने अपनी छिपाई हुई बन्दूक निकाल ली और खाना खाने बैठ गया। उसका ध्यान अब भी खोया हुआ था, पर नए मुरब्बे की सुगन्ध ने

उसमे खाने के लिए रुझान पैदा कर दिया। यह मुरब्बा अब भी पतला था और पूरा मीठा भी नही था। फिर भी यह स्वादु था। जूलिया अभी भी कुछ कमजोर थी, वह एक पासा लेकर लेटी हुई थी। अब भी घावो के उसके निशान चमक रहे थे।

पैनी वही पीठ के बल लेट गया और आराम से बोला, "वे दोनो बारह-सिंगे इसी रास्ते से लौटने ही वाले होंगे, अगर यह हवा उलटी न बहने लग जाय! अगर तुम्हारा खयाल हो तो तुम उधर पूरब की ओर कुछ दूर पर के उस ऊँचे चीड के पेड पर चढ जाओ। वहां से तुम्हे सब-कुछ साफ दिखाई देगा। वह तुम्हारे लिए मचान का भी अच्छा काम देगा।"

जोडी ने अपनी बन्दूक उठाई और उन बिखरी हुई झाडियो की ओर निकल गया। उसने एक ऐसा पेड चुन लिया जहां से चारो ओर सब-कुछ दिखाई दे सकता था। इस पेड के चारो ओर से कोई भी जानवर बिना नजर मे आए गुजर नही सकता था। इसके सीधे तने पर बन्दूक पकडकर चलना था तो मुश्किल, पर वह जैसे-तैसे घुटने और ठोडी छिलवाता हुआ निचली टहनियो तक पहुंच गया। वहां कुछ देर उसने आराम किया और तब जितना ऊपर हो सकता था, चढ गया। वहां पर एक बहुत हलकी-सी हवा का झोका बहा। ऐसे लगा, मानो चीड जिन्दा रहने के लिए हल्की-हल्की सांस ले रहा हो।

जोडी को उन भालू के बच्चो का ध्यान आया जो झूला झूल रहे थे। वह भी अपने पेड की एक डाल पकडकर लटक गया, पर वह उसका और उसकी बन्दूक का बोझ न सहार सकी। इसके तडकने की आवाज आई और वह शान्त हो गया। उसने अपने चारो ओर देखा। उसे लगा कि शायद बाज भी इसी तरीके से अपने चारो ओर के ससार को देखता है। ऊपर से एक चील उसकी ओर देख रही थी। जैसे वह कोई बहुत ऊँची बुद्धिमान शिकारी हो और किसी घात मे बैठी हो। अब उसने अपना सिर फिर चारो ओर घुमाना शुरू किया। उसे पहली बार लगा कि दुनिया गोल है। वह अपने सिर को चारो ओर जल्दी-जल्दी घुमाने लगा, ताकि सारे क्षितिज को एक साथ ही देख सके।

उसे लगा कि उसकी नजर सब तरफ पहुँच रही है। वह चारो ओर

की हलचल को देखकर हैरान रह गया। उसे कोई भी चीज़ पास आती हुई न दिखाई दी। हाँ, उसकी ओर ही एक बडा भारी बारहसिंगा चरता हुआ आ रहा था। शहतूत और दूसरी झाडियाँ उसके भोजन का काम दे रही थी। पर वह निशाने की मार से बाहर था। जोडी ने सोचा कि कुछ नीचे उतर आए और उसकी ओर बढे, पर उसे यह पता था कि जानवर मनुष्य से भी अधिक चौकन्ने होते है। उसके बन्दूक उठाने से पहले ही कही वह भाग न जाय। वह मन ही मन प्रार्थना करने लगा कि यह उसकी पहुँच मे ही रहे। बारहसिंगा भी बहुत धीमी चाल से चलता रहा।

कुछ देर के लिए उसने सोचा कि कही यह उससे दूर चरने न चला जाय। परन्तु तभी जैसे वह फिर इस ओर मुड पडा। जोडी ने अपनी बन्दूक शाखो के सहारे टिकाकर सभाल ली। उसका दिल उछलने लगा। वह अब भी ठीक नही सोच पा रहा था कि यह हिरण उसके पास था या बहुत दूर? उसकी आँखो के सामने कुछ धुंधलापन-सा आया और उसे लगा कि उसकी आँख और कान अब तक भी पूरी पहचान करनी नही सीखे। वह इस बीच अवसर की इन्तज़ार करने लगा था। तभी हिरण ने अपना सिर उठाया। जोडी ने उसकी गर्दन को निशाना बनाकर मक्खी को टिकाया और गोली दाग दी।

ज्योही उसने गोली दागी, उसे महसूस हुआ कि उसने अपनी ऊँचाई का खयाल नही रखा। शायद गोली ऊँचे गई हो। पर तो भी उसे ऐसा लगा कि यह गोली जानवर को लगी जरूर है, क्योंकि उसी समय वह बहुत तेजी से उछला। यह उछलना महज़ चेतावनी के रूप मे न था। इसने कुछ ही कुलाचो मे सामने की झाडियो की ओर लम्बा रास्ता तय किया, यह उसी चीड के पेड के नीचे से गुज़रा। जोडी को लगा, अगर उसके पास अपने पिता वाली दुनाली बन्दूक होती तो वह इस समय दूसरी गोली भी दाग देता। इसी समय उसे अपने पिता की बन्दूक दागने की आवाज़ आई। वह कांपने लगा। धीरे-धीरे पेड से उतरा और फिर पुरानी हरियाली वाली जगह पर आ गया। वह बारहसिंगा वही सनावर की छाया मे पडा हुआ था। पैनी उसे पहले से ही छील रहा था। जोडी बोला, "क्या इसे मेरी गोली ने मारा है?"

"हाँ, तुमने ही इसका शिकार किया है। आज तुमने बहुत अच्छा काम किया है। यह तो ऐसे उछल रहा था जैसे एक गोली से इसका कुछ न बनेगा। इसीलिए मैंने भी एक गोली दाग दी। पर यह केवल तसल्ली के लिए ही किया था। असल में तुम बहुत ऊँचे थे न।"

"मैं जानता हूँ। ज्योंही मैंने गोली दागी, मुझे यह समझ आ गया था।"

"अच्छा है, इसी तरीके से तुम सीख जाओगे। अगली बार तुम्हें यह भी पता चल जाएगा। देखो, यह निशान तुम्हारा है और यह मेरा।"

जोडी यह सब देखने के लिए घुटनों के बल झुक गया। उसके भारी-भरकम शरीर को देखकर जोडी पर फिर एक मुर्दनी-सी छाने लगी। उसने उसकी गीली आँखों और गले से बहते हुए खून को देखा और मुंह फेर लिया। बोला, "काश! हम अपना मांस इन्हें बिना मारे ही पा सकते!"

"है तो यह बुरी बात, पर आखिर पेट के लिए सब करना पड़ता है।"

पैनी अपने काम में जुटा हुआ था। रेती को घिसाकर बनाया हुआ उसका चाकू अपने काम में लगा हुआ था। भुट्टे की मूठ वाला वह चाकू बहुत तेज तो नहीं था, पर तो भी जोडी ने सिर को पहले धड़ से अलग कर दिया था। उधर वह खाल भी घुटनों से नीचे तक उतार चुका था। तब उसने टांगों को आपस में बांध दिया और उसके जोड़ों में से अपना हाथ अन्दर डालने लगा। तब इसे सँभालकर उसने पीठ पर लटका लिया। बोला, "अब बोयल्स उसकी खाल को अवश्य मांगेगा। पर अगर तुम चाहो तो दादी हट्टो को वह भेंट दे सकते हो। हम बोयल्स को मना कर देंगे।"

"मेरा अन्दाज है कि वह इसे पाकर और इसका पायदान बनाकर खुश होगी। मेरी इच्छा थी, काश! मैंने ही इसे मारा होता, ताकि मैं उसे दे सकता।"

"अब भी यह खाल तुम्हारी ही है। मैं अपने हिस्से के तौर पर इसका अगला चौथाई हिस्सा ले लूंगा। आखिर उसके पास भी शिकार मारकर लाने वाला कौन पड़ा है? ओलिवर समुद्र पर गया हुआ है और वह भननाथ याको उसके आगे और यूँ ही घूमता रहता है।" तब पैनी ने बड़े भोलेपन से कहा, "वैसे अगर तुम चाहो तो अपनी किसी प्रेमिका को इसे

दे सकते हो।"

जोडी ने नाक-मुँह सिकोडी और बोला, "पिताजी, आपको पता है कि मेरी कोई प्रेमिका नही है।"

"क्यो ? क्या तुम्हारी उस यूलाली से दोस्ती टूट गई ? मैंने तुम्हे उसके हाथ से हाथ पकडे देखा था।"

जोडी ने उत्तर दिया, "मैने उसके हाथ नही पकडे थे। यह तो वे लोग एक खेल खेल रहे थे। देखो अगर आपने फिर कभी कहा, तो मैं मर जाना पसन्द करूँगा।" पैनी कभी भी अपने बच्चे को चिढाता न था, पर कभी-कभी ऐसा मौका भी आ ही जाता था।

जोडी ने फिर कहा, "मेरी प्रेमिका तो दादी हुट्टो है।"

पैनी बोला, "कोई बात नही। अब तुम सीधे हुए। उसे ही दे देना।"

वह रेतीली पगडण्डी गर्म और लम्बी थी। पैनी पसीने-पसीने हो रहा था, पर तो भी बोझे को उठाये हुए वह आराम से चलता रहा।

जोडी बोला, "क्या इसे कुछ दूर मैं उठा लूँ ?"

पर पैनी ने इन्कार कर दिया। बोला, "यह बोझ किसी आदमी की ही पीठ पर अच्छा लगता है।"

उन्होने जूनीपर नदी पार की और तब दो मील का लम्बा रास्ता पार करके वोलूसिया नदी और नगर की ओर जाने वाली सडक पर आ गए। दोपहर बाद वे कप्तान मैकडोनेल्ड के घर के पास से गुजरे। जोडी को मालूम था कि अब वे फोर्ट बटलर के पास से गुजर रहे थे। यही से सडक मे मोड था और चीडो और सनावरो का वह जगल यहाँ खतम हो जाता था। यहाँ कुछ नई ही ताजगी थी। कीकर और गुलाब वगैरह यहाँ खिले हुए थे। सामने बहने वाली नदी का इशारा जैसे उन्हे मिल चुका था। सरु, गेंदा और कई दूसरे प्रकार के अच्छे-अच्छे पौधे अपने केसर से लदे हुए यहाँ खडे थे।

वे अब सेंट जॉन नदी के किनारे पर आ चुके थे। यहाँ अँधेरा छाया हुआ था और चारो ओर सुनसान था, मानो चारो ओर की दुनिया से बेखबर और अपने किनारो का भी खयाल न करती हुई अथवा आने-जाने वाले मनुष्यो से भी उदासीन-सी बनी हुई, यह समुद्र की ओर चुपचाप

बढ़ती जा रही है। जोडी इसे देखता रह गया। नसार की ओर जाने के लिए यह एक रास्ता था। पैनी ने वहीं से दूर पार के किश्तीवालों को आवाज लगाई। एक आदमी बंधे हुए शहतीरों की किश्ती लेकर उनके पास आ गया और उन्हें परली पार ले आया। उन्होंने पार जाते हुए उस नदी के हलके-हलके बहाव को ध्यान से देखा। पैनी ने किराया अदा किया और वोल्यूसिया की प्रसिद्ध दूकान की ओर जाने वाली सड़क पर चल पड़े। जाते ही पैनी ने मालिक का स्वागत किया, "कहिए, श्रीमान बोयरस कैसे हैं? आपको हमारा यह माल कैसा पसन्द आया?"

"पूरे छोटे जहाज के लिए अकेला ही काफी है, पर शायद कप्तान इसे अपने लिए ही ले ले।"

"इसके मांस की कितनी कीमत मिल जाएगी?"

"वही, एक ओर के मांस की डेढ़ डालर के करीब। मैं सच कहता हूं कि इन जहाजों में नदी के ऊपर नीचे की ओर जाने वाले शहरी यात्री इस हिरण के मांस को सूअर के मांस से कम अच्छा मानते हैं। सच्चाई हम-तुम जानते ही हैं।"

पैनी ने उस हिरण को मांस वाली बड़ी मेज पर बिछा दिया और उसकी खाल उतारने लगा। वह बोला, "हां, उन्हें भी इसकी असली कीमत पता चल जाय, अगर वे इसे खुद मारकर लाएं। जो इसका शिकार खुद खेलता है, उसे ही इसका असली मजा आता है।"

कुछ देर वे साथ-साथ हंसते रहे। पैनी का वहां हमेशा ही स्वागत होता था। वह अच्छा सौदागर भी था और साथ ही अच्छा मजाकिया भी। बोयरस यहां वहां के लोगों के लिए निर्णायक, मध्यस्थ और सारी जानकारी रखने वाला बना हुआ था। उस अजीब-सी गन्धों वाली दुकान के बीचों-बीच खड़ा वह ऐसे लगता था जैसे किसी जहाज का कप्तान सारा सामान संभाले हुए खड़ा हो। उसके सौदे में उस इलाके के लिए जरूरी सभी किस्म की छोटी-मोटी और बड़ी चीजें शामिल थीं। हल, गाड़ी, रस्सी, कल-पुर्जे, औजार, दाले, सागर, बर्तन-भांडे, सूती चीजें, दवाइयां वगैरह सभी चीजें उसके यहां मिल सकती थीं।

पैनी बोला, "अच्छा, इसका अगला एक चौथाई हिस्सा मैं अब छोड़ते

हुए अपनी पत्नी के लिए वापस ले जाऊँगा। और कुछ हिस्सा दादी हुट्टो के लिए हम ले जा रहे है।"

बोयल्स वोला, "उस बुढिया का भला हो! मैं उसे बुढिया क्यो कहता हूँ, मुझे स्वय नही पता। अगर किसी मनुष्य की स्त्री इतनी ही जवाँ-दिल हो तो उसका जीवन ही एक उत्सव बन जाएगा।"

जोडी उस शीशे के सन्दूक के पास घूमता रहा। उसमे मीठे बिस्कुट और चूसने की दूसरी चीज़े मौजूद थी। बालो के चाकू और रेजर्स आदि बहुत-सी दूसरी चीज़ें भी थीं। जूतो के फीते, बटन, सूई और धागा आदि भी उसमे पडे थे। कुछ खुदरा चीज़े साथ के तख्तो पर दीवार के साथ साथ रखी हुई थी। बाल्टियाँ, सुराहियाँ, मिट्टी के तेल के दीये, चिलमचियाँ, दूसरे लैम्प, कॉफी के बर्तन, ढली हुई पतीलियाँ, डच चूल्हे आदि सब इस तरह मिले-जुले पडे थे, जैसे एक घोसले मे बहुत सारी चीज़े इकट्ठी कर दी गई हो। इससे परे पहनावे और शृगार की चीज़े पडी थी। इनमे सफेद सूती कपडे, दुसूती सन के कपडे और दूसरे किस्म के बहुत से कपडे शामिल थे। कुछ गट्ठर फलालेन के कपडे और कुछ लिनन और दूसरे ऊनी कपडे धूल से भरे हुए थे। आराम और शृगार की वस्तुओ की बिक्री गर्मियो के इन दिनो मे बहुत कम होती थी। दुकान की पिछली ओर बहुत सारी खुदरा बिक्री की चीज़ें, सूअर का मांस, पनीर आदि पडी थी। चीनी, आटा, मक्की और ज्वार आदि के टीन के टीन भरे पडे थे। कॉफी के ताज़ा बीज भी डिब्बो मे भरे पडे थे। आलुओ की बडी-बडी बोरियाँ, राब के बडे बर्तन, शराब की बडी बोतले आदि भी वहाँ थी। इन सबमे जोडी को कुछ भी लुभावना न लगा और वह फिर उसी बिक्री की जगह पर शीशे के बने सन्दूक के पास आ गया। उसमे मुँह से बजाने वाला एक बाजा मुलट्ठी के ढेर के पास ही पडा था। उसे लगा कि वह अपनी हिरण की खाल के बदले यह बाजा ही ले ले, ताकि दादी हुट्टो के सामने जाकर इसे बजा सके अथवा फौरेस्टर लोगो का साथ दे सके। पर शायद दादी खाल को लेना अधिक पसन्द करेगी। बोयल्स ने उसे पुकारा, "अरे बच्चे, तुम्हारा पिता इधर व्यापार करने कम ही आता है। आज तुम किसी भी चीज को माँगो, मैं उसे दो कौडी की न समझूँगा।"

उसने चारो ओर बडी भूखी निगाह से देखा और बोला, "मुझे यह मुँह से बजाने वाला बाजा तो कुछ महँगा दीखता है।"

"हाँ, पर तुम इसे ले लो। इस बात की चिन्ता मत करो। यह काफी देर से यूँ ही पडा है।"

जोडी ने चूसने की चीजो की ओर ध्यान दिया, पर उसे ध्यान आया कि दादी के पास ऐसी बहुत-सी चीजे उसके लिए होगी। वह बोला, "धन्यवाद!"

बोयल्स बोला, "तुम्हारा बच्चा बडा सलीके वाला है।"

पैनी ने उत्तर दिया, "वह ठीक ही है। बहुत से बच्चे हम खो चुके थे। तब यह मिला। लगता है इसके लिए ही मेरा सारा प्यार बचा हुआ था।"

जोडी अपने गुणो को सुनकर खुश हो गया। उसकी इच्छा हुई कि वह और भी अधिक सभ्य बन सके। अब अपने चरित्र की अच्छाई दिखाने के लिए उसने उस मेज की ओर पीठ कर ली। वह दरवाजे पर कुछ हरकत देखने लगा। यहाँ बोयल्स की भतीजी यूलाली अपनी गुत्ते लटकाए खडी थी। उसे उसके चेहरे के दागो से नफरत हो आई। ये दाग उसके अपने दागो से भी अधिक थे। उसने उसके गिलहरी जैसे दाँतो, हाथो, पैरो और पतले शरीर की हर हड्डी तक से नफरत करनी शुरू कर दी। उसी समय उसने एक छोटा-सा आलू एक बोरी मे से उठाया और उसकी तरफ फेंकने के लिए तैयार हुआ। लडकी ने ईर्ष्या से उसकी ओर देखा। थोडी देर मे उसने अपनी जीभ फनियर साँप की तरह निकालकर उसे दिखाई। उसने आलू उस पर दे मारा। यह उसके कन्धे पर जाकर लगा और वह गुस्से-भरी चीख मे पीछे हटी।

पैनी बोला, "क्यो, बेटा, यह क्या?"

बोयल्स गुस्से मे भरा हुआ आगे बढा। पैनी ने बहुत सख्त होकर कहा, "एकदम यहाँ से बाहर चले जाओ! श्रीमान् बोयल्स, यह इस बाजे लायक नहीं है।"

वह बाहर तपती धूप मे निकल आया। उसका अपमान हुआ था। पर अगर यह सब फिर भी उसे दुबारा करना मिलता तो इस बार वह एक और बडा आलू फेंकता।

अपना व्यापार खत्म करके पैनी भी उससे आ मिला। बोला, "मुझे अफसोस है कि तुमने मुझे शर्मिन्दा करना अधिक उचित समझा। शायद तुम्हारी माँ ठीक कहती है कि तुम्हे फौरेस्टर लोगो से सम्बन्ध नही रखना चाहिए।

जोडी अपने पाँव धरती पर मसलकर रह गया। बोला, "मैं परवाह नही करता। मैं उससे नफरत करता हूँ।"

"पर बेटे, तुम जिन औरतो से भी नफरत करते हो, उन सब पर ही इस तरह कोई भी चीज फेकने का हक नही रखते।"

जोडी ने बिना पछतावा दिखाए मिट्टी मे थूक दिया।

पैनी बोला, "खैर, मैं नही जानता दादी क्या कहेगी ?"

"ओह ! पिताजी, उन्हे मत बताइएगा।"

पैनी एकदम चुप हो गया। जोडी फिर बोला, "अब से मैं ठीक रहूँगा।"

"मुझे नही पता कि अब वह तुमसे यह खाल लेगी भी कि नही ?"

"यह बात मुझ पर छोड दीजिए। मैं अब किसी पर कुछ न फेंकूंगा। पर आप दादी को कुछ मत बताना।"

"अच्छा, इस बार छोडे देता हूँ, पर मुझे आगे से कभी ऐसा न दिखाई दे। उठा लो अपनी खाल।"

उसका दिल फिर बडा हो गया, जैसे आया हुआ बादल हट गया हो। अब वे नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर जाने वाले रास्ते पर मुड गए। यहाँ मेग्नोलिया के बडे छायादार वृक्ष खिले हुए थे। आगे चलकर कनेरो की एक बडी पक्ति थी। यह भी खूब खिले हुए थे। यहाँ लाल चिडियाँ बहुत अधिक सख्या मे उड रही थी। ये कनेर सफद बेल से ढंके हुए एक दरवाजे तक चले गए थे। यही से दादी हुट्टो का बगीचा शुरू होता था। जैसे एक उजली रजाई जैसी यहाँ किसी ने फैला दी हो। उसकी कुटिया चारो ओर से लताओ से ढँकी हुई थी, जैसे चमेली आदि की लताओ ने उसे धरती से बाँधा हुआ हो। यहाँ की हर चीज़ बहुत प्यारी और परिचित थी। जोडी रास्ते से होकर बगीचे तक घुसा चला गया। इसी मे नील के पौधे अपने मुलायम फूलो के साथ खिले हुए थे।

उसने पुकारा, "दादी !"

हलके-हलके कदम कुटिया के अन्दर से बाहर तक आए। दादी बोली, "अरे, जोडी ! तुम !"

वह उस तक दौड गया। पैनी बोला, "उन्हे गिरा मत देना।"

उसने जोडी के छोटे से शरीर को खूब प्यार किया और वह भी उसे कसता ही गया, जब तक वह चीख न पडी।

"अरे, दुष्ट ! भालू के बच्चे !"

वह हँसने लगी और उसने भी अपना सिर पीछे करके उसके साथ ही साथ हँसना शुरू किया। उसने देखा कि उसका चेहरा झुर्रीदार होकर भी गुलाबी था। उसकी आँखे अब भी जामुनो जैसी काली थी। उसके हँसने के साथ-साथ वे खुलती और बन्द हो जाती थी। उसकी झुर्रियाँ दोनो पासो की ओर तन जाती थी। वे ऊपर-नीचे की ओर हिलने लगती थी। और उसकी छोटी गुदगुदी छाती धूल मे लोटती हुई बटेर की तरह काँपने लगती थी। जोडी ने उसे एक छोटे पिल्ले की तरह सूँघा। बोला, "मा, तुम्हारी गध बहुत अच्छी है।"

पैनी बोला, "यह बात, दादी, हमारे-तुम्हारे लिए भी कह सकती हैं। हम तो बिलकुल मैले-कुचैले है।"

जोडी बोला, "हमारी गन्ध शिकार के कारण है। हिरण की खाल, पत्ते और दूसरी बहुत-सी चीजो की गन्ध है। और फिर पसीना भी है।"

वह बोली, "यह तो बहुत अच्छी गन्ध है। मैं तो सिर्फ बच्चे और आदमी की गन्ध के लिए लालायित हूँ।"

पैनी बोला, "खैर, कुछ भी हो, यह लो हमारी भेट, ताजा हिरण का माँस।"

जोडी बोला, "और यह खाल भी। इसे पाँव के नीचे बिछाना। यह मेरी है, इसे मैंने मारा था।"

दादी ने अपने हाथ ऊपर को उठाए। उसके ऐसा करने मे उनकी भेंटो की कीमत बढ गई। जोडी को लगा कि वह अब अकेला ही चीते को भी मार सकता है, अगर उसकी प्रशसा मिल सके। दादी ने खाल और माँस को छुआ।

पैनी बोला, "अपने छोटे छोटे हाथो को मैला मत करो।"

उसने सदा ही मनुष्यो से प्रशसा पाई, वैसे ही जैसे सूर्य पानी खीचता है। उसकी सुन्दरता पुरुषो को आनन्दित करती थी। जवान मनुष्य उसके पास से उत्साह लेकर जाते थे। बूढे पुरुष उसके बालो की उजियाली पर मोहित थे। उसमे कुछ ऐसी बात थी कि जो उसे एक स्त्री के रूप मे सबके लिए आकर्षक और सबको उससे उत्साहित कर देती थी। औरते उससे जरूर चिढ जाती थी। चार साल उसके घर मे रहकर भी श्रीमती वैक्स्टर उससे नाराज़ होकर अपने घर लौटी थी। हाँ, बूढी औरते अवश्य अच्छी भावना से ज़ाती थी।

पैनी बोला, "लाओ, यह माँस रसोई तक मैं ले जाता हूँ। और यह खाल भी तुम्हारे गोदाम की दीवार पर साफ करके टाग दूंगा।"

जोडी ने पलफ कुत्ते को पुकारा। वह सफेद कुत्ता दौडता हुआ आया और उस पर ऐसे कूदा जैसे वह एक गेद हो। वह उसके मुख को चूमने लगा।"

दादी बोली, "यह तुम्हे देखकर ऐसे खुश है, जैसे तुम इसके सम्बन्धी हो।"

पलफ ने दूर बैठी हुई जूलिया को देखा और पहचान लिया। वह कुछ सीधा होकर उसकी ओर बढा। जूलिया बिना हिले चुपचाप बैठी थी।

दादी बोली, "मुझे ऐसा कुत्ता पसन्द है। वह मुझे चाची लूसी लगती है।"

पैनी कुटिया के पीछे की ओर माँस और खाल को रखने गया। उन सबका ही वहाँ स्वागत होता था, चाहे पिता हो, पुत्र हो या कुत्ता हो। जोडी ने अनुभव किया कि जैसे अपने घर मे भी वह यहाँ ज्यादा सुखी था। वह बोला, "अगर मैं सारे समय यहाँ रहूं तो शायद आप प्रसन्न न होगी।"

दादी ने हँसी की, "यह तुम्हारी माँ ने कहा होगा। क्या उसने तुम्हे आने से रोका था ?"

"नही, इस बार तो इतना नही रोका।"

वह तीखेपन से बोली, "तुम्हारे पिता ने ऐसी गन्दी औरत से विवाह किया है कि जो कभी खुश ही नही होती।"

उसने पुकारा, "दादी !"

हलके-हलके कदम कुटिया के अन्दर से बाहर तक आए। दादी बोली, "अरे, जोडी ! तुम !"

वह उस तक दौड गया। पैनी बोला, "उन्हे गिरा मत देना।"

उसने जोडी के छोटे से शरीर को खूब प्यार किया और वह भी उसे कसता ही गया, जब तक वह चीख न पडी।

"अरे, दुष्ट ! भालू के बच्चे !"

वह हंसने लगी और उसने भी अपना सिर पीछे करके उसके साथ ही साथ हँसना शुरु किया। उसने देखा कि उसका चेहरा झुर्रीदार होकर भी गुलाबी था। उसकी आँखे अब भी जामुनो जैसी काली थी। उसके हँसने के साथ-साथ वे खुलती और बन्द हो जाती थी। उसकी झुर्रियाँ दोनो पासो की ओर तन जाती थी। वे ऊपर-नीचे की ओर हिलने लगती थी। और उसकी छोटी गुदगुदा छाती धूल मे लोटती हुई बटेर की तरह कांपने लगती थी। जोडी ने उसे एक छोटे पिल्ले की तरह सूँघा। बोला, "मा, तुम्हारी गध बहुत अच्छी है।"

पैनी बोला, "यह बात, दादी, हमारे-तुम्हारे लिए भी कह सकती हैं। हम तो बिलकुल मैले-कुचैले है।"

जोडी बोला, "हमारी गन्ध शिकार के कारण है। हिरण की खाल, पत्ते और दूसरी बहुत-सी चीजो की गन्ध है। और फिर पसीना भी है।"

वह बोली, "यह तो बहुत अच्छी गन्ध है। मैं तो सिर्फ बच्चे और आदमी की गन्ध के लिए लालायित हूँ।"

पैनी बोला, "खैर, कुछ भी हो, यह लो हमारी भेट, ताज़ा हिरण का मांस।"

जोडी बोला, "और यह खाल भी। इसे पांव के नीचे बिछाना। यह मेरी है, इसे मैंने मारा था।"

दादी ने अपने हाथ ऊपर को उठाए। उसके ऐसा करने से उनकी भेंटो की कीमत बढ गई। जोडी को लगा कि वह अब अकेला ही चीते को भी मार सकता है, अगर उसकी प्रशसा मिल सके। दादी ने खाल और मांस को छुआ।

पैनी बोला, "अपने छोटे छोटे हाथो को मैला मत करो।"

उसने सदा ही मनुष्यो मे प्रशसा पाई, वैसे ही जैसे सूर्य पानी खीचता है। उसकी सुन्दरता पुरुषो को आनन्दित करती थी। जवान मनुष्य उसके पास से उत्साह लेकर जाते थे। बूढे पुरुष उसके बालो की उजियाली पर मोहित थे। उसमे कुछ ऐसी बात थी कि जो उसे एक स्त्री के रूप मे सबके लिए आकर्षक और सबको उससे उत्साहित कर देती थी। औरतें उससे ज़रूर चिढ जाती थी। चार साल उसके घर मे रहकर भी श्रीमती बैक्स्टर उससे नाराज होकर अपने घर लौटी थी। हाँ, बूढी औरते अवश्य अच्छी भावना से जाती थी।

पैनी बोला, "लाओ, यह मॉस रसोई तक मैं ले जाता हूँ। और यह खाल भी तुम्हारे गोदाम की दीवार पर साफ करके टाग दूंगा।"

जोडी ने फ्लफ कुत्ते को पुकारा। वह सफेद कुत्ता दौडता हुआ आया और उस पर ऐसे कूदा जैसे वह एक गेद हो। वह उसके मुख को चूमने लगा।"

दादी बोली, "यह तुम्हे देखकर ऐसे खुश है, जैसे तुम इसके सम्बन्धी हो।"

फ्लफ ने दूर बैठी हुई जूलिया को देखा और पहचान लिया। वह कुछ सीधा होकर उसकी ओर बढा। जूलिया बिना हिले चुपचाप बैठी थी।

दादी बोली, "मुझे ऐसा कुत्ता पसन्द है। वह मुझे चाची लूसी लगती है।"

पैनी कुटिया के पीछे की ओर मॉस और खाल को रखने गया। उन सबका ही वहाँ स्वागत होता था, चाहे पिता हो, पुत्र हो या कुत्ता हो। जोडी ने अनुभव किया कि जैसे अपने घर से भी वह यहाँ ज्यादा सुखी था। वह बोला, "अगर मैं सारे समय यहाँ रहूं तो शायद आप प्रसन्न न होगी।"

दादी ने हँसी की, "यह तुम्हारी माँ ने कहा होगा। क्या उसने तुम्हे आने मे रोका था?"

"नही, इस बार तो इतना नही रोका।"

वह तीखेपन से बोली, "तुम्हारे पिता ने ऐसी गन्दी औरत से विवाह किया है कि जो कभी खुश ही नही होती।"

उसने अपनी अंगुली आकाश की ओर उठाई और बोली, "मेरा दावा है कि तुम तैरने जाना चाहते हो।"

"नदी मे ?"

"हाँ, नदी मे ही। जब तुम आओगे, तब मैं ओलिवर के कुछ साफ कपडे पहनने को दूंगी।"

उसने उसे मगरमच्छो या और किसी जन्तु आदि का भय नही दिखाया यह बात जोडी को अच्छी लगी। दादी को उसकी सूझ-बूझ पर भरोसा था। वह नदी के किनारे पर उतर गया। नीचे गहरी और छायादार नदी वह रही थी। इसके किनारो पर पानी के टकराने से एक मधुर आवाज हो रही थी। परन्तु सारा पानी जैसे बहुत धीमे-धीमे बढ रहा था केवल गिरे हुए पत्तों के बहने से ही पानी की तेजी पता चलती थी। जोडी किनारे के लकडी के मचान पर कुछ देर खडा रहा और तब नदी मे कूद पडा। वह जब ऊपर निकला तो ठण्ड के कारण भारी साँस ले रहा था। उसे धार मे फँसने का भय था। इसलिए वह किनारे-किनारे हलकी धार मे बढने लगा।

परन्तु वह कुछ बहुत ज्यादा न बढ सका। नदी के दोनो किनारो पर पानी की घास अन्दर तक बढ आई थी। कही-कही वह सनावर और मरु की शाखाओ से घिर जाता था। उसने कल्पना की कि जैसे मगरमच्छ उसका पीछा कर रहा हो और वह तेजी से तैरने लगा। वह कुत्ते की तरह अपने पाँव पटकता हुआ एक स्थान से दूसरे स्थान तक मेहनत के साथ बढने लगा। वह सोचने लगा कि वह उत्तर मे दूर पर स्थित उस घाट तक शायद ही जा सके, जहाँ स्टीमर रुकते हैं। फिर भी वह बढता गया। मरु का एक ठूंठ आगे बढा हुआ था। वह कुछ देर के लिए उस पर रुका और अनुकूल हवा मिलते ही फिर बढ पडा। उसे घाट काफी दूर दिखाई दिया। अपनी कमीज और पाजामा उसे रुकावट डालते हुए महसूस हुए। उसे लगा कि अगर वह नगा तैरता तो अधिक अच्छा रहता। दादी इसे बुरा न मानती। उसे आश्चर्य हुआ कि अगर वह अपनी माँ को फौरेस्टर लोगो के नगा होकर खेलने-कूदने की बात बता देता तो वह क्या कहती ?

उसने अपने कन्धे पर से झाँका। दादी का घाट दूर रह गया था। इस गहरे कालेपन मे उसे खुशी न थी। वह फिर मुड पडा, पर इस बार उसे एक

धार ने पकड लिया और वह नीचे की ओर वह पडा। उसने किनारे पर पहुँचने की कोशिश की, परन्तु लहरे उसे जकडे रही। उसे लगा कि वह कही वौलूसिया वार तक वहकर न निकल जाय, या फिर कही जार्ज झील मे ही न वह जाए, या फिर कही समुद्र मे ही न चला जाए! वह आँख बन्द कर हाथ पैर मारने लगा और आशा करने लगा कि कही भी उसके पाँव टिक सके। थोड़ी देर मे उसने अपने को दादी के घाट के कुछ ऊपर रुका हुआ पाया। वह वहाँ तक बढ आया और लकडी के मचान को पकडकर ऊपर चढ आया। उसकी साँस भारी थी। भय उमसे दूर चला गया था, पर तव भी ठण्डे पानी और भय ने उसे प्रभावित किया था। पैनी वही घाट पर था। वोला, "तुम्हे काफी सघर्ष करना पडा है। मुझे लगता है कि मेरे लिए किनारे पर नहाना ही ठीक है।" और वह फट्टे से धीरे-धीरे नीचे उतर गया। वोला, "मैं अपने पाँव जमीन से नही उठाऊँगा। मेरे तैराकी के दिन वीत गए हैं।"

थोडी देर वाद ही वह भी पानी से वाहर आ गया। वे इकट्ठे ही कुटिया के पीछे की ओर आ गए। दादी वहाँ नए कपडे निकालकर उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। पैनी के लिए उसने अपने स्वर्गीय पति के कपडे निकाले थे और जोडी के लिए ओलिवर के छोटे पडे हुए कपडे।

दादी बोली, "लोग कहते है कि कुछ चीज़े अगर वचा ली जाएँ, तो फिर भी वरती जाती है। हाँ, जोडी दो सत्ते कितने होते है?"

"चौदह।"

पैनी वोला, "इससे आगे मत पूछना, क्योंकि इनका अध्यापक भी इससे आगे नही जानता।"

"खैर! वहुत-सी चीज़ें पुस्तको से भी ज्यादा ज़रूरी है।"

"मैं जानता हूँ, पर फिर भी पढना-लिखना तो आना ही चाहिए। मैं जो कुछ भी इसे सिखा सकता हूँ, यह सीख ही रहा है।"

उन्होने पीछे जाकर अपने कपडे वदले, वालो मे कघी फेरी और साफ और अच्छे लगने लगे। जोडी का दाग भरा चेहरा चमक रहा था। उसके उलझे हुए छोटे वाल गीले और चिकने थे। उन्होने अपने जूते पहने और जमी हुई धूल अपने पुराने कपडो से झाडी। दादी ने उन्हे वुलाया और वे अन्दर गए।

जोडी को एक परिचित सी सुगन्ध आई । उसे अलग-अलग चीज़ें पहचाननी न आती थी । दादी की आदत एक सुगन्धित इत्र वरतने की थी । उधर अंगीठी पर मर्तवानो मे कुछ सूखी घासे पडी थी । शहद की भी गन्ध पहचानी जा सकती थी । पेस्ट्री, खटाइयां, फलो वाली केक, आदि वहुत सी चीज़ें वनी हुई थी । फ्लफ को धाने के लिए वरते जाने वाले साबुन की गन्ध भी आ रही थीं । वाहर वग़ीचे से खिडकियो की राह फूलो की फैलती हुई गन्ध भी आ रही थी । और इस सबमे वढकर नदी से उठने वाली सुगन्ध भी आ रही थी । नदी स्वय कुटिया को चारो ओर से घेरे हुए थी और उसमे से गीलेपन और पत्तो के सडने की-सी गन्ध आ रही थी। वही पर एक भँवर-सी भी वन गई थी । उसने खुले दरवाज़े मे से देखा। रास्ते पर गेदे विछे हुए थे । यह रास्ता नदी तक चला गया था । साँझ की मद्धिम रोशनी मे नदी चमक रही थी, जैसे वह भी चमकदार सोना हो। इसके वहाव ने जोडी को समुद्र की याद दिला दी, जिस पर ओलिवर तूफानों मे भी चढा चला जाता था और ससार को जान पाता था ।

दादी अगूरो की शराव लाई और मसालेदार केक भी । जोडी को भी शराव को चखने की छूट दे दी गई । यह पानी के समान साफ थी । फैनी ने अपने होठो मे इसे चाटा, पर जोडी को यह मीठी न लगी । उसे फालसे-जैसी कोई शराव अधिक अच्छी लगती । उसने मसालेदार केक खाई, पर साथ ही वह शर्म से गड गया, जव उसने देखा कि उसने अपनी तश्तरी खाली कर दी है । अगर वह घर पर ऐसा करता तो उसकी हालत वुरी होती । पर दादी ने केक फिर दे दिए ।

वोली, "अपना दोपहर का भोजन न विगाड लेना ।"

"अगर वहुत देर से न हुआ तो निश्चिन्त रहे ।"

वह रसोई मे गई और जोडी उसके पीछे-पीछे गया । उसने हिरण का मांस पकाना शुरू किया । वह भी उत्सुकता से ओंठ सिकोडे खडा रहा । मांस इन लोगो के लिए कोई वहुत नई चीज़ न थी । दादी ने भट्टी का दर-वाज़ा खोला और उसे मालूम हुआ कि और भी वहुत-सी चीज़ें पकाई जा रही थीं । उसके पास ही लोहे का एक और चूल्हा भी था । इसके अन्दर से निकला हुआ खाना वहुत ही अजीव और खुले चूल्हे पर वने खाने की वजाय

अधिक अच्छा था। जैसे इसका वन्द दरवाज़ा अपने काले पर्दे के पीछे सभी अच्छी चीजो को छिपाये रखता हो। केक के कारण उसकी भूख कुछ मन्द पड गई थी, पर इन सुगन्धो ने फिर ताज़ा कर दी।

वह दादी और अपने पिता के वीच आता-जाता रहा। सामने के कमरे मे उसका पिता कुर्सी पर वैठा हुआ आराम कर रहा था। पडती हुई छाया मे वह खोया हुआ था। फौरेस्टर परिवार जैसी उत्तेजना यहाँ न थी, वल्कि यहां वैसी ही शान्ति थी, जैसी सर्दियो मे रजाई ओढने पर होती है। घर मे सव कामो से थक जाने पर पैनी के लिए माँस और शराव ही यहाँ अधिक महत्व रखती थी। जोडी ने दादी को रसोई मे सहायता देनी चाही, पर दादी ने उसे वापस भेज दिया। वह वाहर आँगन मे आकर फ्लफ से खेलने लगा। जूलिया उसको अचरज से देखने लगी। उसके लिए यह उछल-कूद अजीव-सी थी। उसका काला और भूरा चेहरा काम-काजी कुत्ते का-सा गम्भीर था।

खाना तैयार था। जोडी की पहचान के लोगो मे दादी ही ऐसी थी जिसके यहाँ खाने का कमरा विलकुल अलग था। हर कोई रसोई मे खाना खाता था और केवल एक नगी चीड की मेज़ ही वहाँ इस काम के लिए काफी होती थी। जव दादी खाना लाई तो वह अपनी आँखे उस सफेद कपड़े और नीली तश्तरियो से न हटा सका।

पैनी वोला, "यह वात अजव ही है। हम जैसे अनजान और आवारा आदमियो को इतनी अच्छी-अच्छी चीज़े मिल रही हैं।"

पर तो भी वह दादी से इतना हँसता खेलता रहा कि जो उसे कभी अपने घर मे भी नसीव न हुआ था। वोला, "आश्चर्य है, तुम्हारा प्रेमी अव तक न आया।"

दादी की काली आंखे तन गई। वोली, "यह वात तुमने ही कह दी। अगर कोई और होता तो उसे अव तक नदी मे डुवो देती।"

"हाय ! तुमने उस वेचारे ईज़ी के साथ ऐसा ही किया भी तो !"

"पर वह वेवकूफ डूवा नही। उसे कभी अपना अपमान पता नही चला।"

"तुम उसे अव भी स्वीकार कर लो। कम से कम तुम्हे उसे डुवोने का

कानूनी अधिकार तो मिल जाएगा।"

जोडी खिलखिलाकर हँस पडा। खाना और सुनना दोनो काम वह एक साथ नही कर सकता। उसे लगा कि भोजन मे वह पीछे रह जाएगा, इसी-लिए वह ध्यान से खाने लगा। ईजी द्वारा पकडी गई एक ताजा वास मछली मसाला भरकर बनाई गई थी। आयरलैण्ड के आलू भी उम्दा बने थे। अपने खेतो के आलू खाते रहने के बाद उन्हे ये और भी अच्छे लगे। नए भुट्टों के दाने भी माँस के साथ भूने गए थे। नए दाने बैक्स्टर लोग कम खाते थे, क्योकि वह सब कुछ पशु आदि के लिए पूरा पकने दिया जाता था। जोडी को दुख हुआ कि वह सब कुछ एक साथ ही नही खा सकता। उसने हलकी रोटी और मुरब्बे आदि पर ही खास ध्यान रखा।

पैनी बोला, "यह इतना बिगड जाएगा कि इसकी माँ को इसे फिर से सुधारना पडेगा।"

भोजन के बाद वे बगीचे से नदी के किनारे तक साथ-साथ घूमने गए। किश्तियाँ गुजर रही थी। यात्री दादी की ओर हाथ हिलाते और उत्तर में दादी भी उनकी ओर हाथ हिला देती। सूरज अस्त होते-होते ईजी ओजेन भी शाम का काम करने के लिए उधर ही आ गया। दादी ने अपने अंगमार की ओर आँखें घुमाई और बोली, "क्या वह दुर्भाग्य का एक सिरा नहीं लगता ?" जोडी को वह एक पख-गिरे सारस-सा लगा, जो बीमार हो और काला पड चुका हो। उसके बाल गर्दन तक लटके हुए थे। उसकी मूँछें मट-मैली-सी थी और उसके जबडो तक गिरी हुई थी। उसकी बाँहें पासों से लटकती-सी लग रही थी।

वह बोली, "जरा उस निगडे यात्री की ओर देखो! उसके पाँव मगर-मच्छ की पूँछ की तरह घिसटते आ रहे है।"

पैनी ने स्वीकार किया, "वह निश्चय ही सुन्दर नही है, पर कुत्ते-जैसा नम्र अवश्य है।"

वह बोली, "मुझे ऐसे आदमी से घृणा है। मै मुडी हुई टाँगों वाली किसी भी चीज से घृणा करती हूँ। उसके पाँव तो इतने मुडे हुए हैं कि उसका पाजामा जमीन पर निशान बनाकर चलता है।"

ईजी घर के पीछे चला गया। जोडी ने उसे गाय दुहते और बाद में

लकड़ियाँ बटोरता सुना। जब साँझ का काम समाप्त हो गया, तो वह सामने की सीढियो पर आकर बैठ गया। पैनी ने उससे हाथ मिलाए और दादी ने सिर से ही इशारा किया। वह अपना गला खँखारने लगा, जैसे किसी चीज ने उसके गले मे शब्दो को रोक दिया हो। बाद मे बोलने की कोशिश छोड़कर वह सबसे निचली सीढी पर बैठ गया। उसके बारे मे बाते होने लगी और उसका चेहरा सुख अनुभव करने लगा। तारो की रोशनी दीखने पर दादी अन्दर चली गई और ईजी भी जाने के लिए उठा।

वह पैनी से बोला, "काश ! मैं भी तुम जैसी बाते कर सकता। तब शायद यह मुझे अधिक पसन्द करती। क्या तुम ऐसा नही सोचते ? या तुम्हारी समझ मे वह मुझे याकी होने के कारण कभी माफ न करेगी। अगर ऐसी ही बात हो तो मैं कसम खाने को तैयार हूँ कि मैं झण्डे पर थूकता हूँ।"

"खैर ! तुम जानते ही हो कि जिस तरह मगरमच्छ अपने शिकार को पकडे रखता है, उसी तरह औरत भी अपना विचार पक्का रखती है। वह उस बात को नही भुला सकती, जब याकी लोग उसके सुई-धागे तक को उठा ले गए थे और उस बेचारी को मुर्गी के तीन अण्डे सुई और धागे के लिए बेचने पडे थे। अब अगर याकी हार मान चुके है, तो शायद वह तुम्हे माफ कर दे।"

"पर मैं तो मारा गया हूँ, पैनी ! मै खुद बुरी तरह हार गया हूँ। यह तो बुल रन का दोष था। तुम लोगो ने हमे अच्छी तरह चाबुक मारे। मुझे वह सब बुरा लगता था।" उसकी याद फिर ताजा हो आई। उसने अपनी आँखें पोछी और बोला, "तुमने हमे तब भी कुचल दिया, जबकि हम तुमसे दुगने थे।"

और वह खिसक गया।

पैनी बोला, "अब इस बेचारे हारे हुए आदमी को देखो। यह दादी तक पहुँचना चाहता था। अपनी छोटी आँखो से बहुत ऊँची उडान भरना चाहता है।"

कुटिया के अन्दर जाकर पैनी ने दादी को ईजी के विषय मे तग करना शुरु किया। ऐसा ही उसने जोडी को यूलाली के बारे मे तग किया था।

परन्तु दादी जो कुछ सुनती थी, वैसा ही सुना भी देती थी। वह बहुत अच्छी तबीयत की थी। जोडी को इस सब बात ने एक पुरानी चीज का ध्यान हो आया।

वह बोला, "दादी, लेम फौरेस्टर कहता था कि ट्विंक वैदरबी उसकी प्रेमिका है। मैंने कहा कि वह ओलिवर की प्रेमिका है। पर उसने इस बात को पसन्द नही किया।"

"यदि लेम ठीक से लडना जानता हो तो ओलिवर खुद ही निबट लेगा।"

दादी ने एक उजले साफ कमरे मे उनको सुला दिया। जोडी अपने पिता के साथ ही दूध-सी सफेद चादरो के बीच पसर गया।

वह बोला, "दादी क्या बहुत अच्छी तरह नही रहती ?"

पैनी बोला,"कुछ औरते इसी तरह रहती है। पर अपनी माँ के विषय मे इससे उलटा मत सोचना। सच तो यह है कि उसके पास करने के लिए कुछ है ही नही। सारा दोष मेरा है। वह गन्दे तरीके मे रहने को मजबूर है।"

जोडी बोला, 'काश! यह मेरी दादी होती और ओलिवर मेरा भाई होता!"

"ठीक है। जो भी सम्बन्धी जैसे लगें, वे सम्बन्धी ही होते हैं। तुम यहाँ दादी के पास रहना पसन्द करोगे ?"

जोडी को खेतो के बीच अपने मकान का ध्यान हो आया। वहाँ उल्लू चिल्ला रहे होगे। शायद भेडिए भी चीखेंगे और चीते की चिल्लाहट भी सुनाई देगी। हिरण सोते तक पानी पीने आएँगे। बारहसिंगे उधर आएँगे और हिरणियाँ भी अपने बच्चो के साथ उधर से निकलेगी। भालू के बच्चे अपने बिछौनो पर इधर-उधर लिपटे पडे होगे। उसे लगा कि अपने परिवार की उस जमीन मे इन सफेद चादरो और रजाई आदि से भी अधिक कुछ आकर्षक है।

वह बोल पडा, "नही, बिलकुल नही। मैं दादी को अपने साथ रहने के लिए घर ले जाऊँगा। पर माँ को मनाना होगा।"

पैनी हँस पडा, "अरे, प्यारे बच्चे। अभी बडे होकर तुम औरतो को समझोगे।"



## 12

जोडी ने पौ फटने से पहले ही दादी के घाट के पास गुजरते हुए एक भाडे के स्टीमर की आवाज सुनी। वह उठ बैठा और खिडकी मे से झाकने लगा। सवेरे के आकाश के नीचे स्टीमर की वत्तियां पीली-सी दिखाई दे रही थी। उसके पहिए पानी मे वडे ज़ोर से चल रहे थे। वोलूसिया के नज़दीक उसने एक तेज सीटी दी। उसे लगा कि यह रुका है और नदी मे ऊपर की ओर आ गया है। कुछ भी हो, इसका गुज़रना ही उसे रुचिकर लगा। अव वह दुवारा सो न सका। वाहर आँगन मे जूलिया गुर्राई। पैनी की नीद भी टूटी। उसके दिमाग मे सदा ही पहरे की भावना रहती थी। हवा की आवाज़ भी उसे उठा देती थी।

वह वोला, "स्टीमर रुका है। कोई आ रहा होगा।"

वाहर जूलिया पहले तेज़ी से भोंकने लगी, फिर गुर्राई और तव शान्त हो गई।

"यह कोई जूलिया का परिचित है।"

जोडी चिल्लाया, "अरे, यह तो ओलिवर है।" और बिस्तरे से कूद पड़ा।

वह नंगा ही कुटिया से बाहर आ गया। फ्लफ जाग गया था और अपने सोने की जगह से भौंकता हुआ दादी के दरवाजे से बाहर आ गया।

एक आवाज आई, "ओ सुस्त लोगो! बाहर निकलो!"

दादी अपने कमरे से भागती हुई आई। उसने एक लम्बा सफेद रात का लिबास और सफेद टोपी पहन रखी थी। उसने अपने कन्धों पर जल्दी-जल्दी शाल कसी। ओलिवर बारहसिंगे की तरह कुलाचें भरता आ रहा था। जोडी और दादी एक झोंके के रूप में उससे जा मिले। उसने अपनी माँ को कमर से उठा लिया। वह अपनी हल्की-हल्की मुट्ठियों से उसे थपथपाती रही। जोडी और फ्लफ उसकी ओर ध्यान बँटाने के लिए मुंह खोले बोलते रहे। ओलिवर ने उन्हें भी बारी-बारी उछाला। पैनी चुपचाप कपड़े पहनकर उनसे आ मिला। उन्होंने अच्छी तरह हाथ मिलाए। सवेरे के उस धुंधलके में ओलिवर के सफेद दांत चमक उठे। दादी की आंखों ने कुछ और ही भांप लिया।

बोली, "अरे, डाकू! ये बुन्दे मुझे दे दो।"

वह अपने पंजों के बल खड़ी होकर उसके कानों तक पहुँचने की कोशिश करने लगी। उसकी कनपटी पर दो बुंदे लटक रहे थे। उसने उन्हें खोला और अपने कानों में लगा लिया। वह हँसा और माँ को पकड़कर हिलाने लगा। फ्लफ भी खुशी में भौंकने लगा। इस सब गड़बड़ में पैनी बोला, "भगवान बचाए! अरे, जोडी! तुम बिलकुल नंगे हो।"

जोडी जैसे जम गया। वह भागने को मुड़ा। ओलिवर ने उसे पकड़ लिया। दादी ने अपनी शाल कन्धों पर से खींची और उसकी कमर पर बांध दी।

वह बोली, "यदि मुझे भी भागना पड़ता तो मैं भी नंगी ही दौड़ी आती। ओलिवर साल में कोई दो बार तो आता नहीं। क्यों बच्चे?"

वह बोला, "अभी अँधेरा ही था, जब मैं चल पड़ा।"

हलचल कुछ शान्त हुई। ओलिवर ने अपना यात्रा का थैला उठाया और अन्दर ले आया। जोडी पीछे-पीछे अन्दर आया। बोला, "ओलिवर,

तुम इतने दिन कहाँ रहे ? तुमने क्या इस बार ह्वेल मछलियाँ देखी ?"

पैनी बोला, "जोडी, उसे माँस तो लेने दो। आखिर वह छोटे बच्चो के लिए कहानियाँ घड तो सकता नही। वह पानी उगलने वाला सोता तो है नही।"

पर ओलिवर के पास कहानियाँ भरी पडी थी। वह बोला, "नाविक घर इसीलिए तो लौटता है ताकि वह अपनी माँ, प्रेमिका आदि से मिल सके और उन्हे गप्पें सुना सके।"

उनका जहाज इस बार गर्म जगहो पर गया था इसी बीच जोडी अन्दर जाकर कपडे बदल आया था। वह और दादी सवाल-पर-सवाल पूछने लगे। ओलिवर उत्तर देता जा रहा था। दादी ने फूलदार कपडा पहना हुआ था और वह अपने बाल ठीक ढग से बनाए हुए थी। रसोई मे जाकर उसने नाश्ता तैयार किया। इधर ओलिवर ने अपना थैला खोलकर सारी चीजें फर्श पर फैला दी।

दादी बोली, "मैं रसोई और देखने का काम साथ-साथ नही कर सकती।"

ओलिवर बोला, "तब कृपा करके नाश्ता पकाओ।"

"तुम कमजोर हो गए दीखते हो ?"

"हाँ, मैं तो हड्डियो का ढाँचा रह गया हूँ। घर आने को बेताब था।"

दादी बोली,"जोडी, ज़रा आग तेज़ कर लो। ये माँस के टुकडे काट लो। इस माँस को भी जरा काट देना। उधर हिरण के माँस को भी ठीक कर दो।"

वह मेज़ पर से एक बर्तन मे अण्डे तोडकर फेंटने लगी। जोडी ने उसकी सहायता की और फिर ओलिवर के पास दौडा आया। सूरज चढ आया और मकान रोशनी से भर गया। ओलिवर पिता-पुत्र के साथ अपने घुटनो के बल बैठकर हर चीज देखने लगा। बोला, "मैं जोडी को छोड़कर हरेक के लिए कुछ-न-कुछ लाया हूँ। इसे तो मैं बिल्कुल भूल ही गया।"

जोडी बोला, "कभी नही। अभी तुम मुझे नही भूल सकते।"

"अच्छा, तो फिर अपनी चीज़ ढूंढकर बताओ!"

जोडी ने रेशम का एक कपडा देखा, यह निश्चय ही दादी के लिए था। उसने ओलिवर के कपड़े भी एक ओर कर दिए, जिनमे से अजीब सुगन्धे आ

रही थी। एक अलग छोटी चीज़ फलालेन के कपड़े में लिपटी हुई थी। ओलिवर ने इसे उसके हाथ से छीन लिया और बोला, "यह मेरी प्रेमिका के लिए है।"

एक छोटी-सी थैली बहुत सारे कीमती और चमकीले पत्थरों से भरी हुई थी। जोडी ने इसे भी छोड़ दिया, और अन्त में एक थैली उठाकर सूँघी। और बोल उठा, "तम्बाकू!"

"हाँ, तुम्हारे पिता के लिए है। यह टर्की का है।"

पैनी ने इसे खोला और बोला, "ओलिवर! उसकी सुगन्ध सारे कमरे में भर गई।" वह फिर बोला, "मुझे याद नहीं आता कि कभी मुझे भी भेंट मिली हो।"

जोडी ने अन्त में एक लम्बे हत्थे वाली चीज ढूँढ ली। यह भारी और लोहे की बनी थी। बोल पड़ा, "यह है वह।"

"तुम इसे बिना देखे बता ही नहीं सकते कि यह क्या है?"

जोडी ने उसे खोल डाला। यह एक शिकारी चाकू था। इसका पत्ता बड़ा चमकीला और तेज था। जोडी ताकता रह गया।

बोला, "ओलिवर! नहीं, चाकू नहीं!"

"हाँ, चाकू ही। अब तुम्हें पिता जैसे पुरानी घिसी-पिटी रेती रखने की जरूरत नहीं।"

जोडी खुश हो गया। उसने रोशनी में एकदम ही तेज पत्ता चमका दिया। बोला, "इस जंगल में किसी के पास भी इतना अच्छा चाकू नहीं, फौरेस्टरों के पास भी नहीं।"

"यही बात मैंने भी सोची थी। आखिर वे काले दिल वाले आदमी हमसे आगे क्यों बढ़ें?"

जोडी ने उस चाकू की ओर देखा जो ओलिवर ने अपने हाथ में पकड़ा हुआ था। उसे एक तरफ ओलिवर दिखाई देता और दूसरी ओर फौरेस्टर। वह उलझन में था। वह बोल पड़ा, "ओलिवर! लेम कहता था कि ट्विंक वैदरबी उसकी प्रेमिका है।"

ओलिवर हँस पड़ा और वह इस चाकू को एक से दूसरे हाथ में उछालने लगा।

वह वोला, "कोई फौरेस्टर कभी सच नही वोला। मेरे से मेरी प्रेमिका को कोई छीन नही सकता।"

जोडी को कुछ चैन महसूस हुआ। उसने दादी और ओलिवर दोनो को वता दिया था, इसलिए उसने अपना काम पूरा हुआ समझा। ओलिवर को कोई चिन्ता सताती न लगी। तव जोडी को लेम के उस गहरे चेहरे की याद आ गई, जो वडा उदास और दवा हुआ था और जो डूवकर वीणा वजाते समय उसका हो गया था। उसने वह चित्र अपने सामने से हटा दिया और उन भेटो मे खो गया जो उसका मित्र समुद्र-पार से लाया था।

उसने ध्यान दिया, दादी ने नाश्ता नही किया। वह ओलिवर की तश्तरी को ही भरती रही। उसकी चमकदार आँखे अपने वेटे पर भूखी निगाहो से टूटी रही। ओलिवर सीधा और तना हुआ वैठा रहा। उसकी खाल का रग लाल-सा हो गया था और केवल कमीज़ से ढँकी जगह पर ही उसका रग साफ था। उसके वाल भी धूप से काले पड चुके थे और कुछ लाली-सी भी उनमे आ गई थी। उसकी आँखे जैसे समुद्र के रग की ही भूरी नीली-सी वन गई थी, जिनमे कभी-कभी हरियाली-सी भी चमक जाती थी। जोडी ने अपना हाथ अपनी ही नाक और मुरझाई हुई खाल पर घुमाया। उसे लगा कि उसके सिर के पीछे तक की खाल सारी ही भद्दी वनी हुई है। उसके वाल और वे लटे, जो वत्तखो की पूछ के तरीके से पीछे लटकी हुई थी, उसे भद्दी दिखाई दी। वह अपने चेहरे से विलकुल असन्तुष्ट था।

उसने पूछा, "दादी! क्या ओलिवर वचपन से ही सुन्दर था?"

पैनी वोला, "मैं उत्तर देता हूँ। मुझे याद है जव वह तुम्हारे और मेरे दोनो से वुरा था।"

ओलिवर वोला, "तुम भी वडे होकर सुन्दर हो जाओगे। अगर तुम्हे केवल इसी वात की चिन्ता है, तो उसे छोड दो।"

जोडी ने कहा, "मुझे तो इसका आधा भी वहुत है।"

ओलिवर वोला, "मै तुम्हे आज भेजूंगा, ताकि तुम मेरी प्रेमिका को सन्देश दे सको।"

दादी ने अपनी नाक सिकोडी और वोली, "घर आने से पहले ही

नाविको को अपने प्रेम की याद आने लगती है।"

पैनी बोला, "जैसा मैंने सुना है, नाविक लोग प्रेम करना कभी नही छोडते।"

ओलिवर ने पूछा, "जोडी, तुम्हारी क्या हालत है? क्या तुमने भी कोई प्रेमिका ढूंढी?"

पैनी बोल पडा, "क्यो नही! क्या तुमने नही सुना? जोडी की प्रेमिका वोयल्स की भतीजी यूलाली है।"

जोडी को फिर लगा कि जैसे एक घातक गुस्सा उस पर सवार हो गया हो। उसकी भी इच्छा हुई कि वह फौरेस्टरो की भांति चिल्लाए और हरेक को अपने गुस्से से डरा दे।

वह लडखडाता-सा बोला, "मुझे लडकियो से घृणा है, खासकर यूलाली से।"

ओलिवर ने भोला बनकर कहा, "क्यो, उसमे ऐसी क्या बात है?"

"मुझे उसकी टेढी नाक से घृणा है। वह खरगोश जैसे देखती है।"

ओलिवर और पैनी एक-दूसरे को थपथपाते हुए हँस पडे।

दादी बोली, "उस बच्चे को क्यो छेडते हो? क्या तुम्हे अपने बारे मे पुरानी बाते याद नही?"

जोडी का ज़हर जैसे अन्दर ही अन्दर घुल गया और वह दादी के लिए कृतज्ञता से भर गया। दादी ही ऐसी थी जो उसका पक्ष लेती थी। पर उसने तुरन्त सोचा कि दादी के अलावा पैनी भी उसका इतना ही साथ देता रहा है। उसकी माता जब-जब भी बुरी बनी, पैनी ने हमेशा ही अपने बचपन की याद दिलाकर उसे भूल जाने को कहा। उसे याद आया कि उसके पिता ने केवल अपने मित्रो के सामने ही तो उसे एक बार छेडा है। अन्यथा जब भी उसे सहायता की जरूरत हुई है, पैनी ने कभी निराश नही किया।

वह मुसकरा पडा और पिता से बोला, "मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप जरा मेरी माँ को भी यह बता दे कि मैंने कोई प्रेमिका चुन ली है। फिर देखिए वह आप पर ऐसे टूटेगी जैसे मैंने कोई कीडा पाल लिया हो।"

दादी बोली, "क्यो, तुम्हारी माँ तुम्हे बहुत बुरा-भला कहती है?"

"मुझ पर और पिताजी पर खूब गुस्सा उतारती है, खासकर पिता-जी पर।"

दादी बोली, "वह उसकी तारीफ नही करती। और सच तो यह है वह इससे अच्छी कोई बात जानती भी नही।" हँसकर फिर बोली, "आखिर बुरे आदमी को भी अपने जीवन मे कभी-कभी प्यार करना चाहिए और अच्छे आदमी के लिए अपना भाग्य मानना चाहिए।"

पैनी नम्रता मे फर्श की ओर देखने लगा। जोडी आश्चर्य मे डूबकर सोचने लगा, आखिर इसके पति अच्छे रहे होगे या बुरे ? पर वह पूछ नही सका। उसने सोचा—कुछ भी हो, यह बात बहुत पुरानी हो गई है, इसलिए अब इसका महत्त्व भी नही है। ओलिवर उठा और उसने अपनी टाँगे फैलाई।

दादी बोली, "अरे, अभी तुम आए हो और अभी छोडकर जाने भी लगे ?'

"बस, थोडी देर के लिए ही ! मुझे जरा पडोसियो और परिचितो मे चक्कर काटने जाना है।"

"अरे, वही छोटी-सी पीले बालो वाली ट्विंक ही तो।"

"निश्चय ही।" वह झुका और अपने बाल उसने ठीक किए। पैनी से बोला, "पैनी, तुम आज तो घर नही लौट रहे ?"

"हमे आज अपना व्यापार करके निश्चय ही जगल की ओर लौटना है। मुझे यह लगता तो बुरा है कि शनिवार की यह हँसी-मजाक हाथ से जाने दी जाय। हम आए थे शुक्रवार को, परन्तु यह इस कारण कि हिरण का मांस बोयलस को दे सके, ताकि वह उत्तर की ओर जाने वाली किश्ती मे उसे बेच सके। परन्तु ओरी को इतनी देर छोडना भी अच्छा नही लगता।"

दादी बोली, "नही, उस बेचारी को कही चीता न खा जाय।"

पैनी ने उसकी ओर निगाह डाली, पर वह अपने कपडो को ठीक करने मे लग चुकी थी।

ओलिवर बोला, "अच्छा, तो तुम्हे नदी पर ही मिलूँगा।"

वह चला गया। उसने अपने सिर के पीछे अपनी टोपी लटका ली। उसकी सीटी बहुत देर तक सुनाई देती रही। जोडी अपने को अकेला अनुभव

करने लगा, उसका विश्वास था कि कोई न कोई ऐसी बात जरूर होगी जिससे वह ओलिवर की कहानियाँ सुनने को रुक सकेगा। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था। उसकी इच्छा थी कि वह नदी के किनारे दिन और रात बैठा रहता और ओलिवर कहानियाँ सुनाता रहता। उसे कभी भी ओलिवर से अधिक कहानियाँ सुनने को नही मिली थी। वह कभी एक-दो सुना भी देता, तो बीच मे कोई न कोई आ जाता, या फिर उसका ध्यान कही और लग जाता। कहानी कभी समाप्त न हो पाती।

वह बोला, "मैंने तो अभी एक-दो कहानी भी नही सुनी।"

दादी बोली, "मैंने भी इसे कभी ज्यादा दिन नही रोका। इसे छोड़ जाओ।"

पैनी छोडने को तैयार हो गया। वह बोला, "मुझे स्वय भी जाना पसन्द नही और खासकर अब जब ओलिवर यहाँ आ गया है।"

वह बोली, "मुझे ओलिवर का जाना और भी बुरा लगता है। जब वह यहाँ होता है तब और भी बुरा। जब वह समुद्र पर होता है तब और बात होती है।"

जोडी बोला, "यह सब ट्विंक के कारण है। उस लडकी की ही सारी शरारत है। मैं कभी कोई प्रेमिका न बनाऊँगा।"

जोडी को ओलिवर के जाने का दुख था। वे चारो एक छोटा-सा समूह बना चुके थे, पर ओलिवर ने उसे तोड दिया। पैनी बाहर जाकर धूप सेकने लगा। उसने अपनी पाइप दुबारा भरी और उस विदेशी तम्बाकू का मजा लेने लगा।

वह बोला, "मुझे भी जाने से नफरत है। परन्तु हमे जाना ही पड़ेगा आखिर हमे कुछ सौदा खरीदना है। फिर घर का पैदल रास्ता लम्बा है।"

जोडी नदी के साथ ही साथ घूमता रहा और फ्लफ से खेलता रहा। उसने ईजी को कुटिया की ओर दौडकर आते देखा।

ईजी ने बुलाया, "अपने पिता को बुलाओ। दादी को सुनाई न पडे।"

जोडी बगीचे मे से होकर दौडा और पिता को बुला लाया। पैनी बाहर आया। ईजी ने कहा, "ओलिवर फौरेस्टर लोगो से लड रहा है। उसने दुकान के बाहर लेम पर हमला किया और वे सब मिलकर उस पर टूट

पडे हैं। वे उसे मार ही न डालें।"

पैनी दुकान की ओर भागा। जोडी उसका साथ न निभा सका। ईजी उन दोनो मे भी पीछे घिसटता रहा।

पैनी ने पीछे की ओर मुडकर कहा, "हमे आशा है कि हम दादी के बन्दूक लेकर पहुँचने मे पहले ही मामला निपटा लेंगे।"

जोडी ने पूछा, "पिताजी, क्या हम ओलिवर की ओर से लडेंगे?"

"हमे तो चोट खाने वाले की ओर से लडना है। और यह ओलिवर है।"

जोडी का दिमाग एक पनचक्की की तरह घूम गया। वह बोला, "पिताजी, आप ही तो कहते थे कि हम अपनी ज़मीन पर फौरेस्टरो से बिगाडकर नही रह सकते। उनसे मित्र बनकर ही रहना होगा।"

"मैंने कहा ज़रूर था, पर ओलिवर को चोट सहते भी नही देखा जा सकता।"

जोडी दब गया। उसे लगा कि ओलिवर को दण्ड मिलना चाहिए। आखिर वह उसे छोडकर एक लडकी को देखने चला गया था। उसे खुशी हुई कि फौरेस्टर उसके पीछे पडे। आखिर ओलिवर घर आएगा और अपनी इस बेवकूफी को छोड देगा। ट्विंक का नाम याद आते ही जोडी ने थूक दिया। उसे फौडरविंग का ध्यान आया। वह उसकी दोस्ती कैसे छोडता?

उसने पिता को पीछे से ही कहा, "मैं ओलिवर की ओर से नही लडूँगा।"

पैनी ने उत्तर नही दिया। उसकी छोटी-छोटी टाँगें थक गई। दुकान के सामने सडक रेत से भरी थी। वही पर लडाई हो रही थी। धूल ऐसे उठ रही थी जैसे गर्मियो का कोई अन्धड हो। जोडी ने दर्शको की चिल्लाहट सुनी, पर वह किसी को पहचान न सका। सारा वोलूनिया वहाँ जमा था।

पैनी बोला, "यह कगारू जैसी भीड नही परवाह करती कि कौन मर रहा है? बस, इन्हे तो तमाशा देखने को मिलना चाहिए।"

जोडी ने ट्विंक को घेरे के बाहर खडे हुए देखा। पुरुष और स्त्रियाँ सभी उसे सुन्दर बता रहे थे। पर, उसकी इच्छा हुई कि वह उसके पीले बालो को एक-एक करके नोच डाले। उसका छोटा-सा खुदा हुआ चेहरा

सफेद पड चुका था। उसकी वडी नीली आँखे लडने वालो पर जमी हुई थी। अपनी अगुलियो मे वह एक रुमाल मरोडती जा रही थी। पैनी ने धक्का देकर रास्ता बनाया। जोडी भी उसके पीछे भीड मे से घुस चला। उसने अपने पिता की कमीज़ पकड ली।

बात ठीक थी। फौरेस्टर ओलिवर को मार रहे थे। वह उन तीनो मे एक साथ ही लड रहा था। लेम, मिलव्हील और बक कुत्तो के तरीके से उस पर वैसे ही टूट पडे, जैसे उसने कभी एक बारहसिंगे को कुत्तो से चीरा जाता हुआ देखा था। ओलिवर का चेहरा भी खून और मिट्टी से भरा हुआ था। वह थका हुआ होकर भी मुक्के चलाता जा रहा था। उसकी कोशिश थी कि एक फौरेस्टर ही एक बार जूझे। लेम और बक उस पर एक साथ ही टूट पडे। जोडी को आवाज आई, जैसे किसी हड्डी पर बहुत जोर की चोट पडी। ओलिवर धूल मे गिर पडा। भीड शोर मचाने लगी। जोडी का दिमाग चक्कर खा गया। ओलिवर के लिए यह सब ठीक था, क्योकि उसने एक लडकी के लिए घर छोडा था। पर, एक के विरुद्ध तीन लडे, यह भी ठीक नही था। जब कुत्ते भी भालू या चीते पर टूट पडते थे, तब भी उसे यह बात अच्छी नही लगती थी। उसकी माँ बताती थी कि यह फौरेस्टर काले दिल वाले है। उसने कभी उस पर भरोसा नही किया। वे उसके सामने गाते-बजाते रहे, पीने और हँसी-ठट्ठा करने मे मस्त रहे। उन्होने उसको खूब अच्छी तरह खाना खिलाया, थपकियाँ दी थी और फौडरविंग जैसा दोस्त भी साथ खेलने के लिए दिया था। तो क्या तीन का एक से लडना यही उनके काले दिल की निशानी है? फिर भी मिलव्हील और बक लेम की ओर से इसलिए लड रहे थे कि उसकी प्रेमिका का मामला था। क्या यह ठीक नही था? ओलिवर अपने घुटनो पर झुक गया और उसके पाँव लडखडा गए। वह धूल और खून मे सनकर भी हँसता रहा। जोडी का दिमाग पलटा ओलिवर मर रहा था!

जोडी लेम की पीठ पर उछला। उसने उसकी गर्दन को अपने पंजो मे जकड लिया और उसके सिर पर मुक्के मारे। लेम ने उसे हिलाकर परे पटक दिया। उसका चेहरा लेम के बडे हाथ की चोट खाकर दर्द करने लगा। उसकी कमर मे भी दर्द होने लगा।

लेम बोला, "तुम नाचीज़, इस झगडे से बाहर ही रहो।"

पैनी ने गरजकर उत्तर दिया, "इस लडाई का फैसला कौन कर रहा है?"

लेम बोला, "हम खुद ही इसका फैसला कर रहे है।"

पैनी उसके सामने पहुँच गया। उसकी आवाज उस चिल्लाहट से भी ऊँची थी। बोला, "अगर एक आदमी को पीटने के लिए तीन की जरूरत है, तो मैं कहूँगा कि वह अकेला अधिक ठीक है।"

लेम उस पर बढा और बोला, "पैनी, मेरी इच्छा नही है कि तुम्हे मारूँ। पर अगर तुम रास्ते से न हटे तो मैं तुम्हे एक मच्छर की भाँति कुचल दूँगा।"

पैनी बोला, "ठीक बात ठीक ही है। अगर तुम ओलिवर को मारना ही चाहते हो, तो उसे गोली मार दो या फाँसी देकर मार दो। पर, आदमी बनो।"

बक ने अपने पाँव धरती पर पटके। बोला, "हम उससे एक-एक करके ही लड लेंगे। पर वह ठीक ढग से तो आए।"

पैनी ने फिर अपनी बात कही, "आखिर किस-किस की लडाई है? किसने किसका क्या बिगाडा है?"

लेम बोला, "इसने चोरी की। इसका दोष है।"

ओलिवर ने अपनी बाँहो से मुँह पोछा और बोला, "लेम ने चुराने की कोशिश की है।"

पैनी ने मुट्ठियाँ मलते हुए कहा, "कैसी चोरी? कुत्ते, सूअर या बन्दूको की?"

बाहर की ओर ट्विंक ने रोना शुरू कर दिया। ओलिवर धीमी आवाज मे बोला, "पैनी, यह जगह पूरी बात बताने की नहीं है।"

"तो क्या लडने के लिए यह ठीक जगह है? जैसे कुत्तो का झुण्ड सडक के बीचोंबीच लडने लगा हो। तुम दोनो अकेले मे जाकर फिर कभी लड लेना।"

ओलिवर बोला, "मैं अकेले मे कभी भी किसी भी आदमी से लड लूँगा। पर लेम एक बार फिर दोहरा दे।"

सफेद पड चुका था। उसकी बडी नीली आँखें लडने वालो पर जमी हुई थी। अपनी अगुलियो मे वह एक रूमाल मरोडती जा रही थी। पैनी ने धक्का देकर रास्ता बनाया। जोडी भी उसके पीछे भीड मे से घुस चला। उसने अपने पिता की कमीज़ पकड ली।

बात ठीक थी। फौरेस्टर ओलिवर को मार रहे थे। वह उन तीनो से एक साथ ही लड रहा था। लेम, मिलव्हील और बक कुत्तो के तरीके से उस पर वैसे ही टूट पडे, जैसे उसने कभी एक बारहसिगे को कुत्तो से चीरा जाता हुआ देखा था। ओलिवर का चेहरा भी खून और मिट्टी से भरा हुआ था। वह थका हुआ होकर भी मुक्के चलाता जा रहा था। उसकी कोशिश थी कि एक फौरेस्टर ही एक बार जूझे। लेम और बक उस पर एक साथ ही टूट पडे। जोडी को आवाज आई, जैसे किसी हड्डी पर बहुत ज़ोर की चोट पडी। ओलिवर धूल मे गिर पडा। भीड शोर मचाने लगी। जोडी का दिमाग चक्कर खा गया। ओलिवर के लिए यह सब ठीक था, क्योंकि उसने एक लडकी के लिए घर छोडा था। पर, एक के विरुद्ध तीन लडें, यह भी ठीक नही था। जब कुत्ते भी भालू या चीते पर टूट पडते थे, तब भी उसे यह बात अच्छी नही लगती थी। उसकी माँ बताती थी कि यह फौरेस्टर काले दिल वाले है। उसने कभी उस पर भरोसा नही किया। वे उसके सामने गाते-बजाते रहे, पीने और हँसी-ठट्ठा करने मे मस्त रहे। उन्होंने उसको खूब अच्छी तरह खाना खिलाया, थपकियाँ दी थी और फोडरविग जैसा दोस्त भी साथ खेलने के लिए दिया था। तो क्या तीन का एक से लडना यही उनके काले दिल की निशानी है? फिर भी मिलव्हील और बक लेम की ओर से इसलिए लड रहे थे कि उसकी प्रेमिका का मामला था। क्या यह ठीक नही था? ओलिवर अपने घुटनो पर झुक गया और उसके पाँव लडखडा गए। वह धूल और खून मे सनकर भी हँसता रहा। जोडी का दिमाग पलटा ओलिवर मर रहा था!

जोडी लेम की पीठ पर उछला। उसने उसकी गर्दन को अपने पंजो मे जकड लिया और उसके सिर पर मुक्के मारे। लेम ने उसे हिलाकर परे पटक दिया। उसका चेहरा लेम के बडे हाथ की चोट खाकर दर्द करने लगा। उसकी कमर मे भी दर्द होने लगा।



## 13

जोडी ने सोचा, 'शायद यह लडाई मैंने स्वप्न मे देखी है।'

वह दादी के मकान की छत की ओर देखता रहा। उसे एक खाली कमरे मे डाला गया था। कोई स्टीमर ऊपर की ओर गुज़र रहा था। उसने उसके पहियो को चलते हुए और पानी की धार काटते हुए सुना। वे बहुत-सा पानी भरकर और उसे फिर निकाल रहे थे। यह स्टीमर वोलूसिया के घाट की ओर बढ रहा था। वह अभी जगा ही था। इस स्टीमर की आवाज से नदी के किनारे और जगल मे सब ओर गूंज भर गई। उसे ओलिवर के बारे मे स्वप्न आया, जैसे वह फौरेस्टर लोगो से लडने के लिए घर वापस आ रहा हो। उसने अपना सिर खिडकी मे बाहर निकाला और गुजरते हुए जहाज को देखा। उसकी गर्दन और कन्धे मे एक तेज़ दर्द उठा। वह अपना सिर बडी मुश्किल से एक ओर सरका सकता था। तेज़ दर्द की भांति उसकी याद ताजा हो आई थी। उसने सोचा कि लडाई एक सचाई थी।

दोपहर बाद का समय था। सूर्य नदी के पश्चिमी किनारे की ओर

झुक गया था। उसकी चादर पर चमकीली किरणें पड रही थी। उसका दर्द रुक गया था, परन्तु अब भी कमजोरी और वेहोशी सी लगती थी। उसे कमरे मे कुछ हलचल दिखाई दी। एक आरामकुर्सी कमरे मे घुसी।

दादी माँ बोली, "इसकी तो आँखें खुली है।"

उसने अपना सिर उधर मोडना चाहा, पर दर्द के विना न मोड सका। वह उस पर झुक आई।

वह बोला, "ओह, दादी अम्मा !"

वह उससे न बोलकर, उसके पिता से बोली, "वह तुम-जैसा ही खरा है। वह विलकुल ठीक है।"

पैनी बिस्तर के दूसरी ओर खडा था। उसकी एक कलाई पर पट्टी बँधी थी और एक आँख पर काली दवाई लगी थी। वह जोडी को देखकर हँस पडा। बोला, "हम और तुम दोनो ही अच्छी सहायता दे पाए।"

एक हल्का-सा गीला कपड़ा जोडी के माथे से खिसका। दादी ने इसे उतारकर अपना हाथ उसके सिर पर रखा। उसने अपनी अँगुलियो से उसके सिर का पिछला भाग टटोला और दर्द के मूल स्थान को ढूँढना चाहा। यह उसके बाएँ जबडे मे था और सिर के पीछे भी, जहाँ वह धरती पर गिरा था। उसने हल्की-सी मालिश की और जोडी को कुछ आराम लगा।

वह बोली, "तुम कुछ बोलो, जिससे मुझे तुम्हारे दिमाग की सही हालत का पता चले।"

वह बोला, "क्या कहूँ, कुछ समझ नही आता। क्या दोपहर के खाने का समय बीत गया ?"

पैनी बोला, "इसे तो अगर चोट अनुभव होगी ही तो वह पेट की ही !"

वह बोला, "मैं भूखा नही, मै तो केवल सूर्य को देखकर अचरज कर रहा था।"

दादी बोली, "ठीक है, नाचीज़ !"

उसने पूछा, "ओलिवर कहाँ है ?"

"अपने बिस्तर पर !"

"उसे अधिक चोट तो नही लगी ?"

"इतनी बुरी नही कि अक्ल आ जाय।"

पैनी बोला, "मैं अधिक तो नही जानता, पर अगर उस पर एक चोट भी और पड जाती तो वह कुछ सीखने को जिन्दा न रह जाता।"

"खैर, अब उसकी अच्छी आँखे तो बिगड गईं। अब कोई पीले बालो वाली लडकी काफी समय तक उसकी ओर नही देखेगी।"

पैनी बोला, "तुम औरतें एक-दूसरे पर अधिक सख्त होती हो। यह तो ओलिवर और लेम ही थे जो देखा देखी करते थे। लडकी का दोष नही।"

दादी ने गीले कपडे को लपेटा और कमरे से चली गई।

पैनी बोला, "यह ठीक तो नही था कि तुम-जैसा छोटा बच्चा बीच मे पीसा जाता, पर फिर भी मुझे अभिमान है कि तुम भी अपने दोस्त को कष्ट मे देखकर बीच मे कूद पडे।"

जोडी धूप की ओर देखने लगा और उसने सोचा कि फौरेस्टर भी तो उसके दोस्त थे। एक हल्का-सी दर्द जोडी के सिर से उठा और पेट तक चला गया। वह फौडरविंग का साथ नही छोड सकता था। उसने निश्चय किया कि वह किसी दिन चुपचाप ही जगल मे निकलकर फौडरविंग से मिल आएगा। उसके सामने उस छिपी हुई मुलाकात का चित्र खिंच गया। शायद वे ढूंढ न लिए जायें और लेम उन दोनो को ही मार न डाले! तब ओलिवर को दुख होगा कि वह ट्विंक के कारण व्यर्थ ही उनसे लडा। जोडी को फौरेस्टरो से अधिक ओलिवर पर गुस्सा था। उसे लगा कि जैसे ओलिवर पर उसका और दादी का जो अधिकार था, वह उस पीले बालो वाली लडकी ने छीन लिया हो, जोकि लडाई के समय किनारे पर ही घूमती रही।

इस पर भी अगर उसे दुबारा ऐसा ही मौका हुआ तो वह ओलिवर की ही सहायता करेगा। उसे याद आया कि कैसे बहुत से कुत्ते एक वनबिलाव पर टूट पडे थे? और उसे उन्होंने टुकडे-टुकडे कर दिया था। वनबिलाव के साथ ऐसा ही होना चाहिए भी। पर जब दर्द के मारे उसके मुख को खुला देखा और मरते समय उसकी आंखें अजीब-सी देखी, तो जोडी दया के मारे पिघल पडा था। वह उस जन्तु की सहायता करने के लिए चिल्ला पड़ा था। बहुत ज्यादा जुल्म भी अन्याय ही होता है। एक के विरुद्ध यदि बहुत-से आदमी

झुक गया था। उसकी चादर पर चमकीली किरणें पड़ रही थी। उसका दर्द रुक गया था, परन्तु अब भी कमज़ोरी और बेहोशी सी लगती थी। उसे कमरे मे कुछ हलचल दिखाई दी। एक आरामकुर्सी कमरे मे घुसी।

दादी माँ बोली, "इसकी तो आँखें खुली हैं।"

उसने अपना सिर उधर मोडना चाहा, पर दर्द के बिना न मोड सका। वह उस पर झुक आई।

वह बोला, "ओह, दादी अम्मा!"

वह उससे न बोलकर, उसके पिता से बोली, "वह तुम-जैसा ही सख्त है। वह बिलकुल ठीक है।"

पैनी बिस्तर के दूसरी ओर खडा था। उसकी एक कलाई पर पट्टी बँधी थी और एक आँख पर काली दवाई लगी थी। वह जोडी को देखकर हँस पडा। बोला, "हम और तुम दोनो ही अच्छी सहायता दे पाए।"

एक हल्का-सा गीला कपडा जोडी के माथे से खिसका। दादी ने उसे उतारकर अपना हाथ उसके सिर पर रखा। उसने अपनी अँगुलियों से उसके सिर का पिछला भाग टटोला और दर्द के मूल स्थान को ढूंढना चाहा। यह उसके बाएँ जबडे मे था और सिर के पीछे भी, जहाँ वह धरती पर गिरा था। उसने हलकी-सी मालिश की और जोडी को कुछ आराम लगा।

वह बोली, "तुम कुछ बोलो, जिससे मुझे तुम्हारे दिमाग की सही हालत का पता चले।"

वह बोला, "क्या कहूँ, कुछ समझ नही आता। क्या दोपहर के खाने का समय बीत गया?"

पैनी बोला, "इसे तो अगर चोट अनुभव होगी ही तो वह पेट में ही!"

वह बोला, "मैं भूखा नही, मैं तो केवल सूर्य को देखकर अचरज कर रहा था।"

दादी बोली, "ठीक है, नार्वीज़!"

उसने पूछा, "ओलिवर कहाँ है?"

"अपने बिस्तर पर!"

"उसे अधिक चोट तो नही लगी?"

"इतनी बुरी नही कि अक्ल आ जाय।"

पैनी बोला, "मैं अधिक तो नही जानता, पर अगर उस पर एक चोट भी और पड जाती तो वह कुछ सीखने को जिन्दा न रह जाता।"

"खैर, अब उसकी अच्छी आँखें तो बिगड गईं। अब कोई पीले बालो वाली लडकी काफी समय तक उसकी ओर नही देखेगी।"

पैनी बोला, "तुम औरते एक-दूसरे पर अधिक सख्त होती हो। यह तो ओलिवर और लेम ही थे जो देखा देखी करते थे। लडकी का दोष नही।"

दादी ने गीले कपडे को लपेटा और कमरे से चली गई।

पैनी बोला, "यह ठीक तो नही था कि तुम-जैसा छोटा बच्चा बीच मे पीसा जाता, पर फिर भी मुझे अभिमान है कि तुम भी अपने दोस्त को कष्ट मे देखकर बीच मे कूद पडे।"

जोडी धूप की ओर देखने लगा और उसने सोचा कि फौरेस्टर भी तो उसके दोस्त थे। एक हल्का-सा दर्द जोडी के सिर से उठा और पेट तक चला गया। वह फौडरविंग का साथ नही छोड सकता था। उसने निश्चय किया कि वह किसी दिन चुपचाप ही जगल मे निकलकर फौडरविंग से मिल आएगा। उसके सामने उस छिपी हुई मुलाकात का चित्र खिच गया। शायद वे ढूँढ न लिए जायँ और लेम उन दोनो को ही मार न डाले! तब ओलिवर को दुख होगा कि वह ट्विंक के कारण व्यर्थ ही उनसे लडा। जोडी को फौरेस्टरो से अधिक ओलिवर पर गुस्सा था। उसे लगा कि जैसे ओलिवर पर उसका और दादी का जो अधिकार था, वह उस पीले बालो वाली लडकी ने छीन लिया हो, जोकि लडाई के समय किनारे पर ही घूमती रही।

इस पर भी अगर उसे दुबारा ऐसा ही मौका हुआ तो वह ओलिवर की ही सहायता करेगा। उसे याद आया कि कैसे बहुत से कुत्ते एक बनबिलाव पर टूट पडे थे? और उसे उन्होंने टुकडे-टुकडे कर दिया था। बनबिलाव के साथ ऐसा ही होना चाहिए भी। पर जब दर्द के मारे उसके मुख को खुला देखा और मरते समय उसकी आंखें अजीब-सी देखी, तो जोडी दया के मारे पिघल पडा था। वह उस जन्तु की सहायता करने के लिए चिल्ला पडा था। बहुत ज्यादा दुख भी अन्याय ही होता है। एक के विरुद्ध यदि बहुत-से आदमी

लड़ें, तो वह भी अन्याय है। इसीलिए उसने ओलिवर की ओर से लड़ना उचित समझा, हालांकि उसको फौडरविंग की दोस्ती खोनी पड़ी। उसने अपनी आँखें बन्द कीं। उसे सन्तोष अनुभव हुआ। जब उसने पूरी बात समझ ली तो उसे बीती बात ठीक ही लगी।

दादी हाथ में थाली लिए कमरे में घुस आई थी। बोली, "बच्चो, अब देखें कि तुम बैठ सकते हो या नहीं ?"

पैनी ने तकिए के नीचे अपने हाथ डाले और जोडी को आराम से उठने दिया। वह कुछ सख्त और भरा हुआ-सा था। परन्तु उसे यह दर्द उस समय से अधिक बुरा न लगा जब वह चीनी बेरी के एक पेड़ से गिरा था।

पैनी बोला, "मेरी इच्छा थी कि ओलिवर भी इतना अच्छा हो जाता।"

दादी बोली, "यही खुशी की बात है कि उसकी सुन्दर नाक नहीं टूटी।"

जोडी ने अदरक की बनी रोटी खाते समय बड़ा दर्द अनुभव किया। सूजन अधिक थी, इसीलिए उसे वह आधी छोड़नी पड़ी। उसने लालचाई आँखों से उधर देखा।

दादी बोली, "मैं तुम्हारे लिए इसे बचा रखूंगी।"

पैनी ने कहा, "यह भी कम अच्छी बात नहीं है कि कोई स्त्री तुम्हारे मन की बात भांप ले और स्वयं उत्तर दे दे।"

"हाँ, मेरा भी यही आशय था," कहकर जोडी अपने तकिए पर लेट गया। जैसे हिंसा शान्ति में मिट गई हो, फिर संसार को उसने टुकड़े-टुकड़े कर दिया हो, और जैसे बाद में फिर से चारों ओर शान्ति छा गई हो।

पैनी बोला, "मुझे तो चलना ही चाहिए, नहीं तो ओरी गुस्से होगी।"

वह दरवाज़े में खड़ा हो गया। छोटे-से शरीर में वह अपने आप अकेला लग रहा था। जोडी ने देखा और बोला, "मैं भी आपके साथ चलना चाहता हूँ।"

पैनी का चेहरा खिल उठा। उत्सुकता से बोला, "अच्छा बच्चे, तुम अपने को बिलकुल ठीक अनुभव करते हो ? जो तुम कहोगे, वही मैं करूँगा। बोदस्न के पास एक बूढ़ी घोड़ी है। वह खुद ही घर लौट आती है। हम उस

पर चढ चलेंगे और उसे लौटा देंगे।"

दादी बोली, "निश्चय ही ओरी को जोडी के तुम्हारे साथ जाने से प्रसन्नता होगी। मुझे पता है ओलिवर को देखकर मुझे कितनी खुशी होती है अगर मेरी आँखो के पीछे उसे कुछ हो जाय, उससे सामने रहना ज्यादा अच्छा है।"

जोडी ने अपने को आराम से लिटाया। उसका सिर घूम रहा था, जैसे वह कुछ वडा और भरा हुआ-सा हो गया हो। उसकी इच्छा हुई कि वह कुछ देर उन चादरो पर ही लेटा रहे।

पैनी वोला, "अगर मैं कहूं तो जोडी सचमुच मर्द है!"

जोडी उठ खडा हुआ और दरवाज़े तक गया और वोला, "मुझे ओलिवर को विदा कहनी ही चाहिए न?"

"क्यो नही! परन्तु उसे यह पता न देना कि वह बुरा लगता है। उसे दर्द है।"

वह ओलिवर के कमरे तक गया। उसकी आँखे सूजी हुई थी, जैसे वह भूंटो के चक्कर मे फँस गया हो। एक गाल गुलावी-सा दीख रहा था। उसके सिर के चारो ओर सफेद पट्टी वंधी हुई थी। उसके होठ सूजे हुए थे। केवल ट्विक वैदरवी के कारण एक अच्छा नाविक सामने लेटा हुआ था।

जोडी ने कहा, "ओलिवर, विदा!"

ओलिवर ने उत्तर नही दिया। जोडी का दिल नरम हो आया। बोला, "मुझे दुख है, पिता जी और मैं ठीक समय पर जल्दी न पहुँच सके।"

ओलिवर ने पास बुलाया। जोडी बिस्तर तक चला गया।

ओलिवर वोला, "तुम कुछ मेरे लिए करोगे? जरा ट्विक को जाकर यह आओ कि मैं उसे पुरानी बगीची मे मगलवार को सांझ के धुंधलके मे मिलूंगा।"

जोडी सन्न रह गया। वह बोल पडा, "नही, मैं यह नही करूंगा। मैं उससे घृणा करता हूँ। वह नीच, पीले वालो वाली!"

ओलिवर वोला, "ठीक है, मैं ईज़ी को भेज दूंगा।"

जोडी अपने पांव से पायदान को रगडता रहा। ओलिवर बोला, "मैंने

तुम्हें दोस्त समझकर कह दिया था।"

जोडी ने सोचा, दोस्त होना भी एक बला है। फिर उसे शिकारी चाकू का ध्यान आया और उसके साथ ही कृतज्ञता और शर्म से वह झुक गया। बोला, "अच्छा, ठीक है। मैं चाहता तो नहीं, पर तो भी कह दूंगा।"

ओलिवर हंस पड़ा। जोडी ने सोचा, यह मरते दम भी हंसेगा।

"विदा, ओलिवर!"

"विदा, जोडी!"

वह कमरे से निकल आया। बाहर दादी उसका इन्तजार कर रही थी।

वह बोला, "दादी, ओलिवर आया और यह लड़ाई हुई। क्या यह सब निराशाजनक नहीं?"

पैनी बोला, "बेटे, कुछ सभ्यता सीखो!"

दादी बोली, "लड़ाई खुद सभ्यता है। जब रीछ अपने सूजे हुए सिर लेकर प्यार करने निकलेंगे तो कोई न कोई मुसीबत ही आएगी। शुभ है अगर यही अन्त हो, किसी नई मुसीबत की यह शुरुआत न हो!"

पैनी बोला, "अगर ऐसी बात हो तो मेरा बुलाने का पता तुम्हें पता ही है।"

वे बगीचे में होते हुए निकल गए। जोडी ने मुड़कर देखा, दादी उनकी ओर हाथ हिला रही थी।

पैनी बोयल्स की दुकान पर रुका और उसने अपना सामान और हिरन के मांस का चौथाई हिस्सा लिया। बोयल्स अपनी घोड़ी देने को इस बात पर राजी हो गया कि अगर पैनी बारहसिंगे की खाल का कुछ हिस्सा जूतों के फीतों के लिए उसकी काठी में बांधकर लौटा दे। आटा, कॉफी, चालू, सीसे की गोलियां और कारतूस आदि सब सामान बोरी में भर दिया गया। बोयल्स अपनी घोड़ी निकाल लाया और कम्बल डालकर काठी लाद दी।

वह बोला, "इसे अंधेरे में चलने मत लौटाना। यह भेड़िये से तो पार पा सकती है, पर मैं नहीं चाहता कि कोई भालू इस पर हमला कर बैठे।"

पैनी अपनी चीजों को उठाने मुड़ा। जोडी दुकानदार के पास लौट आया। वह नहीं चाहता था कि उसका पिता ओलिवर के सामने हो जाए।

वह बोला, "मैं ट्विंक से मिलना चाहता हूँ। वह कहाँ रहती है ?"

"तुम्हे उससे मतलब ?"

"मुझे उससे कुछ कहना है।"

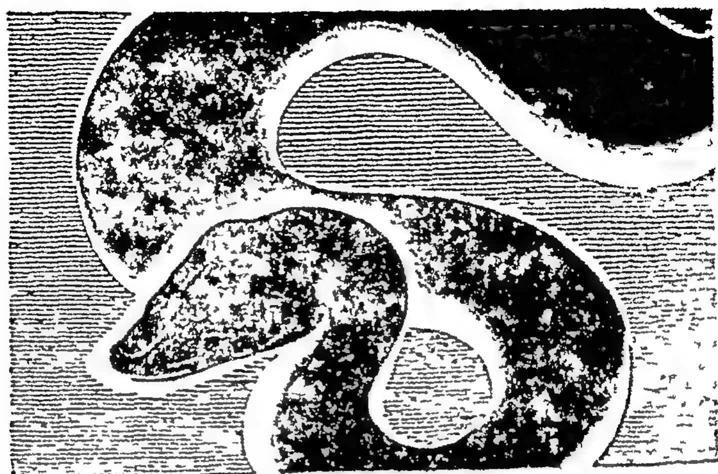
बोयल्स बोला, "हममे से बहुतो ने उसे कुछ कहना है ! अब तुम्हारी बारी भी आई है। अब तो वह अपने बालो पर रूमाल बांधकर सानफोर्ड की ओर नाव मे चली गई है।"

जोडी को ऐसा सन्तोष हुआ, जैसे उसने खुद ही उसे बहुत दूर भगा दिया हो, उसने कागज और पेंसिल उधार ली और ओलिवर के लिए कुछ लिख दिया। उसके लिए यह काम कठिन था, क्योकि उसके पिता ने अध्यापक की थोडी-सी पढाई को ही पक्का कराया था।

उसने लिखा, "प्यारे ओलिवर, तुम्हारी ट्विंक नदी पार चली गई है। मुझे खुशी है ! तुम्हारा मित्र, जोडी।"

उसने फिर पढा। उसे अपनी गलती अनुभव हुई। 'खुशी' को काटकर उसने 'दुख' शब्द लिख दिया। उसे अब अधिक अच्छा लगा, जैसे ओलिवर के लिए उसका पुराना प्यार उमड आया था। शायद वह उसकी कहानियाँ अब भी सुन सकता था।

जगल की ओर बढते हुए किश्ती मे नदी पार करते समय उसने तेज बहती धारा मे देखा कि उसके विचार भी नदी के समान ही बौखला रहे थे। ओलिवर ने उसे पहले कभी निराश नही किया था। आखिर फौरेस्टर वैसे ही थे जैसा कि उसकी मां ने कहा था। उसे ऐसा होना बुरा लगा, पर उसे यह भी विश्वास था कि फोडरविग नही बदलेगा। उस टेढे-मेढे शरीर मे वह सीधा-सादा दिमाग इन सब लडाइयो से बचा ही रहेगा। हाँ, इस सब घटना से उसका पिता अवश्य उसके सामने अजेय बनकर आया।



## 14

तीतरों ने घोंसले बनाने शुरू कर दिए थे। उनकी संगीतभरी तानें कुछ देर के लिए शान्त हो गई थीं। अब वे जोड़ों में बँटने लगे थे। मुर्गे भी जोडी बाँधने की साफ, मधुर और लम्बी बांगें देने लगे थे।

जेठ के अन्त में एक दिन जोडी ने एक मुर्गे और मुर्गी को अंगूरों की बेल में से भागते देखा। उसके दिल में बच्चों का खयाल था। उसने उनका पीछा न किया, पर वह सरकता हुआ उनके घोंसले तक पहुँच गया। उसने देखा कि मोतिया रंग के बीस अण्डे पड़े थे। उसने उन्हें छुआ नहीं, उसे डर था कि मुर्गी उन्हें छोड़ न दे। तीतर ऐसे ही छोड़ देते हैं। इसके बाद वह फिर अंगूरों की बढ़ती देखने के लिए उस ओर गया। अंगूर छोटी-छोटी गोलियों के रूप में उभर आए थे। वे अभी हरे और सख्त थे। उसने बेल का कुछ हिस्सा उठाया, ताकि इस समय गर्मी में भी वह मुलायम अंगूरों को पा सके।

अगले पहर में उसे गड़गड़ाहट-सी महसूस हुई, जैसे प्यास फूट पड़ी हो।

जहाँ अण्डे सेये गए थे। छोटे-छोटे चूज़े चारो ओर बिखर पडे थे। मुर्गी चिल्लाई और बारी-बारी सबको बचाने की कोशिश करने लगी। वह कभी जोडी पर भी टूट पडती। वह चुप खडा रहा। यही बात उसके पिता ने समझाई थी। मुर्गी ने अपने चूजो को इकट्ठा किया और लम्बी पत्ती की घास मे से लेकर दूर निकल गई। जोडी अपने पिता को खोजने बढा। पैनी मटर के खेतो मे काम कर रहा था। जोडी बोला, "पिताजी, मुर्गी ने अगूरो के नीचे बच्चे दिए हैं और अगूर भी पक रहे हैं।"

पैनी अपने हल को थामकर खडा हो गया। वह पसीने से तर हो रहा था। उसने खेत के पार देखा, एक बाज़ बहुत नीचे चक्कर काटता हुआ उड रहा था।

वह बोला, "अगर बाज़ो ने इन बच्चो को न पकड लिया और अगर रैकूनो ने अगूर न खा डाले तो हमे पहले पाले पर काफी अच्छा खाना मिलेगा।"

जोडी बोला, "मुझे बाजो के चूज़े खाने पर घृणा आती है, पर मैं यह सह सकता हूँ कि रैकून अगूर खा लें।"

"यह इसलिए कि तुम चूज़ो का माँस पसन्द करते हो और अगूर नही।"

"नही, यह बात नही है। बात यह है कि मैं बाज़ो को पसन्द नही करता और रैकून मुझे पसन्द हैं।"

पैनी बोला, "यह सब तुम्हे फौडरविग ने सिखाया है। उसे रैकून पसन्द है।"

"मेरा भी यही खयाल है।"

"क्या छोटे सूअर लौट आए?"

"नही, अभी नही।"

पैनी ने भौह सिकोडी, "मुझे यह सोचकर भी बुरा लगता है कि फोरेस्टरो ने उन्हे फँसा लिया होगा। परन्तु वे इतनी देर कभी बाहर रहे नही। अगर भालू उन पर हमला करते तो ये सब एक साथ खत्म न हो जाते।"

"पिताजी, मैं पुराने खेतो पर गया था। सूअरो के निशान वहाँ से पश्चिम की ओर गये हुए हैं।"

"ज्यों ही मैं उन मटरों को खत्म कर लूंगा, हमें रिप और जूलिया को लेकर उन्हें ढूंढने निकलना होगा।"

"अगर फौरेस्टरों ने उन्हें फँसा लिया होगा तो हमें क्या करना होगा?"

"समय आने पर जो कुछ भी उचित जँचे वही करना होगा।"

"क्या आप फौरेस्टरों से दुबारा मुकाबला करने में घबराते नहीं?"

"नहीं, मैं ठीक हूं।"

"अगर आप गलत हों तो आप घबराएँगे?"

"अगर मैं गलत होऊँ तो मैं कभी उनके सामने भी न जाऊँ।"

"अगर वे हमें फिर पीट डालें तो फिर हम क्या करेंगे?"

"इसे अपना भाग मानकर अपने काम पर चलते रहो।"

"इससे अच्छा तो मैं चाहूँगा कि सूअर फौरेस्टरों के पास ही रहें।"

"और, तुम यह भी चाहोगे कि हम बिना माँस के रहें। सिर की चोट आँख वाली पैर की अपेक्षा जल्दी ठीक हो जाती है। तुम जाना नहीं चाहते?"

वह हिचकिचाया और बोला, "मेरा विचार ऐसा नहीं है।"

पैनी अपनी प्लेट में जुट गया और बोला, "जाओ, फिर अपनी माँ से कहो कि हमारे लिए भोजन जल्दी परोस दे।"

जोडी घर में गया, उसकी माँ कपड़ा सीते हुए कुर्सी में बैठी थी। एक नीले पेट वाली छिपकली उसकी कुर्सी के नीचे घूम रही थी। जोडी यह सोचकर हँस पड़ा कि अगर उसकी माँ को छिपकली का पता लग जाय, तो वह किस तरह अपने भारी-भरकम शरीर को लेकर जल्दी भागेगी।

वह बोला, "माँ, कृपा करके खाना जल्दी बना दो। पिताजी का कहना है कि हमें सूअरों को खोजने जाना है।"

"इसी समय!"

उसने अपना खाना खत्म किया और वह उठकर बाहर की सीढ़ी पर ही बैठ गया। बोला, "हमें शायद फौरेस्टरों का मुकाबला करना पड़े। शायद उन्होंने तो हमारे सूअर फँसाए हैं।"

"अच्छा है, उनका मुकाबला करो। वे काले दिल वाले चोर हैं।"

वह उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगा। वह पहली बार वोलूसिया मे फौरेस्टरो से लडने के कारण उससे और उसके पिता से नाराज थी।

वह बोला, "हो सकता है, हमे फिर से बडी बुरी मार सहनी पडे।"

उसने अपनी सिलाई जल्दी-जल्दी समेट ली और बोली, "तो यह हमारा फर्ज है। हमे अपने माँस की रक्षा करनी है। अगर तुम नही जाओगे तो और कौन इसे बचाने जाएगा है ?"

वह घर मे चली गई। जोडी ने माँ द्वारा उस चूल्हे के ढक्कन खोलने की आवाज को सुना। वह चक्कर मे पड गया। उसकी माँ हमेशा फर्ज की बात ले बैठती थी। उसे इस शब्द से ही घृणा थी। उसका यह फर्ज कैसे ठहरता है कि वह फौरेस्टरो को केवल सूअरो को बचाने के लिए अपने को कुचलने का फिर से मौका दे ? और यह तब, जबकि ओलिवर को बचाने के लिए फौरेस्टरो से लडने पर उसका कोई फर्ज नही गिना गया। उसे लगा कि माँस के लिए लडने की अपेक्षा एक मित्र के लिए खून बहाना अधिक अच्छा है। वह ऊपर उडने वाले पक्षियो की मधुर आवाज को सुनता रहा। छोटी चिडियाँ लाल चिडियो का पीछा कर रही थी और उन्हे शहतूत के पेड से बाहर निकाल रही थी। उसे लगा कि इस सुरक्षित खेत मे भी हरेक अपने खाने के लिए लड रहा है, जबकि उसका विश्वास था कि यहाँ प्रत्येक के लिए पर्याप्त खाना मौजूद है। माँ, बाप बेटे, घोडे, गाय, बछडे, रिप, जूलिया, चूजें, सूअर और पक्षी तथा मुर्गियो वगैरह सभी के लिए इस खेत मे पूरा खाना मौजूद था। किसी को भी कमी नही थी।

बाहर जगल मे यह लडाई अवश्य सदा चलती रहती थी। भालू, भेडिए और चीते तथा बनबिलाव सदा ही हिरणो की टोह मे रहते थे। भालू तो दूसरे भालुओ के बच्चे तक खा जाते थे। उनके जबडे मे सब माँस चूर हो जाता था। गिलहरियाँ, चूहे, कगारू और रैकून सभी अपनी-अपनी जिन्दगी की लडाई मे लगे हुए थे। पक्षी और छोटे जन्तु बाजो और उल्लुओं से बचते फिरते थे। परन्तु यह खेत बिलकुल सुरक्षित था। पेनी ने बहुत अधिक सतर्क होकर और दिन-रात जागकर, रिप और जूलिया के सहारे, और चारो ओर बाड बनाकर, इस खेत को बिल्कुल सुरक्षित बना दिया था। उसे पनी रात को भी कोई-न-कोई फुसफुसाहट सुनाई देती रहती थी।

जोडी अक्सर रात को दरवाजे का खुलना और बन्द होना सुनता था। पैनी चुपचाप ही बाहर जाकर और किसी लुटेरे जानवर का पीछा करके वापस आ जाता था।

यह चोरी या घुसपैठ दोनों ओर से चलती थी। हिरण के मांस या वन-बिलाव की खाल के लिए बैक्स्टर लोग जंगल में घुस जाते थे और हिंसक जानवर और भूखे पशु उनके खेत में मौका पाते ही घुस आते थे। जैसे इस खेत के चारों ओर भूख नाच रही थी। जंगल के बीचोंबीच यह एक किला था, मानो भूख के समुद्र में एक भरा-पूरा द्वीप हो।

उसे झनझनाती जंजीरों की आवाज सुनाई दी। पैनी पशुओं को और घोड़े के सहारे-सहारे लौट रहा था। जोडी दरवाजे खोलने के लिए दौड़ गया। उसने जुआ आदि खोलने में भी सहायता की। वह सीढ़ी से ऊपर चढ़ गया और मटरों का एक गट्ठर उसने सूअर की नाद के लिए फेंका। गर्मियों की फसल से पहले अब और सूखी भाजी नहीं मिल सकेगी। उसे सूखे मटरों का भूसा मिल गया और उसने उसे भी गाय के लिए फेंक दिया। सवेरे बैक्स्टरों और बछड़े के लिए कुछ अधिक दूध हो जाएगा। बछड़ा पतला होता जा रहा था, क्योंकि पैनी उसे गाय से दूर ही रखता था। इस ऊँचाई पर धूप के कारण उसे गर्मी महसूस हुई। उसके ऊपर की छाया में वर्षा के कारण सड़न-सी आ गई थी। उसे भूसे की एक मधुर गन्ध वाली सुर-सुराहट सुनाई दी। वह उसके नाक में घुस गई। वह एक क्षण के लिए सब ओर से बचकर उसी में लेट गया। ज्यों ही उसे माँ की आवाज सुनाई दी, उसका आराम खत्म हो गया। वह जल्दी-जल्दी नीचे उतरा। पैनी दूध दुह चुका था। वे घर साथ साथ ही लौटे। भोजन परोसा जा चुका था। लगा [illegible] और मक्खन की रोटी ही सामने पड़ी थी, पर तो भी खाना काफी था।

माँ बोली, 'तुम दोनों बाहर जाकर किसी शिकार की खबर लाना।'

पैनी ने स्वीकृति दी, "मैं अपनी बन्दूक [illegible] से ला रहा हूँ।" वे पश्चिम की ओर निकल पड़े। सूर्य अभी डूबा नहीं था। बहुत दिनों से वर्षा नहीं हुई थी। परन्तु दूर उत्तर और पश्चिम में सफेद-से बादल जमा होने शुरू हो गए थे। सूर्य और दक्षिण में एक धुंधलापन पश्चिम की ओर बढ़ना शुरू हो गया था। पैनी बोला, "अगर वर्षा शुरू हुई तो हमें शिकार

के पास ही रहना होगा।"

पर नीचे हवा नही चल रही थी। सड़क पर हवा ऐसे लग रही थी, जैसे कोई ऊनी चादर पडी हो। जोडी को लगा, जैसे वह इस भारी हवा को धक्का देकर अलग कर सकता था और इसके बीच मे से रास्ता बना सकता था। उसके सख्त तलवो के नीचे मिट्टी जल रही थी। रिप और जूलिया सिर नीचे झुकाए और पूँछे लटकाये हुए चलते जा रहे थे। उनकी जीभ खुले जबडो से, प्यास के मारे, नीचे लटक रही थी। सूअरो के निशान ढूंढना और उनके पीछे चलना आसान नही था, क्योंकि रास्ते का मैला काफी दिन से सूख चुका था।

जूलिया की नाक की अपेक्षा पैनी की आँखे अधिक काम कर रही थी। सूअर पीछे खेतो से होते हुए पुराने उजाड खेत तक पहुँच गए थे और वहाँ से नरगिस के मैदानो तक पहुँचकर ठण्डे पानी के जोहडो मे पहुँचे थे, ताकि वहाँ आनन्द मना सकें। जब घर के आस-पास ही उन्हे खुराक मिल जाती थी, तब वे कभी इतनी दूर न गए थे। परन्तु अब एक उजाड और कठोर मौसम थी। चीड, सनावर या अखरोट का कोई एक-आध ही फल कही पत्तो के ढेर के नीचे दबा रह गया हो तो बात अलग है अन्यथा कही कोई फल न दिखाई देता था। छोटी खजूरियो पर अभी फल हरे ही थे। सूअर भी इन्हे पसन्द न करते थे। अपनी ज़मीन से तीन मील परे पैनी उनके निशान ढूंढने के लिए झुका। उसने एक मिट्टी को उठाया और देखा। उस पर घोडे के खुर के निशान थे। वह बोला, "इन लोगो ने इन सूअरो को खदेडा है।"

उसने अपनी कमर सीधी की। उसका चेहरा गम्भीर हो गया। जोडी उत्सुकता से देखने लगा।

पैनी बोला, "बेटे! अब हमे पीछा तो करना ही पडेगा।"

"फौरेस्टरो तक?"

"जहाँ पर भी सूअर हो, वहीं तक। हो सकता है कि हम किसी के बाडे मे बने जाल मे इन्हे पा ले।"

पैड टेढी-मेढी होती हुई बढ रही थी, क्योकि सूअर बिखरे हुए अनाज के लिए इधर-उधर होते चले थे। फौरेस्टरो ने अनाज से उन्हे लुभाया था।

पैनी बोला, "मुझे फौरेस्टरो या ओलिवर से लडना तथा मरने और

तुम्हे कुचलना तो समझ मे आता है, परन्तु यह गहरी नीचता मैं नही समझ पाया।"

दो फर्लांग आगे सूअरो को फँसाने का एक जाल-सा तैयार किया हुआ था। यह फैलाया जरूर गया था, पर अब खाली पडा था। इसे बिना छटी टहनियो और एक बडी शाखा से बनाया गया था। साथ ही दरवाजा बन्द करने का तरीका भी कर लिया गया था। पैनी बोला, "वे नीच यही-कही इन्तजार करते रहे होगे। क्योकि इस घेरे मे सूअर अधिक देर नही टिक सकते। यही से एक गाडी घेरे के चारो ओर घूमती हुई निकली थी। उसके पहियो के निशान फौरेस्टरो की जमीन की ओर जाने वाली सडक तक गए थे।

पैनी बोला, "ठीक है, बेटे! यह हमारा सीधा रास्ता है।"

सूर्य अब छिपने ही वाला था। घने होते हुए बादल रुई के गोलो जैसे सफेद थे। परन्तु अब जैसे उन पर लाल और पीला रग अस्त होते सूर्य ने छिडक दिया हो। दक्षिण की ओर बारूद के धुएँ की भाँति अधेरा घिर आया था। सारे जगल मे ठण्डी हवा का एक झोका ऐसे घूम गया, जैसे किसी बडे भारी जानवर ने एक बहुत ठण्डी साँस ली हो और वह उधर से गुजर गया हो। जोडी काँप गया। पर पीछे आने वाली गर्म हवा ने उसमे फिर हौसला भर दिया। एक अगूरो की बेल पतली-सी सडक के बीचोबीच से गुजर गई थी। पैनी उसे हटाने के लिए झुका। वह बोला, "तुम्हारे लिए कोई मुसीबत इन्तजार कर रही है और तुम्हे उसका मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

एक फनियर साँप ने उसे डस लिया। वह इसी बेल के नीचे छिपा हुआ था। जोडी ने एक चमक देखी, जो एक छाया की तरह उठी और कटफोडे से भी अधिक तेजी से जिसने काटा और भालू के पजो से भी अधिक ठीक निशाने पर जिसने वार किया। उसने अपने पिता को लडखडाकर पीछे हटते देखा। चोट खाए पैनी को चिल्लाते उसने सुना। उसकी इच्छा हुई कि वह पीछे हटे और अपनी पूरी आवाज के साथ चीख पडे। परन्तु, वह यहीं गडा रहा और आवाज भी न कर सका। उसे लगा जैसे एक शाख गिरी हो, साँप नहीं। या, फिर एक शाख टूटी हो, एक पक्षी उड रहा हो, या, कोई खरगोश भाग गया हो। पैनी चिल्ला पडा, "पीछे हटो, कुत्तो को सम्हालो!"

इस आवाज़ ने उसे चैन दी। वह पीछे हटा और उसने कुत्तों को उनकी गर्दन के बालों से पकड लिया। उसने देखा कि सांप की एक धुंधली छाया ने घुटनों तक ऊँचा अपना चपटा-सा सिर उठाया। यह फन एक ओर से दूसरी ओर घूम रहा था। इसकी हरकत उसके पिता की हरकत के साथ-ही साथ हो रही थी। उसने उसकी खटखटाहट को सुना। कुत्तों ने भी पहचाना और समझ लिया। उनके बाल खडे हो गए। जूलिया गुर्राई और उसके हाथ से निकल गई। वह पगडण्डी पर आगे बढी। उसकी लम्बी पूँछ पीठ पर मुड चुकी थी। रिप भी अपने पिछले पाँव पटकता हुआ भौंकने लगा।

पैनी धीरे-धीरे पीछे हटा, जैसे कोई स्वप्न देख रहा हो। साँप की आवाज़ अब भी आ रही थी। जैसे यह साँप नहीं थे, बल्कि टिड्डियाँ भिनभिना रही हों, या पेड के मेढक टरटरा रहे हों। पैनी ने अपनी बन्दूक उठाई, कन्धे पर चढाई और गोली दाग दी। जोडी काँप गया। सामने का साँप बल खा गया और उसमें एक ऐंठन-सी दौड गई। उसका फन धूल में गिर गया। ऐंठन सिर से पूंछ की तरफ बढती गई। उसकी आवाज़ धीमे-धीमे समाप्त होती गई। और, आखिर में उसके शरीर में लहर धीमी पडने लगी जैसे कोई ज्वार बैठ रहा हो। पैनी मुडा और अपने बच्चे की ओर देखकर बोला, "उसने मुझे डस लिया है।"

उसने अपनी दाहिनी भुजा उठाई और उसे फैला दिया। उसके होंठ सूखे पड गए थे और वे दाँतों के ऊपर उठ रहे थे। उसका गला काम कर रहा था। उसने दाँत के दो निशान साफ देख लिए। उन दोनों से खून बह रहा था। वह बोला, "वह बहुत बडा साँप था।"

जोडी ने रिप को ढीला छोड दिया। कुत्ता दौडकर मरे हुए साँप पर टूट पडा और बुरी तरह भौंकने लगा। वह इधर-उधर दौडा और अन्त में उसने उसकी पूंछ को और खडखडाहट को एक ही पंजे में उठा लिया। उसे मरा हुआ देखकर वह चुप हो गया और धरती पर फुफकारने लगा। पैनी ने उन निशानों से अपना सिर उठाया। उसका चेहरा काला पडना शुरू हो गया था।

वह बोला, "लगता है मुझे मौत घेर रही है।"

उसने अपने होंठ चूसे। बहुत जल्दी मुडा और जंगल में से अपने डेरा की ओर जल्दी-जल्दी लौटने लगा। सडक खुली थी और इसीलिए वह छोटी रह सकती थी, पर पैनी जंगल में से ही होता हुआ सीधी राह काटने लगा। वह रास्ते में पडने वाले जंगली सनावरों, बडहल और खजूरों को पार करता गया। जोडी भी उसके पीछे लटकता रहा। उसका दिल बडी तेज़ी से धडक रहा था और वह न जान सका कि किधर जा रहा है। उसे दूर से पिता के जाते हुए किसी चीज़ के टूटने या कुचले जाने की आवाज़ आ रही थी। एकदम ही यह घनापन समाप्त हुआ। कुछ ऊँचे-ऊँचे सनावर के बीच एक खेत-सा था। जोडी को चुप होकर चलना अजीब-सा लगा।

पैनी रुक गया। उसको सामने कुछ हलचल दिखाई दी। एक हिरणी अपने पाँवों के बल कूदी। पैनी ने एक लम्बी साँस खींची, जैसे किसी कारण साँस लेना कुछ आसान हो। उसने अपनी बन्दूक उठाई और अपने सिर तक उठाकर दाग दी। जोडी को लगा कि उसका पिता पागल हो गया है, नहीं तो इस क्षण उसे शिकार की क्या सूझी? हिरणी एक झटके के साथ उछली, पर फिर धरती पर गिर पडी। कुछ देर अपने पाँव पटक-कर वह चुप हो गई। पैनी उस तक दौडा गया और अपना चाकू निकाल-कर उसे चीरने लगा। जोडी के विचार में उसका पिता पागल था। उसने देखा पैनी ने गला न चीर कर हिरणी का पेट चीरा और उसके घाव को पूरा खोल दिया। हिरणी का दिल अब भी धडक रहा था। पैनी ने उसका जिगर काट लिया। घुटने टेककर उसने चाकू अपने बाएँ हाथ में पकडा और तब दाएँ हाथ के उन दोनों निशानों पर उसे चला दिया। वे अब बन्द हो चुके थे। उसकी अगली बाँह सूज चुकी थी और काली पड गई थी। पसीना उसके माथे पर आ रहा था। ज़ख्म काटते ही काला खून अन्दर से बहने लगा और उसने उस गर्म जिगर को उस कटी जगह पर लगा दिया और बोला, "मैं अनुभव कर रहा हूँ कि यह कुछ खींच रहा है।"

उसने और ज़ोर से दबाया। फिर उसे हटाकर देखा। उसका रंग ज़हर के कारण हरा पड चुका था। उसे फेंककर वह बोला, "एक दूसरा टुकडा दो।"

इस तरह एक के बाद दूसरा यह बार-बार पलटता रहा। फिर वह

बोला, "जरा मुझे चाकू पकडाओ।"

अब उसने अपनी बाँह के और ऊपर से कुछ हिस्सा काटा। यहाँ अधिक काली सूजन हो चुकी थी। जोडी चिल्ला पडा, "पिताजी, आप इस तरह खून बहने से मर जाएँगे।"

"इस तरह सूजते जाने की बजाय खून बहाकर मर जाना अधिक अच्छा है। मैंने इसी तरह एक आदमी को मरते हुए देखा था।"

उसके गालों से पसीना बह रहा था।

जोडी ने पूछा, "पिताजी, इसने बहुत बुरी तरह काटा?"

"हाँ बेटे, जैसे एक तपा हुआ चाकू मेरे कन्धे में घुस गया हो।"

अब मांस हरा पडना बन्द हो चुका था। मौत के कारण हिरण का मांस अपनी गर्मी खो चुका था।

वह खडा हो गया और बोला, "अब इसमें मुझे कुछ अधिक लाभ न होगा। मैं घर की तरफ चल रहा हूँ। तुम फौरेस्टरों की ओर जाओ और उनसे कहो कि वे नदी की ओर जाकर डाक्टर को बुला लाएँ।"

"क्या आपके विचार में वे चले जाएँगे?"

"मौका ही ऐसा पड गया है। तुम उन्हें बुलाते ही रहना, चाहे वे तुम पर कुछ फेंकें या गोली ही दाग दें। उन्हें पूरी बात सुना देना।"

वह लौटा और फिर से अपनी राह पर डट गया। जोडी भी उसके पीछे चला। अपने पीछे उसे एक हल्की-सी आवाज सुनाई दी। उसने मुडकर देखा एक चित्तीदार छौना उस मैदान के कोने पर खडा हुआ देख रहा था और अपने कमजोर पाँवों पर लडखडा रहा था। उसकी काली आँखें खुली और आश्चर्य में डूबी थीं।

जोडी चिल्ला पडा, "पिताजी, इस हिरणी के एक छौना भी है।"

"बडा दुख है, बच्चे! मैं क्या करूँ? अब आ जाओ।"

जोडी पर छौने के लिए एक दर्द सवार हो गई। वह हिचकिचाया। छौना अपना छोटा-सा सिर उठाकर खोया-खोया-सा देख रहा था। वह उस शव के पास आकर झुका और उसे सूँघने लगा। तब वह मिमियाया।

पेनी बोला, "बच्चे, तेजी से बढो।"

जोडी उससे मिलने के लिए दौडा। सडक पर आकर एक क्षण के लिए

रुका और बोला, "उनमे से किसी को हमारे घर की ओर जाने वाली यह सडक पकडने के लिए भी कह देना और, अगर मैं इसपर चल रहा होऊँ तो मुझे उठाने को कह देना। जाओ, जल्दी करो।"

उसके पिता का सडक पर चलता हुआ सूजा शरीर एक भय के रूप मे उस पर छा गया। वह दौडने लगा। उसका पिता अपने घर की ओर धीमी-धीमी चाल मे लडखडाता चल रहा था। जोडी इस गाडी की राह पर मेंहदी की झाडियों तक बढता गया, जहाँ से यह फॉरेस्टरों की जमीन की ओर फट गई थी। बहुत ज्यादा चलने से यह सडक घास आदि से रहित थी। यह उडती हुई धूल उसकी एडियों को जैसे अपने अन्दर दाब लेती थी और उसके पाँव का माँस जैसे उसके चुभन महसूस करता था। वह वहाँ से एक छोटी कुत्तों वाली पगडण्डी पर पड गया और यहाँ से उसके पाँव जमकर चलने लगे। उसके पाँव बढ रहे थे, परन्तु उसका मन और शरीर वहीं और अटका हुआ था। जैसे एक खाली सन्दूक गाडी के पहियों पर बढ रहा हो। उसके पाँव के नीचे सडक ऐसे लगती थी जैसे कोल्हू के चारों ओर का रास्ता हो। उसके पाँव ऊपर-नीचे उठ और गिर रहे थे, परन्तु उसे ऐसा लगता था कि जैसे बार-बार वे ही पेड और वे ही झाडियाँ आती-जाती हों। उसे लगा कि उसकी चाल बहुत धीमी और इसलिए बेकार थी। परन्तु अब वह एक मोड पर पहुँच चुका था। उसे अचरज हुआ, यह मोड़ फॉरेस्टर परिवार की जमीन मे जाने वाली सीधी सडक पर निकलता था।

वह उस जमीन के बडे ऊँचे वृक्षों तक पहुँच गया। वे उसे घूरने से लगे, जैसे वे उसे बता रहे हों कि वह बिलकुल पास आ गया है। वह जिन्दा पहुँच गया था, पर वह डरा भी हुआ था। उसे फॉरेस्टरों से डर भी था और नगर से उसकी सहायता करने पहुँचे भी। और वह लौट भी पाता भी अब वह कहाँ जाएगा? वह एक क्षण के लिए उन्हीं पेडों के नीचे खडा और सोचने लगा। तारे चमक आए थे, उसे लगा था कि अब अंधेरा नहीं रहा। आसमान मे बारिश के बादल नहीं थे, पर एक धुंधला-सा कुहरा जैसे चारों ओर छा गया था। पश्चिम आकाश मे केवल एक हल्का-सा प्रकाश फैल रहा था, जोडी को लगा जैसे वह हिरनी के बच्चे से ममट

हुए हरे रंग का मांस हो। उसे लगा कि वह जैसे अभी फौडरविंग को बुला लेगा। जैसे उसका मित्र उसकी आवाज सुन लेगा और उस तक पहुँचने के लिए दूसरो से अनुमति पा लेगा। जब वह अपने मित्र की आँखें दुख से भरी हुई देखेगा, उस क्षण का विचार-मात्र ही उसके हृदय को चैन देने लगा। उसने एक लम्बी सांस खीची और उन सनावर के वृक्षों के नीचे से एकदम तेजी से दौड पडा।

वह चिल्लाया, "फौडरविंग ! फौडरविंग ! मैं जोडी हूँ।"

अब एक ही क्षण मे उसका मित्र बाहर आएगा और अपने टेढे मेढे शरीर से जल्दी मे चारो हाथो-पांवो से सीढियां पार करता हुआ उस तक पहुंच जाएगा। या, फिर जैसे वह झाडियो मे से निकलकर रैकून के साथ-साथ सामने प्रकट हो जाएगा। वह फिर बोला, "फौडरविंग ! यह मैं हूँ।"

पर कोई उत्तर न मिला। वह रेतीले आँगन मे आगे बढ आया। फिर बोला, "फौडरविंग !"

घर मे दीया-बत्ती पहले ही जल चुका था। चिमनी मे से धुआं उठ रहा था। चारो ओर के दरवाजे बन्द थे, कही रात मे मच्छर आदि न घुस पाएँ। इतने मे दरवाजा खुला। प्रकाश मे उसने देखा कि एक-एक करके सारे फौरेस्टर ऐसे उठते हुए आए, जैसे लम्बे-चौडे वृक्ष जगल मे जडो-समेत उखडकर उसकी ओर आ रहे हो। वह रुक गया। लेम उसकी ओर बढा। उसने अपना सिर झुका लिया और एक ओर को देखने लगा, जब तक कि लेम ने उसे पहचान न लिया।

लेम बोला, "तुम हो ! ओछे जानवर ! तुम यहां किसलिए ?"

जोडी लडखडाया, "फौडरविंग !"

"वह बीमार है, तुम उसे किसी भी हालत मे नही देख पाओगे।"

उसके लिए यही बहुत था। वह रोता हुआ फूट पडा, "पिताजी को सांप ने काट लिया है।"

सभी फौरेस्टर सीढियो से उतर आए और उसके चारो ओर खडे हो गए। वह जोर से सुबकने लगा, मानो अपने और अपने पिता के लिए करुणा और दया की भीख मांग रहा हो। उसमे यह भावना भी मिली थी कि आखिर जिस काम के लिए चला था, वहां पहुँचकर वह पूरा हो गया।

उन आदमियों में कुछ ऐसी हलचल मची, जैसी आटे में खमीर लगने पर होती है।

"वह है कहाँ? साँप कैसा था?"

"फनियर साँप! एक बहुत बड़ा! वह घर की ओर बढ़ रहे हैं। मैं वायदा करता हूँ कि आगे से ओलिवर को कभी मदद नहीं करूँगा। आप सहायता कीजिए।"

लेम हँस पड़ा, "एक मच्छर वायदा कर रहा है कि वह काटेगा नहीं।"

बक बोला, "किसी भी इलाज से उसका कोई भला न होगा। उसकी बाँह में साँप ने काटा है और वह मर रहा है। हो सकता है कि डाक्टर को उनके पास ले जाने से पहले ही वह मर जाए।"

जोडी बोल पड़ा, "नहीं, उन्होंने एक हिरणी मारी थी और उसके जिगर को काट कर अपना जहर निकाल दिया था। कृपा करके डाक्टर को ले आइए।"

मिलव्हील बोला, "मैं उसे ले आऊँगा।"

जोडी को जैसे चैन उमड़ती-सी लगी, बोला, "मैं धन्यवाद देता हूँ।"

"मैं तो किसी साँप के काटे कुत्ते की भी मदद करता। धन्यवाद की जरूरत नहीं।"

बक बोला, "अच्छा मैं घोड़े पर जाकर रास्ते में पेनी को उठा लूँगा। अगर वह सह सकता होगा तो अब तक बचा हुआ होगा। अगर तो उसने शराब पी हुई होगी, तो उसकी साँस अब भी चल रही होगी। यह अच्छी बात होगी।"

बक और मिलव्हील बड़े अजीब इशारों के साथ घुड़साल की ओर अपने घोड़ों को तैयार करने चले गए। उनका आराम से चलना जोडी को अखरा। अगर उनके पिता की जिन्दगी की आशा होती तो वे जल्दी मचाते। परन्तु, उनका धीमेपन और निश्चिन्तता से काम करना, पेनी को दफ़ना देने के बराबर था। वह निराश-सा खड़ा रहा। जाने से पहले वह एक क्षण के लिए फौडरविंग को देखना चाहता था। शेष फॉरेस्टर लोग उसकी तरफ पीठ फेरकर उपेक्षा से सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। लेम दरवाजे के पीछे से चीखा, "मच्छर, जाओ भागो!"

आर्क बोला, "अरे, उस छोटे पर दया करो। उसे मत सताओ। उसका पिता मर ही रहा है।"

लेम ने उत्तर दिया, "अच्छा है, मरे और छुटकारा हो। वह बडा अडियल हे।"

वे घर मे घुस गए और दरवाजा वन्द कर लिया। जोडी पर एक डर सवार हो गया कि जैसे उनमे से कोई सहायता नहीं करेगा और शायद वक और मिलव्हील भी मजाक के लिए ही घुडसाल की ओर गए है और वहाँ जाकर हँसी मे डूब गए हैं। उसे और उसके पिता को जैसे सवने भुला दिया है। पर उसी समय अचानक दोनो घोडो पर सवार होकर वहाँ आ गए और वक ने मित्रतापूर्ण ढग से उसकी ओर हाथ उठाकर कहा, "वच्चे, डरने की जरूरत नही। जो कुछ हो सकेगा, हम करेंगे। मुसीवत मे फँसे आदमी से हमे कोई गिला नही।"

उन्होने एड लगाई और तीर की तरह निकल गए। जोडी पर से जैसे मौत का सन्नाटा हट गया और उसकी जगह उसके दिल मे एक हलकापन छा गया। उसने समझ लिया कि यह केवल लेम ही था कि जिसने ओछापन दिखाया और जो असल शत्रु था। उसकी सारी घृणा सन्तोष के कारण दव गई। वह तव तक वही खडा रहा जव तक घोडो के खुरो की टाप सुनाई देनी वन्द न हो गई। और तव घर की ओर चल पडा।

अव वह सच्चाई को स्वीकार करने के लिए तैयार था। साँप ने उसके पिता को काटा था और पिता मर भी सकता था। पर सहायता तैयार थी और जो कुछ उससे आशा थी उसने पूरा कर दिया था। उसे अपना डर साफ दिखाई दे रहा था, पर अव वह भयानक नही रहा था। उसने न दौडने का निश्चय किया और वह स्थिर कदमो से चलने लगा। उसकी इच्छा थी कि वह भी अपने लिए एक घोडा माँग ले, पर उसकी हिम्मत नही पडी।

वर्षा की एक वौछार उस पर से गुजर गई। उसके वाद फिर एक चुप्पी सी छा गई। शायद एक आँधी जगल मे वडी तेजी से आएगी, जैसा कि अक्सर होता है। चारो ओर आकाश मे हल्की-सी चमक थी। उसे तनिक भी खयाल न था कि पिता की वन्दूक उसी के पास है। उसने इसे एक कधे पर लटकाए रखा और पक्की सड़क की ओर जल्दी-जल्दी वढने लगा। वह सोचने लगा

कि मिलव्हील डाक्टर तक पहुँचने मे कितनी देर लगाएगा ? उसे यह भी सन्देह था कि डाक्टर बहुत अधिक शराब न पीये हुए हो ! क्योंकि अगर वह बिस्तरे से न उठ सका तो वह न आएगा।

वह भी एक बार बहुत छुटपन मे डाक्टर के यहाँ गया था। उसे अब भी उस लम्बे-चौडे और बडे बरामदो वाले टूटते-फूटते मकान का ध्यान था, जो कि एक बडे जगल के बीच मे था। उसे अब भी दीवारो मे उगने वाले वृक्षो और छिपकलियो आदि का ध्यान था और साथ ही बाहर की ओर चढी हुई लम्बी-लम्बी बेलो का भी। उसे अब भी याद था कि किस तरह शराब के नशे मे डूबा हुआ डाक्टर अपनी मच्छरदानी के अन्दर पडा हुआ छत की ओर ताक रहा था। जब उसे बुलाया गया तो वह अपने पांव के बल पर उठ पडा और लडखडाते कदमो से अपने काम मे जुट पडा। परन्तु उसका दिल और उसके हाथ बडे उदार थे। वह एक अच्छे डाक्टर के रूप मे चारो ओर प्रसिद्ध था। शराब का पीना या न पीना उसके लिए महत्त्व न रखता था। जोडी ने सोचा, अगर मिलव्हील उसके पास समय से पहले पहुँच गया तो उसका पिता निश्चय ही बच जाएगा।

वह फोरेस्टरो की पगडण्डी से सडक पर आ गया और तब अपने पाँवो की ओर दौडने लगा। उसके सामने चार मील का लम्बा रास्ता पडा था। जमीन सख्त होती तो उसे एक घटे से ऊपर लगना आवश्यक था। मिट्टी नर्म थी और अधेरा छा रहा था। इसलिए उसके पांव जैसे पीछे को खिच रहे थे। इस तरह तो वह दो घटे मे भी शायद ही पहुँचे। इसीलिए कभी-कभी वह दौडने लगता था। चारो ओर की हल्की-हल्की चमक भी अँधेरे मे डूब गई, जैसे जल-मुर्गी नदी मे गोता लगा गई हो। सडक के दोनो ओर की चौडाई समीप आती जा रही थी, मानो सडक तग हो गई।

उसे दूर मे शोर की गरज और बिजली की चमक आकाश मे भरी दिखाई दी। उसे ऐसा लगा कि जैसे सनारको के नीचे किसी ने ... की आवाज उसने सुनी हो, पर ये वर्षा की बूंदे थी। उसे न साथ की परवाह रही थी, न अंधेरे की, परन्तु सब कैसी उपस्थित होता था। साथ कैसी साथ न था और वह सोचता था। वह उदास और सुन्न हो गया और सन्देह मे पड गया कि शायद उसका पिता जहर से छटपटा कर मरने मे ही गिर पडा

हो। या फिर, अगर उसके मरने से पहले जीवित रूप मे बक ने उसे खोज लिया हो तो शायद बक के घोडे की पीठ पर लदकर घर पहुँच गया हो। बिजली एक बार फिर चमकी। ऐसी कितनी ही आँधियो मे वह अपने पिता के साथ इन्ही सनावरो के नीचे बैठा रहा था, तब यह वर्षा उसे परिचित लगती थी और मित्र भी, क्योकि उन दोनो को साथ-साथ बैठने का मौका मिलता था।

झाडियो मे उसे एक गुर्राहट सुनाई दी। कोई बहुत तेज गति वाली चीज़ उसके सामने से एक क्षण मे ही सडक पार करके चुपचाप दूसरी ओर निकल गई। वह बिल्ली या बनबिलाव से नही डरता था, परन्तु चीता घोडे पर भी हमला कर सकता था। उसका दिल धडकने लगा। उसने पिता की बन्दूक के घोडे पर अँगुली रख ली। पर यह सब व्यर्थ था, क्योकि पैनी दोनो गोलियाँ पहले ही चला चुका था—एक साँप पर और एक हिरणी पर! उसके पास पिता का चाकू भी था। उसने सोचा, काश! ओलिवर वाला चाकू भी उसके पास उस समय होता। पर क्योकि उसके लिए कोई खोल नही था और वह बहुत तेज था, इसलिए पैनी ने उसे लाने से मना कर दिया था। घर मे आराम से बैठे-बैठे या अगूरो की बेल के नीचे या फिर सोते के किनारे बैठकर उसने हमेशा ही सोचा था कि किसी भालू, भेडिए या चीते की छाती मे वह एक ही बार मे इसे घुसेड देगा। परन्तु वह सब सोचना अब उसे अच्छा नही लग रहा था। उसे लगा कि चीते के पजे उससे भी बहुत तेज़ थे।

जो भी जानवर रहा हो, वह अब जा चुका था। अब वह फिर तेज़ी से लडखडाता हुआ बढने लगा। उसे लगा, जैसे उसने भेडिए की पुकार सुनी हो। परन्तु यह इतनी दूर से आ रही थी, जैसे हवा की ही आवाज़ हो। हवा बढती आ रही थी, बहुत दूरी से आती हुई इसकी आवाज उसे सुनाई दी। जैसे इन अधेरे जगलो से परे वह किसी दूसरे ससार मे चल रही हो। पर एकदम ही उसे यह आवाज पास आती हुई सुनाई दी, जैसे कोई दीवार पास बढती आ रही हो। सामने के पेडो की शाखाएँ हिलने लगी। झाडियाँ आवाज के साथ नीचे गिरने लगी। आँधी इतने बडे शोर के साथ आई, जैसे उसे किसी ने धक्का दे दिया हो।

उसने अपना सिर नीचे झुका लिया और इसके विरुद्ध बढ़ने लगा। उसकी खाल एक ही मिनट में भीग गई। उसकी पीठ और गर्दन पर बारिश गिर रही थी और वहाँ से पाजामों तक बहकर उसे गीला कर गई। उसके सारे कपड़े भारी हो गए और उसकी चाल रुकने लगी। वह रुका और उसने अपनी पीठ हवा की ओर करके अपनी बन्दूक सड़क के एक किनारे रख दी। उसने अपनी कमीज और पाजामा उतारा और उन्हें एक गठरी के रूप में बाँध लिया। बन्दूक उठाकर वह उस आँधी में नंगा ही चलने लगा। उसकी नंगी खाल पर पड़ने वाली बारिश ने उसे स्वच्छन्द और स्वतन्त्र होने का अनुभव दिया। बिजली चमकी और वह अपने गोरेपन से स्वयं चकित रह गया। परन्तु, उसे ऐसा लगा कि अब जैसे वह रक्षा से रहित था। वह अकेला और नंगा था। चारों ओर का संसार उसका शत्रु था। आँधी और अँधेरे में वह खोया और भूला हुआ था। कोई चीज उसके पीछे से दौड़ती हुई उसके आगे निकल गई। वह जंगल में इस तरह घुस गई, जैसे चीता हो। इसकी कोई शकल न थी और यह बहुत लम्बी चौड़ी थी। यही उसका शत्रु था। लगता है मौत जंगल में खुली घूम रही थी।

उसे लगा कि उसका पिता या तो मर चुका या मर रहा था। परन्तु इस विचार का बोझ भी वह न सह सका। इस विचार को हटाने के लिए वह तेज़ी से दौड़ने लगा। उसके विचार में पैनी मर नहीं सकता था। कुत्ते मर सकते थे, भालू, हिरण और दूसरे मनुष्य मर सकते थे। उन सबके मरने का उसे गम न था, क्योंकि उसका कोई सम्बन्ध उनसे न था। पर पैनी अगर मर गया तो उसके लिए कोई भी चीज़ महत्त्व की न थी। आज वह जिन्दगी में सबसे अधिक डरा हुआ था। वह रोने लगा। उसके आँसू नमकीन स्वाद के साथ उसके मुँह में आने लगे। उसने जैसे गिरजाघरों में प्रार्थना की थी, ऐसे ही वन में प्रार्थना की, "कृपा करो।"

उसका गला दर्द करने लगा। उसकी आँखें जैसे गर्म शीशे से दाग दी गई हों। इतने में बिजली फिर चमकी और फिर उसे सामने एक रास्ता दिखाई दिया। यह उनका पुराना जाना हुआ खेत था। वह तेज़ी से दौड़ा और क्षण-भर के लिए पुरानी घास का सहारा लेकर खड़ा हो गया। अब हवा का झोंका उसे बारिश से भी अधिक ठंडा लगने लगा। वह काँप,

उठा और फिर आगे चल पडा। रुकने के कारण उसे सर्दी लग गई थी। अब उसने अपने को गर्म करने के लिए दौड़ना चाहा, परन्तु उसकी ताकत केवल घिसटने लायक ही रह गई थी। वर्षा के कारण मिट्टी जम गई थी और इसलिए चलना आसान हो गया था। हवा का जोर कम हो गया। मूसलाधार वारिश भी धीमी पड गई। वह सुस्ती से चलने लगा। उसे लगा कि जैसे वह हमेशा चलता ही रहेगा, पर अचानक ही उसने देखा—वह सोते के पास से गुजर रहा था और घर के खेत आ चुके थे।

घर मे वत्तियाँ जगमगा रही थी। घोडे वाहर हिनहिना रहे थे और खुर पटक रहे थे। वहाँ वाड के साथ तीन घोडे वंधे हुए थे। दरवाजे मे से होता हुआ वह कमरे तक आ गया। जो होना था सो हो चुका था। उसका किसी ने भी उठकर स्वागत न किया। बक और मिलव्हील भी नगी जमीन पर ही वैठे थे और उन्होने कुर्सियो की ढासना ली हुई थी। वे कुछ वाते कर रहे थे। उन्होने उसकी ओर देखा, पुकारा और फिर अपनी वातो मे लग गए।

मिलव्हील वोला, "वक, क्या तुम यहाँ नही थे, जव ट्वीसल साँप के काटने से मरा था? पैनी ने शायद ठीक ही सोचा कि शराब का कोई लाभ नही। ट्वीसल ने जलमुर्ग की तरह शराव पी रखी थी और उसी नशे मे साँप पर पाँव रख वैठा।"

वक वोला, "खैर, अगर कभी मुझे साँप काटे तो मुझे शराव से जितना अधिक भर सको, भर देना। मैं किसी भी दिन रोकर मरने की अपेक्षा शराब पीकर मरना अधिक पसन्द करूँगा।"

मिलव्हील ने आग की ओर थूका, "मत डरो। तुम ऐसे ही मरोगे।"

जोडी को होश न रहा, पर वह उनसे कुछ पूछ भी न सका। वह उनके पास से होता हुआ, जल्दी से पिता के कमरे मे चला गया। उसकी माता विस्तर के एक ओर वैठी थी और डाक्टर विल्सन दूसरी ओर। डाक्टर ने अपना सिर ऊँचा न उठाया। उसकी माँ ने उसकी ओर देखा और विना वोले उठी। वह एक आलमारी तक गई और उसमे से एक साफ पाजामा और कमीज निकाल लाई। उसने अपने गीले कपडे एक किनारे रखे और वन्दूक दीवार के सहारे खडी की और अपने विस्तर की ओर

धीरे-धीरे बढ गया। वह सोचने लगा कि अगर अब तक नही मरा तो उसका पिता अब भी नही मरेगा।

अपने बिस्तर मे ही पैनी हिला। जोडी का दिल यह देखते ही ऐसे उछला, जैसे कोई खरगोश उछला हो। पैनी दर्द के मारे चिल्लाया, और उसने उल्टी का प्रयत्न किया। डाक्टर एकदम झुका और उसने चिलम्ची उसके सिर के साथ लगा दी और सिर थपथपाने लगा। पैनी का चेहरा काला और सूजा हुआ था। उसने बडी दर्द के साथ उल्टी की। परन्तु उल्टी मे कुछ निकला नही। वह ज़ोर से साँसें लेता हुआ फिर से पड गया। डाक्टर ने चादर मे हाथ डालकर कपडे मे लिपटी हुई ईंट निकाली और जोडी की माँ को पकडा दी। उसने जोडी के गीले कपडे बिस्तर के पांयते की ओर रख दिए और रसोई मे ईंट को दुबारा गर्म करने के लिए चली गई।

जोडी ने धीमे से पूछा, "क्या वह ठीक नही है? बीमारी ज्यादा है?"

"बुरे तो काफी है, पर लगता है ठीक हो जाएंगे। कभी-कभी निराशा भी होने लगती है।"

पैनी ने अपनी सूजी हुई आँखे खोली। पुतलियाँ फैली हुई थी और उसकी आँखें काली-सी लग रही थी। उसने अपनी बाँह उठाई और घुमाई। यह ऐसे सूजी हुई थी, जैसे बैल की जांघ हो।

वह भारी गले से बोला, "तुम्हे ठड न लग जाय!"

जोडी ने अपने कपडे जल्दी से पहने। डाक्टर प्रसन्नता मे बोला, "यह बहुत अच्छा चिह्न है कि वह तुम्हे पहचानता है। ये पहले शब्द हैं जिन्हें यह बोल पाया है।"

जोडी का हृदय एक साथ ही प्रसन्नता और दुख से भर गया। अपने दुख मे भी पिता उसे भूला नही। उसे विश्वास था, अब पैनी नही मरेगा।

वह बोला, "श्रीमान् डाक्टर! इन्हे अवश्य ठीक होना चाहिए।" और तब उसने पिता के ही पुराने शब्दो को दोहराया, "हम बैक्स्टर लोग बहुत ठिगने किन्तु कठोर होते है।"

डाक्टर ने स्वीकृति मे सिर हिलाया और रसोई की तरफ देखकर पुकारा, "कुछ गर्म दूध लाओ। कोशिश कर देखें।"

आशा के साथ जोडी की माँ ने जोर की साँस ली। जोडी भी मट्ठी पर

उससे जा मिला। वह बोली, "अगर कही बुरा हुआ तो हम कही के न रहेगे।"

जोडी बोला, "माँ, ऐसा नही होगा।" पर अन्दर ही अन्दर वह डर गया। वह बाहर कुछ लकडी लाने गया। आँधी पश्चिम की ओर जा रही थी। बादल भी स्पेनी लोगो की सेनाओ की तरह बढते जा रहे थे। पूर्व मे कुछ जगह रोशनी साफ होने लगी थी और वहाँ तारे दीख रहे थे। ताजी और ठण्डी हवा बहने लगी थी। तब तक वह तेल-भरी लकडी का एक गट्ठर ले आया।

वह बोला, "कल का दिन बहुत अच्छा होगा, माँ!"

"सचमुच दिन निकलने तक अगर यह ज़िन्दा रहे तो कल का दिन बहुत अच्छा होगा।" वह आँसुओ मे फूट पडी। उसके आँसू भट्ठी पर गिर रहे थे। उसने रूमाल उठाकर आँसू पोछे और बोली, "तुम यह दूध अन्दर ले जाओ। मैं अपने और डाक्टर के लिए चाय बनाऊँगी। मैंने अभी कुछ भी नही खाया था कि बक इन्हे इस रूप मे लेकर आ गया। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा ही कर रही थी।"

उसे याद था कि उसने भी हल्का ही भोजन किया था, परन्तु इस समय उसे किसी भी चीज़ का स्वाद अच्छा नही लग रहा था। भोजन का विचार भी उसे बुरा लगा। उसने दूध का प्याला लिया और अपने हाथो को सम्हालता हुआ डाक्टर के पास ले गया। डाक्टर ने इसे लिया और पैनी के पास बिस्तर पर बैठकर बोला, "बेटा! तुम इनका सिर उठाओ, मैं इन्हे चम्मच से दूध पिलाऊँगा।"

तकिए पर पडा पैनी का सिर भारी था। जोडी की बाँहे उठाने के ज़ोर से दर्द करने लगी। उसके पिता की साँस भारी चल रही थी, वैसी ही जैसे फौरेस्टर लोगो की शराब पीने की दशा मे चलती थी। उसके चेहरे का रग पलट चुका था। हरे रग का चेहरा पिलपिला-सा हो गया था, जैसे वह मेढक के पेट जैसा बन गया हो। पहले-पहल उसके दाँतो ने चमचे के घुसने का विरोध किया।

डाक्टर बोला, "इससे पहले कि मैं फौरेस्टरो को बुलाऊँ, तुम अपना मुँह खोल लो।"

धीरे-धीरे बढ गया। वह सोचने लगा कि अगर अब तक नही मरा तो उसका पिता अब भी नही मरेगा।

अपने बिस्तर मे ही पैनी हिला। जोडी का दिल यह देखते ही ऐसे उछला, जैसे कोई खरगोश उछला हो। पैनी दर्द के मारे चिल्लाया, और उसने उल्टी का प्रयत्न किया। डाक्टर एकदम झुका और उसने चिलम्ची उसके सिर के साथ लगा दी और सिर थपथपाने लगा। पैनी का चेहरा काला और सूजा हुआ था। उसने बडी दर्द के साथ उल्टी की। परन्तु उल्टी मे कुछ निकला नही। वह जोर से साँसे लेता हुआ फिर से पड गया। डाक्टर ने चादर मे हाथ डालकर कपड़े मे लिपटी हुई ईंट निकाली और जोडी की माँ को पकडा दी। उसने जोडी के गीले कपडे बिस्तर के पांयते की ओर रख दिए और रसोई मे ईंट को दुबारा गर्म करने के लिए चली गई।

जोडी ने धीमे से पूछा, "क्या वह ठीक नही है? बीमारी ज्यादा है?"

"बुरे तो काफी हैं, पर लगता है ठीक हो जाएंगे। कभी-कभी निराशा भी होने लगती है।"

पैनी ने अपनी सूजी हुई आंखे खोली। पुतलियाँ फैली हुई थी और उसकी आँखे काली-सी लग रही थी। उसने अपनी बांह उठाई और घुमाई। यह ऐसे सूजी हुई थी, जैसे बैल की जांघ हो।

वह भारी गले से बोला, "तुम्हे ठड न लग जाय!"

जोडी ने अपने कपडे जल्दी से पहने। डाक्टर प्रसन्नता मे बोला, "यह बहुत अच्छा चिह्न है कि वह तुम्हे पहचानता है। ये पहले शब्द हैं जिन्हे यह बोल पाया है।"

जोडी का हृदय एक साथ ही प्रसन्नता और दुख से भर गया। अपने दुख मे भी पिता उसे भूला नही। उसे विश्वास था, अब पैनी नही मरेगा।

वह बोला, "श्रीमान् डाक्टर! इन्हे अवश्य ठीक होना चाहिए।" और तब उसने पिता के ही पुराने शब्दो को दोहराया, "हम बैक्स्टर लोग बहुत ठिगने किन्तु कठोर होते है।"

डाक्टर ने स्वीकृति मे सिर हिलाया और रसोई की तरफ देखकर पुकारा, "कुछ गर्म दूध लाओ। कोशिश कर देखें।"

आशा के साथ जोडी की माँ ने जोर की सांस ली। जोडी भी भट्ठी पर

उससे जा मिला। वह बोली, "अगर कही बुरा हुआ तो हम कही के न रहेगे।"

जोडी बोला, "माँ, ऐसा नही होगा।" पर अन्दर ही अन्दर वह डर गया। वह बाहर कुछ लकडी लाने गया। आँधी पश्चिम की ओर जा रही थी। बादल भी स्पेनी लोगो की सेनाओ की तरह बढते जा रहे थे। पूर्व मे कुछ जगह रोशनी साफ होने लगी थी और वहाँ तारे दीख रहे थे। ताजी और ठण्डी हवा बहने लगी थी। तब तक वह तेल-भरी लकडी का एक गट्ठर ले आया।

वह बोला, "कल का दिन बहुत अच्छा होगा, माँ!"

"सचमुच दिन निकलने तक अगर यह जिन्दा रहे तो कल का दिन बहुत अच्छा होगा।" वह आँसुओ मे फूट पडी। उसके आँसू भट्ठी पर गिर रहे थे। उसने रूमाल उठाकर आँसू पोछे और बोली, "तुम यह दूध अन्दर ले जाओ। मैं अपने और डाक्टर के लिए चाय बनाऊँगी। मैंने अभी कुछ भी नही खाया था कि बक इन्हे इस रूप मे लेकर आ गया। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा ही कर रही थी।"

उसे याद था कि उसने भी हल्का ही भोजन किया था, परन्तु इस समय उसे किसी भी चीज का स्वाद अच्छा नही लग रहा था। भोजन का विचार भी उसे बुरा लगा। उसने दूध का प्याला लिया और अपने हाथो को सम्हालता हुआ डाक्टर के पास ले गया। डाक्टर ने इसे लिया और पैनी के पास बिस्तर पर बैठकर बोला, "बेटा! तुम इनका सिर उठाओ, मैं इन्हे चम्मच से दूध पिलाऊँगा।"

तकिए पर पडा पैनी का सिर भारी था। जोडी की बाँहे उठाने के जोर से दर्द करने लगी। उसके पिता की साँस भारी चल रही थी, वैसी ही जैसे फौरेस्टर लोगो की शराब पीने की दशा मे चलती थी। उसके चेहरे का रग पलट चुका था। हरे रग का चेहरा पिलपिला-सा हो गया था, जैसे वह मेढक के पेट जैसा बन गया हो। पहले-पहल उसके दाँतो ने चमचे के घुसने का विरोध किया।

डाक्टर बोला, "इससे पहले कि मैं फौरेस्टरो को बुलाऊँ, तुम अपना मुँह खोल लो।"

उसके सूजे हुए होठ अलग हो गए। पैनी ने दूध निगल लिया। आधा प्याला पीते ही उसने अपना सिर पलट लिया।

डाक्टर बोला, "ठीक है। पर अब अगर तुमने इसे निकाला, तो फिर मैं और ज्यादा पिलाऊँगा।"

पैनी को पसीना आने लगा।

डाक्टर बोला, "बहुत अच्छा। पसीना आना जहर उतरने की दृष्टि से अच्छा लक्षण है। हे भगवान्! अगर कही हम सबके पास ही शराब समाप्त न हो गई होती, तो मैं तुम्हे और अधिक पसीना ला देता।"

जोडी की माँ कमरे मे चाय के दो प्याले और कुछ बिस्कुट लेकर आई। डाक्टर ने अपनी चाय ली और घुटनो पर रखकर सम्हाली। उसने इसे स्वाद और घृणा के मिले-जुले भाव के साथ पिया।

वह बोला, "यह ठीक तो है, पर यह शराब नही है।"

जोडी ने उसे इतनी नम्रता से बोलते हुए कभी नही सुना था।

डाक्टर बडे शोक से बोला, "एक भला आदमी सांप से डसा गया है और सारे इलाके मे शराब किसी के पास भी नही है।"

मां ने बडे धीरे से पूछा, "जोडी, तुम्हे कुछ चाहिए?"

"नही, मुझे भूख नही है।"

उसका पेट भी उसके पिता के समान ही इस समय अरुचि से भरा हुआ था। उसे लगा कि जैसे वह जहर उसी की नसो मे घूम रहा हो और उसके दिल और आंतो पर बार-बार असर कर रहा हो।

डाक्टर बोला, "शुक्र करो, उसने उलटी नही की।"

पैनी बहुत गहरी नीद मे सो गया था। मां कुर्सी पर झूलती हुई चाय पीती रही। बोली, "परमात्मा छोटे-से-छोटे पक्षी का भी ध्यान रखता है। लगता है कि उसने हमारे परिवार की सहायता के लिए हाथ बढाया है।"

जोडी सामने के कमरे मे गया। बक और मिलव्हील वही फर्श पर हिरण की खाल बिछाकर लेटे हुए थे।

जोडी बोला, "मां और डाक्टर खा रहे हैं। तुम्हे भी भूख लगी होगी?"

बक बोला, "तुम्हारे आने से पहले हम खाकर ही निबटे थे। हमारा

खयाल न करो। हम यही पर सो जाएँगे और परिणाम की प्रतीक्षा करेगे।"

जोडी अपनी एडियो के बल बैठ गया। उसकी इच्छा थी कि उनसे कुछ बात करे। कुत्तो, बन्दूको और शिकार के विषय मे बात करना अच्छा था। और, उन सब बातो मे भी उसे मजा आता, जो कोई भी जीवित मनुष्य कर सकता। परन्तु, बक खर्राटे भरने लगा। जोडी अपने कमरे मे खिसक आया। डाक्टर भी सो रहा था। उसकी माँ ने बत्ती को सिरहाने से हटा कर एक ओर कर दिया और आरामकुर्सी पर लौट आई। उसकी कुर्सी के पाये कुछ देर चरमराए और फिर चुप हो गए। वह भी सो गई थी।

जोडी को लगा कि जैसे अपने पिता के साथ वह अकेला था। अब चौकी-दारी का काम उसका था। अगर वह जागता रहा और इस दुखी सोने वाले पिता के साथ उसकी साँस बचाने के लिए सघर्ष करता रहा और उसके लिए ही स्वय साँस लेने का यत्न करता रहा, तो वह इसे जीवित रखने मे अवश्य सफल हो जाएगा। उसने अपने पिता के समान ही एक गहरी साँस ली। इसने उसे चक्कर-से ला दिए। परन्तु अब उसका सिर हलका था, पर अपना पेट उसे खाली लगने लगा। उसे लगा कि खाने मे वह शायद कुछ ठीक अनुभव करे। परन्तु वह कुछ निगल नही सकता था। वह फर्श पर ही बैठ गया और उसने अपना सिर चारपाई के किनारे टिका दिया। वह दिन की पुरानी बातो पर विचार करने लगा, मानो वह सडक पर लौटकर जा रहा हो। अब पिता के पास बैठकर उसे अधिक सुरक्षा महसूस हुई। इतनी सुरक्षा उसे तूफानी रात मे भी नही अनुभव हुई थी। उसने अनुभव किया कि बहुत-सी बाते, जो पैनी के साथ रहने पर उसे भयकर नही लगती, अकेला रहने पर उसे डरा सकती है। इस समय उसे केवल फनियर साँप का ही भय सता रहा था।

उसे साँप का तिकोना सिर, उसके काटने की बिजली-जैसी तेजी और बाद मे ऐंठनो का दब जाना—आदि सब याद हो आया। उसका माँस जैसे कचोट उठा। उसे लगा, जैसे जगल मे वह फिर कभी चैन महसूस न कर सकेगा। उसे पिता का शान्तिपूर्वक साँप पर गोली चलाना और कुत्तो का डरना भी याद हो आया। फिर उसे हिरणी और उसके गर्म माँस की याद आई, जिसे पिता ने अपने घावो पर लगाया था। फिर उसे उस छोटे से

छौने की याद आई। अब वह सीधा होकर बैठ गया। उसे ध्यान आया कि छौना इस समय भी अकेला ही होगा, जैसे जंगल में वह अकेला था। जो घटना उसके पिता की जान ले सकती थी, उसने उस छौने की माता की जान ले ली। वह छौना भूखा और प्यासा ही उस बिजली, वर्षा और कड़क में माँ के शव के पास लेटा रहा होगा। शायद वह अब भी इन्तज़ार कर रहा होगा कि कब यह उठेगी और उसे गर्मी, आराम और भोजन देगी? यह याद आते ही जोडी ने अपना मुँह चादर में छिपा लिया और तेज़ी से रोने लगा। वह एक ओर सब प्रकार की मृत्यु के लिए घृणा से भर गया था, और दूसरी ओर उसे सबका अकेलापन अखरने लगा।



## 15

जोडी ने एक बहुत बुरा स्वप्न देखा। वह अपने पिता के साथ ही फनियर साँपो के जाल मे जा फँसा। वे उसके पाँवो पर घूम रहे थे। उनकी आवाजें सुनाई दे रही थी। अन्त मे यह सारा समूह जैसे एक साँप के रूप मे बदल गया। यह साँप बहुत बडा था और उसकी ओर उसके मुंह को निशाना बनाकर बढा आ रहा था। उसने डस लिया। जोडी ने चिल्लाने की कोशिश की, पर नाकाम रहा। वह अपने पिता को देखने लगा। उसका पिता वही साँप के नीचे आकाश की ओर आँखे उठाए पडा था। उसका शरीर भालू के शरीर जैसे सूज गया था। वह मर चुका था। अब जोडी साँप से हटकर दर्द-भरे कदम उठाता हुआ पीछे हटा। परन्तु उसके पाँव जैसे जम गए थे। साँप एकदम ही छिप गया। अब जैसे वह एक हवादार स्थान पर अकेला खडा हो और हिरणी का वह छौना उसके हाथ मे हो। पैनी मर चुका था। दिल तोड देने वाली एक दुखभरी भावना उस पर सवार हो गई। वह रोता हुआ जागा।

वह फर्श पर बैठ गया। दिन का प्रकाश खेतो के ऊपर पडना शुरू हो गया था। चीड के पेड़ो के परे पीला प्रकाश दीखने लगा था। कमरा कुछ हल्के प्रकाश से भर रहा था। एक क्षण के लिए उसे अनुभव हुआ कि जैसे अब भी वह छौना उसके पास हो। तब उसे याद आया। उसने अपने पिता को देखा और अपने पांवो को अच्छी तरह जांचा।

पैनी अब कुछ सरलता से सांस ले रहा था। उसका चेहरा अब भी सूजा हुआ था और उसे अब भी बुखार था। परन्तु जब उसे एक बार मक्खियो ने काटा था, तब की अपेक्षा अब उसे सूजन कम थी। मां अब भी अपनी आरामकुर्सी पर सिर पीछे किए सो रही थी। डाक्टर बिस्तरे के पांयते पर ही लेट गया था।

जोडी ने धीमे से डाक्टर को पुकारा। कुछ खीजते हुए डाक्टर ने सिर उठाया और बोला, "क्या बात है ? क्या है ?"

"डाक्टर ! पिताजी की ओर देखिए।"

डाक्टर उठा और एक कोहनी के बल टिक गया। उसने पलक झपकाई और हाथ से उन्हे मला। वह बैठ गया और पैनी पर झुककर बोला, "हे भगवान् ! यह तो ठीक हो रहा है।"

मां सोते से उठकर पूछ बैठी, "हैं, क्या ?"

अब वह सीधी बैठ गई थी। उसने पूछा, "क्या वह मर गया ?"

"नही, अब तो वह बात बहुत दूर की हो गई।"

वह फूट-फूटकर रोने लगी।

डाक्टर ने कहा, "ऐसा लगता है, जैसे तुम बहुत दुखी हो गई हो।"

वह बोली, "तुम क्या जानो, अगर वह न रहता तो हम पर क्या बीतती ?"

जोडी ने उसे कभी इतने प्यार से बोलते न सुना था।

डाक्टर बोला, "क्यो ? जोडी को देखो। तुम्हारे पास यह जो दूसरा आदमी तैयार बैठा है। यह हल चलाने, फसल काटने और शिकार खेलने के लिए काफी है।"

वह बोली, "जोडी तो ठीक है। पर अभी तो यह बच्चा ही है। इसका ध्यान अभी खेलने-कूदने मे ही लगा रहता है।"

बात सच थी। जोडी का सिर लटक गया।

वह बोली, "और इसके पिता ही इसे हौसला देते है।"

डाक्टर बोला, "बेटा! खुश रहो! तुम्हे पिता से उत्साह मिलता है। हम मे से बहुतो को यह नसीब नही होता। अच्छा श्रीमतीजी, अब जरा थोडा दूध और ला दे, ताकि इसके जागने के पहले ही इसे कुछ पिला दे।"

जोडी ने उत्सुकता मे कहा, "माँ, मैं दूध दुहकर लाता हूं।"

वह बडे सन्तोष के साथ बोली, ' हाँ, समय पर ले आना।"

वह सामने के कमरे से होकर निकला। बक नीद मे जागता हुआ अपने सिर को मसलता हुआ बैठा था। मिलव्हील अब भी सो रहा था।

जोडी बोला, "डाक्टर का कहना है कि पिताजी बच गए है।"

"बुरा हो मेरा! मै तो उसे दफनाने मे सहायता करने के लिए जागा था।"

जोडी किनारे-किनारे होता हुआ दीवार पर गया और वहाँ से दूध की बाल्टी उतार ली। उसे बाल्टी जैसा ही हल्कापन अपने मे भी अनुभव हुआ। उसे लगा कि जैसे वह इतना हल्का हो गया है कि अपनी बाँहो को पखो की तरह फैलाकर तैर सकता है। अभी सुबह की लाली फूट ही रही थी। सामने के वृक्ष पर हँसी की आवाज़ वाला पक्षी अपनी पतली और सुरीली आवाज मे गा उठा। उधर पालतू मुर्गे ने लम्बी बाँग दी। यही वह समय था, जब पैनी जागा करता था और जोडी को सोते रहने देता था। सुबह की चुप्पी छा रही थी। चीड की चोटियो पर हल्की-सी हवा की फरफराहट सुनाई दे रही थी। उगते ही सूर्य ने अपनी लम्बी अगुलियाँ खेतो पर फैला दी थी। उसने ज्यो ही पशुओ की जगह का दरवाजा खोला कि चीडो पर से कुछ कबूतर अपने पख फडफडाते हुए उड गए। उसने उन्हे पीछे से आवाज लगाई।

गाय उसकी आवाज़ सुनते ही झुक गई। वह उसके लिए चारा लेने के लिए ऊपर चढ गया। वह सोचने लगा कि इतने थोड़े से चारे के बदले यह बेचारी चुपचाप ही दूध देने को तैयार हो गई है। वह भूखी होने से चारा चबाती रही। उसने अपनी पिछली टाँग एक बार खतरे के लिए उठाई। परन्तु यह जोडी की गलती के कारण हुआ। तब उसने दो स्तन तो अच्छी

तरह दुहे और बाकी दो बछडे के लिए छोड़ दिए। इतना दूध नही निकला, जितना उसका पिता निकाल लेता था। उसने निश्चय किया कि वह स्वय दूध नही पीएगा, ताकि उसका पिता ठीक होने से पहले सारा का सारा दूध पी सके।

बछडा उन भरे हुए स्तनो पर टक्कर मारकर उन्हे ज़ोर-ज़ोर से चूसने लगा। अब यह काफी बडा हो चुका था। इसे देखकर जोडी को फिर से उस हिरणी के छौने का ध्यान हो आया। फिर एक भारी-सा बोझ उसके दिल पर छा गया। आज वह बेचारा भूख के मारे व्याकुल होगा। उसे अचरज हुआ कि कही वह मरी हुई हिरणी के स्तनो को ही चूसने की कोशिश न करे। हिरणी का खुला मॉस भेडियो को बुलावा देगा। हो सकता है कि उनकी निगाह इस छौने पर भी पड जाय और वह इसे तार तार करके फाड दें। सुबह की उसकी खुशी अब फिर दुख मे बदल गई। पिता के अच्छे होने से हटकर, उसका दिमाग छौने की ओर लग गया और उसे चैन नही मिल पाई।

उसकी माँ ने दूध की बाल्टी ली और कमी पर कुछ न बोली। दूध को उसने गर्म किया और प्याला भरकर बीमार पति के पास आई। जोडी भी पीछे-पीछे आया। पैनी जग रहा था। कमजोरी के साथ वह मुसकराया।

बहुत भारी आवाज़ मे वह बोला, "बेचारी मौत को मेरे लिए इन्तज़ार करनी पडेगी।"

डाक्टर बोला, "लगता है तुम भी फनियर साँपो के सम्बन्धी हो। मैं नही जानता कि शराब के बिना तुम कैसे बच गए।"

पैनी धीमे-धीमे बोला, "क्यो, डाक्टर! मैं खुद जो साँपो का राजा हूँ। तुम जानते हो कि साँप कभी भी अपने राजा को नही मार सकता।"

बक और मिलव्हील भी कमरे मे आ गए। वे हँसने लगे।

बक बोला, "तुम अच्छे तो नही लगते, पैनी! पर बच जरूर गए हो।"

डाक्टर ने दूध पैनी के होठो से लगा दिया और वह इसे तुरन्त पी गया।

डाक्टर बोला, "तुम्हे बचाने मे मेरा अधिक हाथ नही है। सच तो यह है कि अभी तुम्हारा मरने का समय ही नही आया है।"

पैनी ने अपनी आँखें बन्द करते हुए कहा, "अब मैं एक हफ्ता सो सकता हूँ।"

डाक्टर बोला, "यही तो मै चाहता हूँ। इससे अधिक मैं क्या कर सकता हूँ।"

खडे होकर उसने अपनी टाँगे फैलाई।

माँ बोली, "ये तो सोते रहेंगे, खेती कौन करेगा ?"

बक बोला, "क्या-क्या काम है, जो करना है ?"

"अधिकतर मक्की है, उसकी गोडाई करनी है। आलू हैं, उनकी भी निलाई करनी है। पर निलाई का काम जोडी भी कर सकता है, अगर वह चाहे।"

"मै करूँगा, माँ !"

बक बोला, "मै रुकूँगा। मक्की आदि का सारा काम मैं करूँगा।"

वह उत्तेजित-सी हो गई। कठोर-सी बनकर बोली, "मैं तुम्हारी कृपा नही चाहती।"

"रहने दो। अरे, कोई हम सारे के सारे उठकर रहने के लिए यहाँ तो आ नही जाएँगे ! मैं तो एक बहुत नाचीज़ आदमी हूँ। क्या मैं भी नही रह सकता ?"

वह नम्र बनकर बोली, "निश्चय ही मैं कृतज्ञ हूँ। अगर मक्की ठीक न हुई, तो हम सचमुच ऐसे ही मर जाएँगे, वैसे ही जैसे सांप के काटने सें मरते हैं।"

डाक्टर बोला, "यह बात मैंने अपनी पत्नी के मरने के बाद से पहली बार सबसे अधिक नम्र रूप मे सुनी है। मुझे खुशी होगी कि अगर जाने से पहले मैं नाश्ता कर लूँ।"

वह रसोई मे जाकर काम मे लग गई। जोडी भी आग जलाने मे लग गया।

वह बोली, "मैंने कभी नही सोचा था कि किसी फौरेस्टर की कृपा लूँगी।"

"बक पूरा फौरेस्टर नही है, माँ ! वह मित्र है।"

"हाँ, लगता तो ऐसा ही है।"

उसने कॉफी का वर्तन पानी से भरा और पिसी हुई ताजा कॉफी उसमें डाल दी। बोली, "जाओ, धुआँघर मे जाकर थोडा सूअर का मांस ले आओ। मैं यो ही हार न मानूंगी।"

वह बडे अभिमान से ले आया, और मां ने उसे मांस काटने दिया।

वह बोला, "मां, पिताजी ने एक हिरणी मारी थी और उसका जिगर ज़हर चूसने के लिए प्रयोग किया था। उन्होंने अपना खून वहाया और उस पर जिगर रख दिया।"

"तुम उसी मे से पीठ पीछे का मांस ले आते।"

"परन्तु उस समय तो यह सब सोचने का समय ही नही था।"

"यह भी ठीक है।"

"मां, उस हिरणी के एक छौंना भी था।"

"हां, बहुतो के होते हैं।"

"पर यह बहुत छोटा था। लगता है अभी पैदा ही हुआ था।"

"खैर, उससे क्या? जाओ, मेज ठीक करो। मुरब्बा लगा दो। यह मक्खन अब भी ठीक ही है। जाओ, इसे भी लगा दो।"

वह मक्की का हलवा बना रही थी। चर्बी बर्तन मे पिघलने लगी थी। उसे हलवे मे डाल दिया। उधर सूअर की कमर का मांस भी तड़कने लगा था। उसने सब टुकडो को फैला दिया, ताकि वे सभी ठीक से पक सकें। वह सोचने लगी कि उस सबसे बक और मिलव्हील का पेट भर भी सकेगा या नही? क्योंकि उन्हे अपने परिवार के अनुसार बहुत अधिक खाने की आदत पडी हुई है।

वह बोला, "मां, मांस का शोरवा काफी सारा बना लेना।"

"अगर तुम अपना दूध न पिओ तो फिर मैं दूध-मिला शोरवा बनाऊंगी।"

यह बात कोई बडी थी नही। वह बोला, "हम कोई सूअर भी मार सकते है।"

"मैंने सोचा था, पर वे सभी अभी बहुत छोटे हैं।"

उसने हलवे को पटका। कॉफी उबलने लगी थी।

वह बोला, "मैं आज सवेरे कुछ कबूतर या गिलहरियाँ मार सकता हूँ।"

"बात तुमने ठीक समय पर सोची। जाओ, सबको अपने हाथ धोकर मेज़ पर बैठने के लिए कहो।"

उसने सबको बुलाया। वे सब हाथ धोने के लिए नल पर गए और अपने हाथ-मुँह आदि को पानी से धोने लगे। उसने उन्हे साफ तौलिया दिया।

डाक्टर बोला, "यह अच्छी बात है कि जब मैं ठीक होता हूँ, तब मैं बहुत अधिक भूखा नही होता।"

मिलव्हील बोला, "शराब स्वय एक भोजन है। मैं उस पर ज़िन्दा रह सकता हूँ।"

डाक्टर बोला, "पत्नी को मरे बीस साल हुए। तब से मुझे तो शराब पर ही रहना पड रहा है।"

जोडी को आज के नाश्ते पर गर्व था। फौरेस्टरो जैसे बहुत-सी चीजे तो नही थी, पर तब भी हर चीज़ अधिक थी। सभी पुरुष चाव से खा रहे थे। खाकर सबने अपनी तश्तरियाँ सरका दी और पाइप लगा लिए।

मिलव्हील बोला, "लगता है जैसे इतवार हो। नही क्या?"

माँ बोली, "बीमारी आने पर हमेशा ही इतवार हो जाता है। सम्बन्धी चारो ओर बैठे रहते हैं और कोई भी आदमी काम पर नही जा पाता।"

जोडी ने अपनी माँ को इतना मित्रतापूर्ण कभी न देखा था। जब तक सबने खा न लिया, तब तक वह प्रतीक्षा करती रही। उसे डर था कि सामान थोडा न पड जाए। अब वह आराम से खाने लगी। उधर पुरुष इधर-उधर की बाते करने लगे। जोडी का ध्यान फिर हिरण के छौने की ओर चला गया। वह उसे अपने दिमाग से निकाल नही पा रहा था। वह जैसे उसके पीछे ही हो, उसके स्वप्नो मे या उसकी बाँहो मे हो। वह मेज़ पर से उठा और पिता के पास चला गया। पैनी आराम से लेटा हुआ था। उसकी आँखे साफ और खुली हुई थी। पर पुतलियाँ अब भी काली और फैली हुई थी।

जोडी बोला, "कैसा लग रहा है आपको?"

"बहुत अच्छा, बेटे! शैतान मौत कही और सेंध लगाने चली गई है। पर क्या सब खतम होने वाला ही नही था?"

"हाँ, मैं भी यही सोचता हूँ।"

पैनी बोला, "मुझे तुम पर अभिमान है। तुमने अपना दिमाग शान्त रखा और समय के अनुसार सब काम किया।"

"पिताजी!"

"हाँ, बेटे!"

"आपको याद है कि हिरणी के एक छौना भी था।"

"हाँ, मैं उन्हे कभी नही भूल सकता। उस हिरणी ने ही मुझे बचाया था।"

"पिताजी! वह छौना अब तक वही होगा। वह भूखा और डरा हुआ होगा।"

"मेरा भी यही अनुमान है।"

"पिताजी! अब मैं काफी बडा हो गया हूँ और मुझे दूध नही चाहिए। कैसा रहेगा यदि उस छौने को जगल मे जाकर ढूंढने की कोशिश करूँ?"

"और उसे यहां उठा लाओ?"

"और उसे पालूं।"

पैनी छत की ओर देखता हुआ शान्त पडा रहा।

बोला, "बेटे! तुमने मुझे फँसा लिया।"

"नही, पिताजी! उसे पालना अधिक कठिन नही है। बहुत जल्दी ही बडा होकर वह अपना भोजन—पत्ते और फूल आदि—स्वयं ढूंढ लिया करेगा।"

"अजीब बात है। मैं जितने भी बच्चो को जानता हूँ, उनमे से तुम किसी से भी बहुत दूर के लगते हो।"

"हमने उसकी मां को छीना, और वह बुरा नही था।"

"हां, यह ठीक तो नही लगता कि उसे भूखा मरने छोड दिया जाए। बेटे! मेरे अन्दर हिम्मत नही है कि तुम्हे ना कर सकूं। मुझे तो यह दिन देखने की भी आशा न थी।"

"तो क्या मैं मिलव्हील के साथ घोडे पर जाकर उसे खोजने का यत्न करूं?"

"जाओ, अपनी मां को कह दो कि मैंने तुम्हे जाने के लिए कहा है।"

वह मेज तक फिर सरक आया और बैठ गया। उसकी मां [illegible]

लिए कॉफी परोस रही थी।

वह बोला, "माँ! पिताजी का कहना है कि मै लौटकर उस छौने को लाने की कोशिश करूँ।"

माँ का हाथ वैसे ही रुक गया। पूछ बैठी, "कौनसा छौना?"

"वही! जिस हिरणी को हमने मारा था, उसका बच्चा! हमने उस हिरणी का जिगर पिताजी के ज़हर को दूर करने के लिए लिया था न!"

उसने गहरी साँस लेकर कहा, "ज़रा कृपा करो।"

'पर, पिताजी का कहना है कि उसे भूखो मरने देना उचित नही।"

डाक्टर बोल पडा "श्रीमतीजी, यह बात ठीक है। कभी भी ससार मे कोई भी चीज मुफ्त मे नही आती। बेटा और बाप दोनो ठीक कहते है।"

मिलव्हील बोला, "वह मेरे साथ घोडे पर चलेगा। मैं ढूंढने मे सहायता दूँगा।"

उसने बडी निराशा मे बर्तन नीचे रख दिया और बोली, "अच्छा, फिर तुम ही अपने हिस्से का दूध उसे दे देना, और तो हमारे पास कुछ है नही।"

"यही तो मैं कहना चाहता था। कुछ ही समय मे वह कुछ भी न चाहेगा।"

सभी आदमी मेज़ से उठ गए।

डाक्टर बोला, "मैं तो अब इनकी सेहत अच्छी ही होती देखता हूँ। फिर भी अगर कोई ऐसी-वैसी बात हो जाय तो, श्रीमती जी! आप जानती ही है मुझे कहाँ से बुलवाना है।"

"डाक्टर, आप सचमुच बहुत अच्छे है। हम अपनी जिन्दगी की लडाई मे उलझे हुए है। हमने कभी नही जाना कि लोग इतने उदार भी हो सकते है।"

"चुप रहो! यह आदमी सबसे भला है। इसके लिए और लोग क्यो न भले होगे?"

बक बोला, "माँ, तुम्हारा क्या विचार है? क्या यह घोडा हल मे मेरे काम आ जाएगा? मुझे तो लगता है कि कही मैं इसे पीस न डालूँ?"

डाक्टर बोला, "पँनी को जितना दूध पिला सको, पिलाते रहो। तब इसे हरी सब्ज़ी और ताजा मांस, अगर मिल सके तो, देना।"

बक ने कहा, "मैं और जोडी इस बात का ध्यान रखेंगे।"

मिलव्हील ने पुकारा, "आओ, जोडी! हम तो चढ़कर चलें।"

माँ ने उत्सुकता से पूछा, "तुम बहुत देर तो नही लगाओगे।"

जोडी बोला, "मैं दोपहर के खाने से पहले ही बहुत जल्द वापिस आऊँगा।"

वह बोली, "मेरे विचार मे अगर यह खाने की बात न हो तब तुम शायद कभी लौटो ही ना!"

बक और मिलव्हील हँस पडे। डाक्टर की निगाह मोतिया रग के रैकून की खाल वाले थैले पर जा पड़ी।

"क्या यह बहुत अच्छी चीज नही है? अपनी दवाइयाँ ले जाने के लिए मुझे ऐसा थैला पसन्द आता।"

जोडी के पास इससे पहले कभी कोई ऐसी चीज न रही थी, वह जिसे किसी को दे सके। उसने थैला खुशी से निकाला और डाक्टर के हाथ मे दे दिया।

बोला, "यह मेरा है। आप इसे ले लीजिए।"

"क्यो? मैं तुम्हे नही ठगना चाहता।"

वह फिर बोला, "पर यह मेरे किसी काम का नहीं। मैं दूसरा बना लूँगा।"

डाक्टर बोला, "अच्छा, धन्यवाद! जब तक भी मैं वहीं जाऊँगा, मेरे मुख से तुम्हारे लिए धन्यवाद ही निकलेगा।"

जोडी को डाक्टर की खुशी से प्रसन्नता हुई। वे सब घोडो को पानी पिलाना और दाना खिलाने के लिए बाहर गए। बैक्स्टरो के भडार मे दाना कम ही था।

बक ने जोडी से कहा, "क्या तुम इतने थोडे पर ही गुजर नहीं कर रहे?"

डाक्टर बोला, "पैनी को अकेले ही काम करना पडता है। कभी यह बच्चा भी बडा होगा; और तब सब ठीक हो जाएगा।"

बक बोला, "बैक्स्टर लोगो के लिए कँचाई का कोई महत्व नहीं।"

मिलव्हील घोडे पर चढ गया और जोडी को उसने ऊपर खींच लिया। डाक्टर भी अपने घोडे पर चढा और दूसरी दिशा मे चलने लगा। जोडी ने

उसे हाथ हिलाकर विदाई दी। उसका हृदय हल्का था।

वह मिलव्हील से बोला, "क्या तुम्हारे खयाल मे छौना अब भी वही होगा ? उसे ढूंढने मे तुम मेरी सहायता करोगे ?"

"अगर वह जिन्दा होगा तो हम उसे ढूंढ निकालेंगे। पर तुम यह कैसे जानोगे कि यही वह है ?"

"उसके शरीर पर चित्तियाँ एक ही कतार मे थी। पिताजी का कहना है कि मादा छौने के चित्तियाँ ऐसी ही होती हैं।"

"यही बात इसके स्त्री होने की निशानी है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"स्त्रियो की कोई बात विश्वसनीय नही होती।"

मिलव्हील ने घोडे को एड लगाई और घोडा दौडने लगा।

"औरतो का मामला ही ऐसा होता है। अच्छा, तुम और तुम्हारे पिता हमारे और ओलिवर के बीच कैसे आ कूदे थे ?"

"बात यह थी कि ओलिवर पर बुरी मार पड रही थी। यह बात हमे अच्छी नही लगी कि तुम सब के-सब मिलकर अकेले उस बेचारे पर टूट पडो।"

"तुम ठीक हो। यह तो लेम और ओलिवर का मामला था। उन्हे ही लडना चाहिए था।"

"पर एक लडकी दो प्रेमियो से एक साथ कैसे प्रेम कर सकती है ?"

"तुम लडकियो का मामला नही समझ सकते।"

"मुझे ट्विंक वैदरबी से सख्त नफरत है।"

"मैं भी उसे देखना पसन्द नही करता। मुझे तो एक विधवा स्त्री का पता है। वह फोर्ट गेट पर रहती है और बहुत ही विश्वासपात्र है।"

मामला उलझा हुआ था। जोडी का ध्यान फिर से छौने पर चला गया। अब वे उजाड खेत के पार जा रहे थे।

वह बोला, "मिलव्हील, उत्तर की ओर मुड चलो। यही पर पिताजी को साँप ने काटा था और उन्होंने हिरणी को मारा था। यही मैंने उसे देखा था।"

"तुम दोनो इस सडक पर क्या कर रहे थे ?"

जोडी हिचकिचाया। बोला, "हम अपने सूअरों को ढूंढ रहे थे।"

"ओह, अपने सूअरों को ढूंढ रहे थे ? अच्छा, डरो मत, मुझे एक बात सूझी है। सूअर शाम तक तुम्हारे घर पहुंच जाएंगे।"

"माँ और पिताजी उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न होंगे।"

"मुझे रत्ती-भर भी अनुमान नहीं था कि तुम लोग इतने तंग होगे।"

"नहीं, हम तंग तो नहीं हैं। सब ठीक चल रहा है।"

"सचमुच तुम लोगों में बड़ा हौसला है। मुझे यही कहना पड़ता है।"

"तुम्हारा क्या अन्दाज है ? पिताजी नहीं मरेंगे न ?"

"नहीं, वह नहीं मरेगा। उसका ढांचा फौलाद का बना है।"

जोडी बोला, "मुझे फोडरविंग के बारे में बताओ। क्या वह सचमुच बहुत बीमार है ? या लेम नहीं चाहता था कि मैं उसे देख सकूं ?"

"वह सचमुच बहुत बीमार है। वह हम जैसा नहीं है। सचमुच वह किसी साधारण आदमी जैसा भी नहीं है। लगता है वह पानी की जगह हवा पीकर जिन्दा रहता है और मांस की जगह जैसे वह जंगली जानवरों का भोजन खाता है।"

"वह ऐसी चीजें देखता है, जो हैं नहीं। है न यह बात ? जैसे स्पेनी आदि।"

"वह देखता जरूर है, पर मजा तो यही है कि वह तुम्हें इस तरह बताएगा जैसे वह सब उसने सचमुच देखा हो।"

"तुम्हारा अन्दाज है कि लेम मुझे उसे देखने के लिए आने देगा ?"

"मैं अभी यह नहीं कह सकता। मैं तुम्हें सन्देशा भेज दूंगा। जब भी लेम वहां न होगा, तुम आ जाना। समझे ?"

"मुझे फोडरविंग को देखने की बड़ी इच्छा है।"

"तुम उसे जरूर देखोगे। अब यह बताओ कि तुम उस छौने को देखने कहां जाना चाहते हो ? यह पगडण्डी बहुत घनी होती जा रही है।"

अचानक ही जोडी मिलव्हील को साथ ले जाने में कतराने लगा। कहीं छौना मर गया हो या मिल न सके, तब वह उसकी निराशा देखना नहीं चाहेगा। और, अगर कहीं छौना वहीं हुआ, तो वह मित्र इतना प्यारा और इतना अन्दरूनी होगा कि वह उसे बांटना नहीं चाहेगा।

वह बोला, "अब यह बहुत दूर तो है नही। पर यहाँ से आगे रास्ता इतना कठिन है कि घोडा चल नही सकेगा। मैं अकेला ही पैदल चला जाऊँगा।"

"पर तुम्हे अकेला छोडने का मुझे साहस नही होता। कही तुम भी न खो जाओ। या तुम्हे भी साँप न काट खाए ?"

"मै खुद ध्यान रखूँगा। मुझे उसे ढूँढने मे कुछ अधिक देर लग जाएगी। कही वह इधर-उधर न भटक गया हो। मुझे तुम यही छोड दो।"

"अच्छा ठीक है, पर तुम बहुत आराम से जाना, इन छोटी खजूरियो मे ढूँढते जाना। यह साँपो का स्वर्ग है। तुम्हे यहाँ दिशाओ का पता है न ?"

"हाँ, क्यो नही ? इधर-उधर—! मुझे उन ऊँचे चीडो की पहचान है।"

"ठीक है, अगर कोई बात गलत हो जाय तो वक या तुम मुझे खबर दे देना। अच्छा, तब तक के लिए विदा।"

"अच्छा विदा, मिलव्हील ! मै तुम्हारा अहसान मानता हूँ।"

वह उसके पीछे हाथ हिलाता रहा। उसे खुरो की आवाज़ मिट जाने की प्रतीक्षा थी। तब वह दाहिनी ओर मुडा। जगल मे चारो ओर शान्ति थी। केवल उसमे शाखाओ का टकराना उस चुप्पी मे शोर पैदा कर रहा था। वह बहुत अधिक सावधान और उत्सुक था। उसने एक शाखा तोडी। शाखाओ को किनारे करता वह आगे बढा। यहाँ राह कुछ घनी थी और ज़मीन नही दीख रही थी।

साँप मौका मिलते ही रास्ते से हट जाते थे। पैनी इसी घने जगल में बहुत आगे तक बढ गया था। उसे शक हुआ कि कहीं वह रास्ता तो नहीं भूल गया। तभी उसके सामने से एक गिद्ध उठा और हवा मे उड गया। अब वह सनावरो के नीचे के मैदान में आ गया था। गिद्ध हिरणी के शव के चारो ओर एक घेरा बाँधे बैठे थे। उन्होने अपनी लम्बी और पतली गर्दनें मोड़ी और उसकी ओर देखा। उसने अपने हाथ की शाख उन पर फेंकी, और वे पास के ही एक पेड पर उडकर बैठ गए। उनके डैने आवाज़ के साथ उडे, जैसे किसी जग खाए नल के हत्थे से आवाज उठी हो। मिट्टी पर बिलावो के पाँव के निशान थे। वह नही जान सका कि वनबिलाव

के निशान थे या चीते के ? परन्तु बड़ी बिल्लियों ने कुछ और नए शिकार मार लिए थे और वे इस हिरणी को पक्षियों के लिए छोड़ गई थीं। उसने अपने मन से पूछा कि कहीं छौने के मधुर मांस की तो गन्ध नहीं आ रही ?

वह शव के पास होकर आगे बढ़ गया। जहाँ उसने छौने को देखा था, वहाँ घास हटाकर उसने फिर खोजा। उसे यह सम्भव न दिखाई दिया कि सब बात अभी कल की ही है। छौना वहाँ नहीं था। अब वह खेत में चारों ओर चक्कर काटने लगा। वहाँ न कोई आवाज़ थी और न कोई निशान। केवल गिद्ध अपने पंखों को फड़फड़ा रहे थे, क्योंकि वे अपने खाने पर फिर से लौटना चाहते थे। वह फिर वहीं आया, जहाँ से छौना बाहर आया था और अपने चारों हाथों-पाँवों के बल गिरकर छोटे-छोटे खुरों के निशान ढूँढने लगा। रात की बारिश ने बिल्ली और गिद्धों के निशान को छोड़कर बाकी सभी निशान मिटा दिए थे। परन्तु, हिरनियों के निशान इस दिशा में नहीं थे। आखिर उसे एक छोटे ताड़ के पेड़ के नीचे कुछ निशान दिखाई दिए। ये निशान जैसे किसी छोटे कबूतर के हों। वह ताड़ से आगे सरक आया।

यहाँ उसके सामने अचानक ही कुछ हलचल हुई और वह चौंककर पीछे हट गया। यहाँ छौना ही था। इसने अपना सिर उसकी ओर उठाया और फिर बड़ी बड़ी आँखों में आश्चर्य लिए उसने अपना सिर फेर लिया। उसकी चमकदार आँखों ने जोडी को अन्दर से हिला दिया। वह काँप रहा था। इसने दौड़ने या उठने का कोई प्रयत्न नहीं किया। जोडी स्वयं अपने सपने पर विश्वास नहीं कर सका। वह फुसफुसाया, 'यह मैं हूँ।"

छौने ने उसे सूँघते हुए अपनी नाक उठाई। जोडी ने अपना हाथ बढ़ाया और उसकी मुलायम गर्दन पर रख दिया। उसके छूने-मात्र ने जोडी को पागल बना दिया। वह चारों पाँवों पर बढ़ता रहा, जब तक वह उसके बिल्कुल पास न पहुँच गया। तब उसने अपनी बाँह उसके शरीर के चारों ओर डाल दी। छौने में जैसे एक कँपकँपी दौड़ गई, पर वह हिला-डुला नहीं। जोडी ने उसके दोनों पासों को इस तरह थपथपाया कि जैसे वह मिट्टी का खिलौना हो, जिसके टूटने का खतरा हो। उसकी खाल सफ़ेद रेशम की खाल से भी ज्यादा कोमल थी। वह पतला और साफ था। इसमें से

घास की मधुर गन्ध आ रही थी। जोडी ने धीमे से इसे जमीन से उठा लिया। जूलिया से भी यह हलका था। इसकी टांगे लटकती रही। ये बहुत लम्बी थी। जोडी को इसे अधिक-से-अधिक ऊँचा उठाना पडा।

जोडी को डर था कि यह कही अपनी माँ को देखकर उछलकर भाग न जाय। वह उस मैदान का कोना काटकर घने जगल मे से होता हुआ निकलने लगा। इस बोझ को लेकर उसमे से निकलना कठिन था। इसके पाँव झाडियो मे अटक जाते थे और वह खुद स्वतन्त्रता से अपने पाँव नही उठा पाता था। उसने इसका चेहरा ढँकना चाहा, ताकि वेले आदि इसे न चुभें। उसकी चाल वढने के साथ-साथ इसका सिर भी उछलता था। जोडी का दिल इसके चुपचाप अपनापन दिखाने पर उछलने लगा। वह पगडण्डी पर पहुंचकर अधिक-से-अधिक तेज चलने लगा और तब वह घर को मुडने वाली सडक पर पहुँच गया। यहाँ वह एक क्षण रुका और उसने छौने को लडखडाते पाँवो पर खडा किया। यह काँपने लगा। उसकी ओर देखकर यह मिमियाया।

प्रसन्न होकर जोडी बोला, "जरा मुझे साँस लेने दो। मैं तुम्हे ले चलूंगा।"

उसे याद था, उसके पिता ने वताया था कि छौना अपने पहले-पहल उठाने वाले के पीछे चलने लगता है। वह धीरे-धीरे वढने लगा, पर छौना उसकी ओर ताककर रह गया। वह लौट आया और इसे थपथपाकर फिर आगे वढने लगा। छौने ने कुछ लडखडाते कदम उसकी ओर उठाए और वडी करुणा-भरी आवाज मे चिल्लाया। यह उसके पीछे चलना चाहता था। यह उसका अपना था और उसी का था। अब जोडी का दिल खुशी से हल्का हो गया। उसने इसके साथ खेलना चाहा और इसके साथ दौडना और उछलना-कूदना चाहा। उसने चाहा कि वह इसे पास आने को कहे। पर वह इसे चौकाना भी न चाहता था। इसलिए उसने इसे फिर से उठा लिया और अपने सामने दोनो बाँहो मे उठाकर ऊँचा किया। उसे लगा कि वह अब विना किसी तकलीफ के चल सकता है। उसे अपने मे फॉरेस्टरो जैसी ताकत अनुभव हुई।

उसकी बाँहें दर्द करने लगी और वह फिर रुकने पर मजबूर हुआ।

अब जब वह चला तो छौना उसके पीछे चलने लगा। उसने कुछ देर इसे इसी तरह चलने दिया, पर फिर इसे बाँहों में उठा लिया। अब घर कुछ अधिक दूर था भी नहीं। अगर यूँ भी उसे अब सारे दिन, सारी रात इसे उठाकर चलना पड़ता और इसे पीछे चलता हुआ देखना मिलता तो वह चलता रह सकता था। वह पसीने से तर हो गया। परन्तु जेठ की हवा के एक ठण्डे झोंके ने उसे ठण्डक पहुँचाई। आकाश एक नीले प्याले में रखे सोते के पानी की भाँति निर्मल था। वह अब खेतों के पास पहुँच चुका था। वे रात की बारिश के बाद ताज़ा और हरे-भरे दीख रहे थे। उसे घोड़े के साथ-साथ बक हल चलाता दिखाई दे रहा था। वह मकई के खेतों में था। जोडी को लगा कि जैसे बक ने घोड़े को उसकी सुस्ती पर कोसा हो। दरवाज़े पर आकर उसने चिटकनी को खोलने की कोशिश की और अन्त में उसने छौने को नीचे रखकर उसे खोल दिया। उसे लगा कि यह घर में साथ घुस आएगा और पैनी के सोने के कमरे तक उसके पीछे पीछे पहुँच जाएगा। परन्तु सीढ़ियों पर यह छौना रुक गया और उन्हें न चढ़ सका। उसने इसे उठा लिया और अपने पिता के पास पहुँचा। उसका पिता आँखें बन्द किए पड़ा था।

जोडी बोला, "पिताजी, इसे देखिए।"

पैनी ने अपना सिर पलटा, जोडी वहीं खड़ा था। उसकी बगल में छौना था। पैनी को लगा कि जैसे छौने की भाँति उसके बच्चे की भी आँखें उजली हो आई थीं। उसके चेहरे पर इन दोनों को साथ-साथ देखकर प्रसन्नता छा गई।

वह बोला, "मुझे खुशी है कि तुमने इसे पा लिया।"

"पिताजी, यह मेरे से डरा नहीं। यह ठीक वहीं लेटा हुआ था, जहाँ इसकी माँ ने इसे लिटाया था।"

"हिरनी बचपन से ही इन्हें इस प्रकार की बात सिखाती रही है; कई बार ये इतने चुप पड़े होते हैं कि तुम इन पर भले ही पाँव रखकर चढ़ जाओ।"

"पिताजी, मैंने इसे उठाया और जब मैंने इसे नीचे रखा तो यह मेरे पीछे चलने लगा। बिल्कुल वैसे ही जैसे कि कोई कुत्ता चलता है।"

"कितनी अच्छी बात है! अच्छा, इसे और ठीक तरह दिखाओ।"

जोडी ने छौने को ऊँचा उठाया। पैनी ने अपना हाथ फैलाया और इसकी नाक को छुआ। यह मिमियाया और उसकी अगुलियो तक बडी आशा से बढा।

पैनी बोला, "छोटे बच्चे, मुझे दुख है कि मैंने तुम्हारी माँ छीन ली।"

"आपका अनुमान है कि इसे उसकी कमी खल रही है।"

"नही, इसे तो अपने भोजन की कमी खल रही है। और यह इस बात को जानता है। इसे कुछ और भी कमी खल रही है, परन्तु यह नही जानता कि वह कमी क्या है?"

माँ भी कमरे मे आ गई। जोडी बोला, "देखो, माँ, मैंने इसे पा लिया।"

वह बोली, "देख रही हूँ।"

"माँ, क्या यह बहुत अच्छा नही है? कतारो मे बनी इसकी चित्तियाँ देखो। इसकी ये बडी आँखे देखो, क्या ये सुन्दर नही है?"

"पर यह बहुत छोटा है। यह तो काफी दिनो तक दूध पीएगा। अगर मुझे पता होता कि यह इतना छोटा है तो शायद मैं स्वीकृति न देती।"

पैनी बोला, "ओरी, मुझे तुमसे एक बात कहनी है और वह अभी कहे देता हूँ। इसके बाद मुझे इस विषय मे कुछ न सुनना मिले। इस छोटे से छौने का इस घर मे वही स्थान है जो जोडी का। यह इसका बेटा है। हम इसे दूध या भोजन के विषय मे बिना कुछ सोचे पालकर बढाएँगे। अगर मैंने कभी तुम्हे इस विषय मे झगडा करते सुना, तो तुम्हे मुझे उत्तर देना पडेगा। जैसे जूलिया मेरी कुतिया है, उसी प्रकार यह जोडी का छौना है।"

जोडी ने अपने पिता को माँ के साथ इतना सख्ती के साथ बोलते कभी नही सुना था। उसकी माँ के लिए यह आवाज़ परिचित ही रही होगी, क्योकि उसने अपना मुँह खोला और बन्द किया और अपनी पलकें झपकाईं।

वह बोली, "मैंने तो केवल इसके छोटा होने की बात कही थी।"

"ठीक है, बस बात इतनी ही है।" उसने फिर आँखे बन्द कर ली। "बोला, "अब अगर हरेक सन्तुष्ट है, तो कृपा करके मुझे आराम करने के लिए छोड दो। बोलने से मेरा दिल धडकने लगता है।"

जोडी बोला, "मैं इसका दूध बाँध दूँगा। माँ, तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं।"

वह चुप रही। जोडी रसोईघर में गया। छौना उसके पीछे लड़खड़ाता हुआ गया। रसोई की आलमारी में सवेरे के दूध का बर्तन पड़ा था। उस पर मलाई जम चुकी थी। उसने मलाई को एक अलग बर्तन में निकाल दिया और जो बूँदें नीचे गिर गईं उन्हें अपनी बाँह के कपड़े से पोंछ डाला। उसने सोचा कि यदि इस छौने के कारण माँ को कोई तकलीफ न हो तो वह इसका कम बुरा मनाएगी। उसने एक छोटे-से डिब्बे में दूध डाला और छौने के आगे बढ़ाया। दूध सूँघते ही वह इसे टक्कर मारने लगा। जोडी ने जैसे-तैसे फर्श पर गिरने से बचा लिया। वह अब छौने को आँगन में ले आया और फिर नए सिरे से पिलाने की कोशिश करने लगा। परन्तु उस डिब्बे में से वह छौना दूध न पी सका।

अब जोडी ने अपनी अँगुलियाँ दूध में भिगोईं और उन्हें छौने के कोमल मुँह तक ले गया। उसने बड़े चाव से उन्हें चाट लिया। ज्योंही उसने अपनी उँगलियाँ हटाईं, वह बड़ी तेजी से मिमियाने लगा और उसे टक्कर मारने लगा। उसने फिर अपनी अँगुलियाँ डुबोईं और अब ज्योंही छौना उन्हें चाटने लगा, उसने धीमे-धीमे उन्हें दूध तक झुका दिया। छौने ने फुफकारा और फिर दूध चूसना शुरू कर दिया। वह अपने खुर बड़ी अधीरता से पटकने लगा। जब तक उसने अपनी अँगुलियाँ दूध के नीचे रखीं, छौना खुश रहा। उसकी आँखें बन्द हो रहीं, जैसे सपना देख रहा हो। उसके हाथ पर इसकी जीभ का स्पर्श अत्यन्त आनन्द देने वाला था। इसकी छोटी-सी पूँछ आगे-पीछे उठ-गिर रही थी। झाग और आवाज के साथ ही दूध थोड़ी ही देर में समाप्त हो गया। छौना मिमियाने और सिर मारने लगा। इसकी यह हरकत बहुत प्रसन्नता देने वाली थी। जोडी की इच्छा हुई कि वह कुछ और दूध ले आए, पर पिता की कृपा होने पर भी उसे इतना आगे बढ़ना अच्छा न लगा। हिरनी की दूध की थैली नाप भर भी बछड़ी की थैली से बड़ी नहीं थी। निश्चय ही छौना उतना दूध पी चुका था, जितना वह माँ से पीता होगा। अब वह एकदम ही लेट गया, जैसे थक गया हो और तृप्त हो गया हो।

जोडी का ध्यान इसके सोने की जगह बनाने की ओर गया। घर मे सुलाने के लिए पूछना उसे उचित न जँचा। वह पिछली कोठरियो मे गया और मिट्टी पर एक कोना साफ़ कर लिया। सनावरो पर जाकर उसने कुछ स्पेनी काई इकट्ठी की और उसे लाकर उसका एक मोटा-सा बिछौना तैयार किया। पास ही एक मुर्गी का दडबा था। उसकी चमकदार मोतियो जैसी आँखें उसे सन्देह से देखने लगी। उसने अण्डा दिया और दरवाजे मे से चीखती हुई उड गई। उसका घोसला नया ही था। उसमे छः अण्डे पडे थे। जोडी ने उन्हे इकट्ठा किया और माँ के पास रसोई मे ले गया।

वह बोला, "माँ, इन कुछ अण्डो को पाकर तुम प्रसन्न होगी। ये फालतू हैं।"

"जब कोई खाने वाला फालतू हो तब फालतू चीज़ मिलनी अच्छी ही है।"

उसने माँ की इस टिप्पणी की परवाह नही की। बोला, "नया दडबा इस नए छौने के बिस्तर के बिलकुल पास ही है। वहाँ रहकर यह किसी को सताएगा नही।"

उसने कोई उत्तर नही दिया और जोडी बाहर वहाँ चला गया, जहाँ छौना शहतूत के पेड के नीचे लेटा हुआ था। उसने इसे उठाया और इसके नए बिस्तर पर अँधेरी कोठरी मे ले आया।

"अब से जो कुछ मैं बताता हूँ तुम्हे वही करना होगा, वैसे ही जैसे तुम माँ का कहना मानते। मैं तुम्हे यहाँ लेटने को कह रहा हूँ, जब तक मैं ही तुम्हे लेने दुबारा न आ जाऊँ।"

छौने ने अपनी आँखे झपकी। आराम मे आकर वह आवाज़ करने लगा और धीरे-धीरे उसने अपना सिर झुका दिया। जोडी पजो के बल चुपचाप कोठरी से बाहर आ गया। उसने सोचा, कोई भी इतना कहना नही मान सकता। वह लकडियो के ढेर की ओर गया और वहाँ से तेल भरी लकडी के कुछ छोटे टुकड़े इकट्ठे कर रसोई मे ले आया। वह मकान के पिछली ओर के सनावरो की भी कुछ लकडियाँ लेता आया। इन सबको उसने रसोई के डिब्बे मे इकट्ठा कर दिया।

वह बोला, "माँ, जिस तरह मैंने मलाई उतारी थी, वह ठीक था।"

"हाँ, ठीक था।"

वह बोला, "फौडरविंग बीमार है।"

"हूँ?"

"लेम मुझे देखने नही देता, केवल एक वही हम पर पागल है। उसका गुस्सा ओलिवर की प्रेमिका के कारण ही है।"

"उह!"

"मिलव्हील कहता था, वह मुझे पता देगा और तब मैं किसी समय जाकर फौडरविंग से मिल सकूँगा, जब लेम वहाँ न होगा।"

वह हँस पडी और बोली, "आज तो तुम बूढी औरतो जैसी बातें कर रहे हो।"

वह उसके पास से गुज़रती हुई भट्टी तक गई और जाते-जाते उसके सिर को हलके से छूती गई। वह बोली, "आज मुझे बहुत अच्छा अनुभव हो रहा है। मैंने कभी नही सोचा था कि तुम्हारे पिता आज का दिन देख पाएँगे।"

रसोई भी आज शान्ति से भरी हुई थी, जैसे सबका मन तृप्त हो। बक खेत मे से आता हुआ दरवाज़े पर से गुजरा और सडक पार कर पशुशाला मे दोपहरी के लिए घोडे को बाँधने चला गया।

जोडी बोला, "मुझे उसकी मदद करने के लिए जाना चाहिए।"

परन्तु वहाँ छौने के कारण वह गया। घर मे फैले सन्तोष ने उसे तृप्त कर दिया था। वह कोठरी तक गया ताकि अपने अधिकार को पूरा-पूरा जाँच सके। फिर जब वह बक के साथ वहाँ से लौटा, तो वह छौने की ही बाते कर रहा था। उसने बक को भी कोठरी मे पीछे-पीछे आने दिया।

वह बोला, "इसे डराना मत। वह सामने लेटा हुआ है।"

बक उसे उतना सन्तोष न दे सका, जितना पैनी ने दिया था। उसने फौडरविंग के सैंकडो ही पालतू जानवर आते-जाते देखे थे।

वह बोला, "यह बहुत जल्दी ही जगली बनकर दौड जाएगा," और तब वह पानी तक जाकर खाने से पहले अपने हाथ-पाँव धोने लगा।

जोडी के शरीर मे एक ठण्ड-सी दौड गई। बक तो उसकी माँ से भी

खराब निकला। इसने सारी प्रसन्नता ही नष्ट कर दी। वह थोडी देर छौने को थपथपाता रहा। छौने ने अपने नीद-भरे सिर को हिलाया और उसकी अगुलियाँ चाटने लगा। बक को इस अपनेपन का पता न था। अच्छा था इस बात को कोई भी न जान सके। जोडी ने छौने को वही छोडा और हाथ धोने के लिए पानी तक गया। छौने के स्पर्श ने उसके हाथो मे जैसे एक सुगन्ध भर दी थी, जिसमे घास की मीठी सुगन्ध भी मिली हुई थी। उसे बुरा लगा कि इसे यो ही धो दे, पर उसे यह भी पता था कि माँ इसे बहुत पसन्द नही करेगी।

उसकी माँ ने भी नहाकर अपने बाल सँवार लिए थे। उसने ऐसा किसी शौक से नही, बल्कि अभिमान और खुशी के कारण किया था। आज उसने बहुत ही उजले कपडे पहने थे।

वह बक से बोली, "हमारे यहाँ केवल पैनी ही काम करने वाला है। इसलिए हमारे पास तुम्हारे जैसे अनाज बहुत अधिक नही है, पर फिर भी हम साफ और सुथरा खा लेते हैं।"

जोडी ने जल्दी ही बक की ओर देखा कि कही उसने बुरा तो नही माना। बक ने अपनी तश्तरी मे दलिया डाला और उसके बीच मे जगह बनाकर तले हुए अण्डे और खीर डाल दी। वह बोला, "हाँ, श्रीमती ओरी, अब मेरे से डरना मत। मैं और जोडी आज शाम को जाकर तुम्हारे लिए बहुत-सी गिलहरियाँ और, हो सका तो, एक तीतर मार लाएँगे। आज मैंने एक तीतर को मटरो के खेत के परे की ओर देखा था।"

माँ ने पैनी के लिए एक तश्तरी भरी और उसमे एक प्याला दूध भी मिला दिया। वह जोडी को देकर बोली, "ज़रा तुम उन तक पहुँचा दो।"

वह पिता के पास गया। पिता ने अपना सिर उस तश्तरी की ओर हिलाते हुए कहा, "बेटा, मेरे लिए इतना ही बहुत है, पर तुम इसे यहाँ रखकर मुझे चमचे से अगर खिला सको और दूध पिला सको तो कृपा होगी। मुझे अपनी बाँह उठाते हुए तकलीफ होती है।"

अब उसके चेहरे मे सूजन उतर चुकी थी। पर उसकी बाँह अब भी पहले की अपेक्षा तिगुनी मोटी थी। उसका साँस अब भी भारी चल रहा था। उसने मुलायम दलिए के कुछ ही ग्रास लिए और थोडा-सा दूध पिया,

और तब तश्तरी परे सरका दी।

बोला, "तुम्हारी छौने के साथ खूब निभ रही है ?"

जोडी ने उसे बिस्तर बनाने की बात सुना दी।

पिता बोला, "तुमने जगह तो अच्छी चुनी है। उसका नाम क्या रखोगे ?"

"मुझे नही पता। मैं उसका कोई खास नाम चुनना चाहता हूं।"

बक और माँ भी वहाँ आ गए और पास ही उसे देखने के लिए बैठ गए। गर्मी अधिक थी और भरी दुपहरी थी। किसी काम की जल्दी भी नही थी।

पैनी बोला, "जोडी छौने के लिए नाम खोजने की चिन्ता मे है।"

बक बोला, "जोडी, जब तुम फौडरविंग को मिलो तब उसे बताना। वह तुम्हे नाम चुन देगा। इन बातो मे वह काफी चतुर है। जैसे औरो को वीणा का सगीत अच्छा लगता है, उसे ये बाते अच्छी लगती हैं। वह तुम्हे कोई बहुत अच्छा नाम चुनकर देगा।"

माँ बोली, "जोडी, जाकर अपना खाना खा लो। उस चित्तीदार छौने ने तुम्हारा ध्यान भोजन से भी उचाट कर दिया है।"

इस अवसर की वह ताक मे था ही। वह रसोई मे गया और अपने खाने के लिए एक तश्तरी ऊपर तक भरकर कोठरी मे ले गया। छौना अब भी नीद में था। जोडी ने उसके पास ही बैठकर भोजन किया। उसने फिर अपनी अगुलियाँ घी मिले दलिए मे भिगोई और उन्हे उसके मुख तक ले गया। परन्तु छौने ने केवल फुफकारकर अपना सिर दूसरी ओर कर लिया।

जोडी बोला, "अच्छा हो कि दूध के अतिरिक्त तुम कुछ और भी लेने लगो।"

ऊपर छत के फट्टो मे धूल उडाने वाली मक्खियाँ भिनभिना रही थी। उसने अपनी तश्तरी खाली की और एक किनारे रख दी। वह वही छौने के पास ही लेट गया और उसने अपनी एक बाँह उसकी गर्दन पर रख दी। उसे अब विश्वास था कि अब वह फिर कभी अकेला न रहेगा।



## 16

छौना अब जोडी का अधिक समय ले लेता था। जहाँ भी जोडी जाता, यह उसके पीछे-पीछे दौडा जाता। लकडियो के ढेर पर यह उसके कुल्हाडा चलाने मे रुकावट डालता। दूध दुहने का काम जोडी को दिया गया। उसे लाचार होकर उस समय छौने को दरवाजे के पास बहुत दूर बाँधना पडता। यह वही से छडो के बीच से झाँकता रहता और उसके निबटने पर मिमियाता रहता। वह गाय के स्तन दुहता रहता, जब तक कि वह विरोध न करती। उसे पता था कि दूध का हर अधिक प्याला इस छौने के लिए अधिक खूराक बनकर आ रहा था। उसे लगा कि जैसे वह इसे बढता हुआ देख रहा हो। छौना अपने पाँव पर खडा होने लगा और उछ-लने-कूदने और अपनी पूँछ और सिर को उछालने लगा था। जोडी भी इसके साथ बहुत देर तक खेलता-कूदता रहता और अन्त मे अपने को शान्त करने के लिए वे दोनो ही किसी ढेर पर लेट जाते।

दिन गर्म होते जा रहे थे। पैनी को भी बिस्तरे मे ही पसीना आने

लगा। वक भी खेतो मे से पसीने से तर होकर लौटता था। उसने अपनी कमीज़ पहननी छोड दी थी और खेतो मे कमर तक नगा होकर काम करता था। उसकी छाती मोटी थी और उस पर काले वाल उगे हुए थे। उन पर पसीने की बूंदे ऐसी लगती थी, जैसे सूखी काई पर वर्षा की बूंदे। माँ जव भी देखती कि वक अपनी कमीज माँग नही बैठेगा, तो वह उसे धो डालती, या उबालकर सूखने के लिए झुलसती धूप मे लटका देती।

वह वडे सन्तोष के साथ कहती, "अब उसमे से उतनी बदबू नही आएगी।"

वक ने वैक्स्टर परिवार का घर पूरी हद तक भर दिया।

माँ ने पैनी से कहा, "पहले-पहल जव मैं सवेरे कभी इसकी दाढी और छाती देख लेती हूँ तो मैं घवरा जाती हूँ। मुझे लगता है जैसे कोई भालू घर मे घुस आया हो।"

पहले-पहल वह भोजन की उस मात्रा से घवरा गई थी जो वक दिन मे तीन बार खा लेता था। परन्तु वह शिकायत क्यो करती? क्योकि वक उससे वहुत अधिक कमी को पूरा भी कर देता था। वह वहुत लगन से काम करता और साथ ही उसे शिकार भी मारकर ला देता था। जिस हफ्ता-भर वह उनके खेत पर रहा, उसने मक्का, मटर और आलू आदि के सभी खेत ठीक कर दिए थे। इसके साथ ही उसने पश्चिम की ओर दो एकड नई ज़मीन भी तैयार कर दी थी। यह ज़मीन मटर के खेत और सोते के वीच मे थी। उसने एक दर्जन से ऊपर सनावर, चीड और कीकर आदि के पेड और दूसरी वहुत शाखें काट दी थी। वहुत-सी जडें और ठूंठ उसने जला दिए थे और वहुत से गिरे पेडो को उसने छोटे-छोटे टुकडो मे काट दिया था। अव जोडी और पैनी के लिए लकडी काटने का काम वहुत आसान हो गया था।

वक वोला, "जो खेत मैंने नया तैयार किया है, इसमे तुम समुद्री टापू वाली रुई आने वाली वसन्त मे वो देना। उससे वहुत अच्छी कमाई होगी।"

माँ सन्देह के साथ वोली, "तुम्हारे यहाँ तो रुई होती नही?"

वक वोला, "हम लोग असल मे किसान नही हैं। हम खेत भी साफ

करते हैं, हल चलाकर बोते भी हैं, पर हमारी आदत उस पर जीवन बिताने की नहीं है। हम जिस चीज पर जीवन बिताते है, तुम उसे अच्छा नही कहोगी।"

वह सोचकर बोली, "परन्तु बुरे तरीके आफत मे ही फँसा देते हैं।"

वह बोला, "तुम्हे मेरे परदादा का पता है? लोग उन्हे कहते ही थे मुसीबत वाला फॉरेस्टर।"

वह उसे नापसन्द न कर सकी। उसे लगा कि वह भी किसी कुत्ते के समान अच्छी आदत का था। रात को एकान्त मे उसने पैनी से कहा, "वह एक बैल की तरह काम करता है, पर वह काला बहुत अधिक है। एज़रा! वह गिद्ध जैसा काला है।"

पैनी बोला, "उसकी दाढी काली है। अगर मेरे भी उसके जैसे ही काली दाढी होती तो मैं भी गिद्ध न सही, कौआ तो जरूर लगता।"

पैनी मे धीरे-धीरे शक्ति आने लगी थी। ज़हर की सूजन कम होने लगी थी। जहाँ साँप ने काटा था, वहाँ की खाल भी सूखकर उतरने लगी थी। परन्तु अब भी थोडी-सी मेहनत करने पर ही उसे चक्कर आ जाते थे और उसका दिल नदी के किसी स्टीमर के पहियो की भाँति धडकने लगता था। वह साँस के लिए हाँफने लगता था और उसे फिर से ठीक होने के लिए लेटना पडता था। उसके लकडी जैसे खुरदरे शरीर पर उसकी नसें ऐसे तनी हुई थी, जैसे वीणा की तारें हो।

जोडी के लिए बक का वहाँ रहना बहुत अच्छा सिद्ध हुआ। उसमे बहुत अधिक उत्साह भर गया। अकेला छौना ही उसे पागल बनाने के लिए काफी था, परन्तु इन दोनो ने मिलकर उसमे एक जोश पैदा कर दिया। पैनी के कमरे से बक के काम की जगह पर और वहाँ से छौने तक वह चारो ओर दौडता फिरता था।

उसकी माँ ने कहा, "तुम्हे चाहिए कि जो कुछ भी बक करता है उसे ध्यान से देखो ताकि उसके जाने के बाद तुम भी वह सब कुछ कर सको।"

उन तीनो मे ही अन्दर-ही-अन्दर जैसे एक समझौता-सा हो गया था कि पैनी को कोई कष्ट न होने दिया जाय और उसे काम से अलग ही रखा जाय।

आठवें दिन सुबह बक ने जोडी को मक्की के खेत पर बुलाया। कुछ लोमडो ने रात मे उस खेत पर धावा किया था। मक्की की आधी क्यारी वे उजाड गए थे। इस क्यारी के बीचोबीच भुट्टो का ढेर लगा हुआ था।

बक बोला, "तुमने देखा, यह किसने किया ?"

"रैकूनो ने ?"

"नही, लोमडियो ने। लोमडियाँ हमसे भी ज्यादा मक्की को पसन्द करती है। दो-तीन लोमडियाँ रात को आई है और उन्होने यहाँ खूब आनन्द लूटा है।"

जोडी हँस पडा। बोला, "लोमडियो ने मौज उडाई ? खूब रही। मुझे उसे देखकर बहुत ही खुशी होती।"

बक ने अधिक सख्ती से कहा, "तुम्हे रात को अपनी बन्दूक लेकर उन्हे दूर रखने के लिए आना चाहिए था। अब हम दोनो ही रात को उन्हे पकड लेगे। तुम्हे गम्भीर होना चाहिए। आज की रात हम सोते के किनारे के शहद के छत्ते से भी शहद निकाल लेगे, ताकि तुम्हे इसका भी अभ्यास हो जाय।"

जोडी ने अपना दिन जैसे-तैसे बिताया। बक के साथ शिकार करना निश्चय ही पिता के साथ किये गए शिकार से अलग किस्म का होगा। उसे पता था कि फौरेस्टर जो भी काम करते है, उसमे एक अजीब ही उत्तेजना होती है। पर इससे वह घबरा भी गया था। उनके शिकार मे शोर-शराबा खूब होता था। पैनी के साथ शिकार मे बहुत सन्तोष होता था, जिसका महत्त्व स्वय शिकार से भी अधिक था। उसमे ऊपर उडते पक्षियो को देखने या फिर मगरमच्छ की आवाज सुनने, या दलदल मे और चीजें देखने का मौका रहता था। उसकी इच्छा हुई कि काश ! आज भी पैनी मक्खियो के छत्ते से शहद निकालते समय उनके साथ होता और लोमडियो के शिकार मे भी उनका साथ देता। दोपहर बाद बक नए खेतो से लौटकर आया। पैनी सो रहा था।

बक माँ से बोला, "मुझे तेल की एक शीशी, कुल्हाडी और कुछ रद्दी चीथडे दे दो, ताकि मैं उनकी मशाल बनाकर जला सकूं।"

घर मे बहुत सारे चीथडे तो थे नही। जब भी कपडे फट जाते, उनमे टाकियाँ लगाकर तब तक काम चलाया जाता था, जब तक कि वे बिलकुल

तार-तार न हो जायँ। आटे के थैले भी कपडे बनाने के ही काम आ जाते थे। या उनके छोटे-मोटे भाडन या गिलाफ अथवा कढाई आदि के काम आ जाते थे। इन्हे रज़ाइयो के नीचे भी सी दिया जाता था। बक ने बहुत निराशा के साथ उसके दिए थोडे से चिथडो को देखा और बोला, "कोई नही, हम कुछ काई भी बरत लेगे।"

वह बोली, "देखो, तुम्हे डक न लग जाय। मेरे दादा भी इनके जाल मे फँस गए थे और उन्हे पूरे पन्द्रह दिन तक बिस्तरे पर पडे रहना पडा था।"

"अगर हमे डक लगे ही, तो भी उससे कोई नुकसान न होगा।"

जोडी को साथ लेकर वह आँगन केपार चल पडा। छौना उनके पीछे-पीछे चल रहा था।

वह बोला, "तुम चाहते हो कि इसे जरूर मक्खियाँ लडे? अगर नही चाहते कि यह मर जाय, तो इसे बन्द कर जाओ।"

जोडी बडा अनमना होकर उसे कोठरी तक ले गया और उसे बाँधकर दरवाज़ा बन्द कर आया। उसे इससे जुदाई अच्छी नही लगती थी, भले ही शहद इकट्ठा करने क्यो न जाना हो? उसे यह भी अच्छा न लगा कि पैनी साथ मे न जाय। उसकी अपनी निगाह इस शहद के छत्ते पर सारे वसन्त-भर रही थी। वह ठीक समय की इन्तज़ार कर रहा था, ताकि मक्खियाँ पीली चमेली तथा शहतूत और दूसरे मीठे फूलो पर से शहद चुन लें। इन फूलो मे ताड, चीनी बेरी, जगली अगूर, नाशपाती, जगली अलूचे आदि बहुत से फूल थे। अब भी और बहुत से फूल खिले हुए थे, जिनसे वे सर्दियो मे और शहद इकट्ठा कर सकती थी। गुलाब, और दूसरे कई फूल पूरी तरह खिले हुए थे। और कुछ नए फूल—जयन्तिया, गेंदा आदि—खिलने वाले थे।

बक बोला, "मुझे समझ नही आता कि तुम लोग उतनी दूर से पानी ढोकर कैसे गुज़ारा कर लेते हो? अगर मैंने जल्दी ही न चले जाना होता, तो निश्चय ही मैं घर के पास ही कुआँ खोदने मे सहायता देता।"

"तो क्या तुम जल्दी ही जाना चाहते हो?"

"हाँ, निश्चय ही। मुझे फोडरविग का खतरा है। और फिर मैं इतने

दिन तक शराब के बिना कभी नही रहा।"

मधुमक्खियो का छत्ता एक सूखे चीड पर था। इसकी आधी ऊँचाई पर एक बडे खोल मे से मक्खियाँ आ-जा रही थी। यह सोते के उत्तरी किनारे पर खडा था। बक सनावरो के पास कुछ देर हरी काई इकट्ठी करने के लिए रुका। उसने चीड के नीचे उस काई का ढेर लगा दिया और साथ ही पख आदि भी इकट्ठे कर दिए।

वह बोला, "यहाँ जगली बत्तखो ने भी घोसला बनाना चाहा था। वे हमेशा पेड के खोल मे घोसला बनाती हैं, फिर चाहे वहाँ कठफोड़वा या कोई और क्यो न रहता हो? वे मधुमक्खियो के छत्ते से भी नही डरती। जब उनका दिल आ जाय, तो वे उस खोल मे घोसला बनाकर ही रहती है। लगता है इन मक्खियो ने उन्हे यहाँ से भगा दिया है।"

अब उसने उस सूखे चीड को नीचे से काटना शुरू किया। उस चोट से ऊपर की मक्खियाँ उडने और भिनभिनाने लगी, लगा जैसे साँपो की बहुत दूर पर स्थित कोई बामी छेड दी गई हो। उस कुल्हाडे की चोट सोते के आर-पार गूंज उठी। सनावरो मे शान्त पडी गिलहरियाँ हडबडाकर शोर करती हुई इधर-उधर भागने लगी। जगली चिडियाँ डर से चिल्लाने लगी। चीड हिलने लगा। भिनभिनाना धीरे-धीरे शोर का रूप धारण करने लगा। मक्खियाँ उनके सिर के चारो ओर इस तरह भिनभिना रही थी, जैसे छोटी-छोटी बन्दूक की गोलियाँ हो।

बक बोला, "जरा मशाल लाओ। जल्दी करो।"

जोडी ने काई और चीथडो का एक गोला बनाया और बक के आग जलाने वाले डिब्बे को खोला। पत्थर और लोहे को लेकर वह उलझा रहा। पैनी इस तरह आग जलाने मे जितना ही चतुर था, जोडी उतना ही नादान। उस पर एक भय-सा समा गया। चिनगारियाँ निकलती थी, पर वह उन्हे कपडो मे पकड़ नही पाता था। बक ने कुल्हाडा किनारे पर रखा और उसकी तरफ आकर उससे वे दोनो चीजें ले ली। उसने एक क्षण मे ही लोहे और पत्थर को रगडकर आग पैदा की और बडे अन्दाज से चीथडो मे आग जला ली। ऐसे अन्दाज़ की और किसी फौरेस्टर मे उम्मीद नही की जा सकती। चीथड़े जलने लगे और उनसे उसने आग लगा दी। अब बिना

लपटो के धुआँ उठने लगा।

बक फिर से चीड पर आकर कुल्हाडा चलाने लगा। यह कुल्हाडा बहुत जल्दी पेड को आधे तक काट गया। इसके लम्बे तन्तु कटने, फटने और टूटने लगे। वह पेड बडे शोर के साथ नीचे गिरा, मानो अपने बचाने के लिए वह चिल्ला उठा हो। यह धरती पर आ गिरा और इसके बीचोबीच मक्खियाँ बहुत तेजी से भिनभिनाने लगी। बक ने उस काई की जलती ढेरी को उठाया और जल्दी से एक नेवले की तरह उसे लेकर आगे बढा। उसने वह सारा ही जलता हुआ समूह उस खोल मे डाल दिया और बहुत तेजी से वहाँ से भाग पडा। इस समय वह एक भारी-भरकम भालू-जैसा लग रहा था। उसके मुख से एक चीख-सी निकली और उसने जोर-जोर से अपनी पीठ, छाती और कन्धो पर हाथ मारे। जोडी उस पर हँस पडा। इसी बीच उसकी अपनी ही गर्दन पर जैसे किसी ने गर्म सूई चुभो दी हो।

बक चिल्लाया, "जाओ, जोहड के पास उतर जाओ। पानी मे घुस जाओ।"

वे दोनो ही एकदम ढाल पर उतर आए। जोहड के पास जाकर वे उसमे घुस गए। वर्षा की कमी के कारण यह उथला ही था। इसीलिए वे लेटकर भी इसमे पूरे ढँक न सके। बक ने कीचड लेकर जोडी के बालो और गर्दन पर मल दी। उसके अपने बाल ही उसकी रक्षा अच्छी तरह कर सकते थे। कुछ मक्खियाँ उनका पीछा करती हुई आई और उनके आगे-पीछे चक्कर काटने लगी। थोडी देर बाद बक ने अपने को बडी सावधानी से उठाया।

वह बोला, "अब वे शान्त हो गई होगी। पर क्या हम सूअर नही बन गए ?"

उनके पाजामे, चेहरे और कमीजे सभी कीचड से सनी हुई थी। अभी धुलाई का दिन दूर था। इसलिए जोडी उसे सोते की धुलाई वाली नाली तक ले गया। उन दोनो ने ही एक मे अपने कपडे डुबोए और दूसरी मे स्वय नहाए।

बक बोला, "तुम किस बात पर हँस रहे हो ?"

जोडी ने अपना सिर हिला दिया। वह अपनी माँ की बात का अनुमान

कर हंस रहा था। उसकी समझ मे माँ कहेगी, "अगर मक्खियो के काटने से ही कोई फौरेस्टर नहा-धोकर साफ हो सकता है, तो मैं उन्हे एक पूरे छत्ते से कटवा दूँगी।"

बक के शरीर पर कम से कम छः डक लगे थे, पर जोडी को दो ही लगे थे। अब वे उस छत्ते के पास बहुत धीरे-धीरे आए। काई का ढेर ठीक तरह रखा गया था। उसके घने धुएँ से मक्खियाँ भाग गई थी। वे अब भी उस खोल के चारो ओर चक्कर काट रही थी, ताकि रानी को खोज सके।

बक ने और ज्यादा चौडा छेद किया और अपने चाकू से उसके किनारो को साफ किया। उसने चारो ओर सफाई करके चाकू समेत अपना हाथ अन्दर डाला। जब उसने अपना हाथ लौटाया, तो वह चकित रह गया। बोला, "खुशी का दिन है! शहद तो जैसे घडो भर के है। पेड ही भरा पडा है।"

उसने एक टुकडा काटकर निकाला। शहद सुनहली बूंदो मे गिर रहा था। छत्ता सख्त और काला-सा था, परन्तु शहद राब से भी अधिक पीला और साफ था। उन्होने तेल का बर्तन भरा और उसे दोनो ओर से उठाकर घर तक ले आए। अब माँ ने उन्हे एक बडा बर्तन दिया।

बक बोला, "बस अब इतने ही बिस्कुटो की और कसर है।"

लौटते हुए बोझ कुछ अधिक था। बक ने बताया कि आज तक इतना अधिक शहद उसने एक छत्ते मे से कभी भी निकलते हुए नही देखा।

वह बोला, "जब मैं कल घर जाकर यह बात बताऊँगा, तो हमारे यहाँ कोई भी इस पर विश्वास नही करेगा।"

माँ धीरे से बोली, "क्या तुम कुछ घर ले जाना नही चाहोगे?"

"बस, जितना मेरे पेट मे जा सके। दलदल मे दो-तीन पेडो पर मेरी निगाह है। अगर मुझे वहाँ निराशा हुई तो फिर मैं आपके पास माँगने आऊँगा।"

माँ बोली, "तुम सचमुच अच्छे पडोसी बनकर रहे हो। हो सकता है कभी हमारे पास भी बहुत कुछ होगा और तब हम तुम्हारा उपकार चुका सकेंगे।"

जोडी बोला, "मैं चाहता था, काश, तुम न जाते, बक!"

उस बड़े शरीर वाले आदमी ने उसे प्यार से थपथपाया और बोला, "मेरे जाने के बाद तुम्हे उस छौने को खिलाने-पिलाने का मौका नही मिल सकेगा।"

बक निश्चय ही बेचैन था। शाम के खाने पर भी उसके पाँव टिक न सके। उसने आकाश की ओर देखा और बोला, "सवारी के लिए यह रात अच्छी है।"

जोडी बोला, "तुम एकदम ही कैसे बेचैन हो उठे हो ?"

बक अपनी हरकत मे कुछ रुका। बोला, "मेरे साथ ऐसा ही होता है। मैं आना भी ऐसे ही चाहता हूँ और जाते हुए भी इसी तरह चचल हो उठता हूँ। जहाँ भी जाऊँ, मैं थोडी देर ही सन्तुष्ट रहता हूँ। पर, उसके बाद मैं कही भी सन्तोष से नही रह सकता। जब मैं लेम और मिलव्हील के साथ घोडो का व्यापार करने केन्टुकी की ओर जाता हूँ तब, मैं सौगन्ध के साथ कहता हूँ, जब तक घर लौट न आऊँ, बेचैन रहता हूँ।" वह रुका और अस्त होते सूर्य की ओर देखता रहा। तब उसने धीमी आवाज मे कहा, "मुझे असल बेचैनी फौडरविंग के कारण है। मुझे दिल मे अनुभव होता है कि जैसे वह ठीक नही है।"

"अगर ऐसा होता तो क्या कोई आता न ?"

"बात ठीक है, पर अगर वे यह न जानते कि तुम्हारे पिता की हालत ठीक नही है, तो उनमे से अवश्य आ जाता और हाल-चाल बता जाता। उन्हे पता है कि तुम्हारे पिता को सहायता की आवश्यकता है और इसलिए वे मुझे यहाँ से ले जाना नही चाहते, फिर भले ही खबर ही बुरी क्यो न हो ?"

वह बडे गिरे दिल से अंधेरे की प्रतीक्षा करने लगा। वह अपना काम खत्म करके जाना चाहता था। पैनी भी किसी फौरेस्टर की ही भाँति रात का अच्छा शिकारी था। जोडी की इच्छा हुई कि वह पिता से उसके मारे हुए जानवरो के विषय मे बात करे। परन्तु, उसे पता था कि इस तरह बक के साथ वह रात के शिकार पर न जा सकेगा। उसने अपनी जीभ पर काबू कर लिया। उसने बक को मशाल के रूप मे जलाने के लिए तेल वाली लकडियाँ इकट्ठी करने मे सहायता दी।

बक बोला, "मेरे चाचा कौटन के लाल बाल थे। वे काफी अधिक थे और सदा तने खडे रहते थे, जैसे लडने वाले मुर्गे की कलगी हो। एक रात वह आग लेकर शिकार कर रहा था। मशाल का हत्था कुछ छोटा था। एक चिनगारी उडी और उसके बालो मे आग लग गई। जब उसने पिता जी को सहायता के लिए बुलाया, उन्होने ध्यान ही नही दिया। उन्होने सोचा कि यह चांद चमका होगा और इसके सिर के बालो पर उसी की चमक पड रही होगी।"

जोडी ने भारी साँस ली और पूछा, "क्या यह बात सच है ?"

बक हँस पडा और बोला, "अगर तुम मुझे कोई कहानी सुनाओ, तब मैं तुमसे कभी ऐसा प्रश्न नही करूँगा।"

पैनी अपने कमरे से ही बोल उठा, "मेरे से यह सहन नही होता। मुझे अच्छा नही लगता कि तुम दोनो मेरे बिना शिकार पर जाओ।"

वे उसके कमरे मे आ गए। पैनी बोला, "अगर तुम किसी चीते के शिकार पर जा रहे हो, तो मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि तुम्हारे साथ चलने के लिए मैं काफी ठीक हूँ।"

बक बोला, "मैं चीते के शिकार पर तुम्हे अवश्य ले चलता, अगर मेरे कुत्ते यहाँ होते।"

"क्यो ? मेरे दोनो कुत्ते तुम्हारे सारे कुत्तो के झुण्ड से बहुत ज्यादा तेज है," और फिर पूछ बैठा, "आखिर तुम लोगो के साथ कुत्ते की कैसे निभी, जो मैंने तुम्हे बेचा था ?"

बक धीरे-धीरे बोला, "वह कुत्ता तो सबसे अधिक तेज और अच्छा साबित हुआ। उस-जैसा शिकारी और निडर कुत्ता कभी हमने नही देखा। उसे जरूरत थी किसी सिखाने वाले की।"

पैनी प्रसन्न हुआ और बोला, "मुझे खुशी है कि तुमने उसे कुछ बना दिया। पर अब वह कहाँ है ?"

"सच यह है कि वह इतना अधिक अच्छा था कि उसने दूसरे कुत्तो को शर्म मे डाल दिया। लेम यह न सह सका और उसने अकेले मे ले जाकर उसे गोली मार दी और तुम्हारे पीछे की जमीन मे ही एक रात लाकर गाड दिया।"

पैनी ने उदास होकर पूछा, "मैंने वह नई कब्र देखी तो थी, पर मेरा अनुमान था कि शायद तुम लोगो की कब्रगाह छोटी पड गई है। अब शक्ति आते ही मैं उस पर एक पत्थर खडा कर दूंगा और इस पर लिख दूंगा, 'यहाँ अपने सम्बन्धियो से उपेक्षित एक फौरेस्टर सो रहा है।'"

वह मुसकराया और अपनी चादर को थपथपाने लगा।

वह बोला, "झुक जाओ, बक ! झुक जाओ !"

बक ने अपनी दाढी पर हाथ फेरते हुए कहा, "अच्छा, ठीक है। मैं इसे हँसी मे सह लेता हूं, पर लेम को अगर यह कहा तो वह अपमान समझेगा।"

पैनी बोला, "कोई बुरा भाव मेरे दिल मे कतई नही है और मुझे आशा है कि तुम लोग और लेम भी कोई बुरा भाव मेरे लिए नही रखोगे।"

"लेम की बात और है। वह हर बात को अपने पर ही लेता है।"

"यही मुझे दुख है। मैं तो ओलिवर और इसके बीच इसलिए कूदा था कि तुम लोग बहुत सारे एक ही ओर हो गए थे।"

बक बोला, "ठीक है ! पर खून हमेशा ही पानी से अधिक गाढा होता है। हम लोग आपस मे कितना ही लड ले, पर जब किसी दूसरे के साथ सवाल आ पडता है, तो हमे एक ही तरफ होकर लडना पडता है। पर मुझे और तुम्हे एक-दूसरे के लिए बुरा मानने की कोई बात नही है।"

शब्दो से ही लडाई शुरू हुई थी और शब्दो ने ही उसे मिटा दिया।

जोडी ने पूछा, "अगर लोग लडाई वाली बाते न कहे, तो लडाई ही क्यो हो ?"

पैनी बोला, "मुझे यह बात ठीक नही जँचती। मैंने एक बार दो बहरी पुतलियो को देखा था। लोग कहते हैं कि उनकी भाषा इशारो मे होती है और वे इशारो मे ही अपमान भी कर देते हैं।"

बक बोला, "यह तो पुरुष की आदत है। जोडी, जब तुम भी प्यार करने लगोगे, तब तुम्हारी भी कई बार दुर्गत होगी।"

"पर यहाँ तो लेम और ओलिवर के सिवाय किसी के प्यार का मामला न था, पर फिर भी हम सब और तुम सब इसके बीच मे कूद पडे।"

पैनी बोला, "इस बात का कोई अन्त नहीं कि आदमी किस चीज़ के

पीछे लडता है ? मुझे पता है कि एक प्रचारक, आपे से बाहर होकर, किसी से भी लडने लगता था, अगर बच्चो को तकलीफ देने का प्रश्न हो ! कोई इतना ही कर सकता है कि वह जिस चीज को ठीक समझता है उसी के लिए लडे और बुराई का खयाल न करे।"

बक बोला, "सुनो ! मेरा खयाल है कि मैंने अभी उधर हरे मैदान मे लोमडी को भौंकते सुना है।"

पहले-पहल रात शान्त-सी दिखाई दी, पर तभी बादलो के समान गरजती आवाजें उन्हे सुनाई देने लगी। उल्लू का चिल्लाना और मेढक का टर्राना उन्हे सुनाई दिया। यह इस बात की सूचना थी कि वर्षा होने वाली है।

बक बोला, "वह उधर है।"

एक हलकी-सी आवाज बहुत दूरी पर सुनाई दी, जैसे कोई रो रहा हो। बक बोला, "क्या यह आवाज मेरे कुत्तो के लिए सगीत न होती ? क्या वे इस ऊँची आवाज पर गाने न लगते ?"

पैनी बोला, "अगर तुम और जोडी आज की रात इन सबको साफ न कर दो, तो अगली पूरनमासी के रोज अपने कुत्ते ले आना और हम इनका पीछा करेंगे।"

बक बोला, "जोडी, अब हमे चलना चाहिए। अब यह मक्की के खेतों तक आने ही वाली होगी।" उसने पैनी की बन्दूक कोने से उठाई और बोला, "आज मैं इसे ही गाड आऊँगा। लगता है, मैंने इसे कही देखा है।"

पैनी बोला, "इसे उस कुत्ते के पास ही मत गाड देना। यह बन्दूक बहुत अच्छी है।"

जोडी ने बारूद भरने वाली अपनी बन्दूक भरकर कन्धे पर लटका ली और वह बक के साथ निकल गया। छौने ने उसे निकलते सुना और उसके पीछे-पीछे कोठरी मे से ही मिमियाने लगा। वे शहतूतो के पास से होकर बाड तक गए और वहाँ से मक्की के खेतो मे निकल गए। बक पहली क्यारी के उत्तर की ओर गया और दूसरे किनारे जाकर उसने और क्यारियो के बीच चलना शुरू किया। वह हर क्यारी पर रुकता और रोशनी को नीचे की ओर कर खेत को देखता। बीचोबीच वह रुका। मुडकर

उसने जोडी को हिलाया। रोशनी जहाँ रुकी थी वही पर जैसे किन्ही दो हरे पत्थरो मे आग-सी पकड ली थी।

वह बोला, "खेत के आधे रास्ते तक किनारे-किनारे चले जाओ। मै यह रोशनी ऐसे ही थामे रहूँगा, मगर रोशनी के बीच मे न आना।"

जोडी अपने पाँव के नीचे की मक्की को बचाता सरकता हुआ आगे बढा। वे हरी चमकती हुई रोशनियाँ एक क्षण के लिए मिटी और फिर चमकने लगी। उसने अपनी बन्दूक उठाई और जलती हुई लकडियो से आने वाली रोशनी को बन्दूक के ऊपर से जाने दिया। तब उसने घोडा दबा दिया। उसके झटके से वह लडखडा गया, पर फिर सँभलकर सामने की ओर दौडने लगा ताकि निश्चय कर सके पर बक ने उसे मना किया।

वह बोला, "तुमने उसे मार लिया। उसे वैसा ही पड़ा रहने दो। वापस आ जाओ।"

वह क्यारी से होता हुआ फिर लौट आया। बक ने अब उसे दूसरी बन्दूक दे दी और बोला, "अभी यही पर कही पास ही दूसरा भी होगा।"

वे एक क्यारी से दूसरी क्यारी तक धीरे-धीरे सरकते आए। इस बार बक से भी पहले जोडी ने वे चमकती आँखें देख ली। वह पहले की तरह ही फिर पगडण्डी के साथ-साथ बढा। इस बन्दूक के पकडने मे उसे आनन्द अनुभव हो रहा था। यह पुरानी भरने वाली बन्दूक की अपेक्षा हलकी थी, उतनी लम्बी भी नही थी और देखने मे भी अच्छी थी। उसने पूरे विश्वास के साथ गोली दाग दी। बक ने फिर उसे पीछे बुला लिया और वह बहुत सँभलकर पीछे चला आया। यद्यपि वे क्यारियो को बहुत अच्छी तरह देख रहे थे और खेत के दक्षिण की तरफ खडे होकर मक्की की क्यारियो पर पश्चिम की ओर रोशनी डाल रहे थे, पर उन्हे फिर वैसी चमकती हुई आँखे नही दिखाई दी।

बक ज़ोर से बोला, "आज का शिकार इतना ही है। आओ, देखे, हमे क्या कुछ मिला ?"

दोनो गोलियाँ ठीक निशाने पर लगी थी। एक लोमड था और एक लोमडी। दोनो ही इसी मक्की पर मोटे हुए थे।

बक बोला, "इनके बच्चे भी यही कही माँद मे होगे। परन्तु, वे इतने

वडे हो गए होंगे कि अपनी गुज़र आप कर सके। इन सर्दियो मे हम इन लोमडियो का ही शिकार करेंगे।"

लोमडियाँ सलेटी रग की थी। उनकी सेहत और वाल ठीक हालत मे थे। जोडी ने उन्हे आराम से उठाया।

घर के पास पहुँचते-पहुँचते उन्होने कुछ गडवड-सी सुनी। माँ चिल्ला रही थी।

वक ने पूछा, "तुम्हारी माँ पिता की वीमारी मे ही तो उसे तग नही कर रही। क्या वह ऐसा कर सकती है ?"

जोडी ने कहा, "वह वातो के अलावा और कुछ नही विगाडती।"

"मैं तो यह ज्यादा अच्छा पसन्द करूँगा कि कोई औरत तेज़ वोलने की वजाय मुझे मार डाले।"

घर के पास उन्होने पैनी को चिल्लाते हुए सुना।

वक वोला, "जोडी, तुम्हारी माँ उसे मार डालेगी।"

जोडी वोला, "छौने के पीछे ही कोई वात हो रही होगी।"

आँगन मे कभी-कभी छोटे जानवरो के अलावा और कोई उत्पात नही होता था। वक ने वाड लाँघी और जोडी भी उसके पीछे कूद गया। दरवाज़े पर कोई रोशनी चमकती उन्हे नज़र आई। पैनी केवल पाजामा पहने वहाँ खडा था। माँ उसी के पीछे अपना अँगरखा झटक रही थी। जोडी को लगा कि उसने कोई एक काली-सी चीज रात मे घूमती हुई देखी है, जैसे वह अगूरो के वगीचे की ओर वढ गई हो और उसके पीछे-पीछे कुत्ते भी भौंकते हुए चले गए हो।

पैनी चिल्लाया, "यह रीछ है। इसे पकडो। कही यह वाड लाँघ न जाय।"

वक के दौडते हुए आग की लकडियो से कुछ चिनगारियाँ उड गईं। वह रोशनी उस दौडते हुए काले शरीर पर भी पहुँची, जो नाशपाती के वृक्षो के नीचे पूरव की ओर जा रही थी। जोडी चिल्लाया, "यह आग मुझे पकडा दो, वक ! और तुम गोली दागो।"

वह खुद डरा हुआ था और अपने को ठीक अनुभव नही कर रहा था। दौडते-दौडते हुए उन्होने चीज़े वदली। वाड़ पर पहुँचकर रीछ कुत्तो के

ऊपर पलटा। उसकी आँखे और दाँत बडी तेज चमक के साथ रोशनी मे चमके और तब वह फिर बाड को लाँघने के लिए मुड पडा। बक ने गोली दाग दी। भालू लडखडाया। कुत्ते एक जोश के साथ भौंकने लगे। पैनी भी दौडता हुआ पहुँच गया। रोशनी मे देखा कि वह मर चुका। कुत्तो ने दिखाया कि जैसे उन्होने ही शिकार किया हो और वे फिर भौंककर उस पर टूटने लगे। बक खुश था। वह बोला, "यह बेचारा इधर न आता, अगर इसे पता होता कि कोई फौरेस्टर यहाँ आया हुआ है।"

पैनी बोला, "उसने कुछ चीजे यहाँ ऐसी देखी, जिन्होने उसे पागल बना दिया, इसीलिए शायद वह तुम लोगो का खयाल न रख सका।"

"वह क्या चीज थी ?"

"जोडी का छौना और शहद।"

"क्या, पिताजी, उसने छौने पर हमला कर दिया ? उसे चोट तो नही लगी।"

"नही, वह उसे नही पा सका। किस्मत से दरवाजा बन्द था। तब निश्चय ही उसे शहद की गन्ध आई होगी। वह इन सीढियो तक चक्कर काटता हुआ आ गया। मैंने सोचा कि तुम सब लौटकर आए होगे। मैंने तब तक ध्यान नही दिया, जब तक कि उसने शहद के बर्तन का ढक्कन ही न हटा दिया। मैं उसे दरवाजे पर ही मार चुका होता, पर यहाँ कोई बन्दूक ही नही थी। हम दोनो केवल चिल्ला ही सकते थे और मेरा अनुमान है कि इसे इतनी चिल्लाहट का सामना कभी करना न पडा होगा। यह यहाँ से निकल भागा।"

जोडी छौने की बात सुनते ही सुन्न-सा रह गया था। वह एकदम ही कोठरी की ओर भागा गया और यह देखकर उसे सन्तोष हुआ कि छौना गहरी नीद मे बेखबर होकर सो रहा था। उसने उसे जी भरकर प्यार से थपथपाया और तब परिवार के आदमियो और भालू की ओर लौट आया। वह दो वर्ष का नर-भालू था। इसकी हालत अच्छी थी। पैनी ने जिद की कि वह इसे काटेगा। उन्होंने उसके शव को पीछे की ओर खीच लिया और तब उन जलती लकडियो की रोशनी मे उसकी खाल उतार ली। साथ ही इसके मांस के टुकडे करके उसे धुआँघर मे लटका दिया।

वडे हो गए होंगे कि अपनी गुजर आप कर सके। इन सर्दियों में हम इन लोमडियो का ही शिकार करेंगे।"

लोमडियाँ सलेटी रग की थी। उनकी सेहत और वाल ठीक हालत मे थे। जोडी ने उन्हे आराम से उठाया।

घर के पास पहुँचते-पहुँचते उन्होने कुछ गडवड-सी सुनी। माँ चिल्ला रही थी।

वक ने पूछा, "तुम्हारी माँ पिता की वीमारी मे ही तो उसे तग नहीं कर रही। क्या वह ऐसा कर सकती है?"

जोडी ने कहा, "वह वातो के अलावा और कुछ नही विगाडती।"

"मै तो यह ज्यादा अच्छा पसन्द करूँगा कि कोई औरत तेज वोलने की वजाय मुझे मार डाले।"

घर के पास उन्होने पैनी को चिल्लाते हुए सुना।

वक वोला, "जोडी, तुम्हारी माँ उसे मार डालेगी।"

जोडी वोला, "छौने के पीछे ही कोई वात हो रही होगी।"

आँगन मे कभी-कभी छोटे जानवरो के अलावा और कोई उत्पात नही होता था। वक ने वाड लाँघी और जोडी भी उसके पीछे कूद गया। दरवाज़े पर कोई रोशनी चमकती उन्हे नजर आई। पैनी केवल पाजामा पहने वहाँ खडा था। माँ उसी के पीछे अपना अँगरखा झटक रही थी। जोडी को लगा कि उसने कोई एक काली-सी चीज रात मे घूमती हुई देखी है, जैसे वह अगूरो के वगीचे की ओर वढ गई हो और उसके पीछे पीछे कुत्ते भी भौंकते हुए चले गए हो।

पैनी चिल्लाया, 'यह रीछ है। इसे पकडो। कही यह वाड लाँघ न जाय।"

वक के दौडते हुए आग की लकडियो से कुछ चिनगारियाँ उड गईं। वह रोशनी उस दौडते हुए काले शरीर पर भी पहुँची, जो नाशपाती के वृक्षो के नीचे पूरव की ओर जा रही थी। जोडी चिल्लाया, "यह आग मुझे पकडा दो, वक! और तुम गोली दागो।"

वह खुद डरा हुआ था और अपने को ठीक अनुभव नही कर रहा था। दौडते-दौडते हुए उन्होने चीजे वदली। वाड़ पर पहुँचकर रीछ कुत्तो के

ऊपर पलटा। उसकी आँखे और दाँत बडी तेज़ चमक के साथ रोशनी मे चमके और तव वह फिर वाड को लांघने के लिए मुड पडा। वक ने गोली दाग दी। भालू लडखडाया। कुत्ते एक जोश के साथ भौंकने लगे। पैनी भी दौडता हुआ पहुँच गया। रोशनी मे देखा कि वह मर चुका। कुत्तो ने दिखाया कि जैसे उन्होने ही शिकार किया हो और वे फिर भौंककर उस पर टूटने लगे। वक खुश था। वह बोला, "यह वेचारा इधर न आता, अगर इसे पता होता कि कोई फौरेस्टर यहाँ आया हुआ है।"

पैनी बोला, "उसने कुछ चीजे यहाँ ऐसी देखी, जिन्होने उसे पागल बना दिया, इसीलिए शायद वह तुम लोगो का खयाल न रख सका।"

"वह क्या चीज़ थी ?"

"जोडी का छौना और शहद।"

"क्या, पिताजी, उसने छौने पर हमला कर दिया ? उसे चोट तो नही लगी।"

"नही, वह उसे नही पा सका। किस्मत से दरवाज़ा वन्द था। तव निश्चय ही उसे शहद की गन्ध आई होगी। वह इन सीढियो तक चक्कर काटता हुआ आ गया। मैंने सोचा कि तुम सव लौटकर आए होगे। मैंने तव तक ध्यान नही दिया, जव तक कि उसने शहद के वर्तन का ढक्कन ही न हटा दिया। मैं उसे दरवाज़े पर ही मार चुका होता, पर यहाँ कोई वन्दूक ही नही थी। हम दोनो केवल चिल्ला ही सकते थे और मेरा अनुमान है कि इसे इतनी चिल्लाहट का सामना कभी करना न पडा होगा। यह यहाँ से निकल भागा।"

जोडी छौने की वात सुनते ही सुन्न-सा रह गया था। वह एकदम ही कोठरी की ओर भागा गया और यह देखकर उसे सन्तोष हुआ कि छौना गहरी नीद मे वेखवर होकर सो रहा था। उसने उसे जी भरकर प्यार से थपथपाया और तव परिवार के आदमियो और भालू की ओर लौट आया। यह दो वर्ष का नर-भालू था। इसकी हालत अच्छी थी। पैनी ने ज़िद की कि वह इसे काटेगा। उन्होने उसके शव को पीछे की ओर खीच लिया और तव उन जलती लकडियो की रोशनी मे उसकी खाल उतार ली। साथ ही इसके मांस के टुकडे करके उसे धुआंघर मे लटका दिया।

वक बोला, "मेरी इच्छा है कि कुछ चर्बी मैं माँ के लिए ले जाऊँ, ताकि वह इसका तेल और इससे तली कुछ चीजे बना सके। कुछ चीजें ऐसी हैं, जिन्हे वह भालू की चर्बी के बिना तलना ही नही चाहती। उसका कहना है कि भालू के तले हुए माँस के टुकडे और आलू उसके दाँतो को सबसे अच्छे लगते हैं। सच तो यह है कि उसके चार छोटे-छोटे दाँत दिन भर उन्हें चबाते रहते हैं।"

श्रीमती वैक्स्टर इस बहुतायत से बडी उदार बन गई थी।

वह बोली, "और साथ ही फोउरविंग के लिए इसके जिगर का एक टुकडा भी लेते जाना। इससे उसे ताकत मिलेगी।"

पैनी बोला, "मुझे इस बात का दुख है कि यह बूढा पाँवकटा भालू नही है। मैं उसे देखकर केवल चाकू से ही उसकी पीठ चीर डालता।"

लोमडियो की खाल सवेरे भी उतारी जा सकती थी, क्योंकि उनका माँस केवल चूजो के ही काम आना था। उसमे मसाले मिलाकर ताकतवर बना दिया जाएगा।

वक बोला, "कभी तुम लोगो से ईजी ओजेल ने अपने यहाँ आकर लोमडी के माँस का पुलाव खाने की बात भी कही है?"

पैनी बोला, "उसने तो कहा था, पर मैंने उसे धन्यवाद देते हुए कहा कि हम उस दिन आएँगे जब तुम अपने ही कुत्तो मे से किसी को पकाओगे।"

पैनी उत्तेजना मे भरा हुआ था। वह वक के साथ ही अपनी एडियो के बल बैठ गया और लोमडियो, कुत्तो, अजीब भोजनो और उन्हे खाने वाले अजीब आदमियो की बाते करता रहा। ये सब बातें आज जोडी का ध्यान अपनी ओर न खीच सकी। अब वह इस बात के लिए उत्सुक था कि हर कोई जाकर सो जाय। आखिर पैनी की ताकत जवाब दे गई और वह अपने हाथ धोने और चाकू साफ करने के लिए उठा और अपनी पत्नी के साथ सोने चला गया। वक आधी रात तक बाते करने के लिए तैयार था। जोडी समझ गया और वह अपने ही कमरे मे फर्श पर बिस्तर लगाकर सोने के लिए बहाना करने लगा। वक ने उसका बिस्तरा बहुत दिन से सम्हाला हुआ था। उसकी बालो वाली लम्बी टाँगे बिना सहारे के लटकती रहती थी। अपनी चारपाई पर बैठे हुए वह बाते करता रहा, जब तक सभी गिनकर

न शुरू हो गए। जोडी ने उसे जम्हाई लेते हुए सुना और अपने पाजामे ढीले कर वह भी वही भूसे की चटाई पर लेट गया।

वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा, जब तक तेज खुर्राटे न सुनाई देने लगे। तब वह घर से खिसककर पिछली कोठरियो की ओर चला गया। छौना उसकी आवाज सुनते ही जग पडा। जोडी भी उसके पास पहुँचा और उसने अपनी बाँह उसकी गर्दन के चारो ओर डाल दी। छौने ने उसके गाल से अपनी नाक मलनी शुरू की। उसने इसे उठा लिया और दरवाजे तक ले आया। इतने थोडे दिनो मे यह इस तेजी से बढ गया था कि वह इससे अधिक वजन उठा भी न सकता था। इसे लेकर वह पजो के बल आगन मे चला आया और इसे वहाँ छोड दिया। यह अब उसके पीछे चलने लगा। जोडी घर मे धीरे-धीरे घुसा। उसने एक हाथ इसके सिर पर रखा हुआ था, ताकि उसे भी रास्ता पता चल जाय। इसके खुर लकडी के फर्श पर आवाज़ कर रहे थे। उसने फिर से इसे उठा लिया और सँभल-सँभलकर कदम रखने लगा। वह माँ के कमरे को पार कर अपने कमरे मे आ गया।

अपने बिस्तर पर वह लेट गया और इसको भी अपने पास ही उसने सरका लिया। इसी प्रकार वह कितनी ही बार पीछे की कोठरी मे और सनावरो की छाया मे इसके साथ सोया था। अब भी उसने अपना सिर इसके शरीर से सटा दिया और इसकी पसलियो के उठने और गिरने के साथ इसकी साँस को अनुभव करने लगा। छौने की ठोडी जोडी की बाँह पर टिकी हुई थी। दो-चार बाल, जो उसके मुख पर उग आए थे, इसकी बाँह मे चुभ रहे थे। अब तक वह उन चालाकियो पर गौर करता रहा था कि जो बहाने बताकर वह इसे रात को अपने साथ सुलाने के लिए अपने कमरे मे ला सकता था, पर आज वह इसे बिना किसी झगडे के अन्दर ले आया था। अब उसे पता चल गया कि वह उसे जब भी चाहे अन्दर ला और बाहर ले जा सकता था। बहाना एक ही था कि इसकी वजह मे कोई बखेडा न खडा हो। अगर अचानक किसी दिन वह पकडा ही गया, तो इससे बढकर और क्या बहाना होगा कि वह भालुओ के खतरे की बात याद दिला देगा।



## 17

आलुओं के खेत समुद्र के समान लहरा रहे थे। अभी-अभी निलाये हुए खेतों को जोडी ने पीछे मुड़कर देखा। वे बहुत अच्छे दीखने लगे थे। किन्तु बिना निलाये खेत अभी भी काफी अधिक थे। आषाढ़ की धूप जमीन को झुलसा रही थी। तपती हुई रेत उसके पाँवों को जला रही थी। आलू की बेलों के पत्ते ऊपर की ओर मुड़ने लगे थे, मानो उन्हें धूप की बजाय जमीन जला रही हो। उसने ताड़ के पत्तों से बनी टोपी को पीछे सरकाया और मुख का पसीना अपनी आस्तीन से पोंछा। सूर्य को देखकर उसने अनुमान किया कि लगभग दस बजे का समय होगा। उसे ध्यान आया कि उसके पिता ने कहा है कि यदि वह दोपहर तक आलुओं की निलाई कर ले तब वह फौडरविंग से मिलने जा सकता है और इस प्रकार हिरण के बच्चे का नाम रखवा सकता है।

हिरण का बच्चा बेरी की एक झाड़ी की छाया में सो रहा था। जोडी ने जब काम आरम्भ किया था, तो इसने काफी गड़बड़ मचाई थी। यह

उन क्यारियो मे ऊपर-नीचे दौडता हुआ वेलो को कुचलता रहा। उसने कई मुंडेरो को गिरा भी दिया। फिर जोडी के ऐन सामने आकर अड गया और उसे खेलने के लिए मजबूर करने लगा। इसकी बडी-बडी आँखो मे शुरू मे अचरज का-सा भाव रहता था, पर अब इनमे चौकन्नापन समा चुका था। इसकी निगाहो मे भी जूलिया-जैसी बुद्धिमत्ता टपकने लगी थी। अभी जोडी सोच ही रहा था कि उसे वापस ले जाकर पिछले गोदाम मे बन्द कर दे कि यह चुपचाप झाडी की छाया मे आकर लेट गया।

इसका सिर एक कन्धे पर झुका हुआ था और वही से लेटे-लेटे यह एक खुली आँख से ही जोडी को देख रहा था। उसकी छोटी-सी पूँछ जब-तब हिलकर शरीर की खाल से टकराती थी, ताकि मक्खियाँ उडाई जा सके। अगर यह इसी भाँति चुपचाप पडा रहे तो उसे काम निबटाने मे आसानी होगी। उसे भी इसके पास रहते काम करने मे मजा आता था। इसके साथ रहने से निलाई के काम मे कुछ ऐसा उत्साह जगता था, जैसा पहले कभी नही जगा था। वह घासो को फिर उत्साह से उखाडने लगा और अपनी बढती पर स्वय सन्तोष करने लगा। कतारो पर कतारे वह पार कर बढता गया। मस्ती मे बेसुरी सीटी की धुन भी बजाने लगा।

इस छौने के लिए उसने कई नाम सोचे थे। उसने बारी-बारी से उन नामो से इसे पुकारा भी। पर उसे उनमे से कोई नाम भी जँचा नही। जू, सैव, रोवर, रौव आदि उसकी जान-पहचान के तमाम कुत्तो के नाम उसे ठीक नही लगे। इसके छोटे-छोटे पांवो की ओर पैनी के ध्यान दिलाने पर उसने इसे 'ट्विकल-टोज' नाम भी देना चाहा और उसका भी छोटा नाम 'ट्विक' बना लिया। पर यह नाम भी उसे बुरा लगा, क्योकि उसी समय उसे ओलिवर की प्रेमिका ट्विक वेदरबी का ध्यान आ गया। 'टिप' नाम उसे इसलिए नहीं जंचा कि इस नाम का एक भवरा कुत्ता पहले कभी पैनी ने रखा था और वह अच्छा न था। उसे विश्वास था कि फोडरविंग उसे निराश न करेगा। अपने सभी प्रिय जन्तुओ के नाम उसने चुन-चुनकर रखे थे। रैकून का नाम 'रैकट', कगारू का नाम 'पुग', गिलहरी का 'स्पीक', गाने वाले लँगडे लाल-पक्षी का 'प्रोचर' आदि नाम उसने स्वय रखे थे। फोडरविंग ने यह नाम उसकी आवाज को देखकर ही न रखा था, बल्कि

वह यह भी कहता था कि इसके पास जगल के और लाल-पक्षी अपने विवाह के लिए आते थे। जोडी जानता था कि ऐसी आवाज और लाल-पक्षी भी करते हैं। फिर भी यह नाम उचित ही था।

पिछले दो हफ्तो मे, बक के जाने के बाद से, उसे काफी काम करना पडा था। पैनी अब ठीक होता जा रहा था, फिर भी कभी-कभी उसका दिल धडकने लगता और वह मूर्छित हो जाता। पैनी को पूरा विश्वास था कि यह साँप के जहर का असर ही था, फिर भी उसकी पत्नी उसे नीबू के पत्तो की चाय जबरदस्ती देती थी, क्योकि उसकी समझ मे यह बुखार के कारण था। मौत का खतरा टल जाने पर यह अच्छा ही था कि पैनी जल्दी ही ठीक हो जाय और काम मे जुट पडे। जोडी यह ध्यान रखने की कोशिश रखता था कि उसके पिता को काम मे न ही लगना पडे। अकेलेपन के दुःख से बचने के लिए किसी साथी की जरूरत थी और यह कमी उस हिरण के बच्चे से पूरी हो जाती थी। जोडी इस बच्चे को रखने की अनुमति देने के लिए स्वय को माँ का आभारी मानता था। माँ इसको चुपचाप सह भी रही थी। कठिनाई केवल इस बात की थी कि इसे दूध अधिक चाहिए था। इसने धीरे-धीरे रसोई मे भी घुसना शुरू कर दिया। एक दिन रोटी बनाने के लिए आटा गुंधा पडा था। इसने आते ही उसे साफ कर दिया। तब से मक्खियाँ, आटा, बिस्कुट आदि हर चीज पर इसने हाथ डालना शुरू कर दिया। इसे परिवार के भोजन के समय अपनी जगह पर बाँधना जरूरी हो गया, क्योकि इसने खाने वालो के हाथ की तश्तरियाँ तक टक्कर मारकर गिरानी शुरू कर दीं। पैनी और जोडी जब भी कभी इस पर हँसते, यह अपना सिर जान-बूझकर उछालने लगता। पहले-पहल कुत्ते इसका पीछा करते थे, पर अब वे भी इसकी हरकतो को सह लेते थे। जोडी की माँ को यह कभी खुश न कर सका, हालांकि इसकी हरकतें वह सह लेती थी।

जोडी ने इसकी खूबियो की ओर इशारा किया, "इसकी आँखें अच्छी नही हैं, क्या माँ, ?"

"हाँ, वे बहुत दूर से ही आटे की परात देख लेती है!"

"क्यो, क्या इसकी पूँछ बहुत अच्छी नही है?"

"सभी हिरणो की पूँछ वडी अच्छी दिखाई देती है।"

"लेकिन माँ, यह कुछ नुकीली और अजीब-सी नही है ?"

"हाँ, अजीब वाली बात तक तो ठीक है।"

सूर्य धीरे-धीरे पूरी ऊँचाई तक चढ आया। हिरण का बच्चा आलू की उन बेलो के बीच मे आ घुसा और उनमे से कुछ को उसने कुचल दिया। तब वह फिर से बाड की ओर दौड गया और जगली चैरी के पेड के नीचे उसने एक नया छायादार स्थान ढूंढ लिया। जोडी ने अपने काम पर निगाह डाली। एक-दो कतारें अब भी बची पडी थी। वह पानी पीने के लिए घर की ओर जाना चाहता था। पर उसे पता था कि इससे उसका काम खतम होने मे और देर लग जाएगी। उसके कारण भोजन देर से होगा और वह फोडरविग के यहाँ शायद न भी जा सके। इसलिए उसने खुरपी जल्दी-जल्दी चलानी शुरू की और बेलो को बचाता हुआ बढने लगा। अभी उसने वह आधी कतार ही पूरी की थी कि सूरज बिलकुल ऊपर चढ आया। अब भी एक पूरी कतार बिना निलाई किए पडी थी। उसे लगा कि कुछ क्षण मे ही उसकी माँ रसोई के दरवाजे पर लटकने वाली घटी बजाएगी और उसे अपना काम छोडना पडेगा। पैनी ने यह बात पहले ही साफ कर दी थी कि यदि फोडरविग के यहाँ जाना है तो अपना सारा काम दोपहर के भोजन के पहले ही खतम करना होगा। तभी उसने बाड के दूसरी ओर किसी के कदमो की आवाज सुनी। यह पैनी था। वह उसे देख रहा था। बोला, "धेरे ! आलू तो इस बार बहुत हुए हैं न !"

"सचमुच ! बहुत ज्यादा हुए हैं।"

"इतना तो सोच भी नही सकते थे। पर अगले साल इस समय तक इनमे से कुछ भी नही बचेगा। यह तुम्हारा बच्चा अपना और ज्यादा हिस्सा मांगने लगेगा। अब यह आराम से चैरी के नीचे सो रहा है। तुम्हे याद है कि दो साल पहले हिरणो को दूर रखने के लिए हमे कितनी मेहनत करनी पडी थी ?"

"पिताजी ! मुझे कुछ नही पता। मैं तो सवेरे से अब तक शायद ही कुछ क्षण रुका होऊँ। और अब भी एक पूरी कतार मेरे सामने बिना निलाई किए पडी है।"

"अच्छा, तो मैं तुम्हे बताता हूँ। मैंने तो तुम्हे नही कहा था कि तुम्हे

यो जाना न मिलेगा, पर तुम एक शर्त पर जा सकते हो। तुम सोते तक जाकर अपनी माँ को ताजा पानी ला दो। शाम तक मै तुम्हारे इन आलुओ का काम निबटा दूँगा। उस सोते की चढाई चढना मुझे थका देता है और यह सौदा बिलकुल उचित है।"

जोडी ने खुरपी नीचे रख दी और पानी की बाल्टियाँ लेने घर की तरफ दौड गया। पैनी ने पीछे से आवाज दी, "उन्हे भरकर मत उठाना। आखिर एक बच्चा जवान जितना बोझ नही उठा सकता।"

बाल्टियाँ खुद ही काफी भारी थी। वे सरु के पत्तो से बुनी हुई थी। बैगी सफेद सनावर से बनी हुई थी। जोडी ने उसे कन्धे पर रखा और सडक पर जल्दी-जल्दी चलने लगा। हिरण का बच्चा भी उसके पीछे-पीछे कुलाँचे भरने लगा। सोते पर छाया पड रही थी और शान्ति थी। यहाँ सवेरे और शाम के समय अधिक रोशनी होती थी और दोपहर को कम, क्योंकि ऊपर के घने पत्ते सूरज की धूप को रोक लेते थे। इस घनी दोपहरी मे पक्षी भी शान्त थे। सोते के चारो ओर की रेत मे वे आराम कर रहे थे। शाम से पहले ही वे फिर उड जाएँगे। तब कबूतर, लाल चिडियाँ आदि अनेक प्रकार के पक्षी आएँगे। वह जल्दी मे उस सोते की सीधी ढलान पर से फिसलना नही चाहता था। हिरण उसके पीछे-पीछे था। वे उछलते-कूदते जोहड के पास से निकले। हिरण पानी पीने के लिए झुक गया। जोडी इसी बात का स्वप्न देखा करता था।

उसने उसकी ओर झुककर कहा, "किसी दिन मै यही अपना घर बनाऊँगा और मैं तुम्हे एक हिरणी ढूंढ दूँगा। फिर हम सब इसी जोहड के किनारे रहा करेंगे।"

एक मेढक उछला और वह हिरण का बच्चा डरकर पीछे हट गया। जोडी हँस पडा और दौडकर ऊपर पीने वाले पानी की नाली तक पहुँच गया। वह पानी पीने के लिए उस पर झुका। हिरण का बच्चा भी उसके पीछे-पीछे पहुँच गया और वहीं पर अपना सिर नाली के बहाव के ऊपर-नीचे हिलाते हुए पानी पीने लगा। एक क्षण के लिए इसका सिर जोडी के गालो के पास आ गया और उसी की-सी आवाज मे जोडी पानी पीने लगा, मानो उसे एक साथी मिल गया हो। तब उसने अपना सिर उठाया, उसे

झटका दिया और पोंछ डाला। उस बच्चे ने भी अपना सिर उठाया, पर उसके मुँह से पानी की बूँदे टपक रही थी।

जोडी ने कुँएनुमा उस सोते के किनारे पर बँधी हुई रस्सी के सहारे बाल्टियाँ भरी। पिता की चेतावनी के बाद भी उसने उन्हे पूरा भर लिया। वह इसी तरह घर तक जाना चाहता था। उसने झुककर अपने कन्धे बेंगी के नीचे लगाए, पर वह उस बोझ के मारे सीधा खडा न हो सका। उसने उस पानी का कुछ हिस्सा गिरा दिया और तब उसे उठाकर आसानी से ढलान पर उतरने लगा। बेंगी उसके कमज़ोर कन्धो मे धँसी चली जा रही थी। उसकी कमर दर्द करने लगी। अभी वह आधे रास्ते भी न पहुँचा था कि उसे रुकना पडा और उसने कुछ पानी और गिरा दिया। तभी उस हिरण ने अपनी नाक जैसे किसी खोज मे एक बाल्टी मे डाल दी। सौभाग्य से उसकी माँ इस बात को नही जान सकेगी। वह इस बात को नही समझ सकती थी कि हिरण कितना साफ था और उसकी सुगन्ध कितनी मीठी थी?

जब वह घर पहुँचा तब तक वे सब खाने पर बैठ चुके थे। उसने बाल्टियो को टकी मे उलटा दिया और हिरण को अपनी जगह बाँध दिया। उसने पानी की सुराही ताज़ी बाल्टियो मे से भरी और मेज़ पर रख दी। अधिक मेहनत करने के कारण वह इतना अधिक थका और तपा हुआ था कि उसे कोई खास भूख महसूस नही हो रही थी। इस बात से वह प्रसन्न था और कुछ अधिक हिस्सा हिरण के लिए बचाने मे सफल हो गया। माँस भालू की कमर के हिस्से मे से लेकर बर्तन मे भूना गया था और बचाव के लिए मसाले से भरा हुआ था। लम्बे रेशो से युक्त यह माँस कुछ खुरदरा-सा था, पर फिर भी इसकी खुशबू जोडी को गाय के माँस से भी अच्छी लगी, मानो यह हिरण का ही माँस हो। उसने अपना पेट इसमे ही भरा और कुछ हरी सब्ज़ी साथ खा ली। बाकी बचे हुए मक्की के हलवे और दूध को हिरण के बच्चे के लिए बचा लिया।

पैनी बोला, "हमारा बडा सौभाग्य था कि ऐसा छोटा भालू ठीक हमारी नाक के नीचे यहाँ शिकार करने आया। अगर कही कोई बडा भालू होता तो इन दिनो हम उसका माँस न खा सकते। भालू आषाढ के दिनो मे मादा-रीछो से जोडी बाँधा करते हैं। और, जोडी, यह बात याद रखना,

जिन दिनों नर-रीछ जोडी बाँध रहा हो, उसका माँस खाने लायक नहीं होता। ऐसे रीछ का कभी शिकार मत करना, जब तक वह तुम्हें हानि न पहुँचाए।"

"क्यों ? वह माँस क्यों खाने लायक नहीं होता ?"

"इस बात का मुझे पता नहीं। पर एक बात साफ है कि जिन दिनों रीछ जोडी बाँध रहा होता है वह बहुत नीच और घृणित होता है।"

"जिस तरह लेम और ओलिवर नीच हैं ?"

"हाँ ! उनकी तरह से ही। उसका जिगर और तिल्ली बढ़ जाती है और ऐसा लगता है जैसे उसकी रग रग में घृणा भर जाती हो।"

तभी श्रीमतीजी बोल उठीं, "जंगली सुअर की भी यही हालत होती है। अन्तर यही है कि वह साल-भर ही इसी तरह रहता है।"

"अच्छा, पिताजी, यह नर-रीछ आपस में लड़ते भी हैं ?"

"क्यों नहीं ? वे बुरी तरह लड़ते हैं। मादा-रीछ दूर खड़ी होकर लड़ाई देखती रहती है।"

"वैसे ही जैसे ट्विक वैदरबी खड़ी थी ?"

"हाँ ! वैसे ही। और, तब वह जीतने वाले के साथ चली जाती है। फिर वे आषाढ़ के पूरे महीने साथ-साथ रहते हैं और कई बार अधिक भी। तब नर-रीछ दूर चला जाता है। बच्चे फाल्गुन में पैदा होते हैं और यह बात ध्यान रखना कि अगर कोई नर-रीछ चाहे तो वह इन बच्चों को भी खा जाता है। इसी कारण मुझे भालुओं से नफरत है। उनका प्यार स्वाभाविक नहीं होता।"

माँ जोडी से बोली, "आज फोरेस्टर परिवार की ओर जाते हुए तुम ध्यान रखना। जोडी बाँधते समय भालुओं से बचकर ही रहना चाहिए।"

पैनी बोला, "बस, अपनी आँखें खुली रखो। जब तक तुम उसे खतरे में नहीं डाल देते, वह तुम्हारा कुछ नुकसान न करेगा। यहाँ तक कि जिस साँप ने मुझे डसा, वह भी इसी कारण कि मेरे कारण वह खतरे में आकर डर गया था। नहीं तो वह कुछ न करता। वह तो भागने को जाना चाहता था।"

मां बोल पड़ी, "हां, तुम्हारे लिए तो यमदूत भी अपने को बचाना चाहता है।"

"हां, ठीक है। मनुष्य अपनी करतूत को देखता नही और हर बुराई को दूसरे पर मढ़ना चाहता है।"

सन्देह के साथ मां ने पूछा, "जोडी ने शर्त के मुताबिक अपना काम खतम कर लिया?"

पैनी ने दो टूक उत्तर दिया, "हां, उसने अपना वायदा पूरा कर दिया।"

उसने जोडी की ओर आंख मिचकाई। जोडी ने भी उसी तरह पलक झपकाई। उसके सामने सारी बात खोलने की जरूरत भी न थी। पुरुषों की आपसी बातों से उसे बाहर ही रखा जाता था।

जोडी ने पूछा, "मां, क्या अब मैं जा सकता हूं?"

"अच्छा, देखो! हां, शायद मुझे लकडियों की जरूरत पडेगी।"

"मां! अच्छा है, बहुत दूर की बात न सोचो। क्या तुम यह चाहती हो कि मुझे इतनी देर हो जाय कि लौटते हुए रीछ खा जायें?"

"तुम जान-बूझकर अंधेरा होने के बाद लौटोगे और चाहोगे कि मेरी बजाय कोई रीछ तुम्हे टकर जाय।"

तब तक उसने लकडियों का डिब्बा भर दिया और जाने के लिए तैयार हो गया। मां ने उसे कमीज बदलने और कंघी करने के लिए विवश किया। उसे इस देरी पर गुस्सा आ रहा था।

मां बोली, "मैं चाहती हूं कि उन मैले-कुचैले फौरेस्टर लोगों को भी यह पता चल जाय कि कुछ साफ रहने वाले लोग भी होते हैं।"

वह बोला, "किन्तु वे मैले नही रहते। वे बडे साफ और सीधे सादे तरीके से रहते हैं और जिन्दगी का मजा लेते हैं।"

मां ने घृणा से नाक सिकोडी। जोडी ने पिछवाडे से हिरण के बच्चे को खोला और उसे दूध-पानी वाली बाटी अपने हाथ मे थामकर खुराक दी। तब दोनों चल पडे। छौना कभी उनके आगे दौड जाता था, कभी पीछे। कभी वह इधर-उधर की झाडियों मे चक्कर काट आता था। उनके पास लौटते हुए वह बहुत चौकन्ना होता था। जोडी समझता था कि यह झूठ-मूठ का दिखाना है। कभी वह उसके साथ चलने लगता। जोडी को यह बात

सबसे अधिक पसन्द थी। जोडी उसकी गर्दन पर अपना हाथ बहुत हल्के से रख देता और एक ताल के साथ उसके चारो पैरो की आवाज से आवाज मिलाता हुआ चलने लगता। वह सोचने लगता, जैसे वह स्वय भी एक दूसरा छौना है। वह अपने घुटने झुकाकर उसकी चाल की नकल करने लगा और उसके जैसा ही चौकन्ना होकर अपना सिर पीछे की ओर फेंकने लगा। पास ही मटरो की एक बेल फैली हुई थी, उसमे से कुछ लम्बा हिस्सा काटकर उसने हिरण की गर्दन मे जजीर के रूप मे बाँध दिया। इसके खिले हुए लाल-लाल फूलो मे वह छौना इतना अच्छा लगने लगा, जोडी को लगा जैसे उसकी माँ भी उसकी प्रशसा करेगी। उसने निश्चय किया कि अगर यह उनके लौटने तक मुरझा गई तो वह लौटते समय एक-दूसरी ऐसी बेल उसके गले मे बाँध देगा।

उजाड खेत के पास ही एक चौराहा पडता था। यहाँ वह छौना एक मिनट को रुका और उसने अपने नथुने हवा मे उठा दिए। उसके कान खडे हो गए। वह अपना सिर हवा को सूँघने के लिए इधर-उधर घुमाने लगा। जोडी ने भी उसके साथ ही एक दिशा मे अपना सिर घुमा लिया और उधर से आने वाली एक तेज मधुर गध को अनुभव किया। उसे अपनी गर्दन के बाल खडे हुए अनुभव हुए। उसे एक हल्की-सी मसलने की आवाज आई और फिर दाँत किटकिटाने की। डर के मारे वह घर की ओर लौटने की इच्छा करने लगा। परन्तु साथ ही वह इस अचरज मे भी डूब गया कि आखिर आवाज किस चीज की थी? वह उसी चौराहे पर एक-दो कदम आगे बढकर झाँकने लगा। छौना भी उसके पीछे जरा-सा खडा रहा। जोडी एकाएक रुक गया।

दो नर रीछ उसी सडक पर आगे-आगे बहुत धीमे-धीमे बढ रहे थे। वे सौ गज दूर भी न रहे होंगे। आदमियो की तरह वे पिछली टाँगो पर खडे होकर कन्धे-से-कन्धा मिलाकर चल रहे थे। उनकी चाल नाच-जैसी थी, वैसे ही जैसे जोडियाँ बाँधकर नाच के समय होती है। वे एकदम ही लडने-वालों की तरह एक-दूसरे से उलझ गए और अगले पजे उठाकर एक दूसरे पर गुर्राते हुए एक-दूसरे का गला पकडने की कोशिश करने लगे। एक ने दूसरे के सिर पर अपना पंजा गडा दिया और उनकी गुर्राहट शोर मे भी

ऊँची हो गई। कुछ देर यह लडाई बहुत तेजी से चली। तब वे दोनो एक-दूसरे पर मुक्के मारते हुए और एक-दूसरे को धक्का देते हुए चलने लगे। किस्मत से हवा जोडी के अनुकूल थी। वे उसकी गन्ध न पा सके। वह भी उनके पीछे-पीछे सरकता हुआ बढने लगा। पर बीच की दूरी उसने कम न होने दी। वह उन्हे आँखो से ओझल न होने देना चाहता था। उसे उम्मीद थी कि वे किसी एक के खतम होने तक लडते रहेगे। पर उसे यह भी डर था कि कही लडाई खतम करके उनमे से कोई उसकी ओर न मुड पडे। उसे विश्वास हो गया कि वे काफी देर से लड रहे है और थक चुके हैं। पगडडी की धूल मे उसे खून के निशान भी मिले। उनके हमले धीमे पडते जा रहे थे। उनकी चाल भी धीरे-धीरे मन्द पडती जा रही थी। इसी समय उसने देखा कि एक मादा-रीछ तीन नर-रीछो के साथ झाडी मे से निकली। पग-डटी पर आकर वे सब चुपचाप एक कतार मे चलने लगे। लडने वाली जोडी ने एक बार अपने सिर उठाकर उनकी ओर देखा और तब वे उनके पीछे-पीछे चलने लगे। जोडी तब तक खडा देखता रहा, जब तक यह शानदार, गम्भीर और उत्तेजक जुलूस उसकी निगाहो से ओझल न हो गया।

वह वही से लौट पडा और फिर दौडकर उसी चौराहे पर आ गया। उसे वह हिरण का छौना कही भी न दिखाई दिया। उसने उसे पुकारा और वह सडक के किनारे की ही एक झाडी मे से निकलकर सामने आ गया। तब जोडी ने फौरेस्टर परिवार के घर की ओर जाने वाली सडक पकडी और उस पर भागता हुआ बढने लगा। खतरा टल गया था, पर उसे अपनी हिम्मत पर अचरज हुआ। अब वह नजारा सामने नही था। पर अगर फिर-फिर दुबारा मौका मिला, तो वह फिर भी ऐसा नजारा देखेगा। ऐसा मौका कम लोगो को ही मिलता है जिसमे वे पशुओ के अन्दरूनी जीवन की झाँकी ले सके।

वह सोचने लगा, 'मैंने आज एक अजब चीज देखी है।'

यह सचमुच अच्छी ही बात है कि आदमी ज्यो-ज्यो बढता जाय त्यो-त्यो नए-नए दृश्य और नई-नई आवाजें देखता और सुनता जाय, जैसे बक और उसके पिता ने देखी और सुनी थी। यही कारण था कि वह ऐसे आदमियो के बात करते होने पर पेट के बल लेटकर, घर मे या जंगल मे, उनकी बाते

सुनना अधिक पसन्द करता था। उन्होंने बहुत-सी अचरज की बातें देखी थीं। जिसने जितनी ही उम्र बिताई, उसने उतनी ही अजब बातें देखी थीं। यह सब सोचता हुआ वह चला रहा था। मानो कोई न दीखने वाला साथी उसके साथ चल रहा हो। अब उसके पास अपनी भी एक कहानी थी जिसे वह सर्दियों की रातों में आग के पास बैठकर दूसरों को सुना सकता था। उसका पिता उससे पूछेगा, "जोडी, जरा सुनाओ तो सही उस समय की बात, जब तुमने दो नर-भालुओं को सड़क पर लड़ते देखा था।"

फिर, फौडरविंग को भी वह यह सब बात सुना सकेगा। दोस्त का ध्यान आते ही वह दौड़ने लगा, ताकि जल्दी ही जाकर वह उसे अपनी कहानी सुना सके। वह उसे अचरज में डाल देगा। अगर वह अब तक भी बीमार होगा, तो उसके घर में, और अगर वह ठीक हुआ तो जंगल में, अथवा उसके पालतू जन्तुओं के पास वह उसे खोजने निकल जाएगा। हिरन का यह छौना उसके साथ-साथ चल रहा होगा। फौडरविंग का चेहरा इसे देखते ही एक अजीब चमक से चमक उठेगा। वह अपने मुड़े-तुड़े शरीर को इस छौने के पास झुका लेगा और अपना मुड़ा हुआ हाथ बड़े प्यार से फैला-कर इसे छूएगा। वह मुसकराएगा और देखेगा कि जोडी को इससे खुशी हुई है। तब बहुत देर बाद वह बोलेगा। जो कुछ भी वह कहेगा, वह चाहे अजीब ही होगा, फिर भी वह सुन्दर अवश्य होगा।

अब जोडी फौरेस्टर परिवार की जमीन की सीमा तक पहुँच गया था और जल्दी-जल्दी मकानों को पार करके आँगन में पहुँच चुका था। घर बहुत शान्त था। न चिमनी में से धुआँ उठ रहा था, न कहीं कुत्ते दिखाई दे रहे थे। केवल एक कुत्ता पीछे के कुत्तेखाने में से आवाज दे रहा था। ऐसा लगता था कि जैसे परिवार के सब व्यक्ति दोपहर की गर्मी से तंग आकर सो रहे हों। पर वे जब कभी भी सोते थे, तो घर में न समाकर बरामदे तक फैल जाते थे, बल्कि पेड़ों के नीचे भी सोते थे।

जोडी रुका और उसने आवाज़ दी, "फौडरविंग! मैं जोडी हूँ।"

शिकारी कुत्ता गुर्राया। [illegible] लकड़ी के फर्श पर [illegible] कुर्सी के खिस-कने की आवाज आई। बक दरवाजे पर आ खड़ा था। उसने जोडी की ओर देखा और अपने मुँह पर हाथ फेरा। उसकी आँखें [illegible] हुई

थी। जोडी को लगा जैसे वह शराब पिये हुए हो। वह बोल उठा, "मैं फौडर-विंग को देखने आया हूँ। मैं उसे अपना यह छौना दिखाने आया हूँ।"

बक ने अपना सिर हिला दिया जैसे वह शहद की मक्खियो या विचारो को उडा देना चाहता हो। उसने फिर से अपना मुँह पोछा।

जोडी फिर बोला, "मैं विशेष रूप से उसी के लिए आया हूँ।"

बक बोला, "पर वह तो मर चुका है।"

जैसे शब्दो का कोई अर्थ ही नही था। उसके सामने वे कुछ सूखे पत्तो की तरह आए और हवा मे उड गए। परन्तु उनके गुजरते ही एक भय और ठण्डापन-सा उसके दिल मे समा गया। वह कुछ देर के लिए जड-सा बन गया।

बोला—"मैं उसे देखने आया हूँ।"

"तुम बहुत देर से आए हो। मैं तुम्हे खुद ले आता, अगर कही समय होता। डाक्टर तक को लाने का समय नही था। एक मिनट पहले तक वह ठीक साँस ले रहा था और अगले ही मिनट वह समाप्त हो चुका था। वह ऐसे ही मिट गया, जैसे किसी जलती हुई मोमबत्ती को किसी ने बुझा दिया हो।"

जोडी और बक एक-दूसरे की ओर जड-से बने ताकते रह गए। जोडी को तो जैसे लकवा मार गया हो। उसे कोई दुख महसूस न हुआ। पर अन्दर-ही-अन्दर एक अजीब उदासी और बेहोशी-सी समा गई। फौडरविंग न मरा था, न जिन्दा था, बस वह कही रहा नही था।

बक ने भरे गले से कहा, "आओ, तुम उसे देख सकते हो।"

पहले तो बक ने कहा कि फौडरविंग रहा नही और अब वह कहता है अन्दर आने और देखने को। जोडी को दोनो ही बातें विरोधी-सी लगी। बक अन्दर की ओर मुड पडा। उसने मुडकर जोडी की ओर देखा। उसकी सूनी आँखो ने जोडी को जैसे बेबस कर दिया। उसकी एक एक टांग बडे बोझ के साथ उठने लगी और वह सीढियाँ चढने लगा। बक के पीछे-पीछे वह घर मे चला आया। सभी पुरुष इकट्ठे बैठे थे। चुपचाप, शान्त और भरे से बैठे उन लोगो मे जैसे अनजाने ही एकता समा गई थी। ऐसा लगता था जैसे एक ही काली चट्टान के बहुत-से टुकडे उनके रूप मे बिखर गए थे। पिता ने उसकी ओर सिर घुमाकर उसे देखा, मानो वह एक अजनबी था

और फिर सिर घुमा लिया। लेम और मिलव्हील ने भी उसकी ओर देखा, पर और कोई न हिला। जोडी को लगा जैसे वे सब उसे एक ऐसी दीवार के पार से देख रहे हों जो उसे दूर रखने के लिए ही बनाई गई है। उनमें से कोई भी उसकी नजर से नजर न मिलाना चाहता था। बक ने उसका हाथ पकड़ा और उसे बड़े सोने वाले कमरे में ले चला। उसने कुछ कहना चाहा पर उसकी आवाज टूट गई। वह रुका और उसने जोडी के कन्धे को दबाया।

बोला, "धीरज रखना।"

फोडरविंग सामने लेटा हुआ था। उसकी आँखें बन्द थीं और वह एक बड़े भारी बिस्तर पर बहुत ही छोटा-सा बनकर ऐसे पड़ा था, जैसे खो गया हो। वह इस समय उससे भी छोटा था, जितना हर रोज सोते हुए लगता था। उस पर एक चादर डाली हुई थी, जो कि उसकी ठोढ़ी के पास से मोड़ी हुई थी। उसकी बाँहें चादर के बाहर, उसकी छाती पर, मोड़कर रखी हुई थीं। हथेलियाँ बाहर को मुड़ी-सी और भद्दी सी दीख रही थीं। जोडी यह सब देखकर घबरा उठा। बिग की माता चारपाई के सिरहाने बैठी हुई थी। उसने अपना सफेद अंगरखा मुख पर ताना हुआ था और वह आगे-पीछे झुक रही थी। उसने वह अंगरखा नीचे गिरा दिया और बोली, "मेरा बेटा चला गया। हाय, प्यारा अपंग बेटा!"

उसने फिर वैसे ही अपने को ढक लिया और फिर से अपने दोनों पाँवों की ओर झुकने लगी। वह बोल रही थी, "परमात्मा सचमुच बहुत निर्दयी है।"

जोडी की इच्छा हुई कि वह यहाँ से भाग जाय। उस तकिये पर पड़ा, हड्डियों का ढाँचा वह चेहरा उसे डरा रहा था। यही फोडरविंग था। पर अब वह कहाँ था? बक उसे बिस्तर के पास तक ले गया और बोला, "वह अब सुन तो न सकेगा, पर फिर भी इससे तुम कुछ बात करो।"

जोडी का गला बोलने को तैयार हुआ, पर कोई शब्द बाहर न आ रहा था। उसे लगा जैसे फोडरविंग एक मोमबत्ती की तरह मोम से ही बना हुआ था। जोडी को अचानक ही उसका यह रूप पहचाना-सा लगा। वह फुसफुसाया, "ओ!" पर पुकार उन शब्दों में रुक गई। उसका कण्ठ सूखा

कडा पड गया, जैसे किसी रस्सी ने उसे जकड दिया हो। फौडरविंग की चुप्पी सही न गई। अब उसने समझा कि मौत क्या है ? मौत एक चुप्पी है, जो कोई उत्तर नही दे सकती। अब विंग उससे कभी भी बोल नही सकेगा। वह मुडा और उसने अपना सिर बक की छाती मे छिपा दिया। दो बडी-बडी बाँहो ने उसे थाम लिया और वह वैसे ही कुछ क्षण खडा रहा।

बक बोला, "मैं जानता था कि तुम्हें यह सब डरावना और घिनौना लगेगा।"

वे कमरे से बाहर निकल आए। पिता ने उसे इशारा किया और वह उनके पास चला गया। बूढे आदमी ने उसकी बाँह थपथपाई और अपनी अंगुली सब बैठे हुए लडको की ओर घुमाते हुए कहा, "क्या यह अजब बात नही है कि इन सब मे से एक भी न उठा ? चला वह गया जिसे हम किसी भी भाँति जाने नही देना चाहते थे और वह बेचारा जिसकी न कोई कीमत थी और जिस पर न किसी का ध्यान था।"

यह कहकर पिता फिर से अपनी आरामकुर्सी पर ही पड़ गया और कुछ सोचने लगा। जोडी के वहाँ रहने से जैसे सभी को दुख हुआ। वह बाहर आँगन मे चला गया और घर के पीछे की ओर निकल गया। यहीं पर फौडरविंग के पशु और पक्षी बिना देख-भाल के पडे थे। एक पाँच महीने का भालू का बच्चा भी वही बँधा था, जो इसी बीमारी मे उसकी प्रसन्नता के लिए लाया गया था। यह एक चक्कर-सा बनाकर धूल मे घूम रहा था। घूमते-घूमते इसकी जजीर खूँटे के चारो ओर लिपटती गई और अन्त मे यह खूँटे पर ही जकडा-सा रह गया। इसकी पानी पीने की बाल्टी उलटी हुई खाली पडी थी। जोडी को देखते ही पीठ के बल लेटकर वह मचलने लगा और आदमी के बच्चे की तरह रोने लगा। उधर गिलहरी खूब उछल-कूद मचा रही थी। उसके पिंजरे मे भी न भोजन था, न पानी। कगारू अपने पिंजरे मे सो रहा था। 'प्रीचर' नाम का लाल पक्षी अपनी अच्छी टाँग के बल पर डटा हुआ अपने पिंजरे के तले पर चोंचें मार रहा था। पर रैकून का कहीं पता नही था।

जोडी को पता था कि फौडरविंग इनका दाना-पानी कहाँ रखता था ? उसके भाइयो ने उसे एक बडा टिब्बा बना दिया था और वे उसे हमेशा

भर भी देते थे। जोडी ने पहले छोटे छोटे जन्तुओं को खिलाया और पिलाया। फिर वह भालू के बच्चे के पास बहुत सावधान होकर पहुँचा। यह बहुत ही छोटा और गोल-मटोल था। तब भी जोडी यह निश्चय न कर सका कि कब यह अपने पंजों का प्रयोग करने लगेगा? यह प्यार से गुर्राने लगा और जोडी ने अपना एक हाथ उसकी ओर बढ़ाया। उसने अपने चारों पंजों से उसे पकड़ लिया और बुरी तरह चिपट गया। उसके कन्धों से वह अपनी काली नाक रगड़ने लगा। उसने उसे खोला और उसकी जंजीर को ढीला किया, तब वह उसके लिए पानी लाया। वह उसे एकदम पीने लगा और अन्त में थोड़ा सा पानी शेष रह जाने पर इसने अपने अगले पंजों से, मनुष्य की ही तरह, बर्तन को पकड़ लिया और पानी को मुँह में उँडेल लिया। इस बात को देखकर जोडी हँस पड़ता, यदि उसका दिल उस समय भारी न होता। पर तो भी उसे इस बात से आनन्द मिला कि वह बिचारे पालतू जन्तुओं को सुख दे रहा था, जो उन्हें अपने स्वामी से कभी दुबारा न मिल सकेगा। वह दुःख में डूबकर अचरज करने लगा कि इन सबका क्या होगा?

वह कुछ खोया-सा उनसे खेलता रहा। फोडरविंग के साथ उनसे खेलने में जो कभी उसे खुशी हुई थी, वह अब नहीं रही थी। थोड़ी देर में प्रीचर नाम का वही पुराना रैकून जंगल से अपनी अजीब और भद्दी चाल में आया। उसे पहचानते ही उसकी टाँगों पर से होते हुए वह कन्धे पर चढ़ गया और अपनी तीखी तथा दुःख-भरी आवाज में चिल्लाने लगा। अपनी पतली-पतली चंचल अँगुलियों से वह उसके बालों से खेलने लगा। इसी समय उसे फोडरविंग की याद बहुत अधिक आई और वह वहीं पेड़ के तने पर बैठकर बार-बार अपने पैर पत्तों पर पटकने लगा।

धीरे-धीरे वह उस हिरण के छौने के लिए उसकी चाह से मन में बेचैन हो गया। वह उठा और कुछ मूँगफलियाँ रैकून के लिए ले आया ताकि वह कुछ देर उनमें उलझा रहे। तब वह छौने को ढूँढने निकला। वह उस छोटी सी झाड़ी के पीछे छिपा हुआ था, जहाँ से वह सब कुछ देख सकता था। जोडी ने सोचा कि इसे प्यास भी लगी होगी। इसलिए भालू के बर्तन में से पानी लेकर वह उसके पास आया। छौने ने उसको सूँघा परन्तु पिया नहीं। उसकी इच्छा हुई कि [illegible] मुट्ठी [illegible]

इसे भी खिला दे। पर वह यह सोचकर रुक गया कि इसके दाँत यह चबा न सकेंगे और साथ ही ऐसा करना ईमानदारी भी न होगी। वह एक सनावर के वृक्ष के नीचे छौने को लेकर बैठ गया। इस समय उसे जितनी शान्ति अनुभव हुई, वह बक की बाँहो मे खडे होने पर भी नही हुई थी। वह सोचने लगा कि फोडरविंग के न रहने की वजह से उसका प्यार इन जन्तुओ मे कम हो गया है या इस छौने की वजह से? क्योकि अब उसे सारा आनन्द इस छौने से ही मिल जाता था।

वह छौने से बोला, "मै तुम्हे इन सबके और रीछ के बदले मे भी नही दूँगा।"

उसके हृदय मे वफादारी की एक भावना-सी भर गई, क्योकि अब वह इस छौने के बदले अपने प्यार को उन जन्तुओ के लिए देने को तैयार न था, जिन्हे कभी वह बहुत अधिक चाहता था।

वह शाम लम्बी होती जा रही थी। उसे लगा कि उसका काम अभी भी बाकी हो। यद्यपि फोरेस्टर लोग उसकी ओर ध्यान नही दे रहे थे तब भी उसे यह लगा कि वे चाहते है कि वह अभी वही रहे। अगर वे चाहते कि वह चला जाय तो बक उसे विदाई अवश्य देता। सूर्य पेडो के पीछे उतर गया। उसकी माँ अवश्य गुस्से होगी पर तब भी वह किसी बात की प्रतीक्षा मे था। वह स्वय को विस्तर मे मरे पडे मोम के समान सफेद पटे हुए फोडरविंग मे बधा हुआ पाता था। वह उस बन्धन के टूटने की घडी की इन्तजार कर रहा था। साँझ के धुंधलके मे परिवार के सब लोग एक-एक करके कमरे से बाहर निकले और अपने-अपने दैनिक काम निबटाने के लिए चुपचाप चले गए। चिमनी से धुआँ उठने लगा। जलती हुई चीड की गन्ध तले जाते हुए माँस की गन्ध से मिलकर एक हो गई थी। बक गायो को पानी पिलाने जा रहा था। जोडी उनके पीछे हो लिया और बोला, "मैने भालू के बच्चे, गिलहरी और दूसरे सब जन्तुओ को दाना-पानी दे दिया है।"

बक ने एक बछडी को एक डडे से छुआ और बोला, "मुझे दिन मे एक बार याद आई थी, पर तभी फिर से भूल गया।"

जोडी बोला, "क्या मै कुछ सहायता करूँ?"

"हम लोग यह काम करने के लिए काफी है। हाँ, तुम माँ के पास जा

सकते हो, जैसा कि फौडरविन की आदत थी। वहाँ आग धधकाना और दूसरे छोटे-मोटे काम करते रहना।"

बडा अनमना-सा होकर वह घर मे घुस गया। उसने विग वाले कमरे की ओर निगाह भी न फेरी। यह लगभग बन्द ही था। माँ इस समय भट्टी पर थी। उसकी आँखे लाल पड गई थी। वह उन्हे अपने कपडे से पोछने के लिए हर कुछ क्षण बाद रुक जाती थी। उसके उलझे हुए बाल पसीने से गीले थे। पर फिर भी पीछे की ओर सलीके से मुडे हुए थे, मानो कोई मेहमान आया हो।

वह बोला, "मैं सहायता के लिए आया हूँ।"

वह कडछी हाथ मे लिए हुए मुडी और बोली, "मैं यहाँ खडी-खडी तुम्हारी माँ के विषय मे सोच रही थी। जितने मेरे बच्चे ज़िन्दा हैं, इतने तो वह दफना चुकी है।"

वह उदास-सा होकर आग धधकाने लगा। उसकी बेचैनी बढती गई, पर वह जा न सकता था। भोजन उसके अपने परिवार जैसा ही हल्का था। माँ ने उदासी मे ही मेज़ लगा दी।

वह बोली, "भई, मैं कॉफी बनाना भूल गई। वे लोग कॉफी ज़रूर पीएँगे।" उसने बर्तन अँगीठी पर रख दिया। वे सब भाई एक-एक करके आए और पीछे की ओर जाकर उन्होने अपने हाथ-मुँह धोए तथा बालो और दाढियो मे कघी की। वे न आपस में बोल रहे थे, न कोई हँसी-मजाक कर रहे थे और न ही किसी प्रकार का शोर ही कर रहे थे। वे मेज़ के पास इस तरह जमा हुए, जैसे कोई मनुष्य स्वप्न मे खोया हुआ हो। उनके पिता सोने के कमरे से बाहर निकले और उसकी ओर अचरज से देखने लगे और पूछ बैठे, "क्या यह विचित्र नही है ··?"

जोडी माँ के साथ बैठा। माँ ने सबको माँस परोसा और साथ ही दुख मे चिल्ला पडी, "हे भगवान! मैंने तो उसे हमेशा की भाँति खाने वालो मे गिना था।"

बक बोला, "माँ, अब जोडी उसका हिस्सा खाएगा और हो सकता है वह भी मेरे जैसा ही बडा हो जाय। क्यो, बच्चे!"

सारा परिवार खाने मे जुट गया। थोडी देर तक तो वे भूख के

कारण खाते रहे, पर बाद मे उनका जी मिचलाने-सा लगा और उन्होने अपनी थालियां सरका दी। मां बोल उठी, "आज मैं बर्तनसाफ न कर पाऊँगी और न तुममे से कोई करेगा। कल सवेरे तक बर्तनो को ऐसा ही इकट्ठा कर दो।"

जोडी को लगा कि छुटकारा सवेरे ही मिल पाएगा। मां ने उसकी थाली की ओर देखा और बोली, "बच्चे! न तुमने बिस्कुट खाए और न दूध पिया। क्या कुछ खराबी है?"

"नही, मैंने अपने छौने के लिए इन्हे बचाया है। मैं हमेशा ऐसे ही करता हूँ।"

वह बोली, "हाय! कितना सीधा बच्चा है!" वह फिर से रोने लगी, "क्या मेरा बेटा तुम्हारे छौने को देखना पसन्द न करता? वह इसके विषय मे खूब बातें करता था। कहता था कि जोडी को तो एक भाई मिल गया है।"

जोडी को लगा कि उसका गला भारी हो आया हो। उसने निगलते हुए कहा, "यही कारण है मेरे यहां आने का। मैं उससे अपने इस छौने का नाम रखवाने आया था।"

मां बोली, "क्यो नही! उसने इसका नाम रखा था। जब उसने अन्तिम बार बातें की तो इसे नाम भी दिया था। उसने कहा था—छौने की पूंछ एक झण्डे-जैसी होती है, जैसे वह एक छोटा-सा सफेद झण्डा हो। अगर मेरे पास अपना छौना होता, तो मैं उसे 'फ्लैग' नाम से ही पुकारता।"

जोडी ने दोहराया, "फ्लैग!"

उसे लगा वह फूट पड़ेगा। फौडरविंग उसके बारे मे बातें करता रहा और उसने उसके छौने का नाम रखा। उसके उस दुख मे अनजाने ही एक खुशी मिल गई। इससे उसे राहत भी मिली पर साथ ही दुख भी असह्य हो गया।

वह बोला, "मुझे जाकर उसे खिलाना चाहिए। मुझे 'फ्लैग' को खिलाना चाहिए।"

वह अपनी कुर्सी से उठकर दूध का प्याला तथा बिस्कुट हाथ में

लिए बाहर चला गया। उसे लगा कि फौडरविंग अब भी जीवित है और उसके पास ही है। बाहर आते ही उसने पुकारा, "फ्लैग ! इधर आओ !"

छौना उसके पास आया। उसे लगा जैसे यह हमेशा से अपना नाम जानता था। उसने दूध मे विस्कुट भिगोए और उसे खिलाए। उसके होठ कोमल और गीले थे। जोडी वापस कमरे मे गया और फ्लैग भी उसके पीछे-पीछे घुस गया। उसने पूछा, "क्या फ्लैग अन्दर आ सकता है ?"

"हाँ, उसे अन्दर ले आओ ! उसका स्वागत है !"

वह कोने मे पडे फौडरविंग के तिपाए स्टूल को लेकर बैठ गया। पिता बोल उठे, "यह उसके लिए खुशी की ही बात होगी कि आज तुम उसके पास रात-भर बैठने के लिए आए हो।"

जोडी ने सोचा, 'यही बात थी, जो उससे उम्मीद की जाती थी।'

पिता फिर बोले, "यह किसी भी रूप मे उचित न होता कि तुम्हारे न होने पर उसे हम सवेरे दफना देते। तुम्हारे सिवाय उसका कोई मित्र न था।"

जोडी का ध्यान अपने माता-पिता की ओर गया। उसे उनकी दशा पर चिन्ता हुई, पर इतनी जरूरी बात के सामने वहाँ जाना उतना महत्त्व न रखता था। माँ देख-भाल के लिए कमरे के अन्दर गई। छौना बारी-बारी से कमरे मे बैठे सभी के पास घूम गया और, हरेक को सूँघकर, अन्त मे फिर जोडी के पास ही बैठ गया। अँधेरा कमरे मे भरता गया और उसने दुख को कुछ और गहरा कर दिया। वे दुख की घनी छाया मे बैठे थे, जिसे केवल समय की हवा ही हटा सकती थी।

नौ बजे बक उठा और उसने एक मोमबत्ती जलाई। लगभग एक घटे बाद दरवाज़े पर किसी घुडसवार के रुकने की आवाज़ आई। यह पैनी था। उसने लगाम सीज़र के सिर पर ही रखी और घर मे आ गया। पिता ने घर के बुजुर्ग के रूप मे उठकर उसका स्वागत किया। पैनी ने सबके उदास चेहरो को देखा। बूढे पिता ने सोने वाले कमरे के अधखुले दरवाजे की ओर इशारा किया।

पैनी बोला, "हाय ! बच्चा ?"

पिता ने स्वीकृति मे सिर हिला दिया।

पैनी ने फिर पूछा, "गुज़र गया या गुज़र रहा है ?"

"गुज़र गया।"

"मुझे यही डर था। मुझे यह लगा था कि केवल इसी कारण जोडी वहाँ रुका होगा।"

उसने अपना हाथ बूढ़े पिता के कन्धे पर रखा और बोला, "मुझे आपसे सहानुभूति है।"

फिर वह बारी-बारी से प्रत्येक से कुछ बोला। तब उसनें लेम की ओर देखकर पूछा, "क्या हाल-चाल है, लेम ?"

लेम हिचकिचाया और बोला, "कहो, तुम्हारे कैसे हाल-चाल है ?"

मिलव्हील ने उसके लिए कुर्सी दी।

पैनी ने पूछा, "यह सब कब हुआ ?"

"बस आज सवेरे ही।"

"माँ सवेरे जब नाश्ते के लिए उसे देखने गई।"

"वह दो-एक दिन तो बहुत अधिक बीमार रहा। फिर हम डाक्टर के पास जाने की सोच ही रहे थे, कि वह ठीक होता नज़र आया।"

पैनी पर उत्तरों की जैसे बौछार होने लगी। इन शब्दों ने अन्दर-ही-अन्दर बढ़ता हुआ घाव जैसे धोकर साफ कर दिया। वह गम्भीर बनकर सुनता रहा और कभी-कभी अपना सिर हिलाता रहा। वह एक छोटी चट्टान के समान था, जिस पर उनका दुख टकरा रहा था। जब वे सब अपनी बात कहकर चुप हो गए तब पैनी ने अपने दुखों की बात कहनी शुरू की। यह उसने केवल इतना याद दिलाने के लिए कहा कि कोई भी मनुष्य दुख मे बचा नहीं है। जब सब उसे सहते आए हैं, तो अब भी हरेक सह सकता है। उसने उनके दुख मे हिस्सा बँटाया और वे उसके दुख के भागीदार बन गए और इस प्रकार अपना दुख बँटकर हल्का हो गया।

बक बोला, "शायद जोडी कुछ देर उसके साथ अकेला बैठना चाहेगा।"

जोडी कमरे मे घुसते ही डर-सा गया, क्योंकि उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर दिया था। उसे लगा कि कोने मे कोई काली-सी चीज़ बैठी है। यह चीज़ उसे उस रात भी जंगल मे फैलती हुई दिखाई दी थी, जिस रात उसके पिता को नाग ने डसा था। यह मौत थी। उसने पूछा, "मगर मैं 'फ्लैग' को अन्दर

ले लूं तो ठीक होगा ?"

उन्होने इस बात को पसन्द किया और छौना उसके पास पहुँचा दिया गया। वह कुर्सी पर बैठ गया, जो माता के बैठने के कारण अब तक गर्म थी। उसने अपनी गोदी मे हाथ रख लिए। उसका ध्यान उस तकिए पर पडे चेहरे की ओर खिच गया। बिस्तरे के सिरहाने की ओर पडी एक मेज़ पर एक मोमबत्ती जल रही थी। उसकी लपट के हिलते ही ऐसा लगता जैसे फौडरविंग की पलके फडकी हो। एक हलका-सा ठण्डी हवा का झोका सारे कमरे को कँपा गया। चादर कुछ इस तरह उठी मानो फौडरविंग सांस ले रहा है। कुछ देर बाद यह डर खतम हो गया और अब वह आराम से कुर्सी पर बैठ गया। पीछे की ओर झुकने पर उसे फौडरविंग का चेहरा रोज़ जैसा ही लगने लगा, पर फिर भी यह उस चेहरे से भिन्न था, जिसे वह रोज़ देखता था। मोमबत्ती की रोशनी मे पडा यह चेहरा जैसे गालो से रहित था। उसे लगा जैसे फौडरविंग बाहर रैकून के साथ खेल रहा हो, और जैसे वह कुछ ही देर मे कमरे मे अपनी लडखडाती चाल मे घुस आएगा और तब जोडी उसकी आवाज़ सुन सकेगा। उसकी निगाह एक-दूसरे पर रखे हुए उन मुडे और टेढे हाथो पर गई। उनकी शान्ति और जड़ता उसे अजीब-सी लगी। वह मन-ही-मन मे चीख पडा।

काँपती हुई मोमबत्ती जैसे उस पर जादू का असर करने लगी। उसकी आँखो मे धुँधलापन घिरने लगा। फिर भी उसने अपने को जगाए रखने की कोशिश की। पर कुछ ही देर बाद उसकी आँखें खुली न रह सकी। मौत और चुप्पी के साथ उसकी नीद एक हो गई थी।

वह सुबह की पहली किरणो के साथ उठा। उसका दिल भारी था। हथौडे चलने की आवाज़ बाहर से आ रही थी। उसे किसी ने बिस्तर के पाँयते पर सुला दिया था। वह एकदम ही उठ बैठा। फौडरविंग अपने बिस्तर पर नही था। वहाँ से वह बडे कमरे मे लाया जा चुका था। जोडी ने कमरा खाली देखा और बाहर आ गया। पैनी चीड के ताज़ा बनाए एक सन्दूक पर ढँकना ठोक रहा था। जोडी से किसी ने बात न की। पैनी ने अन्तिम कील भी ठोक दी और पूछा, "सब तैयार है ?"

उन सबने सिर हिलाया। बक, मिलव्हील और लेम आए। बक बोला,

"मैं इसे अकेला ही उठा लूंगा।" उसने उस सन्दूक को अपने कन्धे पर रख लिया। पिता और गैबी वहां नही थे। बक दक्षिण की हरियाली की ओर चल पडा। उसके पीछे-पीछे मां चली, मिलव्हील ने मां की बाँह थामी हुई थी। बाकी लोग पीछे-पीछे चलने लगे। वे सब धीमे-धीमे उस हरे मैदान मे पहुँचे। जोडी को याद आया कि यही एक सनावर के पेड पर अगूर की बेल का एक झूला फौडरविग ने बनाया हुआ था। उसने देखा कि बूढे पिता इस झूले के पास ही खडे है। उनके हाथ मे बेलचे पकडे हुए थे। धरती मे एक गढा खोदा गया था। पास की खुदी पडी मिट्टी लकडी की खाद मिली होने से काली पड गई थी। वह हरा मैदान सूर्य की चमकीली किरणों के बिछ जाने से जगमगा उठा था। बक ने कफन उठाया और उसे गढे मे रख दिया। वह पीछे हट आया। सभी फौरेस्टर लोग हिचकिचाए। पैनी बोला, "पहले पिता।"

पिता ने अपना बेलचा उठाया और सन्दूक पर मिट्टी डाली। तब उसने यह बेलचा बक को पकडा दिया। बक ने भी कुछ बेलचे मिट्टी फेकी। तब बारी-बारी से सब भाइयो ने वैसा ही किया। थोडी-सी मिट्टी बच गई थी। सहमे हुए-से जोडी ने अपने हाथ मे बेलचा लेकर चुपचाप वह मिट्टी उस ढेर पर ही डाल दी। सभी लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

पिता बोले, "पैनी, तुम्हारा पालन ईसाई ढग पर हुआ है। अच्छा होगा यदि तुम कुछ शब्द कहो।"

पैनी कब्र तक गया अपनी आँखे बन्द करके और सूर्य की ओर मुँह करके खडा हुआ। फौरेस्टर लोगो ने अपने सिर झुका लिए।

"हे सर्वशक्तिमान भगवान्! हम मूर्ख और नाशवान मनुष्य क्या जाने कि क्या ठीक है और क्या गलत? अगर हम लोगो के वश मे होता तो ऐसे गरीब बच्चे को अपग हालत मे हम जन्म न देते और न उसके मन को दुख देते। हम तो उसे भी उसके और भाइयो की तरह सीधा और ऊँचा तथा जीने और काम करने लायक बना देते। पर भगवान् तुम्हारी लीला कुछ न्यारी ही है। तुमने उसे जगली जन्तुओ के साथ खेलने के लायक बना दिया। उसे तुमने एक खास प्रकार की बुद्धि दी। वह जानकार और सभ्य था। पक्षी उसके पास आते थे। जानवर उसके पास बेरोक-टोक घूमते

थे। और वह बनबिलाव तक को अपने हाथ मे प्यार से पकड सकता था।

"अब तुमने यह ठीक समझा कि उसे ऐसे लोक मे ले जाओ कि जहाँ मन और शरीर का टेढा होना भी कोई अर्थ नही रखता। हमे इस बात की प्रसन्नता है कि तुमने उसके मुडे-तुडे अगो से निकालकर उसे सीधा कर दिया है। हमे यह सोचकर भी खुशी है कि वह अब हमारे चारो ओर हमारी ही तरह जैसे घूम-फिर सकेगा। पर भगवान्, इतना और करना कि उसे कुछ लाल चिडिया, एक गिलहरी, एक रैकून और एक कगारू आदि अगर हो सके तो साथ रखने के लिए दे देना। यही चीजे उसे यहाँ प्यारी थी। हम यहाँ अपने को अकेला अनुभव करते है। पर हम जानते है कि अगर उसे यह चीज़े वहाँ मिल गई तो वह अपने को अकेला अनुभव नही करेगा। शायद इन कुछ जन्तुओ को स्वर्ग मे ले जाने की प्रार्थना अधिक न होगी। तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो। आमीन !"

बाकी सबने भी 'आमीन' कहा। सबके चेहरे पर पसीना आया हुआ था। वे सब बारी-बारी से पैनी के पास आए और उसका हाथ छुआ। रैकून दूर से दौडता हुआ आया और नई पलटायी हुई मिट्टी के ऊपर दौडने लगा। वह चिल्लाया और बक ने इसे अपने कन्धे पर बैठा लिया। फौरेस्टर लोग मुडे और अपने घर की ओर चल पडे। उन्होने सीज़र पर ज़ीन कस दी। पैनी चढा और उसने जोडी को पीछे बिठा लिया। जोडी ने छौने को आवाज दी और वह झाडियो मे से निकलकर आ गया। बक घर के पीछे से आया। उसके हाथ मे एक छोटा-सा तारो से बना पिंजरा था। इसमे लगडा लाल पक्षी—फ्रीचर—था। वह बोला, "मैं जानता हूँ कि तुम्हारी माँ तुम्हे कोई भी जन्तु न रखने देगी, पर यह बेचारा पक्षी रोटी के एक छोटे-से टुकडे से ही पेट भर लेता है। इसके बहाने तुम उसे याद कर लोगे।"

"धन्यवाद ! अच्छा, विदा !"

"विदा।"

सीज़र घर की तरफ दौडने लगा। वे कुछ न बोले। धीरे-धीरे घोडे ने चाल धीमी कर दी। पर पैनी ने उसे कुछ न कहा। दिन काफी चढ आया था। उस छोटे-से पिंजरे को लटकाते हुए लाने से जोडी की बाँह दुखने लगी थी। अपने खेत सामने ही दीखने लगे थे। उसकी माँ घोडे की टाप

सुनकर दरवाजे पर आ गई थी।

वह बोली, "डराने के लिए एक ही काफी था। तुम तो दोनो वही रुक गए।"

पैंनी उतर आया और जोडी भी नीचे खिसक आया। पैंनी बोला, "धीरज धरो! हमारा एक फर्ज था। बेचारा फौडरविंग मर गया था और हमे उसे दफनाने मे सहायता करनी थी।"

वह बोली, "अच्छा, पर यह बात लडाकू लेम के साथ होनी चाहिए थी।"

पैंनी ने घोडे को चरने के लिए छोड दिया और घर मे लौट आया। नाश्ता तैयार था, पर अब तक ठण्डा हो चुका था।

वह बोला, "चिन्ता मत करो। केवल कॉफी गर्म कर दो।"

उसने खोये-खोये-से नाश्ता खाया। बोला, "मैंने किसी परिवार को कोई भी दुःख इतनी गहराई के साथ लेते नही देखा।"

वह बोली, "मुझे मत सुनाओ कि उन उजड्ड लोगो मे से किसी ने ऐसा किया।"

पैंनी बोला, "ओरी! एक दिन आएगा जब तुम यह जान सकोगी कि मनुष्य का दिल सदा एक-सा होता है। दुख हर जगह एक-सी चोट करता है। फर्क यही है कि अलग-अलग जगहो पर अलग-अलग निशान छोडता है। मुझे लगता है कि तुम पर इन दुखो ने असर नही छोडा। हाँ! तुम्हारी जीभ तीखी कर दी है।"

वह एकदम ही बैठ गई और मरी-सी बोली, "ऐसा लगता है कि केवल कठोर होकर ही मैं इन सब दुखो को सह सकी हूँ।"

पैंनी अपना नाश्ता छोडकर उठ खडा हुआ और उसके पास जाकर बालो को सहलाता हुआ बोला, "मैं समझता हूँ! थोडा-सा दूसरो के लिए भी उदार बनो।'



# 18

सावन के महीने मे गर्मी बहुत बढ गई थी। परन्तु आराम का महीना भी यही था। कुछ विशेष काम करने को नही रह गया था। जो था भी, उसके लिए जल्दी मचाने की ज़रूरत न थी। बारिश हो चुकी थी और मक्की अब पक रही थी। धीरे-धीरे वह सूखने लगी थी और अब इसे काटकर ठीक किया जा सकेगा। पैनी को लगा कि इस बार उसकी फसल बहुत अच्छी होगी और कम-से-कम एक एकड मे छ मन से कम अनाज न होगा। आलू की लताएँ भी खूब बढ रही थी। मुर्गी के चूजो आदि के लिए भी दाना काफी हो गया था। चूजो की ही एक और खूराक सूरजमुखी के रूप मे बाढ पर काफी मात्रा मे उग आई थी। मटर भी खूब उग चुके थे। मॉस के साथ प्रतिदिन के भोजन मे वे ही रेशेदार वनस्पति के रूप मे बरते जाते थे। मटरो का भूसा भी सर्दियो-भर चारे आदि का काम देगा। पिंडार अधिक नही हो पाई थी, पर पॉवकटे भालू द्वारा बेट्सी सूअरी के मारे जाने के बाद से और कोई सूअरी तो थी नही, जिसके लिए पिंडार की अधिक आवश्यकता हो। उनके

सूअर एक दिन चुपचाप ही लौट आए थे और उनके साथ ही थी एक छोटी सूअरी। उसके निशान फौरेस्टरो के निशानो की जगह वैक्स्टरो जैसे कर दिये गए थे। पैंनी ने इसे सुलह की भेट के रूप मे स्वीकार कर लिया था।

पौडा गन्ना काफी ऊँचा खडा हो चुका था। वैक्स्टरो का ध्यान पतझड और पाले की ओर लगा हुआ था। उसी मौसम मे आलू खोदे जाएँगे, सूअर काटे जाएँगे, मक्का का आटा पीसा जाएगा और गन्ने को पीडकर उसकी राव बना ली जाएगी। इस प्रकार अब की कमी तब अधिकता मे बदल जाएगी। इस ऋतु मे भी यो तो खाने को बहुत कुछ था, पर सामान की किस्मे दो-चार ही थी। साथ ही बहुत ऊँची और काफी खूराक भी न थी। वे अपने दिन एक-एक करके बिता रहे थे। आटा और माँस कम पड गए थे। पैंनी कभी-कभी हिरण या जलमुर्गी आदि का शिकार कर लाता था। उसने एक रात एक मोटे-ताजे कगारू को जाल मे फँसा लिया था। साथ ही उसने इसके माँस के साथ भूनने के लिए कुछ ताजे आलू खोद लिए थे। आलू अभी छोटे व अधपके थे, इसीलिए यह फिजूलखर्ची गिनी गई।

जगल और खेतो मे धूप बहुत तेज पडनी शुरू हो गई थी। श्रीमती वैक्स्टर के भारी शरीर के लिए यह गर्मी असह्य थी। पैंनी और जोडी पतले थे। उन्हे यह गर्मी केवल अधिक काम के समय ही रुकावट डालती थी। सुबह वे दोनो मिलकर काम निबटाते थे। गाय दुहना, घोडे को दाना-पानी देना, लकडी चीरना, सोते से पानी लाना आदि काम निबटाकर वे और छोटे-मोटे काम निबटाकर साँझ तक निश्चिन्त हो जाते थे। श्रीमती वैक्स्टर दोपहर को गर्म खाना बनाकर आग को राख से ढँक देती थी। शाम का खाना दोपहर के इस खाने मे से बचे-खुचे सामान से ही निबटाया जाता था।

जोडी को फौडरविंग के न रहने का सदा ही शोक रहता था। विंग अब भी उसके मन मे सदा ही साथ रहता था और उससे वह मन-ही-मन बातचीत भी कर लेता था। यद्यपि सचाई मे ऐसा होना सम्भव न था। इसी बीच फ्लैग काफी बढ गया था। जोडी को इस बात की खुशी थी। जोडी को लगता था कि उम्र बढने के साथ-साथ इसके शरीर की चित्तियाँ मिटती जा रही थी, पर पैंनी को उनमे कोई अन्तर नही दिखाई देता था। इसमे सन्देह नही कि यह चतुर होता जा रहा था। पैंनी का कहना था कि

जगल के सब प्राणियो मे से भालू का दिमाग सबसे अधिक तेज़ होता है। हिरण का स्थान दूसरे पर आता है।

माँ कहती, "यह तो बहुत ही अधिक चुस्त है।" तभी पैनी काट बैठता, "क्यो तुम इसे गाली देती रहती हो," और जोडी की ओर वह पलक झपका देता।

फ्लैग अब दरवाज़े की निचली चिटखनी खोलकर अन्दर आना सीख गया था। यदि वह खुला रह जाता तो दिन या रात मे किसी भी समय अन्दर आ जाता था। जोडी के बिस्तर मे से पखो भरा सिरहाना निकालकर वह उसे सारे कमरे मे तब तक पटकता फिरता, जब तक वह फटकर बिखर न जाता। उसके पख बिखरकर कोने-कोने मे भर जाते और बिस्कुटो से बनी खीर मे पड जाते। उसने कुत्तो से भी खेलना शुरू कर दिया था। जब भी वह जूलिया की ओर अपने पजे उठाकर बढता, वह शान से अपनी पूँछ-भर हिलाकर रह जाती। परन्तु रिप पूरा मज़ा लेता था। वह गुर्राता था, दौडता और उछलता था और हमले का दिखावा करता था। उधर फ्लैग भी अपनी एडियाँ पटकता, उछलता, पूँछ खडी करता और अपना सिर हिलाता। अन्त मे वह सामने की बाड कूद जाता और सडक पर भागने लगता। उसे जोडी से खेलने मे सबसे अधिक मज़ा आता था। वे आपस मे उलझते, सिर टकराते और तब तक साथ-साथ दौडते थे, जब तक कि जोडी की माँ ही न टोक देती कि जोडी एक काले साँप की तरह पतला होता जा रहा है।

सावन के दिनो मे एक दिन जोडी फ्लैग को लेकर शाम के भोजन के लिए पानी भरने सोते तक गया। रास्ते मे चमकीले फूल खिल रहे थे। फूल अनेक प्रकार के और अनेक रगो के थे। फ्रासीसी शहतूत भी पतली-पतली टहनियो पर पकने लगे थे। उनका रग लाल-काला-सा था। उनके गुच्छे खूब लदे हुए थे, मानो नरगिस के आस-पास साँप के अण्डे भरे हुए हो। तितलियाँ सुगन्धित गुलाबी कलियो पर आकर बैठती और उनके खिलने की प्रतीक्षा मे अपने मुख खोलती-बन्द करती बैठी रहती। बटेर की मधुर कूक मटर के खेतो से साफ और लय मे उठ रही थी। सूर्य कुछ जल्दी ही छिपने लगा था। बाडे के एक कोने मे सूर्य की केसरिया रग की किरणें झुके हुए सनावरो के नीचे से होती हुई स्पेनी काई पर पड

कर उसे भी चमकीली बना रही थी। इसी कोने से स्पेनी लोगो द्वारा अपनाया गया रास्ता मुड जाता था।

जोडी का हाथ छौने के शरीर पर घूमते-घूमते रुक गया। उसके सामने से ही लोहे की टोपी पहने एक घुडसवार उसी काई के बीच से होता हुआ गुज़र रहा था। जोडी ने ज्यो ही एक कदम आगे वढाया वह छिप गया, जैसे वह खुद काई से अधिक मोटा न हो। जोडी ने ज्यो ही कदम पीछे हटाया वह फिर से सामने दीखने लगा। जोडी ने एक लम्वी साँस ली। उसे लगा फौडरविंग इसी स्पेनी घुडसवार की चर्चा करता था। वह नही जान पाया कि इससे उसे डर लगा या नही ? उसकी इच्छा हुई कि वह घर भाग चले और यह निश्चय कर ले कि उसने सच ही एक भूत को देखा है। परन्तु उसके अन्दर पिता के खून ने जोश मारा और वह ज़वरदस्ती उस शक्ल दीखने वाली जगह तक वढता चला गया। एक ही क्षण मे सचाई सामने आ गई। काई और शाखो की उलझन ने उस तरह का धोखा खडा कर दिया था। अव वह घोडे, घुडसवार और लोहे के टोप को अलग-अलग पहचान सकता था। उसके हृदय को शान्ति हुई, किन्तु साथ ही उसे निराशा भी हुई। अच्छा था उसका यह भ्रम न टूटता और वह इसी विश्वास के साथ घर जाता।

वह उस सोते के किनारे तक वढता रहा। मधुर सुगन्धित गुलाव अव भी खिला हुआ था। उसकी सुगन्ध उस सोते पर चारो ओर छा रही थी। इस समय उसे फौडरविंग के साथ की याद जगी। अव वह यह कभी न जान पाएगा कि फौडरविंग इसी स्पेनी घुडसवार की वात करता था या किसी और की ? हो सकता है वह इससे भी अधिक रहस्य वाला और इससे भी अधिक सच हो। उसने अपनी वाल्टियाँ नीचे रख दी और उस पतली पगडडी की ओर बढा, जिसे पैनी ने नीचे उतरने के लिए दोनो तटो के वीच मे से नीचे की ओर काटा था। यह पगडडी उसके जन्म से भी वहुत पहले काटी गई थी।

वह अपने उद्देश्य को भूल गया और वही ढलान की ओर एक वडे छायादार वृक्ष के नीचे लेट गया। फ्लैग भी सूंघ-सांघकर उसके पास ही लेट गया। वह वहाँ से सारे सोते को अच्छी तरह देख सकता था। ऊपरी किनारो पर सूर्य की किरणे पडकर उन्हे ऐसे चमका रही थी, मानो चारो

ओर कोई आग जल रही हो। उसके आने से गिलहरियाँ कुछ देर के लिए चुप हो गई थी। अब उन्होने फिर से शोर और चहल-पहल शुरू कर दिए। पेड के ऊपर उनकी यह चहलकदमी दिन के ढलते समय वैसी ही थी, जैसी दिन उगने के समय। ताड के फलो पर टकराकर वे काफी ऊँची आवाज़ पैदा कर रही थी। परन्तु, सनावर के पेडो पर किसी प्रकार का शोर न था। गूलर और अखरोटो पर भी उनकी कोई आवाज़ न थी। कभी-कभी ऊपर-नीचे दौडने पर या किसी शाखा के किनारे पर लटककर दूसरे वृक्ष पर चढ जाने पर ये दिखाई देती थी या इनकी आवाज सुनाई देती थी। शाखो पर बैठे पक्षी मधुर और तेज आवाजे कर रहे थे। बहुत दूर एक लाल चिडिया बहुत मीठे स्वर मे गाती आ रही थी। नजदीक आती हुई वह अन्त मे उनकी पीने वाले पानी की नाली मे पानी पीने पहुँच गई। इसी समय कुछ कबूतरो का एक झुण्ड भी पानी पीने नीचे उतरा और थोडी ही देर बाद चीडो की ओर फिर उड गया। उनके डैनो से ऐसी आवाज़ हुई, मानो उनके पख हवा को चीरने के लिए तेज चाकू हो।

जोडी की निगाह मे नीचे की ओर एक हलचल-सी आई। एक मादा रैकून अपने दो छोटे-छोटे बच्चो के साथ चूने के पत्थरो वाली नाली तक आई। उसने सारी नालियो मे मछलियाँ ढूँढी। पीने वाले पानी की नाली से उसने यह टोह आरम्भ की। जोडी को देरी का बहाना मिल गया। अब उसे पानी के साफ होने और बैठने तक इन्तजार करनी पडेगी। मादा रैकून को उन नालियो मे अपने लायक कोई शिकार न मिला। उन बच्चो मे से एक पशुओ की नाली के पास तक आकर उसमे झाँकने लगा। माँ ने उसे तुरन्त ही खीच लिया। वह ढलान के नीचे की ओर उतर गई और नीचे के ऊँचे पेडो मे ही खो गई। तभी चेरोकी के तनो के बीच से उसका काला चेहरा फिर दिखाई दिया। उसके पीछे से दोनो बच्चे भी झाँक रहे थे। उनकी शक्ल माँ पर थी। उनकी पूँछे बडे निश्चित रूप मे हिल रही थी।

वह नीचे के जोहड मे पहुँचकर मछलियो के लिए उसे गाहने लगी। उसकी लम्बी अंगुलियाँ गिरी हुई टहनियो और शाखो को हटाती जाती थी। वह एक केकडे-जैसी मछली को पकड़ने के लिए एक किनारे पर लेट गई। एक मेढक उछला और इसने उछलकर उसे पकडा और फिर किनारे

पर आ गई। अपनी जाँघो के बल बैठकर उसने इसे एक-दो झटके दिए और तब अपने दाँत इसमे वैसे ही गडा दिए, जैसे कुत्ता चूहे के साथ करता है। तब इसे उसने अपने बच्चो के सामने डाल दिया। वे इस पर गुर्राते-मचलते टूट पडे और इसकी हड्डियो तक को उन्होने तोड डाला और इसे दो हिस्सो मे बाँट लिया। वह कुछ क्षण तक यह सब देखती रही और फिर जोहड की ओर मुड गई। उसकी झबरी पूँछ ऊपर की ओर, पानी की सतह के ऊपर, उठी हुई थी। दोनो छोटे बच्चे भी उसके पीछे-पीछे पानी मे घुस गए। उनकी नाक पानी के ऊपर दिखाई दे रही थी। उसने पीछे मुडकर उन्हे देखा और उन्हे किनारे की ज़मीन पर फिर से घसीट लाई। उसने उन्हे एक-एक करके उठाया और मनुष्य की तरह ही उनके पेट आदि को अपने हाथ से पोछा। जोडी यह देखकर खुशी से इतना उत्तेजित हुआ कि उसे चुप रहने के लिए अपने मुँह पर हथेलियाँ रखनी पडी। वह उसे बहुत देर तक देखता रहा। वह मछलियो का शिकार करती और बच्चो को खिलाती। तब वह ढलान पर चढती हुई ऊपर तक आई और किनारो पर होकर परे निकल गई। बच्चे उसके पीछे-पीछे हँसते-खेलते साथ-साथ बढ रहे थे।

सोते पर अब छाया आ चुकी थी। जोडी को लगा, जैसे फौडरविंग अभी-अभी इन रैकूनो के साथ ही गया हो। उसे जगली जन्तुओ के चरने और खेलने की जगह पर सदा ही विंग के होने का आभास होता था। किसी न किसी रूप मे वह ऐसी जगह रहता ही था। अब उसके लिए विंग भी पेडो के समान बन चुका था। पेडो के समान ही वह भी अब धरती का ही अग था और उसकी टेढी-मेढी जडे भी मिट्टी मे गडी थी। वह रग बदलते बादलो, डूबते सूर्य और उगते चन्द्रमा जैसा था। उसकी आत्मा का कुछ भाग जैसे उसके मुडे-तुडे शरीर से सदा ही अलग रहा था। यही हिस्सा हवा के समान आता-जाता रहता था। जोडी को अनुभव हुआ जैसे अब वह कभी अपने मित्र की कमी अनुभव न करेगा। अब वह उसके गुज़र जाने को सह सकता था।

वह पीने वाले पानी की नाली तक गया और उसने ढोने लायक पानी से बाल्टियो को भर लिया। भरकर वह घर की ओर चल पडा। घर आकर

खाने की मेज़ पर बैठकर उसने रैकूनो की बात सुनाई। उसकी मां भी बच्चो को पीछे जाने की बात बडे मज़े से सुनने लगी। किसी ने उससे देरी के लिए कुछ न कहा। भोजन के बाद वह अपने पिता के पास बैठा उल्लुओ और मेढको की आवाज सुनता रहा। कही दूर पर एक वनबिलाव चिल्लाया और उससे भी दूर से लोमडियो की आवाज़ आई। एक तरफ से एक भेडिए की आवाज़ आई तो दूसरी ओर से उसका उत्तर भी दिया गया। उसने पिता को अपना दिन का अनुभव समझाना चाहा। पैनी गम्भीरता से सुनता रहा और सिर हिलाता रहा। पर जोडी अपनी भावनाओ का पूरा-पूरा समझाने के लिए न पूरे शब्द पा सका और न अपनी बात पूरी-पूरी समझा सका।



# 19

भादों का तीसरा हफ्ता पुरानी हड्डियों की तरह एकदम खुश्क था। केवल घास ही उगी हुई थी। गर्मी में एक तनाव-सा था। कुत्ते अधिक चिड़-चिड़े हो गए थे। छिपने के दिन समाप्त होने से साँप खुले में आने लगे थे। उनकी केंचुली और अन्धापन छूट चुके थे। पैनी ने अंगूरों की बेलों के नीचे एक सात फुट लम्बा फनियर साँप मारा था। उसने कॉफी की पौध को हिलते हुए देखा, जैसे कोई मगरमच्छ उनके बीच से निकल रहा हो। उसने उसका पीछा किया। उसने बताया कि साँप एक बटेर का पीछा कर रहा था। सर्दियों की गहरी नींद में जाने से पहले वह अपना लम्बा पेट भर लेना चाहता था। उसने इस साँप की खाल को पहले तो धुआँघर की दीवार पर लटकाकर सुखाया और बाद में सामने के कमरे में अँगीठी के पास ही दीवार पर टाँग दिया।

वह बोला, "मैं इसे शौक से देखता हूं। मुझे सन्तोष है कि एक नीच तो ऐसा है, जो अब किसी को हानि न पहुँचा सकेगा।"

सारे मौसम मे कभी इतनी गर्मी नही पडी थी। फिर भी कुछ अन्तर था। मानो वनस्पतियो ने मौसम बदलने की बात भॉप ली हो। जयन्तिया, गेंदा आदि इस खुश्की मे भी फूल रहे थे। झाडी के बेर पक चुके थे और पक्षी उन्हे खाने लगे थे। पैनी ने बताया कि इन दिनो सभी जन्तुओ के लिए भोजन पाना कठिन हो गया है। बेरी की सभी किस्मे बहुत पहले ही समाप्त हो चुकी थी। जगली अलूचो और अजीरो आदि पर भी बहुत दिन से एक भी फल पक्षियो के लिए न बचा था। जगली अगूरो की बेलो को रैकून और लोमडियो ने कभी का साफ कर दिया था।

सर्दियो के ताड, माजू आदि फल अभी पके नही थे। चीडो के चिलगोजे, सनावरो के बीज और छोटी खजूरें आदि पहला पाला पडने तक तैयार होगे। हिरण कोमल व हरी उपज को चर रहे थे। उनका यह भोजन तेजपात की कलियो, मेहदी के मुलायम पत्तो, कँटीली घास आदि मैदानी और जोहडकी उपज पर आधारित था। ऐसे भोजन के कारण उन्हे नीचे और गीले इलाको मे रहना पडता था। ये इलाके दलदलो, मैदानो या खाडियो के आस-पास के थे। वैक्स्टरो की ज़मीन की ओर उनका आना कम ही होता था। दलदले स्थानो पर उनका शिकार अधिक कठिन होता था। महीने-भर मे पैनी केवल एक ही साल-भर के बारहसिंगे को मार सका था। इस बच्चे के अभी सीग भी निकलने शुरू न हुए थे। छूने पर वे खुरदरी ऊन की तरह मालूम होते थे। जहाँ-जहाँ से उसने उन्हे पेडो से रगडा था, वही से वे छिले थे। माँ ने उन्हे उबालकर बनाया था। उसका कहना था कि ये हड्डी के अन्दरूनी हिस्से की भाँति कोमल हैं। पैनी और जोडी को उनमे कोई स्वाद न आया। उन्हे उन सीगो के नीचे की बडी-बडी आँखो का स्मरण हो आता था।

रीछ भी नीची सतहो पर चले गए थे। वे छोटे खजूरो की कलियाँ खा रहे थे। स्वीट वाटर स्प्रिग के पास की झाडियाँ और हरियाली बता रही थी जैसे उधर से कोई बवण्डर गुजरा हो। नीची खजूरनुमा झाडियो के निचले पत्ते तार तार हो गए थे। ज़मीन के अन्दर तक के पत्ते खा लिये गए थे। कुछ ऊँचे ताड के पेड भी ऐसे लगते थे, जैसे उन पर बिजली गिरी। इन पर कोई चुस्त और भूखा रीछ ऊपर तक चढकर इनकी कलियो को चीर गया

था। पैनी ने बताया कि छोटी ताडनुमा झाडियाँ तो सूख जाएंगी। वे अन्य प्राणियो की तरह ही थी। जब उनका कली-रूपी दिल ही निकल गया, तब वे कैसे जीवित रह सकती थी? एक नीचा ताड केवल बाहर ही बाहर से छीला गया था। उसका 'दिल' अभी बचा हुआ था। पैनी ने अपना चाकू निकाला ताकि उसे घर पकाने के लिए ले चले। उसका परिवार इस प्रकार की दलदली चीजो को रीछो के ही समान पसन्द करता था।

पैनी ने जोडी से कहा, "पर जब इनके पास ये ताड भी खाने के लिए न बचेंगे, तब ये सूअरो के बच्चो को खाने निकलेगे। अब तुम किसी भी रात रीछो के यहाँ आने की उम्मीद कर सकते हो। अच्छा हो, फ्लैग को तुम रात को अपने पास ही सुलाया करो। यदि तुम्हारी माँ ने इस बात पर झगडा किया, तो मै उसे समझा दूँगा।"

"क्या फ्लैग भालू के लिहाज से काफी बडा नही हो गया?"

"उसके लिए कोई भी जन्तु, जो उसकी पकड मे आ सकता है, बडा नही है। एक बार मैदान मे एक रीछ ने अपने से भी बडे मेरे एक बैल को मार डाला। उसके लिए हफ्ते-भर की खूराक हो गई। जब तक बैल का पेट ही न बचा रह गया, वह रोज आता रहा। अन्त मे वह उसे भी खा गया।"

जोडी की माँ की शिकायत भी वर्षा की कमी के बारे मे थी। बारिश के दिनो मे भरे जाने वाले पीपे खाली पडे थे। उसे सारी धुलाई के लिए सोते पर ही जाना पडता था। कपडे भी मैले से लगने लगे थे। वह बोली, "बादलो वाले दिन कपडे आसानी से धुलते है। मेरी माँ अक्सर कहा करती थी—'नरम मौसम और मुलायम कपडे।'"

दूध मे मिलाकर उबालने और जमाने के लिए भी उसे वर्षा का पानी चाहिए था। सोते के पानी से दूध खट्टा हो जाता था, पर जमता नही था। गर्मी के मौसम मे वह वर्षा की कुछ थोडी-सी बूँदो से ही काम चला लेती थी। हर वर्षा के अवसर पर वह जोडी को अखरोट के पेड के नीचे पानी जमा करने को भेजती थी, क्योंकि उसके पत्तो से गिरने वाला पानी इस काम के लिए सबसे अच्छा माना जाता था।

सारे परिवार की निगाह इस महीने मे चाँद के चारो ओर पडने वाले घेरे की ओर लगी थी। ज्योही पहला घेरा दिखाई दिया, पैनी ने पुत्र और

पत्नी को बुलाकर दिखाया। चाँदी का-सा यह घेरा एकदम सीधा था। वह बहुत खुश था।

उसने बताया, "अब जल्दी ही वर्षा होगी। अगर चाँद दूसरी तरह होता, तो हमे पानी बिलकुल न मिलता। पर, देखो! वर्षा हर जगह होगी, जहाँ भी कपडे टाँगो, भगवान् धो देगा।"

उसकी भविष्यवाणी प्राय सच रहती थी। तीन दिन बाद हर तरह से वर्षा की आशा हो गई। किसी शिकार के लिए जूनियर स्प्रिंग के पास से गुजरते हुए पैनी और जोडी ने मगरमच्छो की आवाज़ सुनी। चमगादड दिन मे ही उडने लगे। रातो मे मेढको की टर-टर बे-रोकटोक चलने लगी। मुर्गे भरी दुपहरी मे भी बाँग देने लगे। छोटी-छोटी चिडियाँ और कुज-पक्षी समूहो मे आने-जाने लगे। घनी दोपहरी मे भी फनियर नाग खेतो को पार-कर छिपने लगे। चौथे दिन सफेद समुद्री पक्षियो का एक झुण्ड भी उधर से उडता हुआ गुज़रा। पैनी ने अपने हाथ से ढँककर अपनी आँखो को ऊपर उठाया और उन्हे बेचैनी से देखकर बोला, "ये पक्षी फ्लोरिडा के इस इलाके पर से कभी नही गुजरते। मुझे इनका आना अच्छा नही लगा। इसका मतलब है बुरा मौसम! बहुत बुरा मौसम!"

जोडी को अपना हौसला उन समुद्री पक्षियो के समान ही उडता हुआ दिखाई दिया। उसे तूफान और आँधी पसन्द थे। ये बडी तेजी से आते और सारे परिवार को घर मे शरण लेनी पडती है। काम करना कठिन हो जाता और सभी लोग इकट्ठे बैठ जाते। उधर वर्षा बडी कठिनाई से बनाई गई छत पर तडातड गिरने लगती। ऐसे समय उसकी दयालु माता उसे शर्बत या मिश्री देती और पिता कहानियाँ सुनाने लगते।

वह बोल उठा, "मुझे उम्मीद है कि यह केवल बवण्डर होगा!"

पैनी कुछ कठोर होकर उसकी ओर मुडा और बोला, "तुम ऐसी इच्छा मत करो। बवण्डर सारी फसलो को गिरा देता है, बेचारे नाविको को डुबा देता है और नारंगी आदि फलो को पेडो से नीचे गिरा देता है। दक्षिण की ओर तो यह छतें उडाकर आदमियो को मार भी देता है।"

जोडी ने नम्रता से कहा, "मैं आगे से ऐसा नही चाहूँगा। पर, हवा और वर्षा तो अच्छी है!"

"हाँ ! वर्षा और हवा की बात और है।"

उस शाम सूरज कुछ अजब तरीके से छिपा। छिपते सूरज का रग लाल न होकर हरा था। सूरज छिपते ही पश्चिम का रग धुएँ का-सा और पूरब का रग मटियाला-सा हो गया। पैनी ने फिर सिर हिलाकर कहा, "मैं इसे अच्छा नही समझता। यह बहुत ही बुरा है।"

रात को हवा का एक तेज झोका आया और दोनो दरवाज़े खटखटा गए। छौना जोडी के बिस्तर तक पहुँच गया और अपने नथुने उसके मुख से रगडने लगा। उसने इसे भी अपने बिस्तरे मे ही ले लिया। सुबह कुछ अधिक साफ थी, परन्तु पूरब दिशा का रग बिलकुल लाल था। पैनी ने सबसे पहले धुआँघर की छत को ठीक किया। सोते से पानी भी वह दो बार भर लाया और सारी बाल्टियो को पानी से भर दिया। दोपहर से पहले आसमान का रग धुएँ जैसा हो गया और वैसा ही रहा। हवा चारो ओर से बन्द थी।

जोडी ने पूछा, "क्या बवण्डर आने वाला है ?"

"मेरी समझ मे नही। पर कुछ बुरी बात होने ही वाली है। यह सब स्वाभाविक नही है।"

भरी दोपहरी मे आसमान एकदम काला पड गया। मुर्गों ने बाँग देनी शुरू कर दी। जोडी गाय और बछडे को ले आया और पैनी ने उसे दुह लिया। उसने सीज़र को अस्तबल मे बाँधा और उसकी नाँद मे आखिरी बची सूखी घास डाल आया।

पैनी बोला, "दडबो मे से अण्डे बटोर लाओ। मैं घर जा रहा हूँ। ज़रा जल्दी करना, नही तो रास्ते मे ही पकडे जाओगे।"

मुर्गियाँ अण्डे दे ही नही रही थी। कुल तीन अण्डे उन सारे दडबो मे थे। जोडी अनाज-भण्डार मे चढ गया। यहाँ एक पुरानी मुर्गी लेटी हुई थी। बचा-खुचा भूसा उसके पाँव के नीचे मसला गया। खुश्क और मधुर गन्ध वाली हवा भी इस समय भारी और घुटी हुई थी। उसे दम घुटता-सा लगा। दडबो मे कुल दो अण्डे थे। उसने पाँचो को कमीज मे डाला और घर की ओर चल पडा। उसे अपने पिता के समान जल्दी की ज़रूरत महसूस न हुई। एकदम ही उस दमघोटू शान्ति मे एक चमक-सी हुई और वह चौकन्ना हो

गया। बहुत दूर उसे एक बडी गरज सुनाई दी। जगल के सारे रीछ यदि नदी के किनारे इकट्ठे होकर शोर करते, तब ऐसी आवाज़ होती। यह हवा की आवाज थी। उसने इसे उत्तर-पूरब से ऐसे आते अनुभव किया, मानो किन्ही बडे पजो वाले पाँवो पर चलकर राह मे पडने वाले पेडो की चोटियो को मसलती आ रही हो। ऐसा लगा जैसे यह मक्का के खेत को एक ही झपेटे मे लाँघ आई। बाडे के वृक्षो पर एक रगड के साथ यह टकराई और शहतूत की शाखो को उसने ज़मीन तक झुका दिया। चीनी बेरी का वृक्ष जैसे चीख-सा पडा। यह उसके ऊपर से ऐसे गुज़री जैसे ऊँचे उडने वाले सैकडो हसो के पखो की सरसराहट एक साथ ही हुई हो। चीडो से टकराकर सीटियो की-सी आवाज निकली। इसके साथ ही वर्षा आई।

हवा काफी ऊपर थी। वर्षा धरती से आकाश तक जैसे एक ठोस दीवार बनकर आई। जोडी ने तनकर इसका मुकाबला किया, जैसे वह बहुत ऊँचे से कूदकर आया हो। पर वर्षा ने उसे लडखडाकर पीठ के बल गिरा दिया। तब हवा का एक और तेज़ झोका आया। इस बार यह ऐसे आया, जैसे अपने बडे-बडे पजो मे धरती की हर चीज को समेटता हुआ आया हो। यह उसके कुर्ते, आँख, मुँह, कान-सभी जगह घुस गया, जैसे उसका गला ही घोट देगा। उसने अपनी कमीज के अण्डे गिरने नही दिए। उसने एक बाँह से उन्हे बचाया और दूसरी से अपने मुँह को ढके रखा और आँगन मे घुस आया। यहाँ छौना काँपता हुआ उसकी इन्तज़ार कर रहा था। इसकी पूँछ गीली और गिरी हुई थी और इसके कान झुके हुए थे। यह उसकी ओर दौडा और उसके पीछे शरण ढूँढने लगा। वह घर का चक्कर काटकर रसोई की ओर गया। छौना भी उसके पीछे-पीछे था। रसोई के दरवाजे की चिटखनी लगी हुई थी। इस पर हवा और वर्षा के इतने तेज़ थपेडे पड रहे थे कि उसकी हिम्मत इसे खोलने की न पडी। वह चीड के मोटे दरवाज़ो को थपथपाता रहा। एक बार तो उसे लगा कि उसकी आवाज़ अन्दर न सुनी जा सकेगी और वह तथा छौना बाहर ही रह जाएँगे और चूज़ो की तरह डूब जाएँगे। तभी पैनी ने चिटखनी उठाई और दरवाज़े को खोल दिया। वे दोनो ही अन्दर घुस आए। जोडी साँसें भर रहा था। उसने अपनी आँखो पर से पानी पोछा। छौने ने भी पलके झपकी।

पैनी ने पूछा, "ऐसी बात किसने चाही थी ?"

जोडी बोला, "यदि मेरी इच्छा सदा ही इस तरह जल्दी ही पूरी हो जाय, तब मुझे अपनी इच्छा के लिए बहुत सावधान रहना पडेगा।"

माँ बोली, "पहले जाकर अपने कपडे बदलो ! क्या तुम आने से पहले इस छौने को बन्द करके नही आ सकते थे ?"

"समय नही था, माँ ! और फिर वह डरा और भीगा हुआ था।"

"अच्छा, जब तक यह कुछ गडबड नही करता, ठीक है। हाँ, इस समय अच्छा पाजामा पहनने की जरूरत नही। एक छेदो और टाकियो से भरा पाजामा तुम्हारे पास है। घर के लिए वही काफी है।"

पैनी ने जोडी की ओर देखकर कहा, "वह एक छोटा भीगा हुआ सारस नही लगता ? उसमे केवल पखो और पूँछ की कमी है। हे भगवान् ! क्या वह पिछली नसल से अब तक काफी बढ नही गया है ?"

माँ बोली, "मेरे विचार मे वह खूबसूरत बन जाएगा अगर उसके चेहरे के दाग मिट जायँ, उसके बाल ठीक हो जायँ और उसकी टाँगो की हड्डियो पर माँस चढ जाय।"

पैनी ने भोला बनकर चिढाते हुए कहा, "और कुछ थोडे से परिवर्तन और हो जायँ तो वह खूबसूरत बैक्स्टर बन जाएगा। भगवान् को मनाओ !"

वह उसकी ओर भौचक-सी देखती रही।

पैनी फिर बोला, "और शायद एल्वर्स लोगो जैसा सुन्दर भी हो जाय।"

पत्नी बोली, "यह बात अधिक ठीक है। अच्छा है तुम अपना लहजा बदल लो।"

पैनी बोला, "अब मुझे नए सिरे से तो गला फाडना नही है और प्रिये! हमारा-तुम्हारा सम्बन्ध कोई आँधी के झोके से तो हो नही गया था !"

वह उससे हँसी मे उलझ गई। अपने कमरे से उनकी आवाज सुनकर जोडी यह न जान सका कि वे उसकी मज़ाक उडा रहे थे या उसकी शक्ल निकल आने की सचमुच आशा थी। वह फ्लैग से बोला, "तुम तो मुझे सुन्दर मानते हो न ! या तुम भी नही मानते ?"

फ्लैग ने अपने सिर से उसे टक्कर मारी। उसे तसल्ली हुई और वे

दोनो रसोई की ओर आ गए।

पैनी बोला, "यह उत्तर-पूरब से आने वाला झोका तीन दिन चलेगा।"

"पिताजी, आप कैसे कह सकते हैं यह तीन दिन चलेगा ?"

"खैर, इस बात पर मैं कोई शर्त तो बद नही सकता। परन्तु इन दिनो उत्तर-पूरब से आने वाली पहली बारिश प्राय तीन दिन की ही होती है। इन दिनो सारा देश—बल्कि सारा ससार—बदल-सा जाता है। इन दिनो के तूफान की बात ओलिवर ने चीनी समुद्र के बारे मे भी बताई थी।"

माँ बोल उठी, "वह इस बार हमे देखने क्यो नही आया ? दादी का व्यवहार मुझे पसन्द नही, पर ओलिवर मुझे अच्छा लगता है।"

"मेरी समझ मे वह फौरेस्टरो से तग आ गया है और इसीलिए इस राह से नही आया।"

"अगर वह लडाई पर न उतरे, तो भी क्या वे लडाई पर उतर आएँगे ? मुझे तो ऐसा नही लगता। वीणा कभी कमानी के बिना नही बजती।"

"मुझे डर है कि फौरेस्टर—और विशेषकर लेम—उसे जब भी पा लेंगे, उसी समय उस पर टूट पडेंगे, जब तक लडकी वाली बात ठीक नही हो जाती।"

"ऐसी ओछी बाते ! जब मैं लडकी थी, तब कभी ऐसा न सुना था।"

पैनी ने मजाक मे कहा, "नही, तुम्हे चाहनेवाला मैं जो अकेला था।"

पत्नी ने बनावटी क्रोध मे भौंहे तरेरी।

पैनी बोला, "पर प्यारी ! बाकी सबमे से मेरे-जैसा चुस्त कोई नही था।"

बाहर की तेज हवा के थपेडे कुछ देर के लिए रुके। एक करुणा-भरी आवाज़ दरवाज़े पर आई। पैनी दरवाज़े तक गया। रिप ने जगह बना ली थी, पर जूलिया अब भी भीगती हुई खडी थी। शायद उसने भी जगह पा ली हो पर वह और सुरक्षित जगह पर आना चाहती हो। पैनी ने उन्हे अन्दर ले लिया। पत्नी बोल उठी, 'अब ट्रिक्सी और उसके बछडे को भी अन्दर ले लो। तुम्हारी मनचाही चीज़ें इकट्ठी हो जाएँगी।"

पैनी ने जूलिया से कहा, "क्यो, फ्लैग से ईर्ष्या हो गई क्या ? तुम हम

परिवार मे पलँग से बहुत पुरानी हो चुकी हो। आकर अपने को सुखा लो।"

उसने अपनी पूँछ धीरे-धीरे उठाई और उसका हाथ चाटने लगी। जोडी को प्रसन्नता हुई कि पिता ने पलँग को भी बैक्स्टर परिवार मे गिन लिया है।

माँ बोल उठी, "तुम पुरुष लोग गूँगे जानवरो को भी इस तरह अपना लेते हो और उन्हे अपना नाम दे देते हो। यह बात मेरी समझ से बाहर की है और फिर वह पलँग जोडी के विस्तर मे भी सो जाता है।"

जोडी बोला, "मुझे वह जन्तु नही लगता। माँ, मुझे तो वह एक लडका ही लगता है।"

माँ बोली, "खैर, विस्तर तुम्हारा है। जब तक वह मक्खियाँ, जुएँ या कीचड नही लाता, तब तक ठीक है।"

उसे बुरा लगा। बोला, "देखो, माँ। उसकी सुन्दर और चिकनी खाल को देखो। उसे सूँघकर देखो।"

"मुझे सूँघने की चाह नही।"

"पर उसकी गन्ध मीठी है।"

"शायद गुलाब-जैसी। खैर, मेरी निगाह मे गीले बाल गीले ही है।"

पैनी बोल उठा, "गीले बालो की सुगन्ध मुझे पसन्द है। एक बार जब मैं एक लम्बे शिकार पर गया था, मेरे पास कोई कोट न था। मौसम एकदम ठण्डा हो गया। यह साल्ट स्प्रिंग की बात है, जहाँ पगडडी समाप्त हो जाती है। ठण्ड बहुत अधिक थी। हमने एक भालू मारा। मैंने उसकी खाल उतारी और उसके नीचे रात गुजारी। उसका बालो वाला हिस्सा बाहर की ओर रहा। रात को हल्की-हल्की ठण्डी वर्षा आई। मैंने नीचे से अपनी नाक बाहर निकाली और उन गीले बालो को सूँघा। नी गिनराइट, बर्ट हार्पर और मिल्ट रैवल्स आदि ने तो उसे दुर्गन्ध ही कहा, पर मैंने जब अपना सिर फिर से खाल मे छिपाया तो मुझे उतनी ही गर्मी लगी, जितनी किसी गिलहरी को पेड के किसी खोल मे अनुभव होती है। मुझे तो उस गीली खाल मे चमेली से भी अच्छी गन्ध आई।"

वर्षा छत पर खूब आवाज कर रही थी। छज्जो के नीचे हवा खूब

सनसनाती चल रही थी। जूलिया फर्श पर फ्लैग के साथ ही पसर गई थी। आँधी उतनी ही आराम देने वाली लगी जितनी जोडी ने आशा की थी। उसने मन ही मन सोचा कि वह चाहेगा कि अगले एक-दो सप्ताह मे ही, फिर एक बार ऐसी ही आँधी आए। पैनी जब-तब खिडकी मे से बाहर अँधेरे मे कुछ झाँकता था।

वह बोला, "इससे ज़मीन के सारे मेढक मर जाएँगे।"

शाम का भोजन अच्छा और काफी था। मटर, हरिण के मांस का कीमा और बिस्कुटो का हलवा आदि चीज़े बनी थी। कोई भी तनिक सी असाधारण बात माँ को कुछ खास चीज बनाने के लिए उत्तेजित कर देती थी, मानो उसकी सारी कल्पना-शक्ति का परिचय आटे आदि के द्वारा ही मिल सकता था। उसने फ्लैग को अपने हाथो से हलवा खिलाया। जोडी ने अन्दर-ही-अन्दर उसकी कृपा मानते हुए खाने के बाद बर्तन आदि धोने मे उसकी सहायता की। पैनी तुरन्त ही कमजोरी के कारण बिस्तर पर लेट गया, यद्यपि उसे नीद नही आई। सोने वाले कमरे मे मोमबत्ती जल रही थी। माँ वही सिलाई का काम करने लगी और जोडी बिस्तर के पांयते की ओर लेट गया। वर्षा खिडकी से टकराकर होती रही।

जोडी बोला, "पिता जी, मुझे कोई कहानी सुनाइए।"

पैनी ने उत्तर दिया, "जितनी कहानियाँ मुझे आती थी, सब तुम्हे सुना चुका हूँ।"

"नही, अभी नही! आपके पास हमेशा कोई नई बात तैयार रहती है।"

"खैर, एक बात जो मैंने तुम्हे नही बताई, उसे कहानी नही कहा जा सकता। क्या मैंने कभी तुम्हे उस कुत्ते की बात बताई है जो हमारे साथ यहाँ पहले-पहल आने पर आया था?"

"जोडी रजाई के पास सरक आया। बोला, "सुनाइए!"

"अच्छा, भई! वह कुत्ता लोमडी और शिकारी कुत्ते का मिला-जुला रूप था। उसके लम्बे भौडे कान थे जो ज़मीन तक लटक जाते थे। उसकी टाँगें इतनी झुकी हुई थी कि वह आलू की क्यारियो मे सीधा चल भी नही सकता था। उसकी आँखें खोई-खोई-सी, जैसे दूर पर कोई चीज

देखती रहती थी। इन आँखो के कारण तग आकर मैंने उसे बेचने का निश्चय कर लिया। मैं उसे शिकार पर ले गया। तब यह बात मुझे स्पष्ट हुई कि वह और कुत्तो-जैसे आचरण नही करता। वह वनबिलाव या लोमडी के निशानो को बीच मे ही खोजना छोडकर किनारे पर लेट जाता था। पहले-पहल जब उसने ऐसा किया, मैंने समझा उसका होना-न-होना एक-सा है।

"पर बाद मे मुझे ऐसा भान हुआ कि वह ऐसा जान-बूझकर करता था। जोडी! मुझे मेरा पाइप पकडा दो।"

जोडी को यह रुकावट अजीब सी लगी। वह खीझकर उठा और पाइप ले आया।

"अच्छा, बेटे! अब तुम ज़रा फर्श या कुर्सी पर बैठ जाओ और मेरे बिस्तर से थोडा परे ही रहो। ज्यो ही मैं 'पैंड' या 'खोज' की बात कहूं, तुम अपने बिस्तर की ओर बढने लगना, जहाँ वह फट्टा उठा हुआ है। यह ठीक रहेगा।"

"फिर मै भी लाचार हो गया उस कुत्ते के साथ ही बैठकर यह देखने के लिए कि आखिर वह ऐसा क्यो करता है? तुम्हे पता है कि वन-बिलाव या लोमडी कैसे बेवकूफ बनाते है? वे अपने ही निशानो पर लौट आते है। और यह बात बिलकुल सच है। वे कुत्तो से काफी आगे रहते हैं और इस फासले को बनाए रखते हैं। फिर एकाएक हल्के कदमो से वे मुड पडेंगे। जहाँ तक सम्भव होगा वे पीछे लौट आएँगे और कुत्तो की ओर कान लगाए रहेगे। उनकी गन्ध पाते ही वे एक ओर बडा काट काटेंगे और एक चिमटे जैसा चौडा मोड बनाएँगे, जिस आकार मे कुज-पक्षी उड़ा करते है। साधारण कुत्ते उनकी पहली पैंड परही बढते रहेगे औरएक ऐसी जगह पहुँच जाएँगे जहाँ से आगे कोई निशान नही मिलते। वे इधर-उधर खोज कर हार जाते है और बहुत देर बाद पीछे लौटना आरम्भ करते हैं। इसमे सन्देह नही कि वे ठीक पैंड खोज लेते है और जहाँ से बिलाव या लोमडी बडी काट काटते है, उसे भी ढूंढ लेते हैं। पर इसमे काफी समय लग जाता है और अक्सर शिकार हाथ से बहुत दूर निकल चुका होता है। तुम्हारा क्या अनुमान है हमारे उस कुत्ते के बारे मे? वह ऐसे समय क्या करता था?"

"आप ही बताइए !"

"वह इस बात का अनुमान लगा लेता था। वह पहले ही सोच लेता था कि कब वह शिकार लौटने वाला होगा ? किनारे पर लेटकर वह इन्तज़ार करने लगता और जब शिकार लौटता हुआ आता, तब वह उस पर उछलकर टूट पडता।

"पर कई बार शिकार बहुत दूर से ही अपना रास्ता बदल लेता। अनुमान गलत सिद्ध होने पर निराशा के कारण उसके कान लटक जाते। पर अधिकतर उसका अनुमान सही होता था और वह मुझे और किसी भी कुत्ते की अपेक्षा अधिक बिलाव या लोमडी पकडकर ला देता था।"

पैनी ने पाइप के एक-दो कश खीचे। उसकी पत्नी ने अपनी कुर्सी बत्ती के पास खीच ली। कथा का इतनी जल्दी समाप्त होना किसी को अच्छा न लगा। जोडी ने पूछा, "पिताजी! वह कुत्ता और क्या-क्या करता था ?"

"एक दिन उसे भी अपना जोड टकर गया।"

"बिलाव या लोमडी ?"

"इन दोनो मे से कोई नही! एक बारहसिगा इस कुत्ते जितना ही चतुर था। उसके सीग मुडे हुए थे। उसकी उम्र के साथ-साथ ये भी मुडते गए थे। हिरण प्राय कभी अपनी पैड पर दोबारा नही लौटता। परन्तु इस बारहसिगे की यह आदत थी और यह बात इस कुत्ते की मनपसन्द थी। परन्तु इसके साथ उसकी दाल न गली। बारहसिगे ने कुत्ते के अनुमान से हमेशा उल्टा रुख अपनाया। कभी वह लौट पडता, तो कभी भागता ही चला जाता। कभी वह अपना रास्ता एकदम उछलकर बदल लेता था। सालो बीतते गए। दोनो एक-दूसरे को छकाते रहे।"

"इन दोनो मे से अधिक चतुर कौन था, पिताजी ? और अन्त मे कौन जीता ?"

"तुम उत्तर अवश्य सुनना चाहते हो ?"

जोडी झिझका। उसकी इच्छा हुई कि लम्बे लटकते कानो वाला वह कुत्ता जीते, पर वह यह भी नही चाहता था कि बारहसिगा मारा जाए!

वह बोला, "हाँ, उत्तर मुझे जानना ही चाहिए।"

"अच्छा! पर उत्तर अन्तहीन है, क्योकि वह कुत्ता कभी बारहसिगे

को नही पा सका।"

जोडी ने चैन की सांस ली। उसे यह ठीक ढग की कहानी लगी। जब उसने दुबारा इस पर ध्यान दिया तो उसे कुत्ता सदा ही बारहसिंगे का पीछा करता नज़र आया।

वह फिर बोला, "पिताजी! कोई दूसरी वैसी ही कहानी सुनाइए, जिसका उत्तर तो मिले पर अन्त न हो!"

"पर बेटे! वैसे कहानियाँ ससार मे अनेक तो है नही। तुम इतने से ही सन्तुष्ट रहो!"

माँ बोली, "मुझे कुत्तो का अधिक पता नही। पर एक बार एक कुत्ता अवश्य मेरी निगाह मे आया था। यह कुतिया थी और इसके बाल बहुत ही अच्छे थे। मैंने उसके स्वामी से कहा कि, 'जब इसके बच्चे हो तो एक मुझे दीजिएगा।' उसने उत्तर दिया, 'अवश्य! पर आप उसे शिकार नही खेला सकेगी। और, शिकारी कुत्ते को यदि शिकार खेलना न मिले तो वह मर जाएगा।' मैंने पूछा, 'क्या यह शिकारी कुतिया है?' उसने 'हाँ' मे उत्तर दिया। मैंने उसे कहा, 'तब मुझे नही चाहिए, क्योकि वह अण्डे खा जाएगी!'

जोडी शेष कहानी की प्रतीक्षा उत्सुकता से करता रहा। पर तब उसे ध्यान आया कि माँ की बात बस इतनी ही थी। यह उसकी और कहानियो की तरह ही थी, जो उस शिकार की तरह होती थी जिसमे कोई घटना न घटी हो। वह फिर से बिलावो और लोमडियो को छकाने वाले उस कुत्ते के बारे मे सोचने लगा, जो बारहसिंगे को कभी न हरा सका था।

वह बोला, "मेरा दावा है, फ्लैग बडा होकर अवश्य चतुर निकलेगा।"

पैनी बोला, "अगर किसी दूसरे के कुत्ते ने उसका पीछा किया, तब तुम क्या करोगे?"

उसे गले मे घुटन सी लगी। बोला, "जो भी आदमी या कुत्ता इसका पीछा करता यहाँ आएगा, मैं उसे मार डालूंगा। यहाँ कोई भी नही आएगा। ठीक है न?"

पैनी ने धीमे से कहा, "हम सब तक यह खबर पहुंचा देंगे। तब कोई भी नही आएगा। पर, यह भी बहुत दूर घूमने न निकले!"

जोडी ने घुस आने वाले लुटेरो के विरुद्ध अपनी बन्दूक सदा ही भरकर तैयार रखने का निश्चय किया। उस रात वह फ्लैग को अपने साथ अपने ही बिस्तर पर लेकर सोया। सारी रात हवा खिडकियो से टकराती रही। जोडी चैन से न सो सका। उसे उन कुत्तो के स्वप्न आते रहे, जो फ्लैग को वर्षा मे से भी बुरी तरह दौडाते रहे।

सुबह उठकर उसने देखा कि पैनी ने सर्दियो की पोशाक पहन ली है। भारी गर्म कोट पहनने के साथ-साथ सिर पर गर्म शाल भी वह लपेटे हुए था। वह गाय को दुहने के लिए इस आँधी मे भी निकलने को तैयार था। मूसलाधार वर्षा अब भी धीमी नही पडी थी।

माँ बोली, "जोडी, अब तुम तैयार हो जाओ और यहाँ आ जाओ, नहीं तो निमोनिया से मर जाओगे।"

जोडी ने कहा, "मुझे जाने दो", पर पैनी बोल उठा, "तुम्हे आँधी उडा ले जाएगी, बेटे।"

तेज़ आँधी के सामने अपने पिता के छोटे ढाँचे की ओर देखते हुए उसे लगा कि उसमे बोझ न होकर भी शक्ति अधिक थी। पैनी जब लौटकर आया तो वह भीग चुका था और उसकी साँस भारी होकर चल रही थी। दूध पर बूंदो के छींटे पडे थे।

वह बोला, "यह अच्छा रहा कि मैंने कल ही पानी ढो लिया।"

दिन-भर सुबह की तरह ही आँधी और वर्षा होती रही। वर्षा मूसलाधार होती रही और हवा छज्जो के नीचे टकराती रही। यह देखकर माँ ने बाल्टियाँ और दूसरे बडे बर्तनो मे पानी भरना शुरू कर दिया। वर्षा का पानी जमा करने के डोल पहले ही भर चुके थे और छत से गिरने वाला पानी उनमे शोर के साथ गिरता जा रहा था। जूलिया और फ्लैग को जबरदस्ती बाहर निकालना पडा। थोडी ही देर मे वे फिर रसोई के दरवाज़े पर आ धमके। वे भीगकर काप रहे थे। इस बार रिप भी उनके साथ था और गुर्रा रहा था। माँ मना करती रही, पर पैनी ने उन तीनो को अन्दर ले ही लिया। जोडी ने उन तीनो को ही बोरी के टुकडे से भट्ठी के सामने खडाकर सुखा दिया।

पैनी बोला, "अब शान्ति होने ही वाली है।"

परन्तु शान्ति न आई। कुछ क्षण ऐसे ज़रूर आते थे जिनमे हवा और वर्षा का ज़ोर कम पडता दीखता और पैनी वडी आशा से उठकर वाहर झाँकता। परन्तु उसने शीघ्र ही लकडी काटने और चूज़ो को देखने के लिए वाहर जाने का निश्चय किया। उसे वर्षा के और भी तेज़ हो जाने का भय था। दोपहर वाद वह गाय को दुहने एक बार फिर गया। उसी समय वह घोडे को दानी-पानी तथा डरे और सहमे हुए, पेट भरने मे असमर्थ, चूज़ो को चुग्गा भी देता आया। जोडी की माँ ने उसे तुरन्त ही कपडे वदलने पर मजवूर किया। उन्हे वही, भट्ठी के पास, सूखने के लिए टाँग दिया। उनमे से सीलन और पसीने की वू आ रही थी।

शाम का भोजन थोडा ही था। पैनी कहानी सुनाने को तैयार न था। सब लोग जल्दी ही सोने लगे और कुत्तो को भी कमरे मे सोने दिया गया। अँधेरा कुछ जल्दी ही हो गया था। ठीक समय जानना भी कठिन था। जोडी पौ फटने के समय से भी घटा-भर पहले ही उठ पडा। अँधेरा चारो ओर छाया हुआ था। वर्षा और हवा का जोर अव भी कम नही पडा था।

पैनी वोला, "आज सुवह यह तूफान अवश्य रुकेगा। यह उत्तर-पूरब की तीन दिन चलने वाली वर्षा अवश्य है, पर वर्षा ने भी हद कर दी है! धूप देखकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होगी।"

पर सूरज न निकला और वर्षा भी न रुकी। दोपहर वाद कुछ क्षण शान्ति रही, जैसी पैनी ने पहले दिन आशा की थी। परन्तु इस चुप्पी के बाद भी आसमान धुंधला था, पेड फूले हुए-से, छते चूती हुई और धरती दलदली वनी हुई थी। इसी समय चूज़े अपने दडवो से वाहर निकल आए और कुछ क्षण के लिए उदास से वाहर घूमने लगे।

पैनी ने कहा, "खैर, अब हवा बदलेगी और सब साफ हो जाएगा।"

हवा ने रुख बदला, पर आसमान धुंधले की बजाय हरा हो गया। पहले की ही भाँति हवा का तूफान दूर से शोर करता उठा। इस वार यह उत्तर-पूरव की ओर से न होकर दक्षिण-पूरब की ओर से आया था। इसके आते ही वर्षा पहले से भी अधिक तेज हो गई।

पैनी वोला, "मैंने ऐसी वात पहले कभी नही देखी।"

वर्षा पहले से भी अधिक मूसलाधार थी। यह इतनी अधिक वरसी,

जैसे सभी परिचित नदियाँ और झीले एक साथ इस जगल पर आकर उलट गई हो। हवा पहले से अधिक तेज़ न थी, पर इसमे जोर अधिक था। यह सब जल्दी ही दबने वाला न दीखता था। हवा और वर्षा का बारी-बारी से राज्य पलटता दीखता था।

पैनी बोला, "लगता है परमात्मा ने समुद्र इसी तरह बनाया होगा।"

पत्नी बोली, "हुश ! तुम सभी दण्ड के भागी बनोगे।"

"इससे अधिक दण्ड और क्या मिलेगा ? आलू सड जाएँगे, मक्का जमीन पर लोट जाएगी और भूसा नष्ट हो जाएगा। और गन्ने का अभी पता नही !"

सारा आँगन जैसे तैर रहा था। जोडी ने खिडकी से बाहर झाँककर देखा और दो चूज़े डूबकर उलटे हुए तैरते देखे।

पैनी बोला, "मैंने अपने जीवन मे बहुत कुछ देखा है, किन्तु ऐसी तबाही कभी न देखी थी।"

जोडी ने सोते तक जाकर पीने का पानी लाने की उत्सुकता दिखाई।

पैनी ने कहा, "वह भी वर्षा का पानी ही होगा। उसका लाभ क्या ?"

. उत्तर-पश्चिम के कोने मे रखे बर्तन मे जमा पानी को ही वे सब पीते रहे। इसमें छत पर सूखे सरु की हलकी-हलकी गन्ध आ रही थी। जोडी ने शाम के काम निबटा लिए। वह रसोई के दरवाज़े मे दूध की बाल्टी लेकर निकला। बाहर का ससार अजीब ही बना हुआ था, जैसे वह उजाड-बियाबान बन चुका हो, या फिर जैसे यह सृष्टि का आरम्भ या अन्त आ गया हो। सब वनस्पतियाँ गिर चुकी थी। सडक पर नदी बह रही थी। इस पर बहकर चपटे तले की कोई नाव सीधी सिल्वर घाटी तक जा सकती थी। परिचित चीड के वृक्ष ऐसे लगते थे जैसे समुद्र के तल मे मौजूद पेड हो और वर्षा ज्वार और बहावो से बहकर वे यहाँ लाये गए हो। उसे लगा कि वह वहाँ तैरकर जा सकता है। पशुओ की जगह पानी घुटनो तक था। यह जगह घर से कुछ नीची सतह पर थी। ट्रिक्सी ने अपने और बछडे के बीच की लकडियों को उखाडकर बच्चे को अपने पास ले लिया था और एक ऊँचा कोना अपने दोनो के लिए ढूँढ लिया था। वे वहाँ सटे खडे थे। बछडा प्राय. सारा दूध पी ही चुका था। इसलिए जोडी उसमे बहुत थोडा

दूध ही पा सका। यहाँ से आज भण्डार के रास्ते मे पानी वह रहा था। उसकी इच्छा थी कि गाय को वह कुछ सूखा भूसा ला दे। पर पानी से निराश होकर उसने सोचा कि वह उसे भूसा प्रात दे देगा, अभी ऊपर पडी सूखी घास ही काफी रहेगी। उसे यह बात अच्छी लगी कि सूखी घास की फसल जल्दी ही तैयार हो जाएगी। कुछ खास काम बचा नही था। उसे पता नही था कि बडे बछडे को गाय से अलग किया जाय या नही? इसे बाँधने के लिए कोई सूखी जगह नही थी। इस पर भी परिवार को दूध तो चाहिए ही था। उसने रुककर पिता से पूछने और आवश्यक होने पर पुन' लौटने का निश्चय किया। बाहर आकर वह बहुत कठिनता से घर तक पहुँचा। वर्षा के तेज़ झोके ने उसकी आँखे बन्द कर दी। खेतो की गन्ध उसे अनजान और अजनबी-सी लगने लगी। दरवाज़ा खोलकर घर मे घुसते ही उसने आनन्द अनुभव किया। रसोई उसे सुरक्षित और परिचित स्थान लगा। उसने बाहर के सारे हाल-चाल बताए।

पैनी ने कहा, "अच्छा है, ऐसे समय बछडे को गाय के पास ही रहने दो। सवेरे तक हम बिना दूध के भी गुज़र कर सकते है। तब तक सब साफ हो जाएगा।"

सुबह भी कोई अन्तर न पडा। पैनी बेचैन रसोई मे घूमता रहा।

वह बोला, "मेरे पिताजी ने सन् 50 की एक भयकर आँधी की चर्चा की थी। पर मेरे खयाल मे फ्लोरिडा के सारे इतिहास मे इतनी भयानक वर्षा कभी नही हुई।"

इसी तरह बिना किसी परिवर्तन के कुछ दिन और बीत गए। अब तक माँ मौसम की बात पैनी पर छोड दिया करती थी, पर अब वह भी परेशान होकर दुख मनाने लगी थी। पाँचवे दिन पैनी और जोडी मटरो के खेत से कुछ मटर लेने गए, ताकि एक-दो दिन का काम चल सके। मटर की सारी पौध गिर चुकी थी। उन्होने वर्षा की ओर पीठ करके कुछ पूरी की पूरी लताएँ उखाड ली। लौटते हुए वे धुआँघर के पास भालू का मसालेभरा कुछ माँस लेने को रुके। यह भालू बक ने जाने से पहली रात मारा था। पैनी को यह भी याद था कि पत्नी के पास पकाने के लिए चर्बी नही है। उन्होने भालू की सुनहली चर्बी वाले पीपे को टेढा किया और

कुछ चर्वी निकाल ली। इसे ढँकने के लिए उन्होने माँस को वर्तन पर रखा और घर की ओर भागे।

खेतो मे वाहर की ओर के मटर गलने लगे थे। पर वीच के मटर अच्छी दशा मे थे। माँ ने उसके साथ हलवा वनाया, जिसकी सुगन्ध अच्छी थी और जिसमे लकडी और धुएँ का स्वाद आ रहा था।

पैनी वोला, "सम्भव नही दीखता कि वर्षा सवेरे भी रुके। पर यदि यह ना ही रुकी तो जोडी! मै और तुम जाकर अधिक से अधिक मटर उखाड लाएँगे।"

पत्नी वोली, "पर मै उन्हे रखूंगी कहाँ?"

"उन्हे सुखा लो, और जरूरत होने पर रोज़ गर्म कर लो।"

छठे दिन भी रोज़ मे कोई अन्तर न पडा। भीगना तो था ही, इसलिए पैनी और जोडी ने अपने पाजामो के पाँयचे चढाए और वोरे लेकर खेतो मे पहुँच गए। मूसलाधार वर्षा मे वे दोपहर तक इसी तरह काम करते रहे और वहकर झाडियो मे अटकी हुई पौध को भी निकालते रहे। वे दोपहर को लौटे और जल्दी-जल्दी खाना खाकर फिर काम पर लौट गए। उन्होंने कपडे भी न वदले। उन्होने अधिकाश खेत पूरे कर लिये थे। पैनी ने वताया कि इनकी सूखी घास विलकुल काम लायक न रही थी, परन्तु मटरो को वचाने का हर सम्भव उपाय उन्हे करना होगा। कुछ वेले पक चुकी थीं। घर आकर सारी शाम और काफी रात तक भी वे मटर छीलते रहे। मटर चिपकने और गलने लगे थे। माँ ने भट्ठी मे धीमी आग जलाकर उसके चारों ओर सूखने के लिए मटर फैला दिए। जोडी ने रात मे कई वार सुना कि कोई रसोई मे जाकर आग को फिर से सुलगा आता है।

सातवें दिन भी सुवह वही हाल रहा। पहले दिन के समान ही तेज़ हवा घर के चारो ओर चलती रही, मानो यह सदा से ऐसे ही चलती आई है और ऐसे ही चलती रहेगी। छत और नीचे के ढोलो मे वर्षा के पानी की आवाज़ सुनने की ओर अव किसी का ध्यान न था। दिन चढने पर सामने के चीनी वेरी की एक वडी डाल टूटकर धरती पर गिरी। सारा परिवार नाश्ते के लिए चुप वैठ गया।

पैनी वोला, "अभी तो इससे भी वुरा हाल काम सँभालते समय होगा।

ऐसा लगता है जैसे हमने अपना जीवन ही नही बिताया।"

उसकी पत्नी बोली, "इसमे भी कुछ भलाई देखने का प्रयत्न करो। ऐसा करना ही उचित है।"

पैनी ने कहा, "इसमे कुछ भी भला नही। हां, यह अवश्य कहा जा सकता है कि इससे मनुष्य को नम्र बनने की याद दिलाई गई है, क्योकि वह इस धरती पर किसी भी चीज़ को अपना नही कह सकता।"

नाश्ते के बाद जोडी को लेकर पैनी मक्की के खेतो मे गया। आँधी से पहले ही भुट्टे उतार लिये गए थे। अब जड-समेत सारी पौध धरती पर आ गिरी। उसके सिट्टे अभी बचे हुए थे। उन्होने उन्हे इकट्ठा किया और रसोई मे ले आए, ताकि कुछ गर्मी मे उन्हे बचाया जा सके।

माँ बोली, "मैं तो अभी मटर भी नही सुखा पाई। इन्हे कैसे सुखाऊँगी ?"

बिना उत्तर दिए पैनी सामने वाले कमरे मे गया और उसने भट्टी मे आग जला दी। जोडी और लकडी लाने के लिए बाहर चला गया। लकडी पानी से फूल चुकी थी, पर थोडा गर्म करते ही यह जलने लायक हो जाती थी। पैनी ने मक्की के सिट्टे फर्श पर फैला दिए।

उसने जोडी से कहा, "अब तुम्हारा काम इन्हे पलटते रहने का है, ताकि सभी को गर्मी मिल सके।"

पत्नी ने गन्ने के बारे मे पूछा, "गन्ना कैसा है ?"

पैनी ने बताया, "वह भी गिर चुका है।"

"आलुओ के विषय मे तुम्हारा क्या खयाल है ? वे कैसे होगे ?"

उसने सिर हिला दिया। दोपहर बाद वह आलुओ के खेत मे गया और शाम के लिए कुछ इकट्ठे कर लाया। वे भी सडने लग गए थे। छांटने से कुछ ठीक हो गए। शाम का भोजन आलुओ के कारण एक बार फिर अच्छा बन गया।

पैनी ने कहा, "अगर कल सुबह तक भी मौसम मे कुछ परिवर्तन नही हुआ, तो हमारे लिए सब सघर्ष छोडकर मरने के लिए पड रहना ही ठीक होगा।"

जोडी ने अपने पिता को इतनी निराशा से बात करते कभी न सुना

था। वह सुन्न रह गया। भोजन की कमी का प्रभाव फ्लैग पर भी पड़ने लगा था। उसकी पसलियाँ और रीढ की हड्डी दीखने लगी थी। वह प्राय ही मिमियाने लगा था। पैनी ने बछड़े का ध्यान रखकर दूध दुहना बिलकुल छोड़ दिया था।

आधी रात के समय जोडी जागा। उसे लगा कि उसने पिता की आवाज पास मे ही सुनी है। वर्षा का जोर कुछ कम पड़ गया था। पूरी सचाई जानने से पहले ही वह फिर सो गया। वह आठवे दिन की सुबह उठा। सब कुछ बदल चुका था। शोर के स्थान पर चुप्पी छा गई थी। वर्षा रुक गई थी। हवा अब भी तेज थी। धुंधले और गीले आकाश मे लाल किरणें फैलने लगी थी। पैनी ने सारे दरवाज़े और खिड़कियाँ खोल दी।

वह बोला, "अभी बाहर जाने लायक मौसम तो नही हुआ, फिर भी हम सबको बाहर निकलकर भगवान का धन्यवाद करना चाहिए कि आखिर दुनिया देखने को तो मिली।"

कुत्ते उसे धक्का देते हुए बढे और उसकी बगलो मे कूदने लगे।

वह हँसा और बोला "ऐसा लगता है जैसे हम किसी नाव मे बाहर जा रहे है। पशु दो-दो करके बढ़ेंगे और, ओरी, आओ,तुम मेरे साथ बढोगी।"

जोडी कूदा और छौने के साथ सीढियाँ नापता नीचे उतर गया।

वह बोला, "हम दो हिरण है।"

माँ ने खेतो की ओर देखा और रोने लगी। पर जोडी को हवा ठण्डी, मधुर और सुहावनी लगी। छौने ने भी उसके विचार की हामी भरी और आँगन के दरवाज़े को एड़ियो के बल उछलकर लाँघ गया। बाढ से दुनिया की काफी तबाही हुई थी, पर पैनी के कहने के अनुसार उनका ससार यही था।



# 20

तूफान के दो दिन बाद बक और मिलव्हील घोडे पर चढकर उस ओर आए, ताकि बैक्स्टर परिवार की कुशलता जान सके। वे अपने पशुओ की देखभाल से सीधे ही इधर आ रहे थे। उन्होने बताया कि मुख्य पगडण्डी के साथ जो कुछ भी उन्होने देखा वह उनके जीवन के लिए बिलकुल नया ही था। इस बाढ ने चारो ओर छोटे पशुओ के लिए कहर ढा दिया है। बक, मिलव्हील, पैनी और जोडी ने मिलकर चारो ओर कुछ मील दूर तक खोज-बीन के लिए यात्रा करना उचित समझा, ताकि वे जान सके कि निकट भविष्य मे शिकार के अलावा हिंसक जन्तुओ की किस प्रकार की हलचल का उनको सामना करना पडेगा? फौरेस्टर अपने साथ दो कुत्ते लाए थे और एक घोडा भी फालतू ले आए थे। उन्होने रिप और जूलिया को साथ लेने का आग्रह किया। जोडी को खुशी थी कि वह भी साथ चलेगा। उसने पूछा क्या वह फ्लैग को भी साथ ले जा सकता है?

पैनी वडे गुस्से मे उसकी ओर घूमा और बोला, "देखो, यह गम्भीर

बात है। मैं तुम्हे कुछ सिखाने के लिए साथ ले जाना चाहता हूँ। अगर तुम्हारी इच्छा हँसी-मज़ाक की है तो तुम भी घर पर ही रुक जाओ।"

जोडी का चेहरा उतर गया। उसने जाकर पलँग को फिर से पिछली कोठरी मे बन्द कर दिया। मिट्टी का फर्श कुछ फूला हुआ था और कोठरी मे से अब भी सीलन की बू आ रही थी, परन्तु उसने सन के बोरो का बिस्तर बनाया, ताकि छौना सूखे मे रह सके। तब उसने पानी और दाना भी साथ ही रख दिया, कही वह बहुत देर मे लौटकर न आए।

वह बोला, "अब तुम चुप होकर यहीं पडे रहना। मैं आकर तुम्हे अपनी देखी सारी बात समझाऊँगा।"

फौरेस्टरो के पास सदा की भाँति काफी अधिक गोला-बारूद था। पैनी को इस बाढ की दो साँझो मे अपनी गोलियाँ दो-तीन बार बरतनी पडी थी। उसके पास अब भी एक महीने की पूरी गोलियाँ तैयार थी। उसने अपना थैला भरा और अपनी बन्दूक की नालियो को साफ किया।

वह फौरेस्टरो से बोला, "देखो, मैंने तुम्हारे साथ उस कुत्ते को बेचकर बहुत बुरा बर्ताव किया था। अब अगर कभी तुम्हारी इच्छा हो तो इस बन्दूक को बेखटके बरत सकते हो।"

बक बोला, "पैनी, हमारे मे से लेम के सिवाय और कोई इतना नीच नहीं है कि इसे वापस माँगे। मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि वह इन बाढ के दिनो मे भी इतना नीच हो गया था कि मुझे उसे दुरुस्त करना पडा।"

"अब कहाँ है वह ?" पैनी ने पूछा।

बक ने घृणा के साथ कहा, "वह नदी की ओर चला गया है। उसे डर था कि कही उसकी प्रेमिका के साथ बुरी न बीती हो। उसे उम्मीद है कि वह उसे पटा लेगा और ओलिवर से बदला चुकाएगा। इस बार वह अकेला ही लडने को तैयार है।"

यह निश्चय किया गया कि बैक्स्टर और फॉरेस्टर परिवारों की सारी जमीन को घेरते हुए एक लम्बा चक्कर काटा जाय, ताकि जूनिपर स्रोत, होपकिन्स मैदान, हिरणो का प्रदेश और दलदली नुकीली घास वाले इलाके मे स्थित सनोवरो का टापू आदि सभी बीच मे आ जायें, क्योंकि इस टापू मे ही पशुओ के छिपने की उम्मीद थी। ओक्लावाहा नदी की

ओर की पश्चिमी ढलान का छोडकर वैवस्टर परिवार की सारी जमीन उस जगल मे सबसे ऊँची थी। परन्तु, इसके चारो ओर की ज़मीन नीची थी। जो चक्कर उन्होने काटने की सोची थी, उससे उन्हे सब कुछ पता चल जाना था। उन्होने सोचा कि वे लोग फौरेस्टर परिवार की जमीन पर लौटकर सोएँगे। पर अगर यह सम्भव न हुआ तो जहाँ पर भी हो सकेगा वे रात गुज़ारेंगे। पैनी ने अपना थैला खूब सोचकर भरा। उसने तलने का वर्तन, नमक, आटा, सूअर की कमर का माँस और थोडा तमाखू आदि सब कुछ ले लिया। सन् की एक बोरी मे उसने जलाने वाली कुछ लकडियाँ, पतले तेल की एक बोतल, शेर की चर्बी की एक बोतल आदि भी ले ली। शेर की चर्बी वह अपने जोडो के दर्द के लिए बचाकर रखता था। तूफान के दिनो मे ठण्ड लगने से उसका यह दर्द वहुत तेज़ी से बढ रहा था। उसके पास कुत्तो के लिए कुछ भी माँस नही बचा हुआ था।

बक बोला, "हम उनके लिए कुछ वही से मार लेंगे।"

आखिर मे वे तैयार होकर घोडो पर उछलकर चढ गए और एकदम ही दक्षिण-पूर्व की ओर सिल्वर घाटी और जॉर्ज झील की ओर बढ गए।

पनी बोला, "जब तक हम साथ है, हमे डाक्टर विल्सन की ओर जाकर भी उसका हालचाल पता करना चाहिए। लगता है उसका स्थान पानी मे आधे से अधिक डूब गया होगा।"

बक बोला, "और सम्भव है कि वह शराब के नशे मे यह जान ही न सका हो।"

पैनी की ज़मीन और सिल्वर घाटी के बीच की सडक बहुत गीली और नीची थी। बाढ का पानी इस पर इतनी तेज़ी से और इतना अधिक बहा था कि रेतीली चपटी सडक एक पतली खाई की भाँति गहरी हो गई थी। आस-पास घने रूप मे उगे हुए चौडो के निचले हिस्सो पर सारा कूडा-करकट जमा हुआ था और नीचे जाकर छोटे-छोटे पशुओ के साथ होने वाला जिन्दगी का खिलवाड सामने आ गया। नेवले, कगारू आदि सबसे अधिक सताये गए थे। उनके मरे हुए शरीर दर्जनो की सख्या मे जमीन पर पडे हुए थे। हटता हुआ पानी इन्हे वही छोड गया था या फिर कही-कही पेडो की शाखो पर लटके हुए थे। दक्षिण और पूरब की ओर अधिक शान्ति थी।

यों तो जगल सदा ही शान्त रहता था, परन्तु अब जोडी को अनुभव हुआ कि जैसे जगल की इस शान्ति मे भी कुछ चिल्लाहट और हलचल रहती थी, जिसमे पशुओं की चीख-पुकार, उनकी भाग-दौड और हवा की तेज चाल आदि सब मिल जुलकर एक-से हो जाते थे। उत्तर की ओर जहाँ जगल कुछ ऊँचा उठ गया था और जहाँ चीड कुछ अधिक घने हो गए थे, कुछ अधिक हलचल और आवाज सुनाई दे रही थी। यहाँ साफ तौर पर गिल-हरियाँ डरकर रहने आ गई थीं। उन्हे बाढ न सही, भूख और मौत का डर तो था ही। इसीलिए दलदलों और हरे-भरे मैदानों को छोडकर वे यहाँ आ बसी थीं।

पैनी बोला, "मै शर्त के साथ कहता हूँ कि जगल का केवल यही हिस्सा छोटे-मोटे जानवरों से भरा हुआ है।"

वे कुछ क्षण तक घने जगल मे घुसने से हिचकिचाए। उन्होंने निश्चय किया कि पहले सोचे अनुसार यह अधिक उचित है कि नीचे के हिस्सों मे होते हुए पहले नुकसान का अन्दाज लिया जाय और तब बचे हुए जानवरों को देखा जाय। तब उन्होंने सिल्वर घाटी की ओर अपने घोडों का रुख कर दिया।

"जो कुछ मैं देख रहा हूँ, क्या तुमने भी देखा ?"

"अगर तुमने भी यह न देखा होता, तो मैं शायद इस पर विश्वास ही न करता।"

सिल्वर घाटी खूब भरकर बह रही थी। चारों ओर से बाढ का पानी इसमे आ-आकर मिल रहा था और एक अजीब प्रलय चारों ओर मची हुई थी। इसके किनारों पर मरे हुए जानवर बह रहे थे।

पैनी बोला, "मैंने कभी नहीं सोचा था कि ससार मे इतने अधिक साँप होंगे।"

ऊँची जमीनों पर रहने वाले साँपों के शरीर सबसे अधिक मोटे थे। इन मरे हुए साँपों में फनियर, राजा, काला और अनेक प्रकार के छोटे-बडे साँप मौजूद थे। बिलकुल किनारे पर कई-से मुलायम मुँह वाले एक खास जाति के साँप और कुछ दूसरे पानी के साँप तैर रहे थे।

वह बोला, "मुझे यह बात समझ मे नहीं आई, क्योंकि कोई भी साँप

तैर सकता है। मुझे एक वार नदी के बीचोवीच एक फनियर सांप मिला था।"

पैनी बोला, "ठीक है, परन्तु ज़मीन के सांप अक्सर अपने विल मे ही पकडे जाते है।"

यह वाढ हर जगह आई थी, मानो रैकून की खोजने वाली अगुलियां हो। इसने ज़मीन पर रहने वाली तमाम ऐसी चीजो को नष्ट कर दिया था, जिनका एकमात्र सहारा जमीन ही थी। एक छौना फूले हुए शरीर के साथ वही मरा पडा था। जोडी का दिल उछल पडा। अगर कही जगल मे होता तो शायद फ्लैग भी इसी भांति मरा हुआ होता। ज्योही वे आगे वढे, दो फनियर सांप उनके सामने से ही ज़मीन पर निकले। उन्होने इन्हे नही देखा, मानो वडे खतरे के मुकाबले मे छोटा खतरा कोई अर्थ नही रखता।"

पैनी वोला, "अच्छा होगा कि इस ऊँची ज़मीन को हम पार करे, क्योकि यही हमारे जीवन की सफलता की वात होगी।"

वक ने स्वीकृति दी। वे पूरव की तरफ आगे नही जा सकते थे। इसलिए उथले पानी को काटते हुए वे उत्तर की ओर मुडे। यहाँ जहाँ भी दलदल थी, वहाँ जोहड वन चुके थे और जहाँ हरी घास के मैदान थे, वहाँ दलदल वन चुके थे। केवल ऊसर जगल ही इस विनाश से बचे हुए थे। यहाँ पर भी चीड उखड चुके थे और जो वचे खडे थे वे एक ओर को झुक चुके थे। उन्हे हवा और वारिश ने पश्चिम की ओर झुका दिया था।

पैनी बोला, "इन पेडो को सीधा होने मे काफी समय लगेगा।"

नदी तक पहुंचते-पहुंचते वे काफी परेशान हो गए थे। पानी अव भी वहुत ऊँचा था। जार्ज झील भी काफी नीची थी। तीन-चार दिन पहले यहाँ पानी और भी ऊंचा रहा होगा। वे रुके और झील के ढलान की ओर उन्होने डाक्टर की ज़मीन की ओर देखा। सामने का घना हरा मैदान अव सरू के पत्तो के कीचड से भरा हुआ था। वडे-वडे ऊँचे सनावर, अखरोट, कीकर, मैग्नोलिया, नारगी के पेड आदि सभी बुरी तरह गीले और फूले हुए-से खडे थे।

पैनी बोला, "आओ, इस सडक पर वढकर देखे।"

वैक्स्टर परिवार की ज़मीन से यह सडक दक्षिण-पूरव की ओर उतरती

हुई आजकल नाले के रूप मे पानी बहने का मार्ग बनी हुई थी। इस समय यह गुम चुकी थी। इसमे से होकर वे आगे बढे। सामने ही डाक्टर का घर दिखाई दिया। यह अँधेरे और छाया मे बडे-बडे पेडो के नीचे खडा था।

बक बोला, "मुझे तो सचमुच अचरज है कि कोई भी आदमी, भले ही वह बडा भारी शराबी हो, ऐसी अन्धेरी जगह रहने के लिए क्यो चुन लेता है?"

पैनी बोला, "अगर सभी लोग एक-सी जगह चुने तो सभी जगह भीड होगी।"

पानी घुटनो तक ऊँचा था। फर्श के पत्थरो से पता चलता था कि पानी फर्श से ऊँचा चढ आया था। बरामदे के लकडी के फट्टे ऊपर की ओर मुड गए थे। ये लोग सामने की सीढियो पर चढे। वही पर कुछ मुलायम साँप छिपे बैठे थे। सामने ही एक पर्ची लिखकर दरवाजे पर बाँधी हुई थी। स्याही से इस पर एक सन्देश लिखा हुआ था। स्याही मिट जाने पर भी इसके अक्षर साफ थे।

बक बोला, "हम लोग अच्छा नही पढ सकते। पैनी, तुम पढो।"

पैनी ने ये अक्षर पढे—"मैं समुद्र की ओर जा रहा हूँ। वहाँ यह पानी बहुत अधिक नही लगेगा। मैं वहाँ पर तब तक शराब मे डूबा रहूँगा, जब तक यह तूफान समाप्त नही हो जाता। मैं यहाँ और समुद्र के बीच मे ही कहीं पडा हूँगा। कोई मुझे तब तक ढूँढने न आए, जब तक कि किसी की गर्दन ही न टूट गई हो या कोई बच्चा न होने वाला हो।—डाक्टर। पुनश्च—अगर गर्दन टूट गई हो, तब आने की कोई आवश्यकता नहीं।"

बक, मिलव्हील और पैनी चिल्ला पडे और जोडी भी देखादेखी हँस पडा।

बक बोला, "यह डाक्टर तो भगवान् के सामने भी कोई-न-कोई मजाक करेगा।"

पैनी बोला, "तभी तो यह अच्छा डाक्टर है।"

"यह कैसे?"

"यह यूँ कि यह भगवान् को भी बार-बार मूर्ख बनाता रहता है।"

वे बहुत देर तक हँसते रहे। चारों ओर के उदास और दुखिया मजाक

दिल मे हल्का करना अच्छा ही था। वे घर के अन्दर गए और वहाँ उनको बिस्कुटो का एक डिब्बा और शराब की एक बोतल मेज़ पर ही मिली। उन्होने इन्हे भी अपने थैलो मे डाल लिया और फिर वे सडक पर आ गए, और उत्तर की ओर मील-भर से कुछ अधिक चलकर पश्चिम की ओर मुड गए।

पैनी बोला, "होपकिन्स मैदान मे जाने की ज़रूरत नही। हम मान सकते है कि वह एक झील बन गया होगा।"

बक और मिलव्हील भी सहमत हो गए। उस मदान के दक्षिण मे वही कुछ मिला। कमजोर और छोटे जन्तु नष्ट होकर बह चुके थे। खाडी के एक किनारे एक भालू आँखो के सामने ही भारी चाल से कूदता चल रहा था।

पैनी बोला, "उसे मारने की कोई जरूरत नही है। हमे उसका माँस आज से एक महीने बाद ही चाहिए। इसे बहुत दूर ढोकर ले जाना पडेगा और इस बीच रात से पहले ही पहले हमे ऐसे कई शिकार मिल जाएँगे।"

फौरेस्टर भाइयो ने अनमने भाव से मान लिया। उनके लिए शिकार का मतलब शिकार ही था, चाहे उसका कोई फायदा हो या न हो। पैनी जब तक किसी चीज़ का लाभ न देख ले, उसे मारना नही चाहता था। वह तो अपने दुश्मन भालुओ को भी तभी मारता था जब उनके माँस का कोई फायदा और ज़रूरत हो। वे पश्चिम की ओर बढते रहे। यहाँ गाल-बेरी की झाडियाँ फैली हुई थी। अच्छे मौसम मे इनमे ही भालू, भेडिया और चीते आकर रहते थे। यहाँ की जमीन घनी थी। वनस्पतियाँ छोटी थी। और यहाँ की खाडियाँ उत्तर और पूरब की ओर खुराक और छिपने का स्थान बनाती थी। परन्तु अब यह जगह एक दलदल बन चुकी थी। जहाँ रेतीली ज़मीन थी, वहाँ से पानी निकल चुका था। परन्तु जहाँ ज़मीन भरी थी, वहाँ मिट्टी पर पानी अब भी जमा था। इन झाडियो के बीच मे ही सनोबरो के टापू और कुछ खजूर के हरे मैदान चारो ओर फैले हुए थे। इस दलदल का किनारा काटकर वे इन हरे मैदानो की ओर बढ गए।

पहले-पहल जोडी को कुछ भी न दिखाई दिया, पर पैनी के बार-बार

इधर-उधर के वृक्षों की ओर इशारा करने पर उसने अनेक पशुओं की आकृतियां देखीं। वे साथ-साथ बढ़ रहे थे। वे सारे जन्तु उन्हें निडर से लगे। एक बहुत अच्छा बारहसिंगा उनकी ओर ताक रहा था। लाचार होकर बक ने इस पर गोली चला दी। अब वे फिर पास-पास बढ़ने लगे। बनबिलाव और बिल्लियां पेड़ों की शाखों में से उनकी ओर ताकती रहीं। बक आदि ने उन्हें मारने की ज़िद की।

पैनी बोला, "यह अच्छा नहीं कि हम उनकी मुसीबतें बढ़ा दें। इस संसार में उनके लिए भी काफी जगह रहनी चाहिए। यही उचित है।"

मिलव्हील बोला, "पैनी, तुम्हारे साथ रहना भी एक मुसीबत है। तुम्हें एक प्रचारक ने पाला है। तुम तो शेर और भेड़ियों को भी साथ-साथ सुला-कर ही प्रसन्न रहोगे।"

पैनी ने सामने की ऊंची जमीन की ओर इशारा किया और बोला, "वहां पर तुम्हें हिरण और बिल्लियां आदि बहुत कुछ मिलेगा।"

पर उसे यह मानने पर मजबूर होना पड़ा कि हर बनबिलाव, भालू, बिल्ली, भेड़िया और चीता उनके अपने सूअरों, चूजों, पशुओं आदि के लिए एक खुला खतरा थे। हिरण, रैकून, गिलहरियां और कगारू आदि के लिए भी इन चीजों का खतरा बराबर था। ये चीजें शिकार के लिए जरूरी थीं। ऐसा लगता था, जैसे चारों ओर 'खाओ या खाये जाओ' अथवा 'मारो या भूखे रहो' की पुकार मची हुई थी।

अब उसे भी बड़ी बिल्लियों के शिकार में शामिल होना पड़ा और छ को उन्होंने मार गिराया। जोडी ने एक बिल्ली मारी। पुरानी भरने वाली बन्दूक के झटकों ने उसे घोड़े की पीठ से लगभग गिरा ही दिया था। उठ-कर उसने फिर से बन्दूक भरी। बक आदि ने उसकी पीठ थपथपाई। सबने मिलकर बारहसिंगे की खाल आदि उतारी। उस पर मांस थोड़ा था, जिससे भूख की कमजोरी स्पष्ट थी। उन्होंने वे सब बक के घोड़े पर लाद दिए और तब सनायरों के टापू में जा पहुंचे। बहुत दूरी पर कुछ धुंधली आकृतियां भाग रही थीं। जानवरों को इधर-उधर डरकर भागते हुए देखना और उनके मरने की आवाज सुनना बड़ा अजीब-सा लग रहा था।

बनबिलावों की खाल अच्छी और बचाने लायक नहीं थी।

पैनी बोला, "इनका माँस कुत्तो के लिए अच्छा रहेगा और हम इसे आसानी से ढो सकेगे।"

कुत्ते उन विल्लियो की कमर के माँस को पहले ही खा रहे थे। इन तूफान के दिनो मे उनको भी पूरा खाना न मिला था। विल्लियो का माँस साफ करके घोडो पर लटका दिया। दोपहर बाद इस समूह ने अपने को फौरेस्टर लोगो की ज़मीन के उत्तर और पश्चिम की ओर पाया। उनकी इच्छा हुई कि अभी वे आगे चलते रहे और आज की रात कही बाहर ही बिताएँ। एक-दो घटे के लिए धूप भी तेज़ हो गई। चारो ओर एक सडी हुई-सी गन्ध गीली ज़मीन और पानी से उठ रही थी। जोडी की तबीयत कुछ मिचला गई।

बक बोला, "मुझे खुशी है कि फौडरविंग इस समय यहाँ नही है। उसे जानवरो का इस तरह मरना अच्छा नही लगता।"

अब भालू फिर से दिखाई देने लगे। भेडिए और चीते सामने नही थे। वे जगल मे से होकर कुछ मील तक बढते रहे। यहाँ हिरण और गिलहरियाँ अधिक थी। लगता है कि वे यहाँ से कभी निकले ही नही थे। उन्हे यही सुरक्षा अनुभव हुई। वे सब साहसी दीखती थी, पर भूखी भी। फौरेस्टर लोगो ने कुछ लोभ के कारण और कुछ इस इच्छा से कि दोनो परिवारो को माँस की काफी जरूरत थी, एक और बारहसिंगा मार लिया और उसे मिलव्हील के घोडे पर लटका दिया।

साँझ होते होते जगल खतम कर वे फिर सनावरो के टापू मे पहुँच गए। यहाँ से काफी दूर दक्षिण मे जूनिपर मैदान था। अब वहाँ भी बाढ आ गई होगी। इसके पूरब की ओर एक फैली हुई ज़मीन मे, जहाँ न जगल था और न मैदान, न ही कोई टापू था और न दलदल और हरियावल, उन्हे एक खुली खेत जैसी जगह दिखाई दी। सबने रात को यही डेरा डालने का निश्चय किया, हालाँकि अभी एक-दो घटे दिन बाकी था। कोई नही चाहता था कि वे रात अँधेरे मे निचले दुर्गन्ध भरे और साँपो वाले मैदानो मे रहे। उन्होने देवदार के दो बडे पेडो के नीचे अपना डेरा डाला। ऊपर रक्षा के लिए कोई चीज तो न थी, परन्तु रात साफ थी और ऐसी बुरी हालतो मे खुले मे रात गुजारना अधिक अच्छा था।

मिलव्हील बोला, "जब मैं किसी चीते के साथ लेटता हूँ तो मेरी इच्छा होती है कि मैं उसे मार डालूँ।"

उन्होने अपने घोड़ो को खुला छोड दिया और उनकी लगाम ढीली कर दी, ताकि वे रात-भर अच्छी तरह चर सकें। मिलव्हील सनावरो के एक समूह मे दक्षिण की ओर निकल गया, औरो ने उसे चिल्लाते हुए सुना। कुत्ते भी उसके पीछे दौडते हुए गए। उन्हे दिन-भर की इस दौड-धूप मे खूब मजा आ रहा था। वे धीमे-धीमे चल रहे थे, क्योकि हर जगह गन्ध और पाँवो के निशान बहुत अधिक थे। जूलिया ऊँची आवाज मे चिल्लाई।

पैनी बोला, "यह बिल्ली है।"

वनविलावो का उत्साह समाप्त हो चुका था। चारो कुत्ते भौंक रहे थे। उनकी आवाजो मे पतली और भारी सभी आवाजें मिली थी। मिलव्हील चिल्लाया।

पैनी बोला, "क्या तुम फौरेस्टरो को कभी वनविलाव का शिकार नही करने को मिला ?"

बक बोला, "वह कभी भी किसी वनविलाव पर इस तरह नही चिल्लाएगा।"

कुत्तो की आवाज़ तेज़ होकर बढ गई। तीनो ही इस आवाज़ से जोश मे आ गए और उधर की ओर बढ पडे। एक जगली सनावर बहुत बडे आकार का था। इसकी आधी ऊँचाई पर उन्होने एक अजीब-सी चीज़ देखी। यह मादा चीता थी। इसके दो बच्चे भी साथ थे। यह कमज़ोर और पतली थी, पर इसकी लम्बाई बहुत अधिक थी। इसके बच्चो के शरीर पर अब बचपन के नीले और सफेद निशान मौजूद थे। जोडी को लगा कि इनके ये निशान अब तक के देखे सभी बच्चो से ज्यादा प्यारे थे। वे घर की पालतू बिल्लियो से अधिक बडे थे। उन्होने अपनी मूँछे अपनी माँ की गुर्राहट की नकल मे ऊपर उठाई। उसकी शक्ल बडी भयावनी थी। उसके दाँत नगे थे और उसकी पूँछ आगे-पीछे उठ गिर रही थी। उसके पजे सनावर की शाख पर चल रहे थे। लगता था पास जाने वाले किसी भी मनुष्य या कुत्ते पर वह टूट पडेगी। कुत्ते पागल हो रहे थे।

जोडी ने पुकारा, "मुझे ये बच्चे चाहिएँ!"

मिलव्हील बोला, "पहले हम उसे मार ले और तब कुत्तो को छोड देंगे।"

पैनी बोला, "हमारे चारो कुत्ते बहुत थके हुए है।"

बक बोला, "तुम बिलकुल ठीक हो। हमे केवल उसे ही मारना चाहिए।" और, यह कहकर, उसने गोली दाग दी। धरती पर शिकार के गिरते ही कुत्ते उस पर टूट पडे। रही-सही ज़िन्दगी भी उसमे से खतम हो गई। बक ने पेड पर चढकर शाख हिला दी।

जोडी फिर चिल्लाया, "मुझे ये बच्चे चाहिएँ।"

नीचे गिरने पर, उसने सोचा, वह दौडकर उन्हे उठा लेगा। उसे विश्वास था कि वे बहुत सीधे होगे। आखिर वे नीचे गिरे। बक को बहुत अधिक हिलाना पडा। जोडी तेज़ी से दौडा पर उससे पहले कुत्ते वहाँ पहुँच चुके थे.। इससे पहले कि वह पहुँचता, बच्चे मर चुके थे। मरते-मरते भी, उसने देखा कि, उन्होने कुत्तो पर अच्छी तरह वार किया और उन्हे काट-कर पजे चलाए। उसे लगा कि अगर कही वह उन्हे पकड लेता तो उसका माँस भी चिथडे-चिथडे हो जाता। फिर भी वह उन्हे जिन्दा ही देखना चाहता था।

पैनी बोला, "बेटा, अफसोस है, पर तुम इन्हे रख भी न पाते। ये लोग बचपन से ही नीचता सीख जाते हैं।"

जोडी ने उनके छोटे, पर खतरनाक, दाँत देखे।

"क्या मैं एक और थैला बनाने के लिए इनकी खाल ले सकता हूँ?"

"ज़रूर। बक उनकी खाल उतारने मे मेरी सहायता करेगा, अगर कुत्ते उसे तब तक फाड न डालें।"

जोडी ने उनके शरीरो को उठाया और उन्हे हिलाता हुआ बोला, "मैं किसी चीज़ को मरते हुए नही देख सकता।"

सभी चुप रहे। पैनी धीरे से बोला, "बच्चे, तुम्हे यह याद रखना चाहिए कि कोई भी चीज़ मौत से नही बच सकती।"

"हाँ, मैं मानता हूँ।"

"बात यह है कि मौत एक पत्थर की दीवार है, जिसे लाँघना असभव है और न कोई अब तक लाँघ सका है। तुम इससे टक्कर ले सकते हो, पर

अपना ही सिर फोडोगे। चिल्लाओगे तो कोई उत्तर देने वाला न होगा।"

बक बोला, "पर मैं अपनी मौत के बारे मे कह सकता हूँ कि जब मैं मरूँगा तब मैं इस चिल्लाहट को अवश्य खरीद लूंगा।"

उन्होने कुत्तो को वहां से हटा लिया। वह तीन गज से भी ऊपर लम्बी थी, पर उसमे से तेल निकालना असम्भव ही था। वह कमज़ोर थी।

पैनी बोला, "या तो मुझे कोई मोटा चीता फँसाना पडेगा, या फिर इस गठिया से छुटकारा पाना होगा।"

उसकी खाल भी कोई बहुत अच्छी हालत मे न थी। उन्होने उसका दिल और जिगर कुत्तो के लिए भूनने को निकाल लिया।

पैनी बोला, "जोडी, उन बच्चो की अधिक देखभाल से कोई लाभ नही। जाओ, उन्हे छोडकर कुछ लकडी ले आओ। मैं उनकी खाल तुम्हारे लिए उतार दूँगा।"

जोडी चला गया। सांझ का आकाश साफ और गुलाबी रग का था। सूर्य पानी की ओर बढता जा रहा था। उसकी छायादार अगुलियाँ जैसे चमकते आकाश से फूली हुई धरती तक बढती आ रही थी। जगली सनावरो के गीले पत्ते और चीडो के सूई जैसे पत्ते इस प्रकाश से चमक रहे थे। यह देखकर जोडी अपना दुख भूल गया। रात के डेरे के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी था। लकडी सब जगह गीली थी, परन्तु घूमते-फिरते हुए उसे एक जगह एक गिरा हुआ चीड मिल गया। इसके एक किनारे से काफी राल निकल रही थी। उसने बक और मिलव्हील को बुला लिया और वे तीनो इसे डेरे की जगह तक घसीट लाए। अब वे इसे रात-भर जला सकते थे और इस पर दूसरी लकडियो को सुखा सकते थे। उन्होने इसे आधे मे से काट लिया और दोनो टुकडो को एक-दूसरे के साथ-साथ रख दिया। जोडी ने फिर पत्थर और लोहे से आग जलाने की कोशिश की, पर पैनी ने फिर उसके हाथ से लेकर उन दोनो लट्ठो के बीच मे तेल वाली लकडी के टुकडो के साथ आग जलाई। इस पर थोडे से झाडी के टुकडे रख दिए और आग जल्दी ही भडक उठी। तब कुछ बडे टुकडे और लट्ठे इस पर लाकर रखे गए। पहले उनमे से धुआँ उठा, फिर वे सुलगने शुरू हुए और तब उनमे से लपटें निकलने लगी। अब इस चूल्हे पर गीली से गीली लकडी भी सुखाई जा

सकती थी, और तब उसे धीमे-धीमे जलाया जा सकता था। जोडी आस-पास से प्राप्त तमाम वह लकडी उठा लाया, जो उस अकेले से उठाई जा सकती थी। उसने रात-भर जलने के लिए एक बहुत बडा ढेर लगा दिया। बक और मिलव्हील भी अपने लायक बडे-बडे लट्ठे ले आए।

पैनी ने मोटे बारहसिंगे की पीठ के माँस मे से कुछ टुकडे काटे और उन्हे शाम के भोजन के लिए तलने के लिए रख लिया। एक ओर से मिल-व्हील ताड के फूले हुए पत्ते थाली के स्थान पर बरतने को ले आया, ताकि उन पर भोजन परोसा जा सके। वह कुछ और भी चीज़े डेरे की सफाई के रखने लायक ले आया। साथ ही ताड के दो जिगर भी लेता आया। उसने उन पर से एक पर एक सफेद परत उतारी और अन्त मे साफ पपडी वाले दो मीठे जिगर निकल आए।

वह बोला, "मुझे यह तलने वाली बाटी चाहिए। पैनी, क्या मेरी लाई दलदली सब्ज़ी के लिए इसे दोगे? इसके बाद तुम उस माँस को तलते रहना।"

उसने उन ताड के जिंगरो के पतले पतले टुकडे किए। उसने पैनी से चर्बी के लिए पूछा। पैनी ने सन के थैले मे पडी एक बोतल की ओर इशारा किया। जोडी औरो की ओर देखता हुआ इधर-से-उधर घूमता रहा। उसका काम था कि छोटी-छोटी शाखो से आग जलाता रहे और उसे बुझने न दे। लट्ठे अच्छी तरह जल रहे थे। भूनने के लायक अगारे पहले ही हो चुके थे। बक ने कुछ नुकीली छडियाँ ऐसी तैयार कर ली थी जिन पर माँस भूना जा सके। मिलव्हील ने अपनी दलदली सब्जी के लिए पास के जोहड से पानी लिया। इसे ताड के पत्ते से ढँक दिया और अगारो पर पकाने के लिए रख दिया।

पैनी बोला, "भई, मैं कॉफी लाना भूल गया।"

बक बोला, "कोई बात नही, डाक्टर विल्सन की शराब हमारे पास है ही। उसके रहते क्या कमी?"

बोतल लाकर उसने सबको दी। पैनी माँस पकाने के लिए तलनेवाली बाटी की प्रतीक्षा कर रहा था, परन्तु मिलव्हील की सब्ज़ी अभी बनी न थी। उसने उन छडियो को ठीक किया, जिन पर बिलावो का माँस लटकाया

अपना ही सिर फोडोगे। चिल्लाओगे तो कोई उत्तर देने वाला न होगा।"

वक बोला, "पर मैं अपनी मौत के बारे मे कह सकता हूँ कि जब मैं मरूँगा तब मैं इस चिल्लाहट को अवश्य खरीद लूंगा।"

उन्होने कुत्तो को वहाँ से हटा लिया। वह तीन गज से भी ऊपर लम्बी थी, पर उसमे से तेल निकालना असम्भव ही था। वह कमज़ोर थी।

पैनी बोला, "या तो मुझे कोई मोटा चीता फँसाना पडेगा, या फिर इस गठिया से छुटकारा पाना होगा।"

उसकी खाल भी कोई बहुत अच्छी हालत मे न थी। उन्होने उसका दिल और जिगर कुत्तो के लिए भूनने को निकाल लिया।

पैनी बोला, "जोडी, उन बच्चो की अधिक देखभाल से कोई लाभ नही। जाओ, उन्हे छोडकर कुछ लकडी ले आओ। मैं उनकी खाल तुम्हारे लिए उतार दूँगा।"

जोडी चला गया। साँझ का आकाश साफ और गुलाबी रग का था। सूर्य पानी की ओर बढता जा रहा था। उसकी छायादार अगुलियाँ जैसे चमकते आकाश से फूली हुई धरती तक बढती आ रही थी। जगली सना-वरो के गीले पत्ते और चीडो के सूई जैसे पत्ते इस प्रकाश से चमक रहे थे। यह देखकर जोडी अपना दुख भूल गया। रात के डेरे के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी था। लकडी सब जगह गीली थी, परन्तु घूमते-फिरते हुए उसे एक जगह एक गिरा हुआ चीड मिल गया। इसके एक किनारे से काफी राल निकल रही थी। उसने बक और मिलव्हील को बुला लिया और वे तीनो इसे डेरे की जगह तक घसीट लाए। अब वे इसे रात-भर जला सकते थे और इस पर दूसरी लकडियो को सुखा सकते थे। उन्होने इसे आधे मे से काट लिया और दोनो टुकडो को एक-दूसरे के साथ-साथ रख दिया। जोडी ने फिर पत्थर और लोहे से आग जलाने की कोशिश की, पर पैनी ने फिर उसके हाथ से लेकर उन दोनो लट्ठो के बीच मे तेल वाली लकडी के टुकडो के साथ आग जलाई। इस पर थोडे से झाडी के टुकडे रख दिए और आग जल्दी ही भडक उठी। तब कुछ बडे टुकडे और लट्ठे इस पर लाकर रखे गए। पहले उनमे से धुआँ उठा, फिर वे सुलगने शुरू हुए और तब उनमे से लपटें निकलने लगी। अब इस चूल्हे पर गीली से गीली लकडी भी सुखाई जा

सकती थी, और तब उसे धीमे-धीमे जलाया जा सकता था। जोडी अ
पास से प्राप्त तमाम वह लकडी उठा लाया, जो उस अकेले से उठा
सकती थी। उसने रात-भर जलने के लिए एक बहुत बडा ढेर लगा दि
बक और मिलव्हील भी अपने लायक बडे-बडे लट्ठे ले आए।

पैनी ने मोटे बारहसिंगे की पीठ के माँस मे से कुछ टुकडे काटे
उन्हे शाम के भोजन के लिए तलने के लिए रख लिया। एक ओर से मि
व्हील ताड के फूले हुए पत्ते थाली के स्थान पर बरतने को ले आया, त
उन पर भोजन परोसा जा सके। वह कुछ और भी चीज़े डेरे की सफा
रखने लायक ले आया। साथ ही ताड के दो जिगर भी लेता आया। उ
उन पर से एक पर एक सफेद परत उतारी और अन्त मे साफ पपडी
दो मीठे जिगर निकल आए।

वह बोला, "मुझे यह तलने वाली बाटी चाहिए। पैनी, क्या मेरी
दलदली सब्ज़ी के लिए इसे दोगे? इसके बाद तुम उस माँस को
रहना।"

उसने उन ताड के जिगरो के पतले-पतले टुकडे किए। उसने पै
चर्बी के लिए पूछा। पैनी ने सन के थैले मे पडी एक बोतल की ओर इ
किया। जोडी औरो की ओर देखता हुआ इधर-से-उधर घूमता रहा। उ
काम था कि छोटी-छोटी शाखो से आग जलाता रहे और उसे बुझने न
लट्ठे अच्छी तरह जल रहे थे। भूनने के लायक अगारे पहले ही हो चुके
बक ने कुछ नुकीली छडियाँ ऐसी तैयार कर ली थी जिन पर माँस भून
सके। मिलव्हील ने अपनी दलदली सब्जी के लिए पास के जोहड से
लिया। इसे ताड के पत्ते से ढँक दिया और अगारो पर पकाने के लिए
दिया।

पैनी बोला, "भई, मै कॉफी लाना भूल गया।"

बक बोला, "कोई बात नही, डाक्टर विल्सन की शराब हमारे प
ही। उसके रहते क्या कमी?"

बोतल लाकर उसने सबको दी। पैनी माँस पकाने के लिए तलने
बाटी की प्रतीक्षा कर रहा था, परन्तु मिलव्हील की सब्ज़ी अभी बनी न
उसने उन छडियो को ठीक किया, जिन पर बिलावो का माँस लट

हुआ था। उसने विलावो और चीते के दिल और जिगर काटे और उन्हे टुकडे-टुकडे करके छडियो मे लटकाकर अगारो पर भूनने के लिए रख दिया। उनकी गन्ध बहुत ही उत्तेजक थी। जोडी ने हवा को वार-वार सूंघा और अपने पेट पर हाथ फेरने लगा। पैनी ने हिरणो के जिगरो को भी चीरा और टुकडे-टुकडे करके बहुत सावधानी से वक की चिमटानुमा छडियो पर टिका दिया और तव उसने हरेक के हाथ मे अपनी-अपनी छडियाँ भूनने के लिए दे दी, ताकि हर कोई अपने स्वाद के अनुसार भून सके। लपटें कुत्तो के लिए रखे गए माँस को भी पका रही थी। उससे उठने वाली गन्ध कुत्तो को भी वही खीच लाई। वे भी वही आकर लेट गए और अपनी पूंछो को आगे-पीछे उठाकर गुर्राने लगे। विल्ली का कच्चा माँस उनके लिए उतना उत्तेजक न था। उन्होने तो इसलिए उसे लगातार काटा था ताकि अपनी जीत सावित कर सके। भूने हुए माँस का स्वाद कुछ और ही था। कुत्ते अपने हिस्से के टुकडो को चवाने लगे।

जोडी वोला, "मैं दावे से कह सकता हूँ कि यह वहुत अच्छा है।"

पैनी ने आग पर से एक टुकडा उठाया और उसे दिया। वोला, "जरा चखो और वताओ। यह उवाले हुए सेव से भी अधिक गर्म है।"

जोडी हिचकिचाया, पर तव उसने अपनी अँगुली उस गर्म सुगन्धित माँस पर लगाई और उसे मुँह मे डाला। वोल पडा, "यह वहुत ही अच्छा है।"

सव हँस पडे। पर वह दो टुकडे खा ही गया।"

पैनी वोला, "कुछ लोग कहते हैं कि वनविलाव का जिगर खाने से आदमी निडर वन जाता है। जोडी, आज हम यह वात देखेंगे।"

वक वोला, "सचमुच इसकी गन्ध वहुत अच्छी है। एक टुकडा इधर भी दो।"

उसने इसे चखा और वताया कि और किसी भी जिगर की भाँति यह भी वहुत अच्छा है। मिलव्हील ने भी एक टुकडा खाया। पर पैनी ने कुछ न लिया।

वह वोला, "अगर मैं कही और अधिक वहादुर वन गया तो मैं तुम फौरेस्टरो पर टूट पडूँगा और फिर से कोई चोट खा वैठूंगा।"

शराब की बोतल एक बार फिर घूम गई। आग जल रही थी। माँस का रस लपटो मे गिर रहा था, धुआँ और गन्ध मिलकर उठ रहे थे। उधर सनावरो के पीछे सूरज छिप रहा था। मिल की सब्ज़ी भी बनकर तैयार हो गई थी। पैनी ने उसे ताड के पत्ते पर उलटा दिया और एक सुलगते हुए लट्ठे पर गर्म रखने के लिए उसे रख दिया। उसने तलने वाली बाटी को साफ किया और अगारो पर रखकर इसमे सूअर की कमर का माँस डाल दिया। जब वह भुन गया तब उस पर गर्म-गर्म चर्बी भी डाल दी। इसके बाद इसी मे उसने हिरण की कमर के माँस के टुकडे सख्त और कोमल रूप मे तल लिए। बक ने ताड के तने मे से प्याले बना लिए और तब हर कोई अपना हिस्सा लेकर उस सब्ज़ी मे भिगो-भिगोकर खाने लगा। पैनी ने आटा, नमक और पानी को मिलाकर पकौडे-से तल लिए। इस चर्बी मे माँस पकाया था।

बक बोला, "अगर मुझे यह पता हो कि स्वर्ग मे ही ऐसा सुन्दर खाना मिलेगा, तो मैं मरने से कभी न कतराऊँ।"

मिलव्हील बोला, "जगल मे हर भोजन बहुत अच्छा लगता है। घर मे हलवा खाने की बजाय जगल मे ठण्डी और बासी रोटी खाना मुझे अच्छा लगता है।"

पैनी बोला, "मेरे साथ भी यही बात है।"

बिलावो का माँस पक चुका था, इसे ठण्डा करके उन्होने कुत्तो को दे दिया। वे इस पर लोभ मे टूट पड़े और तब पानी पीने के लिए जोहड की ओर चले गए। कुछ देर अजीब-अजीब सुगन्धो मे खिचे-से वे इधर-उधर भटकते रहे और तब उस जलती हुई आग के पास ही लेटने के लिए लौट आए, क्योकि ठण्ड बढती जा रही थी। बक, मिलव्हील, जोडी अपना पेट पूरा भर चुके थे। वे भी लेटकर आकाश की ओर ताकने लगे।

पैनी बोला, "बाढ आए न आए, यह सैर खुद बहुत अच्छी है। मैं तुम लोगो से एक वायदा लेना चाहता हूँ। जब मैं बूढा हो जाऊँ तो मुझे किसी ठूँठ पर बिठा देना और शिकार की बातें सुनने देना। मुझे कही खाडी मे छोडकर भाग न जाना।"

तारे टिमटिमा रहे थे। पिछले नौ दिन मे यह ऐसा पहला मौका था।

आखिर पैनी ने बाकी बचे सामान को हटाया। उसने कुत्तो को बची हुई रोटियाँ खाने को दी। चर्बी की बोतल पर उसने भुट्टे की डठल फिर से लगाई। उसने बोतल को सीधा उठाकर देखा और हिलाया।

वह बोला, "अरे, यह क्या किया ? मैं लुट गया। हमने यह मेरे जोडो के दर्द की दवाई बरत ली।"

उसने थैले मे फिर से हाथ डाला और दूसरी शीशी निकाली और खोली। इसमे असल तेल मौजूद था।

वह बोला, "अरे, मिलव्हील ! तुमने अपनी सब्जी के लिए चीते का तेल बरत लिया।"

कुछ देर शान्ति रही। जोडी को अपना पेट पलटता नज़र आया।

मिलव्हील बोला, "मैं कैसे जानता कि यह चीते का तेल है ?"

बक ने अपनी साँस रोक ली, पर तभी वह बहुत तेज़ हँसी से फूट पडा। बोला, "मेरे पेट मे क्या होता है ?' इसकी मुझे चिन्ता नही। मुझे तो इस बात की खुशी है कि मैंने इतनी अच्छी सब्जी कभी नही खाई।"

पैनी बोला, "खाई तो मैंने भी नही ! पर जब मेरी हड्डियाँ दर्द करेंगी तब मैं जरूर चाहूँगा कि इस सब्जी मे से तेल निकलकर इसी बोतल मे आ जाय।"

बक बोला, "खैर, हमे यह पता चल गया कि जगल मे रहने पर कौन-सा तेल बरतना चाहिए।"

जोडी का पेट फिर से शान्त हो गया। बनबिलाव के जिगर के दो टुकडे खाने के बाद भी दिल छोटा करना उसे अच्छा न लगा। पर यह चीते का तेल कुछ और महत्त्व रखता था; क्योकि वह देख चुका था कि सर्दियो की रातो मे पैनी इसे ही अपने घुटने और हाथो मे रगडता है।

मिलव्हील बोला, "अच्छा, मैं सबके बिस्तरो के लिए नर्म शाखाएँ काट लाता हूँ, क्योकि यह अपराध मैंने ही किया है।"

पैनी बोला, "मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगा। अगर मैं सो गया और उठकर तुम्हे झाडियो मे देख लिया तो मैं समझ बैठूंगा कि कोई भालू आ गया है। मैं सच कहता हूँ कि मैं कभी नहीं सोच पाया कि तुम लोग इतने बडे कैसे हो गए हो ?"

मिलव्हील बोला, "अरे, वाह ! हम लोग चीते के तेल पर पाले गए हैं।"

खुशी और हँसी के साथ हर कोई अपना बिस्तर बनाने मे जुट गया। जोडी ने चीड की पतली शाखे तोडी और उन पर काई आदि बिछाकर बिस्तर तैयार किया। उन्होने अपने बिस्तर आग के आस-पास बनाए। बक और मिल दोनो ही अपने बिस्तर पर धडाम से लेट गए।

पैनी बोला, "मैं शर्तिया कहता हूँ कि पॉवकटा खुर्राट भालू भी इतनी भारी आवाज के साथ कभी नही सोता होगा।"

बक बोला, "मैं शर्त के साथ कहता हूँ कि जून पक्षी भी तुम लोगो की बजाय बहुत जल्दी सो जाता है।"

मिल बोला, "मैं सोचता था, काश ! हमारे पास भूसे का एक बोरा गदेले के लिए होता।"

पैनी ने कहा, "जहॉ तक मुझे याद है, सबसे अच्छा गद्दा मैंने बिल्ली की पूँछ के रोयो से बना हुआ देखा है। इस पर सोना मानो बादल पर सोना था। परन्तु, बिल्ली की इतनी पूँछे इकट्ठी करना बहुत देर मे सम्भव हो पाया।"

बक बोला, "सबसे अच्छा गद्दा तो पखो से बना होता है।"

पैनी बोला, "क्या तुम्हारे मे से किसी को याद है कि तुम्हारे पिता ने कभी पखो के गद्दे से क्या तूफान मचाया था ?"

"तुम्ही बताओ !"

"यह तुम्हारे पैदा होने से पहले की बात है। हो सकता है कि तुममे से दो-तीन अभी पलनो मे पडे हो। मैं भी खुद बहुत छोटा था। मैं तुम्हारी जमीन पर अपने पिता के साथ गया। शायद मेरे पिता तुम्हारे पिता को शान्ति देने गए थे। जब तुम्हारे पिता जवान थे, तो वह तुम सबसे अधिक जगली थे। वह मक्का की शराब का पूरा मर्तबान पानी की तरह पी जाते थे। उनका यह प्राय रोज का ही काम था। खैर, उस दिन हम तुम्हारे यहॉ गए और वहाँ जाकर देखा कि तश्तरियाँ टूटी पडी थी और अनाज रास्ते मे बिखरा पडा था। कुर्सियॉ दरवाज़े मे एक दूसरे पर अटकी हुई थी और सब तरफ, चारो ओर, पख ही पख बिखरे हुए थे। लगता था जैसे

स्वर्ग के चूजो के पख उडकर आ गए हो। इस सब समूह के ऊपर वह गद्दा चाकू से बीच मे चीरा हुआ पडा था।

"तुम्हारे पिता दरवाजे तक आए। मैं यह तो नही कहूँगा कि वे शराब के नशे मे चूर थे, पर तो भी उन्होने पी जरूर हुई थी। आँख के सामने आने वाली हर चीज को वह चीर रहे थे और अन्तिम चीज जो उन्हे दिखाई दी वह पखो का गद्दा था। वह न पागल थे और न लड रहे थे। सच तो यह है कि वे चीजो को तोडते-फोडते आनन्द मना रहे थे। इस सबके बाद वह फिर शान्त और प्रसन्न हो गए। अब तुम भली प्रकार अनुमान कर सकते हो कि इस सब के बीच तुम्हारी माँ क्या कर रही होगी और क्या कह रही होगी ? पर उस समय वह चुप थी और बर्फ-जैसी जड थी। वह अपनी आरामकुर्सी पर हाथ जोडे बैठी थी। उसका मुँह जैसे लोहे से जकडा हुआ था। मेरे पिता प्रचारक होने के कारण मौके को समझ गए और उन्होने निश्चय किया कि कभी अगली बार आकर बात करेंगे। इसलिए उस दिन इधर-उधर की बातें करके हम फिर लौट आए।

"पर तुम्हारी माता को सभ्यता और व्यवहार का पता था। उसने पिताजी को पीछे से बुलाया और रुककर भोजन करने के लिए कहा। उसने बताया कि हमारे पास मक्की के हलवे और शहद के अलावा और कुछ देने के लिए नही है। यही कुछ वह हमे देने को उत्सुक थी। तुम्हारे पिता उसकी ओर आश्चर्य मे डूबकर देखने लगे और चिल्ला पड़े, "शहद ? क्या अब भी कुछ शहद अन्दर बचा हुआ है ?"

बक और मिलव्हील खूब हँसे और एक-दूसरे को थपथपाने लगे।

बक बोला, "अच्छा कुछ देर रुको, पहले मैं माँ से शहद की यही बात पूछ लूं ? कुछ देर इन्तजार करो।"

जोटी फॉरेस्टरो के चुप होने के बाद भी बहुत देर तक हँसता रहा। उसके पिता ने एक कहानी इतने सच्चे ढग से सुनाई कि उसे अब भी अपनी बाड के परले पार पख उडते हुए नजर आ रहे थे। इस हँसी में कुत्ते भी उठ गए और उन्होने अपनी बैठक बदल ली। वे मनुष्यो और आग की गर्मी को अनुभव करने के लिए अधिक पास सरक आए थे। जूलिया उसके पिता के पाँवो के पास लेटी हुई थी। उसने सोचा, 'काश !

पलैग भी उसके साथ होता और अपनी कोमल खाल उसके साथ सटा सकता। बक ने उठकर एक और लकडी आग पर रख दी। वे सब दलदल के जगली जानवरो की हलचलो पर अनुमान करने लगे। साफ तौर पर और जानवरो की अपेक्षा भेडिये दूसरी दिशा मे भाग रहे थे। उन्हे गीले हिस्से बिलकुल पसन्द नही थे। बडी बिल्लियो की अपेक्षा वे जगल की ऊँची जगहो पर पहुँच गए। भालू आशा से बहुत कम मिल रहे थे।

बक बोला, "तुम जानते हो, इस समय भालू कहाँ होगे ? जगल के दक्षिण मे 'सैलर्स बीयर होल' या 'स्कौ पौण्ड बीयर होल' के आस पास होगे।"

मिल बोला, "नदी की ओर के टौली के हरे मैदान की ओर भी ! मै शर्त के साथ कहता हूँ।"

पैनी ने कहा, "वे दक्षिण की ओर नही होगे, क्योकि हवा और वर्षा, पिछले दिनो, दक्षिण-पश्चिम की ओर से आती रही है। उन्होने इसकी ओर पीठ रखी होगी और उधर नही गए होगे !"

जोडी ने अपनी बाँह अपने सिर के नीचे टिकाई और आकाश की ओर देखने लगा। यह तारो से इतना खचा हुआ था जैसे उजली छोटी-छोटी मछलियो से भरा कोई जोहड हो। उसके ऊपर के दोनो चीडो मे से उसे आकाश दूधिया सा दिखाई दिया, मानो ट्रिक्सी गाय ने झाग-भरे दूध की एक बडी बाल्टी को आकाश की ओर उँडेल दिया हो। चीडो की शाखे ठण्डी हवा के झोके से इधर-उधर हिल-डुल रही थी। उनके नुकीले पत्ते तारो की चमचमाहट से जैसे नहा उठे थे। आग से उठता हुआ धुआँ आकाश के तारो से मिलने के लिए बढ रहा था। चीडो के शिखरो तक जाते हुए उसने इसे देखा। उसकी आँखें झपकने लगी। वह सोना नही चाहता था। उसकी इच्छा थी कि कुछ सुनता रहे। उसे मनुष्यो की शिकार की बातचीत सबसे अच्छी लगती थी। इसे सुनते ही उसकी रीढ की हड्डी मे जैसे ठण्ड दौड जाती थी। तारो तक उठता हुआ और सामने आता हुआ धुआँ उसे ऐसा लगा, जैसे उसकी आँख पर कोई पर्दा डाल दिया गया हो। उसने आँखे बन्द की। कुछ देर तक उसे गीली लकडी के चुरमुराती जलने की आवाज की अपेक्षा आदमियो की शिकार की बातचीत बहुत धीमी लगी और तब

जैसे वह आवाज़ हवा मे कही खो गई। अब वह आवाज़ न रहकर केवल स्वप्न की फुसफुसाहट-मात्र ही रह गई थी।

वह जब रात मे जागा तो उसका पिता एकदम सीधा बैठा हुआ था। बक और मिल बहुत तेजी से खुर्राटे ले रहे थे। आग मन्द पड चुकी थी। गीली लकडी धीरे-धीरे जल रही थी। वह भी पैनी के साथ ही बैठ गया। पैनी ने पुकारा, "सुनो।"

बहुत दूर एक उल्लू चिल्लाया, एक चीते की चीख सुनाई दी, पर इनसे भी पास एक और आवाज़ थी, जैसे कही से आवाज करती हुई हवा गुजर रही हो—'वू वू वू'

उसे यह आवाज़ अपने पाँव के पास ही मालूम पडी। जोडी का माँस जैसे हलचल मे आ गया। उसने सोचा, 'हो सकता है कहीं फोडरविंग का स्पेनी घुडसवार न हो ? या फिर स्वर्ग के लोग ही मनुष्यो के समान कही बाढ और वर्षा मे तग आकर अपने अदृश्य हाथ इस आग की ओर तो नही बढा रहे ?' पैनी ने अपने पाँव सीधे किए और चीड की तेल-भरी एक गाँठ को ढूंढने लगा, ताकि उसे मशाल के तौर पर जलाया जा सके। उसने इसे जलाया और सामने की ओर बडे ध्यान से बढने लगा। कुछ देर के लिए वह आवाज़ रुक गई। जोडी भी उसके पीछे चला। तभी एकदम सरकने की आवाज सुनाई दी। पैनी ने मशाल उठा ली। दो चमकती हुई चमगादड-सी लाल आँखे इस मशाल की रोशनी से टकराई। पैनी ने रोशनी और ऊपर उठाई और हँस पडा। जोहड से आने वाला यह अतिथि एक मगरमच्छ था।

वह बोला, "इसे भी ताजे माँस की गन्ध आ गई। मैं नही चाहता कि यह बढकर उन फॉरेस्टरो तक पहुँच जाय।"

जोडी बोला, "क्या इसी की आवाज़ आ रही थी ?"

"हाँ, यही था—साँस लेता हुआ, फुफकारता हुआ और स्वय को ऊपर और नीचे उठाता-गिराता हुआ।"

"बक और मिलव्हील को हम इसके द्वारा तग क्यो न करें ?"

पैनी हिचकिचाया और बोला, "मज़ाक के लिए यह बहुत बुरा होगा। यह दो गज से अधिक बडा है। अगर कही इसने उन दोनो मे से किसी एक

को काट लिया तो यह एक बहुत बुरा मजाक साबित होगा।"

"तब क्या हम इसका शिकार करेंगे ?"

"नही, कोई लाभ नही। हमारे पास कुत्तो को देने के बाद भी माँस बचा रहेगा। हमे क्या जरूरत है ? मगरमच्छ कोई नुकसान भी नही करता।"

"तो क्या आप उसे सारी रात यो ही फुफकारने देगे ?"

'नही, वह अभी यह फुफकारना और माँस की ओर बढना छोडकर भाग जाएगा।" यह कहकर पैनी उसके पीछे भागा। उसने भी अपना शरीर पिछले छोटे-छोटे पाँवो पर उठाया और जोहड की ओर फिर से भाग पडा। पैनी को मिट्टी या पत्थर जो कुछ भी मिला, इसकी ओर फेकता हुआ दौडता रहा। मगरमच्छ बहुत ही तेज चाल से दौड रहा था। पैनी उसके पीछे था और जोडी उसके भी पीछे। अन्त मे उसके जोहड मे घुसने की आवाज़ आई।

"वह देखो, अब वह अपने सम्बन्धियो के पास पहुँच गया है। अब अगर वह यही रुका रहा तो ठीक है। हम इसे तग नही करेगे।"

वे फिर से आग की ओर लौट आए। अब भी अँधेरे मे यह आग धीरे-धीरे जल रही थी। चारो ओर आधी रात का सन्नाटा था। तारे भी खूब अच्छी तरह चमक रहे थे। आग से निगाह हटाकर वे दोनो देख रहे थे कि तारो से जोहड का पानी भी जगमगा उठा है। हवा ठण्डी होकर बह रही थी। जोडी ने चाहा, काश! वह इसी तरह हमेशा अपने पिता के साथ डेरा डाल सके। उसे अपने पास केवल पलँग की ही कमी अनुभव हो रही थी। पैनी ने मशाल फौरेस्टरो के ऊपर घुमाई। बक ने अपनी बाँह से मुँह ढँक लिया, पर सोता रहा। मिलव्हील पीठ के बल सो रहा था। उसकी काली दाढी भारी साँस के साथ-साथ उठ और गिर रही थी।

पैनी ने कहा, "इसकी साँस भी मगरमच्छ से कम गहरी नही है।"

उन्होने कुछ और लकडी आग पर रख दी और फिर अपने बिस्तरो पर ही लौट आए, पर अब उन्हे ये बिस्तर उतने आराम देने वाले नही लग रहे थे, जितने पहली बार लेटने पर लगे। उन्होने काई को हिलाया और चीड की शाखो को सीधा करने की कोशिश की। जोडी ने अपने लिए

बीचोबीच एक घोसला-सा बना लिया और अपने हाथ-पाँव सिकोडकर लेट गया। कुछ देर वह आनन्द से नई लपटो को देखता रहा और फिर पहले जैसे ही एक गहरी नीद मे सो गया।

सवेरा होने पर सबसे पहले कुत्ते जागे। उनके पास से ही एक लोमडी गुजरी थी, जिसकी हलकी-सी गन्ध अब भी हवा मे थी। पैनी उछलकर उठा। उसने उन्हे बाँध डाला और बोला, "अरे, हमे इससे बडे शिकार करने हैं।"

लेटे-लेटे ही जोडी उगते हुए सूर्य की ओर सीधा देख सकता था। अपने चेहरे के बराबर ऊँचाई पर उगते हुए सूर्य को देखना उसके लिए एक विचित्र अनुभव था। घर मे उनके पास का जगल बडा ऊँचा था और खेतो से परे तक का ऊँचा जगल इस उगते सूर्य की रोशनी को रोके रखता था। परन्तु अब इस उगते सूर्य और उसके बीच मे हलका-सा कुहरा था। उसे लगा कि जैसे सूर्य उठ नही रहा है, बल्कि एक धुधले पर्दे मे से उछलता बढता आ रहा है। धीरे-धीरे यह पर्दा फटने लगा। अब सूर्य की धूप कुछ पीली पड गई थी। यह उसकी माँ की शादी की अँगूठी के सोने के रग के समान ही थी। धीरे-धीरे सूर्य उजले से उजला होता गया। तब सूर्य की ओर देखना भी उसे असम्भव लगा। पिछले भादो मे कुछ देर के लिए पेडो की चोटियो पर उसे कुहरा दिखाई दिया था, मानो सूर्य की विनाशक अगुलियो को रोकने के लिए जैसे वह तन गया हो। पर यह भी मिट गया था और सारा का सारा पूरब ही लाल रग से रगा गया था।

पैनी बोला, "मुझे चीते का तेल ढूंढने मे कोई मदद करे, ताकि मैं नाश्ता बना सकूं।"

बक और मिलव्हील उठ बैठे। अपनी गहरी नीद के बाद वे अभी ऊँघ मे थे। पैनी बोला, "रात को ठीक तुम्हारे ऊपर से लोमडियाँ और मगर-मच्छ घूमते रहे हैं।" और तब उसने रात की सारी बात कह सुनाई।

बक बोला, "तुम्हें पूरा यकीन है कि यह उन मच्छरो मे से एक नही था, जिन्हे तुमने डाक्टर के यहाँ से शराब पाने के बाद देखा था ?"

"यह उससे भी कुछ छोटा था, पर फिर भी दो गज के लगभग था।"

"हाँ, ठीक है। एक बार पहले भी मैं इसी तरह डेरे मे सोया था।

तब स्वप्न मे मैंने एक मच्छर भिनभिनाता सुना था और जब मैं जागा तो मैं अपने बिस्तर समेत एक दलदल मे किसी चीज़ पर अटका हुआ था।"

पैनी ने जोडी को हाथ-मुँह धोने के लिए तालाब के किनारे जाने को कहा। जब वे पानी के पास पहुँचे तो सड़ाँध से वे वहाँ न टिक सके और लौट आए। पैनी बोला, "कोई बात नही, तुम्हारी मैल केवल लकडियो के धुएँ के कारण है। ऐसे गन्दे पानी मे तुम्हारी माँ भी तुम्हे धोने को नही कहेगी।"

नाश्ता शाम के भोजन जैसा ही था। हाँ, अब चीते के तेल मे तली सब्ज़ी न थी। अब फिर कॉफी की जगह शराब का दौर चला। पैनी ने इस बार मना कर दिया। जोहड का पानी पीने लायक नही था, पर जोडी को प्यास लगी थी। चारो ओर पानी ही पानी होने पर किसी को भी नही सूझा कि पानी भी लेते चले।

पैनी बोला, "तुम कही किसी पेड के खोल को ढूंढो, जो ज़मीन से कुछ ऊपर हो और जिसमे वर्षा का पानी भरा हुआ हो। वह अच्छा होगा।"

तला हुआ और भुना हुआ माँस और पकौडे रात-जितने अच्छे नही लगे। नाश्ते के बाद पैनी ने फिर सफाई की। घोडे पूरी तरह चर न सके थे, क्योकि घास लगभग खतम हो चुकी थी। जोडी ने गठरी-भर काई इकट्ठी की और उन्हे स्वाद के साथ खाने के लिए दे दी। डेरे को उखाडकर घोडो पर चढना और दक्षिण की तरफ उन्हे मोडना एक नई यात्रा के आरम्भ का सूचक था। जोडी ने पीछे मुडकर देखा, डेरे की जगह अब उजाड थी। कोयला बने हुए लट्ठे, काली राख आदि सब कुछ उजाड-सा था। रात की आग का जादू समाप्त हो गया था। सुबह कुछ ठण्डा मौसम था, पर अब चढते हुए सूर्य के कारण दिन अधिक गर्म हो गया था। धरती मे से भाप उठ रही थी। सडे हुए पानी की दुर्गन्ध बहुत बुरी थी।

पैनी आगे चल रहा था। उसने बक को बुलाया, "मुझे सन्देह है कि जानवरो के पेट इस सडे पानी को सह सकेंगे?"

बक और मिल ने अपने सिर हिला दिये। जगल मे यह बाढ एक अनहोनी घटना थी। कोई नही कह सकता था कि इसका परिणाम क्या हो सकता था? वे लोग दक्षिण की ओर बढते रहे।

पैनी ने जोडी से कहा, "तुम्हे याद है, हमने गाने वाले सारसो का नाच कहाँ देखा था ?"

जोडी अब उस मैदान को नही पहचान पाया। अब यहाँ चारो ओर पानी ही पानी भरा पडा था। यहाँ कोई सारस आने और घूमने का साहस नही कर सकता था। कुछ और दक्षिण की ओर फिर जगल था और तब गॉलबेरी की झाडियाँ थी। पर जहाँ दलदल होनी चाहिए थी वहाँ झील बनी पडी थी। उन्होने अपने घोडे उधर बढा दिये, मानो रात उन्होंने किसी किनारे की जमीन पर बिताई हो और अब वे किसी पानी भरे नये देश मे बढ रहे हो। एक सप्ताह पूर्व जो जमीन सूखी थी, अब वही पर उनके सामने ही मछलियाँ उछल रही थी। यहाँ बहुत लम्बा रास्ता तय करने के बाद उन्हे भालू दिखाई दिए। वे यहाँ खूब जी भरकर मछलियो का शिकार कर रहे थे। वे इतने मस्त थे कि उन्हे किसी के भी पास आने का ध्यान न रहा। कम-से-कम दो-तीन दर्जन काली शक्ले घुटने तक गहरे पानी मे घूमती दिखाई दे रही थी। मछलियाँ उनके सामने ही उछल रही थी।

पैनी बोला, "यह समुद्री मछली है।"

पर जोडी ने सोचा, समुद्री मछलियाँ तो समुद्र मे होती हैं। या वे जार्ज झील मे भी मिलती हैं, क्योकि यहाँ का पानी भी नमकीन है। ये ज्वार वाली नदियो और बहुत कम ताजा पानी वाली नदियो मे भी रहती है, जहाँ बहते हुए सोते और तेज धारें उन्हे समुद्र के समान ही आनन्द देती है, और जहाँ से वे खूब अच्छी तरह गोला बनाती हुई उछल सकती हैं।

पैनी बोला, "अब यह बात साफ है। जार्ज झील से यह जूनिपर नदी मे और वहाँ से पानी बढने पर मैदानो मे आ गई हैं। और, इस प्रकार यहाँ समुद्री मछली आई है।"

बक बोला, "तब हमे एक नया मैदान मिल गया। आज से इसका नाम 'समुद्री मछलियो का मैदान' होगा। और देखो, उन भालुओ की ओर ·"

मिल ने कहा, "यह तो भालुओ का भी स्वर्ग है। अच्छा यह बताओ कि हमे चाहिएँ कितने ?"

उसने अपनी बन्दूक जाँचनी चाही। जोडी ने अपनी आँखे झपकाकर फिर खोली। उसने अपने सारे जीवन मे कभी भी इतने भालू इकट्ठे नही देखे थे।

पैनी बोला, "चाहे ये भालू ही हो, पर हमे सूअर नही बन जाना चाहिए।"

बक बोला, "इस समय हमारे लिए चार काफी होगे।"

"बैक्स्टरो के लिए एक काफी रहेगा। जोडी, तुम भी मारना चाहते हो?"

"हाँ, जरूर।"

"अच्छा भाई, अब अगर यह बात मजूर है तो हमे अपना शिकार चुन लेना चाहिए और थोडा ठहर जाना चाहिए। शायद किसी को दूसरी गोली भी चलानी पडे और अगर जोडी चूका तो तीसरी भी।"

पैनी ने जोडी को सबसे पास का निशाना दिया। यह बहुत बडा नर भालू था।

पैनी बोला, "जोडी, तुम थोडा-सा बाईं ओर चले जाओ, जहाँ से निशाना इसके गाल पर जम सके। ज्यो ही मै इशारा करूँ, सब गोली चला देना। अगर सामने शिकार हिल जाय तो जिस किसी ओर पर गोली दाग सको, दाग देना। और अगर तुमसे छिपने के लिए अपना सिर वह नीचे कर ले तो उसके शरीर के बीचोबीच गोली चला देना। हम उसे बाद मे मार डालेगे।"

बक और मिलव्हील ने अपना-अपना निशाना चुन लिया और सभी दोनो दिशाओ मे सावधानी से फैल गए। पैनी ने अपना हाथ उठाया और वे सब रुक गए। जोडी इतना अधिक काँप रहा था कि जब उसने अपनी बन्दूक उठाई तो वह अपने सामने सिवाय पानी की एक चमक के और कुछ भी नही देख पा रहा था। उसने अपने को साधकर निशाना सीधा किया। उसका भालू उससे किनारा काट रहा था, पर तो भी उसने पीछे से उसकी बायी गाल का निशान बाँध लिया। पैनी ने अपना हाथ गिराया। बन्दूके एक साथ बोल उठी। बक और मिलव्हील ने एक-एक गोली और छोडी। घोड़े कुछ हिले। जोडी को याद नही रहा कि उसने भी गोली चलाई थी। पर,

उससे पचास गज दूर सामने एक काला शरीर पानी मे आधा डूबा-सा दिखाई दे रहा था।

पैनी बोला, "बहुत अच्छा निशाना साधा, बेटे!" और सामने बढ आया।

बाकी भालू दलदल को पार कर भागते हुए स्टीमर के चप्पुओ की भाँति अपने पैरो से पानी पीछे उछालते हुए भाग गए। अब उनमे से किसी को मारने का मतलब था, बहुत दूर का निशाना साधना। जोडी उनकी इस तेज चाल को देखकर फिर अचरज मे डूब गया। सबका पहला निशाना बहुत ठीक जगह बैठा था। दूसरे निशाने मे बक और मिलव्हील ने शिकार को केवल घायल ही किया था। कुत्ते भौंकते रहे और उनके पीछे पानी मे दौडे। पानी इस लायक नही था कि उसमे पैदल जाया जाय और तैरना सम्भव नही था, इसलिए वे सब पीछे हट आए और बडे निराश हुए। अब आदमी उन घायल दोनो जानवरो के पास आ गए और उन्होने फिर से गोली दागी। दोनो शिकार शान्त हो गए। किसी भी चोट मे बचे हुए भालू उनके सामने ही भागते जा रहे थे। ऐसा कोई शिकार इतनी जल्दी और इतनी सफाई से कभी न हुआ था।

बक बोला, "हमने यह न सोचा कि इनको पानी मे से कैसे निकालेंगे?"

जोडी की आँख केवल अपने शिकार पर लगी हुई थी। वह विश्वास न कर सका कि उसने ही इसे मारा था। उसका शिकार बैक्स्टर परिवार के लिए एक पूरे पखवाडे के लिए काफी था। और, यह सब उसके कारण।

मिलव्हील बोला, "हमे घर जाकर बैलो वाला जुआ लाना चाहिए।"

पैनी बोला, "तुम्ही बताओ? तुम्हारे पास ले जाने के लिए पाँच रीछ है और हमारे पास एक। मुझे इतने शिकार से ही सन्तोष है और अब मुझे यह भी पता चल गया है कि शिकार के लिए हमे कहाँ आना चाहिए? क्या तुम मुझे और जोडी को सहायता देकर यह शिकार ले जाने और अपना घोडा एक-दो दिन रखने की अनुमति दोगे? और, तब हम अपनी राह चले जाएँगे और तुम अपनी।"

"हमे मजूर है।"

पैनी बोला, "हमारी उम्र के लोग ऐसे समय रस्सी मे बाँधकर ले जाना

अधिक अच्छा समझते।"

"किसने सोचा होगा कि यह सारा जगल ही पानी के नीचे आ जाएगा?"

वक बोला, "हमारी टाँगे तुमसे अधिक लम्बी हैं। तुम लोग ऊपर बैठ जाओ!"

पैंनी पहले ही उतर चुका था। पानी उसके घुटनो तक आ रहा था। जोडी को घोडे पर बैठे रहने मे शर्म आ रही थी, जैसे वह भी एक छोटा वच्चा हो। वह भी पानी मे उतर पडा। जमीन सख्त थी। उसने भालू को जमीन तक खीचने मे सहायता की। फौरेस्टर लोग जैसे इस वात का महत्त्व नही समझ पाए कि यह उसने पहले-पहल मारा था। पैंनी ने उसका कन्धा दवाया और यह उसकी अत्यधिक प्रशसा थी। यह भालू साढे तीन मन से अधिक ही था। उन सवने ही यह स्वीकार किया कि इसको लम्बाई के रुख आधा काटकर दो टुकडो मे वाँट लिया जाय, ताकि दोनो घोडो की पीठ पर यह आसानी से जा सके। उन्होने इसकी खाल उतारी और इसकी मोटाई देखकर हैरान रह गए। हिरण और चीते बहुत अधिक पतले थे। लगता है, तूफान के अन्तिम दिनो मे भी भालू यहाँ पर आकर चरते रहे थे।

बूढा सीजर तव उछला, जब उस पर आधा भालू डाला गया। खाल की गन्ध उसे अच्छी नही लगी। उसने ऐसी ही गन्ध कई रात अपने ही खेत के आस-पास चौकन्ने होकर अनुभव की थी। एक वार एक भालू पशुओ की ओर वढ आया था और वह काफी देर वही रहा, जव तक उसके गुर्राने से चौंककर पैंनी ही न वहाँ पहुँच गया। फौरेस्टरो का घोडा उसकी अपेक्षा वाकी वोझ को उठा लेने मे काफी अच्छा था। भालू की खाल पैंनी को ही सँभालनी पडी। वक और मिलव्हील ने अपने घोडो के रुख अपने घर की ओर मोड दिए।

पैंनी वोला, "अपनी वैलगाडी इधर ही ले आना। वैल इस सारे को एक ही वारी मे उठा ले जाएँगे। फिर हमारी ओर जरूर आना।"

"तुम हमारी ओर आना।"

उन्होने अपने हाथ हिलाए और निकल गए। पैंनी और जोडी भी

उनके पीछे-पीछे चल पडे। सबने ही कुछ दूर तक साथ-साथ जाना था, परन्तु बोझ न होने के कारण फौरेस्टर अपने तेज घोडो पर पहले ही बहुत आगे निकल गए। पूरब की ओर वे अपने घर की सडक पर मुड पडे। पैनी और जोडी के लिए रास्ता धीमा और कठिन था। सीजर भालू की खाल के पीछे चलना नही चाहता था, परन्तु पैनी ने जब जोडी को पहले चलाया तो फौरेस्टरो का घोडा इस बात पर अड गया कि वह आगे चले। कुछ देर तक यह सघर्ष चलता रहा। जूनिपर मैदान मे आकर अन्त मे पैनी ने अपने घोडे को एड लगाई और काफी आगे निकल गया। अब भालू की खाल आंखो और नाक से दूर चले जाने के कारण सीजर धीमे-धीमे चलने लगा। पहले-पहल जोडी को यह अकेला चलना अच्छा न लगा, क्योकि चारो ओर पानी ही पानी था। तब पीछे भालू का मांस लदा होने से, उसने फिर से उत्साह अनुभव किया और बढने लगा।

उसे लगा कि जैसे वह हमेशा ही शिकार खेलना चाहेगा। परन्तु, ज्योही उसे घर के पास के चीड दिखाई दिए और वह सोते के पास के रास्ते और अपने खेतो की बाड के पास से गुजरा, घर आने की खुशी से वह भर उठा। पानी की तबाही के कारण खेत उजाड हो चुके थे। आंगन भी ऊसर हो चुका था। परन्तु वह उस मांस को लेकर आ रहा था, जिसे उसने सारे परिवार के लिए जुटाया था। पलैग उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।



## 21

दो हफ्ते तक पैनी फसलो को ठीक करने मे लगा रहा। आलू अभी पके नही थे और उनमे अभी दो महीने की कसर थी। परन्तु वे सड रहे थे और अगर उन्हे उखाडा न जाता तो वे बिलकुल तबाह हो जाते। जोडी भी उन पर बहुत देर तक काम करता रहता। उसे इस बात का ध्यान रखना पडता था कि आलू उखाडने वाली खुरपी को काफी गहरा चलाए और यह भी कि कही यह मुँडेरो के बीचोबीच न पड जाय। फिर वह उसे बडे ध्यान से उठाता और बिना नुकसान के आलुओ को बाहर निकाल लेता। जब सारे आलू निकाल लिये गए तो माँ ने उन्हे सुखाने के लिए फैला दिया और पिछली छत पर जितनी अच्छी तरह ठीक किया जा सकता था, कर दिया। सारे के सारे आलू देखने पडे और उनमे से आधे फेक देने पडे। उनके सडे हुए हिस्से काट दिये गए और बाकी अधपके आलुओ समेत सूअरो के लिए रख दिये गए।

गन्ना ज़मीन पर गिर चुका था। उसको अभी ठीक नही किया जा

सकता था, क्योकि अभी वह अधपका था। इसकी पोरो मे से अकुर निकलने शुरू हो चुके थे, पर बाद मे इसको काटा और बचाया जा सकता था।

मटरो के सूखे पौधे नष्ट हो चुके थे। यह लगभग पक ही चुके थे। परन्तु हफ्ते-भर की वारिश ने इन्हे ज़मीन पर लिटा दिया था और अब वे एक सडे हुए ढेर के रूप मे रह गए थे। जो कुछ भी दाने वे बचा सके वे ही ठीक बच पाए। इस बाढ के तीन हफ्ते बाद जब काफी धूप निकल आई, तब पैनी अपनी दरांती लेकर समुद्री मछली वाले मैदान की ओर गया और वहाँ से दलदली घास काटकर उसे सुखाने छोड आया। उसने बताया कि बुरे समय मे यह बहुत अच्छे चारे का काम देती है। मैदान का पानी उतर चुका था, पर वहाँ मछलियो की दुर्गन्ध के अलावा और कुछ नही बचा था। जोडी को कोई भी दुर्गन्ध बुरी न लगती थी, परन्तु यह सडाध उसे भी बुरी लगी। चारो ओर मौत की ही सडाध फैली हुई थी।

पैनी बडा अशान्त होकर बोला, "कुछ न कुछ गडबड जरूर है। यह सडाद तो खतम होने वाली है, पर जानवर अभी भी मर रहे है।"

इसके एक हफ्ते बाद मघहर के महीने मे जोडी के साथ वह फिर इसी मैदान मे लौटा ताकि सुखाई हुई घास को ला सके। रिप और जूलिया भी गाडी के पीछे-पीछे चले। पैनी ने फ्लैग को भी साथ ही आने दिया, क्योकि घर मे बन्द करने या कोठरी मे छोडने पर वह हमेशा ही शरारते करने लगा था। फ्लैग कभी-कभी घोडे से भी आगे भागने लगता और कभी चौडी सडक पाकर उसके साथ-साथ दौडने लगता। कभी वह पीछे आकर कुत्तो से खेलने लगता। अब उसे हरी चीज़े खानी आ गई थी और कही-कही वह कोई कली या घास का गुच्छा उखाडने के लिए रुक जाता।

जोडी ने कहा, "पिताजी, इसकी ओर देखिए। यह कलियो को खीच-कर ऐसे खा रहा है जैसे यह बहुत बडा हो गया हो।"

पैनी ने हँसकर कहा, "मैं तुम्हे सच कहता हूँ कि मैने ऐसा छौना आज तक नही देखा।"

अचानक ही जूलिया ने जीभ उठाई और झाडी मे घुस गई। रिप भी उसके पीछे-पीछे भागा। पैनी ने गाडी रोकी और जोडी को देखने के लिए कहा कि वे किसके पीछे दौडे हैं। जोडी नीचे कूदा और उनके पीछे कुछ ही

दूर जाकर उसने पैंड पहचान ली। उसने बताया कि वे एक बिल्ली के पीछे दौड रहे थे। पैनी ने अपना सीग का बाजा उठाकर जोर से बजाया ताकि कुत्ते लौट आएं। परन्तु जूलिया को भौकते हुए सुनकर वह नीचे उतर आया और घने पेडो मे से होकर आगे बढा। कुत्तो ने एक बिलाव को एक कोने मे फँसा लिया था, पर कोई लडाई नही हो रही थी। वहाँ जाकर उसने जोडी को भी खडे पाया। एक बनबिलाव अपने एक पासे पर लेटा हुआ था। जूलिया और रिप उसके चारो ओर चक्कर काट रहे थे, परन्तु कोई किसी पर हमला नही कर रहा था। बिलाव अपने दाँत दिखा रहा था और अपनी पूँछ उठाता था, परन्तु हिल-डुल नही सकता था। यह बीमार और कमजोर था।

पैनी ने कहा, "यह जानवर भी मरने वाला है, इसे छोड दो।"

उसने कुत्तो को वापस बुलाया और गाडी की ओर लौट आया।

जोडी ने पूछा, "पिताजी, यह किस चीज से मर रहा है?"

"जानवर भी हमारे जैसे ही मरते हैं। ये हमेशा ही दुश्मनो से ही नही मारे जाते। हो सकता है कि यह बिलाव बूढा हो और कोई शिकार न मार सका हो।"

"उसके दाँत तो बूढे जानवरो जैसे नही गिरे थे।"

पैनी ने उसकी ओर देखा, "लगता है, बेटे! तुम ठीक से देखने लगे हो! अब मुझे भी यह देखना पडेगा।"

अब भी बनबिलाव की कमजोरी का कारण न पता चल सका। वे आगे मैदान तक बढ गए और सूखी घास से अपनी गाडी को भर लिया। पैनी ने अनुमान किया कि कम-से-कम पूरी घास ढोने के लिए तीन चक्कर और लगाने पडेगे। जगल की घास खुरदरी और कँटीली थी, परन्तु पाला आने पर, और नुकीली घास के सूख जाने पर, घोडा, गाय और उनकी बछडी और बछडे इस सबको खाकर खुश होगे। अब वे घर की ओर आराम से आने लगे। सीजर ने अपनी चाल तेज कर दी और जूलिया भी आगे-आगे दौडने लगी और दोनो पशु भी घर के लिए तेज दौड पडे। सोते की पगडण्डी को पार करके बाढ के पास कोने मे पहुँचते ही जूलिया ने अपनी नाक फिर से उठाई और भौकना शुरू किया।

पैनी बोला, "अब इस दिन की रोशनी मे वहाँ कुछ भी न होगा।"

पर जूलिया जिद्द पर अड गई और बराबर वाड पर कूदने लगी। परन्तु उसका भौकना एकाएक रुक गया और वह चीख़ने-सी लगी। रिप भी वाड पर चढा और वह भी तेजी से भौकने लगा।

पैनी बोला, "मैं जानता हूँ कि अच्छे कुत्ते की सूझ पर कभी शका नही करनी चाहिए।"

उसने गाडी रोकी और अपनी बन्दूक लेकर वाड तक जोडी के साथ गया। वहाँ एक बारहसिगा एक कोने मे लेटा हुआ था। अपने सीगो को हिलाकर यह एक अजीब सी हरकत कर रहा था। पैनी ने अपनी बन्दूक उठाई और फिर उसे नीचे झुका लिया।

बोला, "यह भी बीमार है।"

वह हिरण के पास तक गया, पर यह न हिला। इसकी जीभ सूजी हुई थी। जूलिया और रिप बहुत जोश मे थे। वे नही समझ पाए कि शिकार को यो ही कैसे छोड दिया जाय?

पैनी बोला, "गोली खोने का कोई लाभ नही।"

उसने अपना चाकू लिया और इसे खोल मे से निकालकर हिरण तक गया और उसका गला काट डाला। वह ऐसे मर गया, जैसे मौत इसे अपनी दर्दनाक हालत से ज्यादा अच्छी लगी। उसने कुत्तो को भगा दिया और इसे देखने लगा। इसकी जीभ काली और सूजी हुई थी। इसकी आँखे लाल थी और उनसे पानी बह रहा था। यह उतना ही पतला था जितना कि मरता हुआ वनबिलाव। वह बोला, "यह तो मेरे अनुमान से भयकर है। इन सब जगली जानवरो को प्लेग हो गई। इसकी जीभ काली है।"

जोडी ने आदमियो को प्लेग होती सुनी थी। उसकी नजर मे सभी जगली जानवर हमेशा ही सुखी और मनुष्य के सब कष्टो से परे रहने वाले थे। कोई जानवर या तो पीछा करते हुए मरता था या जब कोई और बडा जानवर उसे दबा ले या खतम कर दे। जगल मे ऐसी मौत बडी स्पष्ट और भयानक होती थी। कभी भी उसने कोई बीमारी या लम्बी मौत न देखी थी। वह उस मरे हुए हिरण को देखने के लिए झुक गया।

उसने पूछा, "हम इसे नही खाएँगे। क्यो, ठीक है न?"

पैनी ने अपना सिर हिलाया और बोला, "इसका मांस ठीक नही है।"

कुत्ते बाड के नीचे की ओर अब भी फुफकार रहे थे। जूलिया फिर भौंकी। पैनी ने उधर देखा, मरे हुए जानवरो का एक ढेर पडा हुआ था। दो बारहसिंगे और एक साल-भर का छौना इकट्ठे ही मरे हुए थे। जोडी ने अपने पिता का चेहरा कभी भी इतना उतरा हुआ न देखा था। पैनी ने प्लेग से मरे हुए इन हिरणो को देखा और बिना बोले लौट आया। उसे लगा, जैसे हवा मे से मौत चुपचाप निकल आई हो।

जोडी ने पूछा, "इन्हे किसने मारा है?"

पैनी ने फिर अपना सिर हिला दिया और बोला, "मैं नही जानता कि यह जीभ काली क्यो हो जाती है? हो सकता है, मरे हुए जानवरो से भरा हुआ बाढ का ज़हरीला पानी इसका कारण हो।"

जोडी के दिल मे एक भय गर्म छुरी की भाँति घुस गया।

उसने पूछा, "पिताजी, फ्लैग को तो ऐसा कुछ नही होगा?"

"बेटा, जितना मैं जानता था, मैंने तुम्हे बता दिया।"

वे अब फिर गाडी पर लौट आए और पशुओ की जगह तक आ गए और वहाँ उन्होने घास उतार दी। जोडी ने अपने मे कमज़ोरी और मचलाहट अनुभव की। फ्लैग मिमिया रहा था। वह उसके पास गया और उसे गर्दन के पास से पकडकर उसने कस लिया। फ्लैग बहुत कठिनता से छूटा।

जोडी ने धीरे से कहा, "तुम इसे न पा लेना, ज़रा बचे रहना।"

घर मे माँ ने यह खबर बहुत दुख के साथ सुनी। जब फसल खराब हुई थी तो उसने आँसू बहाए थे और दुख प्रकट किया था। क्योकि उसके अनेक बच्चो का मरना उसके दुख के सोते को सुखा ही चुका था, इसलिए अब उसे इतने सारे शिकार का इस तरह मर जाना बुरा न लगा।

उसने केवल इतना ही कहा, "अच्छा है, अपने पशुओ को सोते की ऊपर की नाली मे से ही पानी पिलाओ और उन्हे जोहड पर मत जाने दो।"

जोडी को फ्लैग के लिए भी आशा हो आई। अब वह उसे वही कुछ खिलाएगा जो वह स्वय खाएगा और उसे हर तरह की घास से बचाएगा। पानी वह भी उसे अपने पीने वाले पानी मे से ही पिलाएगा। उसने सोचा कि अगर फ्लैग मरेगा ही तो वे दोनो साथ-साथ ही मरेगे।

उसने पिताजी से पूछा, "क्या मनुष्यो की भी जीभ काली पड जाती है?"

"नही, केवल जानवरो की ही।"

जब वह अगली बार घास लेने गया तो उसने फ्लैग को मजबूती से पिछली कोठरी मे बाँध दिया। पैनी ने कुत्तो को भी वैसे ही बाँध दिया। जोडी ने अनेक सवाल पूछे, "क्या घास भी सड जाएगी? क्या यह प्लेग सदा ही चलती रहेगी? क्या कोई शिकार बचा भी रहेगा? . ." इन सबके उत्तर मे पैनी ने न जानने के कारण अपना सिर हिला दिया। जोडी समझे बैठा था कि पैनी सब कुछ जानता है।

पैनी बोला, "बेटा, भगवान् के नाम पर चुप रहो। यह एक ऐसी बात हुई है, जो आज तक न हुई थी। इसे कोई कैसे जाने?"

उसके पिता ने घास इकट्ठी करने और गाडी लादने के लिए उसे अकेला ही छोड दिया और घोडा खोलकर वह फोरेस्टरो को खबर देने चला गया। जोडी को दलदल के इस किनारे पर अकेले काम करना अजीब-सा लगा। उसे सारा ससार उजाड-सा लगा, केवल जगल पर ही गिद्ध मँडराते नजर आए। उसने अपना काम जल्दी-जल्दी निबटाया और अपने पिता के पहुँचने से बहुत पहले वह अपना काम समाप्त कर चुका था। वह घास पर चढकर लेटा हुआ था और आकाश की ओर देख रहा था। उसे लगा कि ससार रहने के लिए एक बहुत अजीब जगह है। यहाँ बिना किसी कारण के और बिना किसी मतलब के बाते हो जाती है और यहाँ के जानवर बिना किसी कारण के दूसरो पर हमला करते हैं। उसे यह बात अच्छी नही लगी।

इन सब अशान्त और चौकन्ना करने वाली बातो के मुकाबले मे उसने फ्लैग को रखा और उसे अपने पिता का भी ध्यान आया। परन्तु, फ्लैग का स्थान उसके दिल मे छिपा हुआ था और वह उसके लिए बहुत समय से कमी अनुभव कर रहा था। उसने सोचा कि अगर फ्लैग को प्लेग जैसा कोई कष्ट न हुआ, तो यह बाढ भी एक अच्छी ही बात रहेगी। अगर वह भी पैनी, दादी और अपनी माँ की उम्र तक पहुँचा, तो वह कभी भी इस डर और खुशी की इन रातो और दिनो को न भूलेगा। उसे अचरज हुआ कि कही बटेरो के बच्चे इसी बीमारी से मर न जायँ। उसके पिता ने कहा

था कि अगले महीने वह कुछ शाखाओं का जाल बनाकर उनमे से कुछ को खाने के लिए फँसाएगा। वह नही चाहता था कि इतनी छोटी चिडियो पर भी गोली नष्ट की जाय। जब तक बच्चे बडे न हो जायँ, पैंनी नही चाहता था कि उन्हे फँसाया जाय। हर साल वह दो-तीन मुर्गियो के जोडो को भी अण्डे-बच्चो के लिए बचा लेता था। अगर तीतर और गिलहरियाँ तथा भेडिये, भालू और चीते गुजर गए तब क्या होगा ? उसकी कल्पना यहाँ आकर डूब गई।

तभी दूर से आने वाली सीज़र के खुरो की हल्की-हल्की आवाज़ साफ सुनाई देने लगी और वह अपनी बेचैनी को भूल गया। पैंनी अब भी उदास था, पर फौरेस्टरो की बात से वह कुछ सुखी हुआ था। उन्होने भी अपने शिकार के समय वही बात देखी थी। उनके अनुसार जानवरो की कोई भी जाति इस नाश से नही बची थी। हिंसक जानवरो को भी उन्होने अपने शिकार के पास ही मरा हुआ पाया था। जैसे बलवान और कमज़ोर इस धरती पर एक बराबर बन गए हो। अब तेज़ दाँत और पजे न कोई गाडने वाला रहा था और न उनका शिकार बनने वाला।

जोडी ने पूछा, "क्या सब कुछ मिट जाएगा ?"

पैंनी ने बहुत गुस्से से उत्तर दिया, "मैंने तुम्हे पहले भी कहा था कि ऐसे प्रश्न मत पूछो। मेरी ही तरह तुम भी प्रतीक्षा करो और देखो।"



## 22

पौष के महीने तक बैक्स्टर और फौरेस्टर प्लेग के नुकसान और साथ ही हिंसक जानवरो के सर्दियो मे पाए जाने वाले शिकार के विषय मे पूरा-पूरा जान गए थे। हिरण अपनी असली सख्या से वहुत थोडे रह गए थे। जहाँ पहले दर्जनो हिरण खेतो मे घुसे रहते थे, अव वहाँ कही कोई एकाध ही वारहसिंगा या हिरणी मटर के उजाड खेतो मे भोजन ढूंढने आती थी। छोटे हिरण कुछ अधिक साहसी हो गए और पुराने आलू के खेतो मे न निकाले गए आलुओ पर मुंह मारते रहते थे। वटेर पहले जितनी ही थी, पर जगली तीतर कम हो चुके थे। इन सब बातो से पैनी को लगा कि यह सब खरावी दलदल के पानी के कारण हुई है, क्योकि तीतर वही पानी पीते थे और वटेर वहाँ नही जाती थी।

अनाज खाने वाले शिकार के सभी हिरण, तीतर, गिलहरी, कगारू आदि जानवर इतने थोड़े हो गए थे कि दिन-भर मे खोज कर भी कुछ न हाथ लगता था। हिंसक जानवरो का भी काफी नुकसान हुआ था। पहले-

पहल पैनी ने सोचा था कि यह अच्छा हुआ, परन्तु बाद मे उसे एकदम साफ हो गया कि इससे बाकी बचे हुए हिंसक जानवर और ज्यादा भूखे हो उठेंगे और अपना भोजन कम हो जाने के कारण वे और खूंखार हो उठेंगे। उसे अपने सूअरो की चिन्ता बढ गई और उसने पशुओ के पास ही एक जाल का घेरा बना दिया था। सब-के-सब मिलकर जगल जाते और सूअरो के लिए दाने और ताड के फल ले जाते। पैनी ने नई मक्का का कुछ हिस्सा उनके लिए एक ओर रख दिया था, ताकि वे मोटे हो सकें। कुछ दिन बाद एक बहुत भारी आवाज और चीख आधी रात के समय पशुओ की तरफ से सुनाई दी। कुत्ते जागकर दौडे और भौकने लगे। पैनी और जोडी पाजामे पहनकर मशाल हाथ मे लिए पीछे भागे। सबसे मोटा सूअर गायब था। मारनेवाले ने इतनी सफाई से मारा था कि लडाई का एक निशान भी वहाँ न था। खून की कुछ बूंदे वाडे के कुछ पार बाड से ऊपर चली गई थी। निश्चय ही कोई बहुत भारी पशु आया होगा, तभी वह इतने बड़े सूअर को आसानी से उठा सका। पैनी ने पैड देखी और बोल पडा, "एक बहुत बडा भालू आया है।"

जूलिया ने वह पैड पकडने की प्रार्थना की और पैनी को भी लालच हुआ, क्योकि इस समय यह हिंसक पशु शायद जुगाली करता हुआ एकदम समीप ही मिल जाय। परन्तु, रात अँधेरी थी। यदि निशाना न लगा या वह केवल घायल ही हुआ तो मुकाबले का भी डर था। इसलिए उसने सोचा कि सवेरे भी ये निशान ताज़ा रहेगे। तभी खोज मे जाना उचित होगा। वे लौट आए और सो गए। सवेरा होने पर कुत्तो को निकालकर वे चल पडे। ये निशान उसी पुराने पाँव कटे खुर्राट रीछ के थे।

पैनी बोला, "मैं जानता ही था कि जगल के सारे भालुओ मे से यह जरूर इस प्लेग से बच जाएगा।"

इस भालू ने कुछ ही दूरी पर सूअर को खाया था। उसने खूब जी भर-कर खाया और बाद मे शव को ढँक दिया था और तब यह दक्षिण की ओर जाकर जूनिपर नदी के पार हो गया था।

पैनी बोला, "वह इसे खाने फिर आएगा। अपने शिकार के साथ भालू एक हफ्ते तक भी उलझा रहता है। मैंने तो उसे अपने शिकार के लिए, चाहे

न भी खाना हो, गिद्धो तक से लडते हुए देखा है। अगर इसके अलावा कोई और भालू होता, तो हम शायद जाल भी तान देते, पर इसे कोई भी जाल फँसा नही सकता, क्योकि इसका पजा ऐसे ही जाल मे कट गया था।

"क्या हम फिर आकर उसकी इन्तजार करके खाते हुए इसे पकड नही सकते ?"

"कोशिश करेंगे।"

"कल ?"

"हाँ, कल।"

वे फिर घर लौट आए। एक हलकी-सी उछलने की आवाज़ पास से पास आती गई। फ्लैग अपनी रस्सी तुडाकर इस खोज मे आ मिला था। वह अपनी एडियो पर उछल रहा था और उसकी पूँछ तनी हुई थी।

"क्यो पिताजी, क्या यह देखने योग्य नही है ?"

"बेटे, निश्चय ही यह देखने मे बहुत अच्छा है।"

अगले दिन पैनी को जाडा और बुखार हो आया। वह तीन दिन तक बिस्तर पर पडा रहा। अब इस भालू को पकडने की कोशिश करने मे कोई लाभ न था। जोडी ने अकेले जाकर झाडी मे छिपकर उसे देखने की अनुमति माँगी, पर पैनी ने मना कर दिया। यह भालू बहुत बुद्धिमान् और खतरनाक था और जोडी बहुत ही छोटे दिल और दिमाग वाला था।

माँ बोली, "मैं नही चाहती कि यह सूअर के बच्चे भालुओ को ही खिला दिये जायँ, भले ही वे अधिक मोटे न हो।"

जब पैनी बिस्तरे से उठा तो उसने यह स्वीकार किया कि सब सूअरो को पूर्णमासी या मोटा होने की बिना प्रतीक्षा किये मार डालना ही उचित है। जोडी ने तेल वाली लकडी जलाई और राब की देग के नीचे आग जलाई और गर्म करने के लिए सोते से पानी ले आया। एक तरफ उसने एक बडा डोल टिकाया और उसे रेत के सहारे से खडा किया। जब पानी बिलकुल ठीक गर्म हो गया तो माँ ने इसे ढोल मे उलटा दिया। पैनी सूअरो को मार कर और उनकी खाल उतारकर एक के बाद एक इस डोल मे डालता गया और पूरी तेज़ी के साथ पाँव से पकडकर उन्हे इसमे हिलाता गया। माँ और जोडी, दोनो मिलकर इनको लटकाने मे उसकी सहायता करने लगे, क्योकि

उसकी शक्ति एकदम ही जवाब दे गई थी। तीनो ने बहुत तेजी के साथ बाल उतारने का काम किया, क्योंकि उनके जमने से पहले-पहले बाल उतार लिए जाने चाहिएँ।

अब जोडी ने पालतू और प्यारे जानवरो के मरने के बाद उनके माँस को खाने लायक बनाने का तरीका भी खूब अच्छी तरह सीख लिया। मारे जाने की बात खतम होते ही उसे प्रसन्नता हुई। खाल उतारने के बाद उसकी सफाई करने और उसे सफेद कर देने मे उसे आनन्द आने लगा। वह अभी से अन्दाज करने लगा कि इनके कीमे के तलने से कैसी गन्ध उठेगी? और इनके माँस के टुकडो को चर्बी मे तलने से कैसी? कुछ भी बेकार नही गया, आँतें तक नही! माँस को कन्धे, पीठ और कमर के माँस के रूप मे अलग-अलग बनाया गया। बाद मे इसी मे नमक, मसाला और खाड आदि मिलाकर धुआँघर मे अखरोट के कोयलो के ऊपर धुआँ लगने के लिए इसे रख दिया जाएगा। टाँगें और उनके जोड बच गए थे। उन्हे भी चटनी मे डालने के लिए बचा लिया गया। उनकी पसलियो और रीढ की हड्डी को तलकर उन्हे तेल की एक तह के नीचे सुरक्षित रख दिया जाएगा। उनके सिर, जिगर, गुर्दे और दिल को पनीर मे मथकर वैसे ही रख दिया जाएगा। उनके पतले माँस के टुकडे करके कीमा बना दिया जाएगा। उनकी चर्बी को साफ करके किसी बर्तन मे रख लिया जाएगा और उसका तेल बोतलो और पीपो मे भर दिया जाएगा। कुछ माँस के टुकडे भूनकर मक्की की रोटी मे रख-कर खाने के लिये रख लिए जाएँगे। इनका पेट और आँते उलटाकर और काटकर सुखा ली जाएँगी और तब एक थैली के तौर पर उनमे कीमा आदि भर दिया जाएगा। इन्हे भी और माँसो के साथ धुआँघर मे लटका दिया जाएगा। जो रही-सही चीजें है, उन्हे मक्की के आटे के साथ पकाकर कुत्तो और चूजो आदि को दे दिया जाएगा। इनकी पूँछे तक साफ की गई, केवल गले की एक नाली ही ऐसी थी जिसे परे फेक दिया गया। जोडी के पूछने पर माँ ने बताया कि यह उनका 'कण्ठ' है। अगर यह न हो तो वे चीख-चिल्ला न सके।

कुल मिलाकर आठ सूअर मारे और ठीक किये गए। केवल एक बहुत बड़ा सूअर और दो छोटी सूअरियाँ और एक गाभिन सूअरी बचा ली गई।

यही सूअरी फॉरेस्टरो ने समझौते के तौर पर भेजी थी। इन्हे इसलिए बचाया गया, ताकि पैदायश का काम फिर से चालू हो सके। इनको जगल मे चरने के लिए भी छोड दिया जाएगा। उन्हे मैले और मक्की पर पाला जाएगा और रात को उन्हे घेरे मे रक्षा के लिए बन्द कर दिया जाएगा। बाकी समय वे चाहे तो अपना खाना बाहर से प्राप्त करे और अगर वे इसमे मर भी जायं तो कोई चिन्ता नही होगी।

उस शाम का भोजन फिर उत्सव जैसा ही था और बहुत दिनो बाद मेज़ खूब भरी हुई दिखाई दी। थोडे दिनो मे घर के पीछे बाथ और खेतो मे जगली सरसो आदि भर जाएगी। उनके साथ सूअर का मांस और मटर मिलाकर बहुत स्वादु बनेगा। मांस के भुने हुए टुकडे रोटी के साथ अभी महीनो चलेंगे। साफ था कि बैक्स्टर लोग यह सर्दियाँ बहुत अच्छी गुज़ारेंगे। मौसम साल के सब मौसमो से अच्छा था। शिकार कम होने पर भी बहुत भय न था, क्योकि धुआँघर मे मांस काफी जमा था।

जमीन पर गिरे हुए गन्ने मे से फिर जडे फूट आई थी, इसलिए उसे धरती पर से अलग काटना पडा। गन्ने की पोरे कुछ सूख-सी गई थी। बेकार की जडे उन्हे पीडने से पहले अलग करनी पडी। चर्खी के चारो ओर जोडी सीज़र को लगातार घुमाता रहा और वे पतले गन्ने पैनी चर्खी मे डालता रहा। इनमे से रस कम ही निकला और उससे बनने वाली राब बहुत पतली और तीखी थी, पर फिर भी घर मे कोई मीठी चीज़ आई। मां ने उबलती हुई राब के आखिरी हिस्से मे सन्तरे भी डाल दिए और इस तरह बनी हुई राब बहुत देर तक बचे रहने के लायक हो गई।

मक्का को बहुत नुकसान नही हुआ था। उसकी बालियाँ भी इस बारिश मे टिकी रही थी। जोडी उन्हे पीसने के लिए चक्की के पास घटो पडा रहा। निचले पत्थर पर की खुदाई बहुत थोडी थी और वह चारो ओर एक चक्कर मे घूम रहा था। ऊपर का पत्थर इसी पर टिका हुआ था। दोनो एक लकडी के ढांचे मे जडे हुए थे, जो चार पांवो पर खडा था। निकाले हुए दाने ऊपर के खोल मे डाले जाते थे और पिसा हुआ आटा एक खास सीमा तक बारीक होकर नीचे से निकल आता और एक थैले मे भर लिया जाता था। ऊपर वाले हत्थे को घटो घुमाते रहना बहुत उकता देने वाला

था, पर तो भी उसका अपना मजा था। जोडी ने एक ऊँचा ठूँठ पास ही रख लिया था और जब उसकी कमर दर्द करने लगती तो वह इस पर आराम के बहाने टिक जाता।

वह अपने पिता से बोला, "मैं यही पर बहुत कुछ सोचता रहता हूँ।"

पैनी ने कहा, "मुझे आशा है कि तुम बहुत अधिक विचार करते हो, क्योकि इस बाढ ने तुम्हे काफी शिक्षा दी है। इस बार हमने और फौरेस्टरो ने मिलकर तुम्हारे और फौडरविंग के लिए एक शिक्षक रखने की सोची थी। फौडरविंग के मरने के बाद भी मैंने अब तक भी यह बात सोची हुई है। इसके लिए मुझे कुछ शिकार फँसाना होगा और पैसे जमा करने होगे। पर अब प्राणी इतने कम हो गए है और उनकी खाल इतनी कमजोर हो गई है कि उसका कोई लाभ ही नही दिखाई देता।"

जोडी ने तसल्ली देते हुए कहा, "कोई बात नही, मै यो ही काफी जान गया हूँ।"

"यह तुम्हारी अज्ञानता की निशानी है। मै यह अच्छा नही समझता कि तुम बडे होते जाओ और कुछ न जानो। तुम्हे इस साल उतने से ही काम चलाना होगा, जितना मैं तुम्हे थोडा-बहुत सिखा सकता हूँ।"

यह बात जोडी को बहुत अच्छी लगी। वह जानता था कि पैनी पाठ पढाना और सवाल निकालना सिखाने तो लगेगा, पर किसी भी बात पर बढने से पहले वह कहानी सुनाने मे लग जाएगा। अब जोडी पीसने के काम मे आनन्द से जुट गया। फ्लैग दौडता हुआ आया और जोडी ने रुककर उसे ताजा निकलता हुआ आटा चाटने दिया। वह खुद भी कभी-कभी स्वाद ले लेता था। पत्थर रगड से गर्म हो गए थे और आटा भी हलवे जैसी सुगन्ध देने लगा था। बहुत भूख लगने पर वह एक मुट्ठी बडे स्वाद से खा लेता परन्तु इसकी सुगन्ध के समान इसका स्वाद अच्छा न था। फ्लैग भी निष्क्रियता के कारण उदास हो गया और इधर-उधर घूमने लगा। अब वह साहसी होता जा रहा था और जगल मे एक-दो घण्टे को निकल जाता था। अब उसे कोठरी मे बन्द नही किया जाता था और वह अपने चारो ओर की दीवारो को लाँघने लगा था। माँ ने अपनी आशा के अनुसार विश्वास प्रकट किया कि यह जंगली होता जा रहा है और एक दिन घर से भाग जाएगा। अब

जोडी को भी ऐसी बातो से अधिक दुख न होता था। वह जानता था कि फ्लैग भी उस जैसा ही अशान्त है। यह केवल अपने पाँव फैलाने और आसपास का ससार देखने के लिए निकल जाता है। वे दोनो एक-दूसरे को भली-भाँति पहचानते थे। वह यह भी जानता था कि फ्लैग जब भी बाहर जाता है तो अपनी जमीन के चारो ओर ही घूमता रहता है। वह कभी भी इतनी दूर नही जाता कि उसे जोडी की आवाज़ न सुनाई दे सके।

उस साँझ फ्लैग को काफी बुरा बनना पडा। आलू सुखाकर पिछली छत पर ढेरी के रूप मे लगा दिये गए थे। जब सब लोग अपने-अपने काम मे लगे थे, फ्लैग ने टक्करे मारकर इस ढेर को नीचे गिरा दिया। उसे उनके गिरने की आवाज मे आनन्द आने लगा। वह तब तक उन्हे खिडाता रहा, जब तक वे सारे आँगन मे न फैल गए। तब वह अपने खुरो से उन्हे कुचलने लगा। उनकी गन्ध ने उसे लुभा लिया और वह एक को खा गया। स्वाद उसे पसन्द आया और तब एक से दूसरे को चखकर फेंकने लगा। माँ को यह बात बहुत देर बाद पता चली। तब तक बहुत अधिक नुकसान हो चुका था। माँ ने गुस्से से उसे बुरी तरह झाड़ू मारकर निकाला। अब यह खेल वैसी ही हो गया, जैसे जोडी खेल-खेल मे उसका पीछा करता था। ज्यो ही माँ लौटी वह भी उसके पीछे लौट पडा और पीछे से आकर उसे ही टक्कर मारने लगा। जोडी अपने पीसने के काम से इधर निकल आया। पैनी ने भी ऐसी हालत मे ही पत्नी को देखा। अपने पिता के चेहरे के भाव को जोडी न सह सका। उसके आँसू निकल आए।

वह बोला, "उसे नही पता कि वह क्या कर रहा है ?"

"जोडी, मैं जानता हूं, पर उसने आलुओ को इतना नष्ट किया है कि जैसे यह सब नीचता के कारण हो। हमारे पास साल भर के लिए है ही कितना ?"

"तो मैं साल-भर आलू नही खाऊँगा और इस तरह कमी पूरी हो जाएगी।"

"कोई नही चाहता कि तुम आलू न खाओ। अगर तुम इसे रख सकते हो तो सम्हालकर रखो। अब से यह देखना तुम्हारा काम है कि यह कोई

नुकसान न कर पाए।"

"मैं उसे देखूं भी और मक्की भी पीसूं, यह दोनो काम इकट्ठे होने कठिन है।"

"तो जब तुम उसे न देख सको तो उसे कोठरी मे बाँध देना, यही अधिक ठीक है।"

"उसे उस अँधेरी कोठरी से नफरत है।"

"तो फिर उसे एक घेरे मे बन्द कर दो।"

जोडी अगले दिन मुंह-अँधेरे ही उठ गया और एक घेरा आँगन के कोने मे बनाने लगा। उसने इसे इस तरह बनाया, ताकि घेरे के दो कोने बाड के कोनो के साथ बन जायं और यह ऐसी जगह हो कि जहाँ वह अपने काम की हर जगह से उसे देख सके, फिर चाहे वह चक्की पर हो, लकडी काटते समय या भूसे के ढेर पर। वह जानता था कि अगर फ्लैग उसे देखेगा तो वह सन्तुष्ट रहेगा। उसने शाम तक वह घेरा बना लिया। इसी समय उसे और काम करने होते थे। अगले दिन उसने कोठरी से खोलकर फ्लैग को इस घेरे मे डाल दिया। यहाँ फ्लैग उछलने-कूदने लगा और कुछ ही देर मे जगले से पार कूदकर जोडी से पहले घर मे पहुँच गया। पैनी ने देखा कि जोडी फिर रो रहा था।

"रोओ मत, बच्चे! हम किसी न किसी रूप मे इसका हल निकाल लेगे। अब केवल आलू ही ऐसे है कि जिस पर वह परेशान करेगा। तुम उसे अगर बाहर रखो तो अच्छा है। उन्हे हम ढँककर रखेगे। अब तुम उस घेरे को गिरा डालो और उसकी बजाय उन आलुओ को ढँकने के लिए कोई छज्जा-सा बना दो, वैसे ही जैसे चूज़ो के लिए छज्जा बनाया जाता है। उसे एक तम्बू की तरह बना देना। मैं तुम्हे बनाना सिखा दूंगा।"

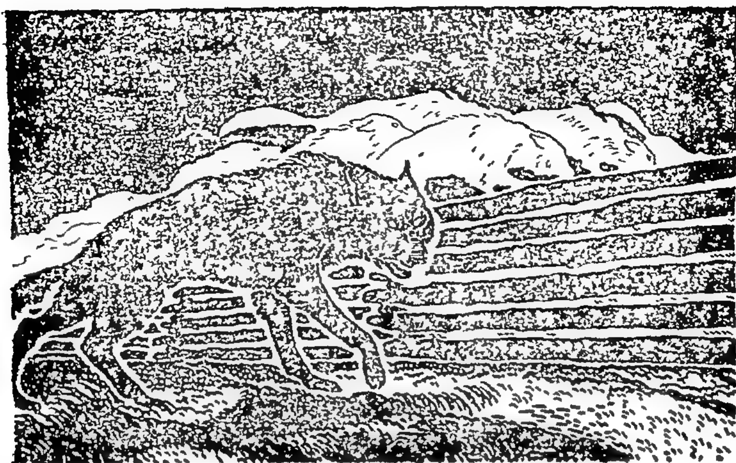
जोडी ने अपनी बाँह से नाक पोछी और बोला, "आपकी बहुत कृपा है।"

आलुओ को ढँक देने के बाद और कोई खास दिक्कत नही थी। फ्लैग को अब घुआँघर और घर से बाहर ही रखना पडता था, क्योकि वह इतना बडा हो गया था कि अपने पिछले पाँवो पर खडा होकर वह लटकते हुए माँस तक चढकर उसके नमक और मसाले आदि को चाट सकता था।

माँ बोली, "इस जानवर की बात ही क्या, मैं यह बर्दाश्त नही कर सकती कि कोई मेरे खाने वाले मांस को चाटे।"

फ्लैग अब बहुत ज्यादा उत्सुक हो गया था और उसने एक दिन तेल के भरे पीपे को धुआंघर मे उसके ढक्कन के गिरने की आवाज सुनने और उसके अन्दर भरी चीज को देखने के लिए टक्कर मारी। दिन शीतल था और तेल जमा हुआ था। इससे पहले कि वह पिघलकर बह पडता, हानि को पहचान लिया गया। परन्तु इस तरह की वारदाते दरवाजे बन्द करके और उसे दूर रखकर बचाई जा सकती थी। जोडी को अब इन बातो का ध्यान रहने लगा।

पैनी ने उसे समझाया, "सावधान रहना सीखने से तुम्हे कोई हानि न होगी। भोजन की चीज़ो को पाने के बाद, तुम्हे सबसे बढकर उनकी रक्षा करना सीखना चाहिए।"



# 23

कार्तिक के मध्य मे पहली बार बहुत जबरदस्त पाला पडा। उत्तर की ओर के बडे भारी अखरोट के पत्ते पीले पड गए। कीकर के पत्ते भी लाल और पीले हो गए थे। घर के पीछे के घने पेडो के पत्ते भी आग की लपटो जैसे लाल हो गए। अगूर की बेले पीली और सुनहरी-सी पड गई थी। यही बात और भी कई चीजो के साथ हुई थी। मगहर के बहुत-से खिले फूल इस समय सफेद-से पड गए थे। दिन ठण्डे होकर आते, दोपहर को कुछ गर्मी होती और शाम को वे फिर ठण्डे हो जाते। शाम को बैक्स्टर लोग अपने कमरे की अँगीठी मे आग जलाकर पहली बार बैठे।

माँ बोली, "यह सम्भव नही दीखता कि अभी से आग जलाने का समय आ गया है।"

जोडी वही अपने पेट के बल लेटा हुआ लपटो को देख रहा था। यही पर उसने कई बार फौडरविंग के स्पेनी घुडसवार को देखा था। उठती हुई लपटो पर अपनी आँखो को मीचकर देखते हुए उसने कई बार बिना

किसी अडचन के एक घुडसवार को लाल पोशाक पहने और चमकदार टोप पहने देखा था। यह तसवीर बहुत देर न टिक सकी थी, क्योंकि या तो लकडियाँ हिल पडती या लट्ठे गिर जाते और वह घुडसवार भाग जाता।

उसने पूछा, "पिताजी, क्या स्पेनियो की लाल पोशाक होती थी ?"

पैनी ने कहा, "मैं नही जानता, बेटे ! अब तुम देख सकते हो कि कोई शिक्षक कितना जानता होगा ?"

माँ अचरज के साथ बोल उठी, "तुम्हारे दिमाग मे ऐसे विचार कौन भर देता है ?"

वह अपने एक पासे पर झुक गया और उसने अपनी बाँह फ्लैग के ऊपर रख दी। यह वही पर पेट के नीचे अपनी टाँगें रखे सो रहा था, जैसे कोई बछडा हो। इसकी सफेद पूँछ नीद मे सिकुड़ी हुई थी। खाना खाने के बाद शाम को इसके घर मे आने से माँ बुरा नही मानती थी। उसने जोडी के कमरे मे इसके सोने पर भी ध्यान देना बन्द कर दिया था, कम-से-कम जब तक यह कोई उधम न मचाए। उसने इसे भी उसी घृणा और अरुचि से स्वीकार किया, जैसे और कुत्तो को किया था। वे घर से बाहर छत के छज्जे के नीचे सोते रहते थे। बहुत ठण्डी रातो मे पैनी उन्हे भी अन्दर ले आता था, क्योंकि वह आराम को बाँटकर उसका मजा लेना चाहता था।

माँ बोली, "ज़रा एक लकडी आग पर डाल दो। मुझे सिलाई नही दिखाई देती।"

उसने पैनी के सर्दी के पाजामे को काटकर जोडी के लिए बनाया था।

वह बोली, "अब तुम ज़रा इस साल जैसे ही और बढ जाना, तो अगली बार मैं तुम्हारे पाजामे काटकर तुम्हारे पिता के लिए ठीक कर दूँगी।"

जोडी बहुत जोर से हँस पडा। पैनी ने दिखाया जैसे उसका अपमान हुआ है। परन्तु तभी उसने आँखें झपकी और अपने पतले कन्धे हिलाए। माँ आरामकुर्सी मे धीरे-धीरे हिल-डुल रही थी। जब भी कभी वह मज़ाक करती, वे सभी प्रसन्न होते थे। जिस तरह इस ठण्ड-भरी साँझ मे भट्टी की आग ने अन्तर ला दिया था, उसी तरह उसकी अच्छी आदत भी घर मे

अन्तर ला देती थी।

पैनी बोला, "वेटा, तुम्हे और मुझे शब्द-ज्ञान की वह पुस्तक पढनी है।"

जोडी बोला, "हो सकता है, उसे टिड्डियाँ खा गई हो।"

माँ ने सूई से हवा मे इशारा किया और उसकी तरफ होकर वह बोली, "अच्छा है, तुम व्याकरण भी पढ लो। तुम ठीक नही बोलते।"

वह फिर से कुर्सी पर झूलने लगी।

पैनी ने कहा, "देखो, मेरा विचार है कि इस बार बहुत ठण्ड नही होगी।"

जोडी बोला, "अगर लकडियाँ न ढोनी पड़ें, तो मुझे ठण्ड पसन्द है।"

"हाँ, ठीक है। वह सचमुच अच्छी ठण्ड होगी। माँस और फसल मेरे अनुमान से अधिक अच्छी हुई है। अब हम चैन की साँस ले सकते हैं।"

माँ बोली, "समय आने पर पता चलेगा।"

"हाँ, जी ! दुर्भिक्ष तो कही और शिकार खेलने चला गया है।"

इसके बाद शाम बिना किसी बातचीत के ही बीत गई। आग जलने के अलावा कोई आवाज़ न थी, या फिर पैनी अपना पाइप सुलगा रहा था या माँ की आरामकुर्सी लकडी के तख्तो पर चुरमुरा रही थी। अचानक ही घर के ऊपर से सीटी-सी बजाती हुई कोई चीज़ गुजरी, जैसे अचानक ही हवा का कोई बडा झोका निकला हो। बत्तखे दक्षिण की ओर उड़ रही थी। जोडी ने पिता की ओर देखा। पैनी ने अपने पाइप से आकाश की ओर इशारा किया और सिर हिलाया। अगर वह इतने आराम से न पडा होता तो जोडी उससे पूछना चाहता कि ये पक्षी किस प्रकार के थे और कहाँ जा रहे थे ? उसने सोचा कि अगर वह भी अपने पिता के समान ही इन सब बातो को जान ले तो उसे व्याकरण, गणित और शब्द-ज्ञान सीखने की कोई आवश्यकता न रहेगी। उसे पढना पसन्द था, क्योंकि उसमे कहानियाँ बहुत होती थी, भले ही वे पैनी की कहानियो-जैसी रोचक न हो।

पैनी ने कहा, "क्या यही सोना है, या अपने बिस्तरो पर जाकर ?"

वह उठा और भट्टी पर अपने पाइप को उसने उलटाया। वह ज्योही

झुका कि कुत्तो ने बाहर भागते हुए भौकना शुरू किया। ऐसा लगा जैसे उसके हिलने ने उन्हे जगा दिया हो और वे किसी काल्पनिक दुश्मन के पीछे भाग पडे हो। पैनी ने दरवाज़ा खोला और अपने कान पर हाथ रख-कर सुना।

"मुझे तो कुत्तो के अलावा कोई और चीज़ सुनाई नही देती।"

इतने मे बछडा चिल्लाया। यह चीख बडी भयानक और पीडा-भरी थी। फिर एक बार चीख उठी और अचानक ही बन्द हो गई। पैनी अपनी बन्दूक लेने के लिए रसोई की ओर दौडा गया और बोला, "मशाल जलाओ!"

जोडी ने समझा कि उसकी माँ के लिए इशारा किया गया है। वह अपने पिता के पीछे अपनी बन्दूक लेकर भागा, जो कि अब उस बडे भालू के आने के बाद से भरी हुई रखी रहती थी। माँ भी पीछे-पीछे अनमने भाव से जली हुई लकडी लेकर भागी और अपनी धीमी चाल से रास्ता खोजती हुई बढी। जोडी पशुओ की ओर की बाड पर चढ गया। अब उसे अफसोस हुआ कि वह मशाल खुद नही लाया। उसे कुछ भी नही दीख रहा था। वह केवल लडाई और गुर्राने की मिली-जुली आवाजें और बहुत सारे दाँतो की कडकडाहट सुन रहा था। तभी रिप और जूलिया की आवाजें चुप पड गईं। इसी बीच उसके पिता की आवाज़ सुनाई दी, "जूलिया रिप! पकडो उन्हे! हे भगवान्! रोशनी कहाँ है?"

जोडी पीछे की ओर लौटा और दौडकर माँ के हाथ से मशाल ले आया। जो कुछ हो रहा था उसे पैनी ही सम्हाल सकता था। वह फिर पीछे दौडा गया। उसने मशाल ऊँची उठाई। भेडियो के एक बडे झुण्ड ने पशुओ पर धावा बोल दिया था और बछडी को मार भी दिया था। ये भेडिए तीन दर्जन से भी अधिक थे। उनकी आँखें इस रोशनी मे ऐसे चमक रही थीं, जैसे कोई चमकदार पानी किसी जोहड मे लहरा रहा हो। वे बहुत ही पतले और खुरदरी खाल वाले थे। उनके लम्बे दाँत मछली के बाहरी काँटो की भाँति चमक रहे थे। उसने अपनी माँ को झाडी से परे चीखते हुए सुना और देखा कि वह स्वय भी चीख रहा था।

पैनी चिल्लाया, "रोशनी को हिलाओ मत, स्थिर रखो!"

उसने उसे स्थिर रूप मे पकडने का प्रयत्न किया। उसने देखा कि पैनी ने वन्दूक उठाई और एक के बाद एक गोली दाग दी। भेडिये लौटे और वाड को कूदकर पार हो गए। रिप उनकी एडियो पर कूद पडा। पैनी भी उनके पीछे चिल्लाता हुआ भागा। जोडी भी उनके पीछे रोशनी उन पर फेकता हुआ भागा। उसे याद था कि उसके दूसरे हाथ मे उसकी अपनी वन्दूक है। उसने अपने पिता की ओर यह बढा दी और पैनी ने इससे फिर गोली दाग दी। भेडिये बिजली की गति से भाग गए। रिप हिचकिचाया। उसकी पतली-सी खाल अँधेरे मे भी चमक रही थी। वह अपने स्वामी की ओर लगडाता हुआ लौट आया। पैनी ने झुककर उसे शाबाशी दी। वह भी अब लौट पडा और पशुओ के पास आ गया। गाय चिल्ला रही थी।

पैनी ने शान्ति से कहा, "रोशनी मुझे दे दो।"

उसने रोशनी उठाई और वाडे के अन्दर इसे घुमाया। वछडी का चिरा हुआ शरीर बीचोबीच पडा था और इसके साथ ही पडी थी जूलिया, जिसके दाँत एक भेडिये के गले मे अटके हुए थे। यह भेडिया अपनी अन्तिम साँसे ले रहा था। यह चीचडो से लदा हुआ और खारिश से युक्त था।

पैनी बोला, "अच्छा, उठो, वेटी। चलो, चले!"

जूलिया ने अपनी पकड ढीली की और खडी हो गई। उसके बूढे और चपटे दाँत ही इस अकेले शिकार के काम आए थे। पैनी ने उस मारी हुई वछडी को देखा और साथ ही उस मरे हुए भेडिये को और तब उसे अचानक ही एक अदृश्य शत्रु की हरी-हरी आँखे दिखाई दी, जैसे वह वहुत दूर रात मे उसे देख रहा हो। वह खुद वहुत छोटा और सिकुडा हुआ दीख रहा था।

वह वोला, "अच्छा ."

उसने जोडी को उसकी वन्दूक पकडाई और वाड के किनारे से अपनी वन्दूक उठा ली। वह झुका और वछडी का एक खुर उठाकर घर की ओर उसे घसीट लाया। जोडी समझ गया और काँप पड़ा। उसके पिता की इच्छा थी कि यह शव लुटेरे जानवरो के लिए दरवाजे के पास ही पडा रहे। वह अब भी डरा हुआ था। कोई चीता या भालू किसी भी जगह फँसकर उसे हमेशा ही डरा देते थे। परन्तु आदमी हमेशा ही खडे होकर वन्दूके

उधर तान देते थे। ऐसी जगह कुत्तो को भी पीछा करने मे आनन्द आता था। परन्तु इस भयकर जत्थे ने पशुओ के बीच आज जो दृश्य पैदा किया था, उसे वह कभी देखना नही चाहता था। वह चाहता था कि उसका पिता इस शव को जगले पर पटक दे। माँ दरवाजे तक आई और काँपते हुए उसने उसे बुलाया। वह बोली, "मुझे अँधेरे मे ही आना पडा। मैं कभी इतना नही घबराई। क्या फिर ये भालू आए थे?"

अब वे फिर घर मे आ गए। पैनी उसके पास से होकर भट्ठी तक गया, ताकि खौलते हुए पतीले मे से कुत्तो के घावो के लिए गर्म पानी ले सके।

वह बोला, "भेडिये थे।"

"हे भगवान्! क्या उन्होने बछडी मारी?"

"हाँ, उन्होने ही मारी।"

"अरे भगवान्! यह तो बछडी मारी है।"

वह भी कुछ देर वही खडी रही, जब तक वह चिलमची मे कुत्तो के घावो को गर्म पानी से धोता रहा। घाव बहुत गहरे नही थे।

उसने उदासी के साथ कहा, "मैं चाहता था कि कुत्ता एक एक करके उन पर टूटता।"

घर की इस सुरक्षापूर्ण स्थिति मे अपनी माँ की कमजोरी को देखकर जोडी मे साहस आ गया और वह बोला, "पिताजी, क्या वे आज रात फिर लौटेंगे और क्या हमे फिर उनका शिकार करने जाना होगा?"

पैनी ने उबली हुई राल रिप के एक गहरे घाव मे भरी। यह उसकी एक बगल मे था। आज उसकी इच्छा किसी प्रश्न का उत्तर देने की नही थी। वह तब तक कुछ न बोला, जब तक उसने कुत्तो का काम निबटा नही लिया और उनके लिए घर के पास ही खिडकी के नीचे लेटने लायक जगह नही बना ली। वह नही चाहता था कि फिर दुबारा ऐसी अनहोनी बात हो जाय। उसने आकर अपने हाथ धोये और आग पर उन्हे सुखा लिया।

वह बोला, "इतना बुरा समय आने पर कोई मनुष्य चैन से कैसे सो सकता है? मुझे निश्चय ही फौरेस्टरो के पास कल जाना पड़ेगा।"

'क्या आप कल वहाँ जाएँगे?"

"हाँ, मुझे उनकी सहायता चाहिए। मेरे कुत्ते तो ठीक हैं, परन्तु एक

औरत, मर्द और बच्चा मिलकर आखिर कितना मुकाबला कर सकते है इन भूखे भेड़िये के जत्थो का ?"

आज जोडी को अपने पिता की अपनी असमर्थता स्वीकार करते देखना बडा विचित्र लगा। परन्तु इससे पहले कभी भेडिये एक समूह मे इस तरह उनके खेत पर आए भी नही थे। हिरण और छोटे जानवर जगल मे उनके लिए काफी अधिक थे। कभी-कभी कोई थोडे से भेडिये एक या दो के रूप मे आए थे और वे भी डरते हुए और घबराते हुए। चेतावनी पाते ही भाग जाते थे। उनसे कभी भी कोई बडा खतरा नही हुआ। पैनी ने अपना पाजामा उतारा और अपनी पीठ आग की ओर कर ली। वह बोला, "मैं खुद घबरा गया था और मेरी कमर तक सुन्न हो गई है।"

बैक्स्टर लोग फिर से सो गए। जोडी ने अपनी खिडकी अच्छी तरह बन्द कर ली। उसने फ्लैग को अपनी ही रजाई मे सुलाना चाहा, परन्तु वह लाते झाडकर उससे अलग हो जाता था। उसे बिस्तरे के पॉयते पर सोने मे ही आनन्द आता था। जोडी रात को दो बार उठा, ताकि वह यह देख सके कि छौना वही है। अभी फ्लैग बछडे जितना बडा तो नही हुआ था, पर फिर भी अँधेरे मे जोडी का दिल धडकने लगा। उसे लगा कि जो खेत आज तक किले के रूप मे थे, अब वे भी हमले के लिए खुल गए थे। उसने रजाई अपने सिर तक खीच ली। अब वह सोने से भी घबरा रहा था। पर, बिस्तरे के आराम और पतझड की पहली रात ने उसे सोने के लिए विवश कर दिया।

पैनी सुबह होते ही फौरेस्टरो की ओर जल्दी चल पडा। भेडियो का जत्था रात मे फिर दुबारा नही लौटा। उसने उम्मीद की कि उनमे से एक-दो जरूर घायल हुए होगे। जोडी ने भी साथ चलने की प्रार्थना की, पर माँ ने बिलकुल अकेले रहने से मना कर दिया।

उसने कहा, "तुम्हारे लिए तो जाने के लिए पूछना तमाशा ही बन गया है। आदमी बनकर अपनी माँ की रक्षा करना तुम्हारे लिए कोई महत्त्व नही रखता।"

उसके अभिमान को चोट लगी। उसने माँ की बाँह थपथपाई और बोला, "घबराओ नही, माँ! मैं रुकूँगा और भेडियो को दूर रखूँगा।'

"अब ठीक बात हुई ! कभी-कभी मुझे उन जानवरो के बारे मे सोच-कर झटका-सा लगता है।"

अपने पिता से यह विश्वास पाकर कि वे दिन मे फिर हमला नही करेंगे, उसने मन मे साहस अनुभव किया परन्तु ज्योही पैनी घोडे पर चढकर चला गया, उसे अपने अन्दर फिर एक बेचैनी अनुभव होने लगी। उसने फ्लैग को अपने कमरे मे बिस्तर के एक पाए के साथ बाँध दिया और सोते से पानी लेने चला गया। लौटते हुए उसे लगा कि उसने कुछ ऐसी आवाजें सुनी हैं जो बिलकुल अजनबी थी। वह बार-बार पीछे देखने लगा और बाड के कोने तक आकर तेज़ी से दौडने लगा। उसने अपने मन मे कहा कि वह डरा तो नही है, पर कही उसकी माँ न डरी हो ? उसने जल्दी-जल्दी लकडियाँ काटी और उन्हे ले जाकर रसोई के लकडी के डिब्बे मे खूब ऊपर तक भर दिया। एक ढेर उसने भट्टी के पास भी लगा दिया, क्योकि हो सकता है माँ को बाद मे जरूरत पडे। उसने पूछा कि अगर कुछ माँस धुआँघर से लाना हो ? पर माँ ने मना कर दिया। उसकी बजाय उसने कुछ तले हुए माँस के टुकडे और तेल का पीपा मँगवाया।

वह बोली, "तुम्हारे पिता यहाँ से चले गए है और उन्होने नही बताया कि इस बछडी का क्या करना है ? इसे गाड दे या कुत्तो के लिए पका लें, या फिर शिकार के लिए बचा लें। खैर, हम उनके लौटने तक इसे बचा रखेगे।"

बाहर के किसी काम की जल्दी नही थी। उसने रसोई का दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया।

माँ बोली, "तुम छौने को बाहर निकाल दो।"

"माँ, मुझे इस बात पर मजबूर मत करो, क्योकि उसे सूँघते ही चारो ओर से भेडिये यहाँ टूट पडेंगे।"

"ठीक है, पर तुम्हे उसकी असभ्यता के कारण बार-बार सफाई करनी होगी।"

"हाँ, मैं करूँगा।"

जोडी ने अपने शब्द-ज्ञान वाली पुस्तक निकालने और पढने का निश्चय किया। उसकी माँ ने इसे फालतू रजाइयो और सर्दी के कपडो और कागजो

वाले ट्रंक मे से ढूंढकर निकाल दिया। अब वह सारी सुबह इसी मे लगा रहा।

माँ ने सन्देह के साथ कहा, "मैंने कभी तुम्हे पुस्तक मे इतना तल्लीन नही पाया।"

वह पृष्ठो पर लिखे शब्द देख भी नही पा रहा था। उसने अपने मन को फिर समझाया कि वह डर नही रहा है। परन्तु उसके कान जैसे अब भी कुछ सुन रहे थे। वह सारी सुबह कुछ न कुछ तेज़ चाल-सी सुनता रहा था। थोडी देर मे उसे अपने पिता के घोडे के खुरो की टाप सुनाई दी और फिर दरवाज़े पर पिता की आवाज उसने सुनी।

दोपहर के भोजन से पहले ही पैनी लौट चुका था। उसने सुबह का नाश्ता भी बहुत थोडा खाया था, इसलिए उसे भूख लग आई थी। किन्तु अब जब तक वह पेट न भर ले, वह कुछ बात नही कर सकता था। उसने अपना पाइप सुलगाया और अपनी कुर्सी पीछे की। जोडी की माँ ने तश्तरियाँ धोई और झाड़ू से फर्श साफ किया।

पैनी बोला, "अब मै तुम्हे सारी बात ठीक-ठीक समझा देता हूँ। मेरी समझ मे भेडियो का सबसे अधिक नुकसान हुआ है। यह जो जत्था कल रात यहाँ आया था, बस इतने ही भेडिये बच गए है। बक और लेम फोर्ट बटलर और वौलूसिया की ओर गए थे और उन्होने एक भी भेडिया न कही देखा और न सुना। केवल इसी जत्थे की बात उन्होने भी सुनी। यह हमेशा ही इकट्ठे होकर रहते है। यहाँ यह फोर्ट गेट्स की ओर से आए थे और रास्तेभर जो भी पालतू पशु इन्हे मिला उसे ये मिटाते आए हैं। इन्हे बहुत अधिक खाने को नही मिल पाया, क्योकि खाने से पहले ही ये पहचान लिए जाते हैं और भाग जाते हैं। ये सचमुच भूखो मर रहे है। अभी परसो की रात ही इन्होने एक बछडी और एक साल-भर का बछडा फौरेस्टरो के पशुओ मे से मार डाला। आज पौ फटने पर उन्होने इन्हे फिर चिल्लाते हुए सुना। यह बात उनके यहाँ से लौट जाने के बाद की है।"

जोडी के मन मे उत्सुकता जगी। उसने पूछा, "क्या हमे फौरेस्टरो के साथ शिकार करने जाना होगा?"

"हाँ, यही बात मैं उन लोगो के साथ जाकर एक लम्बा चक्कर काट

तय करके आया हूँ। हम सव इन पशुओ को मारने पर एक मत न वना सके। मैं चाहता था कि एक-दो वार अच्छा शिकार किया जाता और अपने पशुओ या उनकी घुडसाल के चारो ओर जाल मे उन्हे फँसाया जाता। परन्तु फौरेस्टर लोग उन्हे जहर देने पर तुले हैं। मैंने आज तक कभी भी किसी भी जानवर को जहर देकर नही मारा है और न मेरा अव भी ऐसा इरादा है।"

माँ ने वर्तन साफ करने का कपडा दीवार पर लटकाया। वह वोली, "एजरा, अगर तुम्हारा दिल काटकर देखा जाय तो यह माँस का वना हुआ नही होगा। शायद यह मक्खन से वना होगा। तुम तो प्लेग के मारे कोई मूर्ख मनुष्य हो! उन जगली जानवरों को हमारे पशु वेरहमी से मारने दो और हमे भूखा मरने दो। परन्तु उन्हे मारने के लिए वहुत दयालु वनते हो!"

आह भरकर पैनी ने कहा, "मैं कितना मूर्ख लगता हूँ! पर मैं क्या करूँ? अनजान जानवरो को जहर मिलना ही है और उससे कुत्ते वगैरह भी मरेंगे।"

"भेडिये हमे साफ कर दें, यह उससे तो अच्छा है।"

"ओह, ओरी! अव हमारा वछडा तो खत्म हो गया। उसी के पीछे वे आ सकते थे। न वे हमे मार सकते हैं, न गाय और घोडे पर हमला कर सकते है, क्योकि उनकी पुरानी खाल मे उनके दाँत नही गड सकेंगे। वे मेरे कुत्तो जैसे शिकारी कुत्तो के साथ भी कभी नही उलझेंगे। वे हमारे चूजो को भी पेडो पर चढकर कभी नष्ट नही करेंगे। हमारे पास अव तगीवाली चीज ही कौन-सी है?"

जोडी वोला, "पिताजी, फ्लैग जो है!"

जोडी को पहली वार लगा कि जैसे पिता एक गलती कर गए। वह वोला, "पिताजी, जहर देना वछडे के चीरे जाने से तो अच्छा है।"

"वछडे का चीरा जाना स्वाभाविक था, वे भूखे थे। पर जहर देना स्वाभाविक नहीं है। यह अच्छी लडाई नही होगी।"

माँ वोली, "क्या तुम भेडियो से भी साफ और न्यायपूर्ण लडाई लडना चाहते हो?"

"हाँ, हाँ, कहो, ओरी! कहकर शान्ति पा लो।"

"अगर मैं कहने लगूँ तो मुझे ऐसे शब्द ढूँढने होंगे जिन्हे, बोल तो क्या, मैं सोच भी नही सकती।"

"तो श्रीमतीजी, फूट पडिए! जहर देने मे मैं साथ नहीं दूँगा।"

पैनी अपना पाइप पीने लगा और बोला, "अगर तुम्हे अच्छा लगे तो सुन लो कि फौरेस्टरो ने तुमसे भी अधिक बुरा-भला कहा। मैं जानता था कि जब मैं अपनी बात कहूँगा तो वे मेरे सामने ही हँसी उडाएँगे और ऐसा ही हुआ भी। और अब वे जहर फैलाने के लिए अपने प्रोग्राम के अनुसार बढ रहे हैं।"

"मुझे अभिमान है कि हमारे आस-पास कुछ मर्द तो रहते है।"

जोडी उन दोनो की ओर देखने लगा। उसने सोचा कि उसका पिता गलत हो सकता है, पर उसकी माँ अन्याय पर उतर आई है। पिता की हस्ती जैसे उसे फौरेस्टरो से ऊँची दीखने लगी। इस बार अगर फौरेस्टर उसकी नही सुन रहे थे तो इसका अर्थ यह नही कि वह बिलकुल आदमी ही नही रहा है, बल्कि यह कि उसको गलत समझा गया है। पर शायद वह गलत भी नही था।"

वह बोला, "माँ, तुम मेरे पिताजी को अकेला छोड दो। मुझे पता है कि उनमे फौरेस्टरो से अधिक अक्ल है।

माँ उसकी ओर मुडी और बोली, "श्रीमान्, बडे मुँह वाले भोट्टू महाराज! तुम एक चपत मे ही ठीक हो जाओगे।"

पैनी ने अपना पाइप मेज़ पर उलटाया और बोला, "छोडो! हम सब क्या जानवरो से ही काफी दुखी नही हैं जो अब परिवार मे भी झगडा शुरू हो गया? क्या शान्ति खोजने के लिए आदमी को मरना ही पडेगा?"

माँ अपने काम मे फिर से लग गई। जोडी भी अपने सोने के कमरे मे खिसक गया और पलँग को खोलकर बाहर दौडने के लिए ले गया। जगलो मे भी उसे चैन न मिली और वह बहुत दूर न जा सका। उसने छौने को फिर अन्दर बुला लिया और उसके साथ अखरोट के पेड के नीचे बैठकर गिलहरियों को देखने लगा। उसने गिलहरियो द्वारा खतम कर देने से पहले-पहले अखरोट इकट्ठे कर लेने का निश्चय किया। अखरोट बहुत थे

और फलँग के कारण गिलहरियाँ थोडी रह गई थी। पर उसने चाहा कि यह अखरोट किसी और के हिस्से मे न पडे। पेड पर चढकर उसने डालें हिला दी। अखरोट एक बौछार के रूप मे गिर पड़े। वह उतरा और एक ढेर उसने इकट्ठा कर लिया। अपनी कमीज़ को उतारकर उसने उसका एक थैला वनाया और उसे अखरोटो से भरकर घर की ओर ले चला। वहाँ जाकर उसने इसे खाली कर दिया और अखरोटो को सूखने के लिए डाल दिया। जब उसने फिर कमीज़ पहनी तो उसे लगा कि कुछ जगह ऐसे दाग लग गए हैं, जो अभी धुलने से भी नही जायेगे। यह छिलके के रस के दाग थे। यह कमीज बहुत अच्छी थी और इसमे केवल एक ही टाँकी लगी थी, वह भी उस जगह जहाँ अनाजघर की छत से गुज़रते हुए फँसकर यह फट गई थी। उसे मन-ही-मन अफसोस हुआ। पहले से ही सब बातो को जान लेना उसे बहुत कठिन लगा। कष्ट और बचाव की बातें वह पहले ही कैसे जान पाता? पर क्योकि उसकी माँ पैनी पर नाराज़ थी इसलिए ऐसे मौको पर जोडी की बातो को नही देखती थी।

साँझ तक वह ठीक हो गई। आखिर फौरेस्टरो ने सारा काम निबटा ही देना है। उनमे से तीन साँझ के समय आ गए। वे पैनी को ज़हर की ठीक जगह बताने आए थे, ताकि पैनी अपने कुत्तो को उस रास्ते से अलग रख सके। उन्होने इसे बहुत चालाकी से फैलाया था। घोडे की पीठ पर चढे-चढे ही उन्होने यह सब किया, ताकि भेडिये आदमी की गन्ध न पा सके। उन्होने ताजा माँस के टुकडे अपनी ही बछडी और बछडे मे से तैयार किए और इन्हे बिखेरते हुए बारहसिंगे की खाल मे पकडे रहे। तीनो ही अलग-अलग रहकर उन पगडण्डियो पर बढे जहाँ से भेडियो के जत्थे के आने की सम्भावना थी। उन्होने ताड की छोटी छडो से छेद किए। यह सब घोडे पर चढे-चढे ही उन्होने किया। वही से जहरीला माँस उन छेदो मे डाल दिया और उन पर पत्ते ढक दिए। आखिरी पगडण्डी पर वे पैनी के पशुओ की ओर बढ आए थे। यह सोते से एक सीधी कतार मे थी। इस सोते पर ही भेडिये पानी या दूसरे शिकार के लिए इन्तज़ार कर सकते थे। पैनी ने सब बात स्वीकार कर ली।

"ठीक है, एक सप्ताह के लिए मैं अपने कुत्ते बचा रखूँगा।"

उन सबने पानी पिया और पैनी के तमाखू मे से कुछ पिया। परन्तु धन्यवाद के साथ शाम का भोजन खाने से मना करके वे लौट गए। वे चाहते थे कि शाम से पहले ही घर पहुँच जायँ ताकि घुडसाल मे जत्थे के धावे से पहले वे वहाँ हो। उन्होने पैनी के साथ कुछ देर इधर-उधर देख-भाल की और तब घोडो पर चढकर लौट गए।

साँझ वडी शान्ति से वीत गई। पैनी ने कुछ और कारतूस भर लिए और अपनी बन्दूक भरकर रख ली। जोडी की पुरानी बन्दूक को भी उसने भर दिया। जोडी ने इसे बहुत अच्छी तरह देखभाल कर अपने विस्तर के किनारे रखा। वह ऐसे मौको पर अपना ध्यान रखने के लिए पिता के प्रति कृतज्ञ था। वह सबके सो जाने के वाद भी बहुत देर तक सोचता हुआ लेटा रहा। उसे अपने पिता और माता की वातचीत सुनाई दे रही थी।

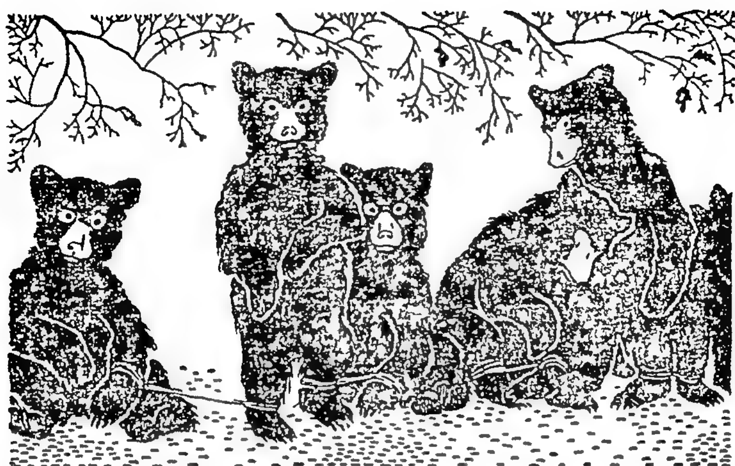
पिता कह रहा था, "मैं तुम्हारे लिए एक खवर लाया हूँ। वक ने मुझे वताया कि ओलिवर ने जैक्सनविले से वोस्टन तक के लिए एक नाव ली और उसका अनुमान है कि वहाँ पहुँचने से कुछ देर वाद ही वह फिर अपने जहाज पर चला गया। उसने ट्विक वैदरवी को कुछ पैसे दिए और उसे जैक्सनविले ले गया। लेम को इस बात पर गुस्सा है। वह कहता है कि अगर दोनो मिल गए तो वह दोनो को ही मार डालेगा।" जोडी ने सुना कि उसकी माँ का भारी शरीर विस्तर मे ही वडी आवाज के साथ मुडा। वह कह रही थी, "अगर लडकी सच्ची है तो ओलिवर उससे शादी करे और मामला रफा-दफा करे। और अगर वह निरी दिखावे की चीज है तो उससे इस मेल-जोल का मतलव क्या ?"

पिता कह रहा था, "मैं ठीक से तो नही कह सकता। जवानी वीते वहुत दिन हो गए। अव मुझे दोस्ती का तरीका भी पूरा नही पता। ओलिवर क्या सोचता होगा, यह मैं कैसे कह सकता हूँ ?"

"कुछ भी हो, उसे नही चाहिए कि वह उसे पीछा करने दे।"

जोडी उससे सहमत था। उसने रजाई मे अपने पाँव पूरे फैला दिए। अव उसका ओलिवर से सम्वन्ध समाप्त था। अगर वह कभी दुवारा दिखाई भी दिया तो उसे साफ-साफ कह देगा कि वह उसके वारे मे क्या सोचता है। उसे उम्मीद थी कि कभी-न-कभी ट्विक को देखेगा और

उसके पीले वाल खीचेगा या उस पर कोई चीज फेंकेगा। केवल उसके कारण ही तो श्रोलिवर बिना मिले चला गया है। वह श्रोलिवर को खो चुका है। अब उसे उस पर इतना गुस्सा था कि वह उसकी चिन्ता भी नही करना चाहता था। धीरे-धीरे वह गहरी नीद मे सो गया श्रौर स्वप्न मे ट्विक की तसवीर खीचता रहा—जैसे वह जंगल मे भटक रही हो श्रौर भेडियो के लिए फेके गए ज़हर को उसने खाया हो श्रौर वही बहुत पीडा के साथ गिरकर मर गई हो।



## 24

फौरेस्टरो के जहर ने एक सप्ताह मे तीस भेडियो की जान ले ली। अब कुल मिलाकर एक या दो दर्जन भेडिये रह गए थे और वे भी जहर से वचने के लिए इधर-उधर भागते रहते थे। पैनी ने साथ मिलकर उन रहे-सहो को नष्ट करना स्वीकार कर लिया, परन्तु अव यह सब जाल या शिकार से ही होना था। यह जत्था वहुत दूरी तक मार करता और एक ही जगह पर कभी दो शिकार नही करता था। एक रात उन्होने फौरेस्टरो की घुड-साल पर हमला कर दिया। वछडे चिल्लाने लगे और फौरेस्टर निकल आए। उन्होने देखा कि गायो ने भेडियो को एक कोने मे फँसा लिया था। उन्होने एक गोला-सा वना लिया और वछडो को अपने वीच मे ले लिया। और, तव सीग नीचे करके रक्षा करने लगी। वीचोवीच एक वछडा अपने कटे हुए गले के कारण मर रहा था। दो और वछडो की पूँछे जड से ही खा ली गई थी। फौरेस्टरो ने उस जत्थे मे से छ को मार गिराया। अगले दिन उन्होने फिर जहर फैला दिया, पर अव कोई भी भेडिया उसे खाने न लौटा।

उनके अपने ही दो कुत्तो ने वह माँस खाया और मर गए। फौरेस्टर लोग बचे-खुचे जत्थे का पीछा करना मान गए।

एक शाम को वक आया और उसने पैनी को अगली सुबह शिकार मे शामिल होने के लिए निमन्त्रित किया। भेडिये सवेरे से ही उस दिन फौरेस्टरो के पश्चिम की ओर के कुएँ के पास शोर मचा रहे थे। बाढ के बाद बहुत दिन तक सूखा पडा और उससे काफी ऊँचा पानी भी सूखकर थोडा रह गया था। गीली जगहो, दलदलो, जोहडो, नदियो आदि मे पानी पहले जैसा ही हो गया था। जो थोडा बहुत शिकार बचा था, अब वह भी इन सब सोतो और कुओं पर बार-बार नही आता था। भेडियो को भी यह बात सूझ गई थी।

इस शिकार से दो बाते पूरी होनी थी। एक तो यह कि सौभाग्य से बचे-खुचे सारे भेडिये मारे जाते और दूसरा यह कि कुछ नया शिकार भी आसानी से मिल जाता। लगता था कि प्लेग समाप्त हो चुकी थी। अब फिर से हिरण और भालू का माँस लुभाने लगा। पैनी ने बडी नम्रता से निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। यो तो फौरेस्टर ही अकेले शिकार के लिए बहुत थे, पर यह उनकी उदारता ही थी। उन्होने वक को कह भेजा। जोडी यह जानता था। वह यह भी जानता था कि उसके पिता का शिकार के तौर-तरीको का ज्ञान हमेशा ही स्वागत योग्य था।

पैनी बोला, "वक, रात यही गुजारो। हम सवेरे पौ फटने से पहले ही निकल चलेगे।"

"नही, क्योकि अगर मैं सोने के समय तक नही पहुँचा तो वे लोग अनुमान करेंगे कि कल कोई शिकार नही होना और तैयारी भी नहीं करेंगे।"

यह तय हुआ कि पैनी उन्हे दिन निकलने से एक घटा पहले मुख्य पगडटी और फौरेस्टरो की पगडडी के मिलने के स्थान पर मिलेगा। जोडी ने अपने पिता की बाँह पकडी।

पैनी ने पूछा, "क्या मैं जोडी और कुत्तो को साथ ले सकता हूँ?"

"कुत्तो को लेना तो ठीक है, क्योकि हमारे दो कुत्ते मारे गए थे, पर बच्चे की बात हमने नही सोची थी। अगर तुम वायदा करो कि यह गडबड़ नही करेगा, तब इसे ले चलते हैं।"

"मै इसके लिए वायदा करता हूँ।"

वक चला गया। पैनी ने गोली-बारूद तैयार की और बन्दूक मे तेल दिया। सभी जल्दी सोने चले गए।

जोडी को लगा कि पैनी उस पर झुककर उसे जगा रहा है। अभी वह पूरा सोया भी न था। रात अभी बीती न थी। यो तो रोज ही जल्दी उठा जाता था, पर पूरब से कोई चमकीली किरण तब तक आ चुकी होती थी। परन्तु इस समय ससार मे चारो ओर अँधेरा ही अँधेरा दिखाई दे रहा था। रात की हवा अब भी पेडो मे पत्तो की फिसलन का शोर पैदा कर रही थी। और कोई आवाज इस समय नही सुनाई दे रही थी। एक क्षण के लिए उसे दुख हुआ कि उसने पहली शाम क्यो उत्सुकता दिखाई। पर तभी उसने शिकार की कल्पना की और वह एक जोश से भर गया। ठण्डी हवा मे ही वह बिस्तरे से उछलकर बाहर आ गया। हिरण की कोमल खाल पर उसने अपने पाँव रगडे और कमीज़ और पाजामा पहना। वह दौडकर रसोई मे पहुँच गया।

भट्टी मे आग जल रही थी। उसकी माँ ने डच चूल्हे मे बिस्कुटो का एक बर्तन रखा था। अपनी रात की पोशाक पर उसने पैनी का एक पुराना शिकार के समय का कोट डाला हुआ था। फीतो मे बँधे उसके सलेटी बाल उसके कन्धो पर लटक रहे थे। वह उसके पास गया और उसे सूँघकर अपनी नाक उसकी पोशाक और छाती पर रगडने लगा। उसे माँ मे काफी बडापन, गर्मी और कोमलता अनुभव हुई। उसने अपने हाथ उसकी पीठ तक फैला दिए, ताकि वह भी कोट की गर्मी ले सके। माँ ने एक क्षण यह सब सहा और तब उसे एकदम अलग कर दिया।

वह बोली, "मैंने कभी किसी शिकारी को इस तरह बच्चा बनते नही देखा। अगर नाश्ते मे देरी हुई तो तुम लोगो को उनसे मिलने मे देर हो जाएगी।"

पर यह कहते हुए भी उसकी आवाज़ मित्रतापूर्ण थी। जोडी ने सूअर के माँस के टुकडे काट दिए। माँ ने उन्हे गर्म पानी मे डुबोकर ताज़ा कर लिया और तब आटे मे लपेटकर उनके तेल मे पकोडे तल लिए। उसे अपनी भूख का अनुमान नही था, पर तो भी जोडी ने इस सुन्दर सुगन्ध से अपने

को बेचैन पाया। फ्लैग भी उसके कमरे से वहीं आ गया और इधर-उधर सूंघने लगा।

माँ बोली, "तुम इसे खिलाकर कोठरी में बन्द कर आओ, क्योंकि बाद में भूल जाओगे। तुम लोगों के पीछे कहीं मैं तकलीफ में न फंसूं?"

वह फ्लैग को बाहर ले गया। बाहर जाते हुए वह उछलकर भाग गया। जोडी को उसका पीछा करने और पकड़ने में कठिनाई हुई, क्योंकि चारों ओर अंधेरा था। उसने उसे बांधकर घास और पानी खाने को दिया।

वह बोला, "ठीक बनकर रहना। भेड़ियों के साथ जो कुछ घटेगा, वह मैं आकर तुम्हें बताऊँगा।"

फ्लैग उसके पीछे मिमियाता रहा। अगर कोई छोटा-मोटा शिकार होता तो शायद जोडी भी उसके साथ घर पर रुक जाता, परन्तु पैनी ने कहा था कि वे भेड़ियों का निशान तक जंगल में से मिटा देना चाहते थे और अपने जीवन में फिर शायद यह मौका उसे देखने को न मिले। इसलिए उसने अकेले ही जाना पसन्द किया। जब वह घर की ओर गया तो पैनी दूध दुह-कर आ चुका था। बहुत सुबह दुहने के कारण दूध की मात्रा कम थी। नाश्ता तैयार हो चुका था। उन्होंने जल्दी-जल्दी खाया। माँ ने कुछ न खाया और उनके लिए खाना बांध दिया। पैनी ने ज़िद की कि वे दोपहर के खाने तक घर आ जाएँगे। पर वह बोली, "ये बातें तुम पहले भी कहते रहे हो और तब प्राय अँधेरा होने के बाद ही खाली पेट लौटते रहे हो।"

जोडी बोला, "माँ, तुम बहुत अच्छी हो!"

"हां, ज़रूर! खासकर खाने के समय!"

"मैं इस बात से बहुत प्रसन्न होऊँगा अगर तुम खाने के मामले में अच्छी रहो और चाहे दूसरे किसी भी मामले में कितनी भी ओछी बन जाओ।"

"ओह! मैं और ओछी!"

उसे प्रसन्न करने के लिए वह बोला, "नहीं, कुछ थोड़ी चीज़ों के लिए ही।"

पैनी अनाज-भण्डार की ओर जाते समय घोड़े पर काठी कस आया था। घोड़ा अब दरवाज़े पर बंधा हुआ ही खुर पटक रहा था। उसे शिकार और कुत्ते दोनों का ही अनुभव था। कुत्ते भी अपनी पूँछें हिलाते हुए आए

और दानो और शोरवो से भरी थाली खाली करके उसके पीछे चल पड़े। पैनी ने रस्सी का एक गट्ठर भी साथ ले लिया और दोनो ओर काठी के साथ बोरियाँ भी लटका ली। घोडे पर चढकर उसने पैनी को खीच लिया। माँ ने उन्हे बन्दूकें पकडा दी।

पैनी ने जोडी से कहा, "इन बन्दूको को लटकाने का खास ध्यान रखना। अगर कही तुमने इन्हे मेरे पास रखा तो तुम्हारा बाप मर जाएगा और तब तुम्हे अपनी रोजी खुद खोजनी पडेगी।"

दिन निकलने ही वाला था। घोडे के खुर मिट्टी पर पड रहे थे। सडक से आवाज़ लौट रही थी और वह पीछे छूटती जा रही थी। रास्ता जितना ही आगे लम्बा दीखता था उतना ही पीछे भी छूटता जा रहा था। उसे अजीब-सा लगा कि दिन के बजाय रात अधिक चुप लगती है, जब कि बहुत सारे जानवर रात को जागते रहते हैं और दिन मे सोते हैं। कही से उल्लू चिल्लाया। जब उसका चिल्लाना रुका, तब तक वे एक बिलकुल अँधेरे स्थान पर पहुँच चुके थे। इस समय फुसफुसाकर बोलना ही उचित था। हवा ठण्डी थी। जल्दी मे वह अपनी चीथडो वाली वण्डी पहनना भी भूल गया था। वह अपने पिता की पीठ से सट गया।

पिता ने पूछा, "क्या तुम कोट पहनकर नही आए? मै अपना कोट दे दूँ?"

उसकी इच्छा हुई कि वह 'हाँ' कर दे, परन्तु उसने मना कर दिया।

वह बोला, "नही, मुझे ठण्ड नही लग रही है।"

पैनी की पीठ उसकी अपनी पीठ से भी पतली थी। कोट न लाना उसका अपना अपराध था।

वह पूछ बैठा, "क्या आपका अनुमान है कि हमे देर हो जाएगी?"

"ऐसा अन्दाज़ तो नही। लगता है, हम दिन रहते ही यहाँ लौट आएँगे।"

वे फौरेस्टरो से कुछ पहले ही पहुँच गए थे। जोडी नीचे उतर आया और रिप के साथ खेलकर गर्म होने लगा। प्रतीक्षा करना असह्य था। उसे यह भी डर था कि वे आगे न निकल गए हो। इसी बीच उन्हे बहुत से खुरो की टाप सुनाई देने लगी। पहले वह कुछ दूर थी, पर फिर पास आने लगी।

छहो फौरेस्टर आ गए थे। उन्होने इन दोनो को प्रणाम किया। हवा हलकी और अनुकूल वह रही थी। दक्षिण-पश्चिम की ओर से यह आ रही थी। अगर उन्हे कोई पहरेदार भेडिया न टकर गया, तो वे भेडियो को अचानक ही जा घेरेंगे। वहुत दूर से ही निशाना लगाना अधिक अच्छा होगा। वक और पैनी साथ-साथ आगे वढने लगे। सव लोग पीछे एक-एक करके चल रहे थे।

एक सलेटी-से रग की रोशनी जगल मे फैलने लगी। अभी सूर्य निकला नही था। जोडी को लगा कि जैसे रात और दिन के वीच वह एक सपनो की दुनिया मे घूम रहा हो। सूर्य उगते ही जैसे वह जग पडेगा। सुबह जरूर धुंधली होगी। यह सलेटी रग धुन्ध मे भी इसी प्रकार छाया रहा। लगता था जैसे यह उठेगा नही। ये दोनो इकट्ठे मिल गए और सूर्य के विरुद्ध एक हो गए पर सूर्य इन्हें टुकडे-टुकडे कर डालेगा। घुडसवारो की यह पक्ति जगल से वाहर आई और सनावरो से घिरे हुए एक खुले मैदान मे आ गई। यहाँ पर एक वहुत अच्छा जोहड जैसा सामने वना हुआ था। इस पर अच्छा शिकार मिल सकता था। यह साफ और गहरा था। इसका पानी जानवरो के लिए वहुत स्वादु था। इसके दो ओर दलदल थी और दूसरी दो तरफ जगल था। दलदल की ओर से शिकार आ सकता था और जगल की ओर ये भाग-कर वच सकते थे।

भेडिये अव तक नही आए थे, शायद वे आ रहे थे। वक, लेम और पैनी घोडो से उतरे और उन्होने कुत्तो को पेडो से वांध दिया। पूरव मे एक पीली-सी रोशनी फीते के रूप मे फैल गई। इसके ऊपर पतझड का कुहरा छाया हुआ था। जमीन से कुछ ऊपर तक की शक्ल ही दिखाई दे रही थी। पहले-पहल तो यह लगा कि जैसे इस पानी के जोहड पर कोई जानवर है ही नही। और, तव धीरे-धीरे इधर-उधर कुछ शक्लें दीखने लगीं, जैसे सलेटी रग का पतला कुहरा अपने आप जमकर काला वन गया हो। वहुत दूर पर एक वारहसिंगे के सीग दिखाई दिए। लेम ने अपनी वन्दूक उठाई पर उसे चुपचाप ही कुछ सोचकर फिर झुका लिया। भेडिये ज्यादा जरूरी थे।

मिलव्हील फुसफुसाया, "मैंने कभी यहाँ कोई ठूंठ नहीं देखे थे।"

वह कह ही रहा था कि ठूँठ दीखने वाली चीजें हिलने लगी। जोडी ने आँखें झपकाईं। यह ठूँठ छोटे-छोटे भालू थे। कम-से-कम एक दर्जन होगे। दो बडे भालू भी थे, जो उनके पीछे धीरे-धीरे बढ रहे थे। उन्होने बारहसिंगे को या तो देखा नही या उस पर ध्यान नही दिया। थोडी देर बाद धुध और ऊपर उठ गई। पूरब की ओर रोशनी का रग और साफ हो गया। पैनी ने इशारा किया, उत्तर और पश्चिम मे कुछ हलचल हुई। भेडियो की शक्लें बहुत थोडी-सी दीख रही थी। वे एक-एक करके पक्ति मे चल रहे थे। जूलिया की तेज नाक ने उनको सूँघ लिया और वह नाक उठाकर भौकने लगी। पैनी ने उसे थपथपाकर चुप किया और वह ज़मीन पर बैठकर शान्त हो गई।

पैनी फुसफुसाया, "हमे इस दुनिया मे शिकार फँसाने का ऐसा सुनहरी मौका कभी नही आया। हमे और ज्यादा पास जाना उचित नही।"

बक ने फुसफुसाकर कहा, पर उसकी आवाज़ चिल्लाने से कम न थी। वह बोला, "इस बारहसिंगे और उन भालुओ पर निशाना कैसा रहेगा ?"

"सुन लो, हम मे से एक पूरब से होता हुआ दक्षिण की ओर उस दलदल के परे तक चला जाय। वहाँ से भेडिये लौट नही सकेंगे। वे दलदल मे भी नही जाएँगे। वे यही पर हमारी ओर जगल मे ही आएँगे।"

पैनी का यह विचार सबको भा गया। वह बोला, "फिर बढ पडो।"

"जोडी इस काम को अच्छी तरह कर सकता है। वह अच्छा निशाने-बाज़ भी नही है। हमे सभी निशानेबाज़ यही चाहिएँ।"

"ठीक है।"

"जोडी, तुम दक्षिण की ओर जगलो के बीच से सामने तक चले जाओ। जब तुम सामने के उन ऊँचे चीडो तक पहुँच जाओ, वहाँ से दाहिनी ओर दलदल की ओर बढ जाना। ज्योही मुडो, तुमने एक निशाना इस जत्थे की ओर दाग देना है। इन्हे मारने की कोशिश मत करना। बस, अब चलो और तेज़ी से बढो।"

जोडी ने सीज़र को एड लगाई और निकल भागा। उसे लगा जैसे उसका दिल अपनी जगह से उछलकर कही और धडकने लगा हो, शायद

उसके गले मे। उसकी आंखे चौंधियाने लगी। उसे लगा कि जैसे वह उन ऊँचे चीड के पेड़ों को नही देख पाएगा और या तो बहुत जल्दी या बहुत देर मे मुड पडेगा और इस तरह सभी मामला गडबड हो जाएगा। बिना देखे वह बढता रहा। उसने अपनी कमर सीधी की और अपना एक हाथ बन्दूक की नाली पर फेरा। अचानक उसमे एक सख्ती और स्पष्टता आ गई। उसने सामने के चीड पहले ही पहचान लिए, वहाँ जाकर घोडे को एकदम दाहिनी ओर मोडकर उसे एड लगाई। उसे थपथपाकर उसने ऊपर की ओर एक गोली दाग दी। दलदल का पानी उसके नीचे से बह रहा था। उसने देखा कि छोटे-छोटे भालू भी तितर-बितर हो गए। उसे लगा, शायद वह भेडियो के बहुत पीछे नही आया था। उसके सामने का सरकता हुआ भेडियो का जत्था जैसे कुछ हिचकिचाया और अपने आने वाले रास्ते से लौटने के लिए तैयार हुआ। उसने फिर बन्दूक उठाकर उनके पीछे एक गोली दाग दी। अब वे सारे के सारे एक साथ ही उछले। उसने अपनी सांस रोककर देखा, वे जगल की ओर बढ रहे थे। तभी उसे एकदम ही बन्दूको की आवाज सुनाई दी, जैसे बन्दूको का ही कोई सगीत हो। उसने अपना काम कर लिया था और अब कुछ उसके वश मे न था। वह जोहड के दक्षिणी ओर से होता हुआ अपने साथियो की ओर बढा। बंधे हुए कुत्तो ने अपनी आवाजें तेज कर दी। अब एक ही बन्दूक कभी-कभी सुनाई दे जाती थी। उसका दिमाग साफ था। उसने सोचा, काश ! उसके पास एक और गोली होती। उसे निश्चय था कि वह बडी शान्ति से पूरे निशाने पर गोली दाग सकता था।

पैनी की सूझ ने पूरा-पूरा काम किया। एक दर्जन मलेटी रग के शरीर जमीन पर सामने पडे थे। एक विवाद सा हो रहा था। लेम चाहता था कि बचे हुए भेडियो के पीछे कुत्ते छोड दिये जायें। पर बक और पैनी ऐसा करना नही चाहते थे।

पैनी बोला, "लेम, तुम जानते हो कि हमारे पास एक भी ऐसा कुत्ता नही जो बिजली के समान तेज दौडने वाले इन भेडियो का पीछा कर सके। ये बिल्ली के समान न तो पेड पर चढेंगे और न ही किसी कोने मे भालू के समान छिपेंगे। ये तो भागते ही जाएंगे।"

बक बोला, "लेम, यह बात ठीक है।"

पनी उत्तेजित होकर मुडा और बोला, "देखो, उन छोटे छोटे भालुओं ने क्या किया है? वे पेड पर चढ गए हैं। क्या हम उन्हे ज़िन्दा ही न पकड ले? क्या पूर्वी तट पर इनकी अच्छी कीमत नही मिलेगी?"

"सुना तो ऐसा ही है।"

पैनी फिर घोडे पर चढ गया और जोडी भी उसके पीछे बैठ गया। पैनी बोला, "तुम सब आराम से धीमे-धीमे काम करना। तभी ठीक होगा।"

वसन्त मे पैदा हुए तीन भालू-बच्चे पेड पर नही चढे थे। शायद उनके माँ नही थी और इसीलिए उन्हे नियम पता नही था। वे अपने कमर के बल बैठे हुए थे और बच्चो जैसे चिल्ला रहे थे। उन्होने भागने की कोशिश नही की। पैनी ने उन तीनो को बाँध दिया और रस्सी का एक किनारा ऊँचे चीड से बाँध दिया। कुछ बच्चे छोटी शाखो पर ही चढे थे। उन्हे शाख हिलाकर नीचे गिराया जा सकता था। केवल दो ही बहुत ऊँचे एक बड़े पेड पर चढ गए थे। सबसे हलका और पतला होने के कारण जोडी ही उनके पीछे चढा। वे ऊपर-ऊपर चढते गए और एक बडी शाख पर लटक पडे। वह भी उसी शाख पर पहुँच गया। अपने आप बिना गिरे उसे हिलाना बडा कठिन था। वह शाख जैसे टूटने लगी। पैनी ने नीचे से ही चिल्लाकर उसे प्रतीक्षा करने को कहा। सनावर की एक डाल काटी गई और उसे छीलकर ऊपर पहुँचाया गया। जोडी पेड पर कुछ नीचे उतरा और इसे पकडकर उसने ऊपर उठाया। इसे लेकर उसने रीछ के बच्चो की ओर बढाया। वे इस पर ऐसे चिपट गए जैसे इस पर ही वे बडे हुए हो। आखिर मे वे गिर पडे। जोडी भी उतर आया।

बूढे भालू और बारहसिंगा पहली गोली की आवाज़ सुनते ही भाग गए थे। कुछ बडे दो भालू के बच्चो ने जीवित पकडे जाने से पहले बहुत लडाई की। वे चुस्त और भारी थे और दोनो परिवारो को ताज़ा माँस की ज़रूरत थी। इसलिए उन्हे भोजन के लिए मार दिया गया। कुल दस बच्चे पकडे गए।

बक बोला, "फौडरविंग निश्चय ही इन्हे देखकर बहुत प्रसन्न होता। काश! वह जीवित होता।"

जोडी बोला, "अगर मेरे पास पलँग न होता, तो एक को मैं जरूर ले जाता।"

पैनी बोला "और तब तुम दोनो को एक साथ ही बाहर निकाल दिया जाता।"

जोडी पास जाकर उन बच्चो से बात करने लगा। उन्होने अपने तेज नथुने ऊपर उठाए और उसे सूँघने लगे। वे पिछले पावो पर खडे हो गए।

वह बोला, "क्या तुम सब जीवित रहने के लिए खुश नही हो ?"

वह और पास गया और उसने एक को छूने के लिए अपना हाथ बढाया। इसने अपने तेज पंजे उसकी आस्तीन पर बढा दिए। जोडी पीछे उछला।

वह बोला, "पिताजी, यह अहसान नही मानते। हमने इन्हे भेडियो से बचा लिया है, पर तब भी इन्हे कुछ ख्याल नही।"

पैनी ने कहा, "तुमने उसकी आँखो की ओर नही देखा। तुमने एक नीच को प्यार के लिए चुना। मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि जब दो जुडवां बच्चे होते हैं तो उनमे से एक नीच और एक मित्रतापूर्ण होता है। अब फिर से इनमे से खोजो कि कौन मित्रतापूर्ण है ?"

"मैं नही खोज सकूंगा। मैं इन्हें ऐसे ही रहने देता हूँ।"

फौरेस्टर हँस पडे। लेम ने एक छडी उठाई और एक बच्चे को तग करने लगा। वह उसकी पसलियो मे छडी घुसाता और छडी को काटने के लिए उसे मजबूर करता। उसके चुभाने से बच्चा चीखने लगा।

पैनी बोला, "लेम, अगर तुम्हे इसे सताना ही है तो उसे मार ही डालो।"

लेम बहुत गुस्से के साथ घूमा और बोला, "तुम जिसे चाहो, अपने बच्चे के लिए बचा लो। मेरी जो मर्जी होगी, करूँगा।"

"जब तक मेरी साँस है, तब तक तुम किसी को भी नहीं सता सकोगे।"

"तो क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी साँस पहले निकाल दूं ?"

बक बोला, "लेम, थोडी देर के लिए अपनी नोचना छोड दो।"

लेम गुस्से मे बोला, "तुम भी लडकर देखना चाहते हो ?"

फौरेस्टर भाई बिना ही किसी बात और तुक के आपस मे बँट जाते

थे। पर इस बार उन सबने ही पैनी और बक का साथ दिया। ताजा शिकार से वे बहुत खुश थे और इसीलिए उनका स्वभाव अच्छा बना रहा। लेम कुछ देर घूरता रहा, पर तब उसने अपनी मुट्ठियाँ नीचे कर ली। यह निश्चय हुआ कि गैबी और मिलव्हील पीछे रुक जायँ और इन बच्चों पर निगाह रखे कि कही ये रस्सियाँ चबाकर भाग न जायँ। यह रस्सी पैनी की लाई रस्सी और बक के हिरण की खाल से बने जूतो के फीतो से तैयार की गई थी। बाकी सब फौरेस्टरो के यहाँ जाकर बच्चो को पकडने के लिए गाडी लेते आएँगे।

पैनी बोला, "क्या हम इस बात पर सहमत हो सकते है कि उन्हे कहाँ ले जाया जाय ? मैं और जोडी तब घर चले जाएँगे। लौटते हुए मुझे घर के लिए कुछ शिकार भी मारना है।"

लेम ने सन्देह के साथ पूछा, "तुम उस बारहसिंगे को मारना चाहते हो ?"

"अगर तुम्हे मेरी बातो से मतलब ही है तो सुन लो, मैं जूनिपर स्रोत पर जाकर नाके का शिकार करना चाहता हूँ। मुझे अपने जूतो के लिए चर्बी और अपने कुत्तो के लिए उसकी पूँछ का माँस चाहिए। तुम सन्तुष्ट हुए ?"

लेम ने उत्तर नही दिया। पैनी बक की ओर मुडा और बोला, 'क्या तुम्हारे ख्याल मे इन्हे बेचने के लिए सेण्ट ऑगस्टाइन अच्छी जगह नही है ?"

"खैर, अगर कीमत अच्छी न मिले तो जैक्सनविले जाकर कोशिश करना भी ठीक होगा।"

लेम बोला, "मुझे भी वहाँ कुछ काम है।"

मिलव्हील बोला, "मेरी भी वहाँ एक प्रेमिका है, पर मुझे वहाँ कुछ काम नही है।"

बक बोला, "अगर यह वही है जिसका विवाह हो गया है, तो तुम्हारा वहाँ क्या काम ?"

पैनी ने शान्ति से कहा, "तो फिर जैक्सनविले ही सही। जाएँगे कौन-कौन ?"

फौरेस्टर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। पैनी वोला, "तुम्हारे मे से केवल वक ही ऐसा है जो विना किसी झगडे के इन्हे वेच सकेगा।"

लेम ने कहा, "गाडी मुझे लिए विना नही हिलेगी।"

"तो ठीक है, वक और लेम जायँ। क्या मुझे भी जाना होगा? इस पर वैठने के लिए तीन से अधिक की जगह भी तो नही है।"

वे सव कुछ देर को चुप हो गए। अन्त मे मिलव्होल वोला, "पैनी, इन वच्चो मे तुम्हारा हिस्सा सवसे वडा है, पर वहाँ जाने की इच्छा मेरी भी है। तुम्ही सोचकर देखो, मेरे पास वहाँ वेचने के लिए कुछ और भी चीज है।"

पैनी वोला, "खैर, मुझे तो जाने की इच्छा भी नही। वक! मैं तुम्हारी कृपा मानूँगा, यदि तुम मेरे हिस्से का ध्यान रखो और मेरे लिए भी कुछ चीजे खरीदते लाओ। तुम कव जाओगे? कल? ठीक है, अगर तुम कल तक रुके तो मैं और मेरी पत्नी सोच लेंगे कि हमने क्या कुछ मँगाना है?"

"मैं तुम्हे निराश नही करूँगा। तुम तसल्ली रखो।"

"मैं जानता हूँ।"

अव सव अलग-अलग हो गए। फौरेस्टर उत्तर की ओर और वैक्स्टर दक्षिण की ओर चले गए।

जोडी ने पूछा, "आपके अन्दाज मे वक हम से ठीक-ठीक रहेगा?"

"वह ठीक ही करेगा। इनमे से वही एक भला है या फिर फोडरविंग था?"

जोडी वोला, "मुझे भी यही वात उचित लगती है।" पैनी ने गाडी को रोका और चारो ओर देखा। जोडी उसे सफेद पडता दिखाई दिया।

वह वोला, "क्यों वेटा, तुम वहुत उत्तेजित हो रहे थे? अव ठीक हो जाओ।"

वह उतरा और उसने जोडी को भी वाँहो मे पकडकर उतार लिया। जोडी सुस्त था। पैनी ने उसे एक शाखा के सहारे खडा किया और वोला, "तुमने आज एक वडे आदमी का काम किया है। अव आराम से वैठो, मैं तुम्हे कुछ खाने को देता हूँ।"

उसने वोरी मे हाथ डाला और एक वासी पके हुए आलू को निकाल

कर छीला और जोडी को खाने को दिया।

वह बोला, "यह तुम्हे ताजा कर देगा। जब हम सोते पर पहुँचेंगे तब तुम काफी पानी पी लेना।"

पहले-पहल जोडी उसे न निगल सका, पर तब उसका स्वाद उसे पसन्द आ गया। बैठकर उसने उसके छोटे-छोटे कौर खाए। वह एकदम ही ठीक अनुभव करने लगा।

पैनी ने कहा, "तुम भी ठीक वैसे ही हो, जैसा बचपन मे मैं था। तुम बहुत कठिन काम अपने पर ले लेते हो और इससे तुम मूर्च्छित हो जाते हो।"

जोडी हँस पडा। अगर उसका पिता न होता, तो शायद इस बात पर उसे शर्म आती। वह अपने पाँवो पर खडा हो गया।

पैनी ने उसके कन्धो पर हाथ रखा और बोला, "मुझे औरो के सामने तुम्हारी प्रशसा करने की आदत नही, पर तुमने आज बहुत ही अच्छा काम किया है।"

ये शब्द उसे आलू से भी ज्यादा शक्ति देने वाले लगे।

वह बोला, "मैं ठीक हूं, पिताजी।"

वे घोडो पर चढे और चल पडे। सवेरे का धुँधलका पतला पडकर समाप्त हो चुका था। मगहर की हवा अब भी लहरो मे बह रही थी। धूप जैसे उनके कन्धो पर एक गर्म बाँह के रूप मे लेट गई। बड़े काले पेडो मे जैसे आग लग गई हो। सनावर भी चमकने लगे। इसी समय आस-पास के फूलो की सुगन्ध चारो ओर भर गई। जगली चिडियाँ उडने लगी। जोडी को लगा कि उनके डैने नीलकण्ठ की अपेक्षा भी अधिक सुन्दर थे, क्योकि इनकी कुछ और भी विशेषता थी। सीजर की कमर पर बँधे हुए मरे हुए भालू के बच्चे की गन्ध घोडे के पसीने, उसकी काठी, पास के फूल और खाये हुए आलू आदि की गन्ध से मिलकर उसके लिए नशीली हो उठी थी। वह सोचने लगा कि फ्लैग को घर जाकर बताने के लिए उसके पास बहुत कुछ होगा। उस बातचीत का सबसे अच्छा भाग यह था कि वह बिना किसी को कुछ कहे बहुत कुछ सोच सकता था। उसे अपने पिता से बात करना अच्छा लगता था, परन्तु अपने भावो को स्पष्ट करने के लिए उसे शब्द नही मिलते थे। जब भी वह कभी अपनी सोची हुई बात पिता को कहने

की कोशिश करता, उसके भाव सोचते-ही-सोचते गायब हो जाते। उसे लगता जैसे वह पेड पर बैठे कबूतरो पर निशाना बाँध रहा हो। वह उन्हें देखता, बन्दूक साधता और पास तक जाता, परन्तु निशाना लगाने से पहले ही वे उड जाते।

वह पलैग को कह सकता था, "वहाँ भेडिये आए, तालाब की ओर खिसक आए।" और यह कहकर वह वही बैठे-बैठे सब कुछ देखता रहता और अपनी सारी भावनाओ को, डर और उत्तेजनाओ को अनुभव कर लेता। उस समय पलैग उससे अपना मुंह सटाकर उसकी ओर देखेगा और अपनी पतली पतली आँखें उसकी ओर उठाएगा। तब जोडी समझ लेगा कि वह सब समझ गया है।

वह चौककर सजग हो गया। अब उन्होने जूनिपर स्रोत की ओर जाने वाली पुरानी स्पेनी पगडण्डी चुन ली थी। स्रोत इस समय पुरानी सतह तक ही था। बाढ मे बहकर आया हुआ मलबा इसके किनारो पर पडा था। इस स्रोत मे से बहुत ही साफ और नीला पानी निकल रहा था। एक गिरा हुआ पेड इसके आर-पार पडा हुआ था। उन्होने सीज़र को मैग्नोलिया के पेड के साथ बाँधा और स्रोत मे नाके के निशान ढूँढने लगे। वहाँ कोई निशान न था। केवल एक बूढी मादा मगरमच्छ बहुत समय से उसमें रहती थी और पालतू बन चुकी थी। हर दो साल बाद उससे नए बच्चे उत्पन्न होते। वह खुद ही किसी के बुलाने पर किनारे पर जाती और फेंके हुए मांस को ले लेती। शायद इस समय वह अपने बच्चो के साथ बहुत नीचे किसी गुफा मे होगी। वह इतनी पालतू और परिचित थी कि कोई भी उसे सताता नही था। पैनी को डर था कि कही कोई अजनबी आकर उसे आसान शिकार समझकर मार न डाले। वे धारा के नीचे की ओर खोजने लगे। ऊपर से एक पक्षी चीख के साथ उड़ गया।

पैनी ने अपना हाथ पीछे को बढाकर जोडी को रोका। सामने के तट पर एक मगरमच्छ के ताजा निशान पडे हुए थे। नीचे का कीचड घना हो गया था। यहाँ आकर वह लोट पोट हुआ था। पैनी अपनी एडियो पर बैठ गया और एक झाडी के पीछे छिप गया। जोडी भी उसके पीछे बैठ गया। पैनी ने अपनी बन्दूक फिर से भर ली। इतने मे पानी मे फिर से कुछ

हलचल हुई। सामने एक लट्ठा-सा दीख रहा था। वह कुछ ऊपर उठा। इसके एक किनारे पर दो मोटी गाँठे-सी थी। यह आठ फुट लम्बा मगरमच्छ था और ये गांठे इसकी भारी पलको वाली आँखे थी। यह फिर छिप गया और अब अपने चौथाई शरीर के साथ उठकर किनारे तक आ गया। यहाँ से यह उसी पुरानी राह पर धीरे-धीरे बढा। अपने छोटे-छोटे पाँवो पर यह शरीर को आगे-पीछे करता हुआ बढने लगा और अपनी पूँछ को छिटकारते हुए शान्त होकर पड गया। पैनी ने बहुत सावधान होकर निशाना साधा। जोडी ने उसे रीछ या हिरण पर कभी इतना सावधान होते न देखा था। उसने गोली दाग दी। इसकी लम्बी पूँछ बहुत तेज़ी से उठी और गिरी, पर उसके बाद एकदम ही उसका शरीर कीचड मे धँस गया। पैनी ऊपर की ओर दौडा हुआ गया और सोते से भी ऊपर जाकर दूसरी तरफ लौट आया। जोडी उसके पीछे पीछे था। शिकार के चौडे जबडे खुद ही बन्द हो रहे थे और खुल रहे थे। पैनी ने उन्हे बन्द किया और दो सामने के पाँवो को पकड लिया। कुत्ते बहुत उत्तेजित होकर भौंक रहे थे। जोडी ने भी उसे पकडा। दोनो ने उसे मज़बूत ज़मीन पर घसीट लिया। पैनी ने खडे होकर अपनी आस्तीन से माथे का पसीना पोछा। वह बोला, "इसे कुछ दूर तक उठाकर ले जाया जा सकता है।"

उन्होने कुछ देर आराम किया और तब उसकी पूँछ का माँस काटने मे जुट गए। यह कुत्तो के लिए अच्छा शिकारी भोजन रहेगा। पैनी ने खाल पलटी और उसकी चर्बी उतारने लगा। वह बोला, "यह मगरमच्छ ही अकेला ऐसा है जो इस बाढ मे भी मोटा हो गया है।"

जोडी अपनी एडियो पर बैठा और हाथ मे चाकू सम्भाले रहा।

पैनी बोला, "तीतरो को छोडकर बाकी पक्षी भी बच ही गए है।"

जोडी इस बात पर अचरज करने लगा कि पानी और हवा के जानवर बच गए। केवल वही चीजें नष्ट हुई जो सख्त ज़मीन पर रहती थी, क्योंकि पानी और हवा के बाहरी तत्त्वो के बीच वे फंस गई थी। इस विचार ने उसे झकझोर दिया। अब यह विचार वह अपने पिता को कैसे समझाता। उसके दिमाग मे यह विचार एक कुहासे की भाँति छा गया। उसने फिर चर्बी की ओर ध्यान दिया और काम मे जुट गया।

की कोशिश करता, उसके भाव सोचते-ही-सोचते गायब हो जाते। उसे लगता जैसे वह पेड पर बैठे कबूतरो पर निशाना बाँध रहा हो। वह उन्हे देखता, बन्दूक साधता और पास तक जाता, परन्तु निशाना लगाने से पहले ही वे उड जाते।

वह फ्लैग को कह सकता था, "वहाँ भेडिये आए, तालाब की ओर खिसक आए।" और यह कहकर वह वही बैठे-बैठे सब कुछ देखता रहता और अपनी सारी भावनाओ को, डर और उत्तेजनाओ को अनुभव कर लेता। उस समय फ्लैग उससे अपना मुँह सटाकर उसकी ओर देखेगा और अपनी पतली पतली आँखे उसकी ओर उठाएगा। तब जोडी समझ लेगा कि वह सब समझ गया है।

वह चौककर सजग हो गया। अब उन्होने जूनिपर स्रोत की ओर जाने वाली पुरानी स्पेनी पगडण्डी चुन ली थी। स्रोत इस समय पुरानी सतह तक ही था। बाढ मे बहकर आया हुआ मलबा इसके किनारो पर पडा था। स्वय स्रोत मे से बहुत ही साफ और नीला पानी निकल रहा था। एक गिरा हुआ पेड इसके आर-पार पडा हुआ था। उन्होने सीज़र को मैग्नोलिया के पेड के साथ बाँधा और स्रोत मे नाके के निशान ढूंढने लगे। वहाँ कोई निशान न था। केवल एक बूढी मादा मगरमच्छ बहुत समय से उसमे रहती थी और पालतू बन चुकी थी। हर दो साल बाद उससे नए बच्चे उत्पन्न होते। वह खुद ही किसी के बुलाने पर किनारे पर जाती और फेंके हुए माँस को ले लेती। शायद इस समय वह अपने बच्चो के साथ बहुत नीचे किसी गुफा मे होगी। वह इतनी पालतू और परिचित थी कि कोई भी उसे सताता नही था। पैनी को डर था कि कही कोई अजनबी आकर उसे आसान शिकार समझकर मार न डाले। वे धारा के नीचे की ओर खोजने लगे। ऊपर से एक पक्षी चीख के साथ उड गया।

पैनी ने अपना हाथ पीछे को बढाकर जोडी को रोका। सामने के तट पर एक मगरमच्छ के ताज़ा निशान पडे हुए थे। नीचे का कीचड घना हो गया था। यहाँ आकर वह लोट-पोट हुआ था। पैनी अपनी एडियो पर बैठ गया और एक झाडी के पीछे छिप गया। जोडी भी उसके पीछे बैठ गया। पैनी ने अपनी बन्दूक फिर से भर ली। इतने मे पानी मे फिर से कुछ

हलचल हुई। सामने एक लट्ठा-सा दीख रहा था। वह कुछ ऊपर उठा। इसके एक किनारे पर दो मोटी गांठे-सी थी। यह आठ फुट लम्बा मगरमच्छ था और ये गांठे इसकी भारी पलको वाली आंखे थी। यह फिर छिप गया और अब अपने चौथाई शरीर के साथ उठकर किनारे तक आ गया। यहां से यह उसी पुरानी राह पर धीरे-धीरे बढा। अपने छोटे-छोटे पांवो पर यह शरीर को आगे-पीछे करता हुआ बढने लगा और अपनी पूंछ को छिटकारते हुए शान्त होकर पड गया। पैनी ने बहुत सावधान होकर निशाना साधा। जोडी ने उसे रीछ या हिरण पर कभी इतना सावधान होते न देखा था। उसने गोली दाग दी। इसकी लम्बी पूंछ बहुत तेज़ी से उठी और गिरी, पर उसके बाद एकदम ही उसका शरीर कीचड मे धंस गया। पैनी ऊपर की ओर दौडा हुआ गया और सोते से भी ऊपर जाकर दूसरी तरफ लौट आया। जोडी उसके पीछे-पीछे था। शिकार के चौडे जबडे खुद ही बन्द हो रहे थे और खुल रहे थे। पैनी ने उन्हे बन्द किया और दो सामने के पांवो को पकड लिया। कुत्ते बहुत उत्तेजित होकर भौंक रहे थे। जोडी ने भी उसे पकडा। दोनो ने उसे मजबूत ज़मीन पर घसीट लिया। पैनी ने खडे होकर अपनी आस्तीन से माथे का पसीना पोछा। वह बोला, "इसे कुछ दूर तक उठाकर ले जाया जा सकता है।"

उन्होने कुछ देर आराम किया और तब उसकी पूंछ का मांस काटने मे जुट गए। यह कुत्तो के लिए अच्छा शिकारी भोजन रहेगा। पैनी ने खाल पलटी और उसकी चर्बी उतारने लगा। वह बोला, "यह मगरमच्छ ही अकेला ऐसा है जो इस बाढ मे भी मोटा हो गया है।"

जोडी अपनी एडियो पर बैठा और हाथ मे चाकू सम्भाले रहा।

पैनी बोला, "तीतरो को छोडकर बाकी पक्षी भी बच ही गए हैं।"

जोडी इस बात पर अचरज करने लगा कि पानी और हवा के जानवर बच गए। केवल वही चीज़े नष्ट हुई जो सख्त ज़मीन पर रहती थी, क्योकि पानी और हवा के बाहरी तत्त्वो के बीच वे फंस गई थी। इस विचार ने उसे झकझोर दिया। अब यह विचार वह अपने पिता को कैसे समझाता। उसके दिमाग मे यह विचार एक कुहासे की भांति छा गया। उसने फिर चर्बी की ओर ध्यान दिया और काम मे जुट गया।

कुत्ते इस माँस की ओर न झुके। उन्हे यह भी मेढको, जलमुर्ग या वत्तखो के मछली पर पलने वाले माँस जैसा ही बेतुका और वेस्वाद लगा। परन्तु जब पूँछ के गुलाबी माँस को पकाया जाएगा तो उसकी दुर्गन्ध और बुरा स्वाद मिट जाएंगे और वे ही इसे चाव से खाएँगे। उस समय कोई और माँस भी सामने न होगा। पैनी ने थैलो मे से भोजन निकाला और उन्हे इसके माँस और चर्वी से भर लिया।

तब उसने भोजन की ओर देखा और जोडी से पूछा, "क्या तुम इसे अभी खाओगे ?"

जोडी ने कहा, "मैं किसी भी समय खाने के लिए तैयार रहता हूँ।"

"तब हम इस नाके से निवटकर इसे खा लेगे।"

उन्होने अपने हाथ धारा मे धोए और सोते के ऊपर की ओर जाकर पेट के बल लेटकर पानी पिया। अब वे भोजन को दो हिस्सो मे बाँटकर खाने लगे। पैनी ने मुरब्वे से भरे दो विस्कुट और कुछ हलवा एक ओर रख दिया। जोडी ने इसे भी कृपा मानते हुए स्वीकार कर लिया।

पैनी उसके फूले हुए छोटे पेट की ओर देखता रहा और बोला, "तुम इस सबको कहाँ रख लेते हो ? मुझे खुशी है कि मेरे पास तुम्हे देने के लिए यह बच गया। जब मैं बच्चा था तो मेरी भी यही हालत थी। मेरा भी पेट काफी वडा था।"

वे अपनी पीठो के बल आराम से लेट गए। जोडी अपने ऊपर के मैग्नोलिया वृक्ष की ओर ताकने लगा। उसके पत्तो का निचला हिस्सा ताँवे-जैसा लाल था। उस पेड के लाल सूखे फल फूटने लगे थे। जोडी ने उनके बीजो को इकट्ठा कर अपनी छाती पर रख लिया। पैनी ने आराम से उठकर कुत्तो को कटे हुए माँस के कुछ टुकडे दिए। सीज़र को वह सोते तक पानी पिलाने ले गया। तब फिर से चढकर वे अपनी ज़मीन की ओर चल पडे।

मीठे पानी के सोते के पास ही जूलिया ने निशानो की नई पैड का पीछा शुरू किया।

पैनी ने झुककर देखा और बोला, "यह बहुत ही ताजा पैड किसी बारह-सिंगे की है। मेरी इच्छा है कि इसे पीछा करने दिया जाय।"

उसकी पूंछ बराबर हिल रही थी। उसकी नाक ज़मीन पर लगी रही और वह तेज़ी से आगे बढती रही। तब नाक उठाकर वह बहुत तेज़ी से भागी और हवा से ही गन्ध लेने लगी।

पैनी बोला, "वह हमारे ठीक सामने से ही गया है।"

वह पैड कुछ सौ गज़ तक सडक पर ही बढी, तब दाहिनी ओर मुड गई। जूलिया तेजी से चीख पडी।

पैनी बोला, "बस, पास ही है। मेरा निश्चय है कि वह सामने के इस घने झुरमुट मे ही लेटा हुआ है।"

वह उस घने झुरमुट तक जूलिया के पीछे-पीछे गया। वह भौंकती रही। एक बारहसिंगा अपने घुटनो पर खडा होकर ज़ोर से लपका। इसके सींगे पक चुके थे। डरकर भागने के बजाय यह सींगो के बल कुत्ते की ओर आया। कारण साफ था। उसके पीछे ही एक हिरणी ने बिना सींगो वाला अपना सिर उठाया। बाढ आ जाने के कारण हिरणो के जोडो को मिलने का मौका नही मिला था। यह बारहसिंगा जोडी बाँध रहा था और इसीलिए लडने के लिए तैयार हो गया। पैनी ने निशाना रोक लिया, जैसे वह सभी अजीब मौको पर करता था। जूलिया और रिप भी अचरज मे डूब गए। उन्हे भालू, चीते और वनबिलावो से डर नही था, परन्तु यहाँ उन्हे शिकार के भागने की उम्मीद थी, पर वह भागा नही। वे दोनो पीछे हटे। बारहसिंगा बैल की तरह से ज़मीन खोदने लगा और अपने सींग हिलाने लगा। जूलिया ने अपनी चालाकी बरती और उसकी गर्दन पर जा टूटी। उसने भी उसे अपने सींगो पर उठा लिया और पास की झाडियो मे पटक दिया। जोडी ने देखा कि हिरणी उठी और भाग गई। जूलिया को चोट नही लगी थी, इसलिए वह फिर मोर्चे पर आ गई। रिप भी बारहसिंगे पर पीछे से टूट पडा। बारहसिंगे ने एक बार फिर हमला किया और सींग नीचे करके कोने मे खडा हो गया।

पैनी ने कहा, "बूढे दोस्त, मुझे बहुत दुख है।" और गोली दाग दी।

बारहसिंगा गिर पडा। एक क्षण के लिए उसने पाँव चलाए और फिर शान्त हो गया। जूलिया ने जीत की खुशी मे अपनी शिकारी आवाज़ तेज़ की।

पैनी बोला, "मुझे यह करना पसन्द नही था।"

बारहसिंगा काफी बडा और सुन्दर था। सनावर ताड के फलो पर पल कर वह काफी मोटा हो गया। गर्मियो की लाल खाल अब जरूर ढीली पड गई थी। इसका रग भी सर्दियो के अनुसार सलेटी हो गया था। यह रग चीड के पेड पर उगने वाली स्पेनी काई या दूसरी काई जैसा था।

पैनी बोला, "आज से एक महीने बाद यह बिलकुल पतला हो जाता और इसका माँस दुर्गन्धित हो जाता, क्योकि पूरे महीने यह जगल मे जोडी बाँधता फिरता।'

वह उत्साह से भरा खडा रहा।

फिर बोला, "बेटे! क्या आज का दिन हमारा दिन नही है? यह सचमुच हमारा दिन है।"

उन्होने बारहसिंगे की खाल उतारकर सफाई की।

पैनी बोला, "मुझे भरोसा नही कि यह सब कुछ बूढा घोडा उठा सकता है।"

जोडी ने उत्तर दिया, "पिताजी, मैं पैदल चलूंगा। यह मुझसे कुछ अधिक भारी है!"

"यह और भी भारी है। हम दोनो ही पैदल चलेगे।"

सीजर ने चुपचाप ही यह नया बोझ भी उठा लिया। उसे छोटे भालू का भी पहले जैसा कोई डर नही था। पैनी उसके आगे-आगे चला और जोडी पीछे। उसे लगा कि जैसे अभी दिन शुरू ही हुआ था। वह और आगे भागने लगा। कुत्ते पीछे-पीछे आ रहे थे। अभी दोपहर बीते कुछ ही समय हुआ था कि वे अपने खेतो तक पहुँच गए। जोडी की माँ को उनके इतना जल्दी आने की आशा न थी। वह दरवाजे पर उन्हे मिलने आई। धूप के कारण उसने अपनी आँखो पर छाया की। शिकार देखते ही उसका चेहरा खिल उठा।

वह बोली, "अगर तुम ऐसे ही लौटा करो तो मुझे अकेलापन भी बुरा नही लगेगा।"

जोडी बातो मे फूट पडा। उसकी माँ हिरण और भालू के माँस को देखने मे इतनी खो गई कि वह पूरी बाते न सुन सकी। वह वहाँ से पलँग

के पास कोठरी मे चला गया। बैठकर बाते करने का समय तो था नही। उसने उसे अपने हाथ, कमीज़ और पाजामा सुंघाये और बोला, "यह भालू की गन्ध है। इसको सूंघते ही तुम एकदम बिजली की तरह दौडने लगना और यह भेडिए की गन्ध है। बाढ के बाद से यह बहुत बुरे हो गए है। हमने उन्हे लगभग आज सवेरे साफ ही कर दिया है, पर तीन-चार बच गए है। तुम उनसे भागते रहना और यह दूसरी सुगन्ध तुम्हारे ही किसी रिश्तेदार की है।" और तब डरावने ढग से बोला, "हो सकता है, यह तुम्हारा पिता हो, इससे भागने की जरूरत नही। पर इससे भी भागना। यह छोटे बच्चो को भी मार डालता है, खासकर पिताजी के कहने के अनुसार बुरे मौसम मे। तुम हर चीज़ से भागते रहना।"

फ्लैग मचलकर अपनी पूँछ हिलाने लगा और अपने पाँव पटकने और साथ ही सिर मारने लगा।

जोडी बोला, "तुम मुझे ना मत करो। जो कुछ कहता हूँ, सुनते जाओ।"

उसने उसे खोल दिया और बाहर ले आया। पैनी उसे मदद के लिए बुला रहा था, ताकि घर के पीछे की ओर शिकार ले जाया जा सके। फ्लैग भालू की सुगन्ध से भाग गया और तब दूर से ही सूंघने के लिए फिर लौट आया। शाम तक का बाकी समय खाल उतारने और माँस काटने मे बीत गया। भोजन नही पक सका, पर वे भूखे भी नही थे। शाम के भोजन के समय से पहले ही माँ ने काफी सारा गर्म भोजन तैयार कर दिया। पैनी और जोडी पहले तो खूब चाव से खाते रहे और बाद मे अचानक ही इतने थक गए कि उनकी भूख आधे मे ही मिट गई। जोडी मेज से उठकर फ्लैग की ओर गया। अभी सूर्य अस्त हो ही रहा था। उसकी कमर दर्द कर रही थी और उसकी आँखें भारी हो आई थी। उसने सीटी बजाकर फ्लैग को बुला लिया। सौदा मँगाने के विषय मे वह अपने माता और पिता की बात सुनना चाहता था और यह भी निश्चय करना चाहता था कि खास अपने लिए जैक्सनविले से क्या मँगाएगा? परन्तु उसकी आँखें खुली न रह सकी और वह बहुत जल्दी बिस्तरे मे लुढककर सो गया।

पैनी और ओरा शाम को अपनी सारी सर्दी की आवश्यकताओ पर

विचार करते रहे। माँ ने बहुत साफ-साफ लिखकर एक लम्बी सूची बनाई जो इस प्रकार थी—

पैनी और जोडी के लिए एक गाँठ शिकारी गर्म जीन।

माँ के लिए आधी गाँठ नीला और सफेद चारखाना गिंगाम कपडा

एक गाँठ घरेलू कपडा,
एक बोरी कॉफी के बीज,
एक बोरा आटा,
एक कुल्हाडी,
एक थैला नमक,
एक सेर सोडा,
दो डिब्बी सीसे की गोलियाँ,
बडी गोलियाँ दो सेर,
कुछ खाली कारतूस,
आधा सेर बारूद,
छ गज घरबुना कपडा,
चार गज़ हिकरी कपडा
छ गज़ ओसनाबुर्ग,
जोडी के खेती के जूते,
आधा दस्ता कागज़,
एक डिब्बा बडे बटन,
एक पत्ता छोटे बटन,
एक बोतल एरण्ड तेल,
एक डिब्बा चूसने की गोलियाँ,
एक डिब्बा जिगर की गोलियाँ,
एक शीशी अमृताजन
एक शीशी अफीम घोल
एक शीशी कपूर,
एक शीशी नीबू का सत
एक शीशी पोदीने का सत,
एक शीशी पैरागोरिक,

शेष, पैसे बचे तो, दो गज़ काला अल्पका।

फौरेस्टर लोग अगली सुबह रास्ते मे यहाँ रुके। जोडी उनसे मिलने के लिए भागा आया। माता और पिता भी उसके पीछे आए। बक आदि तीनो सटकर गाडी की सीट पर बैठे थे। उनके पीछे का वैगन पूरा भरा हुआ था और उसमे लडते, मचलते और गुर्राते हुए काले बालो वाले भालू अपने चमकते हुए दाँतो, पजो और काली आँखो को छडो मे से बाहर निकाल रहे थे। उनकी अलग-अलग रस्सियाँ और जजीरे एक-दूसरे मे उलझ गई थी। उनके बीचोबीच चाँदनी-सी चमकती शराब का मर्तबान खडा था। इस पर एक लम्बी जजीर वाला भालू का बच्चा चढ गया और वह फिर से नीचे उतर आया। गाडी एक नुमाइश के समान थी।

पैनी बोला, "अचरज मत करना, यदि जैक्सनविले के सब लोग तुम्हारे पीछे चलना शुरू कर दें।"

मिलव्हील बोला, "हो सकता है कि इससे इनकी कीमत बढ जाय।"

बक ने जोडी से कहा, "मैं नही सोच पाता कि फौडरविंग इसे कितना अधिक देखना पसन्द करता।"

जोडी ने सोचा कि अगर फौडरविंग जीवित होता तो शायद उन दोनो को ही जैक्सनविले साथ ही साथ ले जाया जाता। उसने बड़ी चाह से भरकर पायदान की जगह पर देखा। वहाँ पर वे दोनो आराम से बैठ सकते थे और इस प्रकार दुनिया को देख सकते थे।

बक ने सामान की सूची ली और बोला, "इस पर चीजें तो बहुत अधिक लिखी दीखती है। अगर हमे अच्छी कीमत न मिली और रुपया अधिक न हुआ तो मै क्या चीज छोड दूँ?"

माँ बोल पडी, "गिगाम और घरबुना कपडा।"

पैनी बोला, "नही, बक, तुम गिगाम जरूर लाना, चाहे कुछ भी हो। गिगाम, कुल्हाडी, कारतूस, सीसा और हिकरी कपडा—ये जरूर लाना।"

जोडी बोला, "काला और नीला हिकरी कपडा! दोनो रग मिले-जुले हो।"

बक चिल्लाया, "अच्छा अगर रुपया अधिक न हुआ तो हम रुककर कुछ और भालू पकड लेगे।"

उसने लगामे घोडो की पीठ पर थपथपाई।

माँ उनके पीछे से चिल्लाई, "गर्म कपडा बहुत जरूरी है।"

लेम बोला, "रोको यह गाडी! जो कुछ मैंने देखा, तुमने भी देखा?'

उसने अपने अँगूठे का इशारा हिरण की फैली हुई खाल पर, धुआँघर की दीवार की ओर किया। वह नीचे कूद पडा और दरवाज़ा खोलकर लम्बे कदमो से धुआँघर तक बढ आया। इधर-उधर घूमकर उसने एक खूटी पर सूखते सीग भी खोज निकाले। वह जान-बूझकर पैनी की ओर आया और उसने उसे दीवार की ओर धक्का दिया। पैनी डर से सफेद पड गया। बक और मिलव्हील भी जल्दी से आ गए। माँ अन्दर दौडी हुई गई, ताकि बन्दूक उठा लाए।

लेम बोला, "तुम्हे मुझसे झूठ बोलकर इस तरह बच निकलना अभी

आ जाएगा। बताओ, तुम उस समय इसी बारहसिंगे के पीछे नही निकले थे ?"

पैनी बोला, "मैं तुम्हे इसी बात पर मार डालता, पर तुम्हे मारकर भी क्या करूं ? इसे पा लेना तो अचानक ही सम्भव हो गया।"

"तुम झूठ बोल रहे हो !"

लेम की ओर बिना देखे पैनी बक की ओर मुडा और बोला, 'बक, मुझे कभी किसी ने झूठ बोलते नही सुना। अगर तुम्हे याद हो तो तुम्हे उस कुत्ते के सौदे मे भी घाटा नही रहा।"

बक बोला, "ठीक है, पैनी ! इसकी बातो पर ध्यान मत दो।"

लेम मुडा और गाडी की तरफ आकर फिर से चढ गया।

बक ने धीमी आवाज मे कहा, "पैनी, मुझे बहुत दुख है। लेम बहुत ही नीच है। ओलिवर ने जब से इसकी प्रेमिका को छीन लिया, तब से यह ऐसा ही बन गया है। यह उतना ही भद्दा हो गया है जैसे हिरणी को न पाकर बारहसिंगा।"

पैनी बोला, "मैं तो तुम्हे भी लौटने पर इसका एक चौथाई हिस्सा देने की सोच रहा था। परन्तु, बक, अब इसे भुलाना सरल नही।"

"इसमे तुम्हारा दोप नही। तुम हमारे सौदे मे अपने हिस्से के लिए निश्चिन्त रहो। मैं और मिलव्हील अगर ज़रूरत पडी, तो लेम को बाँध देगे।"

वे गाडी तक लौट आए। बक ने लगामे उठाई और घोडो को मोड दिया। अब यहाँ से वे सोते से होती हुई उत्तर की ओर की सडक पकडेंगे। यह उन्हे हौपकिन्स मैदान मे से नमक के सोतो के पास से होती हुई पलाटका तक उत्तर मे ले जाएगी। वहाँ नदी पार करके शायद वे रात गुज़ारेंगे। जोडी और पैनी गाडी को देखते रहे। माँ ने दरवाज़े के पीछे से झाँकते हुए बन्दूक को नीचे रख दिया। पैनी घर मे गया और चुपचाप बैठ गया।

जोडी की माँ बोली, "तुमने उसकी बातें क्यो सह ली ?"

"जब एक आदमी बुराई पर उतर आए, तो दूसरे को अपना दिमाग ठण्डा रखना चाहिए। मैं उससे लडने लायक बडा तो हूं नही। मैं तो इतना ही कर सकता था कि बन्दूक लेकर उसे मार डालता। पर, आदमी को

मारना उसकी अनजानी नीचता के बदला चुकाने से कुछ अधिक बुरा होगा।"

वह बहुत खुश था। बोला, "अब मैं शान्ति से रहना चाहूँगा।"

जोडी की माँ बोली, "मेरे खयाल मे तुमने बहुत ठीक किया, पर अब इस बात पर अधिक ध्यान मत देना।"

जोडी को अचरज हुआ। वह दोनो को ही न समझ सका। उसे लेम पर गुस्सा भी था और अपने पिता द्वारा उसे बिना कुछ कहे जाने देने पर निराशा भी। वह अपने ही भावो मे उलझ गया। पहले भी उसने ओलिवर से फौरेस्टरो के लिए अपने भाव बदले थे। आज लेम ने उसके पिता से धोखा किया था। अन्त मे उसने मन मे तय किया कि लेम घृणा के लायक है, पर बक से और दूसरे भाइयो से उसे प्यार बनाए रखना है। घृणा और मित्रता, दोनो मे ही उसे बराबर सन्तोष था।

करने के लिए कुछ खास काम था नही। सुबह का समय उसने माँ को रसोई के काम मे सहायता देने मे बिताया। माँ ने अनारो से जो चीज़ तैयार की, उसने बताया कि यह अतिसार या जुलाबो के लिए बहुत अच्छी है। जोडी को भी यह बहुत पसन्द थी। माँ को डर था कि वह इसके तैयार होने से पहले ही इसे अधिक न खा ले। उसे बीजो के चारो ओर के छिलके बहुत पसन्द आए।



## 25

अगहर वीता और पोष का महीना आ गया। पर अब भी उडती हुई जंगली वत्तखो की चिल्लाहट के अलावा और कोई चिह्न साफ न हुआ था। उन्होने भी घास के मैदानो के अपने घोसले छोडे और झील और जोहडो के वीच उडना शुरू कर दिया। जोडी को आश्चर्य था कि उडते हुए कुछ पक्षी क्यो चिल्लाते हैं और कुछ चुप क्यो रहते हैं? उसे पता था कि कुछ सारस उडते समय एक वहुत तेज आवाज करते हैं। वाज़ भी हवा मे ही चिल्लाते हैं, पर वैठकर वे चुप और जड हो जाते हैं। पेडो का रस चूसने वाले पक्षी भी उडते हुए वहुत शोर करते है, पर पेडो की डाल पर वैठकर वे विलकुल चुप हो जाते हैं। उनकी केवल कुरेदने की आवाज़ ही आती है। वटेर ज़मीन पर से ही चिल्लाती है और सिपाही काली चिडियाएँ भागती-दौडती हुई चिल्लाती हैं। हँसने वाले पक्षी दिन और रात गाते और चिल्लाते रहते है, चाहे वे डैनो के वल उड रहे हो या वे झाडियो और वाड पर वैठे हो।

कर्ल्यू पक्षी भी जार्जिया से दक्षिण की तरफ आ रहे थे। इनमे से बूढे पक्षी सफेद थे और उनकी चोचें मुडी हुई थी। वसन्त मे पैदा हुए छोटे पक्षी सलेटी रग के थे। ये बहुत अच्छी तरह खाते थे। ताज़ा माँस कम होने पर अथवा गिलहरी आदि से उकता जाने पर पैनी और जोडी घोडे पर चढकर समुद्री मछलियो वाले मैदान की ओर निकल जाते और इनमे से पाँच-छ को मार लाते। माँ इन्हे भी तीतरो के समान बनाती। पैनी इन्हे और भी स्वादु समझता।

बक ने जैक्सनविले मे उन भालू के बच्चो की अच्छी कीमत उठाई थी। बैक्स्टर परिवार की सभी चीजे तो वह ले ही आया था, साथ ही चाँदी और ताँबे के कुछ सिक्के भी थैले मे भरकर ले आया था। लेम ने जब से पैनी पर हमला किया, तब से दोनो परिवारो के सम्बन्ध कुछ बिगड गए थे। समझौता होने के बाद भी वे बिना रुके ही निकल जाते थे।

पैनी ने कहा, "लगता है, लेम ने औरो को भी मना लिया है कि मैं उन्हे हिरण के मामले मे ठगना ही चाहता था। आखिर एक दिन यह बात साफ करनी ही होगी।"

जोडी की माँ बोली, "मुझे ऐसे भी ठीक लगता है यदि हम उनसे न बोले।"

"परन्तु तुम यह मत भूलो कि जब मुझे साँप ने काटा था, तब बक कैसे आया था?"

"मैं नही भूल सकती। किन्तु लेम खुद एक साँप है। वह किसी भी समय तुम पर मुडकर हमला कर सकता है।"

बक एक दिन रुका, केवल यह बताने के लिए कि उसके विश्वास के अनुसार उन्होने सब भेडिये मार डाले हैं। एक को उन्होने घुडसाल के पास मारा और तीन को जाल मे फँसाया और तब से किसी का भी नही पता चला। भालू उन्हे तकलीफ दे रहे थे। वह पाँवकटा बूढा खुर्राट भालू सबसे अधिक खतरनाक था, क्योकि वह पश्चिम की जूनिपर झील से पूरब मे जूनिपर नदी तक बराबर धावे बोलता रहता था। उसे रुकने के लिए सबसे अच्छी जगह फौरेस्टरो की पशुशाला लगी। वह हवा का रुख देखता और कुत्तो और जाल दोनो को बचा जाता। पशुओ के बीच आकर कभी बछडे

या किसी और चीज़ को चुपचाप ही ले जाता। जिन रातो मे फौरेस्टर लोग बैठकर उसकी प्रतीक्षा करते, उनमे वह प्रकट ही न होता।

बक बोला, "तुम्हे उसकी खोजबीन करने से बहुत लाभ न होगा, पर फिर भी मैंने यह बात तुम तक पहुँचा देनी उचित समझी।"

पैनी बोला, "मेरे जानवर घर के इतना नजदीक है ! हो सकता है कि मैं उसे उसकी चालाकियो से ही फँसा लूँ। तुम्हारा धन्यवाद ! बक, बहुत दिन से मैं कुछ कहना चाहता हूँ। मुझे आशा है कि तुमने उन सब बातो को, जो लेम ने बारहसिंगे के विषय मे कही थी, अपने दिमाग मे नही लिया है।"

बक ने बचने के लिए कहा, "ठीक है। एक हिरण का क्या ? अच्छा, विदा !"

पैनी ने अपना सिर हिलाया और अपने काम पर चला गया। उसे बुरा लगा कि अपने एकमात्र पडोसियो से वह मित्र बनकर नही रह सका। आखिर जगल का ससार है ही कितना ?

काम थोडा था और जोडी का अधिक समय फ्लैग के साथ बीतता था। फ्लैग बहुत जल्दी बडा हो रहा था। उसके पाँव बडे लम्बे हो गए थे। जोडी ने एक दिन पहचाना कि उसके बचपन के छोटे-छोटे निशान मिट गए हैं। उसने उसके मुलायम सिर को सीगो के निशान के लिए टटोला। पैनी ने उसे ऐसा करते देखा और लाचारी मे उस पर हँस पडा। बोला, "जोडी तुम तो हमेशा ही आश्चर्यों की उम्मीद रखते हो। गर्मियो से पहले उसके सीग नही निकलेंगे। पूरा साल होने से पहले ऐसा नही हो सकता। तब कही पतले-पतले-से नुकीले सीग आएँगे।"

जोडी को अपने अन्दर एक सन्तोष-सा अनुभव हुआ और साथ ही एक अद्भुत आश्चर्य भी। ओलिवर और फौरेस्टरो का अलग हो जाना भी उसे तग न कर सका था। प्राय हर दिन वह बन्दूक लेता और गोलियो का थैला भरकर फ्लैग को साथ लेकर जगल मे निकल जाता। अब पिछले सनावर लाल न होकर भूरे-से हो गए थे। हर सुबह पाला पडा होता था। इससे चारो ओर के क्रिसमस पेड खूब चमकते नज़र आते थे। उसने देखा, क्रिसमस पास ही था।

पैनी ने कहा, "हम क्रिसमस तक आराम करेंगे और उसके आसपास वौलूसिया मे खरीद-फरोख्त करने जाएँगे और उसके वाद हम फिर काम मे जुट जाएँगे।"

जोडी को सोते से परे चीडो के जगल मे चेरोकी की फलियो का एक खेत मिल गया। उसने खूब लाल बीजो से जेवें भर ली। वे काफी मजबूत और पत्थर जैसे थे। उसने एक लम्बी सूई और मजबूत धागा माँ की सिलाई की टोकरी मे से निकाल लिया। उसे लेकर वह घूमने निकला। सूर्य की गर्मी मे एक जगह बैठकर उसने पेड की ढासना लगाई और बहुत मेहनत से हर रोज़ कुछ दाने पिरोने लगा, ताकि माँ के लिए हार बना सके। वे दाने ऊबड-खाबड ढग से पिरोये गए थे, पर तो भी उसे पसन्द आए। पूरा हार वह अपनी जेब मे लिए घूमता रहा ताकि वह इसे वार-वार देख सकें। धीरे-धीरे जेब मे पडे बिस्कुटो और गिलहरी की पूँछो आदि से मिलकर यह चिपचिपा-सा हो गया। तब उसने सोते पर ले जाकर इसे धोया और अपने सोने के कमरे मे आलमारी के ऊपर छिपा दिया।

पहले साल की क्रिसमस पर एक जगली तीतर के अतिरिक्त कुछ और खास चीज़ न बनी थी, क्योंकि पैसा पास न था। पर इस साल भालुओ के बच्चो को बेचने से बचा हुआ कुछ पैसा भी था। पैनी ने उसमे से कुछ रुई के बीज खरीदने के लिए बचा लिया और वाकी क्रिसमस पर खर्च करने के लिए रख लिया।

माँ बोली, "अगर हमे कुछ खरीदने जाना ही है तो मैं भी वौलूसिया जाना चाहूँगी। मुझे अपने लिए चार गज अलपका चाहिए, ताकि मैं एक अच्छी पोशाक क्रिसमस के लिए बना सकूँ और अच्छी तरह क्रिसमस मना सकूँ।"

पैनी बोला, "ओरी! तुम्हारा अनुमान ठीक ही है, मुझे इससे कुछ विरोध नही। क्योंकि जो कुछ मेरे पास है, उस पर तुम्हारा पूरा अधिकार है, पर मुझे लगता है कि चार गज़ से तो तुम्हारे दो कच्छे भी न बन सकेंगे।"

"अगर तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो, मैं उसे अपनी शादी की पोशाक पर जमाऊँगी। यह काफी लम्बी है। मैं लम्बाई के रुख नही बढी

या किसी और चीज़ को चुपचाप ही ले जाता। जिन रातो मे फौरेस्टर लोग बैठकर उसकी प्रतीक्षा करते, उनमे वह प्रकट ही न होता।

बक बोला, "तुम्हे उसकी खोजबीन करने से बहुत लाभ न होगा, पर फिर भी मैंने यह बात तुम तक पहुँचा देनी उचित समझी।"

पैनी बोला, "मेरे जानवर घर के इतना नज़दीक हैं! हो सकता है कि मैं उसे उसकी चालाकियो से ही फँसा लूँ। तुम्हारा धन्यवाद! बक, बहुत दिन से मैं कुछ कहना चाहता हूँ। मुझे आशा है कि तुमने उन सब बातो को, जो लेम ने बारहसिंगे के विषय मे कही थी, अपने दिमाग मे नही लिया है।"

बक ने बचने के लिए कहा, "ठीक है। एक हिरण का क्या? अच्छा, विदा!"

पैनी ने अपना सिर हिलाया और अपने काम पर चला गया। उसे बुरा लगा कि अपने एकमात्र पडोसियो से वह मित्र बनकर नही रह सका। आखिर जगल का ससार है ही कितना?

काम थोडा था और जोडी का अधिक समय फ्लैग के साथ बीतता था। फ्लैग बहुत जल्दी बडा हो रहा था। उसके पाँव बडे लम्बे हो गए थे। जोडी ने एक दिन पहचाना कि उसके बचपन के छोटे-छोटे निशान मिट गए हैं। उसने उसके मुलायम सिर को सीगो के निशान के लिए टटोला। पैनी ने उसे ऐसा करते देखा और लाचारी मे उस पर हँस पडा। बोला, "जोडी तुम तो हमेशा ही आश्चर्यों की उम्मीद रखते हो। गर्मियो से पहले उसके सीग नही निकलेंगे। पूरा साल होने से पहले ऐसा नही हो सकता। तब कही पतले-पतले-से नुकीले सीग आएँगे।"

जोडी को अपने अन्दर एक सन्तोष-सा अनुभव हुआ और साथ ही एक अद्भुत आश्चर्य भी। ओलिवर और फौरेस्टरो का अलग हो जाना भी उसे तग न कर सका था। प्रायः हर दिन वह बन्दूक लेता और गोलियो का थैला भरकर फ्लैग को साथ लेकर जगल मे निकल जाता। अब पिछले सनोवर लाल न होकर भूरे-से हो गए थे। हर सुबह पाला पडा होता था। इससे चारो ओर के क्रिसमस पेड खूब चमकते नज़र आते थे। उसने देखा, क्रिसमस पास ही था।

पैनी ने कहा, "हम क्रिसमस तक आराम करेंगे और उसके आसपास वौलूसिया मे खरीद-फरोख्त करने जाएँगे और उसके बाद हम फिर काम मे जुट जाएँगे।"

जोडी को सोते से परे चीडो के जगल मे चेरोकी की फलियो का एक खेत मिल गया। उसने खूब लाल बीजो से जेबे भर ली। वे काफी मजबूत और पत्थर जैसे थे। उसने एक लम्बी सूई और मजबूत धागा माँ की सिलाई की टोकरी मे से निकाल लिया। उसे लेकर वह घूमने निकला। सूर्य की गर्मी मे एक जगह बैठकर उसने पेड की ढासना लगाई और बहुत मेहनत से हर रोज़ कुछ दाने पिरोने लगा, ताकि माँ के लिए हार बना सके। वे दाने ऊबड-खाबड ढग से पिरोये गए थे, पर तो भी उसे पसन्द आए। पूरा हार वह अपनी जेब मे लिए घूमता रहा ताकि वह इसे बार-बार देख सके। धीरे-धीरे जेब मे पडे बिस्कुटो और गिलहरी की पूँछो आदि से मिलकर यह चिपचिपा-सा हो गया। तब उसने सोते पर ले जाकर इसे धोया और अपने सोने के कमरे मे आलमारी के ऊपर छिपा दिया।

पहले साल की क्रिसमस पर एक जगली तीतर के अतिरिक्त कुछ और खास चीज़ न बनी थी, क्योकि पैसा पास न था। पर इस साल भालुओ के बच्चो को बेचने से बचा हुआ कुछ पैसा भी था। पैनी ने उसमे से कुछ रुई के बीज खरीदने के लिए बचा लिया और बाकी क्रिसमस पर खर्च करने के लिए रख लिया।

माँ बोली, "अगर हमे कुछ खरीदने जाना ही है तो मैं भी वौलूसिया जाना चाहूँगी। मुझे अपने लिए चार गज अल्पका चाहिए, ताकि मैं एक अच्छी पोशाक क्रिसमस के लिए बना सकूँ और अच्छी तरह क्रिसमस मना सकूँ।"

पैनी बोला, "ओरी! तुम्हारा अनुमान ठीक ही है, मुझे इससे कुछ विरोध नही। क्योकि जो कुछ मेरे पास है, उस पर तुम्हारा पूरा अधिकार है, पर मुझे लगता है कि चार गज़ से तो तुम्हारे दो कच्छे भी न बन सकेंगे।"

"अगर तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो, मैं उसे अपनी शादी की पोशाक पर जमाऊँगी। यह काफी लम्बी है। मैं लम्बाई के रुख नही बढी

हूँ, मोटी ज़रूर हो गई हूँ। मैं उसका एक टुकडा सामने जोडना चाहती हूँ, ताकि यह मेरे चारो ओर ठीक से आ सके।"

पैनी ने उसकी चौडी पीठ थपथपाई और बोला, "बहुत मत सोचो, तुम्हारे जैसी अच्छी पत्नी को शादी की पोशाक पर सामने लगाने के लिए भी बहुत-सी अच्छी चीजे चाहिएँ।"

वह प्रसन्न होकर बोली, "तुम तो मुझे चढा रहे हो। मैंने कभी भी कोई भी चीज़ नही माँगी, और क्योकि तुम्हे मिल जाती है, इसलिए मुझसे भी पूछने की आशा नही रखते।"

"मैं जानता हूँ और तुम्हे इतना थोडे मे गुज़र करते देखकर मुझे डर लगता है। मुझे अच्छा लगता कि अगर भगवान् शक्ति दे तो मैं तुम्हे रेशम का एक पूरा थान ही ला दूँ। परमात्मा ने चाहा तो तुम्हे एक दिन कुआँ भी घर के दरवाज़े पर खुदा मिलेगा और कपडे धोने के लिए इतनी दूर सोते पर न जाना पडेगा।"

वह बोली, "मैं भी वोलूसिया जाना चाहती हूं।"

वह बोला, "अच्छा, मुझे और जोडी को एक-दो दिन शिकार खेलने का मौका दो। हो सकता है कि कुछ मांस और खाल हम दुकान पर बेचने ले जा सकें और तुम मनचाहा सौदा खरीद सको।"

पहले दिन का शिकार नाकाम रहा, कुछ हाथ नही लगा।

पैनी बोला, "जब हिरणो पर ध्यान न दो, तब वे यहाँ भरे मिलगे और जब उन्हे खोजने निकलो, तो वे कही मिलेंगे ही नही।"

इसी बीच एक अजीब घटना हुई। ज़मीन के दक्षिण की तरफ पैनी ने कुत्तो को एक बरसभर के बारहसिंगे का पीछा करने के लिए छोडा, पर वे टस से मस न हुए। पैनी ने सालो से जो न किया था, वह भी कर दिया। एक शाख तोडकर जूलिया को उसकी जिद के लिए पीटा। वह भौंकी और गुर्रायी, पर उठी नही। शाम को रहस्य खुल गया। फ्लैग अपनी आदत के मुताबिक आ गया। पनी खुशी से उछल पडा और तब ज़मीन पर झुककर उसने उन निशानो को मिलाया, जिन पर कुत्तो ने बढने से मना कर दिया था। वे वही थे। उसने अनुभव किया कि नए बैक्स्टर को पकडने से मना करने में जूलिया ने अपनी बुद्धिमत्ता का ही परिचय दिया था।

वह बोला, "मुझे यह बात बहुत लज्जित कर रही है कि कुत्ता भी अपने सम्बन्धियो को पहचान लेता है।"

जूलिया खुश हुई। पैनी ने भी उसके लिए बहुत अच्छा भाव रखा। उसे बुरा लगता यदि उनके पीछा करने से फ्लैग परेशान होता।

अगले दिन का शिकार काफी अच्छा रहा। उन्होने दलदल मे हिरणो को खाते हुए पा लिया। पैनी ने एक बडा भारी बारहसिंगा मारा। उसने एक और छोटे बारहसिंगे का पीछा किया और इसे कोने मे फँसा लिया। उसने जोडी को निशाना मारने को कहा और उसके चूकने पर स्वय मार डाला। वे पैदल ही आए थे, क्योकि धीमी चाल से खोजने पर ही इन दिनो शिकार का मौका अचानक मिल सकता था। जोडी ने छोटे हिरण को उठाने की कोशिश की, परन्तु उसके भार से वह दब-सा गया। जब तक पैनी घर जाकर घोडागाडी न ले आया, तब तक वह शिकार के पास खडा रहा। जब वे लौटे तो फ्लैग भी उनके साथ था।

पैनी ने कहा, "तुम्हारा यह प्यारा छौना भी कुत्तो जैसे ही शिकार पसन्द करता है।"

घर लौटते हुए पैनी ने इशारा किया। भालू चर रहे थे। वे तेज धार वाले पत्तो वाले छोटे ताडो के फल खा रहे थे।

पैनी बोला, "इसके खाने से उनका पेट साफ हो जाता है और ताकत मिलती है। इसके बाद चर्बी से खूब फूलकर वे सर्दियो के लिए छिप जाते हैं। ये भालू हमारे नए साल के लिए अच्छी खुराक बनाएँगे।"

"बेरियो को और क्या क्या चीज़ खाती है, पिताजी?"

"हिरण को यह पसन्द है। और, यह बता दूं कि अगर इन्हे किसी ढोल मे भरकर इस पर थोडी-सी शराब डाल दो और पांच महीने तक यो ही पडा रहने दो, तो इनकी शराब का जो नशा होगा उसे पीकर तुम्हारी माँ भी नाच उठेगी। पर, काश ! तुम ऐसा कर सको !"

जहाँ ये छोटे ताड के पेड ऊँची ज़मीन पर उठते हुए उनकी ज़मीन के पीछे के जगल तक पहुँच गए थे, पैनी ने इशारे से एक ओर पतली पगडण्डी की ओर इशारा किया जो बामी के छेदो तक ले जाती थी। यहाँ फनियर सांप सर्दियो मे रहते थे, पर गर्म और उजले दिनो मे वे कुछ घटो के लिए

वाहर आकर वामी के पास धूप सेकते थे। जोडी को लगा कि जैसे जगल के सभी न दीखने वाले जानवर भी पैनी की आँखो के सामने घूम रहे हो।

घर पर जोडी ने हिरणो की खाल उतारने और उनके पिछले हिस्सो को काटने मे सहायता की, क्योकि यही चीजें वेची जा सकती थी। अगले चौथाई हिस्से का मांस माँ ने तल लिया, ताकि उसे उसी की चर्वी मे वचाया जा सके। हड्डियाँ और वाकी वचा माँस कुत्तो के लिए उवाल लिया गया। परिवार ने उस रात उनके दिल और जिगर खाए। इस परिवार मे कुछ भी वेकार न छोडा जाता था।

सवेरे पैनी वोला, "अब हमे यह तय करना होगा कि हमे दादी के यहाँ रुकना है या वापस आना है? अगर हमे वहाँ रात वितानी है तो जोडी को दूध दुहने और कुत्तो और चूज़ो को दाना-पानी देने के लिए रुकना होगा।"

जोडी वोला, "ट्रिक्सी तो करीव-करीव सूख ही गई है। हम उनके लिए अभी से चारा डाल सकते है। मुझे भी साथ चलने दीजिए और कृपा करके दादी के यहाँ रुकने का मौका दीजिए।"

पैनी ने पत्नी से पूछा, "क्या तुम भी रात को वहाँ रुकना चाहोगी?"

"नही। मैं और वह कभी भी मीठे वनकर नही रह सकते।"

"तव हम वहाँ नही रुकेंगे। जोडी, तुम चल सकते हो, पर वहाँ जाकर रुकने के लिए मचलने मत लगना।"

"पर मैं फ्लैग के लिए क्या करूँ? क्या वह हमारे साथ दादी के यहाँ तक नही जा मकता, ताकि वह भी इसे देख ले?"

माँ फूट पडी, "वह दुष्ट छौना! हमारे घर पहले कभी ऐसी शरारत की वात नही हुई। तुम भी इतने शरारती नही थे।"

जोडी को वुरा लगा। वोला, "मुझे लगता है, यही रुकना पडेगा।"

पैनी वोला, "वेटे, उसे वाँध डालो और भूल जाओ। वह कुत्ता नहीं है और वह छोटा भी नही है, हालांकि तुमने उसे छोटा ही वना लिया है। तुम उसे किसी लडकी की गुडिया के ममान इधर-से-उधर ले जा नही मकते। फिर क्या लाभ?"

उसने अनमने होकर फ्लैग को पिछली कोठरी मे वाँध दिया और साफ

कपडे बदलकर वोलूसिया जाने को तैयार हो गया। पैनी अपनी उसी शादी वाली पोशाक मे ही था, जिसकी आस्तीने कुछ सिकुड गई थी। सिर पर काला टोप भी उसने ले लिया। इसके किनारो पर टिड्डियो ने छेद कर दिए थे, पर फिर भी यह टोप ही था। इसे छोडकर पैनी के पास शिकार के समय की एक ऊनी टोपी भी थी और खेतो मे काम आने वाला ताड के पत्तो से बना एक टोप। जोडी नए जूते, घर-बुने कपडे के पाजामे, नुकीली घास के बने टोप और नई काली अल्पका का लाल फीते वाला कोट पहनकर खूब सजा हुआ था। माँ ने साफ और किनारीदार नई पोशाक पहनी हुई थी, जो उसने गिगाम से बनाई थी। उसकी पसन्द से यह कपडा अधिक गहरा नीला था, परन्तु इसके चौकोने बहुत सुन्दर थे। उसने नीला धूप का टोप सिर पर पहना था, पर साथ ही किनारीदार काला टोप भी रख लिया। उसे गाँव के पास पहुँचते हुए वह पहन लेगी।

गाडी मे रेतीली सडक पर झटके खाते हुए जाना बहुत सुहावना था। जोडी गाडी के फर्श पर बैठा था। उसकी पीठ सीट पर लग रही थी। वहाँ से पीछे छूटते हुए जगल को वह आनन्द से देख रहा था। आगे देखने की बजाय उसे बढते जाने के भाव अधिक अच्छे लगे। गाडी के झटकते ही उसकी ठोढी खुरच जाती। अब वे नदी पर पहुँच चुके थे। उसके पास सोचने को बहुत कुछ न था। इसलिए वह दादी के बारे मे सोचने लगा। वह यह जानकर अचरज मे डूब जाएगी कि वह ओलिवर से नाराज है। उसने बडे सन्तोष के साथ दादी का चित्र खीचा। तब उसे बेचैनी होने लगी। उसे फिर से उसके लिए वही प्यार जग गया जो पिछली गर्मियो को छोड़कर हमेशा ही उसके लिए रहा था। शायद वह उसे नही बता सकेगा कि वह ओलिवर के विषय मे क्या सोचता है? उसने अनुभव किया कि वह चुप रहकर उसके प्रति अधिक दयालु बनने का यत्न करेगा। उसकी कल्पना का यह चित्र उसे बहुत अच्छा लगा। उसने निश्चय किया कि वह ओलिवर की सेहत के विषय मे निश्चित रूप से पूछेगा।

पैनी ने सूअर का मांस दो बोरो मे भरा हुआ था। उनकी खालें भी एक बोरी मे डाली हुई थी। माँ ने भी एक टोकरी अण्डो की भरी हुई थी और एक छोटा बर्तन मक्खन से भरा हुआ था। यह सब दूकान पर बेचने

के लिए था। इसके अलावा एक डलिया दादी के लिए भेंटो से भरी हुई थी। उसमे नई राव, आलू, सूअर का माँस आदि रखे हुए थे। वह दुश्मन के घर भी खाली हाथ जाना नही चाहती थी।

पैनी ने नदी के दूसरे पार किश्ती लाने के लिए जोर से आवाज़ दी। आवाज़ नदी के नीचे तक गूंज गई। दूसरी ओर एक लडका सामने आया। वह वडे धीमे-धीमे नाव खेकर लाया। कुछ देर के लिए जोडी को लगा कि वच्चे का जीवन ईर्ष्या के लायक है। वह नाव को नदी के आर-पार लाता-ले जाता रहता है। परन्तु, तभी उसे लगा कि ऐसा जीवन स्वतन्त्रता से बिलकुल रहित था। ऐसा वच्चा न शिकार पर जा सकता है, न जगल मे घूमने, न किसी फ्लैग को ही पाल सकता है। उसे प्रसन्नता हुई कि वह स्वय किश्ती वाले का वेटा न था। उसने उसे वडे खिचे दिल से पुकारा। वच्चा कुछ भद्दा और शर्मीला था। उसने किश्ती पर घोडे को सिर झुकाकर चढाने मे सहायता दी। जोडी उसके जीवन के वारे मे उत्सुकता से भर उठा।

उसने पूछा, "तुम्हारे पास वन्दूक है?"

लडके ने अपना सिर इन्कार मे हिला दिया और अपनी आँखें दूसरे किनारे पर गाड दी। जोडी को फौडरविग की याद ताज़ा हो आई। नज़र मे आते ही फौडरविग जैसे उससे वाते करने लगता था। उसने नए लडके से अपना ध्यान हटा लिया। माँ अपनी खरीद-फरोख्त के लिए उत्सुक थी। उन्होने दूकान से थोडी दूर ले जाकर गाडी खडी कर दी और अपनी सव चीज़ें मेज़ पर जाकर रख दी। दूकानदार वोयल्स व्यापार की जल्दी मे न था। वह जगल की कुछ खवरें सुनना चाहता था। फौरेस्टर लोगों ने उसे वहुत-सी अविश्वसनीय वातें, वाढ के वाद की, वताई थीं। कुछ और शिकारी भी वोलूसिया से जगल मे गए थे और उन्होने भी लगभग वही वातें वताई थी। शिकार मिलना असम्भव था। भालू नदी के किनारे-किनारे जानवरो को मार रहे थे, जैसा उन्होंने वरसो से नही किया था। उसने पैनी से ये सव वातें पूछनी चाही। पैनी ने वताया कि वे सव वातें सच थीं। फिर वह मेज़ पर झुक गया और वातो मे लग गया।

जोडी की माँ वोली, "तुम जानते हो कि मैं वहुत देर खडी नही रह

सकती। अगर तुम लोग सौदे को तय कर लो, तो मैं कुछ खरीद-फरोख्त करके दादी हुट्टो के यहाँ चली जाऊँ। फिर तुम सारे दिन बातें करते रहना।"

बोयल्स ने तुरन्त ही माँस को तोला। हिरण का माँस कम मिलने के कारण वह इसे तुरन्त ही अच्छी कीमत पर बेच सकता था। नदी का स्टीमर इसको अपने अंग्रेज और अमरीकी यात्रियो के लिए ले लेगा। उसने खालो को बडे ध्यान से देखा और उनकी हालत के लिए अपना सन्तोष प्रकट किया। उसके पास ऐसी खालो के लिए पाँच डालर के हिसाब से माँग भी आई हुई थी। पैनी ने कभी इतने दाम की कल्पना भी नही की थी। माँ सूखी चीजो की मेज की ओर बढी। वह प्रसन्न थी। वह चाहती थी कि केवल सबसे अच्छी चीज ही खरीदे। दूकानदार के पास भूरे रग की अलपका नही थी। वह अगली किश्ती से मँगा सकता था। माँ ने मना कर दिया। टापू से फिर मँगाना बहुत कठिन था।

वह बोला, "तुम इस काली अलपका मे से पूरी पोशाक का कपडा क्यो नही ले लेती?"

उसने अंगुली से इशारा करते हुए कहा, "है तो यह अच्छी, पर तुमने कितनी कीमत बताई?"

वह घूम गई और उसे फिर अभिमान हो आया। बोली, "मैंने जब भूरे रग की बात कही है तो मुझे भूरा ही चाहिए।"

उसने कुछ मसाले, गोदे आदि क्रिसमस के केक के लिए खरीदी। वह बोली, "जोडी, ज़रा जाकर घोडे को देखो। वह शायद खुल गया है।"

उसने कुछ ऐसे भद्दे ढग से कहा कि जोडी उसकी ओर ताकता रह गया। पैनी ने उसे आँख मारकर समझाया और वह जल्दी ही बाहर चला गया, ताकि माँ उसे हँसता हुआ न देख ले। वह चाहती थी कि उसके लिए क्रिसमस की कोई विचित्र भेंट खरीद ले। पैनी उसे बाहर भेजने का शायद और कोई अच्छा बहाना खोज लेता। बाहर जाकर वह उसी बालक की ओर देखने लगा, जो उन्हे किश्ती पर लाया था। वह लड़का वही बैठकर अपने घुटनो को देख रहा था। जोडी ने पत्थर का एक टुकडा उठाया और सडक के किनारे के सनावर पर उसे मारा। उस लड़के ने देखा और फिर,

उसके पीछे आकर बिना बोले, उसने भी पत्थर उठाया और उसी तरह पेड पर फेका। बिना बोले यह मुकाबला चलता रहा। काफी देर बाद जोडी ने सोचा कि माँ अपना काम कर चुकी होगी। और, वह फिर स्टोर मे आ गया।

उसकी माँ ने कहा, "तुम मेरे साथ चल रहे हो या पिता के पास रुकोगे ?"

वह कुछ क्षण हिचकिचाया। दादी उसे देखते ही कुछ केक और पकी हुई चीजें निकाल लाएगी। परन्तु दूसरी ओर यहाँ रहने पर उसे पिता को औरो से बात करते हुए सुनकर बहुत कुछ नई बातें सुनने को मिलेगी। उसके लिए बात उसी क्षण तय हो गई, ज्यो ही दूकानदार ने उसे चूसने की एक गोली दे दी। अब जोडी शरीर और आत्मा से यही रह सकेगा।

उसने प्रसन्नता से कहा, "माँ, मैं और पिताजी साथ-साथ आएँगे।"

वह चली गई। पैनी उसे देखता रहा और उसने भौहे सिकोडी। बोयल्स हिरणो की खालो के बालो को खुशी से थपथपा रहा था।

पैनी बोला, "मैंने सोचा था कि इन खालो के लिए मैं नकद पैसे लूँगा। परन्तु अगर तुम बहुत जल्दी काली अल्पका मे से एक पूरी पोशाक के लायक टुकडा दे दो, तो मैं नकद की चिन्ता न करूँगा।"

बोयल्स ने अनमना-सा बनकर कहा, "कोई और होता तो मैं 'ना' कर देता। पर, तुम्हे मेरे पास आते बहुत दिन हो गए। मुझे मजूर है।"

कैंची चलने लगी और टुकडा कट गया।

पैनी बोला, "अब मुझे इससे मिलता-जुलता रेशमी धागा और बटन दे दो।"

"पर यह सौदे मे शामिल नही है।"

"मेरे पास इतने पैसे हैं। अब इस कपडे को डिब्बे मे डाल दो। कहीं रात को बारिश न हो जाय।"

बोयल्स ने खुशी से कहा, "अच्छा, अब तुमने मुझे ठग लिया। सच बताओ कि क्रिसमस के भोजन के लिए जगली तीतर का शिकार करने किसी को कहाँ जाना चाहिए ?"

"मैं तुम्हे क्या बताऊँ ? मैं खुद ही ऐसा शिकार करना चाहता हूँ। ये बहुत ही कम रह गए है। उन्हें प्लेग ने बहुत बुरी तरह खतम कर दिया है।

पर, तुम अगर नदी के साथ-साथ ऊपर तक चले जाओ, जहाँ इसमे सात मील वाली दूसरी धारा मिलती है, तो वहाँ पर सरू के पेडो वाली दलदल है। वही पर दक्षिण-पश्चिम मे दो-तीन वडे सुगन्धित वृक्ष भी हैं। वहाँ तुम्हे कोई न कोई शिकार मिल जाएगा।"

अब उनकी बातचीत अच्छे ढग पर शुरू हुई। बिस्कुटो के एक सन्दूक पर जोडी भी सुनने के लिए बैठ गया। कोई और ग्राहक था नही, इसलिए बोयल्स पीछे से सामने आ गया और आरामकुर्सी सामने रखकर बात करने लगा। उन्होने अपने पाइप निकाले और पैनी ने अपने तमाखू में से बोयल्स के पाइप को भर दिया।

बोयल्स बोला, "अपने उगाये तमाखू जैसा सन्तोष कहाँ? तुम एक क्यारी इस बार मेरे लिए भी बीज देना। मैं तुम्हे अधिक से अधिक कीमत दूँगा। हाँ, अब अपनी बात शुरू करो। तो, तुमने नदी के दक्षिण-पश्चिम मे कहा न?"

जोडी अपनी उस चूसने वाली चीज़ को चूसता रहा। उसका काला रस उसके मुंह मे भरा हुआ था। पर, यह बात उसकी एक दूसरी ही भूख मिटा रही थी, जो उसके तालु से भी परे की थी, और जो कभी-कभी ही तृप्त हो पाती थी। पैनी ने जगल मे बाढ की बात बताई कि किस तरह नदी के किनारे इसने नुकसान किया। यह बात बोयल्स ने भी बताई। पर नदी सारे पानी को बहा गई थी। किनारो पर भी काफी बाढ आई थी। ईज़ी ओज़ेल की कुटिया भी हवा मे लडखडाकर गिर गई थी।

बोयल्स बोला, "अब वह दादी की कोठरी मे ही रह रहा है। वह उतना ही खुश है जैसे चीड मे छेद करने वाला पक्षी एक ताज़ी लकडी पाकर खुश होता है।"

पैनी ने उसे भेडियो और भालू के शिकार की बात बताई। सांप का काटना भी उसने बताया, जिसे बताना फौरेस्टर भूल गए थे। पैनी के बताने का ढग ऐसा था कि जोडी को गर्मियो का सारा जीवन फिर से याद हो आया। बोयल्स भी खूब डूब गया और झुककर बैठा रहा। वह पाइप पीना भी भूल गया। तभी कोई ग्राहक आया और तब वह बडी निराशा से उठा।

पैनी बोला, "बेटा, तुम्हारी मां एक-दो घटे से गई हुई है। जाओ,

दादी को बताओ कि मैं भी आ ही रहा हूँ।"

"क्या हम दादी के यहाँ दोपहर का खाना खाएँगे ?"

"हाँ, अगर हमें निमन्त्रण न होता, तो तुम्हारी माँ अब तक लौट चुकी होती। अब जल्दी जाओ और उसके लिए हिरण का अगला चौथाई हिस्सा लेते जाओ।"

पैनी की कहानियों में खोया हुआ वह चला गया।

दादी का सुथरा आँगन बाढ के असर से फिर सुधरने लगा था। नदी अपने किनारों को लांघकर यहाँ तक बढ आई थी और सर्दियों का इसका सारा बगीचा उजड गया था। वहाँ कभी न देखा गया कूडा इधर-उधर जमा हो गया था। नई पौध खिलने लगी थी। पर, अभी उस पर फूल न आए थे। केवल घर के आस-पास की झाडियों में कुछ फूल थे। नील के फूल काले-काले फलों के रूप में बदल चुके थे। दादी अन्दर उसकी माँ के साथ बैठी थी। उसने उनकी आवाज सीढियाँ चढते हुए सुनी और खिडकी में से झाँककर देखा कि भट्टी में लपटें उठ रही हैं। दादी ने भी उसे देखा और दरवाजे तक आ गई। उसका आलिंगन बहुत ही स्नेहपूर्ण था, परन्तु इसमें पुराना उत्साह न था। माँ के बिना वे दोनों पुरुष वहाँ सदा ही सत्कार-योग्य समझे जाते थे। उसे पके हुए माल की कोई भी तश्तरी दिखाई न पडी। हाँ, पकते हुए सामान की सुगन्ध रसोई से अवश्य आ रही थी। नहीं तो वह अपनी निराशा न सम्भाल पाता। दादी फिर से उसकी माँ से बातें करने बैठ गई, पर वह बहुत चुप थी। उसकी माँ भी ऐसा ही बरताव कर रही थी। उसने बडी तीखी निगाह से दादी के किनारीदार अँगरखे की ओर देखा।

वह बोली, "मैं कहीं भी होऊँ, मुझे सादी पोशाक अच्छी लगती है।"

दादी ने व्यंग्य से कहा, "मैं मरते हुए भी ऐसे ही कपडे पहनना पसन्द करूँगी। आदमी सदा ही औरत को अच्छी पोशाक में देखना चाहते हैं।"

"पर मैं तो बचपन से ही इसे बुरा समझती हूँ कि मनुष्यों को रिझाने के लिए अच्छे कपडे पहने जायें। फिर कुछ हम जैसे गरीब आदमी भी होते हैं, उन्हें स्वर्ग में ही इस तरह के किनारीदार कपडे मिल पाते हैं।"

दादी आरामकुर्सी मे तेज़ी से झूलने लगी। वह बोली, "मैं तो स्वर्ग मे जाना ही नही चाहती।"

जोडी की माँ बोली, "मेरी नज़र मे तो वहाँ कोई खतरा नही।"

दादी की काली आँखे चमक उठी।

जोडी ने पूछा, "दादी, तुम वहाँ क्यो नही जाना चाहती ?"

"एक बात यह कि वहाँ का साथ मुझे न रुचेगा।"

जोडी की माँ ने इसे अनसुना कर दिया।

दादी बोली, "और दूसरी बात सगीत की है। वहाँ केवल सीग का ही बाजा बजता है। पर मुझे वीणा, वॉयलिन और आठ कोनो वाले सीग का बाजा अधिक पसन्द है। जब तक कोई प्रचारक मुझे इनका भरोसा न दिला दे, मैं वहाँ जाने का निमन्त्रर्ण धन्यवाद-सहित मना कर दूँगी।"

जोडी की माँ का चेहरा गुस्से से भर आया।

दादी ने अपनी बात जारी रखी, "और फिर खाने की बात है। भगवान् भी अपने सामने भुने हुए माँस की खुशबू चाहता है परन्तु यह प्रचारक बताते है कि स्वर्ग मे लोगो को दूध और शहद पर रहना पडता है। मुझे दूध अच्छा नही लगता और शहद मेरे पेट के लिए ठीक नही। मुझे लगता है कि लोग जो कुछ धरती पर नही पा पाते, उसे ही स्वर्ग मे मान बैठते हैं। पर मैंने तो, एक औरत जो कुछ चाह सकती है, वह सब कुछ ही पा लिया है। शायद इसीलिए मेरे लिए स्वर्ग मे कोई मज़ा नही बचा।" कहकर उसने अपना अँगरखा ठीक किया।

जोडी की माँ बोली, "मेरा अनुमान है कि ओलिवर का उस पीले वालो वाली चुडैल के साथ भाग जाना भी इसमे शामिल है।"

दादी की कुर्सी हिली और फर्श पर एक लय-सी छिड गई।

वह बोली, "ओलिवर बढ रहा है और खूबसूरत है। औरतें हमेशा ही उसके पीछे लगी रही है और लगती रहेगी। इस ट्विंक को ही लो। गलती उसकी भी नही। उसे अपने जीवन मे कभी कोई अच्छी चीज़ न टकरी। उसी समय ओलिवर ने उसकी ओर ध्यान किया। वह उसके पीछे क्यो न चल पडती ? वह गरीब बच्ची अनाथ है और ईसाइयो की दया पर छोडी हुई है," कहकर उसने अपने कपडे फिर सीधे किए।

जोडी अपनी कुर्सी मे बेचैन होने लगा। दादी के घर की गर्मी जैसे ठण्ड मे बदल गई, मानो दरवाजे खुल गए हो। उसने सोचा कि यह केवल औरतो का ही मामला है। औरते खाना पकाते समय तो बहुत अच्छी होती हैं, परन्तु बाकी समय वे कुछ न कुछ दिक्कत ही खडी कर देती हैं। इसी समय पैनी के कदमो की आवाज ड्योढी मे सुनाई दी। जोडी को चैन मिली। शायद उसका पिता उन दोनो को ठीक कर सके। वह कमरे मे आ गया और उसने अपने हाथ रगडकर आग पर फैला दिए।

बोला, "क्या यह अच्छा नही कि वे दोनो औरतें सामने बैठी है, जिन्हे मैं सबसे अधिक प्यार करता हूँ, और वे भट्टी के पास बैठकर मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

दादी बोली, "एजरा! अगर दो औरते भी इसी तरह आपस मे प्यार करने लगें तो सब कुछ ही ठीक हो जाय।"

वह बोला, "मुझे पता है कि तुम दोनो की नही निभती। तुम कारण जानना चाहती हो? दादी! तुम्हें यह ईर्ष्या है कि मैं ओरी के साथ रह रहा हूँ। और ओरी! तुम्हे यह ईर्ष्या है कि तुम दादी जितनी सुन्दर नही हो। पर सुन्दरता उम्र के साथ आती है। समय आने पर तुम भी शायद कुछ सुन्दर बन जाओगी।"

उसकी अच्छी आदत के सामने झगडा असम्भव था। वे दोनो हँसने लगी।

पैनी बोला, "मैं केवल यह पूछना चाहता हूँ कि क्या हमे इस घर की चर्बी खाने के लिए निमन्त्रित किया गया है या फिर हमे घर लौटकर बासी मक्की का हलवा खाना होगा?"

"तुम जानते ही हो कि यहाँ तुम्हारा रात और दिन स्वागत है। तुम्हारे भेजे हिरण के मांस के लिए भी मैं धन्यवाद देती हूँ। मेरी इच्छा थी, काश! ओलिवर भी हमारे साथ खाने पर हमारे यहाँ होता।"

"उसकी क्या खबर है? समुद्र पर जाने से पहले वह हमारी तरफ नही आया, इसका हमें दुःख है।"

"उसे पहले तो ठीक होने मे ही काफी देर लगी। और, तब उसे सन्देश मिला कि बोस्टन मे उसका जहाज तैयार खडा है और उसका साथी

प्रतीक्षा कर रहा है।"

"मेरा अनुमान है कि कोई लड़की भी फ्लोरिडा मे उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।"

वे साथ-साथ हँसने लगे और जोडी भी उनके साथ चैन की हंसी हँसने लगा। दादी का घर फिर से उत्साह से भर गया।

वह बोली, "खाना तैयार है और अगर तुम जगल के रहने वाले अच्छी तरह न खा पाए तो मेरे दिल को बहुत चोट पहुँचेगी।"

भोजन पहले जैसा तो नही था, पर तो भी बहुत-सी चीज़े ऐसी थी, जिनसे जोडी की माँ अत्यन्त प्रसन्न हुई। वातावरण मित्रतापूर्ण रहा।

जोडी की माँ बोली, "हमने क्रिसमस के लिए आने की सोची थी। पिछले साल हम नही आ सके थे, क्योंकि हमारा हाथ तग था। तुम्हारा क्या अनुमान है कि क्या फलो से बनी केक और एक बोतल मीठी कैण्डी मेरी ओर से स्वीकार की जाएगी ?"

"इससे बढकर अच्छा और क्या होगा ? क्या ही अच्छा हो, अगर तुम सब वह रात यही बिताओ और क्रिसमस मेरे साथ ही मनाओ ?"

पैनी बोला, "यह बहुत ठीक होगा और माँस के लिए तुम मुझ पर भरोसा रखना। अगर मैं पकड सका तो तीतर जरूर लाऊँगा।"

उसकी पत्नी बोली, "गाय, कुत्तो और चूज़ो का क्या करोगे ? हम सब उन्हे छोडकर नही आ सकते, चाहे क्रिसमस हो या न हो।"

"हम कुत्तो या चूज़ो के लिए काफी खाना छोड आएँगे। वे एक दिन मे भूखे नही मर जाएँगे। और, मेरा अन्दाज़ है कि गाय तब ताज़ी सूई हुई होगी और हम बछडे को उसे चूंघने के लिए छुट्टी दे देंगे।"

"और बडे बछडे को भालू या चीते के लिए खुला छोड देंगे ?"

"मैं अनाज-भण्डार के अन्दर ही पशुओ का एक घेरा बना दूँगा, जहाँ उन्हे किसी प्रकार कष्ट नही होगा। हाँ, फिर भी अगर तुम घर रहना चाहो और इन जगली जानवरो को अलग रखना चाहो तो ठहर जाना। पर मैं तो अच्छी तरह क्रिसमस मनाना चाहता हूँ।"

जोडी ने कहा, "मैं भी यही चाहता हूँ।"

उसकी माँ ने दादी से कहा, "इन दोनो के सामने मेरी दशा वैसी ही

है, जैसी दो वनविलावो के सामने खरगोश की।"

पैनी बोला, "मैं तो यही सोचता था कि हम दोनो खरगोशो का पाला एक वनविलाव से पडा है।"

"तुम इस सब मे से भी कुछ न कुछ नई बात बना लेते हो," वह बोली, पर साथ ही हँस पडी।

यह निश्चय हुआ कि वे उस समय मेले पर पहले दादी के यहाँ आएँगे और फिर उसी के घर लौटकर रात और अगला दिन बिताएंगे। जोडी खुश हुआ, परन्तु तभी उस पर पलँग की याद ताज़ा हो आई, जैसे बादल घिर आए हो।

वह बोला, "मैं नही आ सकता। मुझे घर रुकना पडेगा।"

पैनी ने पूछा, "क्यो बेटा! तुम्हे क्या तकलीफ है?"

उसकी माँ दादी की तरफ मुडकर बोली, "यह उसका बिगडा बेटा पलँग है। वह उसे अपनी आँखो से ओझल नही कर सकता। मैंने किसी बच्चे को किसी ज़िन्दा चीज से इतना अधिक उलझते और उसके पीछे बावला होते नही देखा। यह उसे खिलाने के लिए भूखा रहता है, उसके साथ सोता है, उसके साथ आदमियो जैसी बात करता है। मैंने स्वय इसे बात करते सुना है। इसे उस छौने के अलावा दुनिया मे और किसी का ध्यान ही नहीं।"

पैनी ने धीरे से कहा, "बच्चे को बहुत अधिक दुख अनुभव मत कराओ।"

दादी बोली, "क्यो, वह उसे साथ ले आए!"

जोडी ने अपनी बाँहें उसकी कमर के चारो ओर डाल दी।

"दादी, तुम सचमुच उसे प्यार करोगी। वह बहुत चुस्त है। तुम उसे कुत्तो जैसे सिखा सकती हो।"

"निश्चय ही मैं उसे प्यार करूँगी। वह फलफ़ के साथ रह लेगा?"

"वह कुत्तो को पसन्द करता है। हमारे कुत्तो से वह खेलता है। उनके साथ शिकार पर जाने हुए बीच मे से बिछुडकर, वह फिर मिल जाता है। भालू का शिकार उसे भी कुत्तो जैसे ही बहुत पसन्द है।"

छौने की प्रशसा उसके मुख से होने लगी।

पैनी ने हँसते हुए उसे टोका, "तुमने अगर सभी बाते बता दी, तो तुम उसके खोजने के लिए कुछ भी अच्छी बात न छोडोगे। तब दादी कोई न कोई दोष ही ढूंढ पाएँगी।"

बहुत भावुक होकर जोडी बोला, "उसमे कुछ दोष है ही नही।"

माँ बोली, "केवल इतना ही कि वह मेज पर कूदता है, तेल के पीपे का ढकना गिरा देता है, आलुओ को बिखेर देता है और बच्चो से भी बढ-कर हर तरह की शरारत करता है।"

वह बाग मे फूलो को देखने के लिए निकल गई। पैनी ने दादी से अकेले मे कहा, "मुझे ओलिवर की चिन्ता रही है। वे फौरेस्टर तो उसे भगाने के कारण नही हैं? कही वह उनके कारण पहले ही तो नही चला गया?"

"मैंने ही उसे निकाला है। मैं उस लडकी के पीछे उसे पागल देखकर उससे तग आ गई थी। मैंने उससे कहा कि तुम समुद्र पर वापस चले जाओ तो अच्छा है, क्योकि न तुम मेरा कोई भला करते हो और न मुझे आराम पहुँचाते हो। उसने कहा था, 'मैं अपना भी भला नही कर सकता। समुद्र ही मेरी जगह है।' मैंने सोचा भी नही था कि वह लडकी उसके पीछे-पीछे जाएगी।"

"तुम जानती हो लेम के गुस्से को? कभी वह शराब पीकर आया तो नही? याद रखना, नशे मे होकर वह आदमी नही रहता। ऐसे समय तुमने उसे खुश करके भगा देना।"

"मेरा अनुमान है कि वह राक्षस कभी यहाँ आने मे अपना समय बर-बाद नही करेगा। तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो, तुम्हे यह भी पता है कि मैं किस धातु से बनी हूँ?"

"कही वह धातु कमज़ोर तो नही पडने लगी?"

"बात तो ठीक है, परन्तु मेरी गर्मी अभी भी उतनी ही तेज़ है।"

"मुझे भरोसा है कि तुम सभी आदमियो को झुका लोगी पर लेम कुछ और ही है।"

जोडी बडे ध्यान से सुन रहा था। अब दादी के यहाँ होने के कारण उसे लगा कि ओलिवर फिर से उसका मित्र है। वैसे उसे यह जानकर सन्तोष हुआ कि दादी भी ओलिवर से तग आ गई थी। वह भी जब ओलिवर से

मिलेगा, उसे अपनी नाराज़गी जताएगा, पर उसे क्षमा भी कर देगा। टिवक को वह कभी क्षमा न करेगा।

उन्होने अपनी सब चीज़े इकट्ठी की। जोडी ने आँकना चाहा कि किस थैले मे माँ ने उसके लिए क्रिसमस की भेंट रखी है। परन्तु उसे सभी थैले एक-जैसे लगे। उसे लगा कि शायद माँ ने उसे सचमुच ही घोडे को देखने के लिए भेजा था और शायद उसके लिए कुछ भी नही खरीदा। घर जाते हुए वह सारे रास्ते माँ को इस विषय मे टटोलने की कोशिश करता रहा।

वह बोली, "तुम इससे अच्छा इस गाडी के पहिए के बारे मे कुछ पूछ लो।"

उसने उसके इस कतराते से समझ लिया कि उसने कुछ न कुछ उसके लिए अवश्य ही खरीदा है।



## 26

गाय क्रिसमस से एक सप्ताह पहले ही सू गई। बछिया उत्पन्न हुई थी और इस बात से सारे परिवार मे खुशी छा गई। यह बछिया भेड़ियों द्वारा मारी गई बछिया की कमी पूरी कर देगी। अब ट्रिक्सी भी जवान नहीं रही थी। अच्छा था कि उसकी बछिया जल्दी ही उसका स्थान लेने लायक हो जाय। आने वाले क्रिसमस के अलावा परिवार मे और किसी चीज की चर्चा कम ही होती थी। बछिया पैदा होने के बाद अब सारा परिवार ही क्रिसमस के लिए जा सकता था और एक रात बाहर ठहर सकता था, क्योंकि दूध दुहने की जगह यह बछिया ही दूध पी लेगी।

माँ ने फलो का एक केक बनाया। जोडी ने उसे अखरोटो के बीज निकालकर दिए। इसे बनाने मे पूरा दिन ही लग गया। तीन दिन तक यह केक ही उनका सब ध्यान खीचता रहा। एक दिन बनाने मे, एक दिन पकाने मे और एक दिन इसकी प्रशसा मे बीत गया। जोडी ने इतना बड़ा केक कभी नही देखा था। उसकी माँ अभिमान से फूली नहीं समाती थी।

वह बोली, "मैं खरीदने बहुत कम जाती हूँ, और जब जाती हूँ तो खाली हाथ आना पसन्द नही करती।"

पैनी ने केक बनाने पर उसी शाम उसे काली अल्पका भेंट कर दी। माँ ने उस पर और कपडे पर एक साथ ही निगाह डाली। वह फूट पडी, और अपने अँगरखे को अपने सिर पर डालकर आगे-पीछे हिलती हुई रोने लगी, मानो उसे बहुत शोक हुआ हो। जोडी चौक गया। उसे लगा, वह निराश हुई है।

पैनी उसके पास गया और उसके सिर को थपथपाते हुए बोला, "यह मेरी इच्छा की कमी के कारण नही है कि मैं तुम्हारे लिए सदा ऐसे नही करता।"

जोडी समझ गया कि वह बहुत प्रसन्न थी। उसने अपनी आँखे पोछी, अल्पका को अपनी गोदी मे रखा और इसे बहुत देर तक पकडे बैठी रही। साथ ही कभी-कभी इसे थपथपाती रही।

वह बोली, "अब मुझे काले साँप की तरह जल्दी करनी होगी, ताकि इसे समय रहते सी डालूं।"

उसने दिन और रात तीन दिन तक लगातार काम किया और तब उसकी आँखो मे सन्तोप से चमक उठी। उसने पैनी से भी सहायता ली। घुटनो के बल झुककर वह निश्चित दिशाओ मे पिन लगाती गई। जोडी और फ्लैग खिचे-से देखते रहे। पोशाक बनते ही एक सफेद कपडे मे लपेटकर उसे लटका दिया गया। क्रिसमस से चार दिन पहले बक उधर रुका। वह हँसमुख था और पैनी ने समझ लिया कि उस पर अविश्वास करना गलत था। बूढे रीछ ने फौरेस्टरो की ज़मीन पर हमला किया था और लगभग तीन मन के एक बडे सूअर को घास के मैदान के पास मार डाला था। मरने से पहले सूअर ने भी काफी ज़बरदस्त लडाई की थी। यह लडाई बहुत भयकर हुई थी। चारो ओर गजो तक ज़मीन उखड गई थी। सूअर का एक दाँत टूटा हुआ था और दूसरा भालू के कुछ बालो मे लिपटा-सा वही पडा था।

बक बोला, "इसी समय उस पर हमला हो सकता है, क्योकि वह घायल है।"

फौरेस्टरो को स्वय एक दिन बाद इस घटना का पता चला। तब उसका पीछा होना असम्भव था। पैनी ने उसे सूचना के लिए धन्यवाद दिया।

वह बोला, "मैं अपनी पशुशाला मे उसके लिए जाल फैलाने की सोच रहा हूँ। वह इससे डर जाएगा। हम नदी पार क्रिसमस के लिए जाना चाहते हैं। क्या तुम भी आओगे ?" कहकर वह हिचकिचाया।

बक भी हिचकिचाकर बोला, "मेरा अनुमान नही है। हम वोलूसिया के लोगो के साथ अधिक मूर्खता नही करना चाहते। अगर हमने शराब न पी हुई हो, तो हमे जाने मे कोई आनन्द नही। लेम वहाँ फिर ओलिवर के किसी दोस्त से लडाई न ले बैठे ? मेरा अनुमान है कि हम या तो घर पर ही, या फोर्टगेट्स पर शराब पीकर क्रिसमस मनाएँगे।"

पैनी ने चैन की साँस ली। अगर फौरेस्टर लोग जाते और क्रिसमस के अच्छे उत्सव मे पहुँचते, तो उन लोगो को अधिक दुख ही होना था।

पैनी ने अपने भालू फँसाने वाले जाल को तैल वगैरह लगाया। जाल लगभग छ फुट चौडा था। इसका भार एक मन के लगभग था। इसकी जजीरो का भार ही चौदह सेर के लगभग था। उसने गाय और बछडे को घुडसाल मे बाँधकर दरवाज़े को बाहर से बन्द कर दिया। अगर कही वह बूढा रीछ आया भी और क्रिसमस नई बछिया से मनाना चाहे भी तो उसे पहले जाल पार करना पडेगा। दिन बडे काम मे लगे रहकर बीत गया। जोडी ने माँ के लिए बनाया हार फिर से साफ किया। उसे उम्मीद थी कि माँ इसे अपने नए सूट के साथ पहनेगी। पैनी को भेट देने के लिए उसके पास कुछ न था। बडा चिन्तित और परेशान होकर वह दोपहर बाद नीचे की ओर गया जहाँ बाँस और सरकण्डे उगे हुए थे। एक बडा सरकण्डा उसने काटा और उसमे से पाइप की नली बनाई। तब एक भुट्टे मे से पाइप के सामने की चिलम बनाकर उसने उसमे लगा दी। पैनी ने कभी उसे बताया था कि यहाँ के रहने वाले पुराने निवासी इन्ही सरकण्डो से अपने पाइप बनाते थे। पैनी की भी अपनी इच्छा ऐसा ही पाइप बनाने की थी। उसे फ्लैग के लिए कुछ भी न सूझा। उसने मन ही मन सोचा कि फ्लैग केवल रोटी का एक टुकडा ही फालतू पाकर खुश हो जाएगा। वह उसके लिए सदा हरी रहने वाली

कुछ झाडियो से एक जजीर-सी बना देगा।

उस रात जोडी के सो जाने के बाद भी पैनी कुछ देर तक जागता रहा। वह कुछ चीज़ चुपचाप ही बनाता रहा, जिसमे बार-बार कुछ ठोकने-पीटने की आवाज आ रही थी। उसे ये तीन दिन तीन महीनो के बराबर लगे। इन रातो मे किसी ने भी कभी भी कोई आवाज नही सुनी। पैनी जब सवेरे गाय को दुहने पशुशाला की ओर गया, तब और बछडे के बँधने की जगह, उसे खोलकर माँ के पास जाने के लिए छोडने के लिए, गया तो वहाँ से बछडा गायब हो चुका था। उसने सोचा कि शायद वह चारो ओर की छडें तोडकर भाग गया। पर वे सब छडें ठीक थी। वह पशुशाला की गीली मिट्टी की ओर गया और निशानो को देखने लगा। यहाँ मनुष्य, घोडे और गाय के उलझे निशानो के ऊपर एकदम सीधे निशान उसी बूढे रीछ के पडे हुए थे। यह खबर लेकर पैनी घर आया। वह क्रोध और निराशा से भरा हुआ था।

बोला, "मुझे इसका शिकार करना ही पडेगा। इस बार मुझे उसका जैक्सनविले तक भी पीछा करना पडा, तो भी मैं जाकर उसका शिकार करूँगा। या तो वही रहेगा या मैं!"

वह एकदम ही अपनी बन्दूक को तेल देने और कारतूस तैयार करने मे जुट गया। गम्भीर होकर वह जल्दी-जल्दी काम करने लगा।

पत्नी से बोला, "एक थैले मे कुछ रोटी और आलू रख देना।"

जोडी ने धीरे से पूछा, "पिताजी, क्या मै भी साथ चल सकता हूँ?"

"अगर तुम मेरे साथ-साथ चल सको और इधर-उधर की फालतू बातें न पूछो तो चल सकते हो। अगर तुम्हे लगे कि तुम थक गए हो, तो जहाँ मर्ज़ी हो लेट जाना या लौट आना। मै रात होने से पहले कही नही रुकूँगा।"

"मुझे फ्लैग को बन्द करना होगा या साथ ले चलूँ?"

"मुझे मतलब नही कि कौन पीछे चलता है, पर रास्ता खराब है और मेरे से किसी के लिए भी दया की आशा मत रखना।"

वह धुआँघर तक गया और मगरमच्छ की पूँछ के कुछ टुकडे कुत्तो के लिए काट लाया। तैयार होकर वह पशुशाला की ओर निकल पडा और

निशानो का पीछा करने लगा। उसने कुत्तो को सीटी बजाकर बुलाया और जूलिया को निशानो पर छोड दिया। भौकने के साथ ही वह चल पडी। जोडी उसकी ओर डर से देखता रहा। उसकी बन्दूक भरी हुई नही थी, नाही उसने जूते पहने थे। उसको अपनी बण्डी का भी पता नही था। पैनी की पीठ को देखकर वह समझ गया कि उसको रुकने के लिए कहना उचित नही था। जल्दी-जल्दी मे उसने अपनी सब चीजें इकट्ठी की। उसने अपनी मां को रोटी और आलू अपने थैले मे डालने के लिए वही से चिल्लाकर कहा।

वह बोली, "लगता है तुम भी जरूर उलझोगे। तुम्हारे पिता ने तो उस भालू से अपने सीग उलझा लिए हैं, यह मे जानती हूँ।"

उसने फ्लैग को बुलाया और अपने पिता के पीछे पागल होकर दौड पडा। उसकी चाल बहुत तेज थी। उसका सांस पिता तक पहुँचते-पहुँचते फूल गया। नई खोज मे जूलिया बहुत प्रसन्न थी। उसकी आवाज़, उसकी सुन्दर पूंछ, सरलता-भरी छलाँग, साफ बता रही थी कि इस काम मे वह बहुत प्रसन्न थी। फ्लैग भी अपनी एडियो पर उछलता हुआ उसके साथ-साथ दौड रहा था।

पैनी मुसकराकर बोला, "अगर रीछ ही उसके सामने न पड जाय तो यह घबराता नही दीखता।"

पश्चिम की ओर एक मील जाकर उन्होने बछडे की बची-खुची चीज़ें देखी। भालू, फौरेस्टरो के सूअर की चोट से अभी उठा ही था। उसने इसे पेट-भर खाया दीखता था। यह शव शाखो और पत्तो से अच्छी तरह ढँका हुआ था।

पैनी बोला, "वह अभी बहुत दूर नही होगा और शायद जल्दी ही लौटकर आने वाला होगा।"

पर जानवर किसी नियम को मानकर नही चलते। वे फिर पीछा करने लगे। यह उन्हे पहले फौरेस्टरो की ओर, फिर वहाँ से उत्तर और पश्चिम की ओर, और फिर वहाँ से होपकिन्स मैदान की ओर ले गया। दक्षिण-पश्चिम की ओर से आने वाली हवा बहुत तेज थी और पैनी का अनुमान था कि भालू उनसे बहुत दूर नही था, पर उसने इन्हे सूंघ अवश्य लिया था।

चाल इतनी तेज़ थी और रास्ता इतना लम्बा कि दोपहर से पहले पैनी को भी आराम के लिए रुकना पड गया। कुत्ते पीछा करना चाहते थे, परन्तु उनकी बगले और जीभ बता रही थी कि वे पूरी तरह थक चुके थे। पैनी सनावरो के एक ऊंचे टापू पर रुका। यहाँ एक साफ जोहड था, जिसमे कुत्ते पानी पी सकते थे। वह धूप मे ही ज़मीन पर लेट गया। बिना बोले वह पीठ के बल लेटा रहा। उसकी आँखे बन्द थी। जोडी भी उसकी बगल मे ही लेटा हुआ था। कुत्ते अपने पेट के बल लेटे हुए थे। फ्लैग बिना थके इधर-उधर उछलता फिर रहा था। जोडी ने अपने पिता को देखा। वे कभी इतनी तेज और कठिन रूप मे नही आए थे। इस शिकार मे पीछा करने की खुशी नही थी और न ही खाली समय मे दिखाई देने वाली सोचने की ताकत ही यहाँ नज़र आ रही थी। इस शिकार मे तो ईर्ष्या और बदले की भावना थी, खुशी की नही।

पैनी ने अपनी आँखे खोली और बगलो पर झुक गया। उसने अपना थैला खोला और भोजन बाहर निकाला। जोडी ने भी अपना भोजन निकाला। बिना बोले दोनो खाने लगे। बिस्कुट और भुने हुए ठण्डे आलू उन्हे सुगन्धहीन लगे। मगरमच्छ के मांस के कुछ टुकडे पैनी ने कुत्तो को डाल दिए। उन्होने सन्तोष के साथ उन्हे चबा लिया। उनके लिए पैनी का शिकार, भले ही वह तेज़ चाल से हो या सादी चाल से, एक ही महत्त्व रखता था। शिकार मे वही तेज़ पीछा और अन्त मे लडाई उन्हे हमेशा मिलती थी। पैनी सीधा बैठा और फिर खडा हो गया। बोला, "अच्छा, अब चलने का समय आ गया है।"

यह आराम बहुत थोडी देर रहा। जोडी के जूते पांव मे भारी लगने लगे। पीछा करते हुए वे एक जगल मे पहुँचकर फिर बाहर आ गए और लौटकर पुन· हौपकिन्स मैदान मे पहुँचे। बूढा रीछ कुत्तो को छकाने की सोच रहा था। उनकी गन्ध उसे अब भी मिल रही थी। दोपहर बाद भी पैनी को दो जगह आराम के लिए रुकना पडा। वह गुस्से से भर गया।

वह बोला, "क्या बुरा समय आ गया है ? कभी मैं एक बार भी नही रुकता था।"

हर बार उसकी चाल और तेज़ हो जाती थी। जोडी उसका पीछा

करते-करते थक गया, पर वह कह नही सकता था। केवल फ्लैग हँसी-मजाक करता भाग रहा था। उसके लम्बे पैरो के लिए यह लम्बा सफर एक मामूली बात थी। यह पीछा उन्हे जार्ज झील तक ले गया और वहाँ से दक्षिण और फिर पूरब की ओर एकदम मुड पडा। यहाँ आकर यह दलदल मे खो गया। सूर्य छिप रहा था और छाया मे काफी नीचे तक उतर आया था।

पैनी बोला, "ओह! वह लौटने ही वाला है और फिर उस बछडे को खाएगा। हमे भी घर लौटकर उसे मूर्ख बनाना चाहिए।"

घर तक का रास्ता बहुत दूर नही था। पर जोडी को लगा जैसे वह कभी घर नही पहुँच सकेगा। किसी और शिकार पर वह पैनी को कह देता और वह उसकी प्रतीक्षा भी करता, पर आज कहने की हिम्मत नही थी। उसका पिता घर की ओर पहले जैसी तेज़ी के साथ ही बढ रहा था। अँधेरा होने तक वे घर मे पहुँच गए। किन्तु जाते ही पैनी उस भारी जाल को लेकर बछडे की जगह तक पहुँच गया। उसने जोडी को घोडे के पीछे की ओर चढने दिया। वह स्वय सीज़र पर बिना चढे ही चलता रहा। जोडी ने अपनी दर्द-भरी टाँगें आराम से लम्बी की। फ्लैग को आनन्द नही रहा था और वह रसोई के दरवाज़े तक ही घूमने लगा। जोडी ने पूछा, "पिता जी, क्या आप थक नही गए ?"

"अगर मैं इस तरह पागल होऊँ, तब मैं नही थकता।"

जोडी ने मशाल जलाई और पैनी ने उस कुचले हुए शव को छडो से उठाकर जाल पर रख दिया। वह नही चाहता था कि मनुष्य की गन्ध भी वहाँ रहे और उस पर उसने पत्ते आदि एक चीड की शाखा से ढँक दिए। पैनी अब घर की ओर लौट आया और सीजर को घर लौटने के लिए उसने खुला छोड दिया। घोडे को बाँधकर जब वह लौटा तो उसने देखा कि जोडी की माँ दूध दुह चुकी थी। वे सब घर मे गए। गर्म खाना मेज पर सजा पडा था। जल्दी-जल्दी थोडा सा खाना खाकर वह सोने चला गया।

वह बोला, 'ओरी ! क्या तुम मेरी पीठ पर चीते का तेल मल दोगी ?"

उसने तेज़ी से उसकी पीठ पर तेल मला। इससे उसे चैन मिला।

जोडी देखता रहा। पैनी ने अपना सिर तकिये पर कराहट के साथ रख दिया और बोला, ' बेटा, तुम पर कैसी बीती ? काफी कठिन रहा ?"

जोडी बोला, "खाने के बाद से मुझे ठीक लग रहा है।"

"ओरी ! देखा, लडके की ताकत पेट के साथ ही बढती और घटती है।"

' क्या ?"

"मुझे पौ फटने से पहले ही नाश्ता चाहिएगा।"

उसने आँखे बन्द की और गहरी नीद सो गया। जोडी भी बिस्तर पर जाकर लेटा। कुछ क्षण उसे भी दर्द होता रहा। तब वह भी गहरी नीद सो गया। अब उसे माँ की रसोई मे सवेरे की तैयारियो की आवाज़ नही आ रही थी। वह सवेरे कुछ देर तक सोता रहा। उठने पर अब भी ऊँघ बाकी थी। उसने शरीर को फैलाया। ऐंठन मौजूद थी। रसोई से उसे पिता की आवाज़ सुनाई दे रही थी। पैनी पहले दिन जैसी ही कठोर मानसिक स्थिति मे था। उसने उसे बुलाया तक नही। अपने बिस्तरे से निकलकर उसने कमीज़ और पाजामा पहना और उनीदा-सा रसोई की ओर बढा। उसके जूते हाथ मे थे और उसके उलझे हुए बाल आँखो तक झुक रहे थे।

पैनी बोला, "नमस्कार, बेटा ! तुम आगे के लिए तैयार हो ?"

उसने सिर हिलाया और स्वीकृति दी।

पैनी बोला, "हाँ, यही हिम्मत कहलाती है।"

नीद के कारण वह अधिक नही खा सका। आँखे मसलकर वह खाने लगा।

वह बोला, "पिताजी, इतनी जल्दी दिखाई तो न देगा !"

"जब तक हम वहाँ पहुँचेंगे तब भी रोशनी नही होगी। मेरी इच्छा है कि अगर उसे हम पर सन्देह हुआ तब हमे उस पर सरकते हुए बढना होगा।"

पैनी उठकर मेज़ पर एक मिनट के लिए झुका और फिर हँसकर बोला, "मैंने सोचा था कि कही मेरी कमर टूटकर दोहरी न हो गई हो, पर मैं ठीक हूँ।"

वह अन्धकारपूर्ण सवेरा बहुत ठण्डा था। उसकी पत्नी ने जैक्सनविले से मँगाई काली ऊन की शिकारी पोशाकें तैयार कर दी थी। इस शिकार मे

पहनने के लायक वे न थी। इतनी अच्छी पोशाक को उन्होने पहना तो नही पर चीड के जगल मे गुज़रते हुए जब उन्हे ठण्ड लगी तब वे पछताए भी अवश्य। कुत्ते अब भी ऊँघ रहे थे और चुपचाप पीछे-पीछे वढ रहे थे। पैनी ने अपनी अँगुली मुँह मे दी और उसे यह देखने के लिए वाहर निकाला कि शायद वहुत हल्की-हल्की हवा चल रही हो। परन्तु हवा विलकुल नही चल रही थी। वहाँ से वह सीधा जाल की ओर वढा। यह अपेक्षाकृत खुली जगह पर था। वह इससे सौ गज दूर ही रुक गया। पूरव की ओर पौ फटने लगी थी। उसने कुत्तो को हौले से थपथपाया और वे जमीन पर झुक गए। जोडी ठण्ड के मारे सुन्न पड गया था। पैनी भी अपने पतले कपडो और फटी हुई वण्डी मे काँप रहा था। जोडी को हर ठूंठ पर और हर पेड के पीछे वही वूढा रीछ दीख रहा था। वहुत धीमे-धीमे सूर्य ऊपर उठा। पैनी ने वहुत धीमी आवाज मे कहा, "अगर वह फँसा होगा तो अव तक मर चुका होगा, क्योंकि मुझे कोई भी आवाज़ नही सुनाई दे रही।"

अपनी वन्दूकें उठाये हुए वे आगे सरकने लगे। जाल पहली शाम जैसा ही फैला हुआ था। अभी प्रकाश इतना नही था कि निशान फिर से देखे जा सकें, ताकि जान सकें कि कही वह भालू यहाँ आया भी है या नही? उन्होने अपनी वन्दूकें एक पेड के सहारे टिकाईं और अपनी वाँहो और टाँगो को हिला-डुलाकर गर्म होना चाहा।

पैनी वोला, "अगर वह आया होगा तो वहुत दूर न होगा। जूलिया उछलकर उसे एकदम पकड लेगी।"

सुवह का प्रकाश गर्म न था, पर फैलने अवश्य लगा था। पैनी आगे गया और जमीन पर झुका। जूलिया ने भी चुपचाप सूँघा।

पैनी वोला, "वुरा हो मेरा, सचमुच वहुत वुरा हो!"

जोडी ने भी देखा कि निशान एक दिन पुराने ही थे।

पैनी वोला, 'वह यहाँ कही भी नही आया। अपने वचाने के लिए वह कभी किसी नियम का पालन नही करेगा।"

सीधे होकर उसने कुत्तो को वुलाया और फिर से घर आ गया। वह वोला, "कुछ भी हो, अव हमे यह तो पता है कि कल हमने उसे कहाँ छोडा था?"

घर पहुँचने तक वह फिर न बोला। वहाँ अपने कमरे मे गया और अपने शिकार के नये कपडे पुराने कपडो के ऊपर ही पहन लिए। रसोई को देखकर वह बोला, "ज़रा मेरे लिए आटा, सूअर का माँस, नमक, कॉफी और पकी हुई चीज़ें एक थैले मे रख दो। कुछ चीथडे भी आग जलाने के लिए रख देना।"

जोडी ने भी उसके साथ-ही-साथ अपनी तैयारी जारी रखी।

उसने पूछा, "मुझे भी क्या अपने नये कपडे पहन लेने चाहिएँ ?"

माँ दरवाज़े तक आई और थैला भर लाई।

पैनी एक क्षण को रुका और बोला, "बच्चे, तुम्हारा स्वागत है। पर यह बात समझ लो कि यह शिकार आनन्ददायक नही होगा। ठण्ड का मौसम है। रास्ता बहुत सख्त है और ठण्ड मे ही कही रुकना पडेगा। अब मैं भालू को बिना पकडे घर नही लौटूंगा। अब भी अगर तुम चलना चाहो तो अवश्य चलो। चलोगे ?"

"हाँ, ज़रूर।"

"तो फिर तैयार हो जाओ।"

पत्नी ने अपनी नई पोशाक की ओर देखा और पति से बोली, "तो क्या आज की रात तुम बाहर रहोगे ?"

"बहुत अधिक यही सम्भावना है। वह मुझसे एक रात आगे है। हो सकता है, कल रात को हम उसे पकड ले या एक सप्ताह भी लग सकता है।"

उसने जैसे-तैसे सहा और धीमे से बोली, "कल क्रिसमस से पहली शाम है !"

"मैं क्या करूं ? मेरे सामने बिलकुल ताज़ा निशान हैं और मुझे पीछा करना है। लाचार हूँ।"

वह उठ खडा हुआ और उसने फीते आदि कसे। उसकी आँखें पत्नी के उदास चेहरे की ओर दौड गई।

वह बोला, "क्यो, कल क्रिसमस की शाम है न ? तुम घोडागाडी को नदी तक दिन ही दिन मे ले जाने मे डरोगी तो नही ?"

"नही, दिन मे तो नही।"

"तो फिर अगर हम ठीक समय तक न पहुँचे, तो गाडी जोतकर तुम चली जाना। अगर किसी भी प्रकार मौका मिला तो हम वहाँ जरूर पहुँचेगे। तुम जाने से पहले दूध दुह लेना। अगर हम वहाँ न पहुँचे तो तुम अगली सवेरे आना और फिर दुह लेना। यही एक अच्छा रास्ता है।"

उसकी आँखो मे अब भी आँसू थे, पर वह बिना कुछ कहे चली गई और थैला भर दिया। जोडी अपना मौका ढूँढता रहा, जब उसकी माँ पिता के लिए माँस लेने धुआँघर तक गई। उसने काफी सारा आटा निकाला और अपने थैले मे फ्लेग के लिए छिपा लिया। यह थैला चीते की खाल का बना हुआ था। वह इसे पहली बार ले जाने लगा था। उसने इसे छूकर देखा कि यह रैकून की खाल के बने पहले थैले जैसा मुलायम न था, पर तो भी इसके सफेद और नीले धब्बे बहुत ही अच्छे लग रहे थे। माँ माँस लेकर लौटी और उसने थैला पूरा भर दिया। जोडी हिचकिचाता खडा रहा। वह क्रिसमस के लिए बहुत प्रतीक्षा करता रहा था। अब वहाँ न जा सकेगा। अगर वह साथ जाता तो उसकी माँ बहुत खुश होती और ऐसा करने के लिए उसे निस्वार्थ भी समझा जाता। पैनी ने थैला अपने कन्धे पर लटकाया और अपनी बन्दूक भी कन्धे पर उठा ली। तभी जोडी भी तयार हो गया। उसे दुनिया का कोई भी मेला रोक नही सकता था। वे दोनो ही उस बूढे रीछ को मारने के लिए निकल पड़े। उसने वह थैला अपने कन्धे पर लटकाया और अपनी बन्दूक लेकर अपने पिता के पीछे-पाछे खुशी-खुशी बढ चला। वे उत्तर की ओर सीधे उस राह पर गए, जहाँ पहली शाम को पहुँच चुके थे। फ्लेग झाडियो मे घुस गया। जोडी ने सीटी बजाई।

जोडी ने पूछा, "पिता जी, चाहे क्रिसमस हो, तब भी शिकार आदमी के लिए पहली चीज होती है! क्यो, है न यही बात?"

"यह आदमी का ही काम है।" पैनी ने कहा।

निशान अब भी ताजे थे और जूलिया बिना कठिनाई के उनका पीछा करने लगी। जहाँ कल उन्होने छोड़ा था वहाँ से कुछ आगे जाकर ही वे रुक गए थे और तब एकदम ही उत्तर की ओर मुड पडे थे।

पैनी ने कहा, "अच्छा ही हुआ कि हमने कल उसका पीछा नही किया। वह दूसरे गाँवो की ओर निकल गया है।"

वहाँ से फिर पश्चिम की ओर वे मुडे और फिर हौपकिन्स मैदान की ओर और तब गीली दलदल मे! अब पीछा करना कठिन था। जूलिया पानी मे ही कूद पडी। उसने बार-बार इसको चखा और सूँघा, और तब उसने फिर एक ओर अपनी नाक उठा ली। वह प्रयत्न करने लगी कि उसके जाने की दिशा को उसके बालो की रगड की गन्ध से जान सके। अब वह फिर चलने लगी। कभी-कभी गन्ध बिल्कुल समाप्त हो जाती थी। तब पैनी सख्त जमीन पर आकर दलदल के निशानो की दिशा मे ही बढता हुआ वहाँ तक आ जाता था, जहाँ से फिर वे निशान आगे चल रहे हो। अगर वह जूलिया से पहले वहाँ पहुँच जाता तो वह उसे बुलाकर बढने के लिए कहता।

एक जगह उसने यह निशान पाए और बोला, "हाँ, बेटी! यहाँ देखो। वह जा ही रहा है! वह जा रहा है! पकडो उसे!"

रिप अपने छोटे-छोटे कदमो से पैनी के पीछे चलता रहा। फ्लैग सभी जगह पहुँच रहा था।

जोडी ने पिता से पूछा, "पिताजी, फ्लैग के कारण कोई बाधा तो नही? मुझे तो ऐसा नही दीखता।"

"नहीं, बिलकुल नही। अगर इसे भालू भी सूँघ ले, तो वह इसका ध्यान नही करेगा और शायद लौटकर इस पर टूटेगा भी नही।"

पैनी की उदासी के बाद भी इस शिकार मे वही पुराना मज़ा आने लगा। दिल प्रसन्न और उजला था।

पैनी ने जोडी की पीठ थपथपाई और बोला, "यह शिकार क्रिसमस की गुडियो के खेल से अच्छा ही है। क्यो?"

"हाँ, मुझे भी ऐसा ही दीखता है।"

दोपहर को ठण्डा खाना रोज के गर्म खाने से भी अधिक अच्छा लगा। कडी धूप मे ही बैठकर उन्होने खाना खाया और आराम किया। अपनी बण्डियाँ उन्होने खोल दी। जब वे फिर चलने के लिए उठे तो उन्हे पहले अपने थैले कुछ भारी लगे, पर बाद मे वे फिर ठीक लगने लगे। पहले लगा कि वह रीछ फौरेस्टर अथवा उनकी अपनी जमीन का एक लम्बा चक्कर काटेगा या फिर जगल के पार ओक्लावाहा नदी के नए मैदानो की

और चरने निकल जाएगा।

पैनी बोला, "अगर फौरेस्टरो के सूअरो ने उसे चोट पहुँचाई ही है, तो वह इतना लम्बा रास्ता नही काटेगा।"

दोपहर बाद वे निशान बडे बेतुके ढग से फिर पूरब की ओर दलदल मे मुड पडे। अब राह कठिन थी। पैनी बोला, "यह बात मुझे पिछली वसन्त की याद दिला देती है, जब तुमने और मैंने उसका पीछा जूनिपर दलदल मे से होते हुए किया था।"

दोपहर के काफी देर बाद उसने बताया कि वे नमक के सोते वाली धारा के निचली ओर नज़दीक ही थे। यहाँ एकदम ही जूलिया ने जीभ उठाई।

पैनी बोला, "वह ऐसी ही जगह आराम कर रहा होगा।"

जूलिया एकदम भाग पडी और पैनी भी उसके पीछे भागने लगा। वह बोला, "वह उस पर उछल पडी है।"

जोडी के सामने पीछा कुछ ऐसे हुआ जैसे घने जगल मे कोई तूफान आ गया हो। पैनी चिल्ला रहा था, "बेटी, पकडो! कूदो उस पर! शाबाश!"

रीछ बेतहाशा भाग रहा था। वह घने जगल मे होकर पेडो को तोडता आगे बढा। कुत्तो के लिए यह कठिन था। वह जैसे भाप से चलने वाली किश्ती हो और झाडियाँ और कँटीली बेलें उसके लिए पानी की लहर से अधिक रुकावट न हो। पैनी और जोडी पसीने से तर हो रहे थे। जूलिया ने फिर एक बार जीभ दिखाई। वह निराश थी। दलदल इतनी गीली थी कि वे सब अपने जूतो तक उसमे डूब गए और बहुत धीमे-धीमे आगे बढे, पर सहारे के लिए कोई भी चीज उनके पास न थी। सरू यहाँ उगे हुए थे। उनके घुटने बार-बार फिसल पडते थे। जोडी अपनी कमर के बल गिर गया। पैनी ने झुककर उसे सहारा दिया। फ्लैग बायी ओर से होते हुए ऊँची ज़मीन खोजने के लिए चक्कर काटने के लिए चला गया। पैनी सांस लेने के लिए रुका। उसका सांस बहुत भारी चल रहा था। वह बोला, "लगता है, वह हमे धोखा दे जाएगा।"

जब उनका सांस ठीक चलने लगा, तब वह फिर आगे बढा। जोडी

अब पीछे पड गया था। परन्तु हरे मैदान के परे उसे फिर से रास्ता ठीक लगा और वह साथ मिल गया। झाडियाँ तेजपात, नीवू और खजूर आदि की थी। हरे मैदान सीढियो की तरह थे। उनके बीच-बीच मे साफ, किन्तु भूरे रग का, पानी वह रहा था। सामने ही जूलिया तेजी से भौकी।

पैनी बोला, "पकड लो उसे ! शाबाश ! पकड लो।"

अब आगे का जगल घास मे पलट गया। यहाँ से बूढा रीछ आँखो के सामने ही लपकता हुआ दीख रहा था। ऐसे लगता था, जैसे एक काला ववण्डर सामने जा रहा हो। जूलिया तेज़ी से उसके पीछे उछली। सामने ही नमकीन सोते की धारा का तेज पानी दिखाई दे रहा था। भालू धारा मे कूद पडा और दूसरे किनारे की ओर वढा। पैनी ने वन्दूक उठाई और दो गोलियाँ दाग दी। जूलिया एक ओर को खिसक गई। वह कमर के वल वैठ गई और उसने अपनी नाक ऊँची उठाई। वह वडे शोक मे रो रही थी, निराश और दुखी। दूसरे किनारे रीछ होले-होले चढ रहा था। पैनी और जोडी उस गीले किनारे पर होकर वढे। उन्हे केवल एक काली गोल-सी शक्ल ही दिखाई दी। पैनी ने जोडी की वन्दूक ली और उसके पीछे फिर दाग दी। भालू तेज़ी से उछला।

पैनी चिल्लाया, "मैने उसे घायल कर दिया !"

भालू अपनी राह पर वढता रहा। ज्योही वह घनी झाडियो मे से होकर निकला, शाखो के टूटने की आवाज़ आई। पर उसके वाद आवाज़ शान्त हो गई। पैनी ने बहुत उतावला होकर कुत्तो से पीछा करने को कहा, परन्तु चौडी धारा को पार करने से उन्होने इन्कार कर दिया। निराशा मे उसने अपने हाथ पटके और अपनी कमर के वल उस गीली ज़मीन पर ही वैठकर सिर हिलाने लगा। जूलिया उठी और पैर के निशानो को किनारे पर उसने सूंघा और फिर आकर वह अपनी ही जगह वैठ गई। जोडी की नस-नस मे सनसनी दौड गई। उसे लगा कि शिकार समाप्त हो गया है। रीछ इस वार फिर धोखा दे गया है।

पर, उसे तव अचरज हुआ जब पैनी ने उठकर अपना पसीना पोछा और दोनो वन्दूके फिर से भरी और तव वहाँ से उत्तर-पश्चिम की ओर धारा के ऊपरी किनारे की ओर वढने लगा। उसने सोचा कि उसका पिता

घर लौटने का कोई कम उलझन-भरा रास्ता खोज रहा है। अपने बायी ओर चीड के खुले जगल दीखने पर भी पैनी वढता ही रहा और वह मुड़ा नही। जोडी कोई प्रश्न न कर सका। फ्लैग का दीखना वन्द हो गया था और वह उसके लिए भी चिन्तित था। यह पहले ही तय हो चुका था कि वह कोई भी शिकायत न करेगा। पैनी की पतली पीठ चिन्ता और उत्साह की कमी के कारण झुक-सी गई थी। जोडी अपने भारी पाँवो और दर्द करती टाँगो के साथ पिता के पीछे चलता रहा।

पैनी जैसे अपने से ही वात करता हुआ वोला, "मुझे याद पडता है कि उसका घर यही था।"

धारा का किनारा धीरे-धीरे ऊँचाई पर उठने लगा। सनावर और चीड सूर्य को ढँकने लगे। वे धारा के वहुत ऊपर पहुँच गए थे। यहाँ चोटी पर एक छोटा घर वना हुआ था और इसके चारो ओर साफ किया हुआ एक खेत था। पैनी रास्ता ढूँढता हुआ उधर वढा और घर तक आ गया। दरवाजा वन्द था। चिमनी मे से धुआँ नही आ रहा था। कोई खिडकी भी नही थी। खिडकी की जगह कही-कही लकडी के छोटे-छोटे दरवाजे-से थे। ये भी सव वन्द थे। पैनी कमरे के पीछे गया। यहाँ एक छोटा दरवाजा खुला था। उसने अन्दर झाँका।

वह वोला, "वह यहाँ नही है, पर फिर भी हमे अन्दर चलना ही है।"

जोडी ने आशा से पूछा, "क्या यहाँ से आज ही रात घर लौटेंगे?"

पैनी ने मुडकर उसकी ओर देखा और वोला, "है, आज की रात घर लौटेंगे? मैने तुम्हे वता दिया था कि मैने रीछ को मारना ही है। तुम चाहो तो घर लौट सकते हो।"

उसने अपने पिता को कभी इतना कठोर होते न देखा था। वह उसके पीछे चुपचाप चलने लगा। कुत्ते घर के पास मिट्टी मे लेट गए थे। पैनी लकडियो के ढेर पर गया और लकडियाँ छील लाया। उसने वाँह भर एक गट्ठर खिडकी की राह अन्दर डाल दिया। अव वह स्वय भी इसमे से अन्दर कूद गया और उसने रसोई का दरवाजा अन्दर से खोल दिया। जोडी लकडियो के ढेर तक गया और वहाँ से तेल वाली लकडियो के कुछ टुकडे काट लाया और उन्हे उसने फर्श पर रख दिया। एक चूल्हा और लोहे की

पतीली वही अँगीठी पर पडी थी ।

पैनी ने आग जलाई और एक छोटा पतीला उस पर रख दिया । उसने अपना थैला खोला और उसमे से सूअर के मांस को निकालकर छोटे-छोटे टुकडे काट उसने पतीले मे डाल दिए । वे धीरे-धीरे पकने लगे । वह बाहर और खुले कुएँ मे से पानी की एक बाल्टी भर लाया । एक आलमारी मे से उसने कॉफी का एक डिब्बा उठाया और उसमे कॉफी डाल करके उसने चूल्हे के पास ही रख दिया । वही से एक बर्तन लेकर उसने मक्की का हलवा बनाया और दो भुने हुए ठण्डे आलू उसने आग के पास गर्म होने के लिए रख दिए । ज्योही मांस पकने लगा, उसने मक्की का आटा चर्बी मे मथ कर एक मस्त रोटी के रूप मे बना लिया और तब उसे एक तरफ पूरा सिकने के लिए रख दिया । कॉफी उबलने लगी थी । उसने इसे भी एक किनारे रख दिया । आलमारी मे से प्याले और तश्तरियाँ निकालकर उसने मेज पर फैला दिए ।

तब उसने जोडी को कहा, "आओ बेटे, सब तैयार है ।"

उसने भूख के कारण बहुत जल्दी-जल्दी खाया और जो कुछ भी बचता दीखा, उसे कुत्तो के लिए बाहर ले गया और साथ ही हरेक के लिए दो-दो टुकडे मगरमच्छ के मांस के भी ले गया । जोडी शाम की ठण्ड से भी अधिक ठण्डा-सा हो गया था । उसे पिता का चुप रहना अच्छा नही लग रहा था । ऐसा लगा जैसे वह किसी पराए आदमी के साथ खा रहा हो । पैनी ने पानी गर्म किया और प्याले और तश्तरियाँ धोकर फिर से अपनी जगह रख दी । कॉफी कुछ बच गई थी । उसने उसे फिर से भट्टी के पास ही रख दिया था और फर्श साफ कर दिया । वह बाहर गया और कुछ काई सनावर के एक पेड से इकट्ठी कर लाया । बाहर छत के नीचे कुत्तो के लिए उसने बिस्तर तैयार कर दिया । चुप और ठण्डी रात आती जा रही थी । वह बाहर से दो लट्ठे ले आया और उन्हे उसने आग मे डाल दिया, ताकि पीछे से उन्हे धक्का देकर जलते रहने दिया जाय । उसने अपना पाइप भरा और जलाया और तब आग के पास ही फर्श पर लेट गया । अपने थैले को उसने तकिए के रूप मे रख लिया ।

बहुत उदारता के साथ वह बोला, "बेटे, तुम भी ऐसे ही करो, तभी

ठीक है। हमे सवेरे बहुत जल्दी निकल चलना है।"

वह बहुत खोया-सा हुआ था। इसलिए जोडी की हिम्मत अब कुछ पूछने को पडी। उसने पूछा, "आपका खयाल है कि वह फिर यही लौटकर आएगा ?"

"नही, वह नही आएगा। हम उतनी प्रतीक्षा नही कर सकते। मेरा पूरा विश्वास है कि वह घायल हो चुका है। मैं इस नदी के ऊपरी सोतें तक जाकर इसे पार कर लूँगा और वहाँ से उस जगह तक आऊँगा जहाँ कल वह घनी झाडियो मे घुसा था।

"वह तो काफी लम्बा रास्ता है।"

"हाँ, है तो बहुत।"

"पिता जी!"

"हाँ, कहो!'

"आपका क्या अनुमान है, क्या पलंग को कोई नुकसान तो नही पहुँचा ?"

"तुम चलने से पहले मेरी कही गई बात भूले तो न होगे ?"

"नही, मैं भूला तो नही हूँ।"

पैनी ने कहा, "वह गुम नहीं हुआ। जगल मे कभी कोई हिरण गुम नही होता। अगर वह जगली न बन गया हो, तो वह अवश्य लौटेगा।"

"पिताजी, वह कभी भी जगली नही बनेगा। कभी नही!"

"इतना छोटा तो कभी नही! इस समय वह तुम्हारी माँ को तग कर रहा होगा। अच्छा, अब सो जाओ!"

"पिताजी, यह घर किसका है ?"

"कभी यह एक विधवा स्त्री का होता था, मैं बहुत दिन से यहाँ नही आया।"

"हमारे घुस आने का वह बुरा तो नही मानेगी ?"

"अगर पहले वाली ही औरत अब भी रहती है, तो वह बुरा नही मानेगी। मैं शादी से पहले उससे मित्रता के लिए यहाँ आता था। अच्छा, अब सो जाओ।"

"पिताजी!"

"अच्छा, अभी तुम्हारा एक और सवाल बाकी है ? पर अब इसके बाद मत पूछना। और अगर यह भी मूर्खतापूर्ण हुआ तो मैं बहुत बुरा रहूँगा।"

वह कुछ झिझका। प्रश्न क्रिसमस के उत्सव के लिए अगली रात बोलूसिया जाने का था। उसे लगा कि यह प्रश्न अच्छा नही। उस भालू के पीछे चलते रहना शायद इस जीवन मे समाप्त न होगा। उसने अपने विचार फिर फ्लैग की ओर मोड दिए। उसने उसे भूखा, खोया हुआ और चीते से पीछा किया जाता हुआ देखा। उसके बिना उसे अकेलापन लगने लगा। उसे सन्देह हुआ कि कभी माँ ने भी उसकी इतनी ही चिन्ता की है ? हालांकि वह इकलौता है। और तब इसी शोक मे वह गहरी नीद सो गया।

सुबह जब उसने आँगन मे किसी गाडी के पहियो की आवाज सुनी, तो उठ बैठा। उसने कुत्तो को भौंकते और किसी एक अजनबी कुत्ते को उत्तर देते सुना। वह बैठ गया। पैनी अपने सिर को हिलाता हुआ पहले ही खड़ा हो चुका था। वे काफी अधिक देर तक सोते रहे थे। कमरे के आस-पास गुलाबी धूप पड रही थी। आग जलकर अंगारे रह गई थी। लट्ठो के जले हुए किनारे अब भी भट्टी पर वैसे ही लटके हुए थे। हवा बर्फ जैसी ठण्डी थी। उनकी सांसें बाहर निकलकर बादलो जैसी जम रही थीं। ठण्ड उनकी हड्डियो तक मार कर गई थी। पैनी रसोई के दरवाज़े तक गया और उसने उसे खोला। सीढियो पर कदमो की आवाज़ आई और एक अधेड उम्र की औरत कमरे मे आई। उसके पीछे एक जवान लड़का चल रहा था।

वह अचरज मे डूबकर बोली, "हे भगवान ! यह क्या ?"

पैनी बोला, "नेली ! लगता है, तुम मुझसे पीछा नही छुडा सकती।"

"एज़रा बैक्स्टर ! अब तुम्हे निमन्त्रण की प्रतीक्षा करनी उचित थी।"

वह उस पर हँस पडा और बोला, "मेरे बेटे जोडी से मिलो।"

उसने एक दृष्टि जोडी पर डाली। वह स्वयं छोटी, भारी और गुलाबी रंग की सुन्दर स्त्री थी।

वह बोली, "यह तुमसे एकदम मिलता-जुलता है। यह मेरा भतीजा

आसा रैवल्स है।"

"क्यो बेटा! 'मंट रैवल्स' नही? मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ, मैं तुम्हे तब से जानता हूँ जब तुम बहुत छोटे थे।"

उन्होने हाथ मिलाए। आने वाला बच्चा भेड जैसा भोंदू लगा।

स्त्री बोली, "बैक्स्टर, तुम इतने सभ्य हो, फिर भी क्या मुझे बताओगे कि तुम आकर मेरे घर का इस तरह लाभ कैसे उठा रहे हो?"

उसकी आवाज़ मे मज़ाक था। जोडी को वह बहुत अच्छी लगी। उसे लगा कि कुत्तो की तरह औरतो की भी नस्लें होती हैं। इस स्त्री की नस्ल दबदी हुट्टो वाली ही थी। इससे आदमियो को प्रसन्नता होती है। कोई दो औरते एक ही जैसे शब्द बोलकर भी अलग-अलग अर्थ प्रकट करती हैं, वैसे ही जैसे दो कुत्ते एक जैसा भौंककर भी प्यार और भय को पैदा करते हैं।

पैनी बोला, "अच्छा, अब फिर आग जला दो। मेरा तो सांस ही जमा जा रहा है, बात करना तो दूर रहा।"

वह घुटने टेककर भट्टी के पास बैठ गया और आसा बाहर लकडियाँ लेने चला गया। जोडी भी उसकी सहायता करने गया। जूलिया और रिप नए कुत्ते के चारो ओर अपनी पूँछें उठाए घूम रहे थे।

आसा बोला, "तुम्हारे कुत्तो ने तो मुझे और चाची को डरा ही दिया था।"

जोडी इसका कोई उचित उत्तर न ढूंढ सका और जल्दी ही लकडियाँ लेकर घर मे लौट आया।

पैनी कह रहा था, "पिछली रात सचमुच ही तुम मेरे लिए स्वर्ग की अप्सरा बन गईं। हम सब एक बहुत बडे भालू का पीछा करते-करते दो दिन से चले आ रहे है। उसने एक साथ ही मेरे बहुत से पशुओ को मार डाला है।"

वह बोली, "वही भालू, जिनके सामने के पजे का एक अंगूठा गायब है? उसने पिछले साल मेरे सारे सूअर ही समाप्त कर दिए थे।"

"खैर, हमने उसका पीछा किया और उसे नदी के दक्षिण मे एक दल-दल मे कुदा दिया। अगर मैं दस गज़ भी आगे होता तो वह समाप्त हो

गया होता। मैंने उस पर तीन गोलियाँ चलाईं, पर वह बहुत दूर था। अन्तिम निशाना उस पर लग गया है। वह धारा को तैर गया था, इसीलिए कुत्ते उसके पीछे न बढे। नेली, सच यह है कि मैं तो तब से इधर आया ही नही, जब तुमने मुझे यह बताया था कि फ्रैंड तुम्हारे और मेरे साथ को नही चाहता।"

वह हंस पड़ी, "अरे, रहने दो, तुम मुझे कभी चाहते ही नही थे।"

"अब तो वायदा करने का समय नही रहा, पर मुझे यह निश्चय अवश्य था कि अगर तुमने दुबारा शादी नही की होगी और यहां से कही चली गई होगी, तब तुम्हारा घर यही कही होगा और जब मैं रात को सोया तो मैंने भगवान् से तुम्हे आशीर्वाद देने की प्रार्थना की।"

वह तेजी से खिलखिलाकर हँस पडी।

बोली, "तुमसे अधिक मैं और किसका स्वागत करूँगी ? पर आगे से अगर मुझे पहले ही सूचना न मिली, तो मैं ऐसा स्वागत करना नही चाहूंगी। एक विधवा स्त्री अपने आंगन मे अजनबी कुत्तो और घर मे एक अजनबी मनुष्य को नही सह सकती। अच्छा, अब तुम्हारा क्या निश्चय है ?"

"नाश्ता खाते ही मैं इस धारा को सोते के पास से पार करके फिर से दूसरी ओर जाकर रीछ को खोजना चाहता हूं।"

उसके माथे पर कुछ बल पड गए। वह बोली, "एजरा, अब तुम्हे ऐसा करने की ज़रूरत नही। मेरे पास एक छोटी-सी लकडी की नाव यहीं नदी पर बँधी हुई है। यह बहुत पुरानी हो चुकी है, पर यह तुम्हे धारा के पार तक अवश्य पहुँचा देगी। जाओ, इसे ले जाओ और अपना मीलो का रास्ता बचा लो।"

"क्या खूब! जोटी, सुना तुमने! अब मुझे फिर कहना होगा कि भगवान् तुम्हारा भला करे।"

"जब हमारा परिचय था तब तुम इतने छोटे नही दीखते थे।"

"नही, पर तुम तो अब पहले से भी अच्छी दीखने लगी हो। तुम सदा ही सुन्दर थी, पर पतली जरूर थी। तुम्हारे पांव तो एक पतली शाखा के समान लगते थे।"

वे काफी देर हँसते रहे। उसने अपना टोप उतारा और रसोई मे जुट गई। अब पैनी को कोई जल्दी न थी। उसकी छोटी-सी नाव के बरतने से जो समय बच गया था, उसने उन्हे आराम से नाश्ता करने का समय दे दिया। उसने अपना बचा हुआ सूअर का माँस वही दे दिया। उसने भी बदले मे दाने पकाए, ताजी कॉफी बनाई और बिस्कुट खाने को दिए। बिस्कुटो के लिए राब तो थी, पर मक्खन या दूध नही था।

वह बोली, "मैं यहाँ पशु तो रख नही सकती। भालू और चीतो से ही खैर नही। बचे-खुचे को मगरमच्छ खा जाते है। और, विधवा औरत को कभी यह सब बहुत मुसीबत लगने लगती है।"

"क्या आसा तुम्हारे साथ नही रहता ?"

"नही, वह तो अभी मेरे साथ फोर्टगेट्स से ही आया है और मेरे साथ ही आज रात को क्रिसमस के उत्सव के लिए चला जाएगा।"

"हम भी वहाँ जाना चाहते थे, पर अब तो जैसे हम भूल ही चुके थे। मेरी स्त्री वही होगी। तुम उसे बता देना कि तुमने हमे देखा था ताकि वह घबराए नही।" पैनी ने जोडी की माँ का खयाल करके साथ ही कह दिया।

"एजरा, तुम सचमुच बडे दयालु हो कि औरत के डरने का इतना खयाल रखते हो। तुमने कभी मुझे पूछा तो नही, पर तो भी मैं सदा ही इस बात पर अफसोस करती रही हूँ कि मैंने तुम्हे बढावा नही दिया।"

"मेरा अनुमान है कि मेरी पत्नी भी ऐसे समय यही अफसोस करती।"

"प्राय. हम मे से अधिक लोग अपनी इच्छा कभी नही जान पाते, जब तक मौका ही चूक न जाय।"

पैनी कुछ सोचता हुआ चुप रहा।

नाश्ता एक पूरी दावत थी। नेली ने कुत्तो को भी उदारता से खिलाया और उन सबके लिए दोपहर का खाना भी देने का आग्रह किया। उन्होंने न चाहते हुए भी वह जगह छोडी। अब वे शरीर और मन दोनो दृष्टि से हौसले मे थे।

वह पीछे से बोली, "वह नाव यहाँ से दो फर्लांग ऊपर की ओर है।"

रास्ते मे सभी जगह वर्फ जमी हुई थी। घास पर भी वर्फ थी। पुरानी किश्ती भी इससे भरी हुई थी। उन्होने उसे खोला और तैरा दिया। पानी से वहुत दिनो तक निकली रहने के कारण यह इतनी तेज़ी से चू रही थी कि इसे खाली करने के सब प्रयत्न उन्हे व्यर्थ लगे और इसमे वैठकर उन्होने जल्दी ही पार पहुँचने का निश्चय किया। पैनी कुत्तो को उठाकर अन्दर रखता और सन्देह मे पडे हुए वे फिर कूदकर वाहर आ जाते। इस नरह कुछ समय नष्ट हुआ और नाव मे कुछ ऊँचाई तक ठण्डा पानी भर आया। उन्होने उसे फिर खाली करने का यत्न किया। जोडी बीचोवीच चढकर इसे खाली करने लगा। पैनी ने उसे दो कुत्ते पकडाए। उसने पीठ के वाल पकडकर उन्हे वलपूर्वक जकडे रखा। किनारे से जोडी ने एक मनावर की डाल लेकर किश्ती को धक्का दिया। वर्फ के वीच मे से निकलकर यह तेज धार मे पड़ गई। अव यह नीचे की ओर वह चली। पानी वहता हुआ जोडी के गिट्टो तक छू रहा था। पैनी तेज़ी से धक्का देता रहा। एक कोने से कुछ लकडी टूटी और पानी तेज़ी से अन्दर आने लगा। अव कुत्ते चुप खडे हो गए थे। वे विचित्रता देखकर भय से कॉप रहे थे। जोडी ने झुककर अपने हाथ से चप्पू चलाना शुरू किया।

धाराएँ गर्मी मे सदा ही मित्रतापूर्ण लगती है। जव वह पंतली कमीज और पतला पाजामा पहने होता तव उसे एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाना वहुत सुहावना लगता। परन्तु, अव जमे हुए जैसे पानी मे ये भारी गर्म कपडे उसके लिए एक और मुसीवत वन गए थे। पानी के वोझ के कारण नाव धीमी हो गई और उसे सँभालना कठिन हो गया। यह डूवने ही वाली थी कि उसी समय पैनी दूसरी ओर पहुँच पाया। पानी उसके जूतो से ऊपर तक उछल रहा था और उसके पांव सुन्न हो चुके थे। परन्तु अव वे भालू की ओर की जमीन पर उतर चुके थे और उनके घटो का समय वच गया था। ठण्ड मे कुत्ते कांप रहे थे और पैनी की ओर आज्ञा के लिए देख रहे थे। उसने कुछ नही कहा और दक्षिण-पश्चिम की ओर नदी की धार के किनारे-किनारे चलने लगा। कुछ जगहो पर यह इतनी नीची और दलदली हो जाती थी कि या तो वे ऊपर चढकर चलने लगते या फिर दलदल मे से होकर। यह जगह जार्ज झील के एक किनारे और

सैण्ट जॉन नदी के उत्तरी भाग के बीच मे थी। रास्ता अच्छा न था।

पैनी याद करने के लिए कुछ रुका। पार करते हुए उसे विश्वास था कि जूलिया निशान खोज लेगी। परन्तु अब वह उसे एकदम ही पैड पर डालना नही चाहता था। उसे दूरी का पूरा-पूरा भी पता नही था। उसने परले पार एक मुरझाये हुए सरू को पहचान लिया, जो उन्हे भालू के खोने से कुछ ही देर बाद मिला था। यहाँ उसने अपनी चाल धीमी कर दी और बडे सावधान होकर देखते हुए बढने लगा। उसने पैड खोजने का बहाना किया। जूलिया से उसने कहा, "यह जा रहा है। पकडो इसे ! यह जा रहा है !"

वह सुस्ती छोडकर जाग पडी और अपनी लम्बी पूंछ हिलाकर तेजी से सूँघने लगी। कुछ ही दूर जाकर उसने एक हलकी-सी चीख निकाली। पैनी बोला, "यह है वह ! इसने उसे पा लिया !"

कीचड पर बडे-बडे निशान साफ छपे हुए थे। देखते हुए उनका अनुकरण किया जा सकता था। घने जगल मे उस रीछ के गुज़रने की जगह से कुछ शाखें टूटी हुई थी। पैनी कुत्तो के पीछे-पीछे चल रहा था। रीछ अपना पीछा किए जाने से निश्चिन्त होकर यही लेट गया था। धारा से कुल चार सौ गज दूरी पर जूलिया उस पर कूद पडी। झाडियो मे वह दिखाई नही दे रहा था, परन्तु उसकी भयकर उछाल की आवाज़ आई। बिना निश्चय किए पैनी गोली दागना नही चाहता था, क्योकि कुत्ते भी वही पर थे। जोडी को उम्मीद थी कि उसका पिता जितना भी तेज़ सम्भव होगा, इस दलदल मे भी भाग पडेगा।

पैनी बोला, "हम उसे स्वय नही पकड सकते। उसे कुत्तो पर ही छोड दो। मेरा अनुमान है कि धीमे काम करने से ही वह जल्दी पकड मे आएगा।"

वे धीरे-धीरे मज़बूती से आगे बढने लगे।

पैनी बोला, "हमे यह सन्तोष है कि वह भी थका हुआ है।"

परन्तु उसका अनुमान गलत निकला। पीछा जारी रहा। पैनी बोला, "लगता है कि उसे जैक्सनविले तक ही ऐसा घना रास्ता मिला है।"

भालू और कुत्ते आँखो से परे जा चुके थे। पैनी की आँखें अब भी पैड़ को साफ-साफ देख रही थी। एक टूटी शाखा और कुचली हुई घासो ने उनके साम ने जैसे एक नक्शा ही खोल दिया। जहाँ निशान नही भी थे, वहाँ भी

अब उसे दिशा मालूम पड गई। दोपहर से काफी पहले ही रीछ को उनकी गन्ध मिल गई थी, इसलिए रुकना पडा। पैनी ने कान लगाकर हवा मे से कुछ सुना।

वह बोला, "मुझे लगता है कि खाडी के पास मैने जूलिया की आवाज सुनी है।"

इससे उन्हे फिर से आगे बढने का उत्साह मिला। चढी दोपहरी मे उन्हे अपना शिकार मिल गया। उसने अन्त मे जैसे निश्चय कर लिया था कि रुककर वह लडाई से निबट ले। कुत्तो ने उसे कोने मे फँसा लिया था। वह अपने छोटे कदमो पर बगलो मे झुक रहा था और अपने दाँत दिखाता हुआ इन पर गुर्रा रहा था। गुस्से मे उसके कान सीधे खडे हो गए थे। ज्योही वह पीछे हटने के लिए मुडा, जूलिया और रिप उसकी बगलो और पीछे से उसे घेरने बढे। रिप उसके गले पर टूटा। उसने अपने पजो से इन पर हमला किया और पीछे हट गया। रिप भी उसके पीछे कूदा और उसने अपने दाँत उसके पाँव मे गढा दिए। रीछ बडे दर्द के साथ चीखा। वह बाज की-सी तेजी के साथ घूमा और कुत्ते पर टूटा। उसने अपने अगले पजो मे उसे उठा लिया। दर्द के मारे रिप चिल्लाने लगा और तब उसके पजो को अपने अधिक से अधिक ऊपर रखने के लिए यत्न करने लगा। दोनो के सिर आपस मे आगे-पीछे टकराने लगे। वे गुर्राते और चोट करते थे। दोनो ही अपने को बचाकर एक-दूसरे के गले को पकडना चाहते थे। पैनी ने बन्दूक उठाई। निशाना साधकर उसने गोली दाग दी। रिप को अपनी छाती पर चिपकाकर रीछ गिर पडा। उसके शिकार के दिन समाप्त हो चुके थे।

अब उसके मिट जाने के बाद यह सब बहुत आसान लगा। उन्होंने उसका पीछा किया और पैनी ने उसे मार डाला। और, अब यह सामने पडा है।

वे एक-दूसरे को अचरजभरी निगाह से देखने लगे। वे उस मुँह छिपाये हुए शव की ओर बढे। जोडी के घुटने थके हुए थे। पैनी भी लड़खड़ाता हुआ चल रहा था। जोडी को लगा जैसे एकाएक वह हल्का हो गया, मानो वह कोई गुब्बारा हो।

पैनी बोला, "मैं सच कहता हूँ, मुझे स्वय बडा आश्चर्य है।"

उसने जोडी की पीठ पर थपथपी दी और चिल्ला पडा, "शाबाश!"

यह आवाज सारे जगल मे गूंज गई। जैसे पक्षी भी उनके पीछे चीखे और उडने लगे। जोडी भी उत्साह मे भरकर 'हुर्रा' चिल्ला उठा। जूलिया भी झुककर उनके साथ भौकने लगी। रिप अपने जख्मो को चूसता हुआ भी अपनी पूँछ हिलाने लगा। पैनी इस भाव का एक बेसुरा गीत अलापने लगा—

'मेरा नाम सौम है, मैं किसी को कुछ नही देता।

"मैं काला होना पसन्द करूँगा, बजाय एक गरीब गोरा बनने के।'

उसने जोडी को फिर थपथपाया और पूछा, "बताओ, गोरा कौन है?"

जोडी चिल्लाया, "हम गरीब नही हैं। हमने यह रीछ पा लिया है।"

वे साथ-साथ उछलने, चिल्लाने और शोर करने लगे, जब तक उनके गले ही जवाब न दे गए। गिलहरियाँ मानो उन्ही की नकल कर रही थी। तब वे शान्त हुए।

पैनी बेतहाशा हँसा और बोला, "मैं इतना अधिक कभी नही हँसा और चिल्लाया। मुझे इस हँसने और चिल्लाने से बहुत ही लाभ हुआ है।"

जोडी अब भी उत्साह मे था और वह फिर चिल्लाने लगा। पैनी ने शान्त हो झुककर भालू को देखा। वह कम से-कम साढे पाँच मन के आस पास का होगा। उसकी खाल बहुत ही बढिया थी। पैनी ने उसके सामने के पजे को उठाया, जिसका एक अँगूठा गायब था।

वह बोला, "अच्छा, हमारे बूढे दोस्त! आखिर तो तुम हमारे बहुत नीच दुश्मन थे, पर फिर भी मैं तुम्हारा आदर करता हूँ।"

वह जीत की खुशी मे उसकी पसलियो पर बैठ गया। जोडी ने उसके भारी बालो को छुआ।

पैनी बोला, "अब हमे जरा कुछ सोचना होगा। हम यहाँ बिलकुल बीचोबीच मे फँस गए है। यह भालू इतना बड़ा है कि अगर मैं, तुम, तुम्हारी माँ और गाय इकट्ठे तोले जायँ तब भी इतने भारी न होगे।"

उसने अपना पाइप निकाला और तमाखू भरकर आराम से सुलगाया।

वह बोला, "इस पर आराम से विचार करना अच्छा है।"

वह इतना खुश और उत्साही था कि जो बात जोडी को असम्भव दीखती थी, उसने उसे भी स्वीकार कर लिया। वह मन-ही-मन सोचने लगा।

फिर बोला, "हम शायद भालुओ वाले स्रोत और नदी के बीचोबीच है। पश्चिम की ओर फोर्टगेट्स की सडक और पूरब की ओर नदी है। अब देखना यह है कि वे काले फौरेस्टर कही किश्ती आने-जाने के स्थान—होर्स लैण्डिग—पर न आये हुए हो। अच्छा, हम इसे वहाँ तक ले चलते है और फिर सोचेंगे।"

परन्तु उसको हिलाने का अर्थ था, एक पूरी गाड़ीभर आटे की बोरियो को एकसाथ ही हिलाना। उसकी खाल के नीचे की चर्बी ने उसे गोलमटोल और लुचलुचा बना दिया था। पकडने पर वह जमकर टिक नही सकता था।

पैनी बोला, "यह उसी तरह मरा, जैसे जीवित था।"

उसने शव मे से आँते अलग कर दी। यह रीछ इतना साफ और दोष-रहित माँस वाला था, मानो कसाई की दूकान मे लटकती हुई पूरी भेड का साफ माँस हो। जोडी ने उसके पाँव पकडकर पैनी को अपना काम करने में सहायता दी। उसने सोचा कि शायद कब उसे इन छोटे-छोटे हाथो मे इतने भारी पंजे पकडने का दिन देखना मिलना था? इस शिकार मे पिता के पीछे चलते जाने के सिवाय उसका और कोई भाग न था, परन्तु अब वह अपने को मजबूत और शक्तिशाली अनुभव कर रहा था।

पैनी बोला, "अब हम देखते हैं कि इसे हम हिला भी सकते हैं कि नही?" दोनो ने उसके अगले पंजे पकडे और आगे खीचने लगे। इसे खीचना बहुत ही कठिन सिद्ध हुआ। झटके देकर आगे बढाने से भी एक बार मे एक फुट से अधिक नही बढा सके।

पैनी बोला, "इस तरह तो हम नदी तक अगली बसन्त मे भी न पहुँच पाएँगे और रास्ते मे ही भूखो मर जाएँगे।"

अगले पंजो को आसानी से पकडना कठिन था। बाल बहुत कोमल थे

और इस कारण वे बढ न सकते थे। पैनी एडियो के बल बैठकर सोचने लगा।

अन्त मे वह बोला, "हम फोर्टगेट्स तक जाकर कोई मदद ला सकते हैं। उससे हमे मांस का कुछ हिस्सा देना तो पडेगा, पर इससे हमारी अपनी आंतें ज़रूर बच जाएँगी। या फिर रस्सियाँ बनाकर हम इसे नदी तक खीच ले जायँ, परन्तु इसमे हमारे दिल तक चिर जाएँगे। या फिर हम घर जायँ और गाडी ले आयँ।"

"पर पिताजी, गाडी तो घर होगी नही। माँ तो कभी की चली गई होगी।"

"लो, यह तो मैं भूल ही गया था कि आज क्रिसमस की शाम है।"

पैनी ने अपनी टोपी उतारकर गर्दन तानी और बोला, "अच्छा बेटे, चलो।"

"कहाँ चलना होगा ?"

"फोर्टगेट्स की ओर।"

उधर जाने वाली सडक कुल दो मील तक पश्चिम मे गई थी। पैनी को यह बात पता थी। रेतीली पगडडी पर पहुँचने के लिए अच्छा था कि दलदल और जगल मे से रास्ता काटा जाय। एक ठण्डी हवा इस राह पर बह रही थी, परन्तु सूर्य भी अभी गर्म था। पैनी को सडक के किनारे ही एक जगह एक खास बूटी दिखाई दी, जिसे तोडकर उसने रिप के ज़ख्मो पर उसका रस निचोड़ दिया। वह अब खूब बातें कर रहा था और ज्यो-ज्यो वे बढते जाते, उसे पुरानी भूली दूसरे शिकारो की कहानियाँ याद आती जाती।

पैनी बोला, "जब मैं अभी तुम्हारे जितना ही था कि मेरे चाचा माइल्स जोर्जिया से हमे देखने आए। ऐसे ही एक ठण्डे दिन वह मुझे इसी रास्ते वाली दलदल मे से लेकर आए। हम यही घूम रहे थे। हमारा कोई खास उद्देश्य न था। हमे अपने से कुछ दूर ऐसा लगा जैसे कोई गिद्ध किसी ठूंठ पर बैठा ठोंगे मार रहा हो। हम देखने पहुँचे कि बात क्या है। तुम क्या सोचते हो ?"

"क्या वह गिद्ध नही था ?"

"हाँ, वह एक भालू का बच्चा था, जो अपने जुडवाँ भाई को नीचे गिरा

कर हँसते-हँसते उसे अपने दोनो हाथो से मार रहा था। मेरे चाचा माइल्स ने कहा, 'हम इनमे एक बच्चे को पकडेंगे।' वे दोनो बहुत सभ्य थे और उन्होने पास जाकर एक को पकड लिया। वह उसे पकड तो लाए, पर कोई चीज़ उठाने के लिए थी नही। अगर बोरी पास न हो तो वे पजा भी मार सकते हैं। उत्तर के लोग कच्छा भी पहनते है। चाचा ने पाजामा उतारकर अपना कच्छा उतारा और उसमे गाँठें बांधकर एक थैला-सा बना लिया। उसने भालू के बच्चे को उसमे रखा। अभी वह पाजामा पहनने ही लगे थे कि बहुत दूर से तोडती-फोडती और कुचलती हुई उन बच्चो की माँ आई और उन तक पहुँच गई। खैर, वह जैसे-तैसे बच्चे को वही छोडकर दलदल मे से दौडे। माँ ने अपने बच्चे को उठाया और उनके कच्छे को भी वह ले गई। परन्तु वह इतनी समीप थी और उसने उनके पीछे की बेल पर इस तरह पाँव रख दिए थे कि चाचा एकदम गिर पडे और काँटो मे उलझ गए। चाची मौल बहुत ही साधारण दिमाग की स्त्री थी। वह यह सोच ही नहीं सकी कि बिना कच्छे के एक ठण्ड के दिन वह कैसे लौटे? और उनकी कमर पर खरोंच के निशान कैसे पडे? किन्तु चाचा माइल्स हमेशा यही कहते थे कि यह बात बहुत सोचने की न थी कि माँ ने उस कच्छे का अपने बच्चे के साथ क्या किया होगा? हो सकता है, पहना दिया हो।"

जोडी हँस पडा और लोट-पोट हो गया।

उसने शिकायत-सी की, "पिता जी, इतनी कहानियाँ याद होने पर भी आप मुझे कभी कुछ नही सुनाते।"

"देखो, कोई बात किसी मौके पर ही याद आती है। इस दलदल मे मुझे वह बात याद आ गई। इसी दलदल मे एक बार बहुत ही ठण्डे चैत के महीने में मुझे दो और भालू के बच्चो से पाला पडा। ठण्ड के मारे वे चिल्ला रहे थे। ये दोनो अभी ताज़ा ही पैदा हुए थे और चूहो से कुछ ही बडे रहे होगे और एकदम नगे थे। उन पर बाल तक नहीं उगे थे। उन्हें एक खास फूलों वाली तेजबल की झाडी मे लिटाया गया था और वे मनुष्य के बच्चों जैसे ही रो रहे थे। सुनो!"

गुर्रो की टाप उन्हें अपनी पीठ पीछे सुनाई देने लगी।

"अब कितना अच्छा होगा कि हमें सहायता के लिए फोर्टगेट्स नहीं

जाना पड़ेगा।"

टाप और नज़दीक आई। वे सड़क के एक तरफ हट गए। ये फौरेस्टर थे।

पैनी ने कहा, "लगता है मैंने अपना ही बुरा चाहा।"

उन सबके आगे बक था। वे सड़क पर इकट्ठे चले आ रहे थे। उन्होने शराब पी हुई थी। वे पास आ गए।

"देखो इन्हे, पैनी और यह उसका बच्चा! ओ पैनी! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

पैनी बोला, "हम शिकार पर थे और इस बार जान-बूझकर निकले थे। हम दोनो उसी बूढे रीछ के पीछे घर से निकले थे।"

"अरे, पैदल हो? सुनो भाई, इससे अच्छा तो दो चूजो को बाज़ पर हमला करने के लिए छोड देना चाहिए।"

"और हमने उसे पा लिया।" पैनी ने धीरे से कहा।

बक हिला। सभी शान्त-से पड गए।

"मुझे कोई कहानी मत सुनाना! वह इस समय कहाँ है?"

"यहाँ से पूरब की ओर कोई दो मील दूर भालू वाले स्रोत और नदी के बीच मे।"

"शायद ठीक है, वह वहीं पर बहुतो को बेवकूफ बनाता है।"

"वह मर चुका है। मैंने उसे स्वयं मारा है। हम दोनो फोर्टगेट्स की ओर उसे दलदल मे से बाहर लाकर ढोने मे सहायता लेने के लिए जा रहे थे।"

शराबी की-सी शान मे बक तन गया और बोला, "अरे, हमारे यहाँ होने पर तुम्हे फोर्टगेट्स जाने की जरूरत अनुभव हुई?"

लेम बोला, "अगर हम उसे ले चलें तो तुम क्या दोगे?"

"उसका आधा माँस! वह तो मैंने बिना इसके भी सोचा था, क्योंकि उसने तुम्हे भी बहुत सताया और बक ने मुझे आकर चेतावनी दी।"

बक बोला, "हम दोनो मित्र हैं, पैनी! हम एक-दूसरे को चेतावनी देते रहते हैं। मेरे पीछे बैठ जाओ और हमे रास्ता बताओ।"

मिलव्हील बोला, "मैंने तो आज न दलदल मे जाने की सोची थी और

न ही बैक्स्टर परिवार की ओर ! मेरा मन तो मौज पर जमा था।"

बक बोला, "पैनी, तुमने कोई इरादा तो नहीं बना रखा ?"

"तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"क्या तुम अब भी वोलूसिया की ओर जाना चाहते हो ?"

"हां, यदि हम घर ले जाकर इस भालू को ठीक-ठीक साफ कर लें, तब जा सकते हैं। पर हमें बहुत देर हो गई है।"

"आओ, मेरे पीछे बैठ जाओ और रास्ता बताओ। लडको, हम भालू को ले चलेंगे और वोलूसिया में मेले पर भी जाएंगे। अगर वे हमें नहीं पसन्द करेंगे, तो वे फेंक सकें तो चाहे हमें बाहर फेंक दें।"

पैनी हिचकिचाया। आज के दिन फोर्टगेट्स से कोई भी सहायता मिलनी कठिन होती, परन्तु फौरेस्टरों का ऐसे पवित्र उत्सव में जाना भी शायद ही उचित होता। उसने भाग्य पर सब छोडकर उनकी सहायता स्वीकार कर ली। वह बक के पीछे बैठ गया। मिलव्हील ने जोडी को अपने पीछे बैठा लिया।

पैनी बोला, "मेरे कुत्ते को कौन बिठा सकता है ? उसे अधिक चोट तो नहीं, परन्तु उसे लडना और दौडना बहुत पडा है।"

गैबी ने रिप को उठाया और अपनी काठी पर सामने ही बिठा लिया।

पैनी बोला, "जहां से हम आ रहे हैं, वह रास्ता साफ है। तुम देख ही सकते हो कि हम कहां से आ रहे हैं।"

जो रास्ता उन्हें पहले बहुत लम्बा लगा था, अब वह उन्हें इन घोडों पर बहुत छोटा लगा। उन्हें याद आया कि उन्होंने नाश्ते के समय से कुछ भी नहीं खाया। जोडी और पैनी ने अपने थैले टटोले और नेली गिनराइट के दिये हुए रोटी और मांस को खाने लगे। प्रसन्नचित्त होने के कारण आनन्द में डूबकर पैनी भी फौरेस्टरों के-से नशे में आ गया।

वह चिल्लाता हुआ बोला, "सारी रात मैंने अपनी पुरानी प्रेमिका के साथ बिताई।"

वे सब उसकी प्रशंसा में खूब हँसे। वह बोला, "पर वह वहां नहीं थी।"

वे फिर से हँस पड़े। जोडी इस बीच नेली गिनराइट को प्रसन्न तबीयत

का ध्यान करता रहा।

उसने मिलन्होल से पूछा, "मिलन्होल, अगर मेरी माँ कोई और होती तो मैं ऐसा ही होता या कुछ और ?"

मिलन्होल आगे की ओर देखकर चिल्लाया, "अरे ! जोडी तो नई माँ चाहता है।"

उसने मिलन्होल की पीठ पर मुक्का मारा, "मैं नही चाहता। मैं तो कुछ और ही पूछना चाहता था।"

प्रश्न मिलन्होल की समझ से बाहर था, इसीलिए शराबी की-सी टिप्पणी उसने कर दी।

पैनी बोला, "बस, अब इस निचले घास के मैदान को पार करते ही वहाँ भालू पडा है।"

वे उतर पडे। लेम ने चिढकर थूका और बोला, "अरे, प्रचारक के भाग्यशाली बेटे !"

पैनी बोला, "कोई भी आदमी जो उसके साथ लड़ना चाहता, लड सकता था, या फिर पीछा करते-करते मेरे जैसा पागल हो जाता।"

माँस काटने के ढग पर सबका मत एक न था। बक की इच्छा थी कि सारा माँस इकट्ठा रहे। पैनी ने उसे समझाया कि ऐसा असम्भव था। अन्त मे उन्होने उसे मनाया कि इसके चार हिस्से कर लिए जायँ, जैसा कि इतने बड़े भालू के साथ किया जाता है। साफ करने पर हर हिस्सा सवा मन के लगभग होगा। उन्होने खाल उतारकर उसके चार हिस्से किए। खाल पूरी रखी गई और उसी मे बडा सिर और पजो वाले पाँव लटकते रहे।

बक बोला, "मुझे ऐसे ही चाहिए था। मैंने कुछ सोच रखा है।"

अपनी बोतलो से निकालकर उन्होने शराब का दौर चलाया और तब हर घोडे पर माँस रख दिया। पाँचवें घोड़े पर खाल रख दी। इतने बडे रीछ और दोनो बैक्स्टरो को उठाने के लिए फौरेस्टरो जैसा पूरा परिवार ही काम आ सकता था। वे एक दूसरे की ओर चिल्लाते हुए और हँसी-खुशी से फूलते हुए बढते जा रहे थे।

अंधेरा होने के बाद ही वे बैक्स्टरो की जमीन के पास पहुँचे। घर बन्द था। न कोई रोशनी और न धुआँ वहाँ दिखाई देता था। माँ नदी की ओर

घोड़ागाड़ी लेकर जा चुकी थी। पलँग भी पास में ही था। फौरेस्टर लोग उतरे। उन्होंने फिर शराब पी और पानी माँगा। पैनी ने शाम का भोजन बनाने का सुझाव दिया, परन्तु वे सब वौलूसिया जाने को उतावले थे। सबने भालू का माँस धुआँघर में लटका दिया। बक ने ज़िद करके खाल ले ली।

जोडी को अपने ही बन्द घर के चारों ओर जाते अजीब-सा लगा, जैसे वहाँ कोई और रहता हो। घर के पीछे की ओर जाकर उसने पुकारा, "पलँग, इधर आओ!" परन्तु किन्हीं छोटे खुरों की आवाज न सुनाई दी। उसने फिर से डरते हुए पुकारा। वह सड़क की ओर घूमा। पलँग जंगल की ओर से छलाँगें भरता आ रहा था। जोडी ने इतने जोर से उसे पकड़ा कि वह अधीर होकर छूट गया। फौरेस्टर उसे जल्दी करने को कह रहे थे। वह चाहता था कि पलँग को भी साथ ले सके, पर वह यह भी नहीं सह सकता था कि वह फिर भाग जाय। वह उसे कोठरी में ले गया और अच्छी तरह बाँध आया। उसने बाहर का दरवाजा चिटखनी से बन्द कर दिया। उसने लौटकर फिर उसे खोला और उसके हिस्से का आटा, अपने थैले में से उलट लिया। फौरेस्टर उस पर नाराज़ हो रहे थे। उसने फिर दरवाजा बन्द किया और दौड़कर मिलव्हील के पीछे खुशी-खुशी चढ़ बैठा। अब उसे पलँग पर लौटने का भरोसा था।

जब फौरेस्टर पूरा गला फाड़कर गाने लगे तो वह भी उनके साथ गाने लगा। बक ने इस भाव का गीत गाया—

'मैं अपनी प्रेमिका को देखने गया, वह मुझे दरवाज़े पर मिली। उसने कहा कि अब मुझसे मिलने मत आना।'

मिलव्हील ने चिल्लाकर पूछा, "बक, क्या यह बात ठीक है?"

बक गाता रहा।

"उसका ज़ख्म से प्यार हो गया था। वह एण्ड्रयू जैक्सन जैसा प्रसिद्ध था। मैंने प्रेमिका की ओर देखा और कहा, 'अच्छा, कुमारी सुसान जेन, विदा!'"

गैबी ने एक बड़ा दुःखभरा प्रेम का गीत गाया, जिसकी अन्तिम पंक्तियाँ इस भाव की थीं, 'मैंने दूसरी से शादी कर ली, वह शैतान की दादी निकली, मैं चाहता हूँ कि मैं फिर से अकेला हो जाऊँ।' '

उनके चिल्लाने और गाने के साथ सारा जंगल गूंज उठा।

रात नौ बजे तक वे नदी के किनारे पहुँच गए। वहाँ से उन्होंने नाव के लिए पुकार मचाई। नदी के पार आकर वे गिरजाघर तक गए। यह प्रकाश से युक्त था। घोड़े, गाड़ियाँ, बैल और छकड़े—सब इधर-उधर बँधे पड़े थे।

पैनी बोला, "हम सब लोग अच्छे नहीं दिखाई दे रहे। यहाँ जाना ठीक नहीं लगता। जोडी अगर हमारा भोजन ले आए तो कैसा हो ?"

परन्तु फौरेस्टर अब सुनने को तैयार न थे। वे रोक-टोक न चाहते थे।

बक बोला, "अब तुम लोग मुझे सहायता दो। मेरी इच्छा इस गिरजे के बीच से शैतान को डराकर निकाल देने की है।"

लेम और मिलव्हील ने उसके ऊपर भालू की खाल ठीक से जमा दी। वह चारों पंजों के बल झुक गया। इससे अधिक उस पर कोई और चीज सजती भी नहीं। उसके पेट के नीचे खाल चिरी हुई थी और इस प्रकार भालू का सिर ऊपर और उसका सिर नीचे रखना सम्भव हो गया। पैनी की इच्छा थी कि अन्दर जाकर पत्नी को अपने पहुँचने का विश्वास दिलाए। परन्तु फौरेस्टर किसी जल्दी में न थे। उन्होंने दो-तीन जूतों के फीते निकालकर खाल को बक की छाती के चारों ओर बाँध दिया। यही बात बक चाहता था। उसके भारी कन्धों और पीठ ने खाल को लगभग भालू जितना ही पूरा-पूरा भर दिया। अब उसने एक तेज़ गुर्राहट छोड़ी। वे गिरजे की सीढ़ियों पर चढ़ गए। लेम ने दरवाज़ा खोल दिया ताकि बक अन्दर जा सके। बाद में फिर बन्द कर दिया। अब वे बाहर से ही तमाशा देखने लगे। एक या दो मिनट बाद लोगों का ध्यान उधर गया। बक भालू की नकल करता हुआ मस्तानी चाल से आगे बढ़ा। जोडी को लगा कि जैसे डर के मारे उसकी गर्दन के बाल खड़े हो गए हों। बक फिर गुर्राया। सब लोग भागने लगे। बक रुका। एक क्षण के लिए सभी सुन्न रह गए, परन्तु तभी चर्च खाली हो गया। सब लोग खिड़कियों की राह निकल गए।

फौरेस्टर लोग दरवाज़ा खोलकर अन्दर आ गए। वे हँसी से फूट पट

रहे थे। पैनी और जोडी उनके पीछे आए। एकदम ही पैनी ने उछलकर भालू का सिर खींचकर परे कर दिया, ताकि मनुष्य का चेहरा सामने आ जाय।

वह बोला, "बक, अब इसमें से निकल आओ। क्या तुम मरना चाहते हो ?"

उसने एक-दो खिड़कियों में से झाँकती हुई बन्दूकों को देख लिया था। बक खड़ा हो गया और खाल नीचे सरक आई। तमाशाई फिर से इकट्ठे हो गए। बाहर एक चीखती हुई औरत चुप न हो सकी। डर के मारे दो-तीन बच्चे रोते रहे। पहले-पहल भीड़ गुस्से से भर गई।

एक बोला, "यह अच्छा तरीका है क्रिसमस की शाम मनाने का ! आए और अपनी चालाकियों से बच्चों को डराने लगे।"

परन्तु छुट्टी की भावना प्रबल थी और फौरेस्टरों का शराब से उत्पन्न मजाकिया ढंग सबको पसन्द आया। सबका ध्यान उस बड़ी खाल की ओर खिंच गया। इधर-उधर कोई एक-दो आदमी परेशान भले ही हों, पर अन्त में सभी हंसने लगे और सब इस बात पर सहमत थे कि बक असल भालू से भी ज्यादा अच्छा लग रहा था। उस भालू ने कई वर्ष तक बहुतों को नुकसान पहुँचाया था। सब उसे अच्छी तरह पहचानते थे।

अब बहुत-से पुरुषों और बच्चों ने पैनी को घेर लिया। उसकी स्त्री ने भी उसका स्वागत किया और उसके लिए खाना लेने चली गई। वह गिरजे की बेंचों में से एक पर बैठ गया। एक दीवार के साथ उसने पीठ टिका ली और खाने लगा। अभी उसने कुछ ही कौर खाए थे कि लोगों के उत्सुक प्रश्नों का उत्तर देने को उसे मजबूर होना पड़ा। प्रश्न एक धारा के रूप में थे। लोग उससे शिकार की बात पूरी-पूरी जानना चाहते थे। खाना बिना खाए वह वैसे ही पड़ा रहा।

जोडी शर्म के साथ उस सब चमक-दमक को देखता रहा। उस छोटे-से गिरजे में सदा हरी रहने वाली बेलों और अनेक अच्छे-अच्छे फूलों से सजावट की गई थी। तारों और मिट्टी के तेल के लैम्प दीवारों से लटके हुए जल रहे थे। हरे, लाल और पीले रंगीन कागजों से सजी हुई अन्य शाखों में चित्र टँगी हुई थी। सामने की वेदी पर क्रिसमस का एक पेड़

लटका हुआ था। उसके साथ कागज़ से बनी कुछ शक्लें खडी की गई थी और साथ ही कुछ गेंदें भी लटका दी गई थी, जो 'मेरी ड्रेपर' जहाज़ के कप्तान ने भेट के रूप मे दी थी। सबने एक-दूसरे को भेंटे दी और पेड के नीचे सबने ही अपनी भेटो के फीते खोले। छोटी-छोटी बच्चियाँ अपनी नई गुडियाओ को लेकर ध्यान मे डूबी हुई-सी उधर बढी। उन्होने उन गुडियाओ को अपनी छाती से चिपटा लिया। जो बच्चे पैनी से न खिच सके, वे फर्श पर ही खेलते रहे।

भोजन क्रिसमस के पेड के पास ही एक लम्बी मेज़ पर सजा हुआ था। दादी और माँ ने जोडी को उधर चलने पर मजबूर किया। उसने देखा, जैसे उसके चारो ओर यश छा रहा हो और उसकी भीनी गन्ध आ रही हो। औरतें उसके चारों ओर घिर आईं और उसे भोजन देने लगी। उन सबने भी शिकार के सम्बन्ध मे प्रश्न पूछने शुरू किये। पहले तो वह गूँगा-सा बन गया और उत्तर न दे सका, पर बाद मे उसे जोश आ गया और उसके हाथ मे पकडी सलाद की तश्तरी हिल गई। दूसरे हाथ मे तीन प्रकार के केक थे।

दादी ने कहा, "अब इसे अकेला छोड दो।"

उसे लगा, जैसे उसे बाद मे इन प्रश्नो का उत्तर देने का मौका न मिलेगा और वह इस शानदार मौके से चूक जाएगा।

उसने एकदम कहा, "हम उसके पीछे तीन दिन तक चलते ही रहे। हमने दो बार उसे पा भी लिया परन्तु हम दलदल वाले कीचड मे धँस गए। बडी मुश्किल से हम उसमे से निकले। पिताजी ने बताया कि यह बहुत बुरी दलदल थी।"

वे सब बहुत ध्यान से सुनती रही। वह उत्साह से भरा हुआ था। उसने शुरू से कहानी पकडी और पैनी के समान ही सुनाने का प्रयत्न किया। अभी वह आधे तक ही पहुँचा था कि उसे केक दिखाई दे गए। उनका ध्यान हट गया।

वह बोल पडा, "और तब पिताजी ने उसे गोली मार दी।"

उसने एकदम ही एक केक मुँह मे डाल ली। इकट्ठी हुई औरतें उसके लिए और मिठाइयाँ लेने चली गई। उसकी माँ बोली, "अब तुम येरा ही

खाते रहो। फिर कुछ और नही खा सकोगे।"

"मुझे कुछ और चाहिए भी नही।"

दादी बोली, "ओरी, उसे खाने दो। रोटी तो वह बाद मे भी खा सकता है। उसके लिए बरस-भर पडा है।"

उसने वायदा किया, "मैं उसे कल खाऊँगा। मुझे पता है कि शरीर की बढती के लिए वही ठीक है।"

अब वह एक से दूसरे किस्म की केक का मज़ा लेने लगा।

उसने पूछा, "माँ, क्या फ्लैग तुम्हारे चलने से पहले पहुँच गया था?"

"हाँ, वह अँधेरे के समय आया। तुम्हारे बिना उसके आने से मुझे चिन्ता हुई। तब नेली गिनराइट यहाँ मिली और उसने तुम्हारी खबर दी।"

उसने माँ की ओर प्रशसा से देखा। उसकी दृष्टि मे काली अल्पका मे वह बहुत सुन्दर लग रही थी। सन्तोष और अभिमान के कारण उसके चेहरे पर भी रौनक आ गई थी। दूसरी औरतें आदर से उसे बुला रही थी। उसने सोचा, पैनी का सम्बन्धी होना सचमुच गौरव की बात है।

वह बोला, "माँ, घर पर तुम्हारे लिए मैंने एक अच्छी चीज़ रखी थी।"

"हूँ! सचमुच! वह लाल और चमकदार तो नही थी?"

"तुमने इसे पा लिया?"

"हाँ, घर साफ करते हुए मुझे मिली।"

"तुम्हे यह पसन्द आई?"

"बहुत अधिक। मैं इसे पहन लेती, पर मेरा अनुमान था कि तुम इसे अपने हाथ से देना चाहोगे तुम जानना चाहते हो कि मैंने तुमसे क्या छिपाया?"

"हाँ, बताओ, तुमने मेरे लिए क्या छिपाया था?"

"मेरे पास पोदीने के सत की गोलियो की एक थैली है। तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए हिरण की टाँग से उस चाकू का एक खोल बनाया था, जो तुम्हे ओलिवर ने दिया था। उसमे बारहसिंगे की खाल मे छौने के लिए एक पट्टा भी बनाया।"

"उन्होने यह सब बिना बताए कैसे किया ?"

"जब तुम सो जाते हो, तब वह भले ही तुम्हारे कमरे की छत भी पलट डालें तो तुम्हे पता नही चल सकता।"

उसका तन और मन शान्ति से भर उठा। हाथ मे पडी मिठाइयो की ओर उसका ध्यान गया। उसने अपनी माता की ओर उन्हे बढाते हुए कहा, "मुझे ये पसन्द नही।"

"हाँ, ऐसा ही उचित है।"

उसने चारो ओर देखा और फिर शर्म से गड गया। सामने ही एक कोने मे यूलाली बोथल्स किश्ती वाले बच्चे के साथ उछलने-कूदने का खेल कर रही थी। जोडी उसे दूर से ही देखता रहा। वह उसे शायद न ही जान पाता। उसने नीली धारियो वाली एक सफेद पोशाक पहनी हुई थी और उसके बालो से भी नीले फीते लटक रहे थे। उसे उसकी बजाय किश्ती वाले बच्चे से नफरत हो आई। जोडी को लगा जैसे यूलाली पर उसका कोई दूर का अधिकार हो और वह जैसा बर्ताव चाहे उससे करे, चाहे वह आलू ही फेंके।

फौरेस्टरो ने अपना अलग ही एक झुण्ड बना लिया था। वे गिरजे के बाहरी दरवाजे के पास बैठे थे। कुछ साहसी औरते उनके पास खाना ले गई। अगर कोई औरत उनमे से किसी की ओर दो बार भी देख लेती, तो उसका अर्थ आफत बुलाना होता। सबसे अधिक शोर करनेवाले मनुष्य उन्ही के पास बैठे थे। बोतलो का दौर चल रहा था। इन सब खुशियो के बीच फौरेस्टरो की आवाज सबसे अधिक ऊँची थी। वीणा वाले जाकर अपनी-अपनी वीणा ले आए और उनके साथ ही सुर मे सुर मिलाकर बजाने लगे। एक चौकोना नाच शुरू हुआ। बक, मिलव्हील और गैबी, कुछ हँसोड लडकियो को भी साथी बनाकर ले आए। लेम बाहर से ही भौंहे सिकोडता रहा। उनका नाच अच्छा-खासा शोर पैदा करने लगा। दादी बहुत दूर एक बेंच पर झुक गई। उसकी काली आँखें चमक पडी।

वह जोडी की माँ से बोली, "अगर मुझे पता होता कि ये काले शैतान यहाँ आ रहे हैं तो मैं यहाँ कभी न आती।"

वह बोली, "मैं भी कभी न आती।"

ये दोनों चुपचाप पत्थर-सी बनकर साथ-साथ बैठी रही। आज वे एक-

दूसरे से सहमत थी। इस शोर और सगीत से जोडी भी मस्त हो उठा। मिठाइयो ने भी उसे उत्तेजित किया। बाहर का ससार शान्त पडा था, परन्तु गिरजे के अन्दर सभी कुछ उत्साहजनक था। एक ओर लकड़ियो की आग जल रही थी और दूसरी ओर पसीने से तर लोग वहाँ भरे हुए थे।

एक नया आदमी आया। उसके साथ ही ठण्डी हवा का एक झोका भी आया। सबने ही देखना चाहा कि वह क्या लाया है? कुछ ने देखा कि उसने लेम से कुछ बात की और आदमी ने कुछ उत्तर दिया। तब लेम ने अपने भाइयो को बुलाकर कुछ कहा। थोडी ही देर मे सब भाई एक साथ ही गायब हो गए। पैनी के चारो ओर का जमघट उसकी कहानी से सन्तुष्ट होकर अपनी-अपनी कहानियाँ सुनाने मे मस्त था। चौकोना नाच नाचने वाले लोग कुछ घट गए, पर नाच चलता रहा। कुछ औरतें शिकार सुनने वाले लोगो के पास गई और उनकी मस्ती की शिकायत करने लगी। नये आने वाले आदमी को मेज पर बिठाया गया। खाना अभी भी बहुत बचा था। वह अभी एक जहाज़ से उतरा था और कुछ लकड़ी लेने के लिए नदी के घाट पर रुका था।

वह बोला, "पुरुषो और महिलाओ! मैं बता रहा था कि मेरे साथ और भी बहुत से यात्री यहाँ उतरे है। मेरे खयाल मे तुम उन्हे जानते हो। एक ओलिवर और उनके साथ एक जवान श्रीमती हैं।"

दादी खडी हो गई और बोली, "तुम्हे इन नामो का विश्वास है?"

"हाँ, क्यो नही? श्रीमती जी! उसने अपना घर यही बताया है।"

पैनी उठकर दादी की तरफ आया।

उसे एक ओर ले जाकर बोला, "मेरा अनुमान है कि तुम्हे खबर मिल गई है। मुझे डर है कि फौरेस्टर तुम्हारें घर की ओर गए हैं। मैं उधर जाकर उन्हे शान्त करने का यत्न करूँगा। तुम भी चलना चाहती हो? हो सकता है कि तुम्हारे वहाँ होने से वे लोग कुछ अच्छा व्यवहार करने पर मजबूर हो।"

वह अपना शाल और टोप पकडे हुए बेचैन-सी दीखने लगी।

जोडी की माँ बोली, "मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी। उन जानवरो को मैं भी कुछ सुनाना चाहूँगी।"

जोडी भी उनके पीछे-पीछे चला। वे पैनी की गाडी मे बैठे और नदी की ओर बढ पडे। आकाश बहुत उजला था। पैनी बोला, "लगता है, जगल मे कही आग लग गई है। हे भगवान्!"

आग की जगह, कोई और नही, दादी का घर ही था। सडक के मोड पर कनेरो की कतार के पास से ही लपटे उठ रही थी। दादी का घर जल रहा था। वे आँगन मे घुसे। घर की होली जल रही थी। लपटो मे घर के कमरे साफ-साफ दीख रहे थे। फ्लफ उनकी ओर दौडा। उसकी पूँछ पिछली टाँगो के बीच दबी हुई थी। वे सब नीचे उतर आए।

दादी चिल्लाई, "ओलिवर! ओलिवर!"

आग के कुछ दूर तक पहुंचना असम्भव था। दादी लपटो की ओर दौडी। पैनी ने उसे पीछे खीच लिया।

वह वही से चिल्लाया, "क्या तुम मरना चाहती हो?"

"वहाँ ओलिवर है। ओलिवर! ओलिवर!"

"वह यहाँ नही है। वह हो नही सकता! वह निकल गया होगा!"

"उन्होने उसे मार डाला! वह अन्दर ही है! ओलिवर!"

पैनी उससे उलझा रहा। इस तेज रोशनी मे धरती साफ चमक रही थी। इस पर खुरो के निशान बिलकुल साफ थे, परन्तु फौरेस्टर और घोडे जा चुके थे।

जोडी की माँ बोली, "उन काले गिद्धो का यहाँ निशान भी तो नही दिखाई देता।"

दादी स्वतन्त्र होने के लिए छटपटाई।

पैनी बोला, "जोडी, भगवान् के नाम पर बोयल्स की दूकान की ओर जाओ और देखो कि अगर कोई ऐसा आदमी मिले, जिसने ओलिवर को नाव से उतरकर कही जाते हुए देखा हो? और, अगर कोई न मिले तो गिरजे मे जाकर उस अजनबी से पूछना।"

जोडी फिर से गाडी पर बैठ गया और उसने सीजर को सडक पर मोड़ दिया। उसके हाथ जैसे जड हो गए और वह लगाम बडी मुश्किल से थाम सका। वह डरा हुआ था। उसे याद न रहा कि पिता ने पहले दूकान पर जाने को कहा है या गिरजे मे? अगर ओलिवर जीवित है तो वह उसका बुरा

कभी दिल से भी न सोचेगा। वह सडक पर मुड पडा। सर्दी की यह रात तारो के कारण चमक रही थी। घोडे ने जोर से छीका। एक पुरुष और स्त्री नदी की ओर सडक पर बढ रहे थे। उसने आदमी को हँसते हुए सुना और वह चिल्ला पडा, "ओलिवर!" और वह चलती गाडी से ही कूद पडा।

ओलिवर बोला, "जरा देखें, यह कौन गाडी हांक रहा है? अरे, जोडी!"

यह स्त्री ट्विक बैंदरवी थी।

जोडी बोला, "ओलिवर, जल्दी करो, गाडी मे बैठो।"

"जल्दी क्या है? तुम्हे सभ्यता नही आती? इनसे मिलो।"

"ओलिवर, दादी का घर जल रहा है। फौरेस्टरो ने यह सब किया है!"

ओलिवर ने अपना सामान गाडी मे पटका। उसने ट्विक को उठाकर सीट पर बिठाया और तब पहिए के सहारे से चढकर लगाम थाम ली। जोडी भी उसकी बगल मे ही बैठ गया। ओलिवर ने अपना एक हाथ कमीज के अन्दर डाला और अपनी पिस्तौल बाहर निकालकर पास ही रख ली।

जोडी बोला, "फोरेस्टर तो जा चुके है।"

ओलिवर ने घोडे को तेज दौडने के लिए चाबुक मारी और राह मे मुड़ पडा। चारो ओर लपटो मे घर का ढांचा साफ दिख रहा था, जैसे उनमे लकडी का एक सन्दूक घिरा हो। ओलिवर का सांस रुक गया।

उसने पूछा, "माँ अन्दर नही थी?"

"वह सामने ही खडी है।"

ओलिवर ने गाडी रोकी और वे नीचे उतर आए। उसने माँ को पुकारा। दादी ने अपनी बांहे हवा मे फैला दी और उसकी ओर दौडी।

वह बोली "माँ, वही रहो। कांपो मत। ठीक रहो।"

पैनी उनसे आ मिला और बोला, "इनसे अधिक किसी और का स्वागत कैसे होगा? तुम बहुत ठीक मौके पर आए।"

ओलिवर ने दादी को एक ओर हटाया और घर की ओर देखा। एक तेज लपट लपकी और छत टूटकर नीचे आ गिरी। आग पास के

सनावरो पर लगी काई पर जा लगी।

वह बोला, "फौरेस्टर लोग किधर गए हैं ?"

जोडी ने देखा, दादी घबरा गई थी। उसने अपनी बाहे भीच ली और वह चिल्लाई, "अब तुम व्यर्थ मे ही फौरेस्टरो से क्या चाहते हो ?"

ओलिवर बोला, "जोडी ने बताया है कि उन्होने ही यह किया है।"

"ओ! मूर्ख जोडी! ये तो बच्चे के खयाल हैं। मैंने ही एक जलता हुआ दीया खिडकी मे रख दिया था। खिडकी खुली थी। पर्दे उससे छूकर जल पडे। यह मुझे मेले मे भी खलता रहा। जोडी, तुम अभी कुछ और बुरा चाहते हो ?"

जोडी उसकी ओर देखता रह गया। उसकी माँ का भी मुँह खुला रह गया। वह बोली, "क्यो ? तुम जानते हो‥"

जोडी ने देखा कि उसके पिता ने माँ की बाँह दबा दी और वह बोला, "हा बेटे, तुम्हारा क्या मतलब मीलो दूर बैठे भोले-भाले लोगो के बारे मे ऐसी बात सोचने का ?"

ओलिवर ने अपनी साँस धीरे-धीरे छोडी और बोला, "मुझे खुशी है कि यह काम उन्होने नही किया। मै उनमे से आज एक को भी नही छोडता।" और तब सबकी ओर मुडकर उसने कहा, "आप मेरी इस पत्नी से मिलिए।"

दादी काँपने लगी और फिर बढकर उसने लडकी के गाल चूम लिए।

वह बोली, "मुझे प्रसन्नता है कि तुमने मामला तय कर लिया। मुझे आशा है कि अब ओलिवर मुझसे कभी-कभी मिलने आया करेगा।"

ओलिवर ने ट्विंक का हाथ अपने हाथ मे लेकर जलते घर की परिक्रमा की। तभी दादी वैक्स्टरो की ओर मुडी और बोली, "अगर तुम मे से किसी ने भी यह बात मुंह से निकाली। तुम सोचते हो कि मै एक जले हुए घर के लिए दो परिवारो का खून बहा दूँगी और अपने लडके को मर जाने दूँगी ?"

पैनी ने अपने हाथ उसके कन्धे पर रख दिए और बोला, "काश ! मुझमे भी तुम्हारे जैसी बुद्धि होती‥"

वह काँप रही थी। पैनी के पकडने से वह शान्त हुई। ओलिवर और ट्विंक लौट आए थे।

ओलिवर बोला, "माँ, बुरा मत मानो। मैं तुम्हे नदी पर ही दूसरा घर बना दूंगा।"

उसने अपनी ताकत बटोरी और कहा, "मुझे नही चाहिए। मैं बहुत बूढी हूँ और अब मैं बोस्टन मे रहना चाहती हूँ।"

जोडी ने पिता की ओर देखा। उसका चेहरा खिच आया था।

दादी बोली, "मैं सवेरे ही जाना चाहती हूँ।"

ओलिवर ने कहा, "क्यो माँ, क्या यहाँ से छोड दोगी ?"

उसका चेहरा चमक उठा, और तब उसने धीरे से कहा, "मैं बोस्टन से ही सदा जहाज़ पकडता हूँ। मुझे यह पसन्द भी है, परन्तु मैं तुम्हे उन यात्रियो के बीच छोडना नही चाहता। कही तुम अमरीका मे दूसरा गृह-युद्ध न शुरु करवा दो ?"



## 27

अगले दिन पौ फटते समय चुभने वाली ठण्ड में बैक्स्टर लोग नदी के घाट पर खड़े हुए दादी, ओलिवर, ट्विंक और फ्लफ को विदा दे रहे थे। दक्षिण की ओर के मोड़ पर उत्तर की ओर जाने वाले जहाज़ ने सीटी दी। दादी ने जोडी की माँ का आलिंगन किया। दादी ने जोडी को कसकर पकड़ा और कहा, "अब तुम लिखना सीख लो ताकि तुम मुझे बोस्टन में पत्र लिख सको।"

ओलिवर ने पैनी से हाथ मिलाया।

पैनी बोला, "जोडी और मैं तुम्हारा दूर जाना बुरी तरह अनुभव करेंगे।"

ओलिवर ने जोडी की ओर हाथ बढ़ाया और बोला, "अपना साथ देने के लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं। मैं तुम्हें भूल नहीं सकूंगा, चीनी समुद्र में भी नहीं।"

दादी की ठोडी नुकीली और उसका मुख कसा हुआ था।



# 28

पौष के अन्तिम दिनों ठण्ड कुछ कम हो गई। जब-तब सूर्य के दर्शन हो जाते थे। सर्दी अभी भी कम न हुई थी। रात को रजाइयाँ कम पड़ जाती थीं। सुबह बाल्टियों का पानी भी ऊपर से जम जाता था। पर कभी एक-दो दिन के लिए इतनी गर्मी भी हो जाती थी कि दोपहर बाद की धूप के लिए जोडी की माँ ड्योढ़ी में बैठकर अपना सीने-पिरोने का काम करती और जोडी अपनी गर्म बण्डी बिना पहने जंगलों में दौड़ता रहता।

मौसम के साथ-साथ परिवार का जीवन भी शान्त हो गया। नदी के पास रहने वाले लोग अवश्य डर रहे थे, क्योंकि दादी के मकान के जलने और तेज़ जबान माँ के चले जाने एवं उनके नाविक बेटे के विदेशी के समान व्यवहार और अपनी ही पीले बालों वाली ट्विंक के चले जाने के रहस्य को वे न जान सके थे। सबका यही विश्वास था कि फॉरेस्टरों ने ही नशे में ओलिवर के लौटने की बात सुनकर उस मकान को जला डाला। परन्तु नदी दूर थी और यह बात इस परिवार तक बहुत धीमे-धीमे पहुँची। तीनों

ही हर शाम को भट्ठी की आग के पास बैठकर उस रात की याद कर लेते जब वे दादी के घर को राख मे बदलता देख रहे थे और उनके साथ ही आग के पास बैठकर उनकी किश्ती के लिए सवेरे की प्रतीक्षा करते रहे थे। दादी को उनकी कोई युक्ति जाने से न रोक सकी थी।

पैनी बोला, "मेरे ख़याल मे यदि वह अजनबी यह जानता होता कि वह ओलिवर की पत्नी है, और उसने यह न कहा होता कि कोई लडकी उसके साथ है, तो शायद लेम भी उनकी परवाह न करता। वे समझ जाते कि उनकी शादी हो जाने के बाद अब मामला रफा-दफा हो गया है।"

"पत्नी हो या न हो, यह उन नीचो ने जानबूझकर ही किया। और, यह सोचकर कि मकान मे कोई है, उन्होने मकान को जला डाला।"

पैनी ने आह भरी। उसे यह बात स्वीकार करनी पडी। फौरेस्टर अपना व्यापार फोर्टगेट्स ही करते रहे होगे, क्योकि वे इधर से कभी नही गुजरे। भालू का मांस भी लेने वे नही आए। पैनी से उनका यह कतराना उनके दोष का प्रमाण था। इससे वह दुखी हुआ। उसने जो शान्ति बहुत देर मे कमाई थी, वह उसके सामने ही बिखर पडी। जैसे कुछ दूर पर एक पत्थर किसी और पर फेंका गया हो और चोट उसे लग गई हो। वह दुखी और घायल था।

जोडी भी दुखी था, पर उसका यह दुख किसी कहानी के पात्रो से होने वाली सहानुभूति के समान ही था। दादी आदि तीनो इस तरह चले गए जैसे उसने कहानियो मे सुन रखा था। ओलिवर उन कहानियो मे पहले ही समा चुका था, जो उसने दूर-दूर के देशो की उसे सुनाई थीं। और, अब दादी, ट्विंक और फ्लफ भी उन्ही कहानियो के पात्र बनकर रह गए। ओलिवर ने कहा था कि 'वह उसे चीनी समुद्र जैसी दूर जगहो पर भी नही भूल पाएगा।' और वह भी अधिकाशत उसे चीनी समुद्र मे ही अनुभव करता—अपने से बहुत दूर, और कल्पना ही कल्पना मे लोगो से अपमानित!

फाल्गुन आते-आते गर्मी बढने लगी। पाला और बर्फ भी कभी कभी पड जाते थे। पर यह सब वसन्त के आगमन से पहले ही पहले तक रहा। इस समय सुगन्धित वृक्ष वसन्त के आने की सूचना के रूप मे खिल चुके थे। पैनी जल्दी फसल देने वाले खेतो मे हल चलाने लगा। खाद तैयार किये गए नए

खेत मे भी उसने हल चलाया, जो उसने पैनी के साँप के काटे जाने की दशा मे इनके यहाँ ठहरकर तैयार किया था। उसने रुपया कमाने के उद्देश्य से यहाँ थोड़ी रुई बोने का निश्चय किया। उत्तरी हरियाली की ओर की नीची जमीन मे उसने तम्बाकू उत्पन्न करने की सोची। उसने अपने घर और अंगूरों के बगीचे के बीच मे बीज बोने के लिए ज़मीन चुनी। पशुओं मे से घोड़ा और गाय ही उसके पास बच गए थे। उसने मटर कम और मक्की अधिक बोने का निश्चय किया। यों तो कमी हमेशा ही बनी रहती थी। न चूज़ों को पूरा खाने को मिलता था, न सूअर ही ठीक तरह मोटे हो पाते थे। गर्मियों के अन्त मे परिवार के पास भी आटा पूरा नही बचता था। यह सब मक्की की कमी के कारण ही होता था। खेती की दृष्टि से परिवार को इसी की सबसे अधिक जरूरत थी। जोडी ने सर्दियों की खाद खेतों तक पहुँचाने मे पिता की सहायता की और उन्हें खेत पर फैला भी दिया। पैनी ने ज़मीन को अच्छी तरह तैयार करने और ढँकने का निश्चय किया, ताकि महीने-भर बाद कोयल की पहली पुकार पर वह इन्हे बो सके।

माँ ने शिकायत की कि वह हमेशा ही अदरकों की एक क्यारी चाहती रही है। हरेक घर मे एक न एक ऐसी क्यारी होती है। वोलूसिया के दूकानदार की पत्नी ने उसे खेत तैयार होने पर किसी भी समय कुछ जड़ें देने का वायदा किया था। पैनी और जोडी ने एक छोटा-सा खेत इसके लिए भी तैयार कर दिया। उन्होंने घर के पास ही डेढ़ गज गहरी जमीन खोदी और सन की खाद नीचे बिछा दी। तब दक्षिण-पश्चिम की ओर से वे मिट्टी लाए और इसे उन्होंने तैयार किया। पैनी ने विश्वास दिलाया कि वह व्यापार के लिए अगली बार जाते हुए कुछ जड़ें लेता आएगा ताकि वहाँ उन्हे उगा सके।

शिकार बहुत कम पड़ गया था। भालू बहुत दूर-दूर चरने लगे थे, क्योंकि अगले ही महीने उन्होंने छिप जाना था। उनकी मांदें तूफान द्वारा उखाड़ी गई जड़ों के पास ही बनी हुई थीं। या फिर जहाँ भी दो लट्ठे एक-दूसरे पर ढेर बनाने की हालत में पड़े होते थे, वहीं उन्होंने मांद बना ली थी। कभी-कभी ननावर या लाड़ की शाखों को खींचकर वे एक खोखल पेड़ पर रख लेते, ताकि एक घोंसला-सा बन सके। उनकी मांद में

अन्दर खाई-सी खुदी होती थी। उसमे से अपने शरीर का अगला भाग रीछ बाहर निकाले रहता था। जोडी को अचरज हुआ कि रीछ ऐसी जगहो मे मगहर मे न जाकर इस समय क्यो जाते हैं? क्योकि सर्दी तो उस समय अधिक होती है।

पैनी ने बताया, "मेरे खयाल मे अपना उद्देश्य वे ही अच्छी तरह जानते हैं।"

हिरण बहुत ही कम थे। एक ओर प्लेग ने उन्हे कम कर दिया था और दूसरी ओर हिंसक पशु अधिक खूंखार हो उठे थे। बारहसिंगो की हालत बहुत अच्छी न थी। उनका मांस कमजोर और उनकी खालें धुंधले काले-से रग की और झुर्रीदार हो गई थी। वे अक्सर अकेले ही घूमते। हिरणियां भी या तो अकेले ही या दो-दो होकर घूमती। बूढी हिरणी किसी कुमारी हिरणी के साथ या अपने सालभर के बच्चे के साथ घूमा करती थी। हिरणियां सूने ही वाली थी।

खेतो का काम खतम होते ही भट्ठियो के लिए अधिक-से-अधिक लकडी काटना और इकट्ठा करना जरूरी हो गया। अब पहले की अपेक्षा लकडी अधिक जल्दी मिल जाती थी, क्योकि तूफान ने बहुत अधिक पेडो को नीचे गिरा दिया था और उनकी जडें लम्बी वर्षा और तेज हवा के कारण पहले ही हिल चुकी थी। इस कारण पेड बहुत बडी संख्या मे गिरे पडे थे। नीचे की ओर भी लकडी काफी गिरी पडी थी, पर वह सड गई थी। लगता था जैसे, बाढ नही, आग ने ऐसी जगह तबाही मचाई हो, क्योकि ऐसे पेडो का रग काला हो चुका था।

पैनी बोला, "मुझे अपने ऊँची जगह पर रहने का अभिमान है। जब मैं चारो ओर की नीची जमीन पर हुई बरबादी को देखता हूँ तब मुझे डर लगता है।"

जोडी सुबह जगल मे घूमने को और कुछ छोटे-मोटे शिकार को अच्छा समझता था। उसे उनमे आनन्द मिलता था। पैनी किसी भी ठण्डे दिन नाश्ते के बाद गाडी मे घोडे को बाँध लेता और वे किसी भी ओर सडक पर निकल पडते। कुत्ते भी गाडी के साथ-साथ चलते और फ्लैग भी इधर-उधर उछलता-मचलता चलता रहता। पैनी द्वारा बनाये गए पट्टे मे

बच गया है। बेचारा घायल और अकेला है। यह अपने सबसे नजदीकी सम्बन्धी के पास खेलने के लिए आ जाता है।"

शायद इनकी फुसफुसाहट उन तक पहुँच गई या इनकी गन्ध बन्द खिड़की में से भी उन तक पहुँच गई। चुपचाप ही वह भेड़िया लौटा और कुत्तों को छोड़कर बड़ी कठिनता से बाड़ पार करता हुआ दूर निकल गया।

जोडी ने पूछा, "क्या यह यहाँ कोई नुकसान कर सकता है ?"

पैनी ने अपने पाँव भट्टी की ओर अँगारों पर फैलाए और बोला, "मुझे सन्देह है कि यह अपने-आप एक समय का भोजन भी जुटाने लायक नहीं है। मैं इसे स्वप्न में भी तंग न करूँगा। कोई भालू या चीता ही इसे खतम कर देगा। जब तक इसका जीवन बचा है, इसे यों ही जिन्दा रहने दो।"

वे उस अजीब और दुखपूर्ण दशा में भट्टी के पास ही कुछ देर बैठे रहे। भेड़िये के लिए भी अकेलापन बहुत कठिन बात थी, क्योंकि इसे इसी कारण अपने दुश्मन के आँगन में मित्रता खोजने आना पड़ता था। जोडी ने अपनी बाँह पलँग के ऊपर रख दी। उसने सोचा, काश ! पलँग यह समझ सके कि उसे जंगल में कितना एकान्त भोगना पड़ता, जिससे अब वह बच गया है। स्वयं उसके लिए भी पलँग ने एकान्त दूर कर दिया है, जो परिवार के बीच भी उसे अनुभव होता था।

चांद घटने के दिनों में उसने एक बार फिर उसी तरह भेड़िये को देखा, पर उसके बाद वह कभी न आया। जान-बूझकर उसकी बात माँ तक न पहुँचने दी गई, क्योंकि वह उसे मारने की माँग कर बैठती। पैनी का विश्वास था कि कुत्तों ने किसी शिकार के समय या लकड़ियाँ काटने के समय उससे पहचान बनाई थी, जब कि वे जंगल में अपनी मटरगश्तियाँ करने इधर-उधर निकल गए होंगे, क्योंकि उस समय पैनी और जोडी काम में लगे होते थे।



## 29

फाल्गुन के अन्त तक पैनी जोडो के दर्द के कारण असमर्थ हो गया। सर्दियों और बरसात के दिनो मे उसे बरसो से यह बीमारी तग करती आई थी। ठण्ड लगने या अपने मनचाहे काम करने से वह कभी न रुका। उसने जिस काम को जरूरी समझा, मौसम की परवाह किए बिना, वह उसमे जुट पड़ा। पत्नी ने बार-बार कहा कि यह समय उसके बिस्तर पर आराम करने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त था, पर पैनी बसन्त की पौध लगाने के लिए बेचैन था।

पत्नी ने अधीर होकर कहा, "जोडी को यह सब कर लेने दो।"

"उसने मेरे पीछे चलने के सिवाय कभी कुछ नही किया। ऐसे काम मे वह बहुत सी गलतियां कर सकता है।"

"ठीक है, पर उसके न जानने मे दोष किसका है? तुमने उसे इतने दिन काम से खाली रखा। तुम स्वय तो तेरह बरस की आयु मे ही पूरे काम करने लगे थे।"

"यही कारण है जिससे मैं नहीं चाहता कि वह बड़ा हो जाने से पहले ऐसे किसी काम को सम्भाले।"

वह बोली, "अरे दयालु! हल चलाना कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता।"

उसने आक की जड़ उबाली और उसके लिए पुल्टिस तैयार की और नारंगी, पोटाश आदि मिलाकर उसके लिए एक ताकत की दवा तैयार की। वह उसकी दवाइयाँ बड़ी कृपा मानता हुआ पी लेता था, पर उसे कोई लाभ न हुआ। अन्त में उसे अपने चीते का तेल ही प्रयोग करना पड़ा और घुटनों पर घंटा-भर वह मालिश करता रहा। उसने बताया कि यह सबसे अधिक आरामदेह दवा है।

जबतक उसका पिता सुस्त रहा, जोडी घर के सभी काम और लकड़ी आदि काटने का काम भी करता रहा। उसे एक लोभ भी था जिससे कि वह काम जल्दी निबटा लेता, क्योंकि ऐसा करते ही उसे फ्लैग के साथ घूमने-फिरने की छुट्टी मिल जाती थी। पैनी उसे अपनी बन्दूक भी साथ ले जाने देता। उसे पिता का साथ तो न मिलता, पर अकेले में शिकार करना भी अच्छा लगता। वह और फ्लैग आजाद होकर साथ-साथ रहते। वे दोनों ही सोते के पास निकल जाते। वहाँ पर एक दिन वे एक खेल में उलझ गए। वह वहाँ पानी लेने गया था। यह खेल सोते के एक ओर ऊपर-नीचे चढ़ने का था। जोडी और फ्लैग उस सोते से नीचे तक और नीचे से फिर ऊपर तक एक-दूसरे का पीछा करते रहे। फ्लैग हार नहीं रहा था, क्योंकि जब तक जोडी एक ओर आधा भी न चढ़ पाता, तब तक वह पाँच-छः बार ऊपर-नीचे हो आता। जब वह देखता कि वह पकड़ा न जा सकेगा, और जोडी थककर चूर हो जाएगा, तो वह उसके पास तक आ जाता और दिखाता कि जैसे वह उसकी पकड़ में आ जाएगा, पर तभी वह फिर उसे खिझाने के लिए भाग जाता।

इसी महीने एक गर्म दिन जोडी ने नीचे से सोते के ऊपर की तरफ देखा, फ्लैग ऊपर तना खड़ा था। एक क्षण के लिए उसे यह लगा कि जैसे यह कोई और ही हिरन था। फ्लैग बहुत बड़ा हो चुका था। वह नहीं देख [illegible] चढ़ रहा था? कई छोटे हिरन, जो शिकार में

मारे गए थे, इससे भी छोटे थे। वह बहुत उत्तेजित होकर पैनी के पास घर में आया। पैनी रसोई में भट्ठी के पास ही रजाई में लिपटा बैठा था; हालाँकि दिन कुछ गर्म था।

जोडी फूट पड़ा, "पिताजी, आपने देखा कि फ्लैग भी बरस-भर का हो चला।'

पैनी उसकी ओर खोया-सा देखने लगा। बोला, "मैं स्वयं भी बहुत दिन से यही सोच रहा हूँ। एक महीना और होते ही वह पूरे बरस का हो जाएगा।"

"वह कितना भिन्न हो जाएगा तब?"

"हाँ, तब वह जंगल में अधिक देर रहने लगेगा। वह काफी बड़ा हो जाएगा। कभी-कभी ही यहाँ आया करेगा। वह उस प्रकार के आदमी जैसा हो जाएगा जो एक ऐसी जगह खड़ा हो जहाँ से कभी इधर और कभी उधर मुड़ा जा सकता है। उसके एक ओर उसका बचपन और दूसरी ओर उसकी जवानी होगी।"

जोडी शून्य में ताकने लगा। उसने पूछा, "उसके सींग भी आ जाएंगे?"

"उसके सींग शायद आषाढ़ से पहले न निकलेंगे। बारहसिंगों के सींग इसी समय निकलते हैं। वसन्त भर निकलने वाले सींगों के कारण उनका सिर कठोर रहता है। गर्मियाँ आते ही कुछ शाखें-सी फूटने लगती हैं और पूरी गर्मियों तक उनके सींग निकल आते हैं।"

जोडी ने फ्लैग के सिर को अच्छी तरह देखा। उसे माथे पर कोने कुछ कठोर दिखाई दिए। माँ एक बर्तन हाथ में लिये उसके पास से गुजरी।

"ओ, माँ! फ्लैग जल्दी ही बरस-भर का हो जाएगा। वह बहुत ही अच्छा दीखेगा। उसके छोटे-छोटे सींग होंगे। क्या उसके सींग और वह प्यारे न लगेंगे?"

"अगर उसके ताज और देवदूत के डैने भी लगा दो तब भी मुझे वह अच्छा न लगेगा।"

वह उसे तंग करने के लिए उसके पीछे-पीछे चल दिया। माँ भूनी मटरों को देखने के लिए मुड़ी। जोडी ने उसके गालों पर अपनी नाक ऊपर-नीचे रगड़नी शुरू कर दी। वह चाहता था कि कोमलता का आनन्द ले।

"माँ, तुम्हारे शरीर में से भुनते हुए सिट्टों की सी गन्ध आती है, मानो सिट्टे धूप में सिक रहे हों।"

"ओह! जाओ, अपना काम करो। मैं अभी मक्की का आटा भून रही थी।"

"नहीं, यह वह नहीं है। अच्छा माँ, सुनो, क्या तुम सचमुच परवाह नहीं करती कि फ्लैग के सींग निकलें, चाहे न निकलें?'

"हाँ, उसके उसे टक्कर मारने और तंग करने में और भी आनन्द आएगा।"

जोडी ने बात आगे न बढ़ाई। फ्लैग सबका प्यार खोता जा रहा था। वह चुपचाप अपनी जंजीर से निकल जाता और कसने पर वह भी बछड़े जैसे ही इस रोक के विरुद्ध हरकतें करने लगता। वह इसे तब तक खींचता जाता जब तक उसकी आँखें फूल जातीं और उसकी साँस घुटने लगती, ताकि उसे बचाने के लिए उसे खोलना आवश्यक हो जाता। और तब वह छूटते ही ऊधम मचाने लगता। उसे कोठरी में बाँधा नहीं जा सकता था, क्योंकि वहाँ के खूँटे को उसने गिरा दिया था। अब वह अधिक जंगली और असभ्य होता जा रहा था। घर में अब उसे जोडी के सामने ही आना मिलता, क्योंकि वह उसे सम्भाल सकता था। परन्तु दरवाजा बन्द देखकर वह जबर्दस्ती घुसने का यत्न करता। अगर चिटखनी न लगी होती तो वह टक्कर से ही उसे खोल लेता। जब भी वह माँ की पीठ देखता, या कोई और मौका पाता, अन्दर किसी न किसी प्रकार का नुकसान कर जाता।

माँ भुने मटरों का बर्तन मेज पर रखकर भट्ठी तक गई। जोडी एक ताजी खाल का टुकड़ा देखने के लिए अपने कमरे में गया। तभी रसोई में एकदम ही आवाज और कुछ गड़बड़ सुनाई दी और तभी माँ की चीख-चिल्लाहट और गुस्सा भी सुनाई दिया। फ्लैग ने मेज पर उछलकर कुछ मटर मुँह में भरे और सारे बर्तन को नीचे गिरा दिया। मटर सारी रसोई में इधर-उधर बिखर गए। जोडी दौड़ता हुआ आया। उसकी माँ ने दरवाजा खोला और झाड़ू मारकर फ्लैग को बाहर निकाला। फ्लैग को इस बात में भी आनन्द आया। वह उछलता-कूदता और अपनी पूँछ और सिर को उछालता हुआ दौड़ने लगा, जैसे कल्पना के सींगों से ही वह किसी पर

हमला कर रहा हो। वहाँ से वह बाड कूद गया और जंगल मे निकल गया।

जोडी बोला, "माँ, यह मेरा अपराध है। मुझे उसे नही छोडना चाहिए था। वह भूखा था। उसे नाश्ते मे आज कुछ खास नही मिला। माँ, तुम मुझे पीटो, उसे नही।"

"मैं तुम दोनो को ही चीर डालूंगी। एक-एक मटर चुनो और धो डालो।"

यह सब करने मे जोडी को आनन्द आया। मेज़ के नीचे, पीछे, आलमारी के नीचे, पानी की जगह और इधर-उधर सब कोनो से उसने मटर बटोर लिए। उसने उन्हे धोया और उसके लिए अलग पानी लाने के लिए सोते तक गया, ताकि नुकसान पूरा हो सके। उसे सचमुच पूरा पश्चात्ताप था।

वह बोला, "माँ, अब यह कोई खास नुकसान नही हुआ। अगर कभी कोई नुकसान फ्लैग करे भी तो आप मेरे पर भरोसा कर सकती हो कि मैं उसे पूरा करने का ध्यान रखूंगा।"

फ्लैग साँझ तक न आया। जोडी ने उसे बाहर ही खाना खिलाया और माता और पिता के सोने की प्रतीक्षा करने लगा, ताकि वह उसे बाद मे कमरे मे ला सके। फ्लैग की छुटपन की लम्बे समय तक सोने की आदत छूट गई थी और अब वह रात मे ही अधिक बेचैन हो उठता था। माँ ने शिकायत की कि उसने रात को जोडी के और सामने के कमरे मे कई बार उसे घूमते और पैर पटकते पाया है। जोडी ने छत पर पाए जाने वाले चूहों का एक बहाना बना दिया, पर उसकी माँ को सन्देह बना रहा। लगता है, उस दिन दोपहर बाद फ्लैग जंगल में सोया होगा, क्योंकि रात मे उसने अपनी जगह को छोडकर जोडी के कमरे का दरवाजा खोला और घर मे इधर-उधर घूमने लगा। अपनी माँ की एक तेज़ चीख सुनकर जोडी उठ बैठा। फ्लैग ने उसे सोते में जा उठाया था, क्योंकि वह अपनी नाक माँ के चेहरे पर रगडने लगा था। जोडी ने उसे पकडा और सामने के दरवाज़े से बाहर ले गया ताकि माँ अधिक शोर न कर सके।

वह गुस्से मे बोली, "अब यह यहीं समाप्त हो जाना चाहिए। यह जानवर मुझे रात मे भी सोने नही देता। अब यह किसी समय भी घर मे बिल्कुल नही आ पाएगा।"

पैनी अब तक इस बहस से दूर ही रहा था।

वह अपने बिस्तरे से ही बोला, "बेटा, तुम्हारी माँ ठीक कहती है। अब वह घर में आने के लिए बड़ा बेचैन हो गया है। उसे अन्दर नहीं आने दिया जा सकता।"

जोडी फिर सोने गया, पर जागता ही रहा। उसे आश्चर्य था कि फ्लैग में जैसे प्यार न रहा हो। उसे लगा कि उसकी माँ ने अपने चेहरे पर उसकी गीली नाक रगड़ने पर एतराज करके अच्छा नहीं किया। उसे स्वयं इस प्रकार का आनन्द अब तक काफी अधिक नहीं मिला था। उसने माँ को नीच और कठोर समझा, जो उसके अकेलेपन का ध्यान नहीं रखती। इस असन्तोष ने उसे सुला दिया और वह तकिये को पकड़कर फ्लैग समझता हुआ सो गया। सारी रात फ्लैग घर के चारों ओर उछलता-कूदता और साँसें छोड़ता रहा।

सवेरा होने पर पैनी को कपड़े पहनकर खेतों में जाने और छड़ी के बल चलने लायक अपनी दशा दिखाई दी। वह खेतों में चक्कर काट आया और घर के पीछे आ गया। उसका चेहरा उदास था। उसने जोडी को बुलाया और बताया कि फ्लैग ने तम्बाकू के बीजों वाला खेत पूरी तरह उजाड़ दिया है। नई पौध निकलने ही वाली थी कि उसने उसे कुचल डाला। लगभग आधा खेत बिलकुल उजड़ गया है। अब बाकी बचा हुआ पैनी के अपने प्रयोग के लायक ही रह जाएगा, बेचने के लिए नहीं, जैसा कि उसने बोयल्स से वायदा किया था।

वह बोला, "मुझे पता है कि उसने जान-बूझकर यह नहीं किया। वह तो अपनी मौज से आगे-पीछे दौड़ता और छलाँगें भर रहा था। अब यही उचित है कि तुम छड़ियाँ लेकर जाओ और सब पौधों को ठीक से खड़ा करो। चारों ओर भी छड़ियाँ गाड़ देना ताकि बाकी बचे पौधों को उससे बचाया जा सके। मैं पहले ही ऐसा करता रहा होता, यदि मुझे इसका रत्ती-भर भी ध्यान होता कि वह ऐसी जगह भी कुछ न कुछ उत्पात मचा आएगा।"

पैनी की दयालुता और उचित व्यवहार ने जोडी का दिल हिला दिया। माँ का गुस्सा जो इतना न अखर रहा था। वह बहुत निराशा से अपना काम करने बढ़ गया।

पैनी बोला, "यह मैं एक अचानक घटने वाली दुर्घटना के रूप मे ले रहा हूँ। हम माँ को नही बताएँगे, नही तो वह बहुत बुरा मानेगी।"

जोडी काम करते हुए फ्लैग को इन गलतियों से बचाने की बात सोचता रहा। उसने बहुत-सी तरकीबे सोची। परन्तु बीजो वाले इस खेत का नुकसान उसे बहुत बुरा लगा। उसे पूरा विश्वास था कि आगे से ऐसा कभी न होगा।



## 30

फाल्गुन के अन्तिम दिन ठण्डे परन्तु धूप-से उजले थे। पीला जयन्तिया चारो ओर खिला हुआ और चारो ओर की बाडो पर छाया हुआ था, जिससे सभी तरफ एक मधुरता-सी फैल गई थी। नागपाती और जगली अलूचो के पेड भी चारो ओर खिले हुए थे। लाल चिडियाँ सारे दिन गाती रहती और शाम को जब उनका गाना समाप्त होता, तब हँसोड़ पक्षी अपना गाना शुरु कर देते।

जमीन के कबूतर घोसला बनाकर एक-दूसरे को आवाजें देते और मिट्टी पर इधर-उधर घूमते, मानो कोई छायाएँ घूम रही हो।

पेनी बोला, "अगर मैंने मरना ही हो तो मैं चाहूँगा कि किसी ऐसे ही दिन मरूँ।"

रात मे कुछ हल्की-सी वर्षा पडी और सुबह की पहली किरणें जिस तरह धुँधलके मे से निकलकर आईं, उससे लगा कि रात मे पहले एक बार फिर बूँदे आएँगी, पर सुबह साफ और उजली थी।

पैनी बोला, "मक्का, कपास और तम्बाकू के लिए यह बहुत ही अच्छा समय है।"

पत्नी बोली, "मुझे लगता है कि आज तुम खुश हो।"

उसने हँसते हुए अपना नाश्ता समाप्त किया। पत्नी ने फिर टोका, "अब क्योंकि तुम अच्छा अनुभव कर रहे हो, कहीं खेत मे अपने को मारने के लिए फिर न चले जाना।"

वह बोला, "मैं तो इतना ठीक हूँ कि जो भी मुझे पौध लगाने से रोकेगा, मै उसी को मार डालूंगा। आज सारा दिन मै पौध लगाने की सोच रहा हूँ। कल और परसो भी यही काम होगा। कपास, तम्बाकू और मक्का लगानी है।"

वह बोली, "हाँ, मैंने सुन लिया है।"

वह खड़ा हुआ और उसने पत्नी की पीठ कचोटते हुए कहा, "मटर, आलू और सब्जियाँ भी!"

वह और जोडी उसे देखकर हँस पडे।

पत्नी बोली, "मुझे तो लगता है कि जैसे तुम यह कह रहे हो कि सारी दुनिया ही बीज डालोगे।"

पैनी ने अपनी बाँहे फैलाते हुए कहा, "मैं तुम्हे सचमुच प्यार करता हूँ। आज जैसे दिन मैं यहाँ से बोस्टन तक और वहाँ से टैक्सास तक और फिर वहाँ से भी बोस्टन तक घूमता हुआ क्यारियोंपर क्यारियाँ बोना चाहूँगा। और देखना चाहूँगा कि बीज फूटने शुरू हुए या नहीं?"

वह बोली, "अब पता चला कि जोडी हवाई कहानियाँ कैसे सीखता है?"

पैनी ने जोडी की पीठ थपथपाई और बोला, "तुम्हारे लिए आज तक बहुत हलका काम है। तुम तम्बाकू के पौधे निकाल लो और मेरे पीछे-पीछे चलो। अगर मेरी कमर न थक गई या दर्द न करने लगी तो मैं तुमसे लेकर यह पौधे लगाने लगूंगा। यह छोटी हरी पौध है। इसे भी बढ़ने का मौका मिलना चाहिए।"

सीटी बजाता हुआ वह काम पर निकल पड़ा। जोडी ने अपना नाश्ता निगला और उनके पीछे चल पड़ा। पैनी तम्बाकू के पौध वाले खेत तक

पहुँच गया था और कोमल पौध को निकाल रहा था।

वह बोला, "तुम्हे इन्हे इतना सम्भालकर लगाना है, जैसे ये नए उत्पन्न बच्चे हो।"

उसने सिखाने के लिए दस-बारह पौधे लगाए। तब आगे चलते-चलते वह जोडी को लगाते देखने लगा और उसे ठीक करता चलने लगा। तब वह घोडे और हल को ले आया। उसने नए खेत मे क्यारियाँ बना दी और मुडेरे बनाकर मक्का के लिए जगह तैयार कर दी। जोडी उसके पीछे-पीछे चलता रहा और टाँगे थकने पर घुटनो के बल चलने लगा। वह धीमे-धीमे काम कर रहा था, क्योकि पैनी ने बताया था कि जल्दी नही है और यह भी कि काम बहुत ठीक तरह से होना चाहिए। दोपहर तक सूर्य ऊँचा चढ आया और ठण्डी हवा बहने लगी। उसके पीछे के तम्बाकू के पौधे मुरझाने लगे, परन्तु रात की ठण्डक उन्हे फिर से ठीक खडा कर देगी। वह आगे चलता हुआ और सोते पर आते-जाते उन्हे देखने लगा। नाश्ते के बाद से ही फ्लैग गायब हो गया था और निगाह मे नही आ रहा था। जोडी को उसका न होना खला, पर उसे यह भी अच्छा लगा कि उसने दूर रहने का बहुत अच्छा मौका चुना। अगर वह उसके साथ होता और रोज जैसे ही खेल रहा होता, तो जोडी के लगाने से पहले ही वह इन पौधो को उजाड देता। दोपहर के खाने तक उसने काम खतम कर लिया। तम्बाकू की पौध तैयार की गई ज़मीन के थोडे से हिस्से मे ही समाप्त हो गई। पैनी ने पहले काफी अधिक बोने की तैयारी की थी। दोपहर के खाने के बाद जब पैनी उसके साथ लौटा तो उसका दुख प्रकट हुआ।

वह बोला, "बेटे, तुमने क्यारी मे एक भी पौधा पीछे नही छोडा और सभी बो दिए न ?"

"हाँ, एक एक ! मैंने तो छोटे-छोटे सूई जैसे पौधे भी बो दिए है।"

"अच्छा ! तो हम यहाँ जगह भरने के लिए कुछ और लगा देंगे।"

जोडी ने उत्सुकता से कहा, "अब मैं आपको और पौध लगाने मे और पानी लाने मे सहायता दे सकता हूँ।"

"नही, पानी की कोई जरूरत नहीं। एक ही बारिश इसे बहुत बढा देगी। हाँ, पौध तुम अवश्य लगा सकते हो।"

पैनी ने मक्की के लिए मुंडेरे बना ही ली थी। वह आगे-आगे बढ़कर अपनी छड़ी से क्यारियो मे निशान बनाता गया। जोडी उसके पीछे-पीछे हर छेद मे दो बीज डालता गया। वह चाहता था कि उसका पिता तम्बाकू के छोटे से खेत के दुख को भुलाकर किसी तरह खुश हो सके।

उसने पुकारा, "दो के काम करने मे जल्दी हो जाता है न, पिताजी?"

पैनी ने उत्तर नही दिया। ज्योही बादल घिरे और हलकी-सी हवा दक्षिण-पूर्व मे चलने लगी, यह स्पष्ट हो गया कि हलकी बौछार इन पौधो पर आएगी और मक्की भी जल्दी ही उग पडेगी। पैनी का दिल खुशी से भर उठा। शाम होने से पहले ही वर्षा ने उन्हे आ घेरा। पर वे अपना काम करते रहे और खेत पूरा बो दिया। खेत बहुत ही अच्छी तरह सँवारा गया था और इसकी कोमल धरती वर्षा के लिए पूरी उतावली थी। काम को छोड़कर पैनी ने बाड का सहारा लिया और खेत की ओर मुड़कर सन्तोष के साथ देखने लगा। उसकी आँखो मे एक और भी चमक थी। वह अब अपना छोटा-मोटा काम अपनी नई पीढ़ी पर छोड़ने के लिए तैयार था और यह नई पीढ़ी उसे धोखा देने वाली नही थी।

इसी समय फ्लैग दक्षिण से वर्षा मे भीगता, उछलता-कूदता आया और जोडी के पीछे आ खड़ा हुआ। जोडी ने उसके कान खीचे। वह बाड के इधर-उधर खूब तेजी से उछलने लगा। तब एक शहतूत के पेड के नीचे जाकर रुक गया। वहाँ से एक शाख का किनारा उसने खड़े होकर पकड़ा। जोडी अपने पिता के साथ ही बाड पर बैठ गया। उसने पिता का ध्यान फ्लैग की पतली गर्दन पर खीचना चाहा, जो शहतूत के पेड पर हरे पत्तो को खाने के लिए खिचकर पहुँची हुई थी। उसका पिता भी उधर ही ध्यान दे रहा था, पर उसके भाव कुछ अजीब-से थे। उसकी आँखें सिकुडी हुई और कुछ सोचती-सी लगी। वह वैसा ही लग रहा था जैसा अजनबी बूढ़े रीछ के पीछे जाते समय लगा था। जोडी के शरीर मे ठण्ड की एक लहर-सी दौड़ गई। यह वर्षा की नही थी। उसने पिता को पुकारा। पैनी अपने विचारो से चौंककर उसकी ओर मुड़ा। उसने उसकी आँखों में छिपे भाव को पढ़ लिया और बेफिक्री से बोला, "तुम्हारा यह छौना बहुत जल्दी बढ़ गया है। जैसा तुम उसे उस अँधेरी रात मे उठाकर लाये थे, अब वह उतना छोटा

नही रहा। अब वह बरस भर का पूरा हिरण बन गया है।"

इन शब्दो ने जोडी को आनन्द नही दिया। उसे लगा कि शब्द उसके पिता की असल भावना को नही छूते। पैनी ने उसके घुटनो पर एक क्षण के लिए हाथ रखा और बोला, "तुम दोनो ही किशोर हो गए हो। मुझे इनसे दुख होता है।"

वे बाड से नीचे उतर आए और काम निबटाने के लिए पशुओ की ओर निकल गए। फिर वहाँ से आग के पास अपने को सुखाने के लिए घर मे आ गए। वर्षा अब भी छत पर हलका-हलका शोर कर रही थी। फ्लैग अन्दर आने के लिए बाहर खडा मिमिया रहा था। जोडी अपनी माँ की ओर प्रार्थनाभरी दृष्टि से देख रहा था, पर वह जैसे बहरी और अधी बनी बैठी थी। पैनी भी आग की ओर अपनी पीठ किए और घुटनो को रगड़ते हुए कुछ कठोर बनकर बैठा हुआ था। जोडी ने कुछ पुरानी रोटी माँगी और बाहर गया। उसने कोठरी मे फिर से एक नया बिस्तर बनाया और फ्लैग को रोटी के बहाने अन्दर ले गया। वह बैठ गया और हिरण भी उसके पास अपनी टाँग दुहरी करके बैठ गया, और बाद मे लेट भी गया। जोडी ने उसके दोनो नुकीले कान पकडे और उसकी गीली नाक अपनी नाक के साथ मसली।

वह बोला, "अब तुम बरस-भर के किशोर हो गए हो। मेरी सुनो! तुम बडे हो गए हो। तुम्हें मेरी बात सुननी होगी। अब तुम्हे बडा होने के कारण अच्छा बनना पडेगा! अब तम्बाकू के खेत मत उजाडना। पिता जी को अपने पर गुस्सा मत दिलाना! तुमने कुछ सुना?"

फ्लैग जैसे ध्यान मे डूबा-सा कुछ चबाता रहा।

जोडी फिर बोला, "अच्छा, अब ज्योही पौध लगाने का काम खतम होगा मैं तुम्हारे साथ फिर चलूंगा। तुम मेरा इन्तजार करना। तुम आज बहुत देर के लिए चले गए थे। देखो, जगली मत बन जाना, क्योकि मैंने तुम्हें बता दिया है कि तुम किशोर हो गए हो!"

उसने उसे वहीं छोडा और सन्तोष अनुभव किया कि वह सन्तुष्ट होकर वही पडा रहा। उसके रसोई मे पहुँचने से पहले ही माता-पिता खाना खाने लगे थे। उन्होने उसके देर करने पर कोई टिप्पणी न की। वे चुपचाप ही

खाते रहे। पैनी तुरन्त सोने चला गया। जोडी भी एकदम थका-सा अनुभव करने लगा और अपने धूल-भरे पाँवों को बिना धोये ही बिस्तरे में जा सोया। जब उसकी माँ दरवाज़े पर उसे याद दिलाने आई, तब तक वह अपनी एक बाँह तकिये पर रखे बहुत गहरी नींद में सो चुका था। उसने उसकी ओर देखा और बिना कुछ कहे या जगाये वह लौट गई।

सुबह पैनी फिर प्रसन्न था। वह बोला, "आज रुई की बारी है।"

हल्की-सी वर्षा रात में ही समाप्त हो चुकी थी। सुबह अभी कुहरा छाया हुआ था। खेत चारों ओर की लाली से भरे हुए थे। हँसोड़ पक्षी चारों ओर की झाड़ियों में संगीत की धुन छेड़े हुए थे।

पैनी बोला, "ये शहतूतों के लिए जल्दी मचा रहे हैं।"

पहले रुई के बीज गड्ढे में डाल दिये गए। बाद में उन्हें रेतीली जगह पर एक-दूसरे से काफी दूर अलग अलग गाड़ा जाएगा। जोडी अपने पिता के पीछे पहले दिन जैसे उन चमकीले बीजों को लेकर बढ़ता रहा। वह नई फसल के लिए उतावला था और अनगिनत प्रश्न पूछता जा रहा था। नाश्ते के कुछ देर बाद से ही फ्लैग गायब हो गया था, परन्तु दोपहर से काफी पहले ही वह फिर इन दोनों के पास उछलता हुआ आ पहुँचा। पैनी ने उसे फिर देखा। मुलायम जमीन में उसके खुर काफी गहरा निशान छोड़ रहे थे। परन्तु बीज काफी गहरे बोये गए थे इसलिए नुकसान का ख़तरा न था।

पैनी बोला, "तुम्हें न पाकर वह बाहर निकल जाता है।"

"अब तो वह कुत्तों-जैसा हो गया है न, पिताजी? वह भी मेरे साथ वैसे ही बँधा रहना चाहता है जैसे जूलिया आपके साथ!"

"बेटे, तुम उसके बारे में बहुत सोचने लगे हो।"

"निश्चय ही।"

जोडी पिता की ओर आश्चर्य से ताकने लगा।

पैनी बोला, "अच्छा, प्रतीक्षा करो और देखो, क्या होता है?"

जोडी को इन टिप्पणों में कोई विशेषता न लगी और उसने कोई परवाह न की। बीज बोने का काम हफ्ता-भर चलता रहा। मक्की और रुई के बाद मटरों की बारी आई और उसके बाद आलुओं की। घर के पीछे वाला सब्जियों का बगीचा प्याज, शलगम आदि से भर दिया गया। अंधेरे

के दिनो मे जडो वाली सब्ज़ियाँ ही अधिक बोई जाती थी। पहली फाल्गुन का दिन पैनी के गठिया के दर्द के कारण चूक गया था और पैनी चाहने पर भी कौलर्ड न बो सका। उसकी इच्छा हुई कि वह उन्हे अब बो डाले। पर क्योकि पत्तो वाली सब्जियाँ बढते चाँद के दिनो मे बोई जाती है, इसलिए उसने हफ्ता-भर प्रतीक्षा करनी उचित समझी। वह हर रोज जल्दी ही उठ जाता और देर तक काम करता रहता। वह स्वय जी तोडकर काम करता। पौध बोने का काम समाप्त हो गया था, पर तो भी वह सन्तुष्ट न था। वसन्त के काम का जोश उस पर चढा हुआ था। मौसम अनुकूल था और साल भर की कमाई इसी समय के नतीजो पर आश्रित थी। वह सोते से दोनो बडी-बडी बाल्टियाँ भरकर अनेक बार लाता और तम्बाकू और सब्ज़ियो के बगीचे मे उन्हे उँडेलता।

बक से एक ठूंठ उखाडने से बच गया था। यह रुई वाली ज़मीन मे था। पैनी ने उसे खोदा और चारो ओर से छीला। तब उसने इसे जज़ीरो से जकड दिया और बूढे घोडे को जोतकर इसे खीचने लगा। घोड़ा थक गया और उस पर जोर पडा। उसकी साँस तेजी से चलने लगी। पैनी ने एक रस्सी ठूंठ पर पटकी और घोडे को जल्दी करने के लिए कहा। वह खुद भी उसके साथ खीचने लगा। जोडी ने देखा कि उसके पिता का चेहरा सफेद पड गया। पैनी ने अपनी जाँघें थाम ली और घुटनो के बल बैठ गया। जोडी उसकी ओर दौडा।

पैनी बोला, "सब ठीक है। अभी कुछ देर मे ठीक हो जाएगा। मेरा अनुमान है कि कुछ खिचाव पड गया है।"

दर्द से बेचैन होकर वह ज़मीन पर पड गया और बोला, "मैं ठीक हो जाऊँगा। सीज़र को खडा कर दो' 'रुको' ''मेरे हाथ को सहारा दो ' मैं उस पर चढूँगा।"

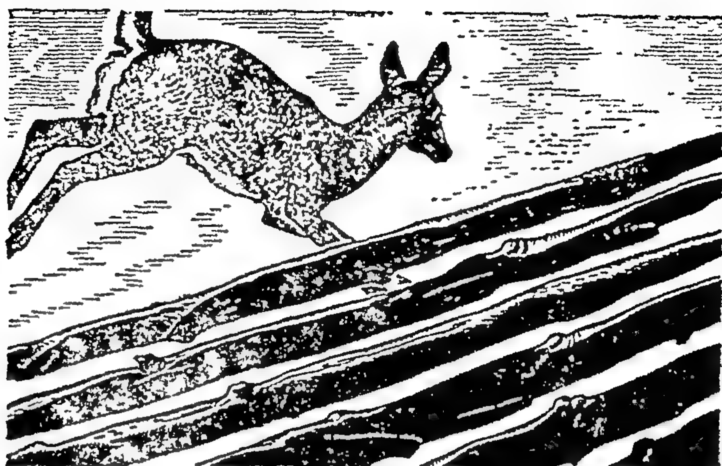
दर्द के कारण वह दुहरा हो गया था और सीधा नही हो सकता था। जोडी ने सहारा देकर उसे ठूंठ पर चढाया और वहाँ से वह घोडे की पीठ पर चढ आया। वह सामने को झुका और अपना सिर घोड़े की गर्दन पर रखकर, उसकी लटाओ को पकडकर, बैठ गया। जोडी ने घोडे की जज़ीरें खोल दी और उसे घर की ओर जाने के लिए खेतो से बाहर लाकर आँगन

मे छोड़ दिया। पैंनी न उतरा। यहाँ भी जोडी ने एक कुर्सी निकाली ताकि वह खडा हो सके और आसानी से उतर सके। पैंनी फिसलकर कुर्सी पर आया और वहाँ से ज़मीन पर उतरा। वह धीरे-धीरे घर मे घुसा। रसोई की मेज़ से उसकी पत्नी अपना काम छोडकर आई। उसके हाथ मे पकडा हुआ बर्तन नीचे गिर पडा।

वह बोली, "मुझे पता था। तुमने खुद को चोट पहुँचाई। तुम काम छोडना नही जानते!"

वह अपने बिस्तरे पर पहुंचा और मुँह नीचे करके पड गया। वह पीछे-पीछे आई और उसका मुँह ऊपर करके उसके नीचे उसने एक तकिया लगा दिया। उसके जूते खोलकर एक रजाई उस पर ओढा दी। पैंनी ने अपनी टाँगें आराम के साथ सीधी की और आँखें बन्द कर ली।

वह बोला, "बहुत अच्छा है, ओरी! बिलकुल ठीक है। मैं कुछ देर मे ठीक हो जाऊँगा। शायद कोई खिचाव आ गया है।"



# 31

पैनी ठीक न हुआ। वह उसी तरह बिना शिकायत के कष्ट मे पडा रहा।

माँ ने चाहा कि जोडी डाक्टर को जाकर बुला लाए, पर पैनी ने न जाने दिया।

वह बोला, "मैंने पहले ही उसका देना है। मैं यो ही ठीक हो जाऊँगा।"

"शायद अन्दर कुछ फट गया है?"

"तब भी, ठीक हो जाएगा!"

पत्नी ने शिकायत की, "काश! तुम्हे थोडा भी खयाल होता! पर तुम तो हमेशा अपनी ज़िद पर अड जाते हो, जैसे तुम भी फौरेस्टरों जैसे बड़े हो!"

"ओरी, मेरे चाचा माइल्स बहुत बडे शरीर के थे और उन्हे भी फटाव आ गया था। वह ऐसे ही ठीक हो गए थे। अब तुम चुप रहो, ओरी!"

"मैं चुप नही रहूंगी। मैं चाहती हूँ कि तुम खूब अच्छी तरह पाठ सीखो।"

"मैंने सीख लिया। अब तो चुप रहो!"

जोडी कुछ अशान्त हुआ। पैनी अब भी छोटे मोटे काम करता था। वह जीवन-भर अकेला ही दस आदमियो का काम निवटाने का यत्न करता रहा था और कई बार उसे चोटे सहनी पडी थी। जोडी को याद था कि एक बार एक गिरते पेड को पैनी ने किस तरह रोका था और उससे उसके एक कन्धे पर बुरी तरह चोट आई थी। महीनो तक उसने वह बाँह लटकाए रखी, पर वह फिर से पहले जैसा ही ठीक हो गया। पैनी को कोई भी चोट बहुत देर तक नुकसान नही पहुँचा सकती थी। साँप भी उसे न मार सका। जोडी को लगा कि धरती की भाँति ही उसका पिता भी मिटने वाला नही है, पर उसकी माँ हमेशा डरती रहती थी। वह तो छोटी अँगुली पर चोट आ जाने पर भी इतना ही तूफान मचाती।

पैनी के विस्तर पर पडने के कुछ बाद ही जोडी ने खबर दी कि अनाज उग आया है और पौधे बिलकुल ठीक उठ आए है।

उसने पूछा, "क्या यह बहुत अच्छा नही हुआ?"

पिता का पीला चेहरा तकिये पर से ही चमक पडा।

वह बोला, "ऐसे समय मै अभी विस्तर मे ही पडा हूँ। अब तुम्हे ही इसमे हल चलाना होगा।" फिर भौहे सिकोडकर वह बोला, "बेटे, तुम्हे अच्छी तरह पता है कि इस समय फ्लैग को खेतो से बहुत बाहर रखना चाहिए।"

"मै उसे बाहर ही रखूंगा। उसका ध्यान शायद इस ओर है भी नही।"

"ठीक है! बहुत अच्छा है! पर उसे धर्म समझकर बाहर ही रखना।"

जोडी का अगला दिन फ्लैग के साथ शिकार पर बीता। वे जूनिपर स्रोत की ओर निकल गए और चार गिलहरियाँ मारकर लाए।

पैनी बोला, "यह हुआ मेरे बेटे का काम! अपने बूढे बाप के लिए वह भोजन भी लाने लगा है।"

माँ ने गिलहरियों का पुलाव शाम के खाने के लिए बनाया और बोली, "खाने में ये बहुत अच्छी लगती हैं।"

पैनी बोला, "क्यों नहीं ? इनका माँस बहुत ही मुलायम है। तुम इसे चूम भी सकते हो।"

जोडी और फ्लैग के लिए सबका प्यार जग पड़ा।

रात में फिर हलकी वर्षा हुई और पैनी के कहने पर वह सुबह खेतों में यह देखने गया कि धान कितना निकला है और कहीं किन्हीं कीड़ों का निशान तो सामने नहीं आया ? वह बाड़ को कूद गया और खेत के दूसरी ओर निकल गया। अभी वह कुछ ही दूर गया होगा कि उसे सूझा कि पहले मक्की के पौधे देखले। पर वे वहाँ बचे ही न थे। वह चक्कर में पड़ गया। आगे गया, वहाँ भी कोई पौध न दिखाई दी। कोने तक उसे कुछ भी न दिखाई दिया। तब खेत के परले किनारे उसने देखा कि ये सब वहाँ बिखरे पड़े थे।

वह लौटा और उसने क्यारियों में देखा। फ्लैग के खुरों के तेज निशान सब जगह फैले हुए थे। उसने सुबह ही सारी पौध ऐसे धीमे-धीमे उखाड़ी थी, जैसे किसी ने हाथ से उखाड़ी हो। जोडी डर गया। वह खेत में फिर घूमने लगा। शायद कहीं कोई जादू हो जाए और मक्का उसके पीठ पीछे शायद फिर उग पड़े।

उसने सोचा, 'शायद यह एक स्वप्न ही था कि फ्लैग ने सारी खेती खा ली थी। जब वह जगेगा तो वह इसे बढ़ी हुई, हरी और मुलायम पाएगा।' उसने अपनी बाँह में एक छड़ी चुभोई, ताकि वह अनुभव कर सके कि वह जाग रहा है। अपने भारी कदमों के साथ वह धीमे-धीमे घर लौटा। रसोई में ही चुपचाप बैठ गया और पिता के पास भी न गया। पैनी ने उसे बुलाया तब वह उसके कमरे में पहुँचा।

पैनी बोला, "हाँ बेटे, फसल कैसी हुई ?"

"रुई निकल आई है और वह ठीक है। मटर भी निकल रहे हैं।"

परन्तु उसका उत्साह झूठा था। उसने अपने नंगे पंजे फैलाए और उन्हें हिलाने लगा। वह उन्हीं में खो गया, जैसे उनका काम देखने में उसे आनन्द आ रहा हो।

पैनी ने पूछा, "जोडी, मक्की का क्या हुआ ?"

उसके दिल की धडकन किसी भिनभिनाने वाले पक्षी से भी तेज़ हो गई। उसने जैसे थूक निगला और हिम्मत करके वह बोला, "कोई इसे खा गया है।"

पैनी चुप होकर खडा रहा। उसकी चुप्पी भी एक स्वप्न-सी थी। अन्त मे वह बोला, "क्या तुम नही बता सकते कि किसने किया है ?"

उसने पिता की ओर देखा। उसकी आँखे निराश और क्षमा माँगती-सी थी।

पैनी बोला, "कोई बात नही। मैं तुम्हारी माँ से देखने के लिए कहे देता हूँ, वह बता देगी।"

"माँ को मत भेजिए !"

"पर उसे जानना ही होगा।"

"उसे मत भेजिए !"

"तो यह फ्लैग ने किया है न ?"

जोडी के होठ काँपे और वह बोला, "हाँ, मेरा यही अनुमान है।"

पैनी ने उसकी ओर बडी करुणा से भरकर देखा।

वह बोला, "बेटे, मुझे बहुत दुख है। मैंने पहले ही लगभग यह अनुमान कर लिया था। जाओ, थोडी देर खेलो और अपनी माँ को इधर भेज दो।"

"पिताजी, उन्हे मत बताइए ! कृपा करके उन्हे मत बताइए !"

"उन्हे तो बताना ही होगा। अब तुम जाओ ! जो भी तुम्हारे लिए मैं भली से भली बात सोच सकता हूँ, करूँगा।"

वह रसोई की ओर लडखडाता-सा गया और माँ को उसने कहा, "पिता जी आपको बुलाते हैं।"

तब वह फ्लैग को बुलाकर घर से बाहर निकल गया। वह काँप रहा था। फ्लैग पीछे के जगल से निकलकर सामने आ गया। जोडी उसकी पीठ पर अपनी बाँह रखे सडक पर निकल आया। उसके अपराधो के समय वह उस पर हर रोज़ से भी अधिक प्यार करने लगता था। फ्लैग ने कुलाँचें भरी और उसे भी उछलने के लिए निमन्त्रण दिया, पर उसका दिल खेलने मे न था। वह सोते तक बहुत धीमे-धीमे बढता गया। इसका पानी और

चारों ओर की जगह इतनी प्यारी थी जैसे बसन्त के फूलों का कोई बगीचा हो। डौगवुड अभी भी खिल रहा था। उसके अन्तिम फूल सफेद पड़ गए थे। दूसरी ओर नए पीले और हरे फूल अखरोट आदि पेड़ों पर निकल आए थे। यहां भी उसकी घूमने की इच्छा न हुई। वह फिर घर की ओर मुड़ आया और अन्दर गया। उसकी मां अब भी पिता से बात कर रही थी। पैनी ने उसे अपने पास बुलाया। उसकी मां का चेहरा गुस्से से भरा हुआ था। अपनी हार पर वह गुस्सा थी। उसका मुंह बन्द था।

पैनी शान्ति से बोला, "जोडी, हम एक सुलह पर पहुंचे हैं। जो कुछ भी हुआ, बहुत बुरा हुआ, पर हम एक इलाज करने का यत्न कर सकते हैं। मैं यह मान लेता हूँ कि तुम खेत को ठीक करने के लिए अधिक मेहनत करने को तैयार हो।"

"पिताजी, मैं कोई भी काम करने को तैयार हूं और फसल निकलने तक फ्लैग को बन्द रखूंगा।"

"खैर, हमारे पास ऐसे जंगली जीव को बन्द करने के लिए इस धरती पर तो कोई जगह है नहीं। तुम सुन लो! जाओ, मक्का के दाने अनाज भण्डार से ले लो। सबसे अच्छे भुट्टे चुनना। तुम्हारी मां दाने निकालने में सहायता करेगी। तब जाकर ठीक पहले की ही जगहों पर बोते जाना। जैसे मैंने छेद किए थे, वैसे ही छेद करके उनमें बीज भरते जाना।"

"मैं जानता हूँ, कैसे करना है।"

"जब तुम इसे कर चुको तो कल सवेरे ही सीजर को गाड़ी में जोतकर पुराने उजाड़ खेत के पास चले जाना। वह फौरेस्टरों की ओर जाने वाले रास्ते पर है, जहां से सड़क मुड़ती है। तुम वहां से पुरानी बाड़ उखाड़ लेना और वह जंगला गाड़ी पर लाद लाना। बोझ अधिक न हो, क्योंकि उस चढ़ाई पर सीजर अधिक बोझ न खींच सकेगा। जितने भी जंगले आवश्यक हों, तुम ले आना। यहां बाड़ के पास उन जंगलों का ढेर लगा दो। पहला ढेर मक्की के खेत के दक्षिण की ओर लगाना। और, फिर इस घर से आंगन की सीमा पर पूरब की ओर! तब इस बाड़ को नष्ट कर देना। पहले इन दोनों जगहों पर तुम काफी ऊंची बाड़ खड़ी कर लेना। मैं देख रहा हूं, तुम्हारा यह छौना इन्हीं किनारों से बाड़ लांघता है। तब तुम इसे पार

छोडकर बाकी बाड को बना लेना।"

जोडी को लगा जैसे उसे एक छोटे काले सन्दूक मे पहले बन्द किया गया हो और फिर उसका ढँकना उठा दिया गया हो। उसे फिर से सूर्य, प्रकाश और हवा बहती हुई लगने लगी। अब वह स्वतन्त्र था।

पैनी बोला, "जब तुम अपने से भी ऊँची बाड बना लो और तब तक अगर मै खडा होने लायक न हो जाऊँ, तो तुम अपनी माँ को बुला लेना। वह सीढियो पर चढकर तुम्हारी सहायता कर सकेगी।"

जोडी खुशी मे माँ से प्यार करने मुडा। वह दुख मे अपना एक पाँव धरती पर पटक रही थी। वह उसकी ओर ताकने लगी, पर बोली नही। जोडी ने सोचा कि इस समय उसे न छूना ही अधिक अच्छा है। पर उसके चैन को कोई भी बात कम न कर सकी। वह बाहर भागा। फ्लैग बाहर की सडक के आस-पास चर रहा था।

जोडी ने अपनी बाँह उसके चारो ओर डाल दी और बोला, "माँ अब भी गुस्से मे है, पर पिताजी ने तय कर दिया है।"

फ्लैग का मन घास के उन कोमल अकुरो मे लगा हुआ था और वह हाथ से छूटकर फिर आज़ाद हो गया। जोडी सीटी बजाता हुआ अनाज भण्डार तक गया और उसने मक्की मे से चुन-चुनकर भुट्टे निकाले, जिनके सबसे बडे दाने थे। बाकी बचे अनाज मे से बहुत सारे भुट्टे इस दुबारा बोने मे खप गए। एक बोरी मे उन्हे भरकर वह पिछले दरवाज़े मे ले आया और बैठकर दाने निकालने लगा। उसकी माँ आई और उसके पास बैठ गई। उसका चेहरा उदास था। उसने भुट्टा उठाया और काम मे जुट गई। उसके चेहरे पर घृणा और क्रोध था।

पैनी ने उसे जोडी को झिडकने से मना किया था, परन्तु अपने मन से बात करने से उसे नही रोका था। वह मन-ही-मन बोली, 'इसी के मन को दुखने से बचाते रहो! हुँ! पर सर्दियो के लिए हमारे इन पेटो की रक्षा कौन करेगा?'

जोडी कुछ इस प्रकार से घूमा कि उसकी पीठ माँ की ओर मुड गई। वह उसकी उपेक्षा करके अपने साँस को दबाकर गुनगुनाया, "क्या अजब बात है!"

उसने यह गुनगुनाना बन्द कर दिया। यह समय अधीर होने और दलीलें देने का नहीं था। उसकी अंगुलियां काम करने लगी और मुट्ठी से दाने गिरने लगे। वह मां से दूर दाने बोने के लिए जल्दी से जल्दी चले जाना चाहता था। उसने दानों का थैला पीठ पर लटकाया और खेतों की ओर चल पड़ा। दोपहर के भोजन का समय हो चुका था, पर अभी घंटे भर का ही काम निबटा पाया था। खुले खेत में वह गाने और सीटियां बजाने में स्वतन्त्र था। एक पक्षी सामने की हरियाली में गा उठा, पता नहीं उससे सुर मिलाने को या उसके मुकाबले के लिए। दिन एकदम नीला और सुनहरा था। उसकी अंगुलियों में पकड़े दाने, उसके सामने उन दानों को अपने अन्दर लेने वाली फैली धरती आदि उसे सभी कुछ अच्छा लग रहा था। फ्लैग ने उसे ढूंढ लिया और उसके साथ आ मिला।

जोडी बोला, "तुम अभी अपना उछलना-कूदना पूरा कर लो। अब तुम्हें बन्द कर दूंगा।"

उसने जैसे-तैसे दोपहर का खाना निगला और फिर बीज बोने के काम पर लौट आया। उसने इतनी तेजी से काम किया कि अगले दिन सुबह दो घंटे के काम से ही यह सब निबट सकता था। शाम के खाने के बाद वह पैनी के पास बैठा और गिलहरी की तरह लगातार बातें करता रहा। पैनी सदा की भांति गम्भीर बनकर सुनता रहा, परन्तु कभी-कभी उनका उत्तर खाली सा लगता था और उसके विचार कहीं और उलझे हुए-से। मां भी चुप रही। दोनों समय का भोजन हलका ही रहा। यह मन लगाकर भी नहीं पकाया गया था, मानो मां ने फिले के पीछे से अपना बदला ले लिया हो। रसोई ही उसका किला था। जोडी सांस लेने के लिए रुका। दूर हरियाली में से एक कोयल की आवाज सुनाई दी। पैनी का चेहरा खिल उठा।

"जब इसकी पहली आवाज सुनाई दे तो मक्की जमीन में पड़ जानी चाहिए। हमें अब भी देर नहीं हुई।"

"कल सुबह तक हरेक दाना बो दिया जाएगा।"

"बहुत अच्छा होगा।"

उसने अपनी आंखें बन्द कीं। बहुत तेज दर्द भी हो उसके लेटे रहने में

शान्त हो जाता था परन्तु हिलते ही वह दर्द तेज़ हो जाता। गठिया के कारण वह कमज़ोर होता जा रहा था।

वह बोला, "अब जाकर तुम भी सो जाओ और आराम करो।"

जोडी ने वहाँ से उठकर हाथ-पाँव धोए और बिस्तर पर जाकर शान्त मन और थके शरीर से लेट गया। उसे तत्काल ही नीद ने आ घेरा।

सुबह पौ फटने से पहले ही अपनी जिम्मेदारी को अनुभव करके वह उठ पडा। बिस्तरे से निकलते ही उसने पोशाक बदल ली।

माँ बोली, "बहुत दुख है कि ऐसी बातो के कारण तुम्हे जल्दी उठना पडा।"

उसने सीख लिया था कि किस प्रकार पिछले महीनो मे माँ और फ्लैग के बीच मे उसका पिता बिना बहस के चुपचाप बात बना लेता था। उसकी माँ को यह बात अधिक खलती, पर थोडी ही देर मे वह गुस्सा छोड देती। उसने जल्दी-जल्दी जी भरकर खाना खाया। उसने कुछ बिस्कुट फ्लैग के लिए अपनी कमीज के अन्दर डाल लिए और अपने काम पर एकदम ही निकल पडा। पहले पहल उसे बीज बोते समय कुछ दिखाई ही न पडा, तब उसे पूर्व मे अगूरों के बगीचे के पीछे से सूर्य चढता हुआ दिखाई दिया। उसकी पतली सुनहरी रोशनी मे बेल के पत्ते और अगूर ऐसे लग रहे थे जैसे ट्विंक वैदरबी के बाल हो। उसने अनुभव किया कि चढता और अस्त होता सूर्य उसे आनन्द और दुख की मिली-जुली भावना देता है। चढता सूर्य उसमे एक असभ्य, किन्तु स्वतन्त्र, दुख-सा ला देता है, जबकि अस्त होता सूर्य उसमे अकेलेपन का, किन्तु शान्तिदायक, दुख-सा भर देता है। वह अपनी मस्ती मे तब तक सोचता रहा, जब तक उसके नीचे की ज़मीन केसरिया रग मे रग न गई, और तब पीली न पडने लगी। तब उसने अपना काम बहुत उत्साह के साथ आरम्भ कर दिया। फ्लैग भी जगल से निकल-कर उस तक आ गया। शायद उसने रात जगल मे ही बिताई थी। जोडी ने उसे बिस्कुट खिलाए और उसकी नाक को अपने कुरते के अन्दर बिस्कुटो तक ले गया। उसे अपनी नगी खाल पर उसका गीला और मुलायम स्पर्श बहुत अच्छा लगा।

दाने बोने का काम जल्दी ही समाप्त हो गया। तब वह पशुओ की ओर लौटा। बूढा घोडा दक्षिण की ओर चर रहा था। उसने अचरज के साथ

अपना सिर घास से उठाया। जोडी ने उसे जोतने के लिए बहुत कम बांधा था। वह बहुत नम्रता से गाडी मे बँधने के लिए पीछे खिसक गया। जोडी को अपने अधिकार की बात पसन्द आई। उसने अपनी आवाज को जबर-दस्ती गहरा किया और कुछ अनावश्यक आज्ञाएँ देने लगा। सीजर नम्रता से हर बात मानने लगा। जोडी ने अपनी जगह पकडी और लगामो को सम्भालकर गाडी उजाड खेत की ओर पश्चिम मे चला दी। फ्लैग को इसमे आनन्द आया और आगे-आगे चलने लगा। कभी-कभी वह सडक के बीचोबीच शरारत के लिए लेट जाता और तब जोडी को उतरकर उसे चलने के लिए विवश करना पडता।

वह बोला, "तुम बहुत शरारती हो। अब तुम किशोर हो गए हो।"

उसने लगाम फटकारी और सीजर को तेज चाल से चलने पर मजबूर किया। तभी उसे याद आया कि उसे अभी कई चक्कर लगाने होंगे, और तब उसने उस बूढे पशु को मामूली चाल पर धीमे-धीमे चलने दिया। खेत पर पहुँचकर उसे लगा कि जगले को खींचना बहुत आसान काम था। उसको सहारा देने वाले डण्डे आसानी से खींच लिए जाते थे। उसे पहले तो इन्हे गाडी पर रखना आसान लगा, पर बाद मे उसकी बाहें और पीठ दुखने लगी। उसे आराम के लिए रुकना पडा। अधिक बोझे का कोई डर था ही नहीं, क्योंकि जगले को एक ऊँचाई से अधिक रखा भी नहीं जा सकता था। उसने यत्न किया कि फ्लैग उसके पास ही बैठ जाय, परन्तु तंग जगह देखकर वह नीचे कूद पडा और ऊपर न बिठाया जा सका। जोडी ने उसे उठाने का यत्न किया, परन्तु अब वह काफी भारी हो चुका था। वह उसकी अगली टाँगो को ही बडी मुश्किल से गाडी तक टिका सका। अन्त मे यह सब यत्न छोडकर उसने घर की ओर गाडी मोड दी। फ्लैग फिर से उछलकर उससे आगे पहुँच गया और उसके पहुँचने की प्रतीक्षा करने लगा। जोडी ने निश्चय किया कि पहले घर के पास इन सब जंगलों को रख देगा और तब दोनों ओर धीमे-धीमे बारी-बारी से काम करता रहेगा। इस तरह जंगला खतम होने तक वह काफी ऊँची बाड बना लेगा। फ्लैग को दोनों ऊपर से कूदना मुश्किल हो जाएगा।

ढोने और उतारने मे उसे आशा से अधिक समय लग गया। बीच मे

तो उसे यह निराशाजनक रूप मे अन्तहीन काम दीखने लगा था। उसे लगा कि मक्की उसके बाड पूरा करने से पहले ही उग आएगी। पर मौसम खुश्क था और मक्की को फूटने मे देर लगी। वह हर सुबह बडी आशा और डर से पीले अकुरो को देखता। परन्तु प्रतिदिन उसे चैन मिलती, क्योकि अभी कुछ भी फूटने नही लगा था। वह हर रोज़ ही मुँह-अँधेरे उठ पडता और माँ को बिना तग किए ठण्डा ही नाश्ता खा लेता या नाश्ता खाने से पहले वह एक चक्कर लगा चुकता। रात को भी सूर्य छिपने के काफी देर बाद तक वह काम करता रहता। सूर्य का गुलाबी-पीला-सा प्रकाश मिट जाता और अँधेरा उन जगलो को भी अपने मे समा लेता। अधिक काम करने के कारण उसकी आँखो के नीचे काले गढे पड गए। वह पूरी नीद भी न ले पाता था। न उसे बाल काटने का समय मिलता। वे उसकी आँखो तक लटकते रहते। शाम के भोजन के बाद आँखो मे नीद भरी होने पर भी माँ द्वारा लकडी लाने के लिए कहे जाने पर उसने कभी शिकायत नही की। हालाँकि उसकी माँ दिन मे यह काम आसानी से कर सकती थी।

"मुझे प्रसन्नता है, बेटा, कि तुम इतनी मेहनत कर रहे हो, पर जिसके लिए तुम इतना सोचते हो वह किशोर छौना इस तरह अपने को मारने लायक नही।"

जोडी ने विरोध मे कहा, "नही, मैं अपने को मार नही रहा। मुझे तो अपनी शक्ति पता चल रही है। मैं ताकतवर होता जा रहा हूँ।"

पैनी ने उसकी पतली, परन्तु सख्त भुजाओ को देखा। बात सच थी। इस लगातार बोझ उठाने ने उसकी बाँहो, पीठ और कन्धो को मजबूत कर दिया था।

पैनी बोला, "अगर तुम्हे इससे कुछ सहायता मिले तो मैं अपने जीवन का एक वर्ष तुम्हे देने को तैयार हूं।"

"मैं इस बाड़ को पूरा कर दूँगा।"

चौथी सुबह उसने फ्लैग वाली दिशा से बाड बनाने का निश्चय किया। पर यदि तब तक अकुर फूट पडे तो फ्लैग उसे बेखबर न पाएगा। वह उसके पाँव एक पेड के साथ बाँध देगा और उमी तरह दिन-रात रोता-पीटता छोड देगा। बाड पूरी करनी आवश्यक थी। उसने देखा कि काम तेजी से

होने लगा। दो ही दिन में उसने दोनों ओर की बाड़ें पाँच फुट तक ऊँची कर दी थीं। माँ ने जब देखा कि उसके अकेले के वश का काम नहीं, तो छठे दिन वह भी पहुँच गई।

वह बोली, "आज मुझे कुछ काम नहीं है। मैं तुम्हें इसे कुछ और ऊँचा करने में सहायता दूँगी।"

जोडी खुशी से फूट पड़ा, "ओह, प्यारी माँ! मेरी प्यारी माँ!"

"अरे मुझे कुचल और मार मत डालो! मैंने कभी न सोचा था कि तुम में इतना काम करने की शक्ति है।"

उसने आसानी से यह सब कह दिया। पर, वास्तव में काम कठोर होकर भी इतना भारी नहीं था। दोनों हाथों से हलके जंगले को आसानी से उठाया जा सकता था। इसका उठाना भी आरी चलाने जैसा ही मस्तीभरा था। उस बेचारी का चेहरा लाल हो गया। उसकी साँस भारी चलने लगी और पसीना आने लगा। परन्तु वह सारे दिन और अगले दिन भी कुछ देर तक हँसती हुई उसके साथ काम पर लगी रही। कोने में काफी जंगले पड़े थे और यह बाड़ काफी ऊँची जा सकती थी। उन्होंने इसे पैनी के कहने के अनुसार दो गज से भी ऊँचा बना दिया ताकि हिरण बाहर रह सके।

पैनी बोला, "अगर यह पूरा बारहसिंगा बन जाय, तो आठ फुट तक भी आसानी से कूद जाएगा।"

उस रात जोडी ने देखा कि अनाज फूटना शुरू हो चुका था। अगली सुबह उसने फ्लैग पर एक रस्सी बाँधनी चाही। उसने एक पाँव से दूसरे पाँव तक रस्सी बाँध दी और बीच में कुछ ढीली जगह [illegible] के लिए छोड़ दी। गुस्से में उसने अपनी टाँगें चलाईं और अपने को धरती पर पटक दिया। वह अपने घुटनों पर खड़ा हुआ और इतने ज़ोर से रस्सी छुड़ाने का यत्न करने लगा कि मानो यह अगर छोड़ा न गया तो अपनी टाँगें ही तोड़ लेगा। जोडी ने उसकी रस्सी काटी और उसे जाने दिया। [illegible] भाग [illegible] की ओर भाग गया और सारे दिन न लौटा। जोडी भी [illegible] की [illegible] की ओर लगा रहा। पर इस [illegible] के लिए [illegible] [illegible] छूटने की रह गई थी। [illegible]

दी। उसने सारे जगले बरत लिए।

दो बार की हलकी-हलकी बारिश ने अकुरो को बडा कर दिया। अब ये एक इच से भी ऊँचे हो गए थे। एक दिन सुबह जोडी पुराने उजाड खेत की ओर अधिक पटरियाँ लेने के लिए जाने ही लगा था कि वह ऊँची नई बाड पर चढकर खेत के पार,तक देखने लगा। उसकी निगाह फ्लैग पर जा पहुँची। वह उत्तर की हरियाली की ओर चर रहा था। वह एकदम कूदा और माँ को बुला लाया।

"माँ, क्या आप जगले लाने मे मेरी सहायता करेगी? मुझे बहुत जल्दी है। फ्लैग ने उत्तर की ओर फिर गडबड कर दी है।"

वह उसके साथ जल्दी-जल्दी आई और कुछ ऊपर चढकर झाँकने लगी।

वह बोली, "उत्तर नही, वह ठीक यही से ' सबसे ऊँचे कोने से कूदा है।"

उसने माँ के इशारे की ओर देखा। बहुत गहरे निशान बाड की ओर बढे हुए थे और फिर खेत मे भी गडे हुए थे।

माँ बोली, "और उसने यह फसल भी नष्ट कर दी।"

जोडी हैरान रह गया। इस बार अकुर फिर जड से उखाडे गए थे। क्यारियाँ उजाड पडी थी। हर कतार के बीच मे छौने के पाँव के चिह्न थे।

वह बोला, "माँ, वह बहुत दूर नही गया। देखो माँ! अकुर अब तक है, वह परे! उसने बहुत थोडी दूर तक ही खाया है।"

"हाँ, और इसे भी उससे बचा लेने का क्या उपाय है?"

वह ज़मीन पर कूद पडी और दुखी होकर घर की ओर बढी।

बोली, "बस, अब सब खतम हुआ। पहले झुककर मैंने गलती की।"

जोडी बाड पर चिपटा रहा। वह सुन्न था। न वह सोच सकता था और न कुछ अनुभव कर सकता था। फ्लैग ने उसे सूंघा, अपना सिर उठाया और उसकी ओर उछलता हुआ आ गया। जोडी आँगन की ओर उतर पडा। वह उसे देखना भी नही चाहता था। उसके खडे ही खडे फ्लैग ने इतनी आसानी से वह बाड कूदकर पार की, जैसे कोई पक्षी उड रहा हो।

जोडी ने अपनी पीठ उसकी ओर कर ली और घर मे चला गया। वह अपने कमरे मे गया और बिस्तर पर अपना मुँह तकिए मे छिपाकर पड रहा। वह पिता की आवाज़ सुनने को तैयार था। माता और पिता के बीच बात बहुत देर न चली। मुसीबत का सामना करने को वह तैयार था। वह तो उससे भी बडी किसी मुसीबत के लिए तैयार था। परन्तु वह किसी अन-होनी बात को नही सह सकता था। वह अपने पिता के मुख से ऐसा सुनने की आशा न करता था।

पैनी ने कहा, "जोडी, सब सम्भव बात कर ली गई है। मुझे दुख है। मैं तुम्हे नही समझा सकता कि मैं कितना दुखी हूँ। परन्तु हम अपनी साल-भर की फसले बरबाद भी नही कर सकते। हम सब भूखे नही रह सकते। जाओ, इसे जगल मे अपने साथ ले जाओ और पेड से बाँधकर गोली मार दो।"



## 32

जोडी फलैंग के साथ पश्चिम की ओर निकल गया। उसके पास पैनी की वन्दूक थी। कन्धे पर वन्दूक रखे वह वढ रहा था। उसका दिल धडकता, रुकता और फिर धडकने लगता। उसकी साँस रुकने-सी लगी।

वह अपने से ही वोल पडा, 'यह मैं नही कर सकूँगा, कतई नही।'

फलैंग ने अपनी वडी-वडी आँखो से उसकी ओर देखा और तव सडक के किनारे की घास की ओर अपना सिर झुका लिया। जोडी धीरे-धीरे चलने लगा। वह मन-ही-मन वुदवुदाया, 'नही, विलकुल नही, मैं नही! वे मुझे मार डाले, लेकिन मै इसे नही मारूँगा! नही मारूँगा!'

वह माता और पिता से खयालो ही खयालो मे वातें करने लगा। उसने उन दोनो को वताया कि वह उनसे घृणा करता था। उसकी माँ वौखलाई, पर पिता चुप रहा। उसकी माँ ने उसे अखरोट की छडी से पीटना शुरु किया। जव तक उसके पाँव से खून न वहने लगा, वह पीटती रही। उसने उसका हाथ काट लिया और उसने फिर उस पर छडी वरसाई। उसने

उसके गिट्टो पर चोट मारी और उसने उसे पीटते हुए कोने मे धकेल दिया। उसने अपना सिर फर्श से भी उठाया और कहा, 'तुम मुझे विवश नही कर सकते, मैं इसे नही मारूँगा।'

वह मन-ही-मन उनसे लडता रहा, जब तक उसका मन थक न गया। वह उजाड खेत के पास रुक गया। वहाँ जगले का थोडा-सा हिस्सा पडा हुआ था, जिसे वह अब तक नही ले जा सका था। वही वह एक चीनीबेरी के पेड के नीचे घास पर लेट गया और तब तक रोता रहा जब तक उसके आँसू सूख न गए। फ्लैग उसे अपनी नाक छुआता और छेडता रहा। वह उसी तरह साँसे लेता पडा रहा।

वह बोला, "नही, मैं नही मार सकता।"

वह खडा हुआ, पर उसका सिर चकरा रहा था। वह वृक्ष का तना पकडकर झुका। चीनीबेरी का यह पेड पूरा खिला हुआ था। मक्खियाँ इस पर भिनभिना रही थी और इसकी सुगन्ध चारो ओर की वसन्ती हवा मे मिलकर फैल रही थी। उसे इतनी देर न रो सकने के लिए अपने पर शर्म आई पर, अब रोने-चिल्लाने का समय कहाँ था? उसे सोचना होगा और अपना रास्ता निकालना होगा, वैसे ही जैसे पैनी मुसीबत आने पर रास्ता खोज निकालता था। पहले-पहल उसके विचार उलझ गए। उसने सोचा कि वह एक घेरा बनाएगा। यह घेरा दस फुट ऊँचा होगा। वहाँ वह अखरोट आदि फल, घास और गिलास आदि दूसरे फलो को उसके खाने के लिए अन्दर डाल देगा। परन्तु घेरे मे बन्द पशु के लिए उसे सारे समय जगल मे घूमना होगा। उसका पिता बिस्तर पर बीमार पडा है। खेतो का भी ध्यान उसे ही रखना होगा। उसके अतिरिक्त और कौन था!

उसे ओलिवर का ध्यान आया, शायद वह आकर उसकी सहायता, पैनी के अच्छा होने तक, करता, परन्तु वह तो अब बोस्टन और वहाँ से भी चीनी समुद्र तक चला गया है। वह जोडी पर आ पडने वाले दुर्भाग्य मे दूर जा चुका है। उसे फौरेस्टरो का ध्यान आया। परन्तु उसे दुख हुआ कि वे अब उसके परिवार के शत्रु थे। बक उसकी सहायता करता, परन्तु अब वह भी क्या कर सकता था? उसके दिमाग मे अचानक ही एक बात आई। उसे लगा कि अगर उसे यह विश्वास रहे कि यह फ्लैग जीवित है तो

वह इसकी दूरी को भी सह लेगा। वह सोचेगा कि वह जीवित और शरारती है। अब भी अपनी पूँछ उठाकर इधर-उधर दौडता फिरता होगा। उसने सोचा कि बक के पास जाकर उसकी सहायता की भीख माँगेगा। उसे फौडरविंग की याद तब तक दिलाएगा जब तक उसका गला ही न भर आए। तब वह फ्लैग को गाडी मे, भालू के बच्चो की ही तरह, जैक्सनविले ले जाने की बात कहेगा। वहाँ फ्लैग को वे लोग खरीदकर एक खुले पार्क मे रख देगे, ताकि लोग उसे देख सके। वह वहाँ खूब घूमेगा और उसे खूब खुराक मिलेगी। उसे वहाँ हिरणी भी मिलेगी और हर कोई उसकी प्रशसा करेगा। तब जोडी भी अपनी ही रुपया कमाने वाली फसले उगाकर पैसा इकट्ठा करेगा और साल मे एक बार फ्लैग को देखने जाया करेगा। वह अपना रुपया बचाकर एक अपनी ही जगह खरीदेगा और फ्लैग को फिर वापस खरीदकर साथ रहने लगेगा।

उसमे उत्साह दौड गया। खेत से वह फौरेस्टरो की सडक की ओर तेज़ी से मुडा। उसका गला सूख चुका था। उसकी आँखे सूजी हुई थी और आँसू बह रहे थे। उसकी आशा ने उसे ताजगी दी और वह थोडी देर मे ही फौरेस्टरो की सनावरो के नीचे की पगडण्डी पर पहुँचते ही स्वस्थ हो उठा। वह घर तक जाकर सीढियो पर चढ गया और खुले दरवाज़े को थपथपाकर अन्दर बढ आया। कमरे मे केवल माता-पिता ही बैठे थे। वे अपनी कुर्सियो पर वैसे ही बैठे रहे।

उसने हाँफते हुए कहा, "कहिए, क्या हाल है? बक कहाँ है?"

पिता ने अपना चेहरा धीरे से घुमाया और कहा, "तुम्हे तो यहाँ आए बहुत देर हो चुकी है?"

"कृपया बताइए कि बक कहाँ है?"

"बक? वे सारे ही यहाँ से घोडो का व्यापार करने कैन्टुकी चले गए हैं।"

"इस खेती के समय मे?"

"अगर खेती का समय ही व्यापार के लिए अच्छा हो, तो वे हल चलाने की बजाय व्यापार करना अधिक पसन्द करेंगे। उन्होने सोचा कि वे व्यापार के द्वारा अनाज खरीदने लायक काफी रुपया कमा ही लेगे। यह बात ठीक

भी है।" पिता ने यह कहकर एक ओर थूक दिया।

"क्या वे सभी जा चुके है ?"

"हाँ, सभी। पैंक और गैवी बैसाख मे वापस आएँगे।"

माँ बोली, "यह भी औरत का सौभाग्य ही है कि इतने सारे बच्चो को जन्म दे, उन्हे पाले और तब वे सभी एक साथ निकल भागे। मैं तो कहूँगी कि उन्होने सब प्रकार का भोजन और लकडी यहाँ जमा कर दी है। हमे बैसाख मे उनमे से किसी के लौटने से पहले किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता नही है।"

बैसाख का नाम सुनते ही वह दरवाज़े की ओर निराशा से बढा।

माँ ने पीछे से कहा, "बेटा, आओ, हमारे साथ बैठो। मुझे तुम्हारे लिए खाना पकाकर खुशी होगी। तुम्हारे लिए गोद वाला हलुवा बनाऊँगी। तुम और फौडरविंग सदा ही मेरे बनाये हुए ऐसे हलुवे को पसन्द करते थे।"

वह बोला, "धन्यवाद ! मुझे जाना ही है।"

वह लौट पडा, पर निराशा मे बोल भी पडा, "आप तब क्या करते, यदि आपके पास साल-भर का कोई पशु होता, वह आपकी फसल को खा जाता, आप उसे किसी भी प्रकार से दूर न रख सकते और आपके पिता उसे गोली मार देने को कहते ?"

उन्होने उसे देखा। माँ कुछ हिली।

पिता बोले, "मैं उसे गोली मार देता।"

उसे लगा कि उसने शायद बात साफ नही की।

वह फिर बोला, "अगर यह आप ही का प्यारा पशु होता, जैसे आप फौडरविंग को प्यार करते थे।"

पिता बोले, "अनाज से प्यार का क्या सम्बन्ध ? ऐसी कोई चीज नहीं बर्दाश्त की जा सकती जो फसलो को खा डाले ? खासकर जब तक तुम्हारे पास ऐसे बच्चे ही न हो, जो मेरे बेटो की तरह किसी और तरीके से रुपया पैदा कर सकते हो।"

माँ ने पूछा, "क्या यह बात उसी छौने के बारे मे है, जो तुम फौडरविंग के पास पिछली गर्मियो मे नाम रखाने के लिए लाए थे ?"

"हाँ, यह वही है। क्या आप इसे नही ले सकते ? फौडरविंग उसे ले लेता।"

"हमारे पास तुमसे ज्यादा अच्छा उपाय उसे रखने का नही है। वह यहाँ नही रुकेगा। साल-भर के हिरण के लिए चार मील का रास्ता होता ही क्या है ?"

वे भी उसके लिए पत्थर की दीवार सिद्ध हुए। उसने उनसे विदा ली और चल पडा।

उन बडे डीलडौल वाले भाइयो और उनके घोडो के बिना फौरेस्टरो का यह खेत उजाड-सा दीख रहा था। प्राय सभी कुत्तो को वे अपने साथ ले गए थे। केवल एक जोडा ही पीछे रह गया था, जिसे घर के एक ओर बाँध दिया गया था। वहाँ वे अपने खुजली वाले शरीर को ही खरोच रहे थे। अब वह बाहर आने के लिए फिर से खुश था।

वह जैक्सनविले तक फ्लैग को लेकर खुद जाएगा। उसने देखा कि कही कुछ उसके गले पर बांधने को मिल जाय, ताकि वह छूटकर घर की ओर न भाग निकले। बडी कठिनाई से उसने अगूर की एक बेल अपने चाकू से काटी। उसने काफी सारे घेरे उसकी गर्दन पर दिए और उत्तर-पूर्व की ओर निकल पडा। वह हौपकिन्स मैदान के आस-पास पहुँचा। यहाँ से सडक फोर्टगेट्स की ओर निकल गई थी। इसी पर कभी वह और पैनी फौरेस्टरो से मिले थे। पहले तो इस बन्धन मे फ्लैग बढता रहा, परन्तु तब वह अधीर होकर इससे छूटने लगा।

जोडी बोला, "तुम बडे होकर इतने उद्दण्ड क्यो बनते जा रहे हो ?"

वह तग आ गया और फ्लैग को चलने के लिए न मना सका। अन्त मे उसने वह बेल खोल दी और उसे छोड दिया। अब फ्लैग उसकी आँखो की पहुँच मे रहकर भी खुश था। दोपहर बाद जोडी को थकान और भूख अनुभव हुई। बिना नाश्ता किए ही वह घर से निकल पडा था। उसने केवल निकल जाना ही चाहा था। उसने सडक के किनारे के झाडी के फलो को खाना चाहा, पर अभी कोई फल तैयार न थे। शहतूत अभी फूले भी न थे। फ्लैग की तरह ही उसने भी कुछ पत्ते चबाने चाहे। परन्तु उसे इससे भूख और

भी बढती नज़र आई। उसके पाँव जवाब दे गए और वह धूप मे ही सुस्ताने के लिए लेट गया। उसने फ्लैग को भी अपने पास लिटाना चाहा। भूख, थकान और तेज धूप के कारण वह बहुत गहरी नीद सो गया। जब वह जागा तो फ्लैग वहाँ नही था। उसने निशानो का पीछा किया। वे जगल मे से होकर घर की ओर सडक पर बढते गए।

उसका पीछा करने के अलावा चारा ही क्या था ? अधिक सोचने की उसमे हिम्मत न थी। अँधेरा होने के बाद वह अपनी ज़मीन पर पहुँचा। रसोई मे एक बत्ती जल रही थी। कुत्ते उस तक आए। उसने उन्हे प्यार करके चुप कराया। वह चुपचाप ही खिसककर पास तक आया और अन्दर झाँका। शाम का खाना समाप्त हो चुका था। मोमबत्ती की रोशनी मे बैठी उसकी माँ कुछ टुकडो को सी रही थी। वह अभी अन्दर जाने या न जाने के विषय मे सोच ही रहा था कि फ्लैग आँगन मे उछलता-कूदता घुस आया। उसने अपनी माँ को सिर उठाकर सुनते हुए देखा।

वह जल्दी ही धुआँघर के पीछे खिसक गया और उसने बहुत धीमी आवाज़ मे फ्लैग को वहाँ बुला लिया। वह वहाँ पहुँच गया। एक कोने मे वह बैठ गया। उसकी माँ रसोई के दरवाजे पर आई और उसे खोल गई। हलकी-सी एक रोशनी मिट्टी के पार तक चली गई। दरवाज़ा फिर बन्द हो गया। वह रसोई मे रोशनी के बहुत देर बाद तक प्रतीक्षा करता रहा और उसने माँ के सो जाने की प्रतीक्षा की। वह धीरे-धीरे धुआँघर मे घुसा और उसने कुछ बचा-खुचा धुआँ लगा भालू का माँस पा लिया। उसने इसमे से कुछ हिस्सा काटा। यह सख्त और सूखा हुआ था। परन्तु वह इसे भी चबा गया। उसने सोचा कि फ्लैग ने जगल मे कुछ कलियाँ और अकुर आदि खा लिए होगे। वह उसे भूखा नही देख सकता था। वह अनाज-भण्डार तक गया और दो भुट्टे निकालकर उनके दाने उसे देने लगा। उसने स्वय भी कुछ दाने खाए। फिर उसे रसोई मे पडे ठण्डे और बासी खाने की याद आई, पर वहाँ जाने का उसका साहस न हुआ। अब वह अपने घर मे ही अपने को चोर और अजनबी अनुभव करने लगा था। उसने सोचा कि शायद इसी तरह चीते, बनबिलाव और दूसरे सभी जानवर दूसरो के खेतो की ओर खाली पेट और बडी-बडी आँखो से देखते है। उसने पशुशाला मे

कुछ दलदल की सूखी घास लेकर एक विस्तरा-सा बनाया और फ्लैग के साथ वही लेट गया। यह गर्म न था। रात का जाडा काफी तेज़ था।

सूरज निकलने के बाद जब वह जागा तो उसकी दशा बहुत अच्छी न थी। फ्लैग उसके पास न था। वह लाचार होकर अनमना-सा घर की ओर गया। दरवाजे पर ही उसे उसकी माँ की गुस्से से भरी हुई आवाज़ सुनाई दी। उसने धुआँघर की दीवार के साथ टिकाई हुई बन्दूक को खोज लिया था। उसने फ्लैग को भी देख लिया था और उसने यह भी देख लिया था कि बढते हुए छौने ने मुंह-अँधेरे ही काफी समय तक केवल मक्का ही नही, वल्कि मटरो के भी वडे भारी खेत को साफ कर दिया था। वह बहुत निराश होकर उसके गुस्से का सामना करने के लिए वढा। वह अपना सिर नीचे किए खडा रहा। उसकी माँ ने उसे वहुत सख्ती से डाँटा-फटकारा।

अन्त मे वह बोली, "जाओ, अपने पिताजी के पास जाओ। वह मुझसे पहली बार सहमत हुए हैं।"

वह सोने के कमरे मे गया। उसके पिता का चेहरा उतरा हुआ था।

पैनी ने बहुत सभ्यता से कहा, "मैंने जो कुछ कहा, तुमने क्यो नही किया?"

"पिताजी, मैं नही कर सका। मैं कर नही सकता।"

पैनी अपने तकिए पर फिर से गिर पडा।

वह बोला, "बेटे, मेरे और पास आ जाओ। तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे छोटे हिरण को बचाने के लिए सब कुछ करके हार गया हूं। मैं उसे तुम्हारे लिए बचाना चाहता था।"

"हाँ, जी!"

"तुम जानते हो, हमारा जीवन इस फसल पर ही निर्भर है।"

"हाँ, जी!"

"तुम यह भी जानते हो कि ऐसे जगली किशोर को दूर रखने और फसले बचाने का कोई भी तरीका ससार मे नही है।"

"हाँ, जी!"

"तब तुमने उचित कार्य क्यो न किया?"

"मैं कर नही सकता!"

पैनी चुप होकर पड गया। फिर वोला, "ज़रा अपनी माँ को इधर आने को कह दो और अपने कमरे मे जाकर दरवाज़ा वन्द कर लो।"

"अच्छा जी !"

इन आज्ञाओ को मानने मे भी एक सुख था।

"पिताजी कहते हैं कि आप उनके पास चली जायँ।"

वह अपने कमरे मे गया और दरवाज़ा वन्द कर लिया। बिस्तरे के एक ओर वैठकर वह अपने हाथ मसलने लगा। उसे धीमी आवाज़े सुनाई दे रही थी। फिर उसे किसी के कदम चलते सुनाई दिए और तव गोली की एक आवाज़ आई। वह कमरे से रसोई के खुले दरवाज़े की ओर भागा। उसकी माँ छज्जे पर खडी थी। उसके हाथ मे वन्दूक थी और उसमे से धुआँ निकल रहा था। सामने वाड के पास तडपता हुआ फ्लैग पडा था।

वह वोली, "मैं किसी प्राणी को मारना नही चाहती। मैं सीधा मार भी नही सकती। यह वात तुम भी अच्छी तरह जानते हो।"

जोडी फ्लैग तक दौडकर पहुँचा। वह अपने तीनो अच्छे पैरो पर उठा और लडखडाता-सा भागने लगा, जैसे जोडी स्वय उसका दुश्मन हो। उसके शरीर का अगला हिस्सा फट गया था और वहाँ से खून वह रहा था। पैनी विस्तर से निकलकर घिसटता हुआ आया। वह दरवाज़े पर एक घुटने के वल वैठ गया और सहायता के लिए उसने दरवाज़ा पकड लिया।

वह वोला, "अगर मैं कर सकता तो यह काम मैं स्वय करता। मैं खडा भी नही हो सकता। जोडी, जाओ ! और उसे मार डालो। तुम्हे उसे इस दुख से छुटकारा दिलाना होगा।"

जोडी पीछे की ओर लौटा और उसने माँ से वन्दूक छीन ली। वह चिल्लाया, "तुमने यह जान-बूझकर किया है। तुम उससे सदा नफरत करती थी।"

वह अपने पिता की ओर मुडा, "तुमने मेरे से दगा की। तुमने ही उसे मारने को कहा।"

अव वह फ्लैग के पीछे दौडा और दौडते-दौडते वडवडाता गया।

पैनी वोला, "ओरी, मुझे सहायता दो। मैं उठ नही सकता "

फ्लैग दर्द और डर के कारण तीन पैरो पर दौड़ता रहा। वह दो

वार गिरा और जोडी ने उसे उठाकर खडा किया।

वह बोला, "यह मैं हूँ, फ्लैग, यह मैं हूँ।"

फ्लैग अपने पैरो पर खडा हुआ और फिर दौड पडा। खून एक धार के रूप मे बह रहा था। हिरण सोते के किनारे तक पहुँच गया। एक क्षण के लिए वह कांपा और गिर पडा। फिर एक तरफ लुढक गया। जोडी उसके पीछे भागा। अब फ्लैग जोहड के किनारे पडा था। उसकी बडी-बडी चमकीली आँखे खुली हुई थी। अचरज मे डूबकर वे जोडी की ओर देख रही थी। जोडी ने उस बन्दूक की दुनाली को उसकी गर्दन के पीछे रखा और घोडा दबा दिया। फ्लैग एक क्षण के लिए कांपा और तब ठण्डा हो गया।

जोडी ने बन्दूक एक ओर पटक दी और पेट के बल लेट गया। वह कांपने लगा और उसने उलटी की। अपने नाखूनो के बल पर वह जमीन से चिपटने लगा। कभी अपनी मुट्ठियाँ जमीन पर पटकने लगता। उसके चारो ओर का सोता हिल उठा। बहुत दूर से आने वाला शोर उस तक एक गुनगुनाहट के रूप मे पहुंच रहा था। वह धीरे-धीरे एक ऐसे काले अंधेरे मे डूब गया, जैसे कोई काला जोहड हो।



## 33

वहाँ से जोडी उत्तर की ओर फोर्टगेट्स सडक पर चला गया। उसकी चाल जकडाहट से भर गई थी, मानो उसके पैरों के अलावा और कोई अंग जीवित ही न हो। उसने मरे हुए छौने को बिना देखे वैसे ही छोड दिया। उसके लिए केवल भाग जाना ही महत्त्व रखता था। जाने के लिए कोई जगह निश्चित न थी। पर उस बात का भी कोई महत्त्व न था। फोर्टगेट्स के बाद वह किश्ती से नदी पार करेगा। अब उसका इरादा साफ होने लगा। वह जैक्सनविले की ओर जाएगा। वहाँ से बोस्टन की ओर जाएगा। वहाँ ओलिवर को ढूंढकर उसके साथ समुद्र पर निकल जाएगा। इस सब धोखेधडी को वह ओलिवर की भाँति पीछे छोड जाएगा।

जैक्सनविले और बोस्टन जाने का सीधा तरीका स्टीमर से था। इसके लिए उसे सबसे पहले नदी पर पहुंचना जरूरी था। उसके लिए एक नाव चाहिए थी। उसे नेली गिनराइट की वह छोटी लकडी की नाव याद आई, जिसमें पिता-पुत्र ने नमकीन सोते वाली धारा को बूढे रीछ के शिकार

के समय पार किया था। पिता की याद आते ही उसके सुन्न शरीर पर तेज चाकू चल गया। उसके बाद वह फिर एक बार सुस्त हो गया। उसने सोचा, वह अपनी कमीज फाडकर उस नाव के छेदो को बन्द कर देगा और बाँस के सहारे खेता हुआ उस नाव को जार्ज झील तक ले जाएगा। वहाँ से उत्तर की ओर बडी नदी तक ले जाएगा। इसी राह मे कही वह गुजरते हुए स्टीमर को रोकेगा और उस पर बोस्टन तक पहुँच जाएगा। ओलिवर उसका किराया दे देगा, और वह वहाँ उतर जाएगा। अगर वह ओलिवर को ढूंढ न सका तो वे लोग उसे जेल मे बन्द कर देंगे। पर अब उसे इस बात की भी परवाह न थी।

वह नमकीन सोते की ओर मुडा। वह प्यासा था और उसने नीचे उतरकर फूटते हुए सोते मे से पानी पिया। एक समुद्री मछली पास ही उछली और नीले केकडे इधर-उधर मचल पडे। झरने से कुछ नीचे एक मछियारा बैठा हुआ था। जोडी ने किनारे-किनारे जाकर उसे पुकारा।

वह बोला, "क्या मैं तुम्हारे साथ अपनी नाव तक पहुँच सकता हूँ ?"

"हाँ, निश्चय ही।"

मछियारा अपनी नाव को किनारे ले आया। वह उसमे बैठ गया।

उसने पूछा, "तुम यही कही रहते हो ?"

जोडी ने सिर हिला दिया।

मछियारे ने फिर पूछा, "तुम्हारी नाव कहाँ है ?"

"नेली गिनराइट की जमीन के पास।"

"तुम उसके सम्बन्धी हो ?"

उसने सिर हिला दिया। एक अजनबी से आने वाले प्रश्न उसके जख्मो पर नमक छिडकते से लगे। अजनबी उसकी ओर उत्सुकता से देखता रहा और तब खेने मे जुट पडा। उसकी छोटी-सी नाव तेज धारा मे आसानी से बहने लगी।

ऊपर की ओर धारा काफी चौडी थी। पानी भी नीला था, वैसे ही जैसे ऊपर का नीला आकाश। हवा के एक हल्के-से झोके ने सफेद बादलो को हिला दिया। जोडी को ऐसा दिन सदा ही पसन्द था। किनारो पर गुलाबी रग फैला हुआ था, क्योकि दलदली फूल और लाल कलियाँ चारो ओर वसन्त

के रग मे पूरी तरह खिली हुई थी और उनकी मधुरता सारी धारा को भर रही थी । उसके गले मे एक दर्द-सा उठा और उसने अपना हाथ गले पर रखा, जैसे उसे चीर देगा। चैत की यह सुन्दरता उसे और भी दुख पहुँचाने लगी। नए खिलते हुए सरुओ की ओर भी वह देखना न चाहता था। वह तो पानी, मछली और कछुए आदि को देख रहा था। उसने आँखे न उठाई।

मछियारा बोला, "यह नेली का स्थान है । तुम यहाँ उतरना चाहते हो ?"

उसने अपना सिर हिलाकर कहा, "नही, मेरी नाव कुछ आगे है।"

ज्यो ही वे वहाँ से गुजरे, उसने नेली को अपने घर के आगे खडे हुए पाया। मछियारे ने अपना हाथ उसकी ओर हिलाया और नेली ने भी वैसे ही उत्तर दिया। पर जोडी न हिला। उसे वह रात याद हो आई जब वह उसके घर मे टिका था। और वह सवेरा भी, जब उसने उनके लिए नाश्ता पकाया था, पैनी से हँसी-मजाक की थी और तब उन्हे मित्रता के उत्साह और प्रसन्नता से विदा किया था। उसने अपनी उस याद को एक किनारे किया। अब धारा सँकरी हो गई थी। किनारे सट आए थे और दोनो ओर दलदल बढ आई थी।

वह बोला, "बस, आगे ही मेरी नाव है।"

"यह तो आधी डूबी हुई है।"

"हाँ, मैं इसे ठीक कर लूंगा।"

"तुम्हे किसी की सहायता की जरूरत है ? तुम्हारे पास चप्पू हैं ?"

उसने सिर हिलाकर मना किया।

मछुआ बोला, "यह एक चप्पू है। मुझे तो यह नाव जैसी नही लगती। अच्छा, फिर मिलने तक विदा !"

उसने अपनी नाव फिर से धारा मे धकेल दी और जोडी की ओर हाथ हिलाए। अपनी बैठने की जगह के नीचे से उसने एक डिब्बे मे से कुछ बिस्कुट और माँस निकाला और मुँह मे लेकर उन्हे चबाने लगा। खाने की खुशबू जोडी तक पहुँची। उसे याद आया कि उसने इन दो दिनो मे भालू के धुएँ वाले माँस को छोडकर या मक्की के कुछ सूखे दानो के अतिरिक्त कुछ और नही खाया। पर उसके लिए इस बात का महत्त्व नही था, जैसे

वह भूखा ही नही था।

उसने छोटी-सी नाव को जमीन पर खीचा और उसमे चीथडे भर दिए। बहुत देर डूबे रहने से वह फूल गई थी और इसका तला कस गया था। कोनो की ओर इसमे कुछ कटाव थे और वहाँ से पानी अन्दर रिस रहा था। उसने अपनी आस्तीने फाडी और उनके टुकडे इन छेदो मे भर दिए। तब एक चीड से वह कुछ राल उखाड लाया और उसे बाहर से चिपका दिया। तब उसने नाव को धारा मे धक्का दिया और टूटा हुआ चप्पू उठाकर नीचे की ओर नाव चलाने लगा। उससे यह सँभल न पाई और एक किनारे से दूसरे किनारे तक तेज धार मे वह बहने लगा। एक जगह वह तेज़ धार वाली घास मे फँस गया और उसमे से निकलने की कोशिश करते हुए उसके हाथ चिर गए। यह नाव अगल-बगल हिलने लगी। कभी दक्षिण की ओर कोमल कीचड मे फँस जाती। वह फिर धक्का देकर उसे छुडा लेता। उसे अब इसका तरीका समझ मे आ गया। परन्तु अब वह कमज़ोर और मूर्छित-सा होता जा रहा था। उसकी इच्छा हुई, काश! वह मछुए को रोक लेता और प्रतीक्षा करने को कहता। परन्तु उसकी निगाह मे नीले आकाश मे चक्कर काटते गिद्ध को छोडकर और कोई भी चीज़ नही थी। उसे ध्यान आया कि शायद गिद्धो ने सोते के पास के जोहड़ के किनारे फ्लैग को पा लिया होगा। इस बात ने उसे फिर से खिन्न कर दिया और उसने अपनी नाव इधर-उधर भटकने दी। उसने अपना सिर घुटनो पर रख लिया। बहुत देर तक उसकी बेचैनी दूर न हुई।

अब उसने फिर सख्त होकर चप्पू चलाने शुरू किए। वह बोस्टन की ओर जा रहा था। उसका मुख तना हुआ था। उसकी आँखें सिकुडी हुई थी। सूर्य आसमान मे काफी नीचे उतर आया था। अब वह धारा की समाप्ति के पास ही था। यहाँ से यह धारा जार्ज झील मे मिल गई थी। यहाँ से दक्षिण की ओर एक सूखा किनारा फैला हुआ था। दूसरी ओर केवल दलदल ही दलदल थी। उसने अपनी किश्ती को घुमाया और जमीन पर उतर आया। यहाँ उसने किश्ती को भी ऊपर खीच लिया। वह एक सनोवर के नीचे बैठा और अपनी कमर उसने तने पर टिका दी। यहाँ से खुले पानी पर उसने निगाह डाली। उसका अनुमान था कि यहाँ कोई

किश्ती नदी के अन्तिम किनारे तक दिखाई दे जाएगी। उसे दक्षिण की ओर जाती एक किश्ती दिखाई दी परन्तु यह झील मे बहुत दूर पर थी। उसे लगा कि धारा का अन्त जैसे किसी एक छोटी-सी खाडी मे ही हो जाता होगा।

सूर्य डूबने मे एक या दो घटे ही रहे होगे। उसे लगा कि अगर वह बढा तो घने अँधेरे मे वह इस झील पर ही भटक जाएगा। उसने इसी ज़मीन पर बैठकर किसी गुजरती हुई किश्ती की प्रतीक्षा करना अधिक अच्छा समझा। यदि कोई नाव न आई तो वह इसी पेड के नीचे रात को सो रहेगा और सुबह फिर से नाव खेने लगेगा। सारे दिन वह सुन्न-सा रहा था और कुछ सोच न सका था। अब विचार उसके मन मे उमडने लगे, वैसे ही जैसे बछडे के घेरे मे भेडिये आ टूटे थे। उन्होने भी उसे चीर डाला। उसे लगा कि जैसे उसमे से भी न दिखाई देने वाला खून बह रहा हो, जैसे फ्लैग का बहा था। फ्लैग मर चुका था। वह अब फिर कभी उस तक न आ सकेगा। कुछ तीखे शब्द कहकर उसने स्वय को दुख दिया।

वह बोला, "फ्लैग मर चुका है।"

वे शब्द उसे तीखी चाय जैसे तीखे लगे। उसे अब तक भी सबसे गहरे दर्द का ध्यान न था।

वह ज़ोर से बोला, "पिताजी ने मुझसे धोखा किया।"

यह बात उसे पिता को साँप काटने से भी अधिक बुरी लगी। उसने अपने घुटने अपने माथे से रगडे। पिता की मौत सही जा सकती थी। फोडरविग मर गया, उसने उसे भी सहा। परन्तु यह धोखा सहना उसके लिए असम्भव था। अगर फ्लैग भालू, भेडिये, चीते या किसी और कारण से मर जाता तो वह एक बहुत गहरे दुख के साथ दुखी होता, परन्तु वह इसे सह लेता। वह अपने पिता की ओर देखता और वह उसे अवश्य सात्वना देते। पैनी के बिना उसे कही भी चैन नही मिल सकती थी। उसे लगा कि उसके नीचे की कठिन धरती जैसे घुल गई हो। उसकी कडवाहट ने उसके दुख को छिपा लिया। जैसे कडवाहट और दुख मिलकर एक हो गए।

अब सूर्य पेडो के शिखरो से भी नीचे उतर आया था। उसने रात से पहले किसी भी नाव के स्वागत की आशा छोड दी। उसने कुछ घास-फूस

इकट्ठा किया और अपने लिए उसी सनावर के पेड के नीचे एक विस्तर-सा वना लिया। उस धारा के दूसरी ओर, दलदल के पार, कोई एक तीखी चीख उसे सुनाई दी। सूर्य डूबते तक मेढक टर्राने और गाने लगे। उसे उनकी सगीतभरी आवाज़ सोते से घर तक सुनाई देती हुई सदा अच्छी लगी थी। परन्तु, इस समय की आवाज़ मे उसे शोक मिला हुआ दिखाई दिया। उसे यह आवाज बुरी लगी, जैसे वे भी अफसोस मना रहे हो। जैसे हज़ारो ही मेढक एक अन्तहीन और कम न किए जा सकने वाले दुख मे रो रहे हो। एक जगली वत्तख चिल्लाई, जैसे यह भी दुख मे रो उठी हो।

झील पर गुलावी रग छा रहा था। परन्तु जमीन छाया के अँधेरे से ढँक चुकी थी। यह समय घर पर शाम के भोजन का होता। अपनी कमज़ोरी के होते भी उसे भोजन की याद हो आई। उसका पेट दर्द करने लगा, जैसे खाली होने के वजाय वह वहुत अधिक भरा हुआ हो। उसे मछुए के माँस और विस्कुटो की गन्ध याद हो आई। उसके मुँह मे पानी भर आया। उसने घास के छोटे-मोटे तिनके खाए। उनके जोडो को वह दाँतो से चवाने लगा, जैसे पशु मछली चवाते हैं। उसने उसी समय जैसे देखा कि फ्लैग के शव पर कई जन्तु सरक आए हैं। उसने उलटी कर दी।

अँधेरे ने जमीन और पानी सवको घेर लिया। एक उल्लू उसके पास के घने जगल मे चिल्लाया। वह काँप उठा। रात की ठण्डी हवा काँप रही थी। ठण्ड कुछ वढ गई थी। उसे हवा से आगे-आगे एक सनसनाहट सुनाई दी। शायद पत्ते खडक रहे थे या कोई जानवर उधर से गुजर रहा था। पर उसे डर न लगा। उसे लगा कि अगर भालू या चीता उधर आ निकला और उसने उसे छुआ तो उसे सूँघते ही वह उसके दुख को पहचान लेगा। पर तव भी उसके चारो ओर की आवाज़ो ने उसे अन्दर तक डरा दिया। अच्छा होगा कि वह आग जला ले। पैनी कही भी, विना किसी चीज़ के भी आग जला सकता था जैसे आदिवासी करते थे। पर जोडी ऐसा कभी भी नहीं कर पाया था। अगर यहाँ पैनी होता तो यहाँ पर भी धधकती हुई आग, गर्मी, खाना और आराम—सभी कुछ होता। उसे डर नही था। हाँ, निराशा अवश्य थी। उसने काई को अपने ऊपर भी सरका लिया और स्वय को सोने के लिए कहा।

सुबह की धूप ने उसे जगा दिया। चारो ओर सरकण्डो पर लाल पखो वाले पक्षी चिल्ला रहे थे। वह खडा हुआ और उसने अपने बालो और कपडो पर से काई के लम्बे-लम्बे तार निकाले। वह बहुत कमजोर था। उसे चक्कर आ रहे थे। आराम के बाद उसे भूख भी लगने लगी थी। भोजन की याद भी दुख देने वाली थी। उसे पेट के चारो ओर दर्द और ऐंठन अनुभव हुई, जैसे किसी ने गरम चाकू चुभो दिए हो। उसने सोचा कि नेली गिनराइट के घर तक दुबारा नाव ले चले और उससे खाना माँगे, परन्तु वह उससे सवाल पूछेगी और अकेला होने के कारण पूछेगी। पर उसके पास पिता का धोखा बताने के अलावा और कोई उत्तर न था। इसी धोखे मे फ्लैग मर चुका था। इसलिए अच्छा था कि वह उधर न जाकर अपने आगे के रास्ते पर बढे।

उस पर अकेलेपन की एक नई लहर दौड़ गई। उसने फ्लैग को तो खोया ही, पर पिता को भी खो दिया। उसने जब उस ठिगने और गठीले छोटे-से अपने पिता को अन्तिम समय देखा था, तो वह रसोई के दरवाज़े पर दर्द के मारे गिर पडा था और खडा होने के लिए सहायता के लिए चिल्ला रहा था। उसे पिता की यह शक्ल अजनबी-सी लगी। उसने अपनी नाव को फिर धकेला और चप्पू लेकर खुले पानी की ओर बढ निकला। खुले ससार मे आकर उसे लगा कि वह यहाँ परदेसी-सा अकेला था और यह कि जैसे वह एक शून्य की ओर ले जाया जा रहा था। उसने उस तरफ बढना शुरू किया, जहाँ उसने स्टीमर को जाते हुए देखा था। उसके लिए जीवन का अर्थ पिछले शोक पर ध्यान देना नही था, बल्कि भविष्य की चिन्ता का ध्यान करना था। धारा के मुँह को अपने पीछे छोडता हुआ वह आगे बढा। हवा ताजी थी। जमान से उठती हुई एक तेज ठण्डी हवा बह निकली। उसने अपने पेट की दर्द भुला दी और तेज़ी से चप्पू चलाने लगा। हवा ने उसकी नाव को बीच मे ही पकड लिया और उसे चारो ओर घुमाने लगी। अब वह उसे सँभाल न सका। लहरें बढती आ रही थीं। पहले हौले-हौले और बाद मे कुछ तेज होने लगीं। अब उन्होंने नाव के कोने को तोड़ने की कोशिश की। जब यह अगल-बगल झुकने लगती तो पानी अन्दर आ जाता और लहरें इस पर छा जाती। तले पर एक इच मे

अधिक पानी भर आया। पर कोई भी नाव कही भी न दीख रही थी।

उसने पीछे की ओर देखा। किनारा बहुत दूर छूट गया था। उसके सामने भी पानी का अन्त न दिखाई देता था। वह घबराहट मे मुडा और किनारे की ओर चप्पू चलाने लगा। उसे लगा, अच्छा यही होगा कि वह धारा की ओर ऊपर मुड चले और नेली के यहाँ से सहायता माँगे। इससे भी अच्छा यह होगा कि वह फोर्टगेट्स तक पैदल जाय और वहाँ से अपना रास्ता चुन ले। हवा ने उसका साथ दिया और उसे लगा कि वह बडी नदी मे उत्तर की ओर बहने वाली धारा मे जा सकता है। वह एक ऐसे मुंह की ओर बढा, जो नमकीन सोते वाली धारा का अन्त-सा दिखाई देता था। जब वह वहाँ तक पहुंचा तो उसे मालूम पडा कि यहाँ से आगे निरी दलदल ही दलदल थी। धारा का मुँह आस-पास कही भी नही था। वह डर और थकान के मारे काँप रहा था। उसने स्वय को आश्वासन दिया कि वह भटका नही था, क्योकि नदी जार्ज झील से उत्तर की ओर बहती थी और जेक्सन-विले तक चली गई थी। उसे केवल उसमे बढना था। परन्तु यह इतना चौडा स्थान था और किनारे की झलक इतनी भ्रमपूर्ण थी कि वह सोच न सका। उसने काफी देर आराम किया और तब धीरे-धीरे उत्तर की ओर चप्पू चलाने शुरू किए। यहाँ वह घने सरुओ की ज़मीन तक बहुत से मोडो, खाडियो और बढी हुई जमीनो को पार करके पहुँचा। उसके पेट की दर्द बहुत तेज हो गई थी। उसे अपने परिवार की भोजन की मेज़ का बार-बार ध्यान आने लगा। उसने उबलते हुए सूअर की बगलो के माँस को देखा। भूरे रग के वे टुकडे अपने ही रस मे डूबे हुए थे। उसे मधुर गन्ध आने लगी। उसे रगीन बिस्कुट, मक्की की रोटी और मटरो के भरे हुए बर्तन तैरते दिखाई दिए। उनके आस-पास ही चारो ओर सूअर की पीठ का सफेद मॉस तैर रहा था। उसे तली हुई गिलहरियो के माँस की ऐसी गन्ध आई कि उसके मुंह से लार टपकने लगी। ट्रिक्सी के दूध की गर्म धार का भी उसे स्वाद आया। उसे लगा कि वह कुत्तो से लडकर भी बासी दानो और खीर को पा लेगा।

यह थी उसकी भूख! उसकी माँ ने जब सबके भूखे रहने की बात कही थी तब उसका मतलब इसी से था। तब वह यह समझकर कि वह भूख को

पहचानता है, हँस पड़ा था और उसे आनन्द आया था। उसे अब पता चला कि सच्ची भूख क्या होती है ? यह कुछ और ही चीज है। यह बहुत भयंकर है, जैसे इसका बडा भारी जबाडा उसे निगल जाएगा और इसके पंजे उसके सभी अंगो को चीर डालेंगे। अब उसे एक नए भय से लडना पडा। वह अब जल्दी ही किसी घर या मछियारे के डेरे तक पहुँचकर अपना जीवन बचाएगा। शर्म छोडकर, आगे बढने से पहले, भीख माँगकर भी वह भोजन पाएगा। कोई भी आदमी किसी दूसरे को भोजन के लिए मना नही कर सकता।

उत्तर की ओर अपने रास्ते पर दिन-भर वह परिश्रम करता रहा। दोपहर बाद सूरज की तेज धूप से उसे पेट मे दर्द अनुभव हुई। परन्तु वह उलटी क्या करता ? क्योकि उसने केवल नदी का ही पानी पिया था। पेडो के बीच मे कुछ दूरी पर एक घर दिखाई दिया। वह उधर आशा से बढने लगा। यह घर उजाड था। वह उसके अन्दर घुसा, जैसे वह एक भूखा रैकून या कगारू हो ! वहाँ एक मिट्टी मे भरे फट्टे पर कुछ पौधे रखे हुए थे। एक मर्तबान मे उसे मिट्टी मिला कुछ आटा पडा हुआ मिला। उसने पानी में मिलाकर इसे खा लिया। इसमे कोई गन्ध न थी। इस भूख मे भी उसे यह बेस्वाद लगा। परन्तु इससे उसके पेट की दर्द कुछ कम हो गई। वहाँ पेडों पर कुछ पक्षी और गिलहरियाँ थी। उसने उन्हे पत्थर से मारना चाहा, परन्तु वे सब उससे दूर चले गए। वह बुखार मे फँसा हुआ था और थक चुका था। उसके पेट मे पहुँचे आटे ने उसे सुला दिया। उसने कुछ चीथडे इकट्ठे कर खाली कमरे मे ही शरण ली। चीथडो मे से टिड्डियाँ निकली। वह सपनो से भरी नींद सो गया।

सुबह होते ही उसे फिर तेज भूख लगी और उसकी आँतो मे दर्द और ऐंठन होने लगी। उसे वहाँ एक साल पहले के गिलहरियो के खाये कुछ अखरोट आदि दबे पडे मिले। उसने उन्हे इस जल्दी मे खाया कि उनके बिना चबाये सख्त टुकडे उसके सिकुडे हुए पेट मे तेज चाकुओ की तरह चुभने लगे। एक सुस्ती-सी उस पर छा गई और वह बहुत मुश्किल से चप्पू पकडने मे समर्थ हो सका। अगर तेज धार उसका साथ न देती, उसे लगा कि तब वह आगे न जा सकता था। वह सारी सुबह खेता रहा पर बहुत

थोडा ही वढ पाया। दोपहर बाद तीन नावें उधर से गुज़री। खडे होकर उसने वाँहे हिलाकर इशारा किया और चिल्लाया। उनमे से एक ने भी उसकी आवाज़ न सुनी। वे आँख से ओझल हो गईं। अब वह न चाहकर भी रो पडा। उसने निश्चय किया कि वह किनारे से हटकर अगली नाव को वीच मे ही रोक लेगा। हवा रुक चुकी थी। पानी शान्त था। इस पर लौटने वाली चमक उसके मुख, गर्दन और नगी वाँहो को जला रही थी। धूप झुलसाने वाली थी। उसका सिर धडकने लगा। उसकी आँखो के आगे काले और सुनहरे धब्बे आने लगे। उसके कान हलके-हलके भिनभिनाने लगे। तभी जैसे यह भिनभिनाहट रुक गई।

वह जव जागा तो उसे इतना ही पता चला कि चारो ओर अँधेरा था और वह धीरे-धीरे उठाया जा रहा था।

एक आदमी कह रहा था, "इसने शराव नही पी। यह वच्चा है।"

दूसरे ने कहा, "इसे यही पर रख दो। यह वीमार है। इसकी किश्ती को पीछे वाँध दो।"

जोडी ने ऊपर देखा। वह किसी डाक के जहाज़ के कमरे मे लेटा हुआ था। दीवार पर एक वत्ती टिमटिमा रही थी। कोई उस पर झुका हुआ था।

"वच्चे, क्या वात है ? हम तो अँधेरे मे तुम्हे कुचल ही डालते !"

उसने उत्तर देना चाहा, पर उसके होठ सूजे हुए थे।

ऊपर मे एक आवाज़ आई, "उसे कुछ खाने को देकर देखो।"

"वच्चे, तुम्हे भूख लगी है ?"

उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दी। नाव चलने लगी थी। कमरे वाला मनुष्य चूल्हे पर कुछ गर्म करने लगा। जोडी ने देखा कि एक वडा प्याला उसके सामने लाया गया। उसने सिर उठाया और इसे पकड लिया। प्याले मे ठण्डा शोरवा पडा था। यह गाढा और चर्वी मिला था। पहले एक-दो कौर मे इसका स्वाद न आया। परन्तु धीरे-धीरे उसके पेट मे अन्दर का रस काम करने लगा और वह पूरे मनसे इसे पीने लगा। उसने इसे इस तेज़ी से निगल लिया, जैसे वह मॉस और आलू के टुकडो पर टूट रहा हो।

उसी मनुष्य ने उत्सुकता से पूछा, "तुमने कव से नही खाया ?"

"मुझे नही पता।"

"कप्तान साहव ! इसे नही पता कि इसने कब से नही खाया ?"

"इसे धीरे-धीरे करके काफी खाने को दो, पर इतना मत देना कि यही उलटी करने लगे।"

प्याला भरकर फिर उसके पास आया। अब की वार इसके साथ बिस्कुट भी थे। उसने अपने पर काबू रखना चाहा। परन्तु वह कांप गया, जब उस मनुष्य को उसने अगली खुराक तक बहुत देर प्रतीक्षा करते पाया। तीसरा प्याला उसे पहले दोनो से भी अधिक अच्छा लगा। पर, अब उसे और अधिक न दिया गया।

आदमी ने पूछा, "तुम कहाँ से आ रहे हो ?"

उस पर जैसे मूर्छा-सी आ गई। उसका साँस भारी चलने लगा। टिम-टिमाती वत्ती की ओर उसकी आँखे घूमने लगी। उसने उन्हे वन्द कर लिया। वह नदी के समान ही एक गहरी नीद मे सो गया।

जब स्टीमर रुका तो वह जाग पडा। उसे एक क्षण को लगा कि जैसे वह अपनी ही किश्ती मे वहता आया हो। वह अपने पाँव पर खडा हो गया और आँखें मसलने लगा। साथ के चूल्हे पर उसका ध्यान गया और उसे पहले दिन के शोरबे और विस्कुटो का ध्यान हो आया। उसके पेट की दर्द जाती रही थी। वह कुछ सीढियाँ चढकर ऊपर आ गया। दिन निक-लना शुरू हो चुका था। डाक का थैला नीचे घाट पर झुकाया जा रहा था। उसने पहचाना, यह वोलूसिया है। कप्तान उसकी ओर आया।

"वच्चे, तुम मरने ही वाले थे। अब वताओ, तुम्हारा नाम क्या है और तुम किधर जा रहे थे ?"

"मैं वोस्टन की ओर जा रहा था।" जोडी ने उत्तर दिया।

"तुम्हे पता है, वोस्टन कहाँ है ? जिस तरह तुम जा रहे थे, इस तरह उत्तर की ओर जाते हुए तुम्हारा सारा जीवन बीत जाता।"

जोडी आश्चर्य मे ताकता रहा।

"अच्छा, अब जल्दी करो। यह सरकारी नाव है। मै तुम्हे सारा दिन नही रख सकता। तुम कहाँ रहते हो ?"

"वैक्स्टर टापू पर।"

"इस नदी पर इस नाम का कोई टापू कभी नही सुना।"

खलासियो का अगुआ बोल उठा, "यह असली टापू नही है, कप्तान साहब! यह जगल मे एक स्थान है। यहाँ से सडक से पन्द्रह मील के लग-भग होगा।"

"तब तुम यहाँ उतरना चाहोगे? बोस्टन? रहने भी दो! तुम्हारे वहाँ सम्बन्धी हैं?"

जोडी ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"उन्हे पता है कि तुम कहाँ जा रहे हो?"

उसने सिर हिलाकर मना किया।

"तो क्या भाग रहे हो? क्यो, है न? अच्छा, अगर मैं तुम्हारे जैसा छोटा होता तो मैं तो घर पर ही रहता। तुम्हारे जैसे छोटे बच्चे के लिए केवल घर के सम्बन्धी ही परेशान होगे। जो! इसे किनारे पर नीचे उतार दो।"

दो बडी भुजाओ ने उसे उठाकर नीचे उतार दिया।

"इसकी छोटी नाव भी खुली छोड दो। बच्चे, इसे ले लो और हमे जाने दो!"

सीटी बजी और पहिए चलने लगे। डाक वाली नाव धारा के ऊपर की ओर चल निकली। उसके पीछे-पीछे धुआँ निकल रहा था। एक अज-नबी पुरुष ने डाक का थैला उठाया और अपने कन्धे पर रख लिया। जोडी अपनी एडियो के बल बैठ गया। उसने अपनी नाव का किनारा अपने हाथ मे पकड़े रखा। वह अजनबी उसकी ओर झाँककर वोलूसिया की ओर डाक लेकर चल पडा। अब सूर्य की पहली किरणे नदी पर पड रही थी। दूसरी ओर के नरगिसो ने उन्हे प्यालो की भाँति उठकर अपने अन्दर ले लिया। तेज़ धारा उसकी छोटी-सी नाव से टकरा रही थी। उसकी बाँहे उसे पकडे-पकडे थक गई थी। अजनबी के क़दमो की आवाज़ सडक पर खो गई थी।

जोडी के लिए अपनी ज़मीन पर लौटने के अलावा और कोई राह नही रह गई थी। वह फिर नाव मे बैठा और उसने चप्पू सँभाला। वह पार करके पश्चिमी किनारे पर आ गया और वहाँ एक खूँटे के साथ उसने

नाव को बाँध दिया। उसने नदी को एक बार फिर देखा। चढते हुए सूर्य की किरणे जले हुए हुट्टो परिवार के घर की राख पर पड रही थी। उसका गला भर आया। सारे ससार ने ही उसे जैसे छोड दिया हो ! वह मुडा और सडक से ऊपर की ओर धीमे-धीमे चलने लगा। वह कमज़ोर था और उसे भूख फिर से चेत आई थी। परन्तु रात के भोजन ने उसे ताज़ा कर दिया था। उसकी मूर्छा और दर्द कम हो गई थी।

वह बिना सोचे ही बढने लगा। पर उसके लिए और कोई दिशा नही रह गई थी। अपनी ज़मीन उसे एक चुम्बक की भाँति खीचती जा रही थी। अपने खेतो के अलावा और कोई सच्चाई उसके सामने न थी। वह बढता रहा। उसको सन्देह था कि वह घर मे जाने का साहस भी कर सकेगा या नही ? सम्भवत वे उसे न चाहते होगे। उसने उन्हे बहुत तकलीफ दी। शायद अगर वह रसोई मे घुसा तो उसकी माँ पलँग के समान ही उसे भी धक्के देकर निकाल देगी। वह किसी के लिए भी तो लाभ का नही था। वह खेलता और खाता हुआ व्यर्थ ही मटरगश्तियाँ करता रहा था। वे लोग ही उसकी भूख और बुराइयो को सहते रहे। फ्लैग ने साल-भर की कमाई के अच्छे हिस्से को नष्ट कर दिया था। निश्चय ही वे सोचते होगे कि जोडी के बिना ही वे ठीक हैं। उसका घर मे बिलकुल स्वागत न होगा।

वह सडक पर धीमे-धीमे घिसटता हुआ बढता रहा। धूप तेज़ हो गई थी। सर्दी समाप्त हो चुकी थी। उसे लगा कि सम्भवत. चैत काफी ढल चुका है। वसन्त सारे जगल पर छा चुकी थी और पक्षी झाडियो मे गाते हुए जोडे बाँध रहे थे। वही अकेला सारे ससार मे घर-बार से रहित था। वह ससार से बाहर निकला हुआ था। ससार उसके लिए एक दुखभरे सपने की भाँति निराशा-भरा और अस्थिर-सा बन गया था, जैसे वह दल-दलो आदि से भरा हुआ हो। दोपहरसे पहले वह बडी सडक और उत्तर की ओर फटने वाली सडक के जोड पर आराम के लिए रुका। यहाँ वनस्पतियाँ नीची थी और धूप सीधी पड रही थी। उसका सिर दर्द करने लगा। वह फिर उठ खडा हुआ और सिल्वर घाटी की ओर उत्तर मे चल पडा। उसने अपने मन मे कहा कि वह घर जाना नही चाहता। वह केवल सोते पर जाएगा और उसके काले और ठण्डे किनारो के बीच मे कुछ देर बहते

पानी के बीच लेटेगा। उत्तर की सडक कभी नीचे और कभी ऊपर होती हुई बढ रही थी। धूल उसके नगे पांवो के नीचे तप रही थी। उसके चेहरे पर पसीना बह रहा था और एक ऊँचाई पर चढकर वह अपने से बहुत नीचे पूरब की ओर जार्ज झील को देख सका। यह एकदम नीली थी। इसमे दिखाई देने वाली पीली-पीली धारियाँ ऊँची उठती लहरे थी, जिन्होने उसे ढकेलकर फिर किनारे पर पटक दिया था। वह आगे बढने लगा।

पूरब मे वनस्पतियाँ फिर बढने लगी। पानी पास ही था। वह नीचे की ओर सिल्वर घाटी की पगडण्डी पर मुड गया। एकदम ढलान वाला यह किनारा धारा के उस हिस्से पर उतरा, जो मुख्य धारा मे दक्षिण की ओर मिलता था। इसका स्रोत बहुत छोटा था। उसकी सभी हड्डियाँ दर्द करने लगी। वह इतना प्यासा था, जैसे उसकी जीभ तालु से चिपक गई हो। वह किनारे के साथ-साथ लडखडाता हुआ उतरा और ठण्डे उथले पानी के किनारे लम्बा लेटकर उसे पीने लगा। पानी उसके होठ और नाक पर बुलबुलो के रूप मे उठा। वह इसे तब तक पीता रहा जब तक उसका पेट फूल न गया। तब उसे कुछ मचलाहट अनुभव हुई और वह अपनी पीठ के सहारे आँख बन्द करके लेट गया। उसकी यह मचलाहट नीद के रूप मे उस पर छा गई। थका हुआ वह एक मूर्छा मे लेटा रहा। उसे लगा जैसे वह समयहीन आकाश मे लटका हुआ हो। न वह आगे जा सकता था और न पीछे लौट सकता था। जैसे कुछ समाप्त तो हो गया था, पर अभी नया कुछ शुरू नही हुआ था।

दोपहर बाद वह उठा और बैठ गया। उसके ऊपर ही मैग्नोलिया पेड पर कुछ आरम्भिक सफेद गुच्छे खिल चुके थे। उसने सोचा कि चैत समाप्त होने ही वाला है।

एक याद ने उसे लुभा लिया। वह लगभग एक साल पहले ऐसे ही कोमल और सुहावने दिन यहाँ आया था। उसने इसी प्रकार धारा के किनारे लेटकर और यही पर घूमकर आनन्द मनाया था। उस समय कोई बात थी कि जिससे सब कुछ सुन्दर और प्यारा लगता था। उसने एक पन-चक्की भी बनाई थी। वह उठा और धडकते दिल से उसी पुरानी जगह पर

गया। उसे लगा कि अगर उसने पनचक्की को अब भी पा लिया, तो वह जैसे और सभी खोई हुई चीज़ों को भी फिर से पा लेगा। परन्तु पनचक्की नष्ट हो चुकी थी। बाढ ने इसे बहा दिया था और इसका वह आनन्द-दायक चक्कर समाप्त हो चुका था।

उसने जिद के साथ सोचा, 'मै एक दूसरी चक्की बनाऊंगा।'

उसने फिर से सहारा देने वाली शाखो और बीच मे घूमने वाली शाख को पास के चेरी के पेड से काटकर बनाया। उसने उन्हें जल्दी-जल्दी छीला। फिर उसने ताड के छोडे पेड से पत्तियाँ काटी और उनके पखे बनाए। तब उसने उन्हे धारा के तले पर गाड दिया और पखो को घुमा दिया। ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर करते हुए चक्की चलने लगी। पानी की चमकीली बूंदें इस पर से गिरने लगी। पर अब उसके लिए ये पत्ते केवल ताड के पत्ते रह गए थे, जो पानी को धक्का दे रहे थे। गति का वह पुराना जादू इनमे न था। पन-चक्की का पहला आनन्द इनमे से समाप्त हो चुका था।

वह हँस पडा, "गुडिया •"

उसने अपना पांव मारकर इसे गिरा दिया। टूटे हुए टुकडे धारा मे बहने लगे। वह जमीन पर गिर पडा और तेज़ी से सुबकने लगा। उसे कही भी आराम नही मिल रहा था।

पैनी ज़रूर था! उसकी याद आते ही घर की याद आने लगी। पैनी को न देख पाना उसे एकदम ही असह्य हो उठा। उसके पिता की आवाज़ उसके लिए एक खास ज़रूरत बन चुकी थी। वह उसके झुके हुए कन्धो को देखना चाहता था। ऐसी चाह उसमे आज तक कभी भी न जगी थी, अधिक भूख होने पर भोजन के लिए भी नही। वह अपने पांवो पर खडा हुआ और फिर से किनारे पर चढ आया। अब वह घर की ओर की सडक पर चिल्लाता हुआ दौडने लगा। हो सकता है उसका पिता वहां न रहा हो। हो सकता है वह मर गया हो। हो सकता है फसले नष्ट होने और बेटे के चले जाने पर निराश होकर उसने भी अपना सामान समेट लिया हो और कहीं और चला गया हो। अब जैसे वह उसे कभी नहीं मिल पाएगा।

वह वहीं से रोकर चिल्लाया, 'पिताजी, कुछ देर मेरा इन्तज़ार कीजिए।"

सूरज छिप रहा था। उसे डर था कि वह अंधेरा होने से पहले खेतो पर न पहुँच सकेगा। वह थक चुका था इसलिए उसे चाल धीमी करनी पडी। उसका शरीर काँप रहा था और उसका दिल धडक रहा था। उसे अब आराम करने के लिए पूरी तरह रुकना पडा। अभी घर से वह आधा माल दूर ही था कि अँधेरा छा गया। रास्ते के निशान परिचित थे। खेतो पर के ऊँचे चीड पहचाने जा सकते थे। ये अँधियारी रात से भी अधिक काले थे। वह बाड पर पहुँच गया और अपना रास्ता उसने खोज निकाला। उसने दरवाज़ा खोला और आँगन मे घुस आया। वह घर के एक ओर होता हुआ रसोई तक गया और सीढियाँ चढ गया। वह खिडकी तक आया। उसके पाँव नगे और शान्त थे। उसने अन्दर झाँका। अँगीठी मे एक धीमी आग जल रही थी। पैनी कमर को सीधी करके बैठा हुआ था। उसने कम्बल ओढे हुए थे। उसका एक हाथ अपनी आँखो पर रखा हुआ था। जोडी दरवाज़े तक गया। उसने इसे खोला और अन्दर घुस आया। पैनी ने अपना सिर उठाया और पुकारा, "ओरी!"

"नही, यह मैं हूँ!"

उसने सोचा कि उसके पिता ने उसे सुना नही है। अब उसने अपना नाम लेकर आने की सूचना दी। पैनी ने अपना सिर घुमाया और आश्चय मे उसकी ओर देखने लगा, मानो पसीने से तरबतर, उलझे बाल और गहरी आँखो वाला वह ठिगना और चिथडे पहने लडका कोई अजनबी हो और जिससे वह आशा रखता हो कि वह अपने आने का प्रयोजन बताए।

उसने पुकारा, "जोडी!"

जोडी की आँखे शर्म से नीचे झुक गई।

पिता ने पास बुलाया। वह उसके पास जाकर बगल मे खडा हो गया। पैनी ने उसका हाथ पकडा और अपने दोनो हाथो के बीच लेकर उसे धीमे-धीमे मसलने लगा। जोडी के हाथ पर कुछ गर्म बूँदे गिरी, जैसे गर्म वर्षा हुई हो!

"बेटे, मैं तो तुम्हारी उम्मीद ही छोड़ चुका था।"

पैनी ने उसकी बाँह छुई और उसे देखने लगा।

"तुम ठीक तो हो?"

जोडी ने सिर हिला दिया।

"तुम बिलकुल ठीक हो? न तुम मरे? और न गए? तुम बिलकुल ठीक हो न?" एक प्रकाश पिता के चेहरे पर दौड गया और वह बोल पड़ा, "बधाई हो।"

जोडी को इस पर विश्वास न हुआ। उसे लगा कि अब भी उसकी चाह बाकी थी।

वह बोला, "मुझे घर आना ही पडा।"

"हाँ, अवश्य आना चाहिए था।"

"जो कुछ मैंने आपसे घृणा के विषय मे कहा वैसा मै नही चाहता था।" पैनी के चेहरे पर आया वह प्रकाश मुस्कान मे बदल गया।

"सचमुच तुम नही चाहते थे। जब मै बच्चा था, मै भी बच्चो जैसे बोलता था।"

पैनी अपनी कुर्सी मे ही हिला और बोला, "तुम्हारा भोजन आलमारी मे पडा है। वहाँ पतीली मे ही कुछ रखा है। तुम्हे भूख लगी होगी?"

"मैने सिर्फ कल एक बार रात को ही खाया था।"

"सिर्फ एक बार? तो अब तुम जान गए होगे 'भूख' का क्या अर्थ होता है? भूख की शक्ल बूढे रीछ से भी अधिक नीच होती है। क्या ठीक नही?" कहते हुए उसकी आँखें आग के प्रकाश मे वैसे ही चमकीं जैसे जोडी ने कल्पना की थी।

वह बोला, "यह बहुत ही डरावनी थी।"

"वहाँ बिस्कुट पडे हैं। शहद भी ले लेना। और, बाल्टी मे कुछ दूध भी बचा होगा।"

जोडी खाने मे लग गया। उसने खडे-खडे ही जल्दी-जल्दी निगलते हुए भोजन किया। उसने मटरो की तश्तरी मे हाथ से ही खाना शुरू किया। पैनी उसकी ओर ताकता रहा।

वह बोला, "मुझे दुख है कि तुम्हे इस रूप मे सीखना पडा।"

"माँ कहाँ है?"

"वह फोरेस्टरो के घर तक गाडी में गई है, ताकि मक्की के कुछ बीज खरीदकर ला सके। उसका अनुमान था कि वह कुछ फसल फिर से बोकर

देखेगी। वह चूजे बेचने के लिए ले गई है। इससे उसके अभिमान पर चोट तो पडी, परन्तु वह जाने के लिए लाचार थी।"

जोडी ने आलमारी का दरवाजा बन्द कर दिया। वह बोला, "मुझे शरीर धो-पोछ लेना चाहिए, क्योकि मै बहुत मैला हूँ।"

"उधर भट्टी पर गर्म पानी होने रखा है।"

जोडी ने पानी बाल्टी मे पलटा और अपना मुँह धोया। उसने हाथ भी धोए। पानी उसके पाँव के लिए बहुत मैला हो चुका था। उसने उसे खिडा दिया और कुछ और पानी डाल लिया। तब फर्श पर बैठकर पाँव धोने लगा।

पैनी बोला, "मै प्रसन्न होऊँगा यदि जान सकूँ कि तुम कहाँ रहे ?"

"मै नदी पर ही रहा। मेरी इच्छा थी कि बोस्टन चला जाऊँ।"

"मै समझा।"

कम्बलो मे लिपटा वह अधिक छोटा और सिकुडा-सा दिखाई दिया।

जोडी बोला, "पिताजी, आपका क्या हाल है? कुछ अच्छे हैं ?"

पैनी बहुत देर तक भट्टी मे पडे अगारो को देखता रहा और तब बोला, "तुम सचाई जान लो तो अच्छा है। मेरी दशा मर जाने लायक है।"

जोडी बोला, "जब म काम समाप्त कर लूंगा, तब मुझे डाक्टर को लाने की आज्ञा आपको देनी पडेगी।"

पैनी ने उसे अच्छी तरह देखा और बोला, "अब तुम बिलकुल बदल-कर लौटे हो। तुमने स्वय को कडा दण्ड दिया है। अब तुम किशोर नही रहे, जोडी · ।"

"हाँ, जी।"

"मैं अब तुमसे आदमी के नाते बात करूँगा। तुमने सोचा था कि मैंने तुमसे वायदा तोडा है। पर एक बात हर आदमी को अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए। शायद तुम इसे पहले ही जानते हो। यह केवल मेरा सवाल नही है। यह केवल तुम्हारे उस प्यारे पशु को मारने का भी सवाल नही था। बच्चे, यह जीवन तुम पर भी इसी तरह बीतेगा।"

जोडी ने पिता की ओर देखा और सिर हिलाया।

पैनी बोला, "तुमने देख लिया है कि ससार मे किस तरह की बातें हो है। तुमने आदमियो को बहुत नीचे गिरता हुआ भी देख लिया। तुमने मौ को अपनी चालाकियाँ खेलते देख लिया। तुमने भूख के साथ भी उलझ देख लिया। हर आदमी चाहता है कि उसका जीवन अधिक सुन्दर, सर और प्यारा बने। जीवन सुन्दर है, बल्कि बहुत सुन्दर है। पर यह उतन सरल नही है। जीवन आदमी को गिरा देता है। वह उठता है और य उसे फिर गिरा देता है। मैं स्वय अपने जीवन-भर इसी तरह गिरता-उठ चलता आया हूँ।"

उसके हाथ कम्बल की तहो को पकड रहे थे।

"मैंने चाहा था कि तुम्हारे लिए जीवन सरल बन सके। कम-से क मेरे जीवन की अपेक्षा वह अधिक सरल हो। किसी भी आदमी का दि अपने बच्चो को दुनिया का सामना करते देखकर दर्द से भर उठता है। व जानता है कि जिस तरह उस पर मुसीबतें टूटी और दिल फटा, उसी तर बच्चो का भी हौसला टूट जाएगा। मैं चाहता था कि जब तक हो सके, तु मुसीबत से बचाऊँ। मैं यह भी चाहता था कि तुम अपने प्यारे पशु के खूब हँसो, खेलो। मैं जानता था कि वह तुम्हारे अकेलेपन को किस सीम तक दूर करता था? परन्तु, दुनिया मे हर आदमी अपने को अकेला अनु करता है। तब वह क्या करे? और जब उस पर मुसीबत पड़ती है त वह क्या करे? अच्छा है, इसे अपनी किस्मत का भाग मानकर बढता चले।"

जोडी बोला, "मुझे अपने भाग जाने पर लज्जा है।"

पैनी तनकर बैठ गया और बोला, "तुम अब अपना रास्ता चुन लायक हो गए हो। हो सकता है कि ओलिवर की भाँति तुम भी समुद्र जाना चाहो। कुछ मनुष्य बनते ही धरती के लिए हैं और कुछ समुद्र लिए। पर मुझे प्रसन्नता होती यदि तुम यहाँ रहकर खेती करना पस करते। मुझे वह दिन देखकर अभिमान होता जब तुम कुआँ खुदवा लेते ताकि कभी कोई औरत अपने कपडे धोने के लिए उस पानी के सोते त जाने से बच जाय। क्या तुम यह चाहोगे?"

"मैं यही चाहता हूँ।"

"तो फिर हाथ मिलाओ!"

उसने अपनी आँखें बन्द कर ली। भट्टी की आग जलकर अगारे बन चुकी थी। जोडी ने उन्हे राख से ढँक दिया, ताकि सुबह जलते हुए कोयले मिल सके।

पैनी बोला, "अब मुझे बिस्तर पर जाने के लिए तुम्हारी सहायता चाहिए। लगता है, तुम्हारी माँ रात वही बिताएगी।"

जोडी ने अपना कन्धा पिता की बगल मे लगाया। पैनी उस पर बोझ के साथ झुका। वह उसे उसके बिस्तरे तक ले गया। जोडी ने उस पर रजाई डाल दी।

"बच्चे, भोजन और पानी ही तुम्हे घर मे लाया है। जाओ, अब बिस्तर तक जाकर सो जाओ और आराम करो। नमस्ते!"

ये शब्द जोडी मे फिर से एक उत्साह भर गए। उसने भी पिता को नमस्कार किया। वह अपने कमरे मे गया और उसने दरवाजा बन्द कर लिया। उसने अपने फटे हुए कपडे उतारे और गर्म रजाई मे घुस गया। उसका बिस्तर कोमल और गदेला था। वह बहुत आराम से अपनी टाँगे फैलाकर पड गया। उसे सुबह जल्दी उठना होगा, ताकि गाय दुहकर और लकडी लाकर वह फसलो के काम पर जा सके। उसके काम करते हुए फ्लैग उससे खेलने को न होगा। उसका पिता भी अब अधिक हाथ न बँटा सकेगा। पर अब इन बातो का अधिक महत्त्व नही था। वह अकेला ही सब काम करने के लिए तैयार था।

उसे लगा, जैसे वह कुछ सुन रहा है। यह उसके छौने की ही आवाज थी, जैसे वह घर के चारो ओर घूम रहा हो। या फिर उसके ही कमरे के कोने मे पडे काई के बिस्तर पर पडा हिल रहा हो। अब वह उसकी आवाज फिर कभी न सुन सकेगा। उसे सन्देह था कि माँ ने छौने के शव पर मिट्टी भी डाली या नही? या फिर कही गिद्ध ही उसे साफ न कर गए हो? उसे विश्वास न हुआ कि वह फिर कभी किसी जन्तु को फ्लैग के समान प्यार कर सकेगा? या किसी आदमी, स्त्री या अपने बच्चे को ही वैसा प्यार दे सकेगा? अब वह जीवन-भर अकेला ही रहेगा। परन्तु हर आदमी को इसे भी अपना भाग समझकर बढना होता है।

अपनी नीद के शुरू मे ही वह चिल्ला पड़ा, "फ्लैग!"

लगा जैसे यह उसकी आवाज़ नही थी। यह किसी एक बच्चे की आवाज़ थी। सोते के पार बहुत दूर, मैग्नोलिया वृक्ष से भी परे, सनावरो के नीचे, एक बच्चा और एक किशोर हिरण साथ-साथ भाग रहे थे। धीरे-धीरे वे सदा के लिए आँखो से ओझल हो गए।

